मान है कि
चार न मिला
दन बुरी तरह
और औषधीय
हिन्दुस्तानके
, बांगलादेश
प्रिय हैं। पहले
पानकी खेती
होती थी जो
से घटकर
इसके पश्चात
बीमारियोंका
महोबामें पान
ही भयंकर

१९९९ तक महोबामें पान कृषकों क्षेत्रफल मात्र १५० एकड़ तक ही रह गया।

इस वर्ष नयी शताब्दीमें नयी समस्याओंको लेकर पान किसानों द्वारा जिलेमें २५० एकड़के भू भागमें उत्पादनके लक्ष्यको लेकर पान बरेजोंका निर्माण और बेलका रोपन किया गया है। लेकिन इस बार फिर पान कृषकोंकी आशाओंपर पानी फिरता नजर आ रहा है। गत माह फरवरी और मार्चमें रोपित पानकी बेलोंमें गंधली नामक संक्रामक बीमारी फैल गयी है जो पानके पौधोंको नष्ट कर रही है। वैज्ञानिक भाषामें इस बीमारीको स्कलेरोशियम कहा जाता है। पान कृषि वैज्ञानिकोंके अनुसार गंधलीसे ग्रसित पानके पौधोंमें भूरे रंगके धब्बे आ जाते हैं तथा तनेकी छाल निकलने लगती

वैज्ञानिक दलके सदस्यों डाक्टर जे.के. जौहरी, डाक्टर एच.बी. सिंह तथा डाक्टर राम सेवक चौरसियाने यूनीवार्ताको बताया कि गंधलीके उपचारके लिए पान किसानोंको तत्काल फंफूद नाशक दवाओंके प्रयोग और रोग ग्रस्त पौधोंको उखाड़ कर जमीनमें गाड़ देनेकी सलाह दी जा रही है ताकि अन्य स्वस्थ्य पौधोंमें इसका संक्रमण न हो सके। वैज्ञानिकोंने बताया कि गंधली रोकके प्रभावका समूल नाश न हो पानेकी दशामें यहां पानकी खेतीके पूर्णरूपसे नष्ट हो जानेकी आशंका है। यद्यपि संस्थान और उसकी स्थानीय इकाई पान प्रयोग प्रशिक्षण केन्द्रके समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी बीमारीके उपचार हेतु जी जान से जुटे हैं।

कनवंजन
निगमकी
चलाना
सरकारको
तकका
पर्यावरण
समितिके
वाणिज्य
अभी न तो
है और न
संख्यामें
वर्षोंके
सरकार
भरतनेका

# मूल्य: पर्देके पीछेका

र वित्तीय क्षेत्रोंमें इधर एक बार
म मुद्दोंको हाशियेपर धकेलकर
सहज, स्वाभाविक, प्रत्याशित
यम निर्यातक देशोंके संघटन
तीसरे करारके चलते, जो मार्च
२१ लाख बैरल तेल उत्पादनकी
इस फैसलेका नतीजा यह हुआ
क क्रूडके संदर्भमें) १० डालर
रलतक पहुंच गयीं। पिछले नौ
का यह एक कीर्तिमान था। इस
के रूपमें लिया गया। कहा जाने
जानेवाले देशोंमें मुद्रास्फीति और

ग्य तथ्य यह है कि १९९७ के
डालर प्रति बैरलके करीब थीं
बित न हो सका। उसमें क्रमिक
वह भी आया जब ओपेक क्रूडकी
से भी नीचे आ गयी। यह स्थिति

मतोंमें कमीके लिए अनेक
गया। जैसा कि स्वाभाविक और
के अर्थ विशारद और पंडित भी
दलील दी कि प्रौद्योगिकीमें त्वरित
न्यमें कमीके चलते सामग्रियोंकी
यी। वैसे शुरू-शुरूमें यह माना
आर्थिक संकटके कारण ते
निष्कर्षको कुछ विशेष

अवधारणा की भी भूमिका रही होगी। उस समय एक अतिरिक्त आशावादिताका संचार हुआ जिसके फलस्वरूप जोर-शोरसे यह दावा किया जाने लगा कि तेलकी कीमतोंमें वृद्धि अब गुजरे दौरकी घटना हो गयी है जिसकी वर्तमान और भविष्यमें पुनरावृत्ति लगभग असम्भव है।

लेकिन सामाजिक यथार्थके विकासने इस आशावादितापर समय क्रयमें न सिर्फ सवालिया निशान लगाया बल्कि एक

> **यहां ध्यान दिये जाने योग्य तथ्य यह हैं कि १९९७ के आरंभमें तेलकी कीमतें २५ डालर प्रति बैरलके करीब थीं लेकिन यह मूल्य स्थिर साबित न हो सका। उसमें क्रमिक कमी जारी रही और एक दौर वह भी आया जब ओपेक क्रूडकी कीमत १० डालर प्रति बैरलसे भी नीचे आ गयी। यह स्थिति दो सालतक बनी रही।**

तरहसे उसकी धज्जियां भी उड़ा दीं। अनेक कारणोंके दबावने गुल खिलाना शुरू कर दिया। अन्ततः ओ[illegible] देशोंने जोर-शोरसे कहना शुरू कर दिया कि १९[illegible] आरंभमें तेलकी जो कीमतें रहीं उन्हें [illegible] नहीं कहा जा सकता था।

[illegible] अनेक स्तर [illegible]

[illegible] इन विसंगतियोंका [illegible]

सामाजिक यथार्थके [illegible]
चकित कर दिया था। उ[illegible]
खिसक गयी है। अब वे [illegible]
सवाल यह था कि क्या इ[illegible]
है या तेलकी कीमतोंका [illegible]
प्रक्रिया है जो यह संकेत दे[illegible]
फिर तेलकी कीमतोंमें गि[illegible]

ये विशेषज्ञ जिस दूसरे [illegible]
कि अपेक्षाकृत उच्च तेल [illegible]

[illegible] उभार आया। लेकिन थी[illegible]
है कि तेल की कीमतों [illegible]
विकसित और [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और गत वर्ष तेलकी कीमतोंने जबरदस्त छलांग लगायी।

है।

असर मांगपर पड़ेगा।

महासंघ इस संबंधमें केन्द्रीय उत्पाद और सीमा शुल्कके अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियोंसे मिल चुका है। बैठकके दौरान अधिकारियोंका ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है कि बिस्कुटको चाकलेट, चटनी, मुरब्बा, केक, आइसक्रीम और पान मसाला जैसी लक्जरी वस्तुओंके साथ जोड़ दिया गया है, जबकि यह

## आईएफसीआई ने कनोरिया पेट्रोके २२ हजार इक्विटी शेयर बेचे

नयी दिल्ली, ९ अप्रैल (वा.)। आईएफसी आई लिमिटेडने कनोरिया पेट्रो प्रोड्क्ट्स लिमिटेडके २२ हजार इक्विटी शेयर नवज्योति इवेस्टमेंट एण्ड डीलर्स लिमिटेडको बेच दिये है। दस रुपये अंकित मूल्यवाले ये शेयर कंपनी की चुकता पूंजीमें २.०२ प्रतिशत हिस्सा रखते हैं और दोनों कंपनियोंके बीच बातचीतसे तय हुए इस सौदेमें प्रत्येक शेयर ५० रुपये मूल्यपर बेचा गया। नवज्योति इवेंस्टमेण्ट कनोरिया पेट्रोके प्रवर्तकोंसे संबंधित है।

है। संघका दावा है कि
नेकी स्थितिमें न केवल
बल्कि उद्योग २०-२५
सिल करने लगेगा।

बातचीतके दौरान वित्त
में कोई आश्वासन नहीं
ने वायदा किया है कि
। तो हम अपने दाम भी

## भोक्ता

## ट शीघ्र

कंपनीने कुछ नये
नसमें फंकी टेबलेट्स,
हाजमेंकी गोलिया,
ीमियम क्वालिटीमें)
स्थ्यके लिए पेय और
हर्बल अगरबत्तियां
ल हैं।

## में ३४ % शेयरका अधिग्रहण करे

रा.)। वाहन निर्माण उद्योग समूह हनियामें ताल्लू
वाहनोंके क्षेत्रमें अंतरराष्ट्रीय बाजारमें सहयोग

करेगा
उपयो
विचार
आईअ
उत्साह
दिखाय

## यादिनमें सुधारकी आशाएं धूमिल

ओला वृष्टि, बर्फीली तेज आंधियोंसे यहां ३० प्रतिशत पान बरेजे धूल धूसरित हो गये जबकि

है। बादमें सौंधा वहीं से दूर कर गिर जाता है।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची।


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| करने की | |
| जरूरत | ३८ |
| ायाम | |
| ी लगाने ण | १ |
| लाभ ाने का कारण | २ |
| व ा के गुण | ४ |
| च के | |
| का ावरी नहीं | ५ |
| सक्ता है | ६ |
| ान करने से लाभ र्य का | |
| र्म जल से किसके कारण है | ,, |
| न करना नियम | १० |
| गर्म पानी के स्नान और | |
| कैसे ठंडे जल से स्न उससे लाभ | ,, |
| वर्षा में नदी में क्यर्थना से लाभ | १२ |
| आवश्यकता | १३ |
| कब गयु कितन्करे कार की | |
| कुए होती है | ,, |
| वास, प्रश्वास से आंतरिक | |
| स्नान शुद्धि | १४ |
| उबटन यु सेवन के लाभ | ,, |
| स्नान क | १५ |
| अनुलेपा: साफ़ दस्त होने के लाभ | १६ |
| अंजन जल से आवदस्त लेने | |
| अंजन ल से हानि | १६ |
| दिन में | |
| ख़ा | ५१ |
| | ५२ |
| रत | ५३ |
| सूर्योदय से पूर्व शौच जा | |
| के लाभ | |
| पाख़ाने पेशाब रोकने से हानि | १७ |
| दस्त साफ़ लाने के उपाय | ,, |
| शौच के पश्चात् अन्यान्य शुद्धियाँ | १८ |
| दाँत साफ़ रखने से स्वास्थ की वृद्धि | ,, |
| उँगली चूसने से हानि | १९ |
| दातुन किस २ की होनी चाहिये | |
| दातुन करने की विधि और लाभ | |
| जीभी किस धातु की होनी चाहिये | |
| जीभी का कार्य्य | ,, |
| जिव्हा साफ़ रखने से लाभ | ,, |
| अनेक लाभदायक मंजन | ,, |
| कुल्ला व ग़रारा | २२ |
| आँख धोना | ,, |
| केशों की रक्षा | ,, |
| केश रक्षा न करने से हानि | ,, |


CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| स्त्रियों को व्यायाम से | २३ |
| ऋतु विशेष में व्यायाम | २४ |
| कसरत के पीछे विविध प्रकार से | |
| देशी कसरतों से लाभ | |
| विविध आसन | |
| पानी | |
| जल की शुद्धि और काले करने का तेल | |
| मनुष्य | |
| जल | |
| उत्तम | |
| शी | |
| जल | |
| भोज | |
| कब २ | |
| गुनगुना जल किसे पीना चाहिये | |
| बासी पानी पीने से हानि | |
| बरसाती पानी के गुण | |
| तालाब के पानी के गुण | |
| नदी के पानी गुण | |
| झरना का पानी | |
| हजामत बनवाना | २५ |
| क्षौर से लाभ | २६ |
| अधिक बाल रखने से हानि | |
| उबटन के लाभ और बनाने की विधि | |
| तेल की मालिश | २८ |
| किस २ तेल की कब २ मालिश करे | |
| मालिश कब नहीं करनी चाहिये | |
| मालिश करने की विधि | २९ |
| तेलों के गुण | |
| फूलों के गुण एवं प्रयोग | ३१ |
| सौंदर्य और उसकी प्राप्ति | ३२ |
| बनावटी सौंदर्य्य से क्षति | ३४ |
| स्वास्थ से सच्चे सौंदर्य्य की प्राप्ति | |
| व्यायाम अर्थात् कसरत | ३५ |
| व्यायाम से लाभ | ३६ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| बावड़ी का जल | ,, |
| गंगाजल | ,, |
| कुए का जल | ,, |
| रोग कारक जल की पहचान | ४४ |
| जल के ख़राब होने के कारण | ,, |
| पानी के स्वच्छ करने का उपाय | ४५ |
| पानी ठंडा करने का उपाय | ४६ |
| स्नान | ४७ |
| स्नान करने से लाभ | ,, |
| गर्म जल से किसको स्नान न करना चाहिये | ,, |
| गर्म पानी के स्नान से हानि | ,, |
| कैसे ठंडे जल से स्नान न करे | ४८ |
| वर्षा में नदी में क्यों न स्नान करे | ,, |
| कब स्नान न करे | ,, |
| कुए के जल से स्नान के लाभ | ,, |
| स्नान न करने से हानि | ४९ |
| उबटन से लाभ | ,, |
| स्नान की विधि | ५० |
| अनुलेपन के लाभ | ,, |
| अंजन लगाने के लाभ | ५१ |
| अंजन लगाने का समय | ,, |
| दिन में अंजन लगाने से हानि | ,, |
| सुरमा का नुसख़ा | ५१ |
| नेत्र रक्षा के नियम | ५२ |
| भोजन और उसकी जरूरत | ५३ |
| अन्यान्य आवश्यक बातें | ५४ |
| शयन | ५५ |
| सोने की आवश्यकता | ,, |
| दिन में सोने और रात्रि जागरण से हानि | ५६ |
| कम और अधिक सोने से हानि | ,, |
| सोने का कमरा और चारपाई कैसा होना चाहिये | ,, |
| एक स्थान पर अधिक मनुष्यों के सोने से हानि | ,, |
| किस प्रकार सोना चाहिये | ५७ |
| शयन कमरे में आवश्यक वस्तुएँ | ५७ |
| करवट से सोने के लाभ | ५८ |
| पीठ के बल सोने से हानि | ५८ |
| दक्षिण की ओर पैर कर सोने से हानि | ५९ |
| वेषभूषा | ६० |
| कैसे वस्त्र पहरना चाहिये | ६० |
| काले कपड़े गर्मी में पहरने से हानि | ६१ |
| पश्चमी पोशाक से हानि | ६२ |
| वस्त्रों की सफ़ाई से लाभ | ६३ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| स्वदेशी वस्त्र पहरने से लाभ | ६४ |
| नगर ग्राम मकान | ६६ |
| प्राचीनकाल की ग्राम रचना | ६६ |
| नगर के निकट जंगलों के होने से लाभ | ६६ |
| मकान कैसे बनवान चाहिये | ६८ |
| गृहनिर्माण में किन २ बातों का ध्यान रखे | ७० |
| गृहमें चित्रादि लगाने के लाभ | ७० |
| घरों में फुलवाड़ी न होने से हानि | ७१ |
| तुलसी वृक्ष के रहने से लाभ | ७२ |
| पीपल के वृक्ष से लाभ | ७३ |
| नीम से लाभ | ७३ |
| गृह आदि का स्वच्छ रखना | ७५ |
| मार्ग में इधर उधर कूड़ा फेंकने से हानि | ७७ |
| प्रातः मकान की खिड़कियां खोलने से लाभ | ७८ |
| कुमार और किशोर अवस्था | ७७ |
| बच्चों को विद्या पढ़ाने के लाभ | ७९ |
| मातृ-भाषा से लाभ | ८० |
| संस्कृत की उत्तमता | ८१ |
| आभूषण पहिराने से हानि | ८३ |
| जुआ खेलने से हानि | ८४ |
| पशु पक्षी पालन | ८७ |
| प्रकृतिक वस्तुओं से शिक्षा | ९० |
| ब्रह्मचर्य्य का महत्व | ९३ |
| ब्रह्मचर्य्य के त्याग से हानि | ९८ |
| भिन्न २ देशों की आयु का औसत | १०२ |
| सत्संग महात्म | १०४ |
| विद्या की महिमा | ११२ |
| गुरु और आचार्य्य | १२३ |
| गुरु कैसे होने चाहिये | १२४ |
| गुरु की आवश्यकता | १२८ |
| गुरु उपदेश | १२९ |
| गुरुकुल शिक्षा | १३० |
| प्राचीन शिक्षा परिपाटी | १३३ |
| समावर्तन पर गुरु उपदेश भेट मांगमे की रीति | १३४ |
| श्री. विरजानन्दजीका स्वामी जी से भेंट | १३५ |
| प्राचीन शिक्षा परिपाटी छोड़ने से हानि | १३७ |
| मूर्ख साधु सन्यासियों से हानि | १३७ |
| निरक्षर साधुओं के पास जाने का निषेध | १३७ |
| आधुनिक शिक्षा के दुष्परिणाम | १३९ |
| स्त्री शिक्षा | १४१ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दी-प्रज्ञा-अनुसन्धान


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| स्त्रियों के अशिक्षित होने से हानि | १४१ |
| माता-पिता गुरु के शिक्षित होने से लाभ | १४३ |
| स्त्रियों को अनेक विद्याओं के पढ़ने का अधिकार | १४४ |
| मनुष्यों का राजा और स्त्रियों का रानी न्याय करे | १४५ |
| स्त्रियों के समान आविष्कार | १४६ |
| योग्य स्त्रियों के जीवन | १५२ |
| देवहुता, लक्ष्मी, मायावती, लीलावती, द्रोपदी, रोमश | १५२ |
| अरुन्धती, रेणुका, सुभद्रा, मोहनी, मृगनयनी, मीराबाई जीजीबाई, सीता, मन्दालसा | |
| वेदवती | १५८ |
| दमयन्ती, पार्वती, विद्योत्तमा कुन्ती, विदुला, सुमित्रा, तारा | |
| विद्याधरी, पद्मावती | १६६ |
| संयोग्यता, शकुन्तला, | १७१ |
| कृष्णाकुमारी, कूर्मदेवी | १७१ |
| दुर्गावती, चूड़ाला, अहिल्याबाई, गंगादेवी, मैत्री, अनुसूया, यशोधारा, राजकुमारी, स्वर्णमय | १७६ |
| काहनदेवी, जगरानी, महादेवी आदि | १९२ |
| अन्य देश की सुशिक्षा | १९२ |
| संयुक्त राज्य अमेरिका में सुशिक्षा | १९५ |
| जर्मनी | १९६ |
| बेलजियम | १९६ |
| श्याम व इग्लैण्ड | २०० |
| जेनेवा, चीन. टर्की | २०१ |
| मिश्र, एशिया, जापान | २०२ |
| शिक्षा न होने से हानियाँ | २०३ |
| कन्याओंकोशिक्षाकाआदेश | २०४ |
| गृहस्थी को किस २ शिक्षा की जरूरत है | २०४ |
| संचय, आय व्ययका हिसाब | २०५ |
| शिशुपालन | २०६ |
| पति-सेवा | २०६ |
| शिशु शिक्षा | २०७ |
| नम्र भाषण | २०८ |
| धैर्य्य | २०८ |
| मूर्खा स्त्रियोंके घृणित कार्य्य | २०९ |
| सुसंतान कब होसक्ती है | २१० |
| कन्या पाठशाला कैसी और कहाँ हो | २११ |
| ब्रह्मचर्याश्रम में कन्याओं को भिक्षा न माँगनी चाहिये | २१२ |
| विवाह | २१४ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| बाल विवाह महा रोग | २१३ |
| विवाह कब होना चाहिये | २१६ |
| विवाह स्वयंवर रीति से होना उचित है | २१९ |
| स्वयंवर के उदाहरण | २२० |
| विवाह योग्य आयुका निर्णय | २२१ |
| शीघ्रबोध का मत और उसका खंडन | २२५ |
| डाक्टरों का मत | २२७ |
| चरक ऋषि का मत | २२९ |
| विवाह की प्रतिज्ञाओं से आयू ज्ञान | २३९ |
| विधवाओं की अधिकता का कारण | |
| बाल शिशुओं की मृत्यु संख्या | २३३ |
| आठ प्रकारके वैदिक विवाह | २३४ |
| वैदिक विवाहों की विधि | |
| पाणिग्रहणके मंत्रों का अर्थ | २३५ |
| फेरे चार क्यों होते हैं | २३५ |
| सप्तपदी और उसका उद्देश्य | २३५ |
| पुत्र पुत्री के गुण वा दोष | २३६ |
| शादी में किन २ बातों का ध्यान रखे | २३८ |
| पुत्र पुत्री सम्बन्ध करने में किससे परामर्श लें | २३८ |
| शास्त्र में राशि आदि के मिलान की आज्ञा नहीं | २४० |
| गणदोषआदिकी निःसारता | २४० |
| नाई वारी आदि से वर खोज कराने के दोष | २४३ |
| श्रेष्ठ कुल कौन है | २४४ |
| नीच कुल कौन है | २४५ |
| त्याज कुल | २४५ |
| किससे विवाह करे | २४६ |
| पहले सुसंतान क्यों होती थी | २५७ |
| दूर देश में विवाह क्यों करे | २४७ |
| पुत्री का पिता विवाह में क्या २ दवे | २४७ |
| विदा के समय वरसे प्रार्थना | २४८ |
| वधु की विदा | २४८ |
| वधु के पहुँचने पर स्त्रियों के कर्तव्य | २४९ |
| नवीन वधू के कर्तव्य | २४९ |
| नवीन वर व वधूका कर्तव्य | २५० |
| धर्मात्मा स्त्री पुरुषोंके कर्तव्य | २५१ |
| वधु के घरवालों का अतिम धम | २५१ |
| वरके माता-पिता आदि का कतव्य | २५२ |
| वरात की संख्या | २५३ |
| वखेर वा उससे हानि | २५४ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारती पुस्तकालय


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| वाग वहारी आदि से हानि | २५५ |
| आतिशवाजी | २५६ |
| रंडीके नाचका दुष्परिणाम | २५६ |
| भांड़ों से हानि | २६० |
| दान शैली | २६३ |
| धन की महिमा | २६४ |
| सारे सुखों की प्राप्ती का साधन धन | २६४ |
| धनी में सारे गुण होते हैं | २६५ |
| धन बिना कीर्ति नहीं | २६६ |
| धनहीन का कोई साथी नहीं | ,, |
| धन से धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ती | ,, |
| दरिद्रता से प्रतिष्ठा भंग | २६७ |
| दरिद्री में सब अवगुण आजाते हैं | २६८ |
| पुरुषार्थ से दरिद्रता भागती है | ,, |
| पुरुषार्थ की महिमा | २६९ |
| पुरुषार्थ से लाभ | २७४ |
| छल से धनसञ्चय में हानि | २७४ |
| प्रशंसनीय कान है | २८० |
| अधर्म से धनसञ्चय का दुष्परिणाम | ,, |
| लक्ष्मी कहाँ अपनी चंचलता छोड़ देती है | २८१ |
| पाप की कौड़ी नहीं रहती | २८३ |
| इच्छाओं की वृद्धि का दुष्परिणाम | २८९ |
| मितव्ययी बने | २८९ |
| आपके अनुसार व्यय | २९० |
| फ़िज़ूल ख़र्ची न करे | २९१ |
| धन का उपयोग | २९२ |
| धन पाकर घमंड न करे | ,, |
| धन प्राप्ति के साधन | २९४ |
| खेती चाकरी | २९४ |
| चाकरी में दुःख | २९८ |
| घूंस | ३०० |
| भीख | ३०२ |
| वणिज व्योपार | ,, |
| व्योपार से लक्ष्मी | ३०३ |
| भारत की मशहूर वस्तुएँ | ३०४ |
| भारत का व्योपार क्यों नष्ट हुआ | ३०५ |
| सम्मिलित व्यापार प्रथा | ३०७ |
| देश का पुनरुद्धार कैसे हो | ३०७ |
| अन्य देशों में व्यापार की उन्नति | ३१२ |
| स्वदेश वस्तु प्रेम | ३१४ |
| व्यापारियों को उचित परामर्श | ३१८ |
| दान महिमा | ३२० |
| दान की रीति | ३२१ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| इच्छा पूर्ति के लिये सुपात्र दान | ३२२ |
| सुपात्र कौन है | ,, |
| देशकाल पात्र को देख दान करना | ३२४ |
| दरिद्री कौन है | ३२७ |
| हट्टे कट्टे को दान देने से हानि | ,, |
| पंडित वा ब्राह्मण कौन है | ३२९ |
| तपस्वी किसे कहते हैं | ,, |
| साधू वैरागी कौन है | ३३० |
| नामधारी साधुओं से बचो | ३३१ |
| कुपात्र को देने वाले दाता की गति | ३३४ |
| स्त्रीदान की कुप्रथा | ३३७ |
| विद्या दान की महिमा | ३३९ |
| अनाथालयों की योजना से लाभ | ३४१ |
| कुआ बावड़ी का जीर्णोद्धार | ३४५ |
| गौ की रक्षा | ३४६ |
| देवगृहों में कथाओं का प्रचार | ३४८ |
| विद्वानों का भोजनादि तथा कंगालों का अन्नादि सामग्री से सत्कार करे | ३५० |
| औषधालय व धर्मशालाओं का बनवाना | ३५१ |
| बाग़ लगवाना, निर्धन व्यक्तियों की शादी तथा धर्म-ग्रन्थों का अनुवाद कराना | ३५२ |
| जगदीश से प्रार्थना | ३५४ |
| गृहस्थाश्रम की प्रशंसा | ३५६ |
| कैसे गृहस्थाश्रमों के सुखों को भोग सकते हैं | ३६० |
| वर्ण व्यवस्था | ३६१ |
| ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के लक्षण | ३६२ |
| शूद्रों के लक्षण | ३६३ |
| गुण कर्मानुसार वर्णों का भेद | ३६३ |
| गुणकर्मानुसार उच्चनीच और नीच उच्च को प्राप्त करता है | ३६४ |
| वैडाल, म्लेछ तथा चाण्डाल किसे कहते हैं | ३७० |
| गृहस्थ में विनोद ही जीवन है | ३७२ |
| पति धर्म | ३७४ |
| पति-पत्नी धर्म | ३७९ |
| स्त्री धर्म | ३८३ |
| वेदोक्त शिक्षा | ४१० |
| वेदों से अन्य शिक्षा | ४११ |
| नीति युक्त शिक्षा | ४१७ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| सीना पिरोना | ४२४ |
| सीने की आवश्यक वस्तुएँ | ४२५ |
| सिलाई सीखने की रीति, सादा सिलाई | ४२६ |
| तुरपना बखिया | ४२७ |
| सुजनी | ४२८ |
| फलीता टकाई काज | ४२९ |
| बेल काढ़ना | ४३० |
| फोंक, मरोड़े की लखनवी खील का | ४३१ |
| सलमा | ४३२ |
| ज़री का काम | ४३३ |
| बुनाई सादा, फली दार चक | ,, |
| कतरब्योंत में ध्यान रखने योग्य बातें | ४३४ |
| नाप और उसके लेने का ढंग | ४३६ |
| संजाफ़ व गोट | ४३७ |
| कुर्ता कली का | ४३८ |
| कुर्ता बिना कली का | ४३९ |
| कमीज़ | ४४१ |
| पाजामा (तीन प्रकार के) | ४४३ |
| पतलून | ४४५ |
| नेकर | ४४८ |
| कोट | ४४९ |
| अंगरखा | ४५२ |
| चोग़ा और शेरवानी | ४५४ |
| सेमीज़ | ४५६ |
| साया लहंगा चोली | ४५७ |
| कपड़ा रंगने की रीति | ४५८ |
| कपड़े से रंग काटना | ४५८ |
| रंगों के बनाने की क्रिया | ४५९ |
| कपड़ों के धब्बे छुड़ाना | ४६३ |
| कपड़े और उनके रखने की व्यवस्था | ४६५ |
| हिसाब तथा आ : व्यय का ब्यौरा | ४६७ |
| हिसाब रखने के लाभ | ४६८ |
| हिसाब रखने की विधि | ४६९ |
| रोकड़ बही | ४७० |
| खाता बही | ४७२ |
| वैद्यक विद्या और वैद्य | ४७३ |
| वद्य के साथ बर्ताव | ४७४ |
| रोग | ४७५ |
| शरीर का रोग | ४७४ |
| जितने रोग उतनी औषधिनाँ | ४७६ |
| रोग होने के कारण | ४७६ |
| रोग से बचने के उपाय | ४७८ |
| ज्वरादि रोगों के स्थान | ४७९ |
| रोग किसे और कहाँ नहीं होता | ४८० |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| पथ्यापथ्य विचार | ४८२ |
| औषधि सेवन का समय | ४८४ |
| स्वरस | ४८५ |
| कल्क क्वाथ, हिम, फांट, चूर्ण | ४८६ |
| अवलेह, गुटका, घृत, तैल क्षीर | ४८७ |
| दीपन पाचनादि विचार | ४८८ |
| संशमन, स्रंसन, रेचक, वमन | ,, |
| संशोधन, छेदन, लेखन, ग्राही | ४८९ |
| स्तम्भन, रसायन, धातु-वर्धनी, धातु चैतन्य | ४८९ |
| बाजीकरण औषधियाँ | ४९० |
| देश विचार | ,, |
| प्रकृति विचार | ४९१ |
| अवस्था विचार | ४९२ |
| औषधि पचने न पचने के कारण | ,, |
| बाल रोग चिकित्सा | ,, |
| स्त्रीरोग चिकित्सा | ५०७ |
| साधारण चिकित्सा | ५१८ |
| साँप काटे का इलाज | ५३२ |
| कुत्ता व बिच्छू काटे का इलाज | ५३३ |
| काँतर, मकड़ी, ततैया | ५३४ |
| विष उतारने की रीति | ,, |
| दीमक से बचने के उपाय | ,, |
| उपयोगी बातें | ,, |
| मोती परीक्षा | ५३६ |
| हीरे की पहिचान | ५३७ |
| कस्तूरी परीक्षा | ५३८ |
| ऋतुकाल और गर्भ | ५३९ |
| योवन के लक्षण | ५४० |
| ऋतु और उसके कारण | ५४० |
| गर्भ स्थिति का समय | ५४१ |
| गर्भाधान संस्कार | ५४२ |
| गर्भाधान विधि | ५४२ |
| गर्भ स्थिति और बिधि | ५४३ |
| गर्भ में बालक की वृद्धि | ,, |
| गर्भ के लक्षण | ५४४ |
| गर्भ अवस्था में सावधानी | ५४५ |
| गर्भस्राव व गर्भ पातकाभेद | ५४६ |
| ,, ,, के कारण | ,, |
| गर्भ अवस्था के रोग और उपचार | ५४७ |
| धात्रि शिक्षा | ५५१ |
| प्रसूत ग्रह | ५५२ |
| प्रसूत ग्रह में क्या २ होना चाहिये | ५५३ |
| प्रसवकाल | ,, |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| प्रसव चिन्ह | ५५४ |
| प्रसव पीड़ा | ,, |
| प्रसूता की सावधानी | ५५६ |
| बालक का साधारण रीति पर उत्पन्न होना | ५५७ |
| बच्चे का असाधारण रीति से पैदा होना | ५६० |
| दाई का कर्त्तव्य | ५६४ |
| सीवन की रक्षा | ५६६ |
| नाल काटना | ५६७ |
| जटायु और उसके भीतर रहने से हानि | ५६९ |
| शीघ्र दूध पिलाने से लाभ | ५७१ |
| प्रासविक उपचार | ,, |
| नवजात शिशु की रक्षा | ५७२ |
| प्रसूता की सेवा | ५७७ |
| प्रसवकाल के रोग | ५८१ |
| पेट में बालक की मृत्यु | ५८२ |
| पाक विद्या | ,, |
| भोजन विचार | ५८३ |
| भोजन की जरूरत | ५८४ |
| भोजन के प्रकार | ५८५ |
| षटरस और आहार | ५८६ |
| झूंठा और अति भोजन से हानि | ५८७—८८ |
| पाक शाला | ५८८—९० |
| भोजन शाला | ५९० |
| भोजन रखने की विधि | ५९ |
| वर्तनों की धातु | ,, |
| भोजन का समय | ५९ |
| भोजन परोसने के नियम | ५९२ |
| भोजन में उपयोग बातें | ,, |
| विष परीक्षा | ५९४ |
| भोजन करन का नियम | ५९५ |
| भोजन में ध्यान देने योग्य बातें | ५९६ |
| अजीर्ण के कारण | ६०२ |
| ऋतुअनुसारआहारविहार के नियम | ६०५ |
| अजीर्ण के दूरे करने के उपाय | ६०६ |
| वस्तुओं के पचनेका समय | ६०९ |
| पान खाना | ६११ |
| भिन्न २ पदार्थों के गुण | ,, |
| मसालों के गुण | ६१२ |
| शाकों के गुण | ६१५ |
| अन्य पदार्थों के गुण | ६१७ |
| फलों के गुण | ६२१ |
| दूध | ६२४ |
| दही | ६३३ |
| मट्ठा और उस के गुण | ६३५ |
| घी के गुण | ६३७ |
| | ३३८ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| सर्व प्रकार के शाक बनाने की रीति | ६४१ |
| भरबां शाक | ६४९ |
| तलवां शाक | ६५० |
| हरे शाक की भुजिया | ६५१ |
| दालें बनाने की विधि | ,, |
| दाल में शाक | ६५२ |
| मंगोड़ी | ६५३ |
| रोटी | ६५५ |
| बाटी | ६५६ |
| पूरी कचौरी आदि | ६५७ |
| सर्व प्रकार के भात बनाने की विधि | ६६० |
| कोमरी | ६६३ |
| दलिया | ६६४ |
| तहारी | ६६५ |
| कढ़ी | ६६६ |
| झोंर | ६६७ |
| रायता | ६६८ |
| खीर | ६७० |
| खुर्चन | ६७२ |
| रबड़ी, नमश, कुल्फी | ६७३ |
| चाशनी | ६७४ |
| लड्डू, मोतीचूर, अंगूरदाना बेसन, मूंग, सूजी, मगद मख्ते, चुटिया, चूरमा मेंथी, कंगनी | ६७७ |
| मालपूआ जलेबी | ६७८ |
| इमरती | ६७९ |
| पेड़ा, बर्फी | ६८० |
| लड्डू मलाई, कपूरकंद, गुजिया | ६८१ |
| अन्दरसे, नानखताई | ६८२ |
| सद्दक, सोहनपपड़ी, | ६८२ |
| गुलाबजामन, खुरमा | ६८३ |
| रसभरी, रसगुल्ला, दन्दान पेठा | ६८४ |
| मोहनभोग, हलवा, सूजी, बादाम, किशमिश, छुआरा मलाई, केसर, गंगाफल गाजर, पेठे, आम, चोबचीनी सुपारी, मोहनथाल, हल्दी | ३८९ |
| दाल | ६८९ |
| सेव, मींग करेला, सेम, मूंगफली, कचरी, टेंटी, आलू, मठरी सकलपारे, समोसे, टिकिया | ६९३ |
| पापड़, मोहन पकौड़ी, नमकीन, जलेबी | ६९३ |
| चीले, पकौड़ी, पतोड़े, बड़े, दही बड़े | ६९६ |
| सर्व प्रकार के मुरब्बा | ६९९ |
| गुलक़न्द | ६९९ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| सर्व प्रकार के शरबत | ७०२ | धर्म स्वरूप व व्याकरण | ८१९ |
| अचार पानी | ७०४ | धर्म के लक्षण | ८२७ |
| तेल के अचार | ७०५ | धर्म मार्ग | ८४२ |
| बिना तेल के अचार | ७०६ | वेद | ८४४ |
| स्वरस, अर्क व तेज़ाब के अचार | ७०७ | वेदों के अनादि होने का प्रमाण | ८५० |
| सिरका | ७१० | स्मृति | ८५१ |
| सर्व प्रकार की चटनी | ७१० | सदाचार | ८५४ |
| मांस भक्षण निषेध | ७१४ | प्रियात्मना | ८६० |
| शिकार खेलना | ७२५ | नित्यकर्म | ८६१ |
| नशों का निषेध | ७२८ | ब्रह्मज्ञ | ८६४ |
| शराब निषेध | ७२८ | स्तुति, उपासना | ८६५ |
| अफ़ीम | ७३१ | संध्या की आवश्यकता | ८६६ |
| तम्बाकू | ७३२ | संध्या से लाभ | ,, |
| भङ्ग चर्सादि | ७३५ | संध्या कै बार करना चाहिये | ८६७ |
| ज्योतिष | ७३७ | संध्या का समय | ,, |
| रसायन मंत्र तंत्र | ७४६ | संध्या को बैठक | ८६८ |
| आर्य्य | ७५६ | संध्या समय मुंह | ,, |
| हिन्दू | ७६२ | संध्या में विचार | ८६९ |
| नमस्ते | ७६५ | ३वे पाठ व स्वाध्याय | ८७५ |
| मूर्तिपूजा विचार | ७७२ | देवयज्ञ | ८७८ |
| पुराण परीक्षा | ७८३ | यज्ञ की महिमा | ८७९ |
| वेदों का ईश्वरकृत होना | ७८६ | यज्ञ से लाभ | ८८४ |
| वैदिक साहित्य | ७८७ | पितृ-यज्ञ | ८८६ |
| सोलह संस्कार | ७८८ | श्राद्ध व तर्पण | ८८७ |
| आवागमन | ८१४ | पितृ ऋण से उद्धार | ८८८ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| मृतक श्राद्ध अनुचित है | ८९२ | श्रावणी | ९२३ |
| पितृ का अर्थ | ९०३ | कृष्ण अष्टमी, दशहरा | ९२६ |
| स्वर्ग व नरक क्या हैं | ९०८ | दिवाली | ९२७ |
| वलि वैश्वदेव | ९१२ | देवोत्थान | ९३० |
| अतिथि सेवा | ९१३ | बसन्त, होली | ९३१ |
| त्यौहार | ९१९ | व्रत और तपस्या | ९३५ |
| नवसंवत्सर, सरस्वती पंचमी, | | तीर्थ और मोक्ष | ९५१ |
| रामनवमी, व्यासपूजा | ९२१ | योग का वर्णन | ९७२ |
| हरयाली तीज | ९२२ | प्राणायाम की विधि | ९८१ |


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

नारायणी शिक्षा, पुत्री उपदेश, पुराणतत्व प्रकाश,
सरस्वतीन्द्र जीवन आदि ६९ पुस्तकों के लेखक

स्वर्गीय

## मनोषि चिम्मनलाल जी

मृत्यु संवत् १९९०, जन्म सम्वत् १९११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म् ❀

# मंगलाचरणम्

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयःशान्तिः । बनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

अर्थ—हे सर्व शक्तिमान् प्रभो ! आपकी शक्ति और कृपा से ( द्यौ० ) जो सूर्यादि लोकों का प्रकाश और विज्ञान है वह सब दिन हमको सुखदायक हो, तथा जो आकाश में पृथ्वी, जल, औषधि, बनस्पति, बटादि वृक्ष, संसार के सब विद्वान ( ब्रह्म ) जो वेद यह सब पदार्थ और इनसे भिन्न भी जो जगत् में हैं वे सब हमको सब काल में सुख देने वाले हों, तथा सम्पूर्ण पदार्थ हमारे अनुकूल रहें, जिससे हम लोग सुख पूर्वक रहें। हे भगवन् ! सब भांति से हमको विद्या, बुद्धि, विज्ञान, आरोग्यता और सब उत्तम सहायता को अपनी कृपा से दीजिये और सब जगत् को उत्तम गुण वा सुख के दान से बढ़ाइये ।

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥

अर्थ—( यतोयतः ) हे परमेश्वर ! आप जिस २ देश (जगत्) के रचने और पालन के अर्थ चेष्टा करते हैं उस २ देश से भयरहित कीजिये अर्थात् किसी देश से हमको किञ्चित भी भय न हो, ( शन्नः कुरु० ) वैसे ही सब दिशाओं में आपकी प्रजा और पशु आदि हैं उससे भी हमको भय रहित करें, हम से उनको सुख हो और उनको भी हमसे भय न हो, आपकी प्रजा में जो मनुष्य आदि हैं उन सबके लिये जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पदार्थ हैं वे आप के अनुग्रह से हमको भी सब शीघ्र प्राप्त होवें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पुस्तक बनाने का कारण

प्रिय भ्रातृगण और सुयोग्य महिलाओं ! सन् १८७१ ई० में श्रीमान् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी दयानन्दजी सरस्वती भ्रमण करते हुए कासगञ्ज जिला एटा में पधारे। आप ने नगर निवासियों को बहुत दिनों तक अपने सत्योपदेशों से कृतार्थ किया। आपके मनोहर एवं युक्तिसंगत विचारों को सुनते २ मेरी मानस प्रवृत्तियों ने भी पलटा खाया और मैं मन, वचन, कर्म से वेदाज्ञा के पालन करने में प्रवृत्त होगया अस्तु।

एक दिन घर में गृहस्थाश्रम के विषय में समझा रहा था कि मेरी बहिन नारायणीदेवी ने कहा भाई देवनागरी में कोई ऐसी पुस्तक नहीं जिसमें गृहस्थियों के कर्तव्य कर्मों की अच्छे प्रकार व्याख्या हो, जिसे हम सब पढ़ तदनुसार चल आनन्द भोगें।

मान्यवरो ! इसी अभाव की पूर्ति करने के लिये, मैंने परमेश्वर का नाम लेकर पुस्तक लिखना आरम्भ कर दिया, परन्तु काल की गति विचित्र है—मेरी पूज्या माता चाची तथा प्रिय सहोदरा बहन का स्वर्गवास होगया—भगिनी की इच्छा उनके जीवन काल में पूर्ण न हो सकी अतएव बहिन की पुण्य स्मृति में प्रस्तुत पुस्तक का नाम 'नारायणी शिक्षा' रख-कर आपकी भेंट करता हूं।

प्यारे भ्रातृगण और सुयोग्य महिलाओ ! प्रभु की अपार दया एवं परोपकारी विद्वान महात्माओं की कृपा और सहायता से भारत जननी के पुत्र पुत्रियों को सुबोध कराने तथा उनके जीवन को आदर्श बनाने के लिये मैंने इस बृहत्पुस्तक में वेदादि अनेक सद्ग्रन्थों से स्त्री शिक्षा तथा ग्रहस्थाश्रम में आने वाले समस्त उपयोगी विषयों एवं कर्तव्यों का अच्छे प्रकार वर्णन किया है।

परम पिता जगदीश्वर से प्रार्थना है कि वह हम सबको सुबुद्धि दे, जिससे हम ग्रहस्थधर्म का भले प्रकार पालन करते हुए अपने जीवन को सुफल कर सकें।

लेखक—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

# नारायणी शिक्षा

अर्थात्

## गृहस्थाश्रम

प्रथम भाग

## स्वास्थ्य अर्थात् तन्दुरुस्ती

नवीय शरीर में वात, पित्त और कफ़ यह तीन दोष, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और ओज यह आठ धातु तथा मूत्र, पुरीष (पाखाना) पसीना आदि मल समूह उपयुक्त (ठीक ठीक) मात्रा में रहते हैं एवं जिसका मन प्रसन्न और इन्द्रियाँ प्रफुल्लित हों उसको स्वस्थ, आरोग्य अथवा तन्दुरुस्त कहते हैं जैसा कि वैद्यकाचार्यों का उपदेश है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समदोषः समाग्निश्च समधातुमलः क्रिया ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थमित्यभिधीयते ॥

संसार की सम्पूर्ण वस्तुओं में आरोग्यता को ही सब से श्रेष्ठ माना है । जिन पर ईश्वर की कृपा होती है उनको ही यह अपूर्व पदार्थ मिलता है । धन आदि सांसारिक पदार्थ इसकी तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि जो स्त्री पुरुष निरोग हैं जिनका शरीर हृष्ट पुष्ट और बलवान है वही सारे संसार के सब पदार्थों को प्राप्त कर लेते हैं । फूंस की झोंपड़ी में पड़े हुए निरोग, निर्धन पुरुष को जो सुख है, वह सुख शीश महलों में निवास करने वाले रोगी राजाओं को नहीं । इंगलैण्ड देश के हेनरी फ़ोर्थ नामक बादशाह ने अपनी दशा का मिलान प्रजा के एक दीन पुरुष से करते हुए कहा है कि "मुझको अपने जीवन में वह आनन्द नहीं मिला जितना सुख कि मेरे सामने फूंस की झोंपड़ी में पड़े उस दीन को प्रति दिन रहता था । यद्यपि उस दीन से मेरे यहां प्रति दिन उत्तम से उत्तम भोजन बनते थे पर भूख न होने के कारण मुझे उनमें कुछ स्वाद ही न आता था । इसी प्रकार मेरे सोने के कमरे बड़े लम्बे चौड़े हवादार तथा बिछौने साफ़ सुथरे और गुदगुदे थे तो भी उन पर मुझे गहरी नींद न आती थी । इसका मुख्य कारण मेरे स्वास्थ्य का ठीक न रहना था" । इसलिये प्रत्येक स्त्री पुरुष को भरसक स्वस्थ रहने के लिए यत्न करना चाहिये । वेद में स्पष्ट आता है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मनुष्य परमेश्वर की प्रार्थना पूर्वक अपने सब से अमूल्य शरीर को प्रयत्न से सर्वथा स्वस्थ रखता हुआ मानसिक बल बढ़ा संसार का उपकार कर सदा सुख भोगे। पाठकगण आरोग्यता से ही उत्तम सन्तान, तीव्र बुद्धि, दीर्घायु, पवित्र जीवन, श्रेष्ठ विचार, स्वतंत्रता, पुरुषार्थ, कर्तव्य परायण ! महत्व की आकांक्षा आदि तथा धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति होती है जैसाकि—

धर्मार्थ काम मोक्षणा मारोग्यं मूल कारणम्।

ऐसा ही यजुर्वेद अ० १२। मं० ७६ में कहा है और किसी कविका वाक्य है।

कुछ न कठिन संसार में जो शरीर नीरोग।
धर्म अर्थ, अरु मोक्ष सों ह्वै है तुरत सँयोग॥

सच तो यह है कि बिना आरोग्यता के न तो सांसारिक सुख मिलना और न पारमार्थिक आनंद, इसलिये स्वास्थ्य को हाथ से खो देना मानो मनुष्य जीवन के मुख्य उद्देश्य का सत्यानाश मार देना है अतएव मनुष्यों को अनन्त परमेश्वरीय प्रकृति से सूक्ष्म और स्थूल रूप के ज्ञान से उपकार लेकर सन्तानों सहित धनी, स्वस्थ और चिरंजीवी बनना योग्य है जैसा अथर्ववेद काण्ड ३ सूक्त १० मन्त्र १ में उपदेश है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संवत्सरस्य प्रतिमायांत्वा रात्र्युपासमहे
सान आयुष्मतों प्रजां रायस्पोषेण संसृज ॥

महर्षि वाग्भट्ट जी का उपदेश है कि जो मनुष्य दिनचर्या, रात्रिचर्या, और ऋतुचर्या के अनुसार कार्य करते हैं वही आरोग्य रहते हैं जैसा कि—

दिनचर्यां निशाचर्यामृतुचर्यां यथोदिताम् ।
आचरन् पुरुषः स्वस्थः सदातिष्ठतिनान्यथा ॥

एक डाक्टर का मत है कि स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर तथा उत्तम स्वभाव का परिणाम ही सौन्दर्य है । निःसंदेह स्वास्थ से सौन्दर्य की प्राप्ति और शरीर की उन्नति होती है। स्वास्थ्य से ही सम्पूर्ण शरीर की नस नाड़ी आदि, अपना कार्य पूर्ण रीति से करती हैं ।

स्वस्थ पुरुष का मस्तिष्क

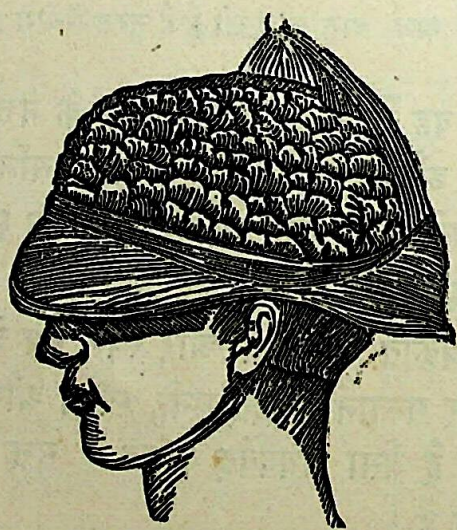

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## स्वस्थ पुरुष की नस नाड़ियाँ

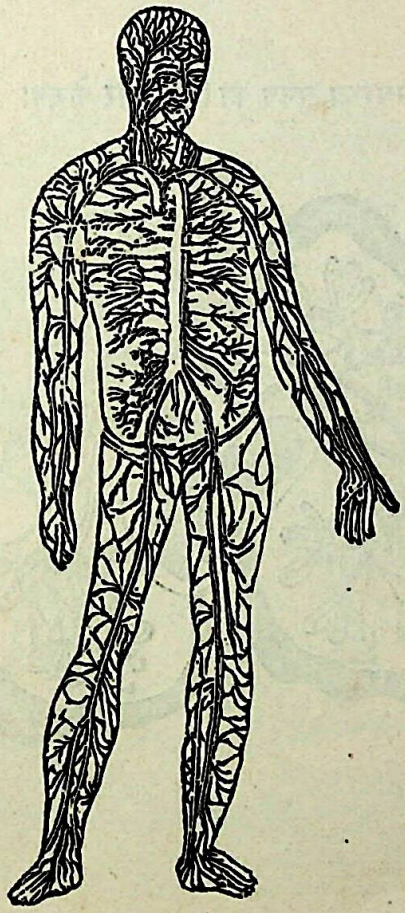

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्वस्थ्य पुरुष का दिल और फेफड़ा

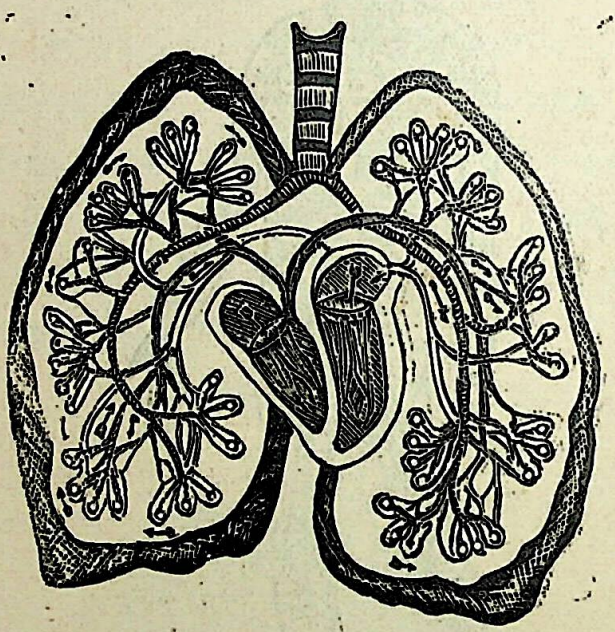

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## शरीर के मध्य भाग की मजबूती

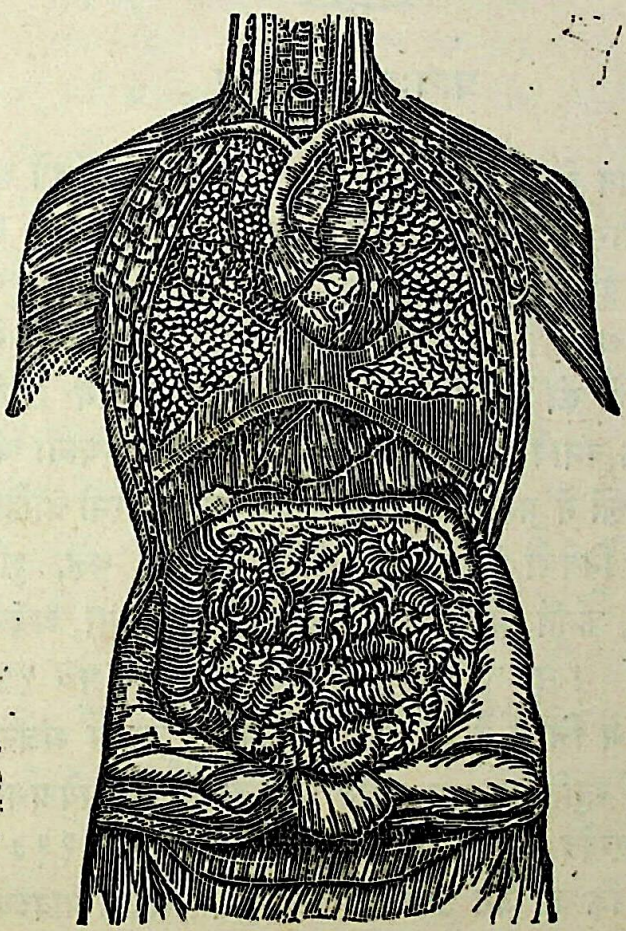

शरीर सम्बन्धी विशेष ज्ञान के लिये हमारी बनाई "शरीर विज्ञान" नामक पुस्तक को देखिये मूल्य ॥) डा० व्य ।=)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वास्थ रक्षा के नियम

## प्रातःकाल उठना

जगत पिता जगदीश्वर ने दिन काम करने के लिये और रात्रि आराम के हेतु बनाई है। ऋग्वेद अ० ४ मं० ५ सं० ७७ में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि जिस प्रकार सूर्य्य, पृथिवी आदि नियमानुकूल कार्य्य करते हैं, उसी प्रकार सब स्त्री पुरुषों को प्रति दिन रात्रि के चौथे पहर में उठकर ईश्वर के बनाये नियमों का आश्रय लेकर सब स्थानों और सब कालों में महान् पुरुषों के समान उन्नति करनी चाहिए। ईश्वरीय नियमों पर चलने से ही आरोग्यता, बल, बुद्धि, पुरुषार्थ, कीर्ति आदि की वृद्धि होती है, जैसा अथर्व० का० १० । सू० ७ । मं० ३१ तथा का० २० । सू० १४२ मं० २ में लिखा है कि प्रातः ऊषाकाल में उठकर अजन्मा प्रभु की स्तुति कर धन, कीर्ति और आनन्द के लिये प्रयत्न करे। ऋग्वेद अ० ८ मं० ३ मं० १ अ० १६ सू० ११३ में कहा है कि जो जन ऊषा के पहिले शयन से उठ आवश्यक कर्म करके परमेश्वर का ध्यान करते हैं वे बुद्धिमान और धार्मिक होते हैं अथर्व का० १६ । सू० ६ । में लिखा है कि मनुष्य प्रभात बेला में उठकर वेद शास्त्रों को विचारें तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की स्वस्थता और स्मृति बढ़ती रहती है महर्षि चरक ने उपदेश किया है।

ब्रह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्वस्था रक्षार्थमायुषः।
तत्र सर्वार्थे शान्त्यर्थं स्मरेच्च परमेश्वरम्॥

आयु एवं आरोग्यता की इच्छा करने और पापों से बचने के लिये स्त्री पुरुषों को ब्रह्ममुहूर्त में उठ कर प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। इसके उपरांत प्रातः ऊषाकाल में ईश्वरीय दृश्यों के देखने से बुद्धि चैतन्य होती, मुखड़े की चमक बढ़ती और मस्तिष्क की शक्ति प्रबल होती है। जिस प्रकार ऊषा अंधकार को दूर करती है उसी प्रकार ऊषाकाल में शुद्ध हृदय से प्रभु से की हुई प्रार्थना अज्ञान को मिटाती हुई हृदय पटल पर शुद्ध संकल्प और शुद्ध कामना का प्रभाव डाल जीवन को आदर्शमय बनाती है। इसलिये सम्पूर्ण तत्व दर्शियों ने एक स्वर होकर यही उपदेश किया है, कि प्रत्येक नर नारी को उपरोक्त लाभों की प्राप्ति के लिये ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिये, परन्तु बिना जल्दी सोये शीघ्र उठने से शरीर दुर्बल होजाता है और आंखों में जलन पड़ती है, आलस्य घेरे रहता है अतएव ९ वा १० बजे सो जाना चाहिये जैसा कि किसी कवि ने कहा है—

सदा रात को सोय के, जो जागै बड़ भोर।
खोवे रोग शरीर सों, गहत ज्ञान की डोर॥
जो काटे मद पान कर, सारी रैन अचेत।
प्रात होत सोवै सदा, सो बोवै दुख खेत॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वायु प्रात का चलत है, तन मन के अनुकूल ।
उठ कर जो उस समय में, सोवै ताकी भूल ॥
प्रातः जागे छवि बढ़े, अङ्ग होय बलवान ।
मन की सुख कलिका खिले, बुद्धि होय बलवान ॥
जो मांगे उठ प्रात में, प्रभु में ध्यान लगाय ।
सो पावे भगवान सों, दुख की आंच बुझाय ॥
प्रात समय में चलत है, वायु स्वर्ग की आय ।
तामें आनँद होत सब, मन प्रमाद को पाय ॥

इसी समय वस्ती के बाहर बागों की शोभा देखने में बड़ा आनन्द मिलता है क्योंकि पेड़ों से स्वच्छ प्राणप्रद वायु निकलता है जो बाहर आने वालों की श्वांस के साथ भीतर जाता है और शरीर प्रफुल्लित रहता है ।

दिन निकलत जो बाग़ की शोभा देखै जाय ।
फल फूलहि अरु पेड़ की तरो देखि हरषाय ॥
तिन के मन आलस कभी नहिं होवे श्रम पाय ।
देह खेद की बात को नहिं जाने कस आय ॥

इसलिये प्यारे भाइयो और बहिनो ! देखो प्रातःकाल चिड़ियां कैसी चहचहाती हैं । कोयल कू कू करतीं, मैना तोता आदि सब उस सृजनहार परमेश्वर के स्मरण में चित्त लगाते और मनुष्यों को जगाते हैं फिर कैसे शोक का स्थान है कि हम सब से उत्तम होकर पक्षी पखेरुओं से भी निषिद्ध कार्य करें और उनके जगाने पर भी चैतन्य न हों । इसके उपरान्त यही समय योगाभ्यास वा ईश्वरा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



धन के लिये नियत है। इसीलिये जिस प्रकार हमारे प्राचीन ज्ञानवान सभी नर-नारी प्रातःकाल उठ प्रभु का स्मरण कर इह लौकिक और पारलौकिक कर्मों को करते थे वैसे ही करने का आप भी अभ्यास कर सुख प्राप्त कीजिये।

## वायु सेवन

पदार्थ विद्या से यह सिद्ध है कि जिस प्रकार पानी के बड़े बड़े समुद्र पृथ्वी पर हैं उसी प्रकार हवा के भी हैं। जिस भांति मछलियां पानी में रहती और बिना उसके कुछ मिनट में मरजाती हैं, इसी तरह हम भी हवा में रहते हैं और बिना उसके हमारा जीवन नहीं होसकता क्योंकि बिना हवा के न आग जलती, न शब्द सुनाई पड़ता और न वर्षा आदि होती है। वायु प्रायः ३ प्रकार की होती है। १—प्राणप्रद, २—नाइट्रोजन, ३—कार्बोनिक एसिड गैस। प्राणप्रदवायु द्वारा ही प्राणी जीते हैं वह बड़ी तीक्ष्ण होती है। नाइट्रोजन—इससे जलता दीपक बुझ जाता है यह हवा में प्राणप्रद से चौगुनी होती है। कारबोनिक एसिड गैस—यह भारी होती है। इसमें भी दीपक बुझ जाता है। यह बनस्पति का जीवन है, वह इसको खींचती है और बदले में प्राणप्रदवायु को देती है। वायु में पानी और भाप भी मिली रहती है और यदि यह हवा में न होती तो सूर्य्य की गरमी से सब हवा गर्म होजाती फिर श्वांस द्वारा मनुष्यों के शरीर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



झुलस जाते, खून में हरारत उत्पन्न होजाती, वृक्ष मुरझा जाते इसलिये परमेश्वर ने जो सब हकीमों का हकीम है इन उपरोक्त वस्तुओं को यथा रीति मिलाकर वायु को जीवधारियों के जीवन के लिये बनाया है।

जैसे नहाने धोने से शरीरके बाहर शुद्धता होती है वैसे ही श्वांस द्वारा भीतर शुद्धि होती है अर्थात् जब मनुष्य श्वाँस लेता है तो हवा अन्दर जाती है उसमें का प्राणप्रद वायु खून में मिल जाता है जो अशुद्ध खून को साफ़ करता है तथा शेष भाग हवा की गंदगी को लेकर बाहर निकल जाता है उसमें बहुत कम और जो बाहर आता है उसमें सौ गुना कारबोनिक एसिड गैस होता है। इसके अनुकूल कितना गंदगी श्वांस द्वारा बाहर आती है लेकिन प्रति समय ही आभ्यान्तरिक स्नान होता रहता है इतना ही नहीं बल्कि जितनी हवा परमेश्वरीय नियमों से बिगड़ती है उतनी ही शुद्ध भी होती रहती है वायु के शुद्ध करने के लिये परमेश्वर ने नाना प्रकार के पुष्पादि सुगंधित वस्तुओं को उत्पन्न किया है। इसी हेतु हमारे पूर्वजों ने वस्ती से बाहर वायु सेवन करने की आज्ञा दी है। क्योंकि रात्रि शयन के पश्चात् अलसाये हुए शरीर में, विविध प्रकार के फूलों फलों से युक्त वृक्षों और पौधों से निकली हुई सुगंध भरी ताज़ी वायु नवीन उत्साह एवं स्फूर्ति उत्पन्न कर देती है। दाह एवं पित्त का शमन होजाता है मन शांत और चित्त प्रसन्न हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाता है। जठराग्नि बढ़ती है, अतएव शरीर पुष्ट होजाता है। वैद्यक ग्रन्थों में प्रातःकाल वायु सेवन करना आरोग्य-वर्धक बताया गया है; लेकिन वर्षा और आंधी तथा जिस समय चतुर्मुखी (चारों ओर की) हवा चल रही हो उस समय वायु सेवन के लिये न जावे।

## शौच

प्राचीन समय में स्त्री पुरुष प्रातः उठ नगर गांव के बाहर जङ्गल में शौच जाया करते थे परन्तु वर्तमान समय में गृहों के भीतर टट्टी जाते हैं, इस से सम्पूर्ण घर में दुर्गन्ध फैली रहती है जिस से आरोग्यता में हानि पड़ जाती है। इसके उपरांत बहुधा घरों में रसोई का स्थान और संडास और कुआँ समीप समीप होते हैं जिससे कुयें के पानी में भी दुर्गन्धित परमाणु जाते रहते हैं और वह पानी को भी बिगाड़ देते हैं। रसोई घर में दुर्गन्ध के कारण रसोई में भी आनन्द नहीं आता। इस हेतु यदि घर में शौच घर बनाना हो तो वह एकांत में। कुआँ और रसोई गृह से दूर बनवावे। क़दमचे ज़मीन और मोरी सब पक्के हों। पाख़ाने जाने वाले आबदस्त लेते समय उसमें पानी न जाने दें क्योंकि पानी से मैला शीघ्र सड़ कर दुर्गंध फैला देता है इस हेतु पानी से बचा कर पाख़ाने पर फ़ौरन थोड़ी राख डाल देनी चाहिये जिससे दुर्गंध घर में न फैले। पाख़ाना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पतला अथवा सूखा होना अच्छा नहीं वरन् सर्प के समान शौच होना अच्छा है। बहुधा मनुष्यों को शौच देर में होती है किसी किसी को शौच के समय शब्द होते हैं वह अच्छी बात नहीं। इसीलिये इन सब बातों का ध्यान कर शौच शुद्ध होने का यत्न करना चाहिये जो आरोग्यता की जड़ है। पाखानों को प्रति दिन स्वच्छ पानी से साफ़ करा देना उचित है। शौच के पीछे मिट्टी के ढेले से गुदा को साफ़ कर शीतल जल से भले प्रकार स्वच्छ करनी चाहिये, जिससे दुर्गंध, एवं अपवित्रता का नाश होजाता है, बुद्धि शुद्ध होती है, आयु बढ़ती है जैसा कि चरक में लिखा है। परन्तु गर्म जल से आबदस्त न ले क्योंकि ऐसा करने से बवासीर आदि रोग होजाते हैं। इसके उपरान्त मूत्रेन्द्रिय को बिना प्रयोजन कभी न छुये, हां पेशाब पाखाने जाते समय ठंडे जल की धार से नित्यप्रति धोना चाहिये। इस रीति से जिस प्रकार पेड़ की जड़ में पानी देने से सम्पूर्ण पेड़ हरा भरा और चैतन्य हो जाता है, उसी प्रकार इस क्रिया से सम्पूर्ण शरीर ठंडा और शान्त हो जाता है, मन की चंचलता और स्वप्नदोष आदि बीमारी जाती रहती हैं। सुश्रुताचार्य के कथनानुसार सूर्योदय से प्रथम शौच जाने से आंतों का गुड़गुड़ाना, पेट का फूलना तथा भारीपन दूर होकर आयु की वृद्धि होती है। जो स्त्री पुरुष धूप निकलने पर पाखाने जाते हैं, उनकी बुद्धि मलिन, मस्तक न्यून बल,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वाला तथा शरीर में अनेक रोग हो जाते हैं। बहुधा जन आलस्य में फँसकर मल मूत्र के वेग को रोकते हैं जिससे पथरी–मूत्रकृच्छ–शिररोग–पेड़ू में दर्द और पीठ में पीड़ा हो जाती है, इसी भाँति छींक–डकार–हिचकी–अपानवायु को भी न रोकना चाहिये। इस से भी अनेक रोग हो जाते हैं। पाखाना फिरने में ज़ोर न लगाना चाहिये, क्योंकि इस से वीर्य गरमी पाकर पेशाब की राह निकल जाता है जिससे कमज़ोरी आजाती है।

पाखाना साफ़ होने के लिये सब से अच्छा उपाय यह है कि चारपाई पर से उठकर २०–२५ मिनट टहले, फिर पाखाना जावे; या नाक बन्द करके ५–६ घूंट बासी पानी पीवे, उसके १० या १५ मिनट के बाद पाखाना जावे। यदि बहुत ही क़ब्ज़ रहता हो तो रात को २। ३ मुरब्बे की हर्ड़ गुठली निकाल कर खाले ऊपर से पावभर गुनगुना दूध मीठा डालकर पीने से प्रातः दस्त साफ़ आता है। आठवें दिन पावभर गुनगुने दूध में दो तोला घी खूब गरम कर डाले और माफ़िक से कुछ ज़्यादह मीठा डाले तो इसके सेवन से मलाशय साफ़ होजाता है। चतुर्मास अर्थात् वर्षा के दिनों में कमसे कम एक बार हर माह में युवा पुरुष को ४ तो० कास्ट्रायल दूधमें मिलाकर पी लेना चाहिये।

२–सौंफ़, सोंठ, सनाय, सेंधा नमक और बड़ी हर्ड़ का बकला–समान भागले कूट छान ६ माशा फांक ऊपर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



से गुनगुना मीठा पड़ा दध अथवा पानी पोना चाहिए। बच्चों को अवस्था के अनुसार २ या ३ माशे देना चाहिए इससे सुबह पाखाना साफ़ होगा।

३–पित्त प्रकृति वालों और गरम मिजाज़ वालों को १०–१५ दाने मुनक्का और २ तोला गुलकन्द को डेढ़पाव पानी में उबाल डेढ़ छटांक रहजाने पर उतार छान रात को पीना चाहिये।

४–एक या २ मुरब्बे की हर्ड़ खाकर ऊपर से दूध पीने से भी प्रातः दस्त साफ़ हो जाता है। यदि इस पर भी कब्ज़ रहे तो हमारी बनाई [ घरका हकीम मूल्य १) डा० व्यय ।≡) ] पुस्तक में से दस्तावर नुसखों का प्रयोग कीजिये।

पाखाने से आकर हाथों को पहिले खूब मल मल कर पीली चिकनी मिट्टी से धोये जिससे पाखाने की दुर्गंध तथा विष दूर होजावे फिर पैर, मुंह, नाक को अच्छे प्रकार धोवे, कुल्ले खूब कई बार करे, आंखों के कीचड़ छुटा धीरे २ ठण्डे पानी के छींटे मारे इस से मल की थकावट दूर हो आंखों में तरावट आती है।

## दांतों का साफ़ रखना

दांतों को साफ़, चमकीला रखने से स्वास्थ्य की वृद्धि और सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। पेट की खराबी एवं नज़ले से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दांत ख़राब हो जाते हैं, आमाशय की कमज़ोरी का दांतों पर बुरा असर पड़ता है। मांस, मदिरा, पान सुपारी और बीड़ी, सिगरेट, तथा मैदा की चीज़ों के सेवन से भी दांत निकम्मे होकर जल्द गिर जाते हैं। इस लिये दांतों की स्वच्छता की परम आवश्यकता है।

भोजन सादा, तर, शीघ्र पचने वाला हो। फल और हरे शाकों का अधिकतर सेवन होना चाहिये। भोजन करने के बाद दांतों को खूब कुल्ले कर साफ़ करना चाहिये। भोजन करने के बाद दांतों को खूब कुल्ले कर साफ़ करना चाहिये। बच्चों के दूध के दांत यदि खूब साफ़ रक्खे जावें तो उनके अन्न के दांत बहुत अच्छे निकलेंगे। उँगली चूसने से दांत बाहर को निकल आते हैं। 'इससे बच्चों के दांतों पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। प्रत्येक स्त्री पुरुष को नीम, खैर, बड़, कीकड़, मौलसिरी, सहोड़ा आदि कड़ुवे, चरपरे एवं दूध वाले पेड़ों की हरी डालियों की दातौन ले, उसके एक सिरे को दाढ़ से कुचल कर कूँची के समान बना लेना चाहिये, इससे दांतों को खूब साफ़ करना चाहिये।

दातौन को मसूढ़ों पर कभी न चलाना चाहिये। इससे उनके छिल जाने का डर है।

दातौन के करने से मुंह की दुर्गन्धि, बेज़ायक़ापन, दांतों का मैल दूर होकर भूख खूब लगती है। जीभ साफ़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करने के लिये सोना, चांदी तांबा अथवा पीतल की जिव्ही बना कर या दातौन को चीर कर धनुपाकार करके उससे जीभ खुरचना चाहिये। इससे जीभ का मैल दूर होजाता है और आंख, मुंह, नाक, कान आदि का मैल और बादी का पानी निकल जाता है।

जिनके गले, होठ, जीभ वा दांतों में दर्द, मुंह में छाले या सूजन, खांसी, कै, अफरा, हिचकी, बेहोशी, मितली, सिर दर्द, लकवा, मुंह से खून आने, बुखार और आँखों की बीमारी हो, उन्हें दातौन नहीं करना चाहिये।

जब दातौन न मिल सके, उस समय मंजन काम में लाना चाहिये। कुछ मंजन नीचे लिखे जाते हैं।

(१) सेंधानोन, सोंठ, भुनाज़ीरा इन तीनों को बारीक पीसकर दांतों पर मले अथवा मजीठ २ तोला, कोयला ढाक १ तोला, नमक १ तोला, माजू १ तोला, रूमीमस्तंगी १ तोला, इनको बारीक पीसकर मले।

( २ ) इलायची छोटी–त्रिफला–माजूफल–बड़ी हर्ड़ कपूर–खैरसार–सेंधानमक, सुपारी, अनार के छिलके, बंसलोचन, नीलाथोथा, मजीठ, रूमीमस्तंगी, सुपारी जली हुई, लोध, फिटकरी इन सबको बराबर बराबर लेकर चूर्ण कर लगावे अथवा बबूल के छिलके में आठवां भाग फिटकरी भुनी और नमक पीसले और लगावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( ३ ) मूंगा की जड़ की भस्म ६ माशा, वंसलोचन धनियां, इमली के बीज की गिरी, चिकनी सुपारी एक २ तोला, माजूफल कहरबां, पपरिया क़त्था छः छः माशा बारीक पीस कर लगाने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर होकर दांत मज़बूत हो जाते हैं।

यदि दांत उखड़ गये हों और उनमें खून निकलता हो तो नीचे लिखे मञ्जन को दांत में लपेट उखड़ी हुई जगह पर धर कर दूसरे दांत से दबाये रक्खे और उसके चारों तरफ़ मंजन खूब लगादे दांत जम जायगा।

नीलाथोथा, कत्था पपरिया चौदह २ माशा, सेंधा नमक ७ माशा, दम्बुल अखबैन ६ माशा, ज़ीरा ३॥ माशा, धनियां भुना हुआ ७ माशा, सोंठ १॥ माशा, मिर्चकाली १॥ माशा, मस्तंगी, कसीस, कपूरकचरी, कबाबचीनी, मौलसिरी हर एक १॥ माशे, इनमें नीलाथोथे को आग पर भूने मस्तगी और कसीस को अलग पीसे फिर सबको मिलाले। इसको प्रातः सायङ्काल दांतों पर मलने से दांतों का दर्द, हिलना, सूजन, खून निकलना दूर हो दांतों की बीमारियां नष्ट हो स्वास्थ एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है*।

* विशेष सिद्धान्तों की चिकित्सा हमारे बनाये 'घर के हकीम' में देखिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## कुल्ला व ग़रारा

पतली दातौन को गले में डाल कफ़ को साफ़ करे। यदि हलक़ में छाले हों तो दातौन को न डाल धनियां को पानी में उबाल उसमें फिटकरी का चूरन वा शहद मुआफ़िक़ का मिला ग़रारा करे, इससे हलक़ साफ़ हो जाता है। इसके पश्चात् ठण्डे जल से कुल्ला करे ऐसा करने से कफ़, प्यास और मैल दूर हो जाता है।

## आंखों का धोना

दातौन एवं कुल्ली करने के पश्चात् आंखों को खोल कर ताज़ी पानी अथवा त्रिफला के पानी से छींटे तथा ताड़े देना चाहिये। इससे ढलका, धुंधलापन आदि नेत्रों की बीमारी नहीं होती, दांत मज़बूत होते हैं, सिर में दर्द नहीं होता और स्मरण शक्ति बढ़ती है।

## केशों की रक्षा व स्वच्छता

यदि हम सम्पूर्ण भारतवर्ष पर एक साथ ही दृष्टि दौड़ा जावें तो हमें ज्ञात होगा कि सम्पूर्ण देश में बाल सँवारने की प्रथा किसी न किसी रूप में पाई जाती है; परन्तु अभाग्यतः आज भारतीय नर नारी केशों की वास्तविक रक्षा का ध्यान नहीं रखते, जिससे हमारे बाल समय से पहले ही पक कर झड़ने लगते हैं और इतर जनों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हमारे बुढ़ापे का आभास सहज में ही होजाता है। इस हेतु यथा समय केशों की वृद्धि और स्वच्छता के लिये सप्ताह में दोबार बालों को अवश्य धोना चाहिये। आजकल बालों को धोने के लिये कई चीज़ें इस्तैमाल की जाती हैं। इन सब में से मुल्तानी मिट्टी, आँवला, बेसन, सुहागा और दही मुख्य हैं।

**मुल्तानी मिट्टी**—इस को महीन पीस कर पानी में भिगो दें। फूल जाने पर कड़वा तेल मिला कर बालों में मल लेना चाहिये। दही भी अच्छा है, परन्तु इससे शिर धोने के पश्चात् बालों की चिकनाई मल-मल कर छुड़ा देनी चाहिये। आँवले का प्रयोग बालों को काला और दृढ़ बना देता है। इस हेतु इन्हें इस्तैमाल करना लाभदायक है। सूखे आँवलों को महीन कूट पीस कर शाम को पानी में भिगो दें। प्रातः को उठ कर उन्हें खूब मल कर छान लें। इस पानी से शिर को धोवें। अथवा नागर मोथा, कचूर, बालछड़, आँवला—इन सबको बराबर बराबर ले पानी में पीस लेना चाहिये। यह भी केशों को बहुत लाभदायक होता है।

शिर को धोने के पश्चात् बालों को खूब सुखा लेना चाहिये। जब वे भलीभांति सूख जावें तभी तेल डालना चाहिये। तेल डालने के पश्चात् बालों को कंघी से काढ़ना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


योग्य है। बालों का काढ़ना ही उनका व्यायाम है। केश काढ़ने से नेत्रों का प्रकाश बढ़ता है, बालों की जड़ में मैल नहीं जमता और खून की संचालन-क्रिया ठीक बनी रहती है जिससे सिर में कभी दर्द नहीं होता। बाल नर्म और काले हो जाते हैं मुख की शोभा, तथा विशेष कर स्त्रियों के सौंदर्य की वृद्धि होती है। सचमुच स्त्रियों के रूप का मुकुट केश ही हैं।

बालों को गूंथने की भी कई युक्तियाँ हैं। कोई स्त्री अपने बालों को घुंघराले बना लेती है। चोटी को दो भागों में करके गूंथने से स्वास्थ्य की वृद्धि और सौन्दर्य का प्रकाश होता है। इस हेतु केशों को दोवेणियों में विभाजित करके कनपटी पर घुंघराले कर लेना चाहिये।

## बाल बढ़ाने तथा काले करने का तेल

१—नील के पत्र, पियाबांसा, भंगरा, अर्जुन वृक्ष के फूल, विजयसार के फूल, कमल जड़ सहित, लोह चूरन, फूल प्रियंगु, अनार की छाल, त्रिफला, हरी गिलोय, कमल की जड़ की मिट्टी, केतकी की जड़, तगर—इनको बराबर बराबर ले अठगुने पानी में औटावे, जब चौथाई रहे, तब उसके बराबर भंगरे का रस मिला दोनों रसों से आधा तिली का तेल डाले। फिर इन सबको औटावे, जब रस जल जावे और तेल ही तेल रहे, उतार कर छान लें। इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में यदि चाहें तो किसी प्रकार का अच्छा सेंट डाल कर काम में लावें।

२–**आँवले का तेल**–तिलका तेल ३ सेर, आँवले सूखे पाव भर, बालछड़ ४ तोला, रतन जोत ४ तोला, मजीठ ४ तोला, सफ़ेद चन्दन ४ तोला, छार छबीला ४ तोला, कपूर कचरी ४ तोला, सफ़ेद चन्दन का महीन बुरादा करके गुलाब के अर्क में घिस कर, बाक़ी सब चीज़ों को भी कूट तेल में मिला एक मिट्टी के बर्त्तन में भर कर मुंह पर एक मोटा कपड़ा बाँध दें। यदि गर्मी के दिन हों, तो १० दिन और जाड़े के दिन हों तो १६ दिन इस पात्र को धूप में रक्खें। रोज़ इसे हिला दिया करें। फिर छान कर बोतल में भर काम में लावें।

## हजामत बनवाना

अथर्ववेद कांड ८ सूक्त २ मं० १७ में लिखा है कि मनुष्य क्षौर कराकर अर्थात् हजामत बनवा कर मुख और जीवन की शोभा बढ़ावे।

यत्क्षुरेण मर्कयतासुतेजसा वप्ता वपसि।
केशश्मश्रु शुभं सुखं मानायुः प्रमोषीः॥

महर्षि सुश्रुताचार्य जी का कथन है कि बाल बनवाने नाखून कटवाने से शरीर सुन्दर–हल्का और उत्साहित हो जाता है चित्त प्रसन्न रहता तथा आरोग्यता बनी रहती है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बाल बनवाने से छिद्र खुल जाते हैं जिससे खराब परमाणु निकलती तथा उत्तम वायु उसमें घुसती रहती है, इसलिये समस्त कार्यों को छोड़ चौथे अथवा आठवें दिन अवश्य हजामत बनवानी चाहिये। बहुधा मनुष्य अँग्रेजों की देखा देखी सिर पर बाल रख लेते हैं परन्तु यह नहीं सोचते कि वह ठण्डे देश के रहने वाले हैं उनके लिये बालों का रखना किसी अंश में ठीक है, परन्तु भारत गर्म देश है इस लिये यहां के निवासियों को ऐसा करना लाभदायक नहीं। हजामत बनवाकर पहिले तेल लगाना फिर पानी से धोना उचित है बिना तेल लगाये पानी से धोने से बालों की जड़ कमज़ोर हो उसमें ठण्ड के रोग तथा सफ़ेदी शीघ्र आजाती है।

## उबटन

उबटन से कफ़ दूर होता है, शरीर का मैल साफ़ होकर त्वचा के छिद्र खुल जाते हैं, देह सुन्दर, स्वच्छ एवं कान्तिमय हो जाती है। त्वचा शीशे की तरह चमकने लगती है। शरीर में खून का संचार ठीक २ होने लगता है। इसलिए उबटन अवश्य करना चाहिये परन्तु बाज़ारी उबटनों की अपेक्षा स्वयं घर पर बनाकर लगाना हितकारी है। कुछ सरल उबटन बनाने की विधि यह हैं।

(१) चिरौंजी २ तोला, मसूर की दाल १ तोला, दोनों को गौ के कच्चे दूध में घोटकर शरीर पर लेपन करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(२) बेसन में तेल, पानी और हल्दी डालकर उपयोग में लावे।

(३) दोनों हल्दी और लाल चन्दन को भैंस के दूध के साथ लगावें।

(४) पीली सरसों को दूध में उबाल कर पीस कर लगावें।

(५) यदि एक बार बनाकर रख लेना चाहें तो—बादाम की गिरी पाव भर, गुलाब के फूल छटांक भर, चिरौंजी छटांक भर, मजीठ ३ तोला, मसूर की दाल छटांक भर, हल्दी तीन तोला, सफेद चंदन, लाल चंदन, और सरसों दो दो तोला, केशर छः माशा और कपूर एक तोला—

विधि—बादाम की गिरी साफ़ करके एक साफ़ काच के बर्तन में डाल दें। ऊपर से गुलाबजल इतना डालदें कि बादामों से दो अंगुल ऊपर रहे। जब फूल जावें तब गिरी छीलकर एक खरल या कूंडी में डाल दें। साथ ही मसूर और चिरौंजी भी डाल दें। फिर वही अर्क गुलाब डालकर घोटते जावें। जब खूब घुट जाय तब केशर और कपूर डाल कर फिर घोटें जब तक कि चूर्ण न बन जाय। शेष सब चीज़ों का भी चूर्ण बना इसी में डाल लें। इसे कपड़ छन कर के रख लें और जब ज़रूरत हो थोड़ा सा लेकर पानी में डालकर इस्तेमाल करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## तेल की मालिश

शरीर में शक्ति, अवयवों में स्फूर्ति और रक्त की गति तेज़ करने के लिये मालिश की बड़ी ज़रूरत है, क्योंकि जिस प्रकार तेल लगाने से मिट्टी का बर्तन तथा चमड़ा चिकना, चमकीला और मज़बूत हो जाता है, वैसेही तेल की मालिश से शरीर के अंग प्रत्यंग सुडौल, दृढ़ चमकीले एवं सुन्दर हो जाते हैं। तेल लगा कर व्यायाम करने से प्रत्येक रग को बल पहुंचता है। अधिक चलने फिरने आदि की थकावट, कूंचों की ऐंठन, मस्तक का दर्द और नेत्रों की जलन दूर होकर शांति मिलती है। पैर के तलवे में कड़ुवे तेल की मालिश करने से गहरी नींद आजाती है। सूखा-रोग, पांवों का सुन्नरोग और बिवाई का फटना भी दूर होजाता है। नाक द्वारा कड़ुवे तेल का नास लेने से बार बार होने वाला ज़ुकाम आदि नज़ले की व्यथाऐं दूर होजाती हैं। कानमें तेल डालने से ठोड़ी, गर्दन, और कान के दर्द का नाश होता है। इस हेतु पुराने बुख़ार, खांसी और तपेदिक़ में लाक्षादि, वायु-रोग में माषादि, विषगर्भ और नारायणी तेल, मस्तक पर महा चन्दनादि और हिमसागर तेल, और गर्भावस्था में शतावरी आदि की मालिश करनी योग्य है। परन्तु जिन्हें नया बुख़ार हो, बदहज़मी हो, क़ै आती हो जिन्हों ने जुल्लाव अथवा एनीमा लिया हो उन्हें तेल की मालिश नहीं करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## मालिश ४ प्रकार की होती है

(१) नर्म गर्म टकोर–अर्थात् हाथ की दो उंगलियों से पहले धीरे फिर इतना दबा देना कि शरीर के भीतरी अंगों तक उसका असर पहुँचे। (२) खाल का गूंथना और दबोचना–अर्थात् शरीर के पट्ठों को समयानुसार चारों ओर धीरे धीरे गूंथना और बार बार हाथ फेरना। (३) थपकना अर्थात् हथेली से धीरे धीरे थपथपाना। (४) अंगुली और हथेली से दबाना।

मालिश करने के लिये सबसे उपयुक्त देशी तेल हैं। क्योंकि बाज़ारी तेलों में अधिकतर तेल, व्हाइट आइल के बने होते हैं, जिनसे लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है। इस लिये वैद्यक विधि द्वारा बने हुए तेलों का ही इस्तैमाल करना लाभदायक है।

# तेल के गुण

तेल—सामान्यतया तेल गरम, तीक्ष्ण, पाक मधुर, मनको प्रसन्न करने वाले, पुष्टकारक, खालको चिकना करने वाले, नेत्रों को हितकारी, मूत्र को रोकने वाले, रसमें कसीले, पाचक, बादी और कफ़ का नाश करने वाले, कृमिरोगनाशक, योनिरोग, सिर, कान की पीड़ाओं को शान्त करने वाले, गर्भाशय शोधक और जले हुये आदि के लिये परम हितकारी हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**अण्डीका तेल**—मधुर, त्वचा को हितकारी, योनि और उदर के रोगों को दूर करने वाला है।

**अलसी का तेल**—वादोंका नाश करने वाला, गरम, भारी और पित्तकर्ता है।

**तिली का तेल**—स्वादु मधुर, पित्तकर्ता, विष्ठा और और मूत्र को रोकनेवाला, कफ, बात नाशक—बलकर्ता तथा बुद्धि और अग्नि को बढ़ाने वाला है।

**सरसों का तेल**—खुजली, कृमि, कोढ़ और बादी के रोगों को दूर करने वाला और हल्का है। खालिस सरसों और तिल्ली के तेल के बनाये पदार्थ बलकर्त्ता हैं, लेकिन पित्त प्रकृति वालों को तेल के बने पदार्थ न खाने चाहिये। प्रत्येक गृहस्थी को कडुवे तेल की यदि रोज़ न हो सके तो आठवें दिन अवश्य मालिश करनी चाहिये। गर्भिणी और प्रसूता को भी कड़ूआ तेल लगाकर स्नान करना चाहिये। शिशुकुमारों के भी कम से कम चौथे दिन तेल लगावे, इससे शरीर दृढ़ होता है और खराब पानी का असर शरीर पर नहीं होता। इसके अतिरिक्त सिर पर अनेक फूलों के तेल लगाने का रिवाज पड़ गया है बहुतायत से उनका प्रयोग करना हानिकारक है तो भी फूलों के गुणों के साथ हमने उनका वर्णन आगे कर दिया है जिनको जो जो तेल लगाने हों उसके गुणों पर विचार कर सेवन करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# फूलों के गुण और प्रयोग

**केवड़ा**—मधुर, हल्का, ठंडा, कफ़ नाशक, नेत्रों को हितकारी है। इसका अर्क़ पिया जाता है और इत्र सूंघा जाता है। इसकी बाल होती है।

**मोतिया**—इसका फूल ६ पखुरियों वाला महासुगन्धित सफ़ेद होता है। मुख रोग और कोढ़ में इसका तेल व इत्र लगाया जाता है।

**गुलाब**—शीतल, हृदय को प्रिय, हल्का और वीर्य-वर्द्धक होता है। इसका अर्क़ दाद को नाश करता है और ख़ून विकारों को दूर करता है। दुखती हुई आंख में दो चार बूंद डालने से लाली भी कट जाती है।

**चमेली**—ठंडी, सुगन्धित, कोमल पंखुरियों के फ़ूल होते हैं। इसका तेल सिर दर्द, मुख रोग और ख़ून के विकारों को दूर करता है।

**हिना**—इसके महा-सुगन्धित फूलों का इत्र मस्तक को तरावट देने वाला होता है।

**जुही**—महासुगन्धित नन्हे २ से फूल होते हैं। इसका तेल शीतल, कफ़ और बातकारक तथा मुख, दांत, नेत्र, मस्तक के रोगों को दूर करने वाला होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**कनेर**—इसके सफ़ेद और पीले व लाल फूल होते हैं। इनके फूलों को सूंघना नहीं चाहिये, किन्तु शोभा के लिये गुलदस्तों में ही लगाना चाहिये।

**चम्पा**—इसको भीनी भीनी सुगन्ध वाले पीले फूल होते हैं। यह मधुर शीतल होते हैं और इसका तेल कीड़ों, पेशाब की कड़क और खून विकार को दूर करता है। इसके वृक्ष मालवे में अधिक होते हैं।

**मौलसिरी**—इसके फूल महा सुगन्धित और गोल होते हैं इसके तेल की तासीर गर्म है।

**कमल**—महा सुगन्धित फूल लाल और सफ़ेद रङ्ग के होते हैं। इसके फूलों का इत्र वा अर्क भी खींचा जाता है, जो दाह और पित्त नाशक है।

# सौन्दर्य और उसकी प्राप्ति के साधन

सांसारिक मनोरम्य पदार्थों में सौंदर्य का वह स्थान है जिसकी ओर मनुष्य ही नहीं किन्तु प्राणिमात्र का मन-स्वभावतः ही आकृष्ट हो जाता है। प्राणीमात्र की प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय अपने विषय के सौन्दर्य की ओर उसके मनको खींचती है, यहां तक कि वह सौन्दर्य सुख पर इतना मुग्ध हो जाता है कि उसे अपनी सुध बुध तक नहीं रहती।

नोट—हमारे औषधालय में सब प्रकार के तेल तैय्यार रहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वीणा की कर्ण प्रिय मधुर स्वर लहरी के वशीभूत मृगों का पाशवद्ध होजाना प्रसिद्ध ही है। पुष्प की रमणीयता पर मुग्ध मधुकर का कमल कोश में मुँद जाना सभी जानते हैं। सौन्दर्य सुख में प्रमत्तपतंग को दीप शिखा पर प्राणों की आहुति देते हुए किसने नहीं देखा। जब पशु पक्षियों की यह दशा है तब फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या ? वास्तव में प्रत्येक मनुष्य सुन्दर बनना चाहता है, प्रत्येक स्त्री अपने रूप को नयनाभिराम बनाने की इच्छा रखती है, साथ ही अपने शिशु बालक बालिकाओं को भी सुन्दर बनाने के लिये रात दिन बड़े २ उपाय एवं साधन प्रयोग करती हैं। इस इच्छा पूर्ति के लिये बहुमूल्य समय और धन राशि का भी विशेष रीति से व्यय किया जाता है। साथ ही जिन भाग्यवानों को ईश्वरदत्त सौन्दर्य प्राप्त है, वे भी उसे चिरस्थायी रखने के लिये विविध उपायों का भरसक आश्रय लेते हैं; परन्तु वास्तव में बहुत कम नर नारी सौन्दर्य प्राप्ति के सच्चे साधनों को काम में लाते हैं।

प्रिय पाठक पाठिकाओ ! आप इस सौन्दर्य प्राप्ति के लिये स्पिरिट क्रीम, स्नो, साबुन, पाउडर, पोमेड आदि मुख्य साधन समझते हैं। इनके द्वारा प्राप्त चमक दमक स्थायी नहीं होती। और न यह वस्तुयें सौन्दर्य दे सक्ती हैं किन्तु इनसे सौन्दर्य की उल्टी हानि ही होती है। आपके शरीर में वास्तविक कोमलता, चिकनाई और लालिमा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उत्तम स्वास्थ्य पर ही निर्भर है। आपका स्वाथ्य जितना उत्तम होगा उतना ही उत्तम सौन्दर्य। बनावटी साधनों की सुन्दरता कुछ घन्टों में ही काफ़ूर होजाती है और पीली पीली रूखी चमड़ी दिखाई देने लगती है। शरीर में वास्तविक और स्थाई चमक वा सुर्खी स्वच्छ और अधिक खून के कारण होती है। शरीर के जिस अंग में जितना अधिक खून का संचार होता है, उतना ही शरीर का वह अंग सुन्दर लगता है। रक्त निर्दोष और गाढ़ा होना चाहिये, यह आमाशय के ठीक २ कार्य करने से होता है। यदि थोड़ा भी अपक्व अन्न आमाशय की खराबी से अन्तड़ियों में चला जाता है तो वह वहां जमकर सड़ने लगता है। अन्तड़ियां अपने स्वभावानुसार उस सड़े भाग में से भी जो सार चूसती हैं वह सार विष होजाता है और खून में मिलकर उसे दोषी बना देता है। और खून शरीर में चक्कर लगाते समय रोम कूपों के द्वार पर उस विष को छोड़ देता है। यदि वह विष रोमकूपों से, उनके बंद होजाने के कारण, बाहर नहीं निकलता, तो वहीं जमकर चमड़े को रूखा और काले धब्बे वाला बनाकर बदसूरत एवं दाद, खाज, आदि नाना प्रकार के रोग उत्पन्न कर देता है। इसलिये सौन्दर्य की प्राप्ति के लिये मेदे को साफ़ रखना योग्य है। इसके लिये प्रत्येक नर-नारी और बालक-बालिकाओं को प्रतिदिन कुछ देर व्यायाम करना ज़रूरी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

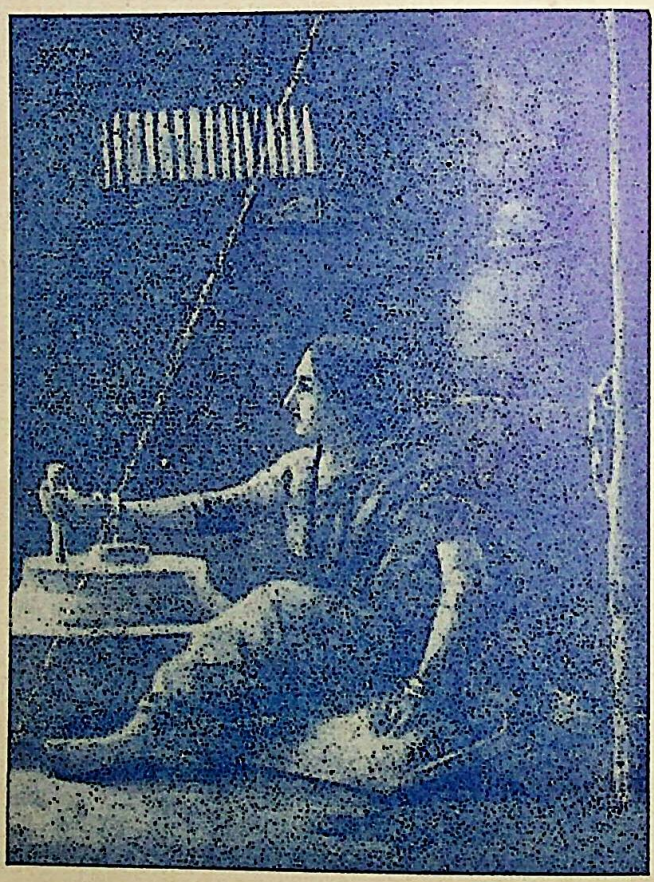

व्यायाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# व्यायाम अर्थात् कसरत

मनुष्य के शरीर की बनावट घड़ी या यन्त्रों के पुर्ज़ों के समान है। यदि घड़ी को असावधानी से पड़े रहने दें, उसे कभी न झाड़ें, न उसमें चाबी लगावें, न उस को साफ़ करावें, तो थोड़े ही दिनों में उसके सारे पुर्ज़े बिगड़ जायेंगे और वह बहुमूल्य घड़ी निकम्मी हो जायगी। यही दशा मनुष्य के शरीर की है। इसका जीवन भी लोहू की चाल पर निर्भर है। अतएव जिस प्रकार पानी किसी ऐसे वृक्ष को जो शीघ्र सूख जाने वाला है, फिर हरा भरा कर देता है, उसी प्रकार शारीरिक व्यायाम भी शरीर के किसी भाग को निकम्मा नहीं होने देता। मनुष्य के शरीर में लोहू की चाल उस नहर के पानी के समान है जो किसी बाग़ में हर पटरी होकर निकलता हुआ सम्पूर्ण वृक्षों की जड़ों में पहुंच सारे बाग़ को सींच कर प्रफुल्लित करता है। प्यारे भाइयो! वाटिकाओं में जितने हरे भरे वृक्ष, रंग बिरंगे पुष्प, अपनी छवि दिखाते, नाना भांति के फल अपनी सुन्दरता से मनको हरते हैं, यह उसी पानी की करामात है। यदि पानी की नालियां न खोली जांय, तो सम्पूर्ण वाटिका के पेड़ एवं बेल-बूटे मुरझा जाते तथा फूल फल कुम्हला कर शुष्क हो जाते हैं जिससे उस शोभायमान उपवन में उदासी बरसने लगती है। और नर-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नारियों को जो तरावट, उत्तम वायु, एवं आनन्द मिलता है, उसके स्वप्न में भी दर्शन नहीं होते।

अथर्ववेद कां० ३। सू० ११। मं० २, ३ में लिखा है कि मनुष्यों को उचित है कि प्राण और अपानवायु को ठीक रख अपनी शारीरिक अवस्था को सुधारें और दुराचारों से बचा अपने जीवन को शुभ कामों में लगावें। ऐसा ही चरक सूत्र स्थान अ० ७ में लिखा है।

लाघवं कर्म सामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेश सहिष्णुता
दोष क्षयोऽग्नि वृद्धिश्च व्यायामादुपजायते

मात्रावत् ( न बहुत अधिक न कम ) व्यायाम करने से देह में हल्कापन, प्रत्येक काम करने की सामर्थ्य, परिश्रम करने में रुचि, दोषों का नाश, जठराग्नि की वृद्धि होती है और शरीर फुर्तीला रहता है।

क्या आपको नहीं मालूम कि इसी व्यायाम के बल से प्रतापी पांडवों ने कौरवों पर विजय पाई, राम ने धनुष को तोड़ा, जितेन्द्रिय लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा। यही कारण था कि उस समय समस्त भूमंडल पर भारतवासियों की ही विजयपताका फहरा रही थी। वर्तमान समय में वीरशक्ति का नाम ही रह गया है और ८० फ़ी सदी भारत वासियों को क़ब्ज़ की शिकायत बनी रहती है। यदि आप इसकी सत्यता की जांच करना चाहें तो अख़बारों के विज्ञापनों पर एक दृष्टि डालिये, आप देखेंगे कि उन में से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अधिकांश उदर-सम्बन्धी बीमारियों को दूर करने वाली दवाओं के हैं। हमारे प्राचीन पुरुष का इस प्रकार की बीमारियों से बचने के लिये, नियम पूर्वक कसरत किया करते थे जिससे अन्न शीघ्र ही पच जाता था, भूख खूब लगती थी, वीर्य सारे शरीर में रम जाता था। इसी कारण शरीर शोभायमान और मन सदा उत्साही बना रहता था। वे पर्वतों के शिखर, भयंकर गुफाओं और युद्ध-स्थलों में निर्भय चले जाते थे। बुढ़ापा उनको शीघ्र नहीं आता था। हमारी पुरानी कहावत मशहूर है कि **साठा सो पाठा;** परन्तु आज २७ साल की अवस्था में ही हमारे चारोंपन पूरे हो जाते हैं। इसलिये इन सब बातों को विचार कर व्यायाम का सबको नियम पूर्वक अभ्यास करने का प्रयत्न करना चाहिये। हम देखते हैं कि स्त्रियाँ अपनी सम्पूर्ण समय और शक्ति को घर के कामों में ही लगा देती हैं। परन्तु यह उनकी भूल है। देखिये, हमारे पूर्व पुरुषाओं ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्त्रियों के ऐसे व्यायाम प्रचलित किये थे जिनसे **एक पंथ दो काज** वाली बात पूरी होती थी। उन्होंने स्त्रियों के लिये चर्खे और चक्की का आविष्कार किया था। इससे उनका घर का काम तो चलता ही था, साथ ही साथ एक अच्छा व्यायाम भी हो जाता था।

भारत के रत्न, महात्मा गाँधी का भी यही मत है कि "स्त्रियों के स्वास्थ्य एवं देशोन्नति का एकमात्र साधन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चर्खा ही है।" क्योंकि घर के कते हुए सूत से बने कपड़े मशीन के बने कपड़ों से कहीं अधिक मजबूत और टिकाऊ होते हैं। इसी प्रकार चक्की चलाने से भी शरीर की प्रत्येक नस का व्यायाम हो जाता था, पसीना आजाता था और हाथों के चलने के कारण आमाशय अपना काम भले प्रकार करता था। साथ ही साथ वह आटा भी हमें बहुत पुष्टि-कारक था। आज मिल के पिसे आटे में इतनी गर्मी पैदा हो जाती है जो उसके सारे पोषक परमाणुओं को नष्ट कर देती है। फिर बतलाइये, उस आटे के खाने से क्या लाभ हो सकता है? इन्हीं कारणों से पुरुषों के साथ ही साथ स्त्रियों का स्वास्थ्य भी अवनति की ओर अग्रसर होता जा रहा है। आज सर्वत्र ही पीले चहरे, धँसी हुई आंखें, झुकी हुई कमर और सूखी हुई पिंडलियां दीखने में आती हैं। छोटी से छोटी उमर में तपैदिक, संग्रहणी जैसी भयंकर बीमारियां उन्हें अपने चंगुल में फंसा लेती हैं। अतएव इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए अपने पूर्व-प्रचलित व्यायामों को अपनाना चाहिये।

कसरत जाड़े और वसंत ऋतु में लाभदायक होती है। परन्तु जो पुरुष चिकने और ताक़त के भोजन प्रतिदिन करते हैं उन्हें प्रतिदिन कसरत करने से हानि नहीं होती। परन्तु जिनको रक्तपित्त, सूखा, सांस, खांसी, उरःक्षत, और क्षय रोग हो उन्हें कसरत करना ठीक नहीं। यद्यपि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यक ग्रन्थों में कसरत करने का समय शीत और बसंत काल बतलाया गया है, परंतु भारतवर्ष में वर्षा-ऋतु में अधिकता से कसरत की जाती है। इसका कारण यह है कि वर्षा में भोजन ठीक नहीं पचता जो कसरत करने से पच जाता, और चतुर्मास में होने वाले रोग भी नहीं होते। कसरत करने के पश्चात् जो मिट्टी लगाई जाती है, उससे शरीर की रगें और पट्ठे मज़बूत हो जाते हैं। प्रसिद्ध पहलवान **गामा** और प्रख्यात् पराक्रमी **मिस्टर राममूर्ति** का कथन है कि (१)"कसरत शरीर के बल के अनुसार देश-काल को देखकर करनी चाहिये।" और अधिक अभ्यास के अर्थ शनैः शनैः बढ़ाना आवश्यक है (२) व्यायाम करने के पीछे एक घंटे तक पानी या शरबत व ठंडाई न पीना चाहिये किंतु भैंस या गाय का गर्म दूध मीठा डाल कर पीना। अथवा (३) गाजर वा बादाम का हलुआ, मालपुआ, रबड़ी, मलाई अथवा १० बादाम की मींग १० इलायची सफ़ेद, ४ माशा धनियां, १ माशा सफ़ेद ज़ीरा, ५ काली मिर्च सिल पर पीस दो तोला मिश्री डालकर चाटे। अथवा १० बादाम की गिरी मिश्री के साथ खावे (४) कसरत करते २ जब शरीर थका हुआ जान पड़े, दम फूलने लगे, उसी समय कसरत करना बंद कर देना चाहिये (५) कसरत करने के पीछे १ घंटे तक कभी स्नान न करे, नहीं तो गठिया आदि रोग हो जाने का डर है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विदेशी कसरतों से अपने देश की कसरतें अधिक लाभदायक हैं इसलिये भारतवासियों को दण्ड, बैठक, मुग्दर, कुश्ती, दौड़ आदि देशी व्यायाम ही सदा करने चाहिये। यह कसरतें भारत देश के ऋतु और शरीर की बनावट के अनुकूल हैं। अन्य देशों की कसरतें उन्हीं देशों को अधिक लाभ देती हैं। इसके उपरांत कसरत के समय पर आसनों का अभ्यास भी करना चाहिये जिनसे शरीर के भीतर की बारीक रगों पर प्रभाव पड़ता है और जिनका प्राचीन समय में बड़ा प्रचार था। आसन अनेक हैं जिनमें ८४ मुख्य कर गिने जाते हैं, इनका वर्णन हम आगे योग विषय में करेंगे। अस्तु, जिस प्रकार शरीर की आरोग्यता के लिये उपरोक्त साधनों की आवश्यकता है, उसी प्रकार शुद्ध जल की भी बहुत ज़रूरत रहती है।

---

# पानी

यजुर्वेद अ० १२ में लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य को आरोग्यता के लिये वायु के समान शुद्ध जल की आवश्यकता है, बिना इसके किसी जीवधारी का जीवन नहीं रह सकता। अथर्व वेद कां० १९ में लिखा है कि वृष्टि, पहाड़, नदी, कूप, तालाब आदि के पानी से खान पान,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती, शिल्प के कार्य चलते हैं और वैद्य लोग जल-चिकित्सा करके आरोग्यता प्रदान करते हैं। इस लिये जठराग्नि को प्रदीप्त एवं हृदय रोग नाशक तथा आरोग्यता, फुर्ती और सब प्रकार से शरीर की उन्नति करने वाले, अमृत के समान स्वादिष्ट उत्तम जल का ही सेवन करना चाहिये।

मनुष्य के शरीर में पानी का भाग दो तिहाई से भी अधिक रहता है अर्थात् जिसके शरीर का बोझ ७५ सेर हो उसमें ५६ सेर पानी होता है। यदि इतना पानी शरीर में न हो तो लोहू स्वच्छ न रह गाढ़ा पड़ जाय और खून के गाढ़े होजाने से उसका चलना बन्द होकर आरोग्यता में अन्तर डाल दे, इसीलिये श्रेष्ठ जलका पीना लाभदायक है। उत्तम जल वही है जिसमें गन्ध न आती हो। मधुर, तिक्त आदि कोई रस जिसमें प्रकट न हो, जिसके पीने से प्यास बुझ जाय तथा जो शीतल, हलका, हृदय को हितकारी और भोजन को शीघ्र पचाने वाला हो। क्योंकि शीतल जल रक्तपित्त विकार, गर्मी, दाह, त्रिदोष, प्यास और मूर्छा रोग को दूर करता है, एवं हल्का और हितकारी होता है, इसलिये स्वादिष्ट शीतल जल को ही भोजन के बीच में तथा भोजन करने के दो घण्टे बाद या जब आवश्यकता हो पीना चाहिये। भोजन करने के बाद केवल कुल्ला कर डाले क्योंकि भोजन के पश्चात् बहुत जल पी लेने से पेट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डबक जाता है, खाना ठीक हज़्म नहीं होता, पेट की नसें कमज़ोर होजाती हैं तथा पेट आगे को निकल आता है। अरुचि, ज़ुकाम, कोढ़, नेत्ररोग, सूजन, क्षय और पेट फूलने वाले कमज़ोर बच्चों को पानी थोड़ा पिलाना चाहिये। भोजन के पहिले खाली पेट, पाखाने से आकर, रात को सोते से उठकर फ़ौरन पानी पीने से **नज़ला, अमरूद बेर, आम, तरबूज़, तिल, ईख** इत्यादि फलों को खाकर पानी पीने से **खांसी, अजीर्ण** इसी प्रकार **मैथुन व्यायाम** आदि परिश्रम वा थकावट में एक दम पानी पीने से **अग्निमन्द** और **उदर** रोग होजाने का भय रहता है। **अजीर्ण** में थोड़ा २ पानी पीने से अजीर्ण नहीं रहता, मद्यपान, ज्वर, वमन, मूर्छा, विष और सन्निपात में पानी औटा ठण्डाकर पिलाना तथा अफरा, पेट के दर्द, जुल्लाब लेने पर, नवीन ज्वर, वायुगोला, खांसी, श्वांस, हिचकी, ज़ुकाम, बादी, मन्दाग्नि, पसली, शरीर में दर्द और जच्चा को गुनगुना पानी पिलाना चाहिये। **बासी** पानी पीने से कफ़ की वृद्धि होती है। खारी पानी पित्तकर्त्ता, कफ़नाशक, दीपन तथा हलका होता है। **बरसाती पानी में** क्वार के महीने का जल लाभदायक है इसी को आकाशी जल कहते हैं। महर्षि सुश्रुताचार्य जी ने कहा है कि वर्षा का जल पीने से थकावट, प्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्हाई और जलन दूर होती है, ख़ून साफ़ होता है, पाचन शक्ति बढ़ती है परन्तु प्रत्येक मनुष्य को ऐसा पानी मिल नहीं सकता। हां धनी पुरुष इस का प्रबन्ध कर सकते हैं कि वर्षा के दिनों में ऊँचे पर कपड़ा तान नीचे से पानी लेकर सोने चांदी के बरतनों में रख छोड़ें और पीने के काम में लावें।

**तालाब का पानी**—कसीला—वादी और पाक में कड़ुवा होता है।

**नदी जल**—रूखा—हलका—दीपक—चरपरा—कफ़ और पित्त नाशक है।

**झरने का पानी**—हलका शीतल—बलकारक पाचन और बुद्धिवर्धक है।

**बावड़ी का जल**—यदि मीठा हो तो कफ़ कारक और वात पित्त नाशक है, यदि खारी हो तो पित्त कारक और कफ़, वातनाशक है।

**गङ्गाजल**—संसार में सब जलों में उत्तम है क्योंकि हिमायल की ऊँची चोटी से बर्फ गल गल कर आती है जो स्वच्छ शीतल स्वादिष्ट और त्रिदोष नाशक है।

**कुएँका जल**—मीठा, पथ्य में देने योग्य, त्रिदोष नाशक है। यदि खारी हो तो कफ़ नाशक, दीपन, हलका और पित्तकारक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## रोगकारक जल की पहिचान

जो जल छूने में चिकना, गाढ़ा, किसी प्रकार का रङ्ग-वाला, बदबूदार हो और जिसके ऊपर तेलसा मालूम पड़े-जो पीतल, तांबा आदि धातुके डालने से काला पड़ जाय, जिस में सूर्य का प्रकाश न पड़े-जो गदला हो तथा जिस में पत्ते पड़ कर सड़ रहे हों वह जल रोग कारक है। इसके अतिरिक्त ऋतु के परिवर्तन में, बरसात में और लोगों की निम्नलिखित असावधानी से कुओं तालाबों और नदियों का पानी पीने से भी बुखार आदि रोग उत्पन्न होजाते हैं इसलिये ऐसे जल को भी न पीना चाहिये। यदि संयोगवश पीना ही पड़े तो खूब औटाकर ठंडाकर पीना चाहिये।

## जलों के ख़राब होने के कारण

कुआँ-उथले और ढलाव के स्थान में होने, वर्षा के गदले पानी के उसमें जाने, सड़ी मिट्टी, लकड़ी, टूटी रस्सी के उसमें पड़ने, खराब घड़े-डोल आदि के डालने तथा सूर्य की रोशनी न पड़ने से कुओं का जल ख़राब हो जाता है। इसलिये कुओं को ऊँचे स्थान पर गहरे और पक्के बनवाने चाहिये और उसके ऊपर लकड़ी या लोहे आदि का चौखटा भी डलवा देना चाहिये तथा जल को सुरक्षित रखने के लिये ऊपर की बातों का ध्यान रखना योग्य है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**तालाब**—मनुष्यों के कुल्ला दातौन करने, अशुद्ध, कपड़ों के धोने, आबदस्त लेने, सने बर्तनों के धोने और सन आदि के सड़ाने से तालाबों का पानी खराब हो जाता है, इसलिये पशुओं के लिये तालाब अलग होने चाहियें और मनुष्यों के लिये पृथक्। तालाबों के किनारे वृक्षों का होना उचित नहीं क्योंकि उसकी पत्ती सड़कर भी जल खराब होजाता है। गर्मियों में तालाब के सूख जाने पर उसमें पाखाना न फिरना चाहिये।

**बावड़ी और नदियों**—का पानी भी उपरोक्त कारणों से ही खराब हो जाता है विशेष कर हैज़ा—प्लेग आदि रोगों के मुर्दों को बहाने, उनकी हड्डियों को डालने अथवा उनके किनारे बच्चों के गाड़ने से नदियों के जल दूषित हो जाते हैं इसलिये इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

ईश्वरीय नियम से भी पानी बिगड़ जाता है जैसे जल में उत्पन्न हुए जानवरों के मर जाने अथवा घास आदि के सड़जाने से। इन्हीं दोषों के दूर करने के लिये परमेश्वर ने मछलियों को बनाया है जो पानी की गंदगी को दूर कर उसको साफ़ रखती हैं।

## पानी के स्वच्छ करने के उपाय

(१) फिटकरी वा निर्मली को घिसकर डाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(२) पानीको गर्म करने से भी दूषित परमाणुओं का नाश होजाता है।

(३) थोड़ी देर पानीको बर्तनमें रखने से उसमें की तलछट बैठ जाती हैं।

(४) बहुत प्रकार के छन्ने बनाये गये हैं।

(५) बादाम की मींगी को पीसकर डालने से पानी अच्छा हो जाता है।

(६) नदी के किनारे गड्ढा खोदने से पानी अच्छा मिल जाता है।

(७) बालू कङ्कड़ और कोयला से भी पानी साफ़ किया जाता है उसके लिये एक तिपाई जिसके ऊपर नीचे ३ घड़े रक्खे जा सकें बनवाना चाहिये। ऊपर वाले घड़े में थोड़ा कोयला डाल पानी भर देना चाहिये और बीच वाले घड़े में थोड़ा बालू और कंकड़ भर देना चाहिये इन दोनों घड़ों की पेंदी में छेद कर देना चाहिये और सब से नीचे के घड़े में एक सफ़ेद कपड़ा मुँह पर बाँध ख़ाली रख देना चाहिये ऊपर के दोनों घड़ों से पानी टपक २ कर जो नीचे के घड़े में आवे उसको पीना चाहिये।

## पानी ठण्डा करने के उपाय

( १ ) पानी को ऐसे स्थान में रखना जहां वायु आती हो, ( २ ) पानी को उछालना, ( ३ ) गीली बालू में पानी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के बर्तन को रखना, ( ४ ) लाठी में पानी के लोटे को बाँध के घुमाना, ( ५ ) पंखा करना, ( ६ ) छींके पर रखना, ( ७ ) पानी के घड़े के चारों तरफ़ भीगा कपड़ा लपेटना, ( ८ ) बरफ़ में पानी के बर्तन को रखना।

---

# स्नान

ऋग्वेद मं० १० । १७ और यजुर्वेद अ० ४ मंत्र २ में उपदेश है कि श्रेष्ठ नदी वा कुओं के जल में स्नान करने में रोगों की निवृत्ति, मन की प्रसन्नता और हृदय में शुद्ध भाव उत्पन्न होते हैं। सुश्रुति में लिखा है कि शुद्ध शीतल जल से शरीर के मार्जन एवं स्नान करने से शरीर की दुर्गंध भारीपन, तन्द्रा, खुजली, मैल, अरुचि, पसीना, भयानकपन, थकावट, उघाँई और जलन दूर होती है चित्त प्रसन्न-उत्साह युक्त और साफ़ हो भूख खूब लगती है। स्नान दो प्रकार से किया जाता है एक गरम जल से, दूसरे ठंठे जल से। भावप्रकाश के कथनानुसार गरम जल का स्नान अतिसार (दस्त) पीनस, नेत्र, मुख और बात के रोगियों तथा नज़ले और कफ़ वालों व छोटे बच्चों और बुड्ढों को करना चाहिये, बाकी सबको शुद्ध तालाब-नदी और कुओं के जल से ही स्नान करना चाहिये। निरोग पुरुष को गरम जल से स्नान करने से संधियों के बन्धन ढीले पड़ जाते हैं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वीर्य्य को भी हानि पहुँचती है नेत्रों का प्रकाश कम होजाता है। शिर पर तो गरम पानी भूलकर भी न डाले क्योंकि शिर पर गरम जल डालने से मस्तक की रगों को बहुत हानि पहुँचती है। बावड़ी, तालाब, या जिन कुओं से जल न निकाला जाता हो वहां स्नान करने से निमोनिया आदि रोग होजाते हैं। वर्षा ऋतु में गङ्गा आदि नदियों में भी नहाना योग्य नहीं क्योंकि प्रथम तो वर्षा का पानी कच्चा होता है जिसमें नहाने या पीने से ज्वर, कब्ज़, पेट के विकार वा फोड़ा फुन्सी औ नहरुआ आदि रोग होजाते हैं, दूसरे विष्टा, मूत्र, घास और लाशों आदि के बह आने से नदियों का पानी विषयुक्त और गंदला हो जाता है।

बुखार, दस्त, अफरा, पीनस, अजीर्ण, गठिया आदि वायु के रोग में, मैथुन के बाद तीन घण्टे तक, तथा पसीने में सराबोर होने पर स्नान कदापि न करना चाहिये। किन्तु निरोग स्त्री, पुरुषों और बच्चों को शीतल जल से स्नान करने से धातु की क्षीणता, गर्मी के रोग, रुधिर का कोप, शरीर की दुर्गंध, मृगी, उन्माद, रक्त पित्त, मूर्छा, स्वप्नदोष आदि रोग, दूर हो जाते हैं, भूख खूब लगती है, बुद्धि चैतन्य होती है, सम्पूर्ण शरीर को आरामजान पड़ता है, मार्ग के खेद को दूर करता है और आलस्य पास नहीं आने देता। यह बात तो सब जानते ही हैं कि शरीर में असंख्य छोटे छोटे छेद हैं उन्हीं छिद्रों के द्वारा शरीर के भीतर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का विकारी पानी और दुर्गंधित वायु निकल कर उत्तम वायु का प्रवेश होता है परन्तु जब स्नान न करने से यह छेद बन्द हो जाते हैं तब उपरोक्त क्रियायें भी बन्द होकर खाज, दाद, फोड़ा और फुंसी आदि रोग हो जाते हैं जिनके कारण बहुधा कष्ट झेलने पड़ते हैं। इस लिये गर्मी और वर्षा के दिनों में दो बार और शीत काल में कम से कम एक बार अवश्य नहाना चाहिये। शीत काल में खुली हवा में स्नान करने से ठंड लग जाने से सरदी हो जाती है इसलिये शीत काल के स्नान के लिये स्नानागार ( ग़ुसलखाने ) कुओं के पास ही बनवा देने चाहियें। वहां का फ़र्श पक्का हो जिसमें सब लोग अच्छे प्रकार स्नान कर सकें, टब(नांद) में पानी भर कर उसमें बैठ कर स्नान करने से भी लाभ होता है। उबटन लगाकर स्नान करने से बदन साफ़ हो जाता है आजकल उबटन के स्थान पर साबुन लगानें की प्रथा चल पड़ी है परन्तु उससे वह लाभ नहीं जो चिरौंजी और सरसों आदि सुगन्धित द्रव्यों को पीस कर उबटन लगाने से होता है क्योंकि विदेशी अथवा सस्ते बने साबुनों में चर्बी आदि दूषित वस्तुओं का मेल होने से शरीर में लगाने से नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं अतः साबुनों के स्थान में देसी वस्तुओं के प्रयोगों का करना उचित है। यदि साबुन का ही प्रयोग करना हो तो देसी चीज़ों से बनाये साबुन का ही प्रयोग करना अभीष्ट है। लेकिन व्यायाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अथवा किसी परिश्रम जनित कार्य्य को करने के बाद तुरन्त कभी स्नान नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से बड़ी २ बीमारियां होजाती हैं इसलिये व्यायाम के कम से कम दो घंटे पीछे स्नान करना उचित है

विधि—पहिले सर धोना चाहिये, फिर धड़, कमर और अन्त में पांव धोना चाहिये, स्नान मल मल कर करना चाहिये। इस प्रकार शरीर से उष्णता कम होजाती है और नेत्रों की रक्षा होती है। स्नान के पीछे साफ़ तौलिया या गजी के अंगौछे से सम्पूर्ण शरीर को पोंछना चाहिये जिससे शरीर गीला न रहे। बहुधा जन सिर पर पानी न डाल कन्धे से ही नहाते हैं ऐसा करने से सिर में दर्द, चक्कर, रतौंधी आदि रोग हो जाते हैं और मस्तक निर्बल होजाता है अतः सिर से पानी डाल कर स्नान करना चाहिये स्नान के समय अंग और प्रत्यङ्गों को अच्छे प्रकार न धोने से दाद आदि रोग तथा वह अंग निर्बल हो जाते हैं इस लिये उन अंगों को अच्छे प्रकार धोना चाहिये। स्नान के समय नाभि से नीचे के हिस्से को मसल मसल कर धोने से पाखाना पेशाब साफ़ होता है। गर्भिणी स्त्री और निर्बल बच्चों को कड़ुआ तेल लगाकर स्नान कराना योग्य है।

## अनुलेपन

स्नान करने के पीछे ग्रीष्म ऋतु में सफ़ेद चन्दन, कपूर और सुगन्धवाला एक २ माशा घिसकर १ रत्ती पेपरमेंट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिलाकर तथा शीत काल में चन्दन लाल, केसर, काली अगर में १ रत्ती कस्तूरी मिलाकर माथे पर लेप करना चाहिये इससे सिर दर्द नहीं होता, चित्त प्रसन्न रहता है बदबू दूर होती है। बेहोशी एवं दाह का भी नाश होता है ऐसा ही महर्षि चरक व सुश्रुताचार्य तथा भाव मिश्रजी का उपदेश है। इसलिये नहाने के बाद आरोग्यता एवं सौंदर्य वृद्धि के लिये लेप अवश्य करना चाहिये इसके पश्चात् संध्या, प्राणायाम, हवन—आसन करना उचित है जिसका वर्णन हम आगे करेंगे।

---

## अंजन लगाना

प्रतिदिन नेत्रों में अंजन लगाना चाहिये क्योंकि इससे खुजली, पानी आना, दर्द, वायु तथा धूप के विकार नष्ट होकर नेत्रों का प्रकाश बढ़ता है। सामान्यतया सुरमा प्रातःकाल स्नान के पीछे तथा रात्रि को शयन करने के समय लगाना चाहिये परन्तु दिन में कोई ऐसा तेज़ अंजन न लगावे जिससे आंखों से पानी निकलने लगे क्योंकि ऐसा होने से नेत्र सूर्य का बल सहन नहीं कर सकते। वैद्यक ग्रन्थों में बहुत प्रकार के सुरमे बनाने की रीतियों का उल्लेख है। परन्तु हम उनमें से एक की विधि जिसकी हम स्वयं परीक्षा कर चुके हैं लिखते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रथम काले सुरमे की डली को आग पर गरम कर सात बार त्रिफला के रस में, फिर स्त्री के दूध तदुपरान्त गौ मूत्र में पांच २ बार पृथक् २ बुझा महीन पीस कर नेत्रों में लगावे परन्तु भोजन और स्नान करने के पीछे रात को जाग कर फ़ौरन और बुखार में सुरमा न लगावे।

## नेत्र रक्षा के नियम

१–सिर को ठंडा और पैरों को गरम रक्खो, २–सूर्योदय से पहिले उठो ३–सूर्यास्त समय पर पढ़ना लिखना न करो, ४–नशों का सेवन न करो, ५–जहां यथेष्ट प्रकाश न हो वहां बारीक अक्षरों को न पढ़ो, ६–मुख और नेत्रों को नित्य शीतल जल से अथवा चौथे आठवें दिन विशेष कर बसन्त ऋतु में त्रिफला के पानी से धोओ, ७–दिन में न सोओ, ८–क्षुधा से अधिक भोजन न करो न लंघन करो, ९–प्रातःकाल बिना कुछ खाये आखों पर बहुत बल न दो, १०–गर्द गुबार और धुवां से आंखों को बचाओ, ११–अति ऊष्ण अति शीतल वायु से बचो, १२–अति लघु अक्षर मत लिखो पढ़ो, १३–कठिन धूप में न चलो, १४–आंच को बहुत देर तक न देखो, १५–गरम जलसे नेत्रों को न धोवो, १६–रूखा भोजन न करो, १७–मिट्टी के तेल की रोशनी में न पढ़ो, १८–अधिक परिश्रम न करो, १९–सूर्य्य की ओर टकटकी लगाकर न देखो, २०–बहुत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


न रोवो, २१–गुस्सा न करो, लालमिर्च तथा खटाई न खाओ, २२–अधिक चमक की वस्तुओं को न देखो, २३–नाक के बाल कभी न उखाड़ो, २४–मक्खन मिश्री और गोला अथवा घी बूरा और कालीमिर्च मिलाकर खाओ, २५–उत्तम तेलों को सिर पर लगा थोड़ी देर पश्चात् स्नान करो, २६–रात को सोते समय पांव के तलवे में तेल लगाओ। ताज़े गौ के घी को ६ माशा पीए वा थोड़ा हुलास लो, २७–हरी वस्तुओं को देखो बागों में फिरो और टहलो। उपरोक्त उपायों से नेत्रों की रक्षा करना योग्य है।

---

# भोजन और उसकी आवश्यकता

यह शरीर पृथ्वी जल अग्नि वायु और आकाश इन पंच भूतों से बना है। अतः प्रति दिन काम करने से शरीर के पंचभूतों में जो कमी आजाती है उसको पूर्ण करने के लिये भोजन करने की ज़रूरत है। समय पर उचित आहार करलेने से शरीर पुनः कार्य्य करने के योग्य ही नहीं होजाता प्रत्युत इसी से शरीर का पोषण, शक्ति तथा स्मृति, वर्ग ओज सत्व शोभा एवं आयु की वृद्धि होती है।

---

नोट—एक महात्मा का शीतल सुरमा ।=) तोला में हमारे यहाँ से मँगाकर नेत्रों में लगाइये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


साथ ही समय पर भोजन न करने से अरुचि और मंदाग्नि तथा धातुओं का नाश होता है। इस हेतु प्रत्येक प्राणी को उचित है कि दोष काल का विचार कर गुण कारक पदार्थों का सेवन करे। *

---

# आवश्यक बातें

१—पगड़ी—पहरने से शरीर की शोभा, बालों की रक्षा और कफ का नाश होता है, इसलिये हल्की पगड़ी अवश्य बाँधना चाहिये। बहुत भारी डुपट्टा बांधने से पित्त एवं नेत्र रोग हो जाता है।

२—दर्पण—के देखने से मङ्गल होता है और शोभा बढ़ती है परन्तु बार बार देखना योग्य नहीं।

३—छाता—के लगाने से नेत्रों को आनन्द, उत्साह, और सुख मिलता है सिर की रक्षा होती है, गर्मी में धूप से और वर्षा में पानी से बचाता है जिस से ज्वारादि रोग नहीं होने पाते हैं।

४—छड़ी—रखने से हाथ की शोभा होती है। कुत्ता, बिल्ली आदि से बचाती है, भय नाश होता है।

५—जूता—पहरने से पाओं को आराम मिलता है, कांटा आदि अशुद्ध वस्तुओं के लगने से पांव बचते हैं।

---

* भोजन सम्बन्धी अन्यान्य विवरण आगे विस्तृत रूप से लिखेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


६—खड़ाऊँ—भोजन के पहिले या पीछे पहरने से पैरों के रोग दूर हो जाते हैं, आयु और शक्ति की वृद्धि और नेत्रों को हित होता है।

७—लालटैन—यदि अंधेरी रात को कहीं जाना हो तो लालटैन अवश्य लेले। इससे मार्ग में सर्प आदि जन्तुओं अथवा शत्रुओं का भय नहीं होता।

## सोना अर्थात् शयन

ऋ० अ० ३ अ० १ व० १६ मं० ३ अ० २ सू० १८ मंत्र २ में लिखा है कि जो दिन में शयन छोड़ कर सांसारिक व्यवहारों को परिश्रम से कर रात्रि में आनन्द से सोते हैं, वास्तव में वे ही भाग्यशाली प्राणी हैं—क्योंकि गहरी नींद के पीछे जागने पर उनका चित्त प्रसन्न एवं शरीर उत्साह युक्त होजाता है। इसके विपरीत जो दिन में सोकर समय को व्यर्थ सोने के साथ रात्रि में इधर से उधर करवटें बदलते हुए झपकी की दशामें पड़े रहते हैं, उन्हीं को प्रातःकाल सुस्ती तथा काहिली जान पड़ती है, जम्हाइयां आती हैं। इसलिये निरोगता चाहने वाले मनुष्यों को दिन में कदापि न सोना चाहिये क्योंकि दिनमें सोने वा रात्रि के जागरण से खांसी, ज्वर, अङ्ग में पीड़ा और शिर भारी होजाता है पाचन शक्ति कम होजाती है। हां गर्मी के दिनों में एक घण्टा सो रहना अच्छा है। कुसमय सोने अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रमाण से अधिक सोने अथवा बिलकुल ही न सोने से मनुष्य के सुख और आयुकाल रात्रि के ऊषाकाल की तरह नष्ट होजाते हैं जैसाकि चरक अ० २१ में लिखा है और "ठीक रीति के सोने से सुख और दीर्घायुता मनुष्य शरीर में ऐसी आती है जैसे सिद्धि द्वारा योगी के पास सत्यबुद्धि चली आती है" अथर्ववेद काँड ६ सू० ४६ मंत्र १ में लिखा है दिन में परिश्रम करने वालों को रात्रि में सोने से सुख मिलता है और नियम के विरुद्ध सोने से आयु घटती है।

बच्चों और बूढ़ों के लिये यह नियम नहीं है कि ६ घंटे ही सोवें वरन् उनकी जितनी इच्छा हो सोवें। सोने का कमरा तथा घरों में रोशनदान और खिड़की, वायु आने के लिये खिड़की अवश्य लगाना चाहिये। कमरों को जाड़े के दिनों में गुलाबी, वर्षा में सफ़ेद तथा गर्मी में हरे रङ्ग से रङ्गवाना उचित है। चारपाई साड़े तीन हाथ लम्बी, ढाई हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची होनी चाहिये। पर यह भी स्मरण रहे कि एक स्थान पर अधिक मनुष्य न सोवें क्योंकि उनके श्वांस लेने से हवा बिगड़ कर रोग उत्पन्न कर देती है। इसलिये प्रत्येक के लिये ४८ वर्ग फ़ीट जगह होनी आवश्यक है। चारपाई में खटमल आदि भी न हों, बिछौने के अर्थ तोषक वा गद्दा, गर्मियों में ग़लीचा व दरी आदि हो, दो एक तकियों का होना आवश्यक है। सोने के स्थान में कोई पशु न बांधे क्योंकि इससे हवा बिगड़ जाती है। गर्मी के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दिनों में मुख को खोलकर सोना चाहिये परन्तु भीगे कपड़े पहिन या पैर को पानी में डुबोकर या बिल्कुल नंगा होकर न सोवे। जाड़े के दिनों में लिहाफ़ ओढ़ कर सोना चाहिये परन्तु लिहाफ में मुँह छिपाकर या किसी मर्द या औरत के साथ एक ही बिस्तर पर एक ही लिहाफ़ के भीतर न सोना चाहिये। इसके उपरांत मकान के भीतर कोयला व लकड़ी जलाकर और दरवाज़ा बन्द करके सोना बहुत बुरा है क्योंकि कारबोनिक एसिड गैस मनुष्य के श्वासों के साथ शरीर में आकर प्राण हर लेती है। इसलिये इस छोटी सी बात की ओर हमारे देश भाइयों का ध्यान होना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि समाचार पत्रों के पढ़ने से जाना जाता है कि जो मनुष्य इस बात का विचार नहीं रखते वे अवश्य ही मर जाते हैं। कई एक स्थानों में एसा हो चुका है इसलिये इस बात को सदा स्मरण रखना चाहिये।

यदि आप को भीतर आग रखने की ज़रूरत हो तो बाहर खूब जलाकर और सुर्ख़ करके भीतर रखना योग्य है। मिट्टी का चिराग़ जलता छोड़ कर बन्द मकान में सोने से भी ऐसे ही रोग हो जाते हैं, इस लिये सोने से पहिले चिराग़ ज़रूर ठण्डा कर देना चाहिये। इसके अतिरिक्त ऐसा प्रबन्ध भी करे जिससे तीव्र वायु वा अन्य तुच्छ कारणों से निद्रा भंग न हो, सब चुप चाप होकर सोवें, खलबली कोई न मचावे, अर्थात् इन्द्रिय निग्रह कर शांति चित्त होकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सोवें। उस समय करवट का बिचार अच्छे प्रकार से रक्खे क्योंकि करवट का असर नींद पर बहुत पड़ता है जैसा कि बेआराम और तङ्ग करवट से नींद रुक जाती है, अतः अच्छे प्रकार करवट लें। तन्दुरुस्त मनुष्य को पीठ के बल लेटना हानिदायक है। जब दिल निर्मल होता है किसी दिमाग़ी रोगों या रोगों की निर्बलता में इस प्रकार लेटने में ख़ून सिर के पिछली तरफ़ को रुजू हो जाता है तो भयानक स्वप्न देख पड़ते हैं। इस के उपरान्त जिन मनुष्यों की छाती तङ्ग होती है या किसी रोग से पीठ के बल सो नहीं सकते प्रायः नींद में ज़ोर ज़ोर से खुर्राटे के शब्द करते हैं। उसका कारण भी करवट पर न सोना है, क्योंकि उनका नरम तालू और कौआ ज़बान पर लटक पड़ता है पुनः ज़ुबान पीछे को हटकर हवा की नाली का रास्ता कुछ बन्द कर देती है। इससे घुर्राटों का शब्द निकलना शुरू हो जाता है। इस लिये उचित है कि करवट पर सोये, विशेष कर दाहिनी करवट पर सोना योग्य है, क्योंकि जो मनुष्य के शरीर की बनावट अच्छे प्रकार से जानते हैं वे इस बात को समझते हैं कि दाहिनी करवट सोने से भोजन मेदे के भीतर सुगमता के साथ अन्तड़ियों में चला जाता है विपरीत दशा में भोजन मेदे से दूसरी ओर पड़ा रहता है। इसके उपरान्त बांई करवट सोने से दिल भी दब जाता है, अतः प्रथम दाहिने करवट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सोना योग्य है जब थक जाय तो दूसरी करवट बदल ले, कतिपय वैद्यक ग्रन्थों में दांई करवट सोने का ही उपदेश है। बहुधा जन सोते से उठ जल पीकर तत्काल सो जाते हैं यह भी योग्य नहीं क्योंकि यह जल शरीर की आरोग्यता को हरता है। प्रकट हो कि पलंग या चारपाई पर सोने से त्रिदोष का नाश, पृथ्वी पर सोने से दोष की वृद्धि तथा काष्ठ पर सोने से वायु का कोप होता है।

इसके अतिरिक्त सोने में दक्षिण की ओर पांव न करना चाहिये क्योंकि मनुष्य के भेजे में एक शक्ति है जिसको अंग्रेज़ी में 'मैगनेट' तथा अरबी में कुव्वत ज़ाजबा कहते हैं। उस शक्ति का धड़कने वाला भाग अधिकतर मनुष्य की चोटी की ओर होता है। जब उसका सिर उत्तर की ओर होता है तब उसकी गति नियुक्त संख्या से बढ़ जाती है। देखो ध्रुव यंत्र जिसको अंग्रेज़ी में कम्पास और उर्दू में कुतुबनुमा कहते हैं। लोहे में शक्ति का अधिक भाग होता है अतः वह सुई जो कुतुबनुमा में लगाई जाती है सदा हिला करती है उसका एक सिरा सदा उत्तर की ओर रहता है क्योंकि उस शक्ति का यही स्वभाव है। बस जब कि मनुष्य दक्षिण की ओर पांव करके सोवेगा और देह गति का कम्प भेजे में न पहुंचेगा और भेजा स्थिर होगा तो वह शक्ति ( मैगनेट ) जो भेजे में अपना ज़ोर करेगी और धड़कने लगेगी और रातभर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नियुक्त संख्या ( जो दूसरी ओर रहने से कम धड़कती है ) अधिकतर धड़केगी जिससे भेजे में हानि होगी। यदि कोई मनुष्य सदा दक्षिण की ओर पांव करके सोवे और उसके भेजे का मैगनेट उत्तर की ओर रहे तो निःसंदेह उसका भेजा डमाडोल हो नाना प्रकार के मस्तक रोग उत्पन्न हो जांयगे। इसके उपरान्त रात्रि में अपने सब पदार्थों को देख भाल करके रक्खे और गौ घोड़े आदि मनुष्य, स्त्रियां, बच्चे सब सुख से सोवें अपनी २ योग्यता के अनुसार थोड़े बहुत रक्षक रखकर उत्तम प्रबन्ध करे जिससे चोर डकैत आदि दुष्ट लोग और भेड़िया सर्प आदि हिंसक जीव प्राणियों और धन सम्पत्ति को हानि न पहुँच सकें। तारों से शोभायमान रात्रि बीतने पर प्रातः उठ दिन के कर्तव्य कर फिर रात्रि में रात्रि कार्यों को सदा करता रहे।

---

# वेषभूषा अर्थात् वस्त्र पहरना

प्रत्येक स्त्री पुरुष को देशकाल के अनुसार वस्त्र पहरना चाहिए परन्तु उसमें जातीयता का चिन्ह अवश्य सुरक्षित रखना उचित है। भारतवर्ष में उपरोक्त ध्यान को छोड़कर बहुधा जन गर्मी के दिनों में काले रङ्गके कपड़े पहनते हैं। वह यह नहीं जानते कि गर्मी के दिनों में उष्ण और काली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वस्तु में गर्मी अधिक घुसकर बहुत काल तक ठहरती है इस कारण वह गर्मी शरीर के भीतर के रस, रक्त और वीर्य्यादि को अधिक गरम बना देती है जिसके कारण उत्तम भोजन खाने पर भी धातु क्षीण और रक्त विकारादि रोग घेरे रहते हैं। इस कारण प्राचीन पुरुषाओं ने नीलाम्बर और कृष्णाम्बर वस्त्रों का निषेधकर पीताम्बर एवं सफ़ेद स्वच्छ वस्त्रों के धारण करने की आज्ञा दी है उसीके अनुसार सबको वस्त्र पहिनने चाहिये। इसके अतिरिक्त जगत के भिन्न भिन्न देशों के रहने वालों का पहनावा पृथक् २ रीति का होता है जिसको देखकर तुरन्त जान लिया जाता है कि अमुक वस्त्र का पहिनने वाला अमुक देश का है जिससे देशाभिमान का पता चलता है परन्तु भारतवर्ष ने इस रीति का भी उल्लंघन कर दिया है। यहां जिस प्रकार प्रान्त २ की बोली पृथक् २ है उसी भांति वस्त्र धारण करना भी है। शोक की बात है अन्य देशों की भांति हमारी कोई जातीय पोशाक ऐसी नहीं रही जिसका आदर समस्त भारतवासी करते हों यथार्थ में एक भाषा और एक पोशाक का पहिनना हर एक देश की ऐक्यता का चिन्ह है। इसलिये वर्तमान में जहां एक भाषा के प्रचार के लिये उपाय हो रहे हैं उसी भाँति सम्पूर्ण भारतवर्ष के नेताओं को एकत्र हो भारत की एक पोशाक देश और काल के अनुसार नियत कर देना उचित है जिसको स्त्री पुरुष, लड़के, लड़कियाँ पहनकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जहां कहीं जावें वहां तुरन्त जान लिये जावें कि यह भारतीय हैं इसके उपरांत भेष के नियत करने में देश की स्वतंत्रता का भी ध्यान रखना आवश्यक है। परन्तु यहां तो बर्तमान समय में अपने देश के पहनावे को छोड़ कर कोट, पतलून, नेकटाई, कालर, बूंट और हैट को धारण कर साहब बहादुर बन आते हैं, जो यूरोप आदि देशों का पहनावा है। भारत उष्ण देश है, सर्द देशों की पोशाक भारतवासियों को लाभदायक नहीं होती इसीलिये इस प्रकार के कपड़ों को कदापि न पहने। अभी तक यह रोग पुरुषों ही में था लेकिन अब भारत की महिलाओं में भी यह रोग फैलता जाता है, हालांकि अब विलायत के विद्वान डाक्टर स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिये यह पोशाक हानिकारक बतलाते हैं। विलायत के नामी अखबार डेलीमेल में एक लेडी ने लिखा था कि इस प्रकार की पोशाक पहिनने से शरीर के अङ्ग जकड़ जाने से खून की चाल में कुछ रुकावट होजाने से शरीर दुबला और स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। इसलिये शरीर की आरोग्यता के हेतु और अपनी जातीयता और प्रेम की दृष्टि से उपरोक्त बातों को छोड़ कर जिस प्रकार श्रीमान् महात्मा गोखले, लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय जी ने अपने देश की सादी पोशाक पहनकर नाना देशों की यात्रा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की उसी भांति सबको ध्यान रखकर कार्य करना तथा सामाजिक और धार्मिक स्थानों में अपने देश का पहनावा पहन कर जाना चाहिये। यदि कोई मनुष्य अपने घरों अथवा उपरोक्त समय पर साहब बनकर जाते हैं तो लोग उन पर हँसते हैं। बहुधा जन बङ्गालियों की भांति नंगे सिर रहना पसन्द करते हैं परन्तु आम लोग इसको भी भला नहीं समझते। अथर्ववेद में लिखा है कि वस्त्र बहुत सजावटी चमकीले भड़कीले और गहरे रंग के भी न हों। इसके उपरांत पोशाक अवस्था के अनुकूल भी हो यानी बूढ़े तरुणों की सी, तरुण बूढ़ों की सी न पहनें। इसी प्रकार उच्च श्रेणी के मनुष्यों को अत्यन्त कङ्गालों की भांति वस्त्र न पहिनने चाहिये। गुण्डों के वस्त्र कुछ खास ढङ्ग के होते हैं, सभ्य स्त्री पुरुषों को उस प्रकार के तथा बेमेल की पोशाक न पहिनना चाहिये, तदनन्तर मांग दिखाने का यत्न करना तथा पगड़ी, साफ़ा को तिरछा बांधना और कोट के बटन, अँगरखे की तनियां खुली रखना ठीक नहीं। इसके उपरांत वस्त्रों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखना उचित है क्योंकि शरीर के स्वच्छ रखने पर भी यदि हमारे वस्त्र मलीन हैं तो भी हमारे शरीर में नाना रोग उत्पन्न हो जाते हैं और उनकी दुर्गंध से अन्य जन हमें पास बैठालने से घृणा एवं निन्दा करते हैं। इस लिये वस्त्र चाहे कितने ही अधिक मूल्य का न्यूभ

पु०सं०.....
भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दामों के क्यों न हों, आठवें दिन अवश्य साफ़ कर लेना चाहिये क्योंकि साफ़ वस्त्रों के धारण करने से ही कान्ति, यश और आयु की वृद्धि होती तथा दरिद्रता का नाश और चित्त में हर्ष रहता है, श्रीमानों की सभा में जाने योग्य होता है। इसके अतिरिक्त लाल और भीगे कपड़ों को भी न पहिनना चाहिये। हमको अपने देश के बने कपड़ों को इस्तेमाल करना चाहिये, जिससे अपने भारतवर्ष की उन्नति हो और यहां का ६० करोड़ रुपया बाहर को न जावे। हमारे भारत देश में बड़े २ उत्तम और दृढ़ वस्त्र बनते हैं। देखिये प्राचीन काल में यहां के सौदागर और व्यापारी-गण रोम और ग्रीस में जाकर माल बेचते थे। यूरूप देशीय कोमलाङ्गी ललनाएँ यहां के बुने हुये बारीक और सुन्दर वस्त्रों को देख कर चकित होती थीं। ढाके की घटिया मल-मल के १० गज़ के थान का वज़न ८ तोला ४ रत्ती होता था, और यहीं के बुने हुये मसलिन नामक कपड़े के थान फूंक से उड़ सकते थे। इस समय भी मुर्शिदाबाद की रेशमी वस्तुयें, काशी का कमख़्वाब और सलमे का काम, दिल्ली में सलमे के काम की अनेक वस्तुयें, काश्मीर में शाल दुशालों में सुई का काम, काश्मीर, आगरा, मिर्ज़ा-पुर, जयपुर, अजमेर, बीकानेर, मैसूर और पूना में कालीन और दरी का काम बहुत अच्छा होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कासगंज, ब्यावर, विस्वां में महीन कपड़े उत्तम बनते हैं, परन्तु हमको अपने देश के बुने खद्दर, गज़ी, गाढ़े, ऊनी, सूती, रेशमी कपड़े पहिनने में लज्जा आती है और विदेशी वस्तु पहिनने तथा विदेशी चाल ढाल यानी फ़ैशन से रहना ही हम सर्वोपरि मान फ़ैशन पर इतने झुक गये कि जहां नवीन फ़ैशन का कपड़ा देखा, लोट पोट हो बिला ज़रूरत खरीदना आरम्भ कर दिया, जिससे खर्चे में अधिकता होती जाती है। इसलिये स्त्री पुरुषों को जन्मभूमि भारत की ओर देखकर प्राचीन चाल के ढङ्ग पर स्त्रियों को प्रतिदिन थोड़ा बहुत बारीक व मोटा सूत कात कर अपने घरों में बुनकर वा बुनवाकर कुर्ते, कोट, लहंगा, दुपट्टे, लिहाफ़, रज़ाई, अंगोछे, कुर्ती इत्यादि बनवाकर पहिनना अभीष्ट है। देखो जापानी, अमेरिकन, इंग्लिश आदि अपने देश की वस्तुओं को व्यवहार में लाते हैं, उसी प्रकार भारत के धनाढ्य घरों की ललनायें और पुरुष रेशमी, टसर और सूती आदि कपड़ों को जो अब यहां अच्छे बनने लगे हैं यद्यपि वह कुछ अधिक दामों में भी पड़ें तो भी उन्हीं को काम में लायें, विलायती वस्तुओं की चमक दमक पर न मरें। भारत तुम्हारा प्यारा देश है इसके पवन पानी से हम तुम बने और पले हैं इसलिये यहां के बने वस्त्रों को धारण करने की सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा कीजिये जिससे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धनधान्य, आरोग्यता और धर्म की वृद्धि होकर सुख की वर्षा हो।

---

# नगर, गांव, मकान

वर्तमान समय में नगर और गांव की बनावट उत्तम रीति पर नहीं है। प्राचीन समय में जितना लम्बा चौड़ा नगर वा गांव होता था, उसके आस पास उतना ही लम्बा चौड़ा जङ्गल छोड़ा जाता था।

यही कारण था कि जिस प्रकार से प्रत्येक नगर के न्यारे न्यारे नाम होते थे, उसी भांति प्रत्येक नगर के नीचे जो जङ्गल होते थे उनके पृथक २ नाम होते थे। यही कारण था कि श्रीरामचन्द्र जी एक बन से उठ दूसरे बन और वहां से उठ तीसरे बन और इसी प्रकार बराबर बनों ही बन में ठहरते हुए चले गये। पाठकगणों को ज्ञात हो कि हमारे देश के राजाओं को इतने ही बनों से सन्तोष नहीं था जिनका हमने वर्णन किया है, प्रत्येक प्रांत में पहाड़ों के निकट एवं नदियों के किनारे किनारे बड़े बड़े बन होते थे जिनमें ऋषिगण निवास किया करते थे, जिनका विद्या की उन्नति करना प्रतिदिन का काम था। इन सबके अतिरिक्त जङ्गलों के होने से नगर वा ग्राम वालों को भी अति उत्तम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पवन मिलती थी जिससे वे सदा हट्टे कट्टे रहकर नाना प्रकार के उद्यम कर अनेकान प्रकार के सुखों को भोगते थे। तदनन्तर जङ्गलों में गौओं का पालन अच्छे प्रकार होता था, दूध घी की अधिकता रहती थी, इन्हीं गौओं का गोबर खेतों के लिये उत्तम खाद था। ईंधन की अधिकता का यही कारण था। अधिक कृषि वृद्धि का हेतु यह बन ही थे इसलिये जङ्गलों का अधिक होना अभीष्ट है।

सज्जनों! नगर की रचना और बनों के न होने से नाना प्रकार की हानियां होरही हैं। तिस पर तुर्रा यह है कि वर्तमान समय में हमारे और आपके गृह अर्थात् निवास स्थान भी विपरीत दशा में बनाये जाते हैं, जिससे उत्तम वायु के स्वप्न में भी दर्शन नहीं होते, क्योंकि मकानों का निकट २ होना, कुर्सी नीची, सहन का नाम भी नहीं, इस पर भी भोजन बनाने और सोने तथा उठने बैठने का काम एक ही स्थान से लिया जाता है, कमरों के निकट ही पाखाना होता है, जिससे अनेकों बीमारियां फैलती हैं। देखो यजुर्वेद में लिखा है कि जलों का आधार समुद्र, सागर का आधार भूमि, और उसका आधार आकाश है उसी प्रकार गृहस्थों के पदार्थों के आधार घर हैं अतएव घर बनाने के विषय में वेदों में बहुत कुछ लिखा है उसी के अनुसार घरों को बनवाकर आनन्द से रहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## मकान बनाने की रीति

अथर्वकाण्ड १ सू० १२ में उपदेश है कि जब गृह बनवाने का विचार हो, तो प्रथम योग्य शिल्पी विश्वकर्मा से चित्र खिंचाकर, योग्य मित्रों और सम्बन्धियों से सम्मति ले और ईंट चूना पत्थर इत्यादि आवश्यक वस्तुयें इकट्ठा करे फिर सर्व सम्मति से निश्चय किये हुये के अनुसार कांड १८ की आज्ञानुसार घर के बड़े लोगों के हाथ से नीव जमवा कर लम्बे चौड़े तथा छोटे बड़े दिखनौत कमरों को बनवावे। प्रत्येक जगह के जोड़ मज़बूती से जोड़े जावें। दरवाज़ और उनमें चटखनी इस प्रकार की लगाई जावें, जो सरलता से खुल मुँद सकें। पठन, पाठन, विचार, शयन, मन बहलाव, रसोई, भोजन करने, अतिथिशाला, कोप रखने के लिये गुप्त घर तथा तल घर, रोगियों के लिये और पशुशाला, भण्डार आदि के लिये पृथक् २ स्थान बनवावे, जिसमें रहने वाले स्त्री पुरुष आदि परिवार सुरक्षित एवं आनन्द से उसी प्रकार रह सकें जिस प्रकार पक्षी अपने घोंसलों में, जठराग्नि शरीर में तथा गर्भस्थ बालक गर्भ में आनन्द से रहता है। कांड ३ सू० १२ मंत्र १ में लिखा है कि घरों को मज़बूत और उत्तम विभागों से बनवावे जिसमें वायु और धूप अच्छे प्रकार से आवे जिससे सब परिवार हृष्ट-पुष्ट और आरोग्य रहे। कां० ६ सूत्र ३ मंत्र १ में लिखा है कि उत्तम सामग्री से भले प्रकार सुन्दर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दिखावट और चोरों से सुरक्षित मकानों को बनवावे और कां० १४।१।२२ में लिखा है कि पराये मकानों में न रह कर अपने सुन्दर एवं सुडौल घरों को बनवा कर रहे। अथर्व कां० १० मंत्र १२ में लिखा है कि जब मकान बनजावे तब विधिवत यज्ञ द्वारा गृह प्रवेश कर परमात्मा से प्रार्थना करे कि हे प्रभो ! जो शालायें (मकानात) मैंने बनाये हैं वह धन-धान्य और वीर सन्तान, गौ, घोड़ा आदि पशुओं से भरपूर रहें।

मकान बनवाने में निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखना चाहिये। ( १ ) घर की कुर्सी ऊँची हो उसके आगे सहन हो। ( २ ) नगर के मार्गखुले रहें। ( ३ ) एक घर से दूसरा घर कुछ अंतर से हो। ( ४ ) मकान सम चौरस हो। ( ५ ) चारों द्वारों से वायु खूब आती रहे। ( ६ ) मकान के जोड़ और चिनाई मज़बूत हो। ( ७ ) स्त्रियों का कमरा अलग और पुरुषों के अलग हों। ( ८ ) रसोई बनाने और भोजन करने के स्थान भी पृथक् २ हों।

इसके उपरांत स्त्रियों के बैठक में उत्तम योग्य स्त्रियों के चित्र और पुरुषों के कमरे में धर्मात्मा और आदर्श पुरुषों के चित्र शीशे और चौखटों में लगवा कर तथा सत्यंवद, धर्मंचर, मोटोज़ आदि सत्य उपदेशों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



से एवं वेद के उत्तम मन्त्रों, उपनिषदों के वाक्यों, सत्पुरुषों के आदेशों को मोटे सुन्दर अक्षरों में लिख कर घर की दीवारों पर टाँग देना चाहिए, इससे गृह की शोभा होती है और धार्मिक पुरुष एवं स्त्रियों के चरित्रों के स्मरण से नर नारियों के जीवनों पर उनके आदर्शमय जीवन का प्रभाव पड़ता है। अग्निहोत्र के लिये भी एक स्थान नियत कर लेना योग्य है। प्रत्येक कमरे की छत ऊँची पाटनी चाहिए। मकान में रोशनदान भी अवश्य रखने योग्य हैं। किसी ओर से ऐसी आड़ न हो कि जिस में सूर्य का प्रकाश न आसके। कुएँ पक्के, उत्तम हों तथा (१) बहुत से मनुष्यों का एक स्थान पर रहना (२) घर के निकट मुर्दों का गाड़ना वा जलाना वा अधूरा जला कर छोड़ना वा घूरे का इकट्ठा रखना। (३) मुर्दों वा मरे हुये पशुओं का आस पास सड़ना। (४) दुर्गंधित वस्तुओं और पाखानों के मैले उठाने का उत्तम उपाय न करना (५) घरका आंगन बाहर की धरती से नीचे में होना। (६) छतों पर पाखाना जाना (७) आंगन ऐसा न हो जिसमें पानी भरा रहे या उसके आस पास पानी इकट्ठा रहे। (८) चमार, रङ्गसाज़, छीपी, कसाई आदि के निकट घर न होने चाहिये।

प्यारी बहिनों! मकानों की बनावट ठीक न होने से आस पास बागों वा फुलवाड़ियों का होना अति कठिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होगया है जिसके कारण गृहीजनों को उत्तम वायु नहीं मिलती। जीवधारियों को उत्तम वायु की वैसी ही आवश्यकता है जैसे मछलियों को पानी की अतएव उत्तम वायु ही हमारे जीवन का मूल है। अन्न को त्याग कर एक दो दिन जी भी सकते हैं लेकिन विना वायु के पलमात्र जीना कठिन है और अशुद्ध वायु के सेवन से नाना रोग होजाते हैं। वर्तमान समय में हमारे गृहों में छोटे हरे पौदे और फुलवाड़ी के दर्शन तक नहीं होते। हे युवतियो ! यह हरे पौदे नाना भांति के पुष्पों से सुशोभित केवल नेत्रों को तरावट ही नहीं देते वरन् हमारे अपान प्राण के लिये भी बड़े गुणदायक हैं, क्योंकि यह पौदे यथाशक्ति अशुद्ध पवन को खींच लेते हैं, उसके बदले कलियां और पुष्प स्वच्छ पवन का हमें दान देते हैं, उनकी कोमल पत्तियां चित्तको हरती हैं। हमारी समझ में स्त्री पुरुषों और पुत्र पुत्रियों आदि के मनोरंजन तथा चित्त बिलास के अर्थ गृहमें छोटी २ क्यारियां बनाने, हरे हरे पौदों को जलसे सींचने और नये २ पत्ते और नरम नरम कोपलों तथा शोभायमान पुष्पों के दर्शन से अधिक कोई काम नहीं। इसके पालन पोषण के अर्थ किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ती क्योंकि उनका आधार और जीवनमूल निर्मल जल है, कभी २ गुड़ाई करनी पड़ती है सो दोनों कार्यों को छोटे से छोटे बच्चे भी कर सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्यारी बहिनों ! प्रति दिन अग्नि कुण्ड से होम के समय सुगन्धित पदार्थों का धुआं हमारी इस छोटी सी पुष्पावली के हरे २ पत्तों और रमणीक फूलों को चूसता हुआ शनैः २ स्वांस के द्वारा सूंघने से किस मनुष्य को प्यारा न लगेगा ? किसको उसकी अभिलाषा न होगी और पुष्पावली से होम का योग अवलोकन कर किसको आनन्द न होगा ? अन्य देश के निवासी अपने गृहों में बेल बूटे कैसी रुचि के साथ रखते हैं आप पानी देते अथवा देख भाल करते हैं जिसके कारण प्रत्येक गृह फूलों का उपबन दृष्टि-गोचर होता है। इस बात की साक्षी के लिये बङ्ग देश पर दृष्टि डालिये तो स्पष्ट प्रगट होता है कि वहां कोई घर ऐसा न होगा कि जहां हरे हरे खजूर और नारियल के वृक्ष तथा केले के स्तम्भ न लहलहाते हों। यदि हमारे तुम्हारे घरों में सहन नहीं तो मिट्टी के गमलों से काम लेना चाहिये और बाँसों पर बेलों को चढ़ाकर अपना कार्य पूर्ण करना उचित है। विविध प्रकार के फूलों के वृक्ष और बेलों से विशेष लाभ होते हैं जैसे तुलसी वृक्ष की वायु दुर्गंधित वायु से उत्पन्न होने वाले बुखार को दूर करती है। उसकी ५ पत्ती और ५ काली मिर्च डाल पीस १ छटाँक जल में मिला गुनगुना कर मुआफ़िक का निमक डाल पीने से इकतरा, तिजारी और चौथिया ज्वर, तथा १ माशा रस में थोड़ा शहद मिला कर चाटने से खाँसी और ३ माशा रस में दो माशा शकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डालकर पीने से छाती का दर्द वा खाँसी और केवल ३ या ४ पत्ती चबाने से मुंह की दुर्गंधि दूर होती है। पत्तों का रस सूंघने से सिर दर्द और कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है। इन मुख्य प्रयोजनों को न जान स्त्रियाँ तुलसी और सालिग्राम का विवाह करती हैं जो केवल अज्ञानता है इसलिये यथार्थ गुणों को जान लाभ उठाना चाहिये। पीपल के वृक्ष से वायु शुद्ध रहती है इसके तने में चिपटने से निर्बलता, छाया में रहने से कोढ़, छाल को पानी में घिसकर लगाने से फोड़ा और बालतोड़, इसकी लकड़ी के कोयले से बुझे पानी पीने से दाह, पिपली को छाया में सुखा कूट पीस बराबर की मिश्री मिला दूध के साथ सेवन करने से वीर्य दोष दूर हो जाते हैं और दूध में छाल भिगो ज़ख्म पर रखने से ज़ख्म जल्दी भर जाते हैं। इसी की सूखी छाल से संखिया, हड़ताल, और चांदी आदि फूंकी जाती हैं। नीम के वृक्ष से भी वायु शुद्ध होती है तथा इसकी लकड़ी जलाने से विषैले कीड़ों और छाल को घिस कर लगाने से फोड़ा फुन्सी दूर हो जाते हैं तथा घोटकर पीने से रक्त शुद्ध होता है। इसकी दातौन करने से मुंह की दुर्गंध दूर हो दांत साफ़ हो जाते हैं। इसी प्रकार अन्य वृक्षों के विषय में भी जानना उचित है। घर से कुछ दूर छोटे बगीचे भी बनवाने चाहिएँ जिसमें कुछ चौड़ा घास का मैदान भी रखना योग्य है जिसको उद्यान कहते हैं और इसी मैदान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में प्रातः व सायङ्काल बालबच्चों और स्त्रियों के साथ हवा खाना और बच्चों को गेंद से उस उद्यान में खिलाने कुदाने से आरोग्यता की वृद्धि होती है। प्राचीन समय में स्त्रियां बाग़ों की सैर को जाया करती थीं परन्तु अब भूतों के कारण नहीं जातीं तथा पुरुष स्त्रियों पर निर्लज्जता का दोष लगाते हैं कैसे शोक का स्थान है कि मेले दशहरों पर तो स्त्रियों को इतनी स्वतन्त्रता दे देते हैं कि वह खुले मुँह गुण्डों के धक्के खाती हैं और नियमानुसार आरोग्यता की वृद्धि के लिये बाग़ों में जाने की रुकावट। प्यारे भाई और बहनों! प्राचीन ग्रन्थ और इतिहासों पर ध्यान दो—देखिये वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड के सर्ग ६७ श्लोक ३२ में लिखा है कि जब सुमन्त जी राम लक्ष्मण सीता जी को छोड़ कर घर आये तो कौशिल्या जी ने पूछा कि सीताजी की क्या दशा है? तब सुमन्त जी ने उत्तर दिया कि आप कुछ चिन्ता न करें सीता जी आनन्द से महाराज रामचंद्र जी के साथ वास कर रही हैं, जैसे निर्भय होकर यहां सीता जी फुलवाड़ी में घूमा करती थीं, उसी प्रकार वहां भी निर्जन बन में घूमा करती हैं।

इसके अनन्तर शकुन्तला नाटक में लिखा है कि शकुन्तला एक वाटिका को अपने हाथों से सींचती थी और हरी लता वा पत्तियों तथा पुष्पों की तरावट देखने के निमित्त सखियों समेत वायु सेवन के हेतु जाया करती थी। इसलिए प्यारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहिनों ! तुम भी सीता आदि की इस उत्तम चाल को ग्रहण कर अपने पति के साथ वायु सेवनार्थ जाया करो। यदि किसी कारण से ऐसा सम्भव न हो तो अपने ही गृह में अवश्यमेव बेल बूटे छोटी २ क्यारियां बांध कर रखलो और प्रति दिन उनको सींचा करो।

---

# गृह आदि का स्वच्छ रखना

अथर्व काण्ड ८ सूत्र ६ मन्त्र १४ में उपदेश है कि घर, पाकशाला, आंगन में कूड़ा ककंट इकठ्ठा करने से घर में गर्मी होकर रोग कारक कीड़े उत्पन्न होजाते हैं इसलिये सब स्थानों को शुद्ध रखना चाहिए।

येपूर्वे वध्वोयन्ति हस्तेश्रृङ्गाणि बिभ्रतः।
आपाकेष्टाः प्रहासिनस्तम्वेवेकुर्वतेज्योतिस्तानितोनाशायामसि ॥

गृह-रक्षिकाओ ! गृह को साफ़ सुथरा रखने से आरोग्यता तथा बल और बुद्धि की वृद्धि होती है। स्वच्छ रहने का प्रयोजन यह है कि उसकी दीवारें किसी प्रकार मैली न होने पावें। बहुधा लड़के लड़कियां कोयले आदि से दीवारों पर अनेक लकीरें खींच देते हैं सो कदापि न करने देवे। घर के आगे द्वार को भी साफ़ रक्खे, वहां कूड़ा करकट इकठ्ठा न करे, और फल खाकर उसके बीज या छिल्के जहां तहां नहीं फेंकना चाहिये जिससे आंगन में मक्खी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भिनकने लगें। कोई २ स्त्री जहां जी चाहा वहां हाथ या मुँह धो स्नान कर पृथ्वी गीली कर देती हैं, जिससे दुर्गंधि आने लगती है जो वायु के साथ पेट में जाकर खाँसी सर्दी आदि रोग उत्पन्न कर देती है इसलिये ऐसा न हो। कहीं घूंस ने मिट्टी निकाल रखी हो, किसी स्थान पर कुछ पड़ा हो, कहीं पर कुछ, इससे भी वायु खराब होती है और उन जगहों में बहुधा जानवर रहने लगते हैं जो कभी खाने पीने की वस्तुओं में घुस जाते हैं जिस से अनेक रोग हो जाते हैं और अनेक क्लेश भोगने पड़ते हैं। कभी २ वे छोटे २ जीव बच्चों के ऊपर चढ़ जाते हैं जिसके कारण उनकी नींद जाती रहती है तथा अनेक प्रकार से दुःखी हो जाते हैं। अतः प्रत्येक वस्तु को जहां की तहां रख दिया करो, नहीं तो खटमल, पिस्सू उत्पन्न होकर बहुत दुःखी करते हैं। सदा वर्ष के भीतर दो बार मकान को चूने वा मिट्टी से पुतवा दिया जावे इससे एक तो दीवारें उत्तम जान पड़ती हैं, दूसरे देखने वालों के चित्त को हरती हैं, तीसरे रहने वालों को उसकी तरावट से प्रफुल्लता बनी रहती है जिसके कारण गृहनिवासियों के शरीर निरोग एवं बलवान बने रहते हैं। बहुधा धनाढ्य जन हज़ारों रुपये व्यय कर के पक्के गृह बनवाते हैं परन्तु सफ़ाई पर ध्यान नहीं रखते, इस कारण उनको लाभ नहीं होता वरन् सदा दुःखी बने रहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अनेकान जन घर के द्वारों अर्थात् चबूतरों पर गाय भैंस आदि पशु बांधते हैं उनके बछड़े ज़मीन खोदकर बिगाड़ देते अथवा उनका गोबर पेशाब वहीं दिन भर पड़ा रहता है, मोरियों में बहुत दिनों तक पानी भरा रहता है जिससे सड़ांध पैदा होकर मार्ग के चलने वालों को नाना क्लेश होते हैं। अतः दूसरे तीसरे वा चौथे दिन भङ्गी से धुलवा देना चाहिये और इन नालियों और पाखाने के कदमचों वा ज़मीन को अवश्य पक्का बना दे।

इस उपरोक्त कथन से प्रकट है कि मकान कच्चा हो या पक्का, जब तक स्वच्छ न रहेगा तब तक कुछ लाभ न होगा। कहीं २ ऐसा देखा गया है कि बहुधा स्त्री जन अपने घर को तो स्वच्छ बनाये रखती हैं परन्तु आने जाने के मार्ग पर कुछ ध्यान नहीं देतीं इस कारण उनको पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होते। इसलिये सम्पूर्ण गृह और उसके आस पास की स्वच्छता पर पूर्ण प्रकार से दृष्टि बनाये रहो। मोरी के खराब पानी को भङ्गी आदि से भरवाकर शहर के बाहर खेतों में फिकवा देना चाहिये जिसके लिये वर्तमान समय में बहुधा स्त्रियां गन्दे पानी को दर्वाज़ें के सामने छिड़कवा देती हैं इस से वायु मलिन होजाती है और हैज़ा आदि रोग उत्पन्न होकर सैकड़ों मनुष्यों को दुःख पहुँचाते हैं। उस मार्ग से निकलने वाले मनुष्य भी इसे बुरा कहते हैं। इसके उपरान्त जब कोई बीमार होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है, तो औषधि तो बड़े ज़ोर शोर से करते हैं परन्तु घरकी स्वच्छता पर ध्यान नहीं रखते जिससे बीमारी असाध्य हो जाती है और बहुधा मनुष्य अपने प्राणों को समर्पण कर देते हैं। जो जीते जागते बच भी जाते हैं वे भी नाना प्रकार के क्लेश भोगते हैं सैकड़ों रुपये हकीमों तथा अत्तारों की भेंट कर व्यापार आदि को खो बैठते हैं और अन्य गृहनिवासियों को दुःख सहने पड़ते हैं, रातदिन बीमारियाँ, बनी रहती हैं। इसलिये घरकी पवित्रता पर विशेष ध्यान रखना चाहिये जिससे घर में सब आरोग्य रहें और बल बुद्धि, आयु तथा सुखों की प्राप्त हो प्रातःकाल सूर्य्य निकलने से पहिले उठकर सब दरवाज़ों और खिड़कियों को खोल देना चाहिये जिससे रात की दुर्गंधित वायु निकल स्वच्छ वायु भीतर भर जावे। घर के फ़र्श को तीसरे दिन धुलवाते रहना चाहिये। यदि वह कच्चा हो तो उसको ८ वें दिन अवश्य लीप डालना चाहिये।

---

# कुमार और किशोर अवस्था

जब बालक के दूध के दाँत निकल आवें वा बालक बोलने लगे तब सुन्दर वाणी से बड़े छोटे मान्य आदि के सम्भाषण, कहने, बैठने, उठने की रीति आदि की शिक्षा देनी चाहिये, जिससे उनका सर्वत्र मान होता रहे और वे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वृथा लड़ाई न करने पावें, तथा मिट्टी धूलादि के खेलादि से भी वर्जित रहें। उनको सदा प्रातःकाल उठाना, पाखाना पेशाब कराना मुँह हाथ धोना आदि भी बतलाया जावे।

प्रकट हो कि संतान जगत्कर्ता परमेश्वर की एक उत्तम धरोहर है जिस के उत्तरदाता माता पिता हैं और यह ऐसी धरोहर है कि जिसमें विद्या आदि गुणों के सीखने की स्वाभाविक प्रकृति है; परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि सन्तान को हमारे पढ़ाने लिखाने की कुछ आवश्यकता नहीं। देखिये रेलवे के इञ्जन में चलने फिरने और बोझ ले जाने की स्वाभाविक प्रकृति है पर जब तक उसकी कलों को घुमाया न जाय तबतक वह बिल्कुल निकम्मा (निठल्ला) रहेगा। इसी प्रकार जब तक माता पिता स्वसंतानों को भली भांति शिक्षा न देंगे तब तक उनकी स्वाभाविक प्रकृति निष्प्रयोजन तथा निष्फल है इसके उपरान्त सन्तान अति ही प्यारी वस्तु है जिससे बढ़कर इस संसार में कोई पदार्थ नहीं। फिर भला कैसे शोक का स्थान है कि ऐसे अमूल्य रत्न को विद्यारूपी भूषण से शोभित न करें जिसके कारण उनको नाना प्रकार के क्लेश भोगने पड़ें तथा माता पिता के नाम पर भी धब्बा आवे। इसी लिये वेदों में लिखा है कि माता पिता ऐसा प्रयत्न करें कि उन की सन्तान बुद्धिमान्, धर्मात्मा और सर्वहितैषी होवे जिसके कारण सब लोग माता के समान प्रीति करें। सन्तानों को उत्तम और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सतोगुणी भोजन करावें जिससे नेत्रों में कभी अन्धकार न होवे वरन् सदा ज्योति बनी रहे और वह सदा सत्य नियमों पर चल कर विद्वानों के अगुआ होते रहें। जब संतान ५ वर्ष की हो जावे तो प्रथम देवनागरी का अभ्यास करावे फिर अन्य देशीय भाषाओं को भी सिखावे। परन्तु प्रथम अन्य देशीय भाषा न सिखलाना चाहिये क्योंकि अपनी मातृभाषा का निरादर करना अत्यन्त मूर्खता की बात है, और इसके प्रथम सीखने से अन्य भाषाओं का सीखना अत्यन्त सुगम होजाता है। आज इस प्रथा के न रहने से देश भाषा की प्रतिष्ठा प्रतिदिन कम होती जाती है। मातृ भाषा के शब्द बोलने में लज्जित हो उन की जगह दूसरी भाषा के शब्द बोलने का अभ्यास बढ़ाते जाते हैं जैसा कि नमस्ते, नकस्कार वा रामराम आदि के स्थानों में सलाम, बन्दगी, तसलीमात और गुडमोर्निंग बोलना अपनी प्रतिष्ठा का कारण समझते हैं तथा अपनी संतानों को भी ऐसा ही सिखलाते हैं। इसी प्रकार विद्या आरम्भ संस्कार का नाम मकतब होना या बिस्मिल्लाह होना बोलते हैं। जिसकी देखा देखी हमारे पत्रापांडे भी बड़े हर्ष के साथ कहते हैं कि आज हमारे यजमान के लड़के की बिस्मिल्लाह है। धन्य है इनकी बुद्धि को कि फ़ारसी में अलिफ़ के नाम लट्ठा तक नहीं जानते परन्तु योग्यता जतलाने के लिये बिना फ़ारसी बोले चैन नहीं पड़ता इसी कारण हमारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मातृभाषा संस्कृत विद्या का भारत से लोप होगया और हमारी सन्तानों को उक्त विद्या की उत्तमता का निश्चय नहीं रहा जिससे धर्म में भी नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होगए हैं। अतएव प्रिय सभ्य महोदयो! सब से पहले अपने लाभ और मातृभाषा की प्रतिष्ठा और उद्धार के लिए स्वसंतानों को संस्कृत विद्या का पढ़ाना योग्य है, फिर अन्य देशीय भाषा पढ़ाना चाहिए। देखो अँग्रेज़ प्रथम अँग्रेज़ी और मुसलमान अरबी फ़ारसी पढ़ा फिर अन्य विद्याओं को सिखलाते हैं, किन्तु हमारे देशीय बन्धुगण इसके विपरीत अर्थात् प्रथम अपने घर की विद्या को (जो विद्याओं में शिरोमणि है) त्याग कर दूसरी विद्याओं को सिखाते हैं, जिससे उनको ओ३म् के स्थान पर 'बिस्मिल्लाह रहमन् उल्लरहीम, तथा ईश्वर के स्थान पर ख़ुदा, गोड इत्यादि कहने का स्वभाव पड़ जाता है इसके अनन्तर संस्कृत अथवा देवनागरी के न जानने से अपने धर्म को भी पानी दे देते हैं—अर्थात् बहुधा मुसलमान व ईसाई हो जाते हैं, तथा जो इधर उधर के जाने से बचे रहते हैं उनके आचरण वेद आदि सत्यशास्त्रों के विरुद्ध रहते हैं।

प्यारे बन्धुगण! संस्कृत विद्या की ओर ध्यान दो जो सब विद्याओं का कोष है। यह विद्या सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित हुई। इसी में समस्त भूमण्डल के अर्थ परमेश्वर ने सरल विद्याओं का उपदेश किया। इसी कारण इसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रत्येक विद्या यथावत रूप से पाई जाती है, इसका न्यायशास्त्र समस्त देशों के न्यायशास्त्र से बढ़कर है। वैद्यकशास्त्र भी अद्वितीय है देखो यूनान वालों ने इस विद्या को अपनी भाषा में उल्था कर कैसा नाम पाया, व्याकरण ऐसा उत्तम है कि जिसकी प्रशंसा सम्पूर्ण जगत् के विद्वान् करते हैं। इसी प्रकार ज्योतिष, खगोल, गान, शिल्प, तत्वविद्या, आत्मविद्या आदि विषय इसमें ऐसे ऐसे पाये जाते हैं जिन के पारावार का वर्णन कोई नहीं कर सकता। सच तो यह है कि इस विद्या के शिरोमणि होने में बहुधा विद्वानों के वचन पाये जाते हैं, जो इसी सृष्टि के सृजनहार परमेश्वर का प्रतिपादन करते हैं। सम्पूर्ण ज्ञानी, महात्मा, विद्वान भी इस विद्या की उत्तमता, लालित्यता तथा श्रेष्ठता और योग्यता का दम भर इसी विद्या को सम्पूर्ण विद्याओं का कोष बतलाते हैं।

अन्य देशीय लोग भी इस समय इसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं। देखिये जर्मन में कैसी चर्चा है कि जहाँ वेदों के खण्ड प्रत्येक के पास रहते हैं। ऐसे ही इङ्गलैंड में मैक्समूलर इसी विद्या में अद्वितीय प्रसिद्ध होगये। निदान जितनी विद्यायें इस समय अन्य भाषाओं में देख पड़ती हैं सब इसीसे निकली हैं। डाक्टर हण्टर ने अपने इतिहास में लिखा है कि यह सब भाषाओं की मां है अर्थात् सब भाषा इसी से उत्पन्न हुई हैं। शोक का स्थान है कि हमारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्वदेशी भाई उसके पठन पाठन की ओर किञ्चित् ध्यान नहीं देते। फिर बेचारी देवनागरी को कौन पूंछता है, जैसा कि पंडित गङ्गाराम जी ने एक सवैया में कहा है:—

जग जाहिर काव्य शिरोमणि से अब हिन्द के मानी विलाय गये।
यश आगरी नागरी के बिरवा सुख सींचत ही मुरझाय गये॥
नागरी धीरज कैसे धरे विधना बुध बाल भुलाय गये।
गुण ग्राहक भारतवासिन के ऋषिराज तू हाय हिराय गये॥

परन्तु प्यारे मित्रो! अब गवर्नमेंट ने आपकी हिंदी भाषा की उन्नति के लिये दरवाज़ा खोल दिया है, इसलिये उसका धन्यवाद देते हुये तन, मन, धन से नागरी भाषा की उन्नति में लगजाओ और संस्कृत पाठशालायें खोलदो।

---

# आभूषण पहनना

बाल्यावस्था में बच्चों को सोने चांदी के आभूषण (ज़ेवर) न पहना कर उनकी आत्मा को विद्यादि श्रेष्ठ गुणों से सजाइये जिससे उनका जीवन सुख चैन से व्यतीत हो। गहने पहनाने से बच्चों के हाथ की कलाई और पैरकी पिंडलियां निर्बल होजाती हैं। लालची मनुष्य उनको मार डालते हैं जिसके कारण अनेक घरानों के दीपक बुझ जाते हैं। गहने पहनने से अभिमान आदि दोष बच्चों में आजाते हैं। इन्हीं दोषों को समझ अंग्रेज़ादि बड़े धनी पुरुष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपने २ बालकों को सोने चांदी की हथकड़ियों और बेड़ियों से नहीं जकड़ते, और न इनके पहनाने में शान समझते हैं। वास्तव में गहनों से साहूकारी या बड़प्पन नहीं होता किन्तु विद्याशील-विनय आदि गुणों के धारण करने से प्रतिष्ठा एवं कीर्ति होती है इस लिये हानि कारक गहनों का धारण करना योग्य नहीं वरन् सद्गुणों से बालकों को सुशोभित करना मानुषी कर्त्तव्य है।

---

# जुआ खेलना

ऋग्वेद १०। ३४। १३ में उपदेश है कि ( अक्षैर्मा-दीव्यः ) अर्थात् पाँसा आदि से जुआ मत खेलो। लाल मुर्गादि का दांव लगा कर तथा शतरंज, गंजफ़ा, चौसर आदि का खेल भी भला नहीं क्योंकि जुए की हार और जीत दोनों बुरी होती हैं। जब मनुष्य जीतता है, तो लालच में आकर खेलता ही रहता है, यदि हार गया तो जीतने की आशा पर घरवार को भी खो बैठता है। देखो पूर्वकाल में भी जुआ अर्थात् ताश पत्ते आदि खेलने ही के कारण राजा नल और दमयन्ती को बनबास हुआ। इस जुए ही ने युधिष्ठिरादि पांडवों को बारह वर्ष बन २ में अकेला फिरा कर सब चैन आराम को छुड़ाया और जब इस पर भी न रहा गया, तब अन्त को युद्ध हुआ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिसके कारण भारत का सत्यानाश हो गया। जुआरियों की दशा प्रत्यक्ष प्रकट है, उन की बात पर कोई भरोसा नहीं करता। जब वह हारते हैं, तो एक रुपये का माल दो आने में देकर नंगे बन भूखों मरने लगते हैं। तब चोरी आदि दुष्कर्म करते हैं कि जिसके कारण कारागार भोगते, बदमाशी का तमग़ा मिलता तथा बाप दादे का नाम डूबता है।

अतएव हे पुत्र पुत्रियो! ऐसे कर्मों को तुम कदापि न करो। हमारे देश में इस बुरे कर्म को दिवाली के दिन सब स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकायें बिना रोक टोक के करते हैं। शोक है कि भारतवासी ऐसे बुरे कर्म को त्योहार के दिन करते हैं जिससे यह बुरा कर्म पीढ़ी दर पीढ़ी चला जाता है और एक दिन सब जुआरी बन जाते हैं। कहते हैं कि 'कौरव पाँडव' खेले थे। हाय! क्या ही आश्चर्य की बात है कि लोग उन पांडव और कौरव के अन्तिम दुष्परिणाम पर दृष्टि नहीं डालते। अतः प्यारे गृहस्थियो! यह बुरे कर्म कदापि न करो। जुआ दो प्रकार का होता है एक द्यूत दूसरा समाह्वय। प्राण रहित पाँसा आदि से दांव लगाके क्रीड़ा करना द्यूत और प्राण सहित मेढ़ा, भैंसा, लाल मुर्ग़ा आदि से दांव लगाकर जुआ खेलने को समाह्वय कहते हैं। मनुजी ने कहा है कि राजा को उचित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है कि इन दोनों प्रकार के जुओं को अपने राज्य में न होने दे, क्योंकि यह दोन राज्य का नाश करने वाले हैं। कतिपय पुरुषों का कथन है कि हम मन बहलाव के लिये जुआ खेलते हैं, परन्तु इसका परिणाम यह होता है कि करोड़ों रुपया का माल स्वाहा कर दिया जाता है। इस के जुए में साधारण पुरुषों के अतिरिक्त पढ़े लिखे ग्रेजुएट, बड़े बड़े पंडित, बाबू, और मुन्शी महोदय तक अपने अमूल्य समय, धन और कीर्ति का नाश करते दिखाई दे रहे हैं। शोक! उन की बुद्धि और विद्या प्राप्ति पर। सज्जनो और महिलाओ! विचारो तो सही क्या शतरंज, चौसर, गंजफा आदि में अमूल्य समय को व्यतीत करने ही के लिये ईश्वर ने आपको मनुष्य शरीर दिया है क्या जुआ खेलना ही धर्म और मनुष्य जीवन का उद्देश्य है? नहीं, कदापि नहीं। यदि आप अपने देश और अपनी जाति की उन्नति चाहते हैं, तो इन मिथ्या खेलों को त्याग अपने बहुमूल्य समय को नाना प्रकार के आसन, कसरत करने, समाचार पत्र और उत्तमोत्तम पुस्तकों के पढ़ने महात्माओं के जीवन चरित्रों को अपने मित्रों को सुनाने तथा व्यापार की उन्नति की नई नई युक्तियों के सोचने, अन्य देशों के मनुष्यों के उत्तम विचारों के मनन करने में लगाइये। इससे आपका मन बहलाव, आपके ज्ञान की वृद्धि तथा आप के देश में धन धान्य की उन्नति होगी और अन्य जन भी आपकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देखा देखी ही कार्य कर अपने जीवन को सफल कर सकेंगे।

---

# पशु और पक्षीपालन और उनके लाभ

वेदों में उपदेश है कि उपकार करने वाले पशु पक्षियों को कोई न मारे किंतु अच्छे प्रकार रक्षाकर उनके उपकार लेकर सब मनुष्यों को आनन्द दे। यजुर्वेद अ० १८ मन्त्र २७ में उपदेश है कि जो पशुओं को अच्छी शिक्षा देकर कार्यों को लेते हैं वे सुखी होते हैं। यजुर्वेद अ० २४ मं० १३ व १४ में लिखा है कि उनके गुणों से शिक्षा ग्रहण कर अपने कार्य्यों को सिद्धि करें, मं० २४ व २५ में कहा है कि जो पक्षियों के स्वाभाविक कर्मों को जान कर और समय अनुकूल क्रीड़ा करने वालों के अनुसार कार्य करते हैं वे बहुत सुख उठाते हैं।

**गाय**—सूखा भूसा और घास खाकर कैसा उत्तम दूध, खेती और सवारी के लिये बछड़े, गृह पवित्र करने तथा खेतों में खाद डालने के लिये गोबर और भोजन बनाने को कंडे देती है। इससे यह शिक्षा ग्रहण करे कि संतोष पूर्वक रूखा सूखा खाकर मनुष्य को तन मन धन से परोपकार करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**सिंह**—छोटे या बड़े शिकार को प्रबल प्रयत्न से करता है, वैसे ही मनुष्य को योग्य है कि प्रत्येक कार्य को पूर्ण साहस से करे।

**हाथी**—के पकड़ने वाले बन में गढ़ा खोद कर उसके ऊपर तिनकों की छत डाल काग़ज़ की बनावटी हथिनी उसके ऊपर खड़ी कर देते हैं जिसकी सुन्दरता को देख हाथी...की इच्छा से वहां जा गड्ढे में गिर परतन्त्र हो जाता है, इसी तरह जो मनुष्य रूप आदि हर मोहित हो जाते हैं वह नाना प्रकार के दुःख उठाते हैं।

**हरिण**—बांसुरी या बीणा के शब्द पर मोहित होने के कारण मारा जाता है, उसी प्रकार रसीली बातों ही में मनुष्य को भी अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहिये।

**कुत्ता**—बहुत खाने की शक्ति रहते भी थोड़े में ही संतुष्ट रहना, गाढ़ निद्रा रहते भी झटपट जग जाना चौकसी, करना, और स्वामी की सच्चे प्रेम से भक्ति करना यह बातें कुत्तों से सीखनी चाहिए।

**गदहा**—अत्यन्त थक जाने पर भी स्वामी के कार्य को करना—गर्मी सर्दी को सहन कर संतोष पूर्वक बिचरना इनको गदहे से सीखे।

यजुर्वेद अ० २४ मं० २७ में कहा है कि पक्षियों के स्वाभाविक गुणों से भी लाभ उठाना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौ-पालन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**बगुला**—इन्द्रियों का संयम कर अपने कार्य की सिद्धि करता है वैसे ही मनुष्यों को करना चाहिये।

**मुर्ग़ा**—ठीक समय पर जागना—लड़ाई के लिये तैयार रहना, भाइयों को उनका भाग देना यह शिक्षा मुर्ग़े से लेनी चाहिये।

**कौआ**—धैर्य करना, यथा समय पर घर बनाना, सावधान रहना, छिपकर मैथुन करना, किसी पर विश्वास न करना, यह बातें कौए से सीखनी चाहिए।

**बतक**—सब शरीर को पानी के ऊपर रख कर तैरती है। तथा रात को इनके गिरोह में से एक पहरा देती है बाक़ी सब आराम से सोती हैं। किसी के ज़रा छेड़ देने पर अथवा चोर आदि के आ जाने पर सब चिल्लाने लगती हैं। इनसे घरकी रक्षा अच्छी होती है। बतक की भांति मिल कर प्रेम रखना चाहिये तथा जैसे यह पानी के ऊपर तैरती हैं वैसे ही संसार में रहते हुए मोह आदि में न फँस जगत् को नष्टता एवं मृत्यु का भय करते हुए श्रेष्ठ कर्मों से अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिये।

**पतंग**—रूप पर मोहित हो दीपक में जलकर मर जाता है। मनुष्य को भी सुवर्णादि चमकीली वस्तुओं पर मोहित हो अपने जीवन को नष्ट करना योग्य नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**मधुमक्खी**—बड़े परिश्रम से शहद इकट्ठा करती है और मनुष्य उसके शहद को ले लेते हैं। इसलिये मनुष्य को उचित है कि परिश्रम से इकट्ठे किये धनको उपकार में लगाता हुआ अच्छे प्रकार से भोग भी करे क्योंकि कंजूसी से छोड़ हुए धनको दूसरे लोग हर लेते हैं।

**मछली**—जीभ के स्वाद से जीवन को नष्ट कर देती है। स्वादिष्ट भोजनों की चाह में मनुष्यों को अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहिये।

---

# प्राकृतिक वस्तुओं से शिक्षा

**अग्नि**—यह प्रत्येक वस्तु को भस्म कर देती है। इसी प्रकार मनुष्यों को अपने दोष दूर कर तेजस्वी होना चाहिये।

**जल**—यह स्वभाव से ठंडा, कोमल और देखने में आनन्द देता है। इसके समान मनुष्यों को अपना मन पवित्र एवं कोमल रखना चाहिये।

**पृथ्वी**—गहरा खोदने पर भी उत्तम २ अन्न, फल और भांति भांति के रत्न और धातुएँ देती हैं। उसी भांति दुष्टों के अपराधों को क्षमा करके उनको उत्तम शिक्षा देकर श्रेष्ठ बनाना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आकाश—यह वर्षा से गीला और सूर्य के ताप से गर्म नहीं होता। इसी भाँति आत्मा को शरीर के सुख दुख स्पर्श नहीं होते।

सूर्य्य—यह अपनी किरणों से पानी को खींच कर फिर पानी बरसाता है परंतु खींचने और बरसाने का अभिमान नहीं करता, इसी प्रकार प्रत्येक पुरुष को अपने गुणों का अभिमान नहीं करना चाहिये।

समुद्र—वर्षा का पानी गिरने और अगणित नदियों के मिलने पर सीमा से बाहर नहीं निकलता और न बहुत गर्मी पड़ने से सूखता है उसी प्रकार भोगों के मिलने से अत्यन्त प्रसन्न और न मिलने पर दुखी नहीं होना चाहिये।

भारत प्रसिद्ध हकीम यूसुफ़ ने अपनी अमूल्य पुस्तक में लिखा है कि मनुष्यों को संसार के प्राणियों की अनेक प्रकार की इच्छाओं तथा स्वभावों से अच्छे और बुरे की परीक्षा और कुत्ते की कृतज्ञता, शेर की वीरता, लोमड़ी की मक्कारी, चीते का गुस्सा और ऊँट की गम्भीरता आदि स्वभावों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

वास्तव में चित्रमय—जगत् के प्रत्येक पदार्थ एवं प्राणी से कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य मिलती है, तथा प्रभु ने किसी प्रयोजन विशेष के लिये ही उन को बनाया है। जर्मन आदि देशों में बन्दरों से मशीन चलाने, पंखा खींचने और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कुत्तों तथा कबूतरों से डाक पहुँचाने आदि का काम लिया जाता है। लाल, तितली, मुनियां, पतङ्ग, मैना, तोता आदि रंग बिरंगे पक्षियों को देखकर ही विदेशियों ने नाना प्रकार के चित्र विचित्र रङ्ग के कपड़ों को बनाया और उन में अनेक प्रकार के रंग दिये। प्राचीन भारत निवासी उपरोक्त गुण ग्राहकता के लिये ही पशु पक्षियों को पाला करते थे और उनसे नाना प्रकार के लाभ उठाते थे और आज कल के मनुष्यों की भांति लड़ाई लड़वाने में समय को व्यर्थ न खोते थे। इसलिये आप भी पशु पक्षियों के पालन करने के यथार्थ लाभों को जान अपनी सन्तानों को भी वैसोही शिक्षा दीजिये। इसके उपरांत मिथ्या खेल और तमाशों से भी संतानों को बचाना चाहिये क्योंकि उनसे भी नाना प्रकार की हानियां होती हैं। जैसे मोहचंग बजाने से एक तरफ की मूंछ के बाल उड़ जाते हैं। पतंग उड़ाने से बहुधा लड़के छतों पर से गिर कर मर जाते हैं। इस प्रकार के मिथ्या कार्यों में धन और समय भी व्यर्थ जाता है।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ब्रह्मचर्य्य का महत्व

## अर्थात्

## वीर्य रक्षा और विद्याध्ययन का समय

प्रिय सज्जन पुरुषो और सुयोग्य महिलाओ ! 'ब्रह्मणे-वेदादि विद्यायैचर्यत इति ब्रह्मचर्यम्' अर्थात् ब्रह्म वेद विद्या को कहते हैं। उसके सीखने के लिये जो व्रत किया जाता है उसको **ब्रह्मचर्य्य** तथा उस व्रत के धारण करने वाले को **ब्रह्मचारी** कहते हैं। विद्या उपार्जन के लिये बहुधा नियमों का पालन करना पड़ता है, उसमें मुख्य **वीर्य रक्षा** है। शरीर का राजा **वीर्य** ही है, इसी को शुक्र कहते हैं, इसी से शरीर में बल, कांति, तेज़ और प्रकाश होता है। जीवन का आधार यही है। यही अकाल मृत्यु के जीतने की **परमौषधि** और **आरोग्यता** का मूल मंत्र है। इसी के प्रताप से मेधा, शक्ति, स्मर्ण, विवेक और ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसी हेतु शङ्कर भगवान ने वीर्य रक्षा करने को उग्र तप बताया है। इससे बढ़कर तीनों लोकों में कोई दूसरा तप नहीं क्योंकि उर्ध्वरेता स्त्री पुरुष ही पृथ्वी पर देव पद के अधिकारी होते हैं। बिना इसके पूर्ण विद्या आना असम्भव है फिर अनुभवी होना कैसा ? यथार्थ में शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक सम्पूर्ण उन्नतियों का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यही एक आधार है। बिना इसके कोई उत्तम प्रकार से राज्य शासन नहीं कर सकता क्योंकि इसी से साहसी और पराक्रमी होते हैं। शूरवीरता का भूषण यही है। यथार्थ शान्ति शील और संतोषी यही बनाता है। सौन्दर्य लावण्य बिना इसके पूर्ण रूप से किसी को प्राप्त नहीं होता। निर्भयता और स्वतंत्रता का यह केन्द्र है। घोर से घोर आपत्तियों के सहन करने की सामर्थ वीर्य्य रक्षा से ही होती है। इसलिये यजुर्वेद अ० १५ मंत्र ३५ में लिखा है कि विद्वान् मनुष्यों को संसार में दो काम निरन्तर करना चाहिये **प्रथम**—ब्रह्मचर्य और जितेन्द्रियता आदि की शिक्षा से शरीर का रोग रहित बल से युक्त पूर्ण अवस्था वाला, **द्वितीय**—विद्या तथा क्रिया की कुशलता से आत्मा का बल अच्छे प्रकार साधे जिससे सब काल में आनन्द प्राप्त हो। यजुर्वेद अ० २१ मं० २० में उपदेश है कि जैसे प्रसिद्ध अग्नि, बिजली, पेट की अग्नि, बड़वानल ये चार और प्राण, इन्द्रियां तथा गाय आदि पशु सब जगत् की पुष्टि करते हैं, इसी भांति स्त्री पुरुषों को **ब्रह्मचर्य** से अपना और दूसरों का बल बढ़ाना चाहिये। यजुर्वेद अ० २८ मं० में कहा है कि जो स्त्री पुरुष **ब्रह्मचर्य, औषधि** पथ्य और अन्य सुन्दर नियमों के सेवन से शरीर की रक्षा करते हैं उनके शरीर दृढ़ और मज़बूत होते हैं और जिस प्रकार स्त्री पुरुष पृथ्वी आदि के घर में रहते हैं उसी भांति **जीव** का यह **शरीर** घर है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसके उपरान्त चार **आश्रम** चार प्रयोजनों की पूर्ति के लिये परमात्मा ने नियत किये हैं। उन सब में पहिला आश्रम शारीरिक बल, विद्या, सुशिक्षा की प्राप्ति के लिये है इसी हेतु यजुर्वेद अ० १२ मं० १८ में उपदेश है कि चारों आश्रमों के यथावत पूर्ण होने के अर्थ **प्रथम ब्रह्मचर्य** आश्रम का पालन करना चाहिये। अथर्व वेद कां० ४१ मं० १५ में कहा है कि जो प्रथम अवस्था में **ब्रह्मचर्य** को धारण कर माता, पिता, आचार्य की शिक्षा प्राप्त करते हैं, वही **उत्साही** और **दीर्घायु** होकर, सकल विघ्नों को हटाकर, **दुष्टों** के फन्दों से बचकर, विज्ञान और सुवर्णादि धन को पाकर, संसार में **यश** को पाते हैं। ऋग्वेद मं० ५। अ० ४। सू० ५३। मं० ४ में लिखा है कि जिस कुल में ब्रह्मचर्यव्रत करने वाले स्त्री पुरुष विद्यमान हैं, वही कुल **भाग्यशाली** है। शतपथ में लिखा है **ब्रह्मचर्य** व्रत करने वाले सब दुःखों से पृथक् रहते हैं। चरक चि० अ० १ में स्पष्ट वर्णन है कि सब पुण्यों से उत्तम पुण्य, रोग नाशक, आयु और तेज का बढ़ाने वाला, असमय की मृत्यु से बचाने तथा सुखों का देने वाला **ब्रह्मचर्य** ही है। अथर्व कां० ११। सू० ५ में लिखा है कि औषधि, वनस्पति, पक्षी और बिना पंख वाले, ग्राम और जङ्गल के पशु पार्थिव और आकाश के पदार्थ जीव, जन्तु **ब्रह्मचर्य** से ही बली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एवं दीर्घजीवी होते हैं। छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि जिस कर्म को कर्मकाँडी लोग यज्ञ कहते हैं वह भी ब्रह्मचर्य ही है। जिसको इष्टि कहते हैं वह भी ब्रह्मचर्य ही है। मौन भी इसी को कहते हैं। वह भी ब्रह्मचर्य ही है। पातंजलि महाराज अपने योग सूत्र में लिखते हैं कि ब्रह्मचर्य से वीर्य लाभ होता है।

**शंख, गौतम** और **पराशर** इत्यादि सभी ने अपनी अपनी स्मृतियों में ब्रह्मचर्य की महिमा गान की है। **अमृतसिद्ध** नामक ग्रंथ में लिखा है कि जो ब्रह्मचारी नहीं उसकी कभी सिद्धि नहीं होती और वह जन्म मरण आदि क्लेशों को भोगता रहता है। **कपिल मुनि** का वाक्य है कि मनुष्य इसी के बल से ऋषियों की बात को सुनकर आनन्द पाता है। **सनतसुजान** का वचन है कि ब्रह्मचर्य धारण करने वालों को मोक्ष सुख मिलता है। **श्रीकृष्ण** महाराज ने गीता में कहा है कि जो मनुष्य मन, बुद्धि से जितेन्द्रिय होते हैं वही जीवन मुक्त होते हैं। **भीष्मपितामह** ने युधिष्ठर से कहा कि संसार में उत्पन्न हो मरण तक जो ब्रह्मचारी रहता है उसके लिये कोई बात ऐसी नहीं जिसको वह प्राप्त न कर सके। **शुकदेवजी** ने राजा जनक से कहा है कि जिसने ब्रह्मचर्य से चित्त की शुद्धि की है उसको अन्य आश्रमों में आनन्द मिलता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

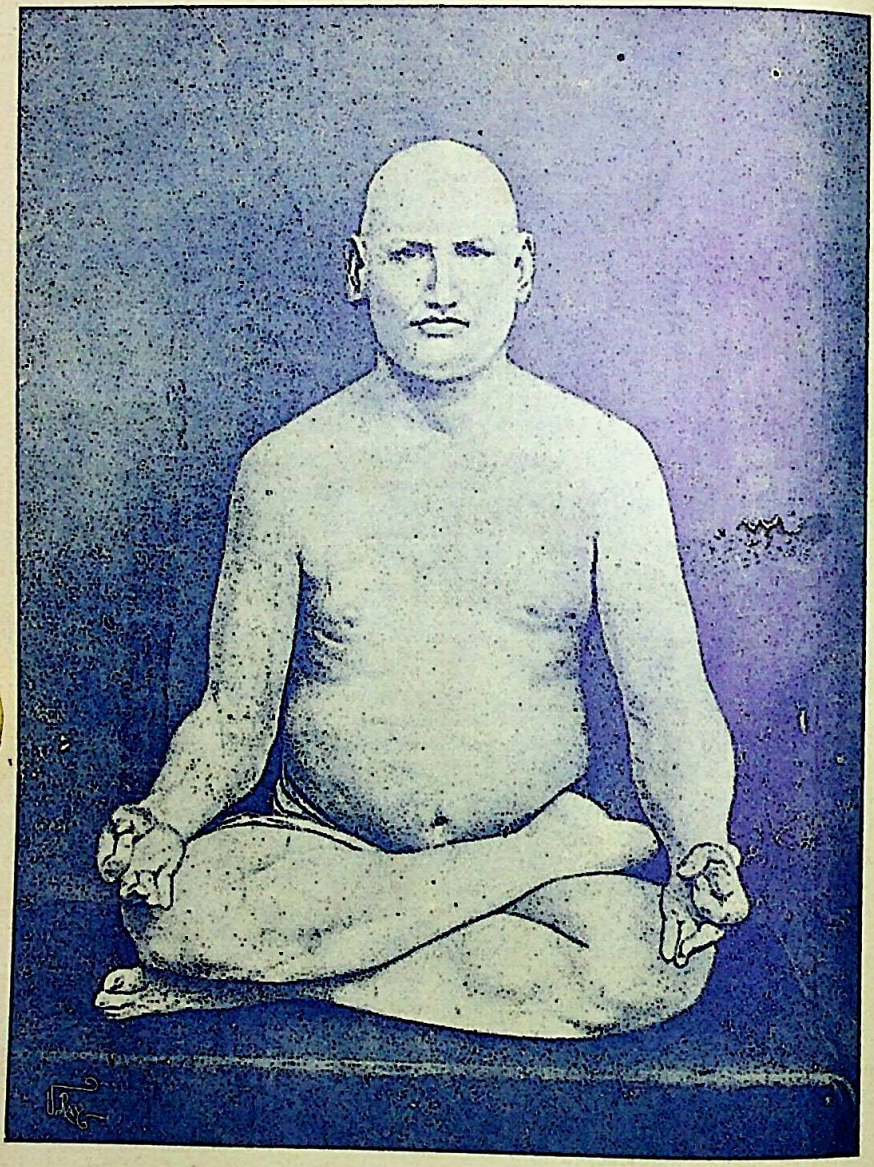

आदित्य ब्रह्मचारी श्री १०८ महर्षि
स्वामी दयानन्द सरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और उसीसे आरोग्यता, शक्ति, तेज, उत्साह, निर्मलबुद्धि, स्मरणशक्ति, उत्तम ज्ञान और अचल ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती का कहना है कि जिस जाति में ब्रह्मचर्य आश्रम का यथावत पालन होता है वह देश और वह जाति सब प्रकार के कल्याण को प्राप्त करती है। स्वामी दर्शनानन्दजी का कहना है कि ब्रह्मचारी के लिये जगत के सम्पूर्ण पदार्थ सुखदाई होते हैं। स्वामी शुद्धबोधतीर्थजी कहते हैं कि ब्रह्मचारी ही संसार में सुख शांति का साम्राज्य स्थापित कर सकते हैं। स्वामी सर्वदानन्दजी का कथन है कि विना इस अमृत के पान किये कभी पूर्ण आनन्द नहीं मिलता। स्वामी विशेश्वरानन्दजी और स्वामी नित्यानन्दजी की शिक्षा है कि संसार की सम्पूर्ण उन्नतियों का मूल-मंत्र ब्रह्मचर्य ही है। स्वामी रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, भाई परमानन्दजी ब्रह्मचर्य को ही सुख का साधन बतलाते हैं। लाला लाजपतरायजी, ला० हंसराजजी इसके गुण गाते हैं। लोकमान्य तिलक महात्मा गांधी ब्रह्मचर्य को सुख शांति प्राप्त करने का मुख्य साधन मानते हैं। स्वामी सत्यदेवजी और पंडित मदनमोहन मालवीय जी आदि विद्वान बारम्बार यही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उपदेश करते हैं कि भारत ब्रह्मचर्य-आश्रम के तोड़ने से ही ग़ारत हुआ है। इसी के त्याग से विद्या के गूढ़ रहस्यों के समझने की शक्ति नहीं रहती, तथा जवानी में ही सूरत पीली पड़ जाती है, आँखों में वह प्रकाश नहीं रहता, मांस ढोला पड़ जाता है, मन उदास रहता तथा स्मरण शक्ति न्यून हो जाती है, आंखों के चारों ओर कालापन एवं मुख में दुर्गन्ध आने लगती है, छाती की कमज़ोरी, कफ़, खांसी, क्षय, अङ्गों का काँपना, हाथ पैरों से आग निकलना, पिंडलियों में दर्द, अंडकोषों का बढ़ जाना, बिना गर्मी के पसीना आना, शरीर का बोझ कम होजाना, और प्रत्येक समय क़ब्ज़ की शिकायत रहना, अधिक कहां तक बतावें एक नहीं अनेकों रोग उनको घेर लेते हैं जिससे जन्म भर के सुखों पर पानी पड़जाता है।

किसी कवि ने ठीक कहा है—

हे प्रिय भ्रात सुनो मम बात, तो वीरज खोय कहा तुम लय्यो।
धन संचय देख घमंड करो, तेहिं चार दिना में खोय गमय्यो॥
रोग प्रमेह प्रचंड दवागिन, सोन शरीर में दाग लगय्यो।
देत फिरो धन वैद हकीमन, ऐसो कहां फिर वीरज पय्यो॥

किसी महात्मा ने कहा है—

शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्षेन्नारोग्यमिच्छता।
धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्य मूलकारणम्॥
चित्तायत्तं नृणां शुक्रं शुक्रायत्तं च जीवितम्।
तस्माच्छुक्रं मनश्चैव रक्षणीयं प्रयत्नतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रिय पाठको ! जिसके सिर पर काम सवार होजाता है वह तृण से भी हलका हो, राजपाट खो, प्रतिष्ठा और मान को धूल में मिला संसार में अपकीर्ति पाता है, बन बन फिरता और नदी नाले लांघता है और परलोक में दण्ड का भागी होता है, इसी काम ने रावण को किस प्रकार नाच नचाये, तारा के अपहरण से बालि और द्रोपदी के ग्रहण करने की इच्छा से कीचक का बध हुआ। उर्वशी अप्सरा के साथ निरन्तर रमण करने की चिन्ता में राजा पुरुरवा ने अपने जीवन को नष्ट कर दिया। इस लिये जीवन रक्षा के हेतु पराई स्त्री का ध्यान कभी न करे। जैसा कि—

लंकेश्वरो जनकजा हरणेन बाली,
तारापहारकतयाप्यथकीचकाख्यः।
पाञ्चालिकाग्रहणता निधनंजगाम,
तच्चेतसापि परदाररतिं न कांक्षेत्॥
उवशीसुरतचिंतया ययौ मंक्षयं किं पुरुरवानृपः।
रक्षणायनिजजीवितस्य तत्संभजेत्परबधूं न कामतः॥

प्यारे सज्जन पुरुषो ! सच पूछिये तो शरीर में सब खेल धातु अर्थात् मनी रूपी राजा के हैं। जब इसकी पूर्व बतलाई रीति से रक्षा नहीं होती तो फिर भला किस प्रकार शरीर रूपी वृक्ष में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि फल लग सकते हैं, कदापि नहीं। जिस तरह जब सेना का राजा भाग जाता है तब उसको सब तरह से दुर्दशा होती है, उसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भांति नाक, कान, हाथ, पाँव, नेत्र, त्वचा, जीभ और वाणी आदि दस रिसालों की शरीर रूपी सेना से जब वीर्य्य रूपी राजा निकल जाता है तो यह रिसाले जिधर जिसकी इच्छा होती है चले जाते हैं। अर्थात् नाक, कान, नेत्र आदि अपना कार्य करने योग्य नहीं रहते, फिर भला बल, पौरुष, धैर्य, ज्ञान आदि सुख कैसे मिल सकते हैं ?

वर्तमान समय में ब्रह्मचारी के माता पिता आचार्य कुछ सुध नहीं लेते, और यह तक नहीं जानते कि ब्रह्मचारी किसको कहते हैं। न वह उनके लाभों को यथावत् जानते हैं, क्योंकि वे आपभी ब्रह्मचारी नहीं बने न सत्य शास्त्रों का पठन किया, न उनको वर्तमान काल के आचार्यों ने समझाया। आजकल तीनों न्यून अवस्था में विवाह होना ही उत्तम जानते हैं। वे कहते हैं कि आज हमारे ललुआ के मनुआ हो जावे तो हमारे नेत्रों को आनन्द मिले और चैन आवे। वेद पढ़ाकर हमें फ़क़ीर थोड़ा ही बनाना है इसी कारण यज्ञोपवीत के समय वेदारम्भ का नाम ही रह गया। जब हमारे देश के माता पिता और आचार्यों की दशा यह हो गई तब ही तो भारत रसातल को चला गया, यहां न कोई वेद पढ़ता है न शास्त्र। फिर क्या है ? देखलो क्या था क्या हो गया ? मुख्य कारण ब्रह्मचारी बन विद्या पढ़ना ही है क्योंकि वीर्य्य शरीर में पकने से उत्साह—उत्साह से विद्या, विद्या से ज्ञान—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ज्ञान से धर्म–धर्म पर चलने से सब तरह के यथावत् सुख मिलते हैं। वही पदार्थ विद्या में उन्नति कर सकता है, वही सब आनन्द तथा परमानन्द अर्थात् मोक्ष सुख को पाता है। इसी व्रत के धारण करने से शरीर फ़ौलाद और बज्र के समान हो जाता है, मस्तिष्क में विलक्षण शक्तियों का संचार तथा मन पुष्प की भांति खिल जाता है। विद्या सुशिक्षा के कारण विचार गम्भीर और उच्च बन जाते हैं, किसी प्रकार का भय उनको नहीं सताता। स्मरण-शक्ति में एक अलौकिक प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। सच पूछो तो इसी एक रसायन के सेवन से असंख्य–अलभ्य लाभों के अंकुर जम जाते हैं जिनके मीठे फलों के स्वादिष्ट रसों के पान करने से जीवन अमर हो जाता है। जहाज़ द्वारा जिस प्रकार समुद्र को पार कर सकते हैं उसी भांति संसार रूपी विस्तृत और दुस्तीर्थ समुद्र को पार करनेका आधार ब्रह्मचर्य्य आश्रम ही है। प्राचीन काल में राजा और प्रजा दोनों ही ब्रह्मचर्य्य का यथावत् पालन करते थे। उस समय आयु का औसत १०० वर्ष का था, उसी हिसाब से चार आश्रमों में उसको बांटा गया था। इस समय हमारी आयु का औसत १०० से कम रह गया, तथा आश्रमों की दशा भी ठीक नहीं रही। प्रकृति के नियमों के विरुद्ध कार्य्य करने से जीवन का नाश होगया। एक पश्चिमीय डाक्टर का कहना है कि दीर्घ जीवन के लिये स्वच्छ–नियमानुकूल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भोजन–व्यायाम–मादक द्रव्यों का त्याग और न्यूनावस्था में शादी न करना ही है। डाक्टर साहब के इस उपदेश से पश्चिमी देशों के मनुष्यों ने अपनी आयु की वृद्धि के लिये उपरोक्त नियमों पर चलना प्रारम्भ कर दिया, प्रत्यक्ष फल यह होरहा है कि हमारी अपेक्षा विदेशीय जन अधिक विद्या व्यसनी–जितेन्द्रिय–स्वच्छता प्रेमी–दीर्घायु और उच्च विचार वाले हो रहे हैं। देखिये अब वहाँ के पुरुषों की आयु का औसत निम्न लिखित है। स्वीडन ५१, डेनमार्क ५०, फ्राँस ४६, इङ्गलेंड ४४, संयुक्त राज्य अमेरिका४४, इटली ४३, प्रांत भारतवर्ष के पुरुषों की आयु का औसत २३ वर्ष ही है। इसी प्रकार स्त्रियों में स्वीडन ५४, डेनमार्क ५४, फ्रांस ४९, इङ्गलेंड ४७, संयुक्त राज्य अमेरिका ४७, इटली ४३ और भारतवर्ष की स्त्रियों की आयु का औसत २४ है अब आप विचार करें कि २४––२५ की आयु में हम अपनी संतान तथा कुटुम्ब का कितना पालन वा सुधार कर सकते हैं तथा देश और जाति के हितमें कितना भाग ले सकते हैं? यदि यही दशा रही तो हमारे प्रति पक्षियों के सुख साधनों की वृद्धि के साथ उनकी आयु का औसत बढ़ जायगा और हम शनैः २ नाना दुखों को भोगते हुए और भी थोड़ी आयुमें मरने लगेंगे और साथ ही जीवन के परम सुख से भी वञ्चित रहेंगे। जिनका शरीर पुष्ट है उनकी ही मानसिक शक्तियां बढ़ती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हैं, उनकी ही बुद्धि बलवान् और तेजयुक्त होती है, वही सत्य बुद्धिवाले हो सकते हैं और वेही ईश्वर के प्रेमी भक्त। उनकी ही आत्मा में उद्योग और पुरुषार्थ को स्थान मिलता है। अधिक क्या मानसिक और आत्मिक बलको बढ़ाने और सामाजिक बल को परिपुष्ट तथा विस्तृत करने का साधन ब्रह्मचर्य द्वारा शरीर की पुष्टता और दृढ़ता ही है। इसलिये जो शरीर से बली हैं वे ही जीवन की प्रधान शक्तियों से युक्त हो सकते हैं, तथा जिस जाति-जिस देश और जिस राष्ट्र में ऐसे नर नारी होंगे, वहीं उन्ननि की लहर प्रवाहित होगी। अतएव भारत माता के सच्चे सपूतो! यदि तुम अपनी जाति देश और राष्ट्र की उन्नति चाहते हो और यदि चारों दिशाओं में विजय का डंका बजाना है तो कुरीतियों को एक दम बन्द करके अपने पुत्र पुत्रियों को ब्रह्मचर्य व्रत धारण कराओ, तबही आपकी सब कामनायें पूर्ण होंगी। सब इच्छायें आपके सामने हाथ बांधे खड़ी रहेंगी, तथा यह देश फिर सब देशों का शिरोमणि बन जायगा और भारत का बेड़ा पार हो जायगा। जैसा किसी कवि ने कहा है—

'ब्रह्मचारी जगत में आवें तो बेड़ा पार हो।'

अस्तु, जिस प्रकार हम ऊपर कह चुके हैं, ब्रह्मचर्य्य के ऊपर संग और मंडली का भी बहुत अधिक प्रभाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। यदि किसी मनुष्य का रहन सहन दुष्ट मनुष्यों में होगा, तो उसका भी कुटिल बन जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। और यदि उसके साथी उत्तम मनुष्य होंगे, तो वह भी वैसा ही श्रेष्ठ और सज्जन बन जायया। इस हेतु सदैव कुसंग को छोड़ कर सतसंग करना योग्य है।

---

## सतसंग महात्म्य

ऋग्वेद अ० ३। अ० १। व० २१। मं० ३। अ० २। सू० २१। मं० ४ में लिखा है कि जिस प्रकार जल से सींच वृक्षों को बड़ा फल को पाते हैं, उसी भांति सतगुरुओं का सत्सङ्ग करके विज्ञान रूपी फलों को प्राप्त करें। इसलिये माता पिता आदि को योग्य है कि अपनी संतानों को दुष्ट सङ्ग से पृथक रख श्रेष्ठों का सङ्ग कराकर धार्मिक तथा चिरंजीवी बनावें, जिससे वह वृद्धावस्था में भी अप्रियाचरण न करें। इसी प्रकार वेदों की आज्ञाओं के अनुसार अन्य ग्रन्थ भी उपदेश कर रहे हैं। सत्सङ्ग से बुद्धि की जड़ता नष्ट होती, वाणी में सत्यता आती, पापों की निवृत्ति हो मान की वृद्धि, चित्त की प्रसन्नता और सुखों की प्राप्ति होती है और इससे परलोक में भी शुभ कामनायें पूर्ण होती हैं। अनेकान जन्मों के उत्तम कार्यों के फल से उत्तम संगति मिलती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है इसलिये तत्वदर्शी, ज्ञानी, विद्वानों एवं पंडितों ने बारम्बार यही उपदेश किया है कि यदि तुम सुख को चाहते हो तो सत्सङ्ग करो क्योंकि तीनों तापों की निवृत्ति सत्सङ्ग से होती है। अतः अच्छे बुरों की परीक्षाकर, बुरों के पास न बैठ, श्रेष्ठ जनों की संगति करे। तुलसीदास जी ने कहा है कि उत्तम जन वही हैं जो काम-क्रोध-लोभ-मोह-मत्सरता-ईर्षा और द्वेष को छोड़ जप-तप-व्रत-नियम-संयम-शम-दम-शांति-त्याग--प्रेम-धीरता-पुरुषार्थ और विवेक आदि गुणों में लवलीन, दूसरों के दुख में दुखी और सुख में सुखी अर्थात् समदर्शी होते हैं। वही दीनों पर दयावान, ईश्वर में भक्तिवान, मन, बच और कर्म से परोपकारी बन, कोमल चित्त वाले होते हैं। उन्हीं की वाणी में सत्यता-मधुरता और सरलता होती है। उनके चरित्र कपास के समान अनेक कष्टों को सहन कर दूसरों की भलाई करने वाले बनते हैं। ऐश्वर्यशाली होने पर भी वह अभिमान नहीं करते, तथा सर्वदा प्रसन्न चित्त और पवित्र रहते हैं। अपनी प्रशंसा सुन संकुचित तथा दूसरों की महिमा सुन प्रसन्न होते एवं ईश्वर की आज्ञा मानने में दत्तचित्त दिखाई देते हैं।

भर्तृहरि जी कहते हैं श्रेष्ठ पुरुष भीतर से नारियल के फल के समान मीठे और कोमल होते हैं। उनमें धन के साथ विवेक, विद्या के साथ विनय और बल के साथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नम्रता होती है। श्रेष्ठजन आपत्ति आने पर भी अपने उत्तम स्वभाव को नहीं बदलते, और किसी प्रकार से नीच कर्म नहीं करते, वरन् विपत्ति में धीरता, स्वभाव में क्षमा, सभा में वचन की चतुराई, युद्ध में शूरता, यश में रुचि, वेद में प्रेम करने वाले होते हैं। देखो चन्दन बारबार घिसे जाने पर भी सुगंधित और सोना अनेकबार तपाने पर भी सुन्दर शोभायमान बना रहता है। इसी भांति श्रेष्ठजन अनेकान कष्ट पड़ने पर भी अपनी मर्यादा को नहीं तोड़ते। चाणक्य ने कहा है कि समुद्र प्रलय के समय अपनी मर्यादा छोड़ देता है, परन्तु उत्तम जन अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ते। महाभारत शांति पर्व में महात्मा भीष्म औ विदुर महाराज ने भी धृतराष्ट्र से ऐसा ही कहा है। श्रीमद्भागवत स्कंद ३ अध्याय २५ श्लोक २० में कहा है कि जिस प्रकार सूर्य कमल को और चन्द्रमा कुमोदनी को खिलाता है तथा मेघ बिना मांगे पानी देते हैं उसी भांति श्रेष्ठजन बिना कहे उपकार करते हैं। ऋग्वेद में मनुष्यों की गणना देवी और आसुरी सम्पत्ति से की है। अर्थात् अच्छे पुरुषों में तेज, दृढ़ता, क्षमा, शौच, अद्रोह, अहिंसा, सत्य और अक्रोध तथा बुरों में दम्भ, अभिमान, क्रोध, लोभ, और काम इत्यादि होते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि दुष्ट पुरुष अन्य के दोष को हज़ार नेत्रों से देखते, और दूसरे के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हित को मक्खी के समान बिगाड़-बिना प्रयोजन ही शत्रु बन जाते हैं। खलों का तेज अग्नि के समान प्रचण्ड होता है, जो मिलकर छापा मारते हैं उनके हृदय दूसरों के वैभव को देखकर जलते हैं, पराई निन्दा सुन कर प्रसन्न होते हैं। वह कामी-क्रोधी-लोभी-हिंसक-कपटी-कुटिल-मिथ्या-वादी और लोलुप होते हैं। उनका सब व्यवहार अपने प्रयोजन साधन का होता है। बातें मीठी मीठी बनाते हैं, परन्तु हृदय में कुछ और होता है। परधन, पर स्त्री की इच्छा वाले तथा अन्य को बिपत्ति में देख कर ऐसे प्रसन्न होते हैं मानों उनको राज्य मिलगया हो। अपने स्वार्थ में मस्त, माता, पिता, गुरु, आचार्य्य आदि बड़ों की अवज्ञा करने वाले, ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध कार्य करने में प्रवीण, विद्या, बल, धन को पाकर ऐसे हो जाते है जिस भांति छोटी नदी थोड़े जल से उतारा जाती है। दुष्टजन जिससे बड़ाई व प्रभुता पाते हैं प्रथम उसी का नाश कर देते हैं।

चाणक्य जी ने कहा है कि सांप के दांत में, मक्खी के सिर में और बिच्छू की पूँछ में विष रहता है परन्तु दुर्जन के सब अङ्गों में विष पूर्ण रीति से भरा रहता है। यह भी कहा है कि दुर्जन और सांप इनमें सांप अच्छा है दुर्जन नहीं क्योंकि साँप काल आने पर काटता है परन्तु खल पद पद पर। शांतिपर्व अध्याय १०३ में वृहस्पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ने इन्द्र से कहा है कि जो परोक्ष में दोशों को कहे उसको दुष्ट जानना चाहिये। महर्षि चाणक्य ने कहा है कि बुरे आचरण वाले, बुरे स्थानों में रहने वाले, पाप बुद्धि पुरुषों से मैत्री करने वाले शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। इसलिये कल्याण की इच्छा रखने वाले पुरुष नीच का संग कदापि न करें। नीचों के सङ्ग से मनुष्य नीच बन बुद्धि से भ्रष्ट हो गौरव, उन्नति और प्रशंसा का नाश मार लेते हैं। भर्तृहरिजी ने कहा है कि बन तथा पर्वतों पर रहना अच्छा, पर मूर्ख के साथ इन्द्र भवन में भी रहना अच्छा नहीं। शुक्राचार्य का कथन है कि काले सर्प का सङ्ग अच्छा, परन्तु दुर्जन का नहीं। हितोपदेश में लिखा है कि जिस प्रकार कुत्ते की पूँछ मलने से सीधी नहीं होती वैसे ही नित्य सेवा करने से भी नीच अपनी नीचता को नहीं छोड़ते। विष्णुशर्मा ने कहा है कि प्राण त्यागना अच्छा पर नीचों के पास जाना अच्छा नहीं जैसा किः—

वरंप्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः।

अतएव अपनी भलाई की अभिलाषा से नीचों के कुसङ्ग को त्याग उत्तम पुरुषों की सेवा में तत्पर रहे उसका ही सहवास करे क्योंकि शान्तचित्त, शांतस्वभाव और शांतमार्ग प्रदर्शक विद्वान् एवं महात्माओं की सङ्गति से ही उत्तम जीवन, उत्तम सन्तान और बहुत धन की प्राप्ति होती है। विदुर जी ने धृतराष्ट्र को उपदेश दिया है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कि सुख की प्राप्ति के लिये उत्तम पुरुषों का ही सङ्ग करना योग्य है। मान्यवरो! मनुष्य जन्म का उत्तम फल-बिना सत्सङ्ग के नहीं मिलता, इसीसे अन्तःकरण की शुद्धि एवं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यथार्थ में सत्सङ्ग ऐसी ही औषधि है जिससे मनुष्य तीनों तापों से छूट कर आनन्द धाम को पाते हैं। भर्तृहरि तथा चाणक्य जी ने कहा है कि चन्द्रमा की शीतलता प्रसिद्ध है परन्तु सज्जनों के सङ्ग से चंद्रमा से भी अधिक शांति की प्राप्ति होती है तथा साँसारिक अथवा पारलौकिक सर्व प्रकार के आनंद सत्सङ्ग से ही प्राप्ति होते हैं जैसा कि कहा है—

चन्दनं 'शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमा।
चन्दनाच्चन्द्रमश्चैव शीतलासाधुसङ्गतिः।
साधूनां दर्शनंपुण्यतीर्थं भूताहि साधवः॥

इसी से मूर्ख कुमार्गी पुरुष ज्ञानी और महात्मा हो जाते हैं जिनके उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं।

प्रिय सज्जन पुरुषो! उपरोक्त कथन से प्रत्यक्ष प्रकट होगया कि मनुष्य का कल्याण अच्छे अर्थात् भले आदमियों का सङ्ग करने से होता है। वर्तमान समय में उन पुरुषों का सङ्ग कियाजाता है जिनमें न विद्या, न तप, न ज्ञान, न शक्ति, न गुण, न धर्म होता है, जिनको भर्तृहरि जी ने पशु के समान माना है।

जैसाकि—

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस पर तुर्रा यह है कि मौजूदा ज़माने में उपरोक्त अनपढ़ों के अतिरिक्त बहुधा पढ़े लिखे पुरुष, नाम मात्र के साधु, बैरागी, बाबाजी, मंदिरों के पुजारी, अध्यापक, गुरु, आचार्य, उपदेशक, लाला, बाबू, ओहदेदार, पण्डित, मौलवी, सेठ, साहूकार, मुनीम, इत्यादि छोटे बड़े पतङ्ग उड़ाने वालों, शतरंज, चौसर, गंजफा, नक्की-मूठ खेलने वालों, नौटंकी, रासलीला, थियेटर, आदि के देखने में समय व्यतीत करने वालों, चरस, भङ्ग, अफ़यून, शराब, इत्यादि नशे पीने वालों अथवा रात दिन लड़ाई झगड़े और मुक़द्दमेबाज़ी में लगे रहने वालों का संग करते हैं और अपने माता पिता इत्यादि से शत्रुता करते है। इस प्रकार के पुरुषों के साथ से भला कभी भारत का सुधार हो सकता है? कभी नहीं, वरन् आगे आने वाली संतानों के स्वभाव बिगड़ते जाते हैं, और भारत रसातल को चलाजा रहा है। इसलिये यजुर्वेद अ० २४ मं० ६ में स्पष्ट बतलाया है कि जिस प्रकार अच्छे सिखलाये घोड़े से युक्त रथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र पहुँच जाता है उसी प्रकार विद्या, सज्जनों का संग और योगाभ्यास से परमात्मा की प्राप्ति होती है। फिर भला उपरोक्त गुणीजनों की संगत से क्या क्या पदार्थ नहीं मिल सकते। इसलिये संसारी सुखों और मोक्ष प्राप्ति के लिये उन्हीं पुरुषों का संग करो जिन्होंने विद्या पढ़ और आचरणों को सुधार कर यश की प्राप्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की है। क्योंकि प्राणीमात्र की शोभा गुणों से होती है न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। समय ( वक़्त ) का समय बहुमूल्य ( बेशक़ीमती ) है। इसको कभी व्यर्थ ( फ़िज़ूल ) न खोना चाहिये क्योंकि लिखा है कि **'गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं'**। इसलिये ऋग्वेद में लिखा है कि अपने समय को व्यर्थ न खोकर सर्वदा उत्तम कार्यों में व्यय करना चाहिये। जो मनुष्य इसको यथार्थ काम में लाते हैं वह ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ श्रेष्ठ कर्म करके विद्वान्, बलवान, धनवान, विचारवान, तत्वदर्शी, योगी, परोपकारी आदि महान कीर्ति का लाभ कर संसार के भूषण बन जाते हैं और जो समय को व्यर्थ और निरर्थक खोते हैं, उनका मन कुकर्म, कुसंस्कारों का भंडार बन जाता है, जिसके कारण सभ्य समाज में उनकी प्रतिष्ठा नहीं होती वरन् अनेकानेक तरह से बदनाम होकर हर एक स्थान पर अप्रतिष्ठित होते हैं। धन के न होने से महान् दुःखों और कष्टों को भोगते हैं रात दिन रोगी बने रहते हैं इसलिये इस समय को कभी व्यर्थ न जाने दो, वरन् शुभकर्मों में व्यतीत करो जिससे किसी तरह की हानि न हो। शरीर की आरोग्यता और मन बहलाव के लिये अपने समय में से समय नियत कर वायुसेवन, व्यायाम, पुस्तक, समाचार पत्रों के पढ़ने धार्मिक व्याख्यानों और सुशील वृद्धजनों की तजुर्बे की बातें सुनने आदि कार्यों में व्यय करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उचित है और पतङ्गबाजी, जुआ इत्यादि मिथ्या खेलों और गप्पशप्प, लड़ाई, झगड़े इत्यादि में ऐसे अमूल्य समय को न खोओ जिसके सदुपयोग से हम संसार में कीर्ति विजय-राज्य-धन-प्रतिष्ठा-बड़ी अवस्था-बल और विद्या प्राप्त कर परलोक में मोक्षपद को प्राप्त कर सकते हैं। देखो संसार की क़ौमों में इस समय अँग्रेज़ फ्रांसीसी, अमरीकन, इटेलियन, जापानी आदि इसीसमय से यथार्थ कार्य लेने से कैसे २ सांसारिक सुखों को भोग रहे हैं उनका एक पल भी व्यर्थ नहीं जाता। तुम वेदों के मानने वाले प्राचीन ऋषियों की सन्तान होते हुए वर्तमान काल में समय से यथार्थ कार्य न लेकर अन्य देशों की अपेक्षा किस तरह दुःख उठा रहे हो! उठो, समय से कामलो तो पूर्ण आशा है कि बहुत शीघ्र भूमण्डल पर नाम पैदा कर अपनी पुरानी कीर्ति को चिरस्थाई कर जाओगे। क्योंकि जो मनुष्य अपने समय को व्यर्थ नहीं खोते उनका वह काल ही सर्व कार्यों की सिद्धि करनेवाला होता है जैसा कि ऋग्वेद मं० १ अ० ६ सू० ३० के मंत्र २२ में कहा है।

---

# विद्या

## इसकी महिमा और आवश्यकता

प्यारे पाठकगणों और सुयोग्य महिलाओ! जिससे सब प्राणिओं को आनन्द, आराम, चैन या सुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मिलता है उसको विद्या कहते हैं जैसा यजुर्वेद अ० ५० मंत्र ३४ में लिखा है। 'विद्यायाऽमृतमश्नुते'। श्वेताश्वेतोपनिषद्में कहा है जिसका कभी नाश न हो उसको विद्या कहते हैं। केनोपनिषद् का वचन है कि विद्या से सब आनन्दों की प्राप्ति और सब पदार्थों की वृद्धि होती है जैसा कि 'विद्यायाविन्दतेऽमृतम्'। योग सूत्रपाद २ में स्पष्ट उपदेश दिया है कि जिससे अनित्यको नित्य, अशुद्ध को शुद्ध तथा शुद्ध को अशुद्ध, दुःख को सुख तथा सुख को दुख, अनात्मा को आत्मा, आत्मा को अनात्मा अर्थात् जिससे विपरीत ज्ञान हो उसको अविद्या कहते हैं। यह अविद्या ही सम्पूर्ण क्लेशों की जड़ है तथा जिस प्रकार कुल्हाड़ी द्वारा जड़ सहित काटा हुआ वृक्ष फिर नहीं उगता वैसे ही एक मात्र विद्या से अविद्या का समूल नाश होजाता है, चारों वेद आदि सत्यग्रंथ एक स्वर होकर कह रहे हैं कि मनुष्य मात्र को ज्ञान को प्राप्ति एवं सांसारिक और पारलौकिक सुखों के लिये सब से प्रथम ब्रह्मचर्य के साथ विद्या पढ़नी चाहिये। ऋग्वेद मं० ३ सू० ६४ मंत्र २५ में लिखा है कि वेद वाणी के समान अन्य कोई भूषण नहीं। अतः जो पुरुष विद्यारूपी आभूषण को धारण करते हैं वह सहस्रों प्रकार के भूषणों की शोभा को प्राप्त होते हैं। महर्षि चाणक्य ने भी विद्या को ही सबसे उत्तम भूषण माना है। ऋग्वेद सू० १०८ मंत्र ६ में कहा है विद्या से ही मनुष्य सब से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बड़ा कहलाता है। विद्वान् ही जगत् के पदार्थों के गुणों को जान उनको ठीक प्रयोग में ला अपूर्व बल, बड़ी आयु और चक्रवर्ती राज्य को पा सुख को प्राप्त करते हैं। यजुर्वेद में बतलाया है कि जो स्त्री पुरुष प्रथमावस्था में ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या पढ़ते हैं उनके इस धन का न कोई दाय-भागी होता है न चुराने वाला, वरन् जिस प्रकार पृथ्वी-मेघ और ईश्वर सब की रक्षा करते हैं उसी प्रकार विद्या मनुष्य की प्रत्येक स्थान पर रक्षा करती है। विद्या से ही निर्मल विज्ञान-उत्तम विचार-धर्म -अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति और निर्भयता प्राप्त होती है। तथा जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में शुद्ध नेत्रों से मूर्तिमान पदार्थ दिखाई देते हैं वैसे ही उत्तम विद्या के ज्ञान से आत्मा में परमात्मा के दर्शन होते हैं। अथर्ववेद में कहा है कि सांसारिक स्वादिष्ट, मधुर, रोचक एवं रसीले पदार्थों के रस से विद्या का रस सबसे उत्तम, लाभदायक, और उपकारी है। इसी के बल से निर्धन धनी, दुर्बल बली कुरूपी, स्वरूपवान और अविश्वासी विश्वास-पात्र बन जाता है। कुमति का नाश, सुमति का राज्य, आत्मदोषों की निवृत्ति, जीवन की सफलता, परोपकार तथा गृहों में आनन्द-रूपी अमृत की वर्षा विद्या से ही होती है। इसीके द्वारा पुरुष सत्कर्मी बन वेदोक्त कर्मों को करता हुआ दूसरों को भी अपना अनुयायी बना वैदिक मार्ग को सुगम बना देता है। ऋग्वेद सू०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१०५ मंत्र १४ में कहा है जो नर-नारी विद्वानों के पास रह कर विद्या और शिक्षा को ग्रहण नहीं करते वह भाग्यहीन हैं। इसी हेतु मंत्र १७ में उपदेश है कि स्त्री पुरुषों को अपनी बुद्धि से बड़े यत्न के साथ विद्वानों से समस्त विद्याओं को पढ़ उसका मनन एवं विचार कर बुरे कर्मों को त्याग अपनी आत्मा और शरीर की रक्षाकर सुख प्राप्त करना चाहिये। सू० १९० मं० २ में लिखा है कि विद्या के बल से महाशत्रु अभिमान को छोड़ नम्र बन अपने अनुयाई बन जाते हैं। सू० १८६ मंत्र ११ में कहा है कि जिसने विद्या धन संग्रह न किया वह दरिद्री बना रहता है। एक कवि का कथन है—

विद्या से आवे विनय, विनय पात्रता योग।
जिहिते धन, धनसे धरम, जिहि सुख भोगत लोग॥
विद्या धन सम और नहिं, जग में कहत सुजान।
विद्याही से लघु मनुज, होवे भूप समान॥

यजुर्वेद अ० १० मं० १८ में लिखा है कि विद्या का प्रचार ही राज्य की वृद्धि, शत्रुओं के नाश और धर्मादि में प्रवृत्ति करने वाला है। इसीसे सब कालों और सब दशाओं में रक्षा होती है। ऐसा ही अथर्व० कां० १ सू० ७ मंत्र ५ में राजा को उपदेश है कि अपने राज्य में विद्या का प्रचार करे। भर्तृहरिजी ने कहा है कि सुन्दरता, यश,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सुख, बल, धन और सत्कार की प्राप्ति विद्या से होती है यही गुप्त धन विदेश में बन्धु के समान है जैसा कि—

विद्या नाम नरस्य रूप मधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् ।
विद्या भोगकरीयशः सुखकारी विद्या गुरुणां गुरुः ॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्यापरं दैवतम् ।
विद्या राजसू, पूज्यतेनहिधनं विद्या विहीनः पशुः ॥

भविष्य पुराण में लिखा है कि विद्या कामधेनु के समान फल देने वाली है। तथा एक प्रकार का गुप्त धन है। भोज प्रबन्धकार कहते हैं कि माता संतान का अल्पावस्था तक ही पोषण करती है परन्तु विद्या रूपी माता समस्त आयु पालन करती रहती है और जिस प्रकार पिता हित का उपदेश देता है वैसे ही विद्या रूपी पिता सम्पूर्ण आयु धर्मोपदेश कर सन्तानों को कुमार्ग से बचाता है। तथा जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री अपने पति को सब प्रकार के दुःखों से बचाकर आनन्द देती है वैसे ही विद्यारूपी सह-धर्मिणी नाना प्रकार के क्लेशों से बचाकर सुखी बनाती है। विदुरमहाराज ने तृप्ति का मूल कारण, तथा चाणक्यजी ने सर्वत्र यश प्राप्ति का मुख्य साधन विद्या को ही माना है। महाभारत शान्ति पर्व में भीष्मपितामह ने कहा है कि विद्या के समान संसार में कोई नेत्र नहीं। शुक्र नीति में लिखा है कि विद्यारूपी धन सब धनों में श्रेष्ठ है क्योंकि यह देने से न्यून नहीं होती किन्तु बढ़ती है। इसलिये प्राचीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समय में तप की उन्नति तथा शरीर की पवित्रता के लिये ऋषियों, ब्राह्मणों और गृहस्थों ने विद्या को अच्छे प्रकार प्राप्त किया वैसे ही आप को भी आचार्य से नम्रता-पूर्वक शिक्षा ग्रहण कर ऐश्वर्य को बढ़ाना योग्य है। अथर्वकांड १८ सू० ४ मं० ६७ में लिखा है कि ज्ञानी लोग ही विद्वानों की समाज में शोभा पाते हैं। इसलिये मात-पिता आदि प्रयत्न करें कि उनकी संतान विद्वानों में प्रतिष्ठा पावे। राजा को प्रजा से और प्रजा को राजा से सुख की प्राप्ति का प्रबल उपाय विद्या ही है वरन् जिसके राज्य में प्रजा मूर्ख होगी उस राज्य में नाना प्रकार के उत्पात बने रहते हैं और राजा को कभी चैन नहीं मिलता। अतः जो प्रतापी राजा स्वार्थ को छोड़ विद्यादानादि में धन व्यय करता है वह विद्या बल से धन बढ़ाता हुआ संसार को बहुत लाभ पहुँचाता है। राजा का यही अक्षय कोष है। राजा जितना विद्या का दान करता है उतना उसका मान अधिक होता है। इसलिये राजा और राज पुरुषों को प्रजा में विद्या प्रचार कर सब को सुखी करना चाहिये। चाणक्यऋषि ने कहा है कि यदि मनुष्य का श्रेष्ठ रूप, सुन्दर यौवन और उत्तम कुल में जन्म भी हो तो भी विद्या के बिना उसकी शोभा ढाक के फूल के समान है। बहुत से आभूषणों के पहिने मूर्ख से वेद का जानने वाला दरिद्री श्रेष्ठ कहा गया है जैसा कि सुन्दर नेत्र वाली स्त्री फटे वस्त्रों से भी शोभित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होती है और नेत्रहीन स्त्री चमकीले ज़ेवर पहनले तो भी उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं करता। इसलिये यजुर्वेद अ० ५ मंत्र ३ में स्पष्ट कहा है कि विद्या पढ़ने पढ़ाने वाले सर्वोत्तम कर्म को कभी न छोड़े।

मान्यवरो! यही भारत जो वर्तमान समय में अविद्या के समुद्र में डूबा हुआ है, प्राचीन समय में विद्या के प्रकाश से सूर्य के समान दीप्तमान हो रहा था। यहां की विद्या रूपी नदी ने देश देशांतरों को सींच कर हरा भरा कर रक्खा था। यहां तक कि मिश्र, यूनान के प्राचीन निवासी जो गणित, वैद्यक, ज्योतिष आदि विद्याओं के उत्पन्नकर्ता समझे जाते हैं, उन आर्यों के शिष्य थे कि जिनसे पहिले इस संसार में किसी दूसरी जाति की उत्पत्ति इतिहासों से प्रकट नहीं होती। उनकी संस्कृत विद्या की लालित्य और मधुरता प्रकट है, व्याकरण की अपूर्वता विदित है, उन्होने शिल्प तथा पदार्थ विद्या में उस समय जो उन्नति थी उसका वर्णन करना कठिन है। विश्वकर्मा के बनाये हुए पुष्पकविमान जिस पर रामचन्द्र जी लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग होकर आये थे। उनके सन्मुख रेलादि का बनाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। इन्हीं महात्माओं ने सूत कातने का चरखा, कोल्हू, हल इत्यादि बनाये थे। मयदैत्य ने राजा युधिष्ठिर के यहां सुधर्मा नाम वाली ऐसी अपूर्व सभा बनाई थी कि जिसमें जल के स्थान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पर थल तथा थल की जगह जल जान पड़ता था। तत्पश्चात् इस भूमि के गुणियों ने सूक्ष्मदर्शक, दूरदर्शक यंत्र, धूपघड़ियां, जेबी घड़ियां तथा कलों के द्वारा बोलने वाले पक्षी आदि अद्भुत अथवा अनोखे यन्त्र और कलें बनाईं थीं। वैद्यक शास्त्र को अश्विनीकुमार व धन्वन्तरि ने मनुष्यों के सुख चैन तथा आरोग्य रहने के लिये बनाया था, जिसमें निघण्टु, निदान वा चिकित्सा का ऐसा वर्णन किया कि जिनको पढ़कर यूनान वालों ने नाम पाया, इस विद्या में चरक सुश्रुत वागभट्टादि आचार्यों ने भी बड़े बड़े अपूर्व ग्रन्थ रचे। ज्योतिष विद्या ऐसी है कि जिसकी समता दृष्टि नहीं आती। ज्योतिष में आकाश पृथ्वी विषयक दो प्रकार का ज्ञान है, आकाश विषय में वह ज्ञान है कि जिसमें नक्षत्रादि का प्रमाण, चाल ग्रहण होने के कारण आदि का वर्णन है। पृथ्वी विषयक ज्ञान से पृथ्वी, पहाड़, नदी आदि का वृतान्त विदित होता है। ज्योतिष में गणित मुख्य है जो समस्त विद्याओं में उपयोगी है, जिसको 'पिताभट्ट' तथा 'भास्कराचार्य' ने निकाला है, मीमांसा शास्त्र को जैमिनि ने, वैशेषिक को कणाद मुनि ने, योग को पतंजलि ने, सांख्य को कपिलदेव ने तथा वेदान्त को व्यास जी ने निर्माण किया था जिस से आत्मविद्या के जानने वाले योगीजन दूर २ से बातें करते तथा नाना प्रकार की शक्ति रखते थे। क्योंकि योग के ही द्वारा वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मन की वृत्तियों को अपने आधीन कर लेते थे। गान विद्या में पूरे उस्ताद थे जिन्होंने आठ राग चौंसठ रागनियां निकाली थीं जिनके ताल स्वर न्यारे २ थे यही कारण है कि इनके गान में जो रस आता है वह किसी देश के गाने में नहीं आता। ऐसे ही युद्ध विद्या में बड़ी विज्ञता रखते थे जो सालून, दलगन इत्यादि शस्त्रों से लड़ते थे तदुपरांत वह विषभरी वायु से शत्रुओं की सेनाओं को लपेट कर पवन में भयङ्कर शब्द उत्पन्न करके उनको विध्वंस कर डालते थे। सच तो यह है कि इस भूमि में पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, यास्क, गौतम आदि तत्ववेत्ता, कालिदास, भवभूति आदि कविशिरोमणि, धन्वन्तरि आदि आयुर्वेद चिकित्सक, अर्जुन, भीम धनुर्विद्या में, गान विद्या में गन्धर्वसेन, नारदादि, गणितज्ञों में भास्कराचार्य, योगीश्वरों में श्रीकृष्ण, उपदेशकों में व्यासदेव, सत्य बोलने में युधिष्ठिर महाराज, धर्मात्मा क्षत्रियों में जितेंद्रिय भीष्मपितामह, सुविज्ञ गुरु द्रोणाचार्य, निर्लोभ दानियों में कर्ण, विचारशीलों में विदुर, पिता की आज्ञा पालने में सर्वण और रामचन्द्र, धर्मपालन में राजा हरिश्चन्द्र, वाक्य पूरा करने में राजा बलि, इसी प्रकार स्त्रियों में सीता, अनुसुइया, द्रौपदी, दमयन्ती, गार्गी इत्यादि धुरन्धर पूर्ण गुणवान विद्वान् और अनेक मार्ग के दिखलाने वाले, मातृभूमि के सच्चे भक्त, देश हितैषी इस भारत भूमि में होगये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सच तो यह है कि विद्या के बल से ही सत्पुरुषों के नाम युगानयुग तक लिये जाते हैं। विश्वकर्मा, मयदैत्य, अश्विनीकुमार, धन्वन्तरि, जैमिनि, कणाद, गौतम, कपिल, व्यास आदि को मरे बहुत काल हो गया परन्तु उनके नाम आज तक प्रशंसा के साथ लिये जाते हैं तथा उनकी पुस्तकों को पढ़ विद्वान् सर्वत्र प्रतिष्ठा एवं मान को पाते हैं। इसके उपरांत पशु पक्षी आदि योनियों में मनुष्य योनि ही सबसे श्रेष्ठ मानी गई है। वेदों में भी इस चोले का महत्व सब से अधिक बताया है क्योंकि और योनियां भोग योनी हैं और मनुष्य योनी कर्त्तव्य योनी है। इस विषय में महात्मा चाणक्य का कहना है कि भोजन करना, पानी पीना, निद्रा और भय, मैथुन यह सब पशु पक्षियों में एक समान हैं यदि कोई विशेषता है तो यही है कि मनुष्यों में ज्ञान है। इसलिये वेद आज्ञा देते हैं कि जो स्त्री पुरुष कायिक अर्थात् शारीरिक, वाचिक, मानसिक सुखों को चाहे तो बालकाई, जवानी और बुढ़ापे में विद्या का प्रचाररूपी व्यवहार करे। जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश कर दिन की उत्पत्ति और मेघ जलकी वृष्टि कर सम्पूर्ण संसार को सुखी करता है उसी भांति विद्वान् लोग विद्या का प्रचार और अविद्या का नाशकर सबको आनन्दित करते हैं। अब आप इस स्थान पर विचार करें कि जिस स्त्री और पुरुष ने बालकपन में विद्या ही नहीं पढ़ी फिर तरुणाई और बुढ़ापे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में विद्या का प्रचार क्योंकर कर सकते हैं और विना विद्या प्रचार के उपरोक्त सुखों की प्राप्ति कैसे हो सकती है। इसके उपरांत मनुष्य प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर विद्या पढ़ बालपन का ऋण, युवावस्था में गृहस्थाश्रम में पहुँच धन और संतान उत्पन्न कर तरुणाई का ऋण, बानप्रस्थ और संन्यास लेकर वृद्धापन का ऋण चुकावे। ऐसी ही वेदों में आज्ञा है कि इन चारों ऋणों को चुका कर पवित्र हो मनुष्य योनि के आनन्द को प्राप्त करे। अब जब हम ब्रह्मचर्य धारण कर विद्या ही नहीं पढ़ते अर्थात् बालकपन का हो ऋण नहीं चुकाते तब अन्य ऋणों का भार कैसे उतार सकते हैं ? द्विजत्व अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का मूल कारण विद्या ही है। ऋग्वेद अ० २१ सू० १५० मन्त्र ५ में कहा है कि मनुष्यों का एक जन्म माता पिता की विद्या और शिक्षा से तथा दूसरा जन्म आचार्य की शिक्षा से होता है इसलिये उनको द्विज कहते हैं। अर्थात् विद्या आचरणों की श्रेष्ठता से ही वर्णों की व्यवस्था होती है। इसके उपरांत विद्या सकल आपदाओं को टालती है, विद्या रूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, भाई बन्धु आदि बांट नहीं सकते, अग्नि उसको जला नहीं सकती, मनुष्य का विपत्ति तथा दरिद्रता में विद्या ही पूरा साथ देती है।

प्यारे सभ्यगणो और योग्य विदुषियो ! यह वह बाग़ नहीं जिसको पतझड़ सता सके, यह वह दर्पण नहीं जिस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को जङ्ग चट कर जाय, यह वह प्रकाश नहीं जो सूर्य के उदय होते ही छिप जाय; वरन् विद्या वह अंजन है जिसके लगाते ही हृदय के कपाट खुल जाते हैं, यह वह जड़ाऊ आभूषण है जिसके शृंगार के देखने की अभिलाषा सबको होती है, यह वह अमृत जल है जिसको पान कर मनुष्य मनुष्यता के पद पर पहुंच अमर होजाता है, यह वह बल है जिसके सन्मुख सिंह और सर्प से दुष्टजीव आधीन होजाते हैं, यह वह प्रकाश है जिसका प्रकाश शरीर के साथ रहता है। यह वह हथियार है जिस पर शान रखने की आवश्यकता नहीं।

प्रिय पाठको! अब तो आपको विद्या की महिमा प्रकट होगई। कतिपय विद्वानों ने १४ विद्या और उनकी ६४ कलायें लिखी हैं, परन्तु वेदों का कथन है कि विद्यायें अनन्त हैं और जिस प्रकार पक्षी अपने २ बल के अनुसार आकाश में उड़ उसका अन्त न पा अपने निवास स्थान पर लौट आते हैं तथा जिस प्रकार हिरन सरीखे वेग वाले पशु बनों का अन्त न पा थक जाते हैं, उसी तरह ईश्वर रचित विद्याओं का पार बड़े २ विद्वान् और योगी न पा सके, फिर अल्प बुद्धि वाले मनुष्यों की क्या गणना। अतः मानवी शरीर का मुख्य उद्देश्य यही है, कि उत्तम धन, ऐश्वर्य और मोक्ष की प्राप्ति का साधन विद्या को ही समझ कर यथा शक्ति एवं यथावकाश पूर्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रद्धा और प्रेम से विद्याभ्यासकर मनुष्य जीवन को सुफल करे। वेही माता, पिता, आचार्य, गुरु और सम्बन्धी धन्य कहे गये हैं जो अपने मन को विद्या विलास में लगा अपनी सन्तानों को भी उत्तम विद्या, शिक्षा और श्रेष्ठ गुण कर्म और स्वभाव से सुभूषित कर सत्य भाषण आदि नियम पालन कराने और दानादि सत्कर्मों में लगा परोपकार में अपने जीवन को व्यतीत करते हैं। जैसा कि—

विद्याविलासमनसोधृतशीलशिक्षा। सत्य व्रतारहितमानमलापहारः॥
संसार दुःखदलनेनसुभूषिताये। धन्यानराबिहितकर्मपरोपकाराः॥

---

# गुरु अर्थात् आचार्य

प्रिय सज्जन पुरुषो और योग्य महिलाओ !

जब विद्या का महत्व इतना महान् है और वेदों में उसकी महिमा गाई गई है। ऋषि, मुनि, महात्मा, पंडित और तत्ववेत्ता आदि सभी जन विद्या को उत्तम रत्न मान रहे हैं यहां तक कि बिना विद्या के इस लोक और परलोक के कार्यों को कोई योग्यता से नहीं कर सकता। अतः उसके शिक्षक अर्थात् गुरु या आचार्य भी महान् पुरुष ही होने चाहिये। भगवान् वेद उपदेश दे रहे हैं कि अध्यापकों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का संसार में सब से ऊँचा पद है। इसलिये शिक्षा करने वाले स्त्री पुरुष विद्यावृद्ध और तपोवृद्ध हों जिन्होंने स्वयं ब्रह्मचर्य के साथ गुरु के समीप रहकर शब्द और अर्थ सम्बन्ध के साथ वेदों को पढ़कर प्रसिद्धि को प्राप्त किया हो तथा जो नदी के समान निर्मल, पवित्र, शान्ति चित्त बिजली के तुल्य तीव्र बुद्धि वाले हों।

ऋग्वेद सू० ६२ अ० ५ मं० ३ में लिखा है कि जिन्होंने प्रत्यक्षादि प्रमाणों द्वारा पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का सत्कार कर सत्य विद्या के आचरण की बुद्धि में धर्म-पूर्वक प्रवृत्ति की है वे ही गुरु अध्यापक बनाने तथा सत्कार करने योग्य हैं। मं० १ सू० ८६ अ० १४ में कहा है कि सम्पूर्ण विद्याओं के ज्ञाता, शुभ लक्षणों से युक्त, दृढ़ांग, पुरुषार्थी एवं धार्मिक गुरुओं से ही विद्या पढ़नी चाहिए। अ० १७ मन्त्र १ सूक्त ११७ में उपदेश है कि सुयोग्य पुरुष एवं स्त्रियां पुत्र तथा पुत्रियों को ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक नियमानुसार उत्तम जीवन बना उनके दूसरे विद्या जन्म को सिद्धकर समय पर उनके माता पिता को दे देवें। यजु० अ० १६ मन्त्र २ में लिखा है कि गुरु शिष्यों को धर्म तथा राजनीति की शिक्षा दे और पापों से बचा कर कल्याणरूपी कर्मों के आचरण सिखलावे। अ० ७ मन्त्र १४ में कहा है कि जो पुरुष कुमार और कुमारियों को वेद और उसके अङ्गों की शिक्षा देकर उनके शरीर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को पुष्ट तथा इन्द्रिय अन्तःकरण और मन को शुद्ध कर सके उनको आचार्य वा शिक्षक नियत करे। आगे यह भी लिखा है कि अग्नि और सूर्य के समान विद्वानों से विद्या पढ़नी चाहिए।

अग्निज्योतिषाज्योतिष्यान् रुक्मोवर्चसान्।
सहस्रदा असि सहस्रापित्वा॥

ऋग्वेद अ० २। अ० ८। व० १८। मन्त्र ३। अ० १। सू० २। मन्त्र ८ में लिखा है कि जो विद्वानों के बीच बहुत विद्या वाला अहिंसक जितेन्द्रिय हो वही सब को नमस्कार करने और सेवने योग्य है। अथर्व कांड १९ सू०। मन्त्र ८ में आज्ञा है कि बृद्ध, अनुभवी, उत्साही एवं उत्तम आचार्य से नम्रता पूर्वक शिक्षा ग्रहण कर ऐश्वर्य को बढ़ाना योग्य है।

शुक्रनीत अध्याय ४ में लिखा है जो मनुष्य मन्त्र और अनुष्ठान में सम्पन्न, वेदवित कर्म में तत्पर, जितेन्द्रिय, लोभ मोह से रहित, वेद के व्याकरण आदि छः अङ्गों और धनुर्विद्या तथा धर्म का जानने वाला हो जिसके क्रोध भय से राजा भी धर्मनीति में तत्पर होजावे उसीको पुरोहित वा आचार्य बनाना योग्य है।

इसके अतिरिक्त गुरु शब्द के अर्थ पर विचार किया जाय तो स्पष्ट प्रकट होता है कि अन्धकार के दूर करने वाले अर्थात् अज्ञान के नाश करने वाले को गुरु कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लिंगपुराण उत्तरार्द्ध अ० २० में लिखा है कि गुरु मान्य, पूज्य और सदा शिव है। वह शास्त्रवेत्ता, तपस्वी, बुद्धिमान, लोकाचार का जानने वाला, लोकप्रिय, तत्ववेत्ता, गुणसम्पन्न, मोक्ष देने में समर्थ, सब क्रियाओं में कुशल, आत्मज्ञानी हो, क्योंकि ज्ञानी गुरु ही आप अपना भला कर शिष्य का बेड़ा पार कर सकता है। अज्ञानी, पशु के समान गुरु से मनुष्यों को कुछ लाभ नहीं होता, जैसे एक शिला दूसरी शिला को नदी से पार नहीं कर सकती। जैसा कि श्रीमद्भागवत स्कन्द ११ अ० ३ श्लोक २१ में लिखा है।

तस्माद्गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेयमुत्तमम्।
शब्दमरीचेविष्णाहं ब्रह्मण्युपशयाश्रमम् ॥

शुक्रनीति अध्याय १ में लिखा है "शास्त्राय गुरुसंयोग" अर्थात् विद्या पढ़ने के लिये गुरु किये जाते हैं ऐसा ही उपनिषदों में लिखा है कि धर्म के तीन स्कन्ध अर्थात् अंश हैं। एक यज्ञ अर्थात् पदार्थों की संगति करण ( क्रिया कौशल विद्वानों का सत्कार अग्निहोत्रादि ), दूसरा ब्रह्मचर्यव्रत को धारण करके आचार्य के समीप निवास करना, तृतीय क्लेशों को सहन करके बहुत काल तक सर्व विद्या सम्पन्न होना। श्रीमद्भागवत पंचम स्कन्द के अध्याय ५ लिखा है कि वह गुरु ही नहीं जो मृत्यु से बचाने का उपाय न बतावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गुरुर्नसस्यात्स्वजनोनसस्यात् पितानसस्याज्जननीनसस्यात् ।
देवो न सस्यान्नपतिश्च सस्यान् न मोचयेद्यस्समुपैतमृत्युम् ॥

इस कथन से प्रकट होता कि आत्मिक ज्ञान के लिये गुरु किये जाते हैं क्योंकि बिना उसके मृत्यु के क्लेश से कोई नहीं बचा सकता। पद्म पुराण तृतीय सर्गखंड अध्याय ५२ में लिखा है कि ज्ञान वा सबका साधन भी गुरु है। गुरु से परे विचित्र भूषण कोई नहीं। लिंगपुराण अध्याय ८६ श्लोक १०१ में लिखा है कि गुरु की ही कृपा से निर्मल ज्ञान की प्राप्ति होती है। शुक्रनीति में लिखा है कि 'शिक्षाणो गुरु' अर्थात् शिक्षा पाने के अर्थ गुरु किये जाते हैं। श्रीमद्भागवत स्कन्ध ११ अ० ९ दत्तात्रेय ने कहा है भ्रम की निवृत्ति के लिये गुरु किये जाते हैं। शंखस्मृति अ० ३ श्लोक २ में लिखा है कि गुरु वही है जो वेदों को पढ़ावे। ऐसा ही लिंगपुराण अ० २९ में लिखा है कि श्रद्धा पूर्वक गुरु से वेद पढ़े, फिर विचार करे और धर्मों को जाने। हारीतस्मृति अ० ३ श्लोक १ में लिखा है—

उपनीतो माणवको बसेत गुरुकुलेषु च ।

शिष्य जनेऊ कराकर गुरु के पास जाकर रहे। ऐसा ही संवर्तस्मृति अ० १ श्लोक ४ वा व्यास स्मृति अ० १ श्लोक १६ में भी लिखा कि आचार्य शिष्यों को उपनयन कराकर वेदादादि विद्याओं को पढ़ावे तथा सदाचार भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

❀ ओ३म् ❀

## आदर्श गुरू

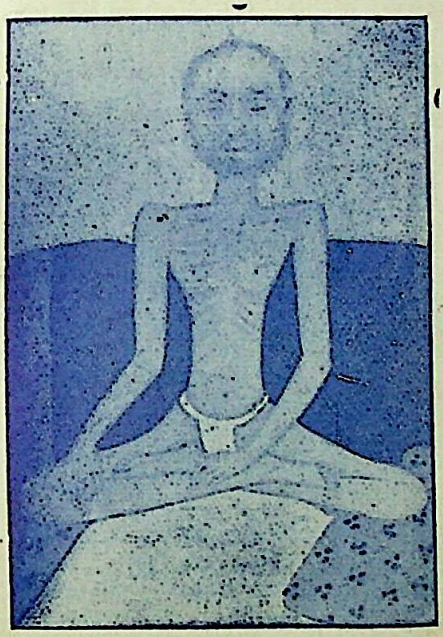

प्रज्ञा चक्षुः

श्री १०८ दण्डी बिरजानन्द जी, सरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सिखलावे। ऐसा ही श्रीमद्भागवत स्कंध ११ अध्याय ११। १७ में कहा है। इसलिये उपनयन कराने के पश्चात् आचार्य ब्रह्मचारियों को नीचे लिखे अनुसार उपदेश दे:—

हे ब्रह्मचारी! तू अपने घर से विद्या पढ़ने तथा शरीर और आत्मा की उन्नति के अर्थ इस गुरुकुल में आया है देख यह सब ब्रह्मचारी तेरे भाई, और मैं आचार्य तेरा पिता हूँ और विद्या माता है। सदा प्रसन्न रहकर ब्रह्मचर्य व्रत को पूरा होने के लिये सावधानी से यम (निर्वैरता, सत्यबोलना, चोरी का त्याग, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरापरायण) का अच्छे प्रकार साधन करता हुआ विद्या पढ़, तब तुझको विद्या का आनन्द मिलेगा, क्योंकि अवगुणों के रहते हुए विद्या आना कठिन है। भूमि पर शयन कर। शरीर की सजावट के लिये उबटन तथा सुगन्धित पदार्थों के लगाने में समय को व्यतीत न कर। पुष्पों की माला इत्यादि वस्तुओं की ओर न झुक। नाचने गाने की तरफ ध्यान न दे। गप्पी, शप्पी और जन समूह की गोष्ठी से प्रथक रहकर सदा स्वदेशी और स्वच्छ वस्तुओं को धारण कर। छाता-जूता को छोड़ खड़ाऊँ पहनकर चल। दण्ड हाथ में रख। प्रातःकाल उठ, शौचजा, ठंडे जल से स्नान, आसन, व्यायाम लंगोट बांधकर, अन्न, फूल, फल, दूध, घी, चावल, शाक इत्यादि सतोगुणी भोजन कर, दिनचर्य्या के अनुकूल पढ़ने लिखने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में लगा रह, तदनन्तर रात्रि में अकेला रहकर सब प्रकार से वीर्य रक्षा कर प्रतिदिन सायं प्रातः प्रभु की उपासना, प्रार्थना, प्राणायाम कर। अति स्नान, अधिक निद्रा, अति जागरण, लोभ, मोह, भय शोक से बच। क्षौर न करा। शुष्क अन्न न खा। मदिरा आदि नशों को मत पी। सवारी मतकर। लोनादि अधिक मत खा। लालमिर्च, खटाई आदि का सेवन न कर। स्त्री का ध्यान, उसकी वार्ता, स्पर्श, दर्शन, आलिंगन, एकान्तवास, समागम इन आठ प्रकार के विषयों से पृथक् रह, और इनसे बचने का सब से अच्छा सरल उपाय यही है कि विषयों की बातें न सुन, न ऐसी नीच प्रकृति वाले पुरुषों से मिल। जब कभी अचानक कोई स्त्री सन्मुख आजाये तो तू तुरन्त अपनी दृष्टि को नीचे की ओर करले क्योंकि भ्रष्टाचारी ब्रह्मचारी को गुरुजन विद्या नहीं देते और न ऐसों को विद्या ही आती है। गुरुओं से भूल कर भी कभी द्रोह मत कर, जो उनके साथ द्रोह और कपट से व्यवहार करता है उन ब्रह्मचारियों को विद्या फलीभूत नहीं होती; इसलिये बड़े नम्र भाव और सुशीलता के साथ मेधावी होकर—कोष रक्षक की भांति विद्या रक्षक बन विद्या का संग्रह कर।

जावाल ऋषि तथा यास्क मुनि का भी यही सिद्धांत है। ऐसा ही विष्णु और लिंगपुराण में लिखा है। राजा जनक महाराज ने कहा है कि गुरु के उपदेश के बिना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ज्ञान और ज्ञान बिना मोक्ष नहीं होती, इससे गुरुद्वारा ज्ञान प्राप्त करना ही गुरु करने का मुख्य प्रयोजन है। गीता के अ० ४ श्लोक ३४ में श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन से कहा है कि मुक्ति की रीति तत्वज्ञान जानने वाले गुरु के द्वारा प्राप्त होती है। व्यासस्मृति अ० १ श्लोक १४ में लिखा है कि गुरु तीनों वर्णों के ब्रह्मचारियों को होम करा कर गायत्री का उपदेश करे। मार्कण्डेय पुराण अ० २८ में मन्दालसा ने अपने पुत्र से कहा कि यज्ञोपवीत के पश्चात् ब्रह्मचारी गुरु के समीप जाकर एक वा दो वा चारों वेद पढ़कर गुरु दक्षिणा दे गृह से जाने की इच्छा करे और शुक्रनीति अध्याय १ श्लोक ८ में लिखा है कि गुरु वही है जो विद्या अभ्यास कराकर शिष्य का सुधार करे। कौटिल्य अर्थ शास्त्र में लिखा है कि विद्या उन २ विशिष्ट गुण सम्पन्न प्रमाण भूत आचार्यों से प्राप्त करनी चाहिये जिससे विनय और नियम दोनों की प्राप्ति होवे। अथर्व० कां० ६। सू० १ मं० १ में लिखा है जितेन्द्रिय, दूरदर्शी आचार्य, विद्यालय में ब्रह्मचारियों को उत्तम विद्या से समृद्ध करे तथा कां० १२ सू० ३ मं० ३० में उपदेश है कि आचार्य्य सुयोग्य ब्रह्मचारियों को उत्तम विद्या देकर उनको एसे बढ़ावे जिस प्रकार गौ अपने नवीन बच्चे को दूध से बढ़ाती है। ऋग्वेद मं० १ सू० १०१ मंत्र ८ में कहा है कि जो विद्वान् सर्वत्र आनन्दित कराने, उत्तम विद्यादान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देने और सत्य गुण कर्म और स्वभाव युक्त हैं उनके संग से निरन्तर समस्त विद्या और उत्तम शिक्षा को पाकर सर्वदा प्रसन्न रहना योग्य है और सू० ११४ मं० १ में लिखा है जब आप्त सत्यवादी धर्मात्मा वेदों के ज्ञाता पढ़ाने और उपदेश करने वाले विद्वान् ब्रह्मचारियों तथा पढ़ाने और उपदेश करनेहारी स्त्री उत्तम विद्या से श्रोताओं तथा ब्रह्मचारिणी और सुनने वाली स्त्रियों को विद्या युक्त करती हैं, तभी सब लोग शरीर और आत्मा के बल को प्राप्त होकर सब संसार को सुखी कर देते हैं—इसलिये विद्यार्थी और उपदेश सुनने वालों को चाहिये कि सदा विद्वानों को गुरु बना भक्ति पूर्वक उनकी सेवा करके प्रति दिन विद्या का ग्रहण करे; फिर जिस प्रकार प्रातःकाल में सब पदार्थ शोभायमान होते हैं उसी प्रकार वह भी सुशोभित हों। जैसे सिंह को देखकर जंगल में हरिण आदि भाग जाते हैं उसी भांति सुशिक्षायुक्त विद्वानों को देखकर पाखंडी भाग जाते हैं अथवा उनकी चाल नहीं चलने पाती अर्थात् विद्या के प्रकाश से अधर्म और अज्ञान का नाश हो सब को सुखों की प्राप्ति होती है। अथर्व० कां० १८ सू० ११ मं० ६ में लिखा है कि जो स्त्री पुरुष अपने माता पिता आचार्य आदि की सेवा कर उत्तम गुण प्राप्त करते हैं, वह संसार में गम्भीर, प्रतिष्ठित और आदर पाकर उच्च-पद पाते हैं। इसलिये प्राचीनकाल में राजा और प्रजा के बालक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बालिकायें यज्ञोपवीत कराकर गुरुजनों के समीप विद्या पढ़ने जाया करते थे। देखो ब्रह्माजी ने अग्नि वायु आदि ऋषियों से वेदों का अध्ययन किया था तथा ब्रह्माजी के निकट जाकर देव, मनुष्य तथा असुरों ने विद्याभ्यास किया था। भृगुजी ने अपने पिता वरुण के समीप, पिप्लाद ऋषि के पुत्र अङ्गिरा और सनतकुमार दोनों ने अथर्व ऋषि के पास, सनतकुमार के पास नारद जी महाराज ने, उद्दालक ऋषि के निकट याज्ञवल्क्य जी ने तथा याज्ञवल्क्य जी के समीप रहकर मधुकजी ने, मधुकजी से चूल ने, महात्मा परशुरामजी ने कश्यपजी महाराज के समीप, ऐसे ही द्रोणाचार्य ने अग्निवेश मुनि के पास जाकर ब्रह्मचर्य सहित गुरु सेवाकर विद्या पढ़ी थी। सुमन्त, वैशम्पायन, जैमिन तथा पैल को व्यास जी ने पढ़ाया था, ब्रह्मा ने प्रजापति को, प्रजापति ने मनु को, मनु ने प्रजा को पढ़ाया था, राजा जनक ने पंचशिख नामक महात्मा तथा याज्ञवल्क्य जी से पढ़ा था, वशिष्ठ जी महाराज ने राजा दशरथ और रामचन्द्रजी को पढ़ाया, विश्वामित्र से भी श्री रामचन्द्रजी ने पढ़ा था। श्रीकृष्ण महाराज ने उज्जैन नगर में निवास कर संदीपन नामक पंडित से पठन किया था, इसी भांति पंजाब के राजा द्रुपद ने अग्निवेश ऋषि के पास निवास कर पढ़ा था, भीष्म-पितामह ने द्रोणाचार्य को परीक्षा लेकर कौरव और पांडवों को पढ़ाया तथा गुरुकुल में रहने के लिये उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सब प्रकार का प्रबन्ध किया था, इसी भांति सर्वत्र आर्य शिरोमणों ने गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन किया था। अथर्ववेद में लिखा है गुरु ब्रह्मचारियों को विद्या समाप्ति तक अपने पास रखे और समावर्तन के समय ऐसा उपदेश करे जिससे वे परिश्रम के साथ आत्म-त्याग अर्थात् आपा छोड़कर संसार का उपकार करें। इसी प्रकार यह भी उपदेश है कि संतानों को ऐसी शिक्षा देवे जिससे वे सत्य नियमों पर चलकर विद्वानों के अगुआ बनें तथा ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा शारीरिक-सामाजिक और आत्मिकोन्नति कर सकें। इसके अतिरिक्त वेदों में यह भी लिखा है कि गुरु विद्यार्थी को समावर्तन संस्कार के समय समझावे कि हे ब्रह्मचारी! आज तेरी विद्या पढ़ने का व्रत ब्रह्मचर्य के साथ समाप्त होता है तो भी इस बात का स्मरण रखना कि यह शरीर दश इन्द्रियों का समूह है इसकी दश युक्तियां जो उसकी विभूती हैं तप करने से उन्नति को प्राप्त होती हैं इसलिये तुम कभी विषय लोलुप न होना। काम, क्रोध, लोभ, मोह से यथावत काम लेना, देख मैं ने जो विद्या का अक्षय कोष तुझको दिया है उसको धर्म की उन्नति में व्यय करना। इस अनुपम रत्न को जुआ आदि खोटे कर्मों के करने में खर्च न करना। सदा वेदोक्त मार्ग पर चल, उदाहरण रूप बन, श्रेष्ठ जीवन के साथ गृहस्थाश्रम को स्वर्गधाम बना, फिर नियम के अनुसार संसार के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उपकार के लिये वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम को धारण कर और पूर्व ऋषियों की भांति वेद का मनन कर संसार के सब मनुष्यों के हित के लिये वेद विद्या का प्रचार करना। देख, इसमें सब विद्याओं के अँकुर मौजूद हैं, उनके तत्वज्ञान का अनुभव कर प्राणी मात्र को उन पर चलाना क्योंकि बिना ज्ञान के मनुष्य तन क्षीण, मन मलीन और धन हीन होकर महा कष्टों को पाते हैं। इसके उपरांत तुम कभी किसी दशा में भी ईश्वर को एक स्थानीय न समझना क्योंकि जो ऐसा समझते हैं वे श्वांस से हीन हो निर्बल होजाते तथा शरीर और आत्मा से उत्साह रहित होकर संसार में अपकीर्ति पाते हैं। इसलिये सच्चे प्रेम से भगवान के भक्त बन वेदानुकूल आचरण करते हुए देश का कल्याण कर यश के पात्र बनना क्योंकि प्रभु की आज्ञा पालन ही से आनन्द को प्राप्त कर सकोगे। इस प्रकार के अनेकों उपदेश देश काल और समय को देखकर किया करते थे। अभी थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ है कि श्रद्धेय स्वामी बिरजानन्द सरस्वतीजी ने विद्या समाप्ति के दिन प्राचीन रीति के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से अपनी भेंट मांगी। दयानन्दजी ने नम्रभाव से निवेदन किया मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार भेंट देने को उपस्थित हूँ। उस समय उस त्याग मूर्ति ने देश की आवश्यकता पर विचार कर कहा, कि हे शिष्य ? तू शास्त्रों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का उद्धार और मतमतान्तरों की अविद्या को मिटा संसार में वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा भूमण्डल का भला कर।

प्रिय सज्जनो ! स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हर्ष पूर्वक उपरोक्त आज्ञा को स्वीकार कर, अपने जीवन पर्यन्त उस का तन, मन से निर्वाह कर सारे संसार को चैतन्य कर दिया।

प्यारे पाठक गणों ! जिस समय में पूर्ण विद्वान् अनेकान् कला कौशलों के ज्ञाता, धर्म की मूर्ति, परोपकारी, दूसरों के लिये तन मन न्योछावर करने वाले, जितेन्द्रिय, शूर, बानप्रस्थी नगरों ग्रामों और नदियों के निकट उपबनों में अपने २ आश्रमों पर दस २ बीस २ ब्रह्मचारियों को विद्या और सदाचार की शिक्षा दिया करते थे और ब्रह्मचारीगण भिक्षा के अर्थ नगर गाँव और बस्तियों में आ 'भवतिभिक्षांदेहि' आदि कह कर भिक्षा मांगते और सदाचारी गृहस्थ अपना परम धर्म समझ अपने पुत्रों के तुल्य उन ब्रह्मचारियों को जान प्रथम से ही बुद्धि बल और स्वास्थ्य के हितकारी उत्तम २ भोजन, साग, दूध आदि पदार्थ तय्यार कर नियत समय पर उन को समर्पण कर अपने को कृतार्थ मनाते थे। ब्रह्मचारी कुमार और कुमारियां आनन्द पूर्वक खुली वायु में रहते हुए नियम पूर्वक वेद आदि विद्याओं का अध्ययन किया करती थीं। उस समय सम्पूर्ण देशों में स्वाध्यायव्रती दृढ़व्रतधारी, सत्यशील,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


परोपकारी स्त्री पुरुषों से संसार सुशोभित था, और विशेष कर भारत का यश चहुँ ओर फैल रहा था। प्यारे सुजनो! जब से इस उत्तम परिपाटी को त्यागा, भारत चौपट होगया। उसके सिर का मुकुट अन्य देशों के सर पर चला गया, क्योंकि वर्तमान समय के निरक्षर भट्टाचाय गुरुओं ने बाल विवाह करा ब्रह्मचर्य व्रत और विद्या पढ़ाने की परिपाटी को दूर कर दिया। जब स्त्री पुरुष विद्या ही नहीं पढ़ते फिर सन्यास कौन धारण करे और अगर वर्तमान समय की भांति गेरुए कपड़े रङ्ग भी लें तो वह बिना विद्या के आप ही शांतिवान, विचारवान नहीं हुये, फिर ब्रह्मचारियों को क्यों कर अपने २ आश्रमों पर विद्या और शिक्षा देकर संसार का उपकार करने वाला बना सकते हैं। इन निरक्षर साधुओं ने देश २, नगर २, गांव गांव में फिर नशों का बाज़ार गर्म कर बलकों का नाश मार, वेद और ईश्वर की आज्ञाओं पर भी पानी फेर दिया, जिसके कारण गृहस्थाश्रम स्वर्गधाम से नरक बन गया और संसार की काया पलट गई। वर्ण और आश्रमों का उलट फेर हो गया नाना प्रकार के अज्ञानी एवं सदाचार भ्रष्ट गुरु वा आचार्य बनाने लगे। सनातनधर्म के ग्रन्थों में ऐसे गुरुओं के समीप तक जाने की आज्ञा नहीं। देखिये महाभारत में विदुर महाराज ने कहा है कि बिना शिक्षा करने वाले गुरु तथा पुरोहितों से मनुष्यों को सम्बन्ध तक न रखना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चाहिये। चाणक्य ने राजनीति में लिखा है कि "विद्याहीनं गुरुंत्यजेत्" अर्थात् विद्याहीन गुरु को छोड़ देना चाहिये। इसके अतिरिक्त शुक्रनीति अध्याय ४ श्लोक ६३ में स्पष्ट कहा है कि जो पढ़ा हुआ न हो वह गुरु नहीं हो सक्ता। जैसा—

योऽधीतविद्यां सकलां ससर्वेषां गुरुर्भवेत्।
न च जात्या नाधीतो यो गुरुर्भवितुमर्हति॥

इसके उपरांत अयोध्या काण्ड सर्ग २० श्लोक १३ में लिखा है कि राजा को योग्य है कि जो गुरु कार्य वा अकार्य को न जाने, कुमार्ग में चले, कामादि में फँस निंदित कर्म करने लगे तो उसको दण्ड देवे।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथं प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम्॥

देखो य० अ० मं० २९ मं० २७ में कहा है कि जो स्वयं पवित्र बुद्धिमान वेदशास्त्र के वेत्ता नहीं होते वे दूसरों को भी विद्वान् और पवित्र नहीं कर सकते।

अब आपही बतलाइये कि बिना विद्वान् धर्मात्मा गुरु किये संसार का भला हो सकता है? क्या बिना उत्तम गुरुओं की शिक्षा के भारत सन्तान के हृदय पवित्र हो सकते हैं और बिना धर्मोपदेश के नव शिशुओं का कोमल एवं शुद्ध आत्मा आदर्श जीवन बन सकता है? नहीं, नहीं, कदापि नहीं। यदि आपको अपनी संतानों से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रेम है, यदि भारत में उनके यश की पताका फहराना है, यदि पुत्रों को सच्चा कर्मवीर बनाना है तो मूर्ख पुरुषों को अपनी सन्तानों का गुरु बनाने की प्रथा को एकदम दूर कर दीजिये। इन गुरुओं की शिक्षा से स्कूल, मदर्सा या कालिजों की शिक्षा किसी अंश में अच्छी है; परन्तु जितना प्रेम प्राचीन काल के निर्लोभ वानप्रस्थियों तथा सन्यासियों और त्यागी ब्राह्मणों में होता था वह प्रेम मासिक लेकर शिक्षा देने वाले स्कूल और कालिज के अध्यापकों में कहां ? जहां पहिले विद्यार्थी गुरुओं को धर्मपिता समझते थे, और गुरु वा आचार्यजन उनको पुत्रवत् शिक्षा दे उनके हृदय को पवित्र बनाते थे वहां स्कूल व कालेज के विद्यार्थी पढ़ने के समय तक ही टीचरों को शिक्षक मानते हैं फिर न उनका प्रेम न उनकी श्रद्धा। पूर्व समय में विद्यार्थी गुरुजनों की सेवा करना अपना धर्म समझते थे और उनकी आज्ञा पालन करना अपना कर्तव्य कर्म; परन्तु आजकल सेवा का नाम ही नहीं, स्कूल वा कालिज में शिक्षा पाते पाते ही उनके शरीर अनेक रोगों के घर बन जाते हैं। इस पर नागरिक खेल तमाशों के दर्शन एवं सहवास से उनके आचार विचार की दशा का अनुमान आप स्वयं कर सकते हैं, और जब आचार बिचारों की यह दशा, फिर देश का प्रेम जाति की सेवा और परोपकार करने की लगन उनके हृदय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में स्थान कैसे पा सकती है ? माता पिता की सेवा करने का उत्साह उन्हें कैसे हो सकता है ? सच तो यह है कि इस नवीन शिक्षा प्रणाली ने भारत का और भी चौपट कर दिया। इसलिये आवश्यकता है कि हम प्राचीन परिपाटी के अनुसार अपनें पुत्रों का यज्ञोपीवत संस्कार ( जिसका हम आगे वर्णन करेंगे ) करा गुरुकुलों में भेजें। वर्तमान समय में गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर तथा गुरुकुल वृन्दावन आदि कई गुरुकुल विद्यमान हैं, जहां ब्रह्मचर्य के साथ २५ वर्ष की आयु तक जङ्गलों की खुली हवा में गुरु शिष्य रह कर तप के साथ विद्याध्ययन करते हैं।

प्यारे सज्जनो ! आप ध्यान दें, इतने बड़े भारतवर्ष में दो तीन चार गरुकुल क्या कर सकते हैं ? इसलिये आप आइये और उपरोक्त परिपाटी को प्रचलित कीजिये, जिससे कुछ काल में योग्य पुरुष पैदा होजायें और वह वानप्रस्थ धारणकर अनेक आश्रमों पर दस २ बीस २ विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य के साथ शिक्षा देने लगें तब ही भारत का कल्याण होगा। और गृहस्थाश्रम कहलाने योग्य होसकता है। नहीं तो, जिन क्लेशों को इस समय हम और आप उठा रहे हैं, उनसे कभी नहीं बच सकते। सच मानिये, यही एक उपाय है जिससे सम्पूर्ण रोगों की शांति हो सकती है। जितना हमने इस औषधि का तिरस्कार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


किया, उतना ही हमारा सत्यानाश होगया। अब उठिये और सर्व रोग नाशक उपाय का तन, मन और धन से प्रचार कीजिये।

---

# स्त्री शिक्षा

प्रिय सज्जनो! किसी भी देश की उन्नति और अवनति वहां की स्त्रियों की योग्यता एवं अयोग्यता पर अधिकतर निर्भर है। जहां की स्त्रियां अयोग्य और अशिक्षित यानी मूर्खा हैं वहां सुविचार, श्रेष्ठाचार, बल, साहस आदि सद्गुणों की गन्ध भी नहीं रहती। भला जिस सितार के तार टूटे हुए हों उनसे उत्तम राग निकल सकता है? कदापि नहीं! फिर गृहस्थाश्रम रूपी तार के बिगड़े हुए होने से मर्यादा रूपी राग क्योंकर ठीक ठीक निकल सकता है। जिस प्रकार मूर्ख राजा अपनी प्रजा का नाश मार देता है, अज्ञान सेनापति अपनी सेना का बध और मूर्ख सारथी घोड़े समेत रथ को चकनाचूर कर देता है; उसी भांति अन-पढ़ माता अपनी संतानों की शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति का सर्वनाश करने वाली होती हैं। इसके अतिरिक्त विद्वानों के सङ्ग से विद्या में रुचि और मूर्खों के संग से उसमें अरुचि बढ़ती है। इसी प्रकार साधु का संग साधुपन तथा व्यभिचारी का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


साथ व्यभिचारीपन उत्पन्न करता है। फिर जिस माता के साथ हमारा इतना गूढ़ सम्बन्ध है क्या उसका चिर-कालीन सहबास, उसकी प्रकृति, उसके आचरण का प्रभाव हमारे लिये तारने वाला या डुबाने वाला न होगा? देखिये वैशेषिक दर्शन में लिखा है। 'कारण गुण पूर्वकं कार्य गुणः' अर्थात् कारण के गुण कार्य में आते हैं, इसकी पुष्टि वैद्यवर धन्वन्तरिजी ने भी सुश्रुत में की है, 'कारणानुरूपंकार्य्यमिति' जब माता अनपढ़ी और कुढंगी होती है तो उसकी संतान भी फूहड़ होती है क्योंकि जो जो रङ्ग ढंग सन्तानें अपने माता पिता आदि का देखती वा सुनती हैं वैसा ही वह स्वयं करने लगती हैं जैसा कि—

नवमृत्स्नां समादाय सुकरोति यथामतिः।
तथैव माता बलंच भावयेच्च यथारुचिः॥

जैसे कुम्हार नवीन मिट्टी को लेकर मनमाना बासन बनाता और चित्रकारी करता है उसी भांति माता सन्तान को भली बुरी शिक्षा देकर योग्य वा अयोग्य बना सकती है। इसी हेतु महाभारत अनुशासन पर्व अध्याय १० में कहा है कि "नास्तिमातृसमो गुरुः" अर्थात् माता के समान संसार का कोई गुरु नहीं है। इसलिये मनुजी ने अपनी स्मृति में लिखा है—

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतंपिता।
सहस्रन्तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उपाध्याय से दसगुणा आचार्य, और आचार्य से सौ गुणा पिता, पिता से हज़ार गुणा माता का गौरव है। इस हिसाब से उपाध्याय से माता में दसलाख गुरुओं की शक्ति है। अथर्व वेद में लिखा है कि प्रथम माता अपनी शिक्षा से मनुष्य में उत्तम संस्कार उत्पन्न करे तब वह मनुष्य विद्वान्, बलवान् और धनवान होकर संसार में कीर्ति पाता है। शतपथ में भी प्रथम मात्रमान पुनः पित्रमान तदन्तर आचार्यमान कहा है इसके उपरांत यजुर्वेद अ० १४ मंत्र १ में लिखा है, विदुषी पढ़ाने वाली स्त्रियों को योग्य है कि कुमारी कन्याओं को ब्रह्मचर्य अवस्था में गृहस्थाश्रम तथा धर्म की शिक्षा देकर उनको श्रेष्ठ करे। ऐसाही अ० २० मं० ८६ में लिखा है। बाबा नानक भी माता ही को आदि गुरु कहते थे। यजु० अ० ३७ मं० ४ में कहा है कि हे मनुष्यो! जब तक स्त्रियाँ विदुषी अर्थात् विद्यावती नहीं होतीं तब तक उत्तम शिक्षा की भी बढ़ती नहीं होती। ऋग्वेद सू० ३१ मं० ५ में कहा है जिस भांति पुरुष ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ के सब पदार्थों के गुण कर्म स्वभावों को जानकर विद्वान् होते हैं उसी भांति स्त्रियां भी हों क्योंकि सुशिक्षित पशु भी उत्तम कार्य्य सिद्ध करलेते हैं तो फिर क्या विद्या शिक्षा से युक्त पुरुष और स्त्री सब उत्तम कार्य सिद्ध नहीं कर सकते। इसी लिये मनु अ० २० मं० ६२ में लिखा है कि संतान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपनी माता से प्रार्थना करें कि हे सरस्वती ! बहुत विद्या से युक्त तू हमारी रक्षाकर। और अ० २९ मं० १४ में लिखा है कि विदुषी माता अपनी संतान को भली भांति पुष्ट करती है जैसा कि "मातेव पुत्र बिभृतामुपास्ये"। अथर्व० कां० २० सू० १२६ में लिखा है "कि स्त्रियां सब प्रकार की विद्या पढ़ें"। यजु० अ० २७ मंत्र ४ में कहा है कि मनुष्यो ! जब तक स्त्रियां विदुषी अर्थात् विद्यावती नहीं होतीं तब तक उत्तम शिक्षा भी नहीं मिलती। इस हेतु यजु० अ० १२ मं० ५३ में कहा है कि माता पिता और पढ़ने वाली विद्यावती स्त्रियों को योग्य है कि कन्याओं को अच्छे प्रकार बुद्धिमती करें। 'त्रिदसीतयादेवतयांगिर स्वनध्रुवासीद्' और अ० १९ मं० ३४ में कहा गया है कि जिस प्रकार पुरुष ईश्वर की सृष्टि के कामों के निमित्तों को जानकर विद्वान हो शास्त्रों का उपदेश करते हैं उसी भांति स्त्रियां सृष्टिक्रम के निमित्तों को जान वेदार्थ सार का उपदेश करें। अ० १७ मं० ४५ में सभापति को आज्ञा है कि जिस प्रकार पुरुषों को युद्ध विद्या की शिक्षा करते हो उसी भांति स्त्रियों को उक्त विद्या की शिक्षा कराओ। जिससे वह पुरुषों के समान युद्ध करने में समर्थ हो सकें।

अवसृष्टा परापतसख्ये ब्रह्मा स शं शिते।
गच्छा मित्रान प्रपद्यस्व मामीषांकंचनोच्छिषः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अ० २९ मं० ५० में आज्ञा है कि जिस भांति राजा और राज पुरुष विद्यादि रथ घोड़े के चलाने तथा युद्धादि व्यवहारों को जानें, उसी भांति उनकी स्त्रियां भी जानें। जिस भांति राजा राजनीति विद्या का ज्ञाता हो, उसी भांति स्त्री भी पढ़ी हो और उनकी मंत्राणी भी स्त्रियां ही होनी चाहिये, क्योंकि यजु० अ० १० मं० २६ में कहा गया है कि "भय और लज्जा के कारण स्त्रियां पुरुषों के सामने ठीक २ नहीं बोल सक्तीं इसीलिये राजा पुरुषों का और रानी स्त्रियों का न्याय करें। मनुमहाराज ने उपदेश किया है कि स्त्रियों की गवाही स्त्रियां ही देवें। 'स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियः कुर्युः'। इसके अतिरिक्त विदुषी पत्नियां ही अपने पतियों को सदुपदेश द्वारा कुकर्मों से बचा सक्तीं एवं अपने विनय आदि शुभ गुणों से पतिदेव को प्रसन्न रख सकतीं हैं। यजुर्वेद अ० ३७–१२ में कहा भी गया है कि सुलक्षणा पत्नी ही अपने पति को सब प्रकार सुखी कर सकती है। मनु अ० १७ श्लो० २४ में कहा है कि जिस घर में धार्मिका, विद्यावती प्रशंसायुक्त स्त्रियां होती हैं उस घर में दुष्ट कर्म नहीं होते। इसके उपरांत कुमारियों को पूर्णावस्था में अपने आप पति चुनने की आज्ञा दी गई है और विवाह, गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, निष्क्रमण, अन्नप्रासन,, चूड़ाकर्म आदि संस्कारों में मंत्रोच्चारण करने पड़ते हैं तो बतलाइये कि विद्या तथा पूर्ण ज्ञान के बिना युवतियां किस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पतियों की परीक्षा कर सकती हैं और संस्कारों में कैसे मंत्र बोल सकती हैं। यम ऋषि ने कहा है कि पहिले समय में स्त्रियां यज्ञोपवीत धारण कर वेद पढ़ कर गायत्री का जप करती थीं।

पुरा कल्पेषु नारीणां व्रतबन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वचनं तथा॥

कात्यायन ऋषि के बनाये हुये त्रिवर्ण शास्त्र के विद्या समुच्चय नामक तीसरे अ० के दूसरे सूत्र में लिखा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री एवं अन्त्यज आदि सब मनुष्यों की मुक्ति विद्या से होती है यथा—

स्त्रियोवा यदिवाशूद्रो ब्राह्मणः क्षत्रियः परे।
मुक्ति वा विद्यया प्राहुरिह भोगं तयासह॥

इसलिये अब आप "स्त्री शूद्रौ न धीयतामिति श्रुतेः" इस बनावटी श्रुति को हृदय से निकाल स्त्रियों को पुरुषों के समान विद्याध्ययन कराइये क्योंकि दोनों के समान अधिकार हैं। जीव की जाति नहीं होती जिस प्रकार के शरीर में जाता है वैसा ही उसका नाम होजाता है। इसी कारण उसको पुरुष, स्त्री और नपुंसक कुछ भी नहीं कह सकते। ऐसा ही श्वेताश्वेतोपनिषद् के अ० ५ श्लो० १० में लिखा है। प्रत्येक इन में से अपने जीवन के समान उद्देश्य अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के समान अधिकारी हैं। इसी भांति ब्रह्मचर्य गृहस्थ, बानप्रस्थ औ सन्यास इन चारों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आश्रमों में स्त्री अपने स्त्रीपन की पूर्ण उन्नति करती हुई मोक्ष को प्राप्तकर सकती है। प्यारे मित्रो जब स्त्री को ब्रह्मचर्य आश्रम में जाने की आज्ञा है तो विद्या पढ़ना उसका मुख्य धर्म है। इसके उपरांत ज्ञानकर्म उपासना और विज्ञान जिनकी सिद्धि के लिये चारों आश्रम हैं, इनके प्राप्त करने का प्रत्येक को समान अधिकार है क्योंकि दोनों के जीवन का उद्देश्य मुक्ति प्राप्त करना है और उसके साधन भी दोनों के समान हैं। देखिये यजु० अध्याय ११ मं० ६२ में पति को स्त्री का मित्र कहा है भला आप ही बतलाइये बिना तुल्य गुण कर्म स्वभाव के कभी मित्रता निभ सकती है? कदापि नहीं। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद अध्याय ६ मं० ३४ में स्त्री को देवी और धनोपार्जनादि कार्यों में पति की सहायता करने वाली बतलाया है। भला क्या वह बिना विद्या के देवी होसकती हैं? और मूर्खा होने पर धनोपार्जनादि कार्यों में किस प्रकार सहायता कर सकती हैं? इसी लेख के अनुसार प्राचीनकाल में स्त्रियों की वेदानुकूल शिक्षा होती थी, उस समय पुरुषों के समान स्त्रियां कार्य करती थीं। देखो महर्षि पञ्चशिख बालब्रह्मचारी और संन्यासी थे तो इधर गार्गीदेवी बालब्रह्मचारिणी, इधर राजा जनक योगविद्या में प्रवीण और प्रसिद्ध थे तो उधर बालब्रह्मचारिणी सुलभा इसी विद्या में अद्वितीय थी, जिसने राजा जनक से योग्य पुरुष को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चक्कर में डाल उस विद्या की अनेक आश्चर्ययुक्त सूक्ष्म क्रियाएँ राजा को बतलाई थीं। वह इतनी विद्या पढ़ी थी कि उस समय उसने अपने समान वर न मिलने के कारण ब्रह्मचर्य आश्रम से संन्यास धारण किया था। इधर याज्ञवल्क्य महर्षि ब्रह्मवादी थे तो उधर मैत्रेयीदेवी ब्रह्मवादिनी थीं। इधर श्रीराम, अर्जुन आदि स्त्रीव्रत करने वाले थे तो उधर सीता, द्रौपदी, दमयन्ती इत्यादि पतिव्रत के पालन करने वाली उपस्थित थीं। इधर राजादशरथ कर्ण, अर्जुन और भीमसेनादि संग्राम भूमि में शत्रुओं के मान हरने वाले थे तो उधर केकई, दुर्गावती राजा जयचन्द की रानी ताराबाई, कूर्मदेवी इत्यादि शूरवीरा थीं, जिन्होंने शत्रुओं के साथ लड़कर अपने पतियों की सहायता की। पद्मावती की बुद्धिमता तो प्रकट ही है। इधर पिता की आज्ञा पूर्ण करने के लिए रामचन्द्र महाराज ने चौदहवर्ष बनोवास में व्यतीत किये तो उधर श्रीराम के साथ सीता और पाण्डवों के साथ द्रौपदी, नल के साथ दमयन्ती इत्यादि ने नानाप्रकार के कष्ट सहन किये। इससे भी अधिक कृष्णकुमारी ने अपने पिता की प्रतिष्ठा रखने के लिये उनके भेजे हुए विष के प्याले को पीकर अपना बलिदान कर दिया। दान करने में यदि राजा हरिश्चन्द्र ने कष्ट उठाया तो उधर उसकी रानी ने उसका साथ देने में कोई न्यूनता नहीं की। यदि राजा नल ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी भूल से राजपाट खोया तो उसकी रानी ने ऐसे समय में पति को नहीं त्यागा वरन् राजा के त्यागने पर अपनी बुद्धिमानी से राजा को खोज पतिस्नेह का पूर्ण उदाहरण दिखलाया। शकुन्तला ने अपने पति के त्यागने पर कैसा सारगर्भित निवेदन किया था। यदि इधर बहुत से राजा प्रजापालक और धर्मात्मा हुये तो उधर भी अहिल्याबाई, रानी स्वर्णमई इत्यादि धर्म करने वाली और प्रबन्धकारिणी उपस्थित थीं। यदि महात्मा अत्रि, वशिष्ठ, जरुत्कार इत्यादि वानप्रस्थ आश्रम में थे तो उधर देवी अनुसुइया, अरुन्धती और जरुत्कार मुनि की स्त्री भी उनके साथ इसी आश्रम में उपस्थित थीं। इधर महात्मा बुद्ध संन्यास आश्रम में थे तो उनकी रानी बसुन्धरा भी संन्यासिनी थी। जिस प्रकार समय समय पर श्रीराम, कृष्ण, युधिष्ठिर इत्यादि उपदेश करते थे, उसी भांति मन्दोदरी ने सीताहरण करने पर रावण को बड़ी उत्तम रीति से शिक्षा तथा रामचन्द्र जी से संग्राम न करने के विषय में अनेक युक्तियों से निवेदन किया। कौशिल्या ने सीता, सुमित्रा ने लक्ष्मण, तारा ने बालि को, कुन्ती ने अपने पुत्रों को शूरबीरता का और मन्दालसा ने ब्रह्मज्ञान की कैसी २ शिक्षा दी थी। राजा गोपीचन्द का योगी होना उनकी माता का उन्हें उपदेश करना ही था। द्रौपदी ने सत्यभामा को पतिव्रत की शिक्षा दी थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गंगादेवी और गुरु गोबिंदसिंहजी की स्त्रियों को देखिए जिन्होंने अपनी अपनी सन्तानों को जितेन्द्रिय बना उनमें कैसे कैसे उच्च भाव उत्पन्न किये थे, जिसके कारण उन्होंने धर्म के अर्थ अपने तन, मन, धन को लगाकर संसार की काया पलटने के लिए बिजली का काम किया। इसके अतिरिक्त स्त्रियां पुरुषों से शास्त्रार्थ भी करती थीं, देखिए जनक के साथ सुलभा और याज्ञवल्क्य के साथ गार्गी ने शास्त्रार्थ किया था और शास्त्रार्थ की मध्यस्थिका भी स्त्रियां होती थीं जैसे शङ्कर और मण्डन के शास्त्रार्थ की मध्यस्थिका विद्याधरी हुई थी जिसने अपने पति के परास्त होने पर शंकर स्वामी से महात्मा को किस युक्ति से परास्त कर अपने कार्य को सिद्ध किया। जिस प्रकार वेदों की श्रुतियों के दृष्टा बहुत से ऋषि हुए वैसे ही ऋग्वे० मं० १ अनु० १८ सू० १७८ की दृष्टा लोपामुद्रा देवी और मं० ८ अनु० ९ सू० ९१ की आलोपादेवी हुई तथा शिव और बिदुला ने भी वेदों को बड़ी योग्यता से पढ़ा। विद्योत्तमा की विद्या का प्रभाव संसार में हो ही रहा है कि उसने अपने मूर्ख पति को कवि कालिदास बना दिया। रानी मन्दोदरी ने अपने पति को हिंसा से बचाने के लिए शतरंज का खेल निकाला था, विद्याधरी के उपदेश से राजा पृथु की रानी शिक्षा पर दस लाख रुपया व्यय करती और आपही परीक्षा लिया करती थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिस भांति गान विद्या में गंधर्वसेन नारद आदि होगये उसी भांति मृगनयनी और रानी रूपवती इत्यादि ने इस विद्या में नाम पाया था। जैसे वैदिक धर्म की उन्नति के लिये शंकर स्वामी ने अपना सर्वस्व लगाया था तद्वत काशी के राजा की पुत्री ने वैदिक धर्म की मर्यादा को जाते हुए देखकर अपनी अटारी पर से कुमारिलभट्ट से प्रार्थना की थी। सच तो यह है कि बिना विद्याओं के जाने और उत्तम शिक्षा के प्राप्त किये कभी मनुष्य जन्म सफल नहीं हो सकता न पवित्रता होती है इसलिये यजुर्वेद अ० १० मं० ६ में लिखा है कि राजा आदि लोग कन्याओं को पढ़ाने के लिए और विद्या की परीक्षा करने के लिये स्त्रियों को नियत करें। जिससे कन्या लोग विद्या और शिक्षा को प्राप्त हो तरुण पुरुषों को स्वयम्बर में विवाह कर वीर पुरुषों को उत्पन्न करें इस हेतु ऋग्वेद के उपदेशानुसार विद्या वृद्धि के लिये सब ऋतुओं में सुख देने वाली पाठशालाओं में पुत्रों को अध्यापकों से और पुत्रियों को अध्यापिकाओं से निरन्तर शिक्षा कराये जिससे स्त्री पुरुषों में पूर्ण विद्याओं का प्रचार हो।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# योग्य स्त्रियों के संक्षिप्त जीवन

**महात्मा पातञ्जलि की धर्म पत्नी और महर्षि याज्ञवल्क्य की स्त्री**—दोनों संस्कृत विद्या में निपुण थीं और अपने अपने पतियों के साथ रहकर ईश्वर भजन और विद्या प्रचार एवं शास्त्रार्थ करती थीं।

**देवहुती**—यह मनुमहाराज की पुत्री थी विवाह के पश्चात् पति के साथ रह पूर्ण योग्यता प्राप्त की जिसके कारण उनके पुत्र महात्मा कपिल ने सांख्यशास्त्र जैसे अनुपम ग्रन्थ को रच संसार में नाम पाया।

**लक्ष्मीदेवी**—यह व्याकरण और अनुवाद में बड़ी प्रवीण थीं इन्होंने मिताक्षरास्मृति का टीका किया जो **बल्लभ भट्ट** के नाम से प्रसिद्ध है।

**मायावती**—यह वेद मन्त्रों की व्याख्या भले प्रकार से करती थी। वेद प्रचार और विद्या की उन्नति के लिये अपने पति को सम्मति देती रहती थीं।

**लीलावती**—यह राजा भोज की विदुषी पत्नी थीं इन्होंने अपने राज्य में पुत्री शिक्षा का प्रबन्ध भले प्रकार से किया था। एकबार जब यह अपने पति के साथ पाठशाला देखने गईं तब वहां की अध्यापिका ने इनकी प्रशंसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

मीरा-बाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दो श्लोकों द्वारा की थी कि हे लीलावती और हे राजा भोज आप दोनों प्रीति पूर्वक अपने दोनों हाथों से लक्ष्मियों को ऐसा बढ़ाओ कि दाहिने हाथ को विद्या लक्ष्मी और बायें हाथ को धन लक्ष्मी कभी छोड़ने को मन न करे तथा आप दोनों ही इन दोनों लक्ष्मियों से स्त्री पुरुषों को अच्छी तरह सम्पन्न कीजिये जिससे वह दोनों लोकों में सुखी हों।

अयेवाले लीलावति ! कुरुमतिम्भोजनृपतेः ॥
त्वमप्येवंदैन्यंदिन मुभयो रर्ज्जनविधौ ।
सुविद्या सल्लक्ष्म्योम्स्यजतिन यथापाणियुगलम् ।
ययोरेकादक्षं परम पिययाहस्तमनिशम् ।
द्वयोसहायेननरानम्बनीवृत्तिस्त्रियश्चनित्यं कुरुते धनाढ्यम् ।
विद्यावतीचापियथासमीयुग्मीतथामूरुभयत्रसौख्यम् ॥

**द्रौपदी**—यह बड़ी पण्डिता और पतिव्रता थी जिसने बल से बड़े बड़े अपार दुःखों को सहन किया था। यहां तक कि जब महाभारत के संग्राम में रात्रि में सोते हुये अश्वत्थामा ने द्रोपदी के पुत्रों को मार डाला, तब भी इस विदुषी महिला ने अश्वत्थामा को मार डालने से बचा दिया था।

**रोमशा** ने ऋग्वेद मंडल १ अनुवाक १८ सूक्त १२६ की ७ ऋचा और **लोपामुद्रा** ने इसी वेद के मण्डल १ अनुवाक १८ सूक्त १७८ के २ मन्त्रों की व्याख्या की थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**अरुन्धती**—यह बशिष्ठ महाराज की पुत्री थी जिसका पढ़ा लिखा होना पोथी अरुन्धती से प्रकट है।

**रेणुका**—यह धर्मशास्त्र को अच्छे प्रकार से जानती थी।

**सुभद्रा**—यह श्रीकृष्ण महाराज की बहिन एवं बीर-शिरोमणि अर्जुन की द्वितीय पत्नी थी। इन्होंने अपने पुत्र अभिमन्यु को गर्भ से ही शूरबीर बनाने का यत्न किया था और ६ प्रकार के चक्रव्यूह की लड़ाई तथा अनेकान युद्ध शस्त्रों के ज्ञान का चित्र अभिमन्यु के हृदय पर खींच दिया था जिसके कारण महाभारत के घोर संग्राम में उसने बड़े २ बीरों के छक्के छुटा दिये थे।

**मोहना**—यह महाराजा अजमेर की वीर कन्या थी जिस समय महमूद गज़नवी ने अजमेर पर चढ़ाई की थी उस समय २५००० सेना के मुकाबले में मोहना खड़ी हुई और कई दिन तक घोर संग्राम करके विजय को प्राप्त किया, जिसको सुन महाराज बड़े प्रसन्न हुये महमूद गज़नवी इस वीर कन्या को देखकर दङ्ग रह गया क्योंकि मोहना जहां शूर थी वहां शिक्षायुक्त होने से सेना का प्रबन्ध करना भी जानती थी और बड़े प्रेम के साथ अपनी सेना के घायल और बीमारों की चिकित्सा कराती थी।

**मृगनयनी**—यह गुजरात के राजा की पुत्री और ग्वालियर के राना की पत्नी थी। यह गान विद्या में बड़ी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रवीण थी और विशेष कर संकीर्ण राग को अद्भुत प्रकार से गा २ कर राजा को प्रसन्न करती रहती थी।

**मीराबाई**—यह मारवाड़ देश के उच्च वंश मिरता के राठौर की पुत्री तथा चित्तौड़ के महाराजा कुम्भ की अत्यन्त रूपवती-गुणवती एवं कवीश्वरा रानी थी। ईश्वर में इसका अगाध प्रेम था। भाषा की कविता में कवीश्वर जयदेव से कुछ कम न थीं। इसके बनाये भक्तिरस प्रधान गीत अब तक वैष्णवों के मंदिरों में गाये जाते हैं। संस्कृत की कविता में इनकी गीतगोविन्द नामक पुस्तक प्रसिद्ध ही है। बाई जी सांसारिक विषयों से विरक्त रहा करती थी।

**मन्दोदरी**—यह तमाल देश के राजा की पुत्री और लङ्का के राजा रावण की धर्म पत्नी थी। जिस समय रावण अयोध्या के राजा रामचन्द्र की धर्म पत्नी को हर ले गया उस समय इसने अपने पति को बहुत समझाया था कि यह कार्य योग्य पुरुषों का नहीं है परन्तु उसने एक बात न मानी और अन्त को हानि उठाई।

**गान्धारी**—यह बड़ी विदुषी एवं न्यायशीला थी। इन्होंने अपने पुत्र दुर्योधन को बहुत समझाया कि संग्राम न कर, मेरे तथा पिता आदि वृद्धों के वचनों को मान, ऐश्वर्य, जीवन एवं अपने सुख के लोभ में फँस नाश न कर अन्यथा तुझे पछताना पड़ेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**ताराबाई**—यह राय सूरसेन बिजनौर की पुत्री थी। तेरहवीं शताब्दी में अलाउद्दनी ने रायसूरसेन के राज्य को छीन लिया इस दुःख से दुखी हो इसने यह प्रतिज्ञा की कि जो मेरे पिता के राज्य को वापिस दिलवादे उस राजकुमार के साथ मैं विवाह करूँगी। राना रायमल के तीसरे पुत्र जयमल ने इस प्रतिज्ञा को स्वीकार कर ताराबाई से विवाह किया फिर पति के साथ अफ़गानों पर चढ़ाई कर उनको हरा अपने पिता के राज्य को ले उन्हें दे अपने प्रण को पूर्ण किया।

**जीजीबाई**—शिवाजी की माता, वीर स्त्री थी, आपके वीर पुत्र ने मुग़ल सम्राट् औरङ्गज़ेब के दांत खट्टे कर दिये।

**सीता**—यह राजा जनक की दुलारी और श्रीरामचन्द्र जी की पत्नी थी वन के अपार दुःखों को सहन करती हुई पतिव्रत धर्म की जैसी रक्षा की वह विदित ही है।

**मंदालसा**—यह बड़ी विदुषी और ज्ञानवती स्त्री थी। इसने अपने तीन पुत्रों को गर्भावस्था से ही ब्रह्मज्ञानी बनाया तथा चौथे पुत्र को अपने पति की आज्ञा से गृहस्थ धर्म का उपदेश दिया और जब पति सहित बन में तप करने को चली तब अपने पुत्र से कहा कि बेटा! जब तुमसे भाई बन्धु अथवा शत्रु तथा धन के नाश होजाने पर सांसारिक दुःख सहा न जाय तब तुम इस अँगूठी के (जिसमें तुम्हारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कल्याण के लिये दो श्लोक लिखे हैं) श्लोकों को पढ़ कार्य करना।

सङ्गः सर्वात्मनात्याज्यः सचेत्युक्तं न शक्यते।
सद्भिः सह कर्तव्यः सतां सङ्गोहि भेषजम्॥

संसारी पुरुषों के साथ त्यागवृत्ति से रहना चाहिये यदि यह सम्भव न हो तो साधु लोगों की संगत में विशेषता से रहे क्योंकि श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से ही सुख की प्राप्ति होती है।

कामः सर्व्वात्मना हेयो हातुञ्चेक्छतेन सः।
मुमुक्षा प्रतितत्कार्यं सैव तस्यापिभेषजम्॥

सब प्रकार से फल की इच्छा न करते हुए कर्म करना तथा मुक्ति की इच्छा से सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देना ही उत्तम है।

वेदवती—यह ऋषि कुशध्वज की परम पांडिता कन्या थी। ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक समस्त आयु को व्यतीत करने की इच्छा से यम नियमों का पालन करती हुई हिमालय के शिखर पर निवास करती थी। दुरात्मा रावण ने अनेक प्रलोभनों द्वारा इसके व्रत को भ्रष्ट करने की इच्छा से इस के बालों को बलात्कार पकड़ लिया। उस समय ब्रह्मचारिणी ने अपनी शक्ति से उसे ऐसा धक्का दिया कि वह दूर जा गिरा फिर रावण को श्राप देते हुए उसने यज्ञ की अग्नि में अपने शरीर को भस्म कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**दमयन्ती**—अपने पति राजा नल के जुए में हार जाने पर उनके साथ बन को गई और बन में जब पति ने अकेला छोड़ दिया तब अपने धर्म की रक्षा करती हुई कई दिन ढूँढने पर भी पति के न मिलने पर अपने पिता के घर पहुंच दुबारा स्वयंवर रचाने की युक्ति से अपने पति को प्राप्त कर प्रेम तथा आनन्द पूर्वक अपनी समस्त आयु को व्यतीत किया।

**पार्वती**—यह महाराजा हिमांचल की पुत्री थी। इन्होंने कुमारावस्था से ही योगीराज, महात्मा एवं तपस्वी शिव जी के साथ विवाह होने के लिये बड़ा तप किया। अन्त को वाञ्छित पति को पाकर इस प्रकार पतिव्रत धर्मका पालन किया कि आपका नाम संसार में सती के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

**विद्योत्तमा**—महा विदुषी होने के कारण इसने अपने समान विद्वान् वर से विवाह करने की प्रतिज्ञा की। उस समय के पंडितों ने इससे परास्त होने से जलकर इसका विवाह छल से एक मूर्ख के साथ कर दिया। ससुर गृह जाने पर जब इसको अपने पति की मूर्खता का पता लगा तब इसने अपनी बुद्धिमत्ता से अपने पति को महान्विद्वान् बनाया जो महाकवि कालिदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्यारी बहिनों देखो! विद्याबल से इसने अपने मूर्ख पति को महान् विद्वान् बना आप सुख उठाया और संसार में पति के नाम को अमर कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**कुन्ती**—यह मथुरा के राजा शूर की पुत्री और महाराजा पांडु की स्त्री थी। बुद्धिमती और विदुषी होने के कारण इन्होंने श्रीकृष्ण जी के सामने अपने पुत्र पाण्डवों को क्षत्रित्व का वह उपदेश दया जिससे उन्होंने कौरवों को परास्त कर अपने पिता के राज्य को ले संसार में अपने पिता एवं क्षत्रियाणी माता के नाम को सार्थक किया।

**विदुला**—जब इसका पुत्र सिन्धुराज से परास्त हो उत्साह और उद्योग रहित हो गया उस समय इस विदुषी माता ने कहा 'तू कुत्ते की भांति नीच वृत्ति धारण करता है तो मेरे सामने से चला जा और यदि तू मेरा पुत्र है तो कायरता को छोड़ शत्रुओं को जीत या रणभूमि में मरजा मेरे पास तेरा कुछ काम नहीं। इस प्रकार के वीर रस युक्त शब्दों ने पुत्र को लज्जित एवं परमोत्साहित कर दिया अंततः उसने प्राणों की बाजी लगा शत्रुओं को जीत अपनी माता एवं कुल के नाम को प्रसिद्ध किया।

**काशी नरेश की पुत्री**—भारतवर्ष में जब बौद्ध मत फैला और काशी नरेश भी शिखा सूत्र त्याग बौद्ध मतावलम्बी हो गये तब राजपुत्री को वैदिक धर्म का नाश होते देख बड़ा दुःख हुआ। एक दिन अपनी अटारी पर से एक मनुष्य को नीचे जाता देख उसने कहा—

'किं करोमिकगच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अर्थात् क्या करूं कहां जाऊं कौन वेदों का उद्धार करेगा यह सुन कुमारिल भट्टाचार्य जो महलों के नीचे जा रहे थे बोले—

माचिन्तयवरारोहे । भट्टाचार्योऽस्तिभूतले ॥

ऐ धार्मिका कन्या ! तू इतनी चिन्ता मत कर अभी भट्टाचार्य वेदों के उद्धरार्थ उपस्थित है। प्यारी बहिनों ! इस राज्य कन्या की ओर ध्यान दो कि कितना धर्म प्रभाव और वेदों का गौरव उसके हृदय में था आज तुम वेदों के नाम सुनने और पढ़ने के योग्य ही न रहीं।

**सुमित्रा**—यह महाराज दशरथ की द्वितीय स्त्री थी, इन्होंने अपने पुत्र धर्मात्मा लक्ष्मण को श्री रामचन्द्र के साथ बन में जाने के लिये निम्नलिखित शिक्षा की थी।

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजम् ।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात ! यथासुखम् ॥

हे तात ! तुम रामचन्द्र को दशरथ और सीता को मेरे समान और बन को अयोध्या जानते हुए सुख पूर्वक जाओ और उनकी सेवा कर यथार्थ धर्म का पालन करो जो कि तुम्हारा कर्तव्य है।

**तारा**—यह तामिल देश के राजा की पुत्री थी, जिस का विवाह बालि के साथ हुआ था। यह अत्यन्त सुशीला और योग्य स्त्री थी। इसने पति को रामचन्द्र के आधीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रहने के अर्थ बहुत समझाया था, परन्तु जब उसने न माना और वह संग्राम के लिये चला तब मन्त्र जानने वाली तारा ने विजय की इच्छा से 'स्वस्तिवाचनादि' मंगल पाठ पढ़ा था जैसाकि किष्किन्धा कांड सर्ग १६ श्लोक १२ में कहा है। जब बालि मर गया तब बालि के शव को देख तारा ने इस प्रकार शोक प्रकट किया जिसको सुन वज्र के समान हृदय भी पीड़ित होता था।

नाना विधि बिलाप कर तारा ❀ छूटे केश न देह संभारा॥
पुनि पुनि तासु शीश उर धरई ❀ बदन बिलोकि हृदय मंह हतई॥
मैं पति तुम्हें बहुत समझावा ❀ काल विवश कछु मनहिं न आवा॥
अङ्गद कहँ कछु कहन न पायहु ❀ बीचहि सुरपुर प्राण पठायहु॥

इस प्रकार जब तारा रुदन करने लगी तब श्री रामचन्द्र ने उसको उपदेश किया।

क्षित जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम शरीरा॥
प्रकट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य तुम कहँ लगि रोवा॥

इसको सुन वह कुछ शांत हुई तब राम ने कहा कि अब बालि की क्रिया करो, फिर अंगद का राज्य देख शांति के साथ आनन्द करो। इस पर तारा ने हनुमान से कहा कि एक ओर अंगद के समान सौ पुत्र हों और एक ओर मारे हुये वीर बालि के अङ्गों का लिपटाना हो तो भी पुत्रों के सुख से मृतक पति के अङ्गों का लिपटाना श्रेष्ठ है। कहिये क्या विना ज्ञान के पतिव्रत धर्म की महिमा कोई जान सकता है? कदापि नहीं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



**विद्याधरी**—यह पूर्ण विदुषी, विख्यात पंडिता काशी निवासी प्रसिद्ध पंडित मण्डन मिश्र जी की धर्मपत्नी थी। विद्याधरी तथा मंडन मिश्र की विद्या की कीर्ति संसार में चहुँ ओर फैली हुई थी। प्रयाग में इनकी विद्या का प्रभाव सुन स्वामी शङ्कराचार्य शास्त्रार्थ के निमित्त इलाहाबाद से काशी चले। चलते चलते जब काशी के नगर में पहुंचे तब मंडन मिश्र का घर न जानने के कारण कुएँ पर पानी भरती हुई कहारियों से मंडन मिश्र का घर पूछा तो कहारियों ने कहा।

प्रत्यक्षशब्दान्तविधिः प्रभेदैर्नानाशुका यत्र गिरं वदन्ति।
द्वारेतुनीडान्तर सन्निरुद्धा अवेहि तन्मण्डन मिश्रधामा॥

हे दण्डी! जिसके द्वार पर दो चिड़ियां पींजड़े में बैठी हुई जीव और ब्रह्म के विषय में वार्तालाप कर रही हैं वह प्रत्यक्ष घर मण्डन मिश्र का जानों। शङ्कर इस बात को सुनकर चकित हो मन में विचार करने लगे कि जहां की कहारी इतनी पढ़ी हैं तो मण्डन मिश्र क्यों न बड़े विद्वान् होंगे तो भी यह सोचकर कि डरना भला नहीं, परमात्मा का भरोसा रख उनके गृह पर पहुंचे। मण्डन मिश्र उस समय ब्राह्मणों को भोजन करा रहे थे, इनको भी सत्कार पूर्वक गृह में लिया और भोजन करा तथा कुशल पूछ कर कहा कि आप कैसे आये हैं? शंकराचार्य ने उत्तर में कहा कि मैं आप से शास्त्रार्थ करने के लिये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आया हूँ। मण्डन ने कहा कि हमारे और आपके बीच में मध्यस्थ कौन रहेगा ? शङ्कर ने उत्तर दिया विद्याधरी ( जिसका द्वितीय नाम उभयभारती था ) मध्यस्थ रहे। जब नियम निर्णय हो चुके तब शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। जब मण्डन मिश्र हार गये तब विद्याधरी ने न्याय पूर्वक कहा कि "कविर्दण्डी, कविर्दण्डी न संशयः, अर्थात् स्वामी शङ्कराचार्य की विजय में संशय नहीं, परन्तु हे दण्डी मेरे पति को आपने समस्त नहीं जीता क्योंकि अभी उनकी अर्द्धाङ्गिनी मैं बैठी हूँ जब तक आप मुझको भी अपना शिष्य न बना लेंगे तब तक विजय पत्र नहीं पा सकते, अर्थात् मुझको भी अपनी शिष्य बनाइये, जैसा—

अपितु त्वयाऽद्य न समग्रजितः प्रार्थिताग्रणीर्मम पतितयेदहम्।
वपुरर्द्धमस्य नजितामतिमन् अपिमां विजित्यकुरुशिष्यमिमाम्॥

तब शङ्कराचार्य ने उत्तर दिया कि महायशस्वीजन स्त्रियों से शास्त्रार्थ नहीं करते। दण्डी जी का यह बचन सुन विद्याधरी बोली।

यदिवादिवादकलहोत्सुकतां प्रतिपद्यते हृदयमित्यबले।
तदसांप्रतंनहिमहायशसो महिलाजनेन कथयन्तिकथाम्॥

अर्थात् जो अपने पक्ष को खण्डन करे उसका उत्तर अवश्य देना चाहिये और जो आप यह कहते हैं कि स्त्रियों के साथ पुरुष शास्त्रार्थ नहीं करते तो सुनिये—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्वमतं प्रभेत्तुमिह यो यतते स बधूजनोस्तुदि वास्त्वितरः ।
पति तव्यमेव खलु तस्य जये निज पक्षरक्षणपरेर्भगवन् ॥
अतएव गार्ग्यमिधया कलहंसहाज्ञवल्क्य मुनिराड्करात् ।
जनकस्तया सुलभयाऽवलया किममी भवन्ति नयशोनिधयः ॥

क्या आप नहीं जानते कि गार्गी ने याज्ञवल्क्य से और जनक ने सुलभा के साथ शास्त्रार्थ किया और अन्त को हार जाने पर भी क्या याज्ञवल्क्य और जनक का संसार में अपयश है ? नहीं नहीं । शङ्कराचार्य जी इसका कुछ उत्तर न दे शास्त्रार्थ करने पर उद्यत हुये । प्यारी बहिनों फिर क्या था दोनों का समारोह से १६ दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा । शास्त्रार्थ भी कैसा अर्थात् वेद और शास्त्रों के प्रमाण सहित तथा बुद्धि और तर्क द्वारा एक एक शब्द को सिद्ध किया जाता था जैसा कि कवि ने कहा है—

अथ सा कथाप्रियव्रतेम्म तयोरुभयोः परस्पर जयोत्सुकयोः ।
मतिचातुरीरचितशब्दभरी श्रुतिविस्मयी कृत विचक्षणयोः ॥

पाठको ! अन्तिम दिवस उभयभारती ने प्रश्न किया । बतलाइये कि काम की भीतरी और बाहरी कितनी कला हैं जिसका उत्तर उन्होंने दिया कि मैंने ब्रह्मचर्याश्रम से ही संन्यास लेलिया इसलिये मैं नहीं जानता इस प्रकार शङ्कराचार्य को बुद्धि और तर्क द्वारा हरा अपने पति की प्रतिष्ठा को रक्खा ।

**पद्मावती**—यह राना हमीरसिंह चौहान सिंहलद्वीप की पुत्री और चित्तौड़ के राजा भीमसिंह को विवाही थी ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अति सुन्दर होने के कारण ही आपका नाम पद्मावती रखा गया था। अलाउद्दीन ने इसके रूप पर मोहित हो १२७२ में चित्तौड़ पर चढ़ाई करदी लेकिन फिर भी जब कोई उपाय अपनी अभिलाषा की पूर्ति का न देखा तो राजा से विनय पूर्वक कहला भेजा कि यदि आप मुझे उस परम सुन्दरी के दर्शन मात्र करादें तो मैं सन्तोष कर दिल्ली चला जाऊँगा। राजा ने स्वीकार कर लिया क्योंकि उस समय परदे का रिवाज न था, बादशाह राजपूतों के सत्य और धर्म पर भरोसा कर थोड़े मनुष्यों को साथ लेकर गढ़ के भीतर गया और रानी के दर्शन कर अपनी अभिलाषा को पूर्ण कर लौटते समय नम्रता से कहा कि मेरे कारण आपको इतना क्लेश हुआ अब आप क्षमा कीजिये, हमारी आपकी मित्रता आगे को बनी रहेगी। राजा ने मन में सोचा कि बादशाह हमारे ऊपर विश्वास कर गढ़ में अकेला चला आया है, इसलिये हमको उचित नहीं कि हम इसके वचन पर विश्वास न करें, अतः उसके पहुंचाने के लिए किले के बाहर तक वे बादशाह के साथ चले गये, परन्तु बादशाह के मन में कुछ छल था। बातों ही बातों में राजा को अपने लश्कर तक ले आया और उनको क़ैद कर लिया साथ ही निर्लज्ज होकर राजा से स्पष्ट कह दिया कि जब तक आप अपनी रानी को हमको न देदेंगे तब तक हम तुम्हें न छोड़ेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जब इस समाचार को रानी ने सुना तो उसने तुरन्त अपने चाचा और भाई आदि को सम्मति करने के लिये बुलाया और कहा कि कौनसा उपाय ऐसा किया जावे कि जिससे राजा छूटकर यहां आजावें और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा न लगे। सबकी यह सम्मति ठहरी कि आप बादशाह के साथ जाने का बहाना करके राजा को उस विश्वासघाती से छुड़ा लावें। रानी ने बादशाह से कहला भेजा कि मैं अपनी सब सखी सहेलियों के साथ आपके पास आती हूँ। बादशाह ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लश्कर में सिपाहियों को आज्ञा दी कि रानी पद्मावती आती है, कोई मनुष्य किसी प्रकार का उपद्रव न करे वा किसी स्त्री का परदा न खोले और उसकी सहेलियों के लिये सात सौ डोलियां तैयार की गईं, जिसमें से प्रत्येक के भीतर एक २ शस्त्रधारी रणधीर क्षत्रिय और बाहर छः छः डोली के कहारों के भेष में बादशाह के लश्कर में पहुंचे। वहाँ एक तम्बू के भीतर डोलियां उतार दी गईं। रानी ने राजा से भेंट करने के लिये शाह से आध घण्टे का अवकाश मांगा। रानी की प्रार्थना पर उसको करुणा आई उसने तुरन्त रानी की विनती स्वीकार करली इधर कुछ और ही कौतुक हुआ अर्थात् राजा और रानी शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार होकर चित्तौड़ को चले गये और ७०० सिपाहियों ने कपट रूप त्याग शाह के लश्कर को मार कर भगा दिया। बादशाह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दिल्ली को लौट आया परन्तु मारे लज्जा के प्रतिदिन इसी उपाय में डूबा रहता कि किस प्रकार चित्तौड़ हाथ आये आखिर सन् १३०३ में चित्तौड़ पर फिर चढ़ाई हुई, बादशाह की फ़ौज बहुत थी और प्राणों का दांव लगाकर धावा करते थे तब राजपूतों ने क़िले के अन्दर जौहर रचा जिसमें नारि जाति की मुकट देवी पद्मावती के साथ अनेकों देवियों ने अपने प्राणों को समर्पित कर दिया। फिर क्या था क़िले का फाटक खोल दिया गया, सारे क्षत्रिय, संग्राम भूमि में काम आये और अलाउद्दीन को खाली हवेलियों के अतिरिक्त कुछ हाथ न आया।

प्यारी बहिनों! उक्त रानी ने प्रथम युक्ति से अपने पति को बन्दी से छुड़ा अपने पतिव्रतधर्म की रक्षा की जिससे उसका आज तक यश गाया जाता है। इसलिये पद्मावती की भांति विपत के समय धैर्य और साहसी बनने के लिये विद्या पढ़ना उचित है।

**एक सभ्य स्त्री**—एक नगर में एक विद्वान् पण्डित और उनकी विदुषी स्त्री रहती थी। दोनों में परस्पर प्रेम था। पति स्त्री से प्रसन्न स्त्री पति से। एक दिन पण्डित जी के एक मित्र विदेश से आये भोजनादि पाने पर मित्र ने भोजनों की प्रशंसा कर कहा कि आपकी स्त्री बड़ी योग्य है। पंडित जी ने पूँछा कि आपने उसकी योग्यता किस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से जानी ? मित्र ने कहा कि गृह में सफ़ाई, वस्त्रादि सब साफ़, भोजन अति रुचिकारक आदि से जाना जाता है। पंडितजीने कहा कि हमको इस स्त्री के पीछे संसार में परमानन्द है महाशय यह बड़ी गुणवती और बुद्धिमती है। मैं अभी आपको इसकी योग्यता और सभ्यता का पूर्ण परिचय दिखलाता हूँ। इतना कह पंडितजी ने पंडितानी को बुलाकर कहा कि मैं अपने मित्र के साथ परदेश जाना चाहता हूँ तुम्हारी क्या सम्मति है, स्त्रीने निम्नलिखित श्लोक पढ़कर कहा कि—

मायाहीत्यपमंगलत्कं व्रजपुनः स्नेहेन हीनं बचः,
तिष्ठेति प्रभुता यथा रुचि कुरुष्वैषाप्युदासीनता।
नोजीवामि बिनात्वयेति बचसा सम्भाव्यतेबानवा,
तन्मांशिक्षयमित्रयत्समुचितं गन्तुं त्वयि प्रस्थिते॥

रोकहिं जो तो अमंगल होय, औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये।
जो कहैं जाहु न तौ प्रभुता, जो कछु न कहैं तौ प्रेम नसाइये॥
जो हरिश्चन्द्र कहैं तुमरे बिन, जीहैं न तौ यह क्यों पतिआइये।
तासों पयान समय तुमरे, हम का कहैं, आप हमें समझाइये॥

यह सुन मित्र ने पंडितानीजी को धन्यवाद दे कहा महाराज शिक्षा का यही फल है, विद्या से ही सभ्यता आती है।

**संयोग्यता**—यह कन्नौज के राजा जयचन्द की परम सुन्दरी और गुणवती पुत्री थी। इसके पिता वीर पृथ्वीराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से ईर्षा करते थे इससे इन्होंने अपनी इस पुत्री के स्वयम्वर में उनको निमन्त्रण ही नहीं भेजा किन्तु उनकी मूर्ति वनवा कर ड्योढ़ी पर खड़ी करादी। जिस समय स्वयम्वर में संयोग्यता जयमाला डालने के लिये बुलाई गई उस समय जब स्वयम्वर में उसने अपने मन में चुने अनेक गुणों से युक्त पृथ्वीराज को नहीं देखा तब उसने अपने पिता के द्वेषभाव का कुछ विचार न कर सब सभा के सामने ड्यौढ़ी पर खड़ी मूर्ति के गले में जयमाला डाल दी। यह देख पिता ने क्रोधित हो कहा तूने मेरे शत्रु के गले में जयमाला क्यों डालदी इसके उत्तर में शांति से संयोग्यता ने कहा कि पिता जी! आपने मुझे स्वयम्वर की आज्ञा दी थी अतः जिसको मैंने उचित समझा बरा। यदि आप यह आज्ञा देते कि अमुक राजा को बरो तौ मैं वैसा करती। यह सुन पिता को कुछ उत्तर न आया और पिता तथा सभा शांति होगई। जब यह समाचार पृथ्वीराज को मालूम हुए तो वह चुने हुए सवार ले राजा जयचन्द के महलों पर चढ़ाई की और ५ दिन युद्ध कर संयोग्यता को ले गये। जिस समय दिल्ली पर यवनों ने चढ़ाई की उस समय संयोग्यता ने मर्दाना भेष बना अपने पति को उत्साहित कर युद्ध करवाया पर यवनों का बल अधिक होने से और अपनी तरफ़ के वीर सुभटों के मारे जाने एवं प्राण-पति के बलिदान होजाने पर इसने अपने धर्म की रक्षा के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लिये चिता पर अपने शरीर को भी भस्मीभूत कर दिया।

**शकुन्तला**—यह महात्मा कण्व की पुत्री थी। राजा दुष्यन्त ने इससे गन्धर्व विवाह किया था। चलते समय अंगूठी देकर वह अपने राज्य को चला आया, फिर उसको नहीं बुलाया, तब उक्त महात्मा की आज्ञानुसार चेले उसको लेकर राजा के पास गये, परन्तु शोक कि राजा ने उसको नहीं पहिचाना तब शकुन्तला ने कहा कि महाराज! परमेश्वर को साक्षी देकर जब आपने विवाह किया था, अब आप भूलते हैं। हे स्वामिन्! जो गृह कार्यों में दक्ष, जिन्होंने पुत्र का प्रसव किया तथा जो पतिव्रता है वही भार्या है। मनुष्यों का स्त्री आधा अङ्ग है, भार्या सबसे बढ़ कर साथी है, भार्या ही इन तीनों वर्गों की जड़ है, भार्या ही संसार के पार करने का कारण, जिनके भार्या है वही गृहवासी हैं, उत्तम भाषण करने वाली और एकांत में सम्मति देने वाली भार्या ही है, वही मित्र के समान है, धर्म कर्म में हितैषी पिता के समान है, पीड़ा की दशा में स्नेहवती, माता और रूखे मार्ग में पथिक पति का विश्रामस्थल है, इसके उपरान्त जिसके भार्या होती है उसीका लोग विश्वास करते हैं, सच तो यह है कि चतुर भार्या ही पति को सांसारिक नरकों अर्थात् दुखों से छुड़ाती है, इसलिये अति क्रोधित होने पर भी पतिको पत्नीका अप्रिय कार्य न करना चाहिये क्योंकि रीति, प्रीति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और धर्म सबही भार्या के हाथ में हैं स्त्रियां आत्मा की सनातन पवित्र क्षेत्र हैं। ऋषियों की भी ऐसी शक्ति नहीं है कि स्त्री के बिना प्रजा रचें। देखिये सैकड़ों कूपों की प्रतिष्ठा से एक तालाब की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ है। सहस्रों तालाबों से एक यज्ञ और सैकड़ों यज्ञों से एक पुत्र और सहस्रों पुत्रों से एक सत्यनिष्ठ श्रेष्ट है। सर्व वेदों का पठन, सब तीर्थों में स्नान एक सत्य के समान होता है, सत्य के समान धर्म नहीं, असत्य से अधिक कुछ नहीं, मिथ्या से बढ़कर कोई पाप नहीं। अतएव आपने मुझसे जो नियम किया उसका उल्लङ्घन न कीजिये। इसके पीछे राजा को होश आया और शकुन्तला को पहिचाना, फिर दोनों ने आनन्द से आयु व्यतीत की। उनका सुपुत्र भरत इस देश का राजा हुआ। जिसके नामसे यह देश भारतवर्ष विख्यात् हुआ।

**कृष्णाकुमारी**—यह उदयपुर के राजा की पुत्री थी जिसका जन्म सन् १८७२ में हुआ था। यह अत्यन्त रूपवती और सुन्दर थी। इसकी मन्दचाल, और मृदु भाषण ऐसा मनोहर था जिससे उस देश के लोग उसको राजस्थान का कमल कहते थे। इसका विवाह जोधपुर के महाराज के साथ ठहरा था लेकिन वह विवाह होने से प्रथम ही परलोकवासी होगये, तब उसके विवाह की बात चीत जयपुर के महाराज के साथ होनी आरम्भ हुई और कुछ काल में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


टीका भी हो गया, इतने में द्वितीय जोधपुराधीश ने जो उन मृतक महाराज के पीछे गद्दी पर बैठे, कहला भेजा कि प्रथम इसकी शादी महाराज जोधपुर से नियत हुई थी इस कारण इसका पाणिग्रहण हमारे साथ होना चाहिये। इस प्रकार दोनों राजे बरने के लिये वहां पहुँचे और राजा को धमकाने भी लगे कि यदि कन्या हमको न दोगे तो तुम्हारे राज्य को विध्वंस कर डालेंगे। राना का वंश और पदवी सब राजाओं से अधिक मानी जाती थी परन्तु उस समय वह इतना बल न रखता था कि दोनों अथवा एक को लड़कर परास्त करता। दोनों राजा इधर उधर के लुटेरों की सेना इकट्ठा करने लगे और सेनाओं ने उदयपुर में लूट मार मचा दी। राजा हैरान था कि क्या करें। अंत को अमीरउद्दीन ने सम्मति दी कि आप इस पुत्री ही को क्यों न पृथक् करदें तो यह सब बखेड़े जाते रहें। राजा इस प्रकार हत्या करने और निष्पापिन को मारने को उद्यत न हुआ, परन्तु इन दोनों राजाओं के मारे बेकल था। अमीरुद्दीन उपरोक्त सम्मति ही देता था जिसको राजाने फिर स्वीकार कर लिया, परन्तु इस भयङ्कर पाप को करने के लिये कोई वधिक नहीं मिलता था, अंत को सब लोग राजा के एक सम्बन्धी की ओर संकेत करने लगे कि यह इस कार्य को कर उदयपुर की प्रतिष्ठा को रक्खेंगे। वह क्षत्रिय इन कायरों के इस घोर विचार को सुनते ही कांप उठा और ऊंचे स्वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से राज सभा में कहने लगा धिक्कार है ? उस पुरुष को जो मुझसे उस निर्दोष कन्या के वधके लिये कहे, खाक पड़े उस सम्बन्ध पर जो इस अत्याचार करने पर शेष रहे। तब राजा का एक भाई इस कार्य के लिये बुलाया गया कि उदयपुर की लज्जा इसी में रहती है कि तुम इसका वध कर आओ। तब वह बड़ी कठिनाई से बरछी मारने पर राजी हुआ, जब वह महलों में पहुंचा जहां वह सुन्दरी, नवयौवना, कन्या ( जो साक्षात् लक्ष्मी के समान थी ) बैठी हुई देखी उसकी भोली आकृति देख वधिक का पाषाण हृदय कमल के समान कोमल हो गया और उसका हाथ उस निरपराधिनी कन्या पर न उठ सका और घबराहट के कारण उसके हाथ से बरछी गिर पड़ी। यह सब भेद कृष्णाकुमारी और उसकी माता पर प्रगट होगया और वह मनुष्य अपनी दुष्टता पर लज्जित हो लौट गया। माता स्नेहवश अपनी निरपराधिनी कन्या के मारने वाले को अनेक दुर्वचन कहने लगी और शोक ग्रस्त हो ऊंच स्वर से रुदन करने लगी परन्तु वह विद्यावती वीर कन्या अपने पिता, वंश, प्रजा और देश के हित के लिये अपने जीवन का आप बलिदान करने को उद्यत होगई। इधर बरछी के बदले विष देने का विचार हुआ। तब एक राज सेवक ने रोते रोते राजा की आज्ञा से विष का प्याला लाकर कृष्णाकुमारी के हाथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में दिया। उस परम धैर्यवती, गुणवती कन्या ने चित्त को दृढ़ करके पिता की आज्ञा उनकी आयु, धन, सम्पति की रक्षा और वृद्धि के अर्थ परमेश्वर से प्रार्थना करती हुई शिर झुकाकर पीलिया। मृत्यु के भय से उसके नेत्रों में से एक आंसू तक न निकला। जब माता प्रेमवश होकर दुःख से पीड़ित हो हत्यारे लोगों को दुर्वचन कहती तो कृष्णा कहती ऐ मेरी प्यारी माता तुम मेरे लिये इतना क्यों शोक करती हो ? क्या यह अच्छा नहीं है कि मैं इस प्रकार के दुःखों से जीवन भर के लिये छुटकारा पा जाऊं ? मुझे मरने का किंचित् भय नहीं। इतने में जब राजा ने देखा कि विष का कुछ प्रभाव न हुआ तब दूसरा प्याला उसके हाथ में दिया गया। उस सुन्दरी ने उसको भी पी लिया, जब उससे भी कुछ न हुआ तब तो राजा ने तीसरी बार तीक्ष्ण विष भर कर पुत्री को दिया, उस समय कृष्णाकुमारी ने हँस और धैर्य को यथावत् धारण कर यह कहते हुए कि मेरा जीव ऐसा निर्लज्ज हो गया है, झट उसको भी पी लिया जिसके नशे में ऐसी चूर होकर, सोई कि प्यारी कृष्णाकुमारी इस संसार में न जागी।

शत्रु भी इस अपार कौतुक को सुन अत्यन्त दुःखित होकर अपने २ निज भवन को लौट गये, अभागिनी माता ने भी अन्न और जल को छोड़ थोड़े ही दिनों में अपने प्राणों को खो दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धन्य है कृष्णाकुमारी तुम्हारा यह बलिदान अब भी पाषाण हृदय को रुलाने वाला है।

कूर्मदेवी—यह समरसिंह चित्तौड़ के राजा की वीर रानी थी। जब इनका पति पृथ्वीराज की सहायता करने में मारा गया और दिल्ली क़न्नौज पर विजय पाने के पश्चात् शाहबुद्दीन ने उसके सहायकों को दबाने के अर्थ अपने नायब क़ुतुबुद्दीन को चित्तौड़ पर भेजा उसने रानी से कहला भेजा कि गढ़ की ताली हमारे पास भेज हमारे आधीन हो जाओ। यह सुन रानी ने प्रति उत्तर में समाचार भेजा कि शूर वीर ऐसे कायरों के समाचार नहीं भेजते, क्या मैं अपने होते अपने पति की प्रतिष्ठा में धब्बा आने दूँगी। यह सुन वह बढ़ा और युद्ध का बाजा बजा, जिसको सुन रानी अपनी थोड़ी सी सेना के साथ आप घोड़े पर सवार हो हाथ में भाला लेकर संग्राम भूमि में आकर बड़े प्रभावशाली शब्दों में अपनी सेना के मनुष्यों से उत्तेजना पूर्वक कहा—"जिसको अपने प्राण प्रिय हों, जो अपनी सन्तान पर मोहित हों वे अभी भाग कर चले जावें और जिनको यह निश्चय हो गया हो कि संग्राम में लड़ना हमारा धर्म है और शरीर अनित्य है जो एक दिन अवश्य ही जावेगा वह मेरा साथ दें। क्योंकि यह समय पुरुषों को स्त्री बनने का नहीं है। यदि तुम प्राणों को न्यौछावर करने को उद्यत हो जाओगे तो स्मरण रक्खो कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तुम इस संग्राम में "विजय पाओगे" इस शूरवीरा स्त्री के इन शब्दों ने सिपाहियों के हृदय पर बड़ा प्रभाव किया राजपूत एक साथ नदी की भांति उमड़ पड़े आन की आन में शत्रु की सेना को छिन्न भिन्न कर दिया और जब कूर्म देवी के विजय समाचार दूसरे राजाओं ने सुना तो उन लोगों ने भी अपनी सेनायें भेजी फिर क्या फिर तो कुतबुद्दीन को रणभूमि से भागना ही पड़ा। विजय कूर्मदेवी के हाथ रही।

**दुर्गावती**—यह गढ़मण्डल के राजा की रानी थी, अपने पति के परलोक गमन पर पुत्रों के असमर्थवान होने के कारण राजकार्य करती थी। इसने मुसलमानों के साथ १५०० हाथी और ७०० सवार तथा प्यादों की बहुत बड़ी सेना द्वारा घोर संग्राम कर दो बार विजय प्राप्त की तीसरी बार के संग्राम में वह अपनी सेना के निर्बल और आप घायल होजाने से आत्महत्या कर मर गई, उस राज्य के पहाड़ों के बीच में इसकी समाधि अब तक उपस्थित है।

**चूड़ाला**—यह मालवा देश के राजा शुक्रध्वज की रानी थी इसने महात्माओं के सत्संग से उत्तम विद्या को प्राप्त कर अपने पति को भी सच्चा त्यागी बनाया उसका कथन था कि राज्य तथा ऐश्वर्य का त्याग, त्याग नहीं कहाता, किन्तु अभिमान आदि दुर्गुणों को छोड़ने से ही मनुष्य संसार में यश, सुख और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अहिल्याबाई—इसका जन्म सेंधिया कुल में सन् १७१५ में हुआ था। इसका विवाह मल्हाराव के पुत्र खांडेराव के साथ हुआ। इनके मालीराव नामक पुत्र और मच्छाबाई नामक पुत्री उत्पन्न होने के पीछे ही खांडेराव का स्वर्गवास हो गया अर्थात् अहिल्याबाई १८ वर्ष की आयु में विधवा होगई, उस समय उसने सांसारिक सुखों को छोड़ साधारण रीति पर सादे पहनावे में रह पुत्रको गद्दी पर बिठा सब काम काज अपने आप करना आरम्भ किया। दैववश गद्दी पर बैठने के ९ मास पश्चात् ही पुत्र का भी देहान्त होगया। बाई जी ने धीरज धार सब कार्य संभाला परन्तु राघोजी ने अहिल्या का राज्य ले लेने की इच्छा से उस पर चढ़ाई करदी। तब उनके साथी सेंधिया और पेशवा ने राघो की सहायता देने को मने कर दिया। इधर बाईजी स्वयं संग्राम भूमिमें पदार्पण कर राघोजी को हरा सन् १७६६ में गद्दी पर बैठी। आपने पहिले दिन जो कुछ कोष में था पुण्य कर दिया। बाईजी की सहनशीलता, उदारता, न्याय परता तथा धार्मिक व्यवहार से निकटवर्ती राजा एवं प्रजा बहुत ही प्रसन्न थी। बाईजी के प्रतिनिधि पूना, हैदराबाद, श्रीरङ्गपट्टन, नागपुर और लखनऊ आदि में रहते थे। बाई जी के समय में राना उदयपुर को छोड़ अन्य किसी ने चढ़ाई नहीं की परन्तु बाईजी की वीरता के सन्मुख उनको भी सिर झुकाना पड़ा। इन्होंने कितने ही



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गढ़, कोट, धर्मशालायें और मन्दिर बनवाये, मार्गों पर अनेकों पक्के कुएँ खुदवाये, बड़े २ तीर्थों पर सदावर्त जारी किये। छपरा के बाईं ओर 'इन्दौर' नामक नगर इन्होंने बसाया। बाईजी प्रातःकाल उठ प्रथम १ घंटा पूजा करतीं नित्यप्रति हरि कथा भी सुनतीं और सुपात्रों को दान देकर भोजन करती थीं। बाई जी सायंकाल को पूजाकर भोजन के पश्चात् भी राज कार्य कर शयन करतीं। त्यौहारों पर उत्तम बढ़िया पकवान बनवाकर दीनों को खिलातीं। ग्रीष्म ऋतु में जब मालवे में जल सूख जाता तब वह प्याऊ लगवा कर पानी पिलाने का प्रबन्ध करतीं, जाड़ों में वस्त्र बांटतीं अर्थात् परोपकारी कार्यों में राज्य के कोष को व्यय करती थीं। वृद्धावस्था में बाईजी की इकलौती पुत्री विधवा होने पर वह पति के साथ जलने को तय्यार होगई, बाई जी ने बहुत समझाया कि बेटी! केवल तू ही बुढ़ापे में मेरा एक सहारा है परन्तु उसने एक न मानी और पति के साथ सती होगई। इस दुःख से बाई जी अन्तकाल तक दुःखी रहीं। सन् १७७५ में ६० वर्ष की आयु में बाईजी का स्वर्गवास हो गया। इनके विषय में मलकम साहब ने लिखा है कि बाईजी बड़ी गम्भीर, सदाचारिणी, संसारिक विषयों से उदासीन तथा अपने धर्मकी पक्की होने पर भी अन्य मतवालों को तुच्छ नहीं जानती थीं। प्रजा के पालन और सबकी आत्माओं को संतोष दिलाने के अतिरिक्त और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कोई चिन्ता ही न रखती थीं। उनको विनय से भरी वाणी सबको प्रिय लगती थी, ईश्वर के भय का उनके चित्तपर बड़ा ही प्रभाव था। हमारी समझ में यह धर्मानुरागी राजाओं में परम शिरोमणि रानी हो गई है जिसका निर्मल यश सदा संसार में बना रहेगा।

गङ्गादेवी—विद्यादि गुणों में निपुण धर्म की मूर्ति थी पितामह भीष्म आपके एक मात्र पुत्र थे लेकिन एकही संतान को आपने कितना योग्य बनाया था वह किसी से छिपा नहीं है। तत्कालीन समय के विद्वानों और वीरों एवं राजनीतिज्ञों में वह एक ही थे। महाभारत में आपने सबसे अधिक सेना नायकत्व किया और घायल होने पर शर शैय्या पर लेटे २ भी कृष्ण तथा युधिष्ठिरादि को धर्म का उपदेश दिया जो महाभारत में शान्तिपर्व के नामसे प्रसिद्ध है। पितामह की ऐसी अद्भुत शक्ति और प्रखर धारणा तथा उच्चज्ञान को देख युधिष्ठिर महाराज ने भी कृष्ण से इसका कारण पूछा, तब प्रत्युत्तर में श्री कृष्ण महाराज ने कहा कि "इसका मूल कारण गंगादेवी का पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण कर वैदिक रीति से गर्भाधान संस्कार करने का है" जैसा कि—

यं गङ्गा गर्भविधना धारयामास सुव्रता।

क्या वर्तमान में अशिक्षता स्त्रियां ऐसी धार्मिक संतान उत्पन्न कर सकती हैं? क्या यह ब्रह्मचर्य के महात्म को जानती हैं?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**गुरुगोबिन्दसिंह जी की स्त्री**—गुरु गोविन्दसिंह जी की स्त्री अपने दोनों पुत्रों समेत संग्राम से पृथक् हो रसोइया के साथ चलदी। मार्ग में एक स्थान पर ठहरे थे कि उसके बटुए में जो मुहरें आदि थीं जाती रहीं। माता जी ने उस ब्राह्मण से कहा कि यहां तो तुम्हारे सिवाय कोई नहीं आया, देखो आपत्ति में आपत्ति आती है, भला राज्य गया, स्वामी से बिछोह हुआ अब मार्ग का तोषा भी जाता रहा। ब्राह्मण देवता कि जिन्होंने बहुत काल तक गुरुजी का माल खाकर अपना पालन पोषण किया था और लोभ में आकर माताजी का माल उड़ाया था, कुछ न ध्यान कर पापी मन से माता जी से कहा तुम मुझको चोर बनाती हो यह मेरे छिपाने का फल देती हो। अब मैं बादशाह को सूचना देता हूँ तब तुम्हारी चोरी का वृत्तांत तुमको विदित हो जायगा। माता उसकी विनती करने लगी, परन्तु यह पाषाण हृदय कब मानता है। उसने बादशाह को खबर दी उनके दोनों पुत्र शाही दरबार में पकड़े गये। बादशाह ने उनसे कहा कि दोनों मुसलमान हो जाओ तुमको हम बड़ी पदवी देंगे। जब उन दोनों ने इन्कार किया तो बादशाह ने कहा तुम अब भी सोचलो और मुसलमान हो जाओ वरना दीवार में चुनवा दिये जाओगे।

वह धार्मिक पुत्र जिन्होंने माता के गर्भ से ही धार्मिक शिक्षा पाई थी, जिसने वीरता का यथावत फ़ोटो उनके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कोमल हृदयों पर पूर्ण रीति से खींच दिया था, दीवार में चुना जाना स्वीकार किया। बादशाह और वज़ीरों ने बहुत भांति समझाया, लालच दिया, भय भी दिखलाया परन्तु वह जो अपने दो बड़े भाइयों का धर्म पर बलिदान होना सुन चुके थे धर्म को त्याग सांसारिक पदार्थों में फंसने वाले न थे। अन्त को दीवार में चुन दिये गये। सहस्रों मनुष्य इस कौतुक को देख रहे थे अनेकों मनुष्य आंखों से आंसुओं की धारा बहाते थे। जब यह भयानक समाचार माता पिता को पहुंचे जो पृथक् २ स्थानों पर थे तो माता जी ने तो तुरन्त मिठाई बांटी और कहा कि मैं आज कोखवती हुई। वह समझतीं थी कि यदि पुत्र हो तो धर्मात्मा हो नहीं तो बांझ रहना भला क्योंकि एक चंद्रमा सम्पूर्ण अन्धकार को दूर कर देता है और सहस्रों तारों से कुछ नहीं होता। पिता ने उसको सुनकर नक्कारे बजवाये और कहा कि आज गोविंदसिंह यथार्थ में पुत्र वाला हुआ।

**मैत्रेयी**—इसका विवाह याज्ञवल्क्य ऋषि से हुआ था। महात्मा जी ने जब संसार छोड़ने का विचार किया तो प्रथम मैत्रेयी जी से कहा है कि यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मेरा विचार बानप्रस्थ आश्रम में जाने का है और मेरा जितना धनादि पदार्थ है उसको बांट लेना। मैत्रेयी जी ने उत्तर में निवेदन किया कि यदि आप मुझको सम्पूर्ण पृथ्वी, रुपये और मुहरों से पूरित कर दें, तो क्या मैं अमर हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाऊँगी ? तब याज्ञवल्य जी ने कहा कि धन सम्पत्ति से कोई अमर नहीं हो सकता, हां धन से तुम अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सकती हो। मैत्रेयी जी ने कहा कि ऐसा धन मुझको नहीं चाहिये, मुझे उस सम्पत्ति को दीजिये जिसके लिये आप हम दोनों को छोड़ कर प्रसन्नता पूर्वक बन जाने को उद्यत हुए हो। ऋषि मैत्रेयी के वचनों को सुन अत्यन्त चकित हो उसको सम्मुख बिठाकर इस प्रकार मुक्ति का मार्ग समझाने लगे कि मनुष्य जब सांसारिक नाशवान् पदार्थों को मन से त्याग केवल अद्वितीय परमेश्वर में ध्यान लगाता है तब उसको यथार्थ कल्याण अर्थात् मुक्ति प्राप्त होती है जिसके लिये ज्ञान की परम आवश्यकता है जो ब्रह्मविद्या से मिलता है। तब मैत्रेयी जी अपने पति के साथ ही वानप्रस्थ को धारण कर मुक्ति की प्राप्ति के अर्थ बन को चली गईं।

**अनुसुइया**—यह महात्मा अत्रि मुनि की स्त्री थी जो अपने पति के साथ बन में रहती थी। जब सीता रामचन्द्र महाराज के साथ बन को गई थीं उस समय इन्होंने सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश किया था, "शील रहित, कामी, क्रोधी, निर्धन, क्रूर आदि अवगुणों से युक्त भी आर्य स्वभाव स्त्री पति को ही देवता जानती है। हे सीता! हमारे विचार में पति से अधिक कोई बन्धु स्त्रियों का नहीं क्योंकि अन्य भाई बन्धु सर्वत्र सुख नहीं दे सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल यह शक्ति पति ही में है जो तपस्या की भांति सर्वत्र सुख दे सकता है। जो स्त्रियां काम के वशीभूत हो रही हैं वे अपने पति की आप स्वामिनी बनी हैं, उन दुष्टा स्त्रियों को गुण दोष नहीं जान पड़ते कि हमको क्या करना चाहिये। ऐसी कामनियों को संसार में अपयश और परलोक में नरक होता है। जो तुम्हारे समान पतिव्रत के गुणों से भरीपुरी परलोक की गति को जानती हैं वे पुण्यवती की भांति छल रहित सब प्रकार से प्रति समय पतिदेव की सेवा कर यश तथा स्वर्ग प्राप्त करती हैं।"

यशोधरा—यह महात्मा गौतम की स्त्री थी। जब गौतम ने घर छोड़ कर संन्यास धारण किया तो वह घर से बिना बात चीत के ही चले गये थे यशोधरा सोती थी। एक दो दिन तो किसी को ज्ञात न हुआ जब फिर पता लगा तो उस समय घर और राज्यों में रोना पड़ गया। पिता पुत्र के वियोग में मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े परन्तु यशोधरा ने धैर्य को न छोड़ा। समाचार पाते ही उसने सांसारिक सुख त्याग दिये, भूषणादि सब बांट दिये, पठन पाठन ध्यान और भक्ति में समय व्यतीत करने लगी। आठ वर्ष पीछे जब गौतम प्रचार करते हुए अपने नगर कपिलवस्तु में आये और पिता को समाचार मिला तो वह वहां गये तब प्रथम उसको साधु वेष में देख कर हँसे और फिर रोये। हँसे तो इस लिये कि उसका पुत्र पवित्रता के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार से जगत् का उद्धार कर रहा है, रोने का कारण यह था कि राजकुमार ने संन्यास धारण कर लिया है। कुछ देर बात चीत के पीछे राजा ने गौतम से कहा कि राजमन्दिर को चलो और एक समय का भोजन वहीं खाओ। बुद्ध स्वीकार कर दूसरे दिन साथियों समेत राजमन्दिर में गये। सब सम्बन्धी उनसे मिलने और दर्शनार्थ वहां आये परन्तु यशोधरा न आई। तब बुद्ध के पिता ने कहला भेजा कि तुम भी पति के दर्शन कर जाओ, यशोधरा ने उत्तर में कहला भेजा कि धर्म शास्त्र में लिखा है कि पति स्त्रियों का सत्कार करें, यदि मेरे पति के मन में आदर है तो स्वयं वह मेरे मिलने के लिये आवेंगे मैं नहीं जाऊँगी। बुद्ध को जब यशोधरा के उत्तर का पता लगा तब वह उसी काल अपनी पत्नी के भवन को पधारे। यशोधरा बैठी हुई थी सिर के बाल मुड़े हुये थे। बुद्धको देखते ही उसका मन भर आया और रुदन करने लगी। फिर यह समझ कि उसका पति अब सन्यासी बन गया है उसके साथ अब पति पत्नी का भाव नहीं रह सकता तुरत धैर्य धारण कर श्रद्धा के साथ बुद्ध के चरणों पर शीस धर कर मन को ठण्डा किया। उस समय बुद्ध के ससुर भी पास खड़े थे। बुद्ध से बोले कि हे पुत्र! तुम नहीं जानते कि इसका तुम्हारे साथ कितना प्रेम है। ज्योंही इसने सुनाकि तुमने शिर मुंडवा लिया इसने भी वैसाही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। जब इसने सुना कि तुमने सुगंधित पदार्थ और रेशमी वस्त्र त्याग दिये तो इसने भी भूषणादि दान कर दिये अब इसको यह खबर मिली कि तुमने सोने चांदी के पात्र त्याग दिये तो यह भी उसी काल से पत्तल में खाने लगी। तब बुद्ध ने यशोधरा को उपदेश किया कि ऐ धर्मात्मा यशोधरा ! मैंने जो धर्मलाभ किया है, यह तुम्हारे ही धर्म प्रभाव का फल है। तुम्हारी आत्मा पवित्र है, अब तुम धर्म प्रचार से संसार का कल्याण करो। यह सुन यशोधरा ने भी संन्यास ले लिया।

**राजकुमारी संघमित्रा**—लगभग दो हज़ार वर्ष पहिले भारत में सम्राट अशोक का राज्य था। संघमित्रा इन्हीं दानवीर दयालु और धर्मात्मा की राजकुमारी थी। अशोक जैसे धर्मशील पिता के साथ रहने से उसकी वृत्तियां बड़ी पवित्र हो गई थीं जैसे २ संघमित्रा की अवस्था बढ़ती गई वैसे २ उसकी धार्मिक श्रद्धा भी बढ़ती गई और इस व्रत की सफलता में संघमित्रा ने विवाह न कर आयुपर्यंत ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया तथा पिता की आज्ञा से सीलोन निवासी स्त्रियों को बौद्ध धर्मावलम्बिनी बनाने का उसने निश्चय किया। मगध देश से सीलोन सैकड़ों मील की दूरी पर था और आज कलकी भांति रेलगाड़ी आदि न थी। अतः धर्म पर न्यौछावर होने वाली राजकुमारी ने राजमहल के सुखों को छोड़ कोमलाङ्गी होने पर भी इतनी दूर की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यात्रा पैदल ही की। अभिमान उसे छू तक नहीं गया था वह अमीर ग़रीब सब से मिलती। सब पर समान दया दृष्टि रखती तथा सभी से मधुर भाषण करती थी। उसका निर्दोष व्यवहार शांतवृत्ति और दृढ़ धार्मिक श्रद्धा का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ता था लोगों की कल्याण कामना के लिये बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये वह सीलोन में बहुत समय तक घोर परिश्रम करती रही। लंकाकी स्त्रियों पर भी उसके उपदेश का बड़ा ही प्रभाव पड़ा शीघ्र ही वहां की रानी अनुजा और अनेक प्रतिष्ठित महिलायें बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गई। लंका की बौद्धजनता आज भी संघमित्रा के सतत परिश्रम की साक्षी दे रही है। इस देवी ने सेवा धर्म और कौमारव्रत के साथ ही संन्यासव्रत धारण कर लिया। इस उदाहरण से यह भी विदित होता है कि भारतीय महिलायें कर्मवीर सती एवं देश प्रेमी ही नहीं किन्तु धर्म से हार्दिक प्रेम करने वाली, त्यागी और उपदेशिकायें भी होती थीं।

**क़ासिम बाज़ार की महाराणी स्वर्णमयी**—इनका जन्म सन् १८२७ में बर्दवान के ज़िले भटकोल नामी ग्राम में तथा सन् १८३८ में राजा कृष्णनाथ रायबहादुर के साथ आपका विवाह हुआ था। जब १८४४ में इनके पति आत्मघात कर मर गये तब आपने बड़ी धैर्यता से राज्यकार्य किया। अन्य गुणों के उपरान्त एक गुण इनमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बहुत बड़ा यह था कि जितना धन आप के पास आता था उसमें से क़रीब क़रीब आधे के और बहुतसा अपने स्वकोष में से लेकर दीनों को देती थीं, देवालय बनवातीं, यात्रियों की थकावट मिटाने के लिये बावड़ी सहित स्वच्छ मीठे ठण्डे जल के कुए और धूप, आंधी, मेह इत्यादि आपत्तियों में शरण लेने के लिये धर्मशालाएं बनवातीं। जब कभी देश में अकाल पड़ता तब पूर्ण रीति से सहायता करती थीं। उनके पुण्य जनक सुन्दर कामों को देखकर सरकार ने १४ अगस्त सन् १८७२ में उन्हें महारानी की पदवी प्रदान की और १३ अक्टूबर को क़ासिम बाजार राजबाड़ी में दरबार करके ई० डब्लू० मोलोनी साहब कमिश्नर राजशाहीने अपने हाथ से सनद दी। सरकार ने इन श्रीमती के दिव्यगुणों की प्रतिष्ठा यहां ही तक नहीं की, वरन् १२ मार्च सन् १८७५ को साधारण नियमों के विरुद्ध महारानी को लिखा कि जिस कुटम्बीय पुत्र को आप गोद लेंगी वह महाराज कहा जायगा! अपनी परमोदारता में वह इङ्गलैंड देशकी मिसबरहिट कोएट्स के समान कही जाती हैं। सन् १८७० के अकाल पीड़ितों की सहायता करने पर सरकार ने उनकी यह प्रतिष्ठा की। जनवरी सन् १८७८ में (Crown of India) भारतवर्ष की मुकुट पदवी से भूषित करने के लिये बंगाल देश में यही योग्य चुनी गई पीकाक साहब कमिश्नर ने क़ासिम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बाज़ार में दरबार करके राज राजेश्वरी का आज्ञापत्र और तमग़ा महारानी को दिया।

---

# अर्वाचीनकाल की देवियां

**माता काहनदेवी**—यह लाला देवराज की माता थीं, इनमें धर्मभाव, सहनशीलता, सत्यव्रता मधुरवाणी और गृहस्थी मर्यादापूर्वक चलाने इत्यादि ऐसे गुण थे जिनकी सबही प्रशंसा करते हैं। कन्या महाविद्यालय जालन्धर में जो कुछ उन्नति हो रही है उसका विशेष कारण इन्हीं का उत्साह था। आश्रमवासिनी कन्याओं से पुत्रिवत् प्रेम रखती थीं।

**वीर विदुषी देवी जगरानी**—आपका जन्म ४ जनवरी सन् १८९० ई० में बिहार प्रांतर्गत शाहाबाद ज़िले के सखरा नामक ग्राम में श्री बाबू रामनारायण जी के गृह में श्रीमती बचनकुंवरजी की बोरमती कोख में हुआ। आप बाल्यावस्था से ही होनहार सुकुमारी थीं। प्रातःकाल संध्या तथा धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना आपका नित्य कर्म था। साउथ अफ़्रीका के प्रसिद्ध नगर दर्बन में मातृ भाषा का आपने खूब प्रचार किया अनेकों बालक बालिकाओं को वैदिक धर्म की शिक्षा दी। १९१३ ई० में होने वाले सत्याग्रह में भाग लेने के कारण एक साल के पुत्र को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदी में लिए हुए तीन मास जेल महातीर्थ की यात्रा की। देव नागरी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी का भी अच्छा ज्ञान था। आप से साहित्य प्रचार की बड़ी आशा थी, परन्तु अप्रेल सन् १९२२ ई० में आप की एकाएक मृत्यु हो गई। आपके पतिदेव श्रीयुत् पं० भवानीदयाल जी ने आपके स्मारक में एक प्रेस खोला है। जिसमें "हिन्दी" नामक समाचारपत्र मासिक रूप में प्रकाशित होता है। देवी जी ने १२ एवं ४ साल के दो पुत्र रत्नों को छोड़ा है परमात्मा उन्हें चिरायु करे।

**श्रीमती महादेवी**—आपका जन्म १८७४ ई० में पटना नगर के प्रसिद्ध रायसाहब बाबू सोहनलाल जी भटनागर के गृह में हुआ। अपने माता पिता की यह तीसरी संतान थीं। उन दिनों में कन्या पाठशालाओं के न होने से देवी जी की शिक्षा का प्रबन्ध गृह पर ही किया गया कुछ दिनों में आपने अंग्रेज़ी की ऐन्ट्रेंस की परीक्षा दी। आपका विवाह मेरठ निवासी बाबू ज्योतिस्वरूप जी वकील के साथ हुआ। बाबू जी ने देहरादून में वकालत की। आप अपने उच्च विचार, आचार, व्यवहारों तथा सहनशीलता, उदारता एवं नम्रतादि गुणों से सबकी प्यारी थीं। विद्वानों एवं अतिथियों की सेवा करना आप अपना धर्म समझती थीं। आपके केवल एक कन्या उत्पन्न हुई जिसको आपने उच्च शिक्षा के लिये इङ्गलैंड भेजा परन्तु दुर्भाग्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वश क्षयीरोग से पुत्री की मृत्यु होगई। आपने अपनी डेढ़ लाख की सम्पत्ति से देहरादून में महादेवी पाठशाला खोली जिसमें आपने जीवन पर्य्यन्त उच्च कक्षाओं को धर्मशिक्षा संस्कृत आदि पढ़ाई और अवैतनिक मुख्याधिष्ठात्री का कार्य बड़े परिश्रम से किया। आप कन्याओं की शिक्षा और श्रेष्ठ जीवनादर्श पर विशेष ध्यान रखती थीं। उक्त संस्था में मैट्रिक परीक्षा तक की पढ़ाई होती है। आपके अनेक गुणों से प्रसन्न होकर सरकार ने आपको क़ैसरहिंद का स्वर्णपदक दिया था।

**श्रीमती सुजाता बसु**—यह चौबीस परगना प्रान्त निवासी श्रीयुत शशिभूषण बसु की कन्या हैं और आपने लीड्स विश्वविद्यालय से मास्टर आफ़ एजुकेशन की उपाधि प्राप्त की है तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए० पास कर आप विलायत हो आई हैं वहां आपने भारतीय शिक्षा पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव नामक एक गवेषणा पूर्ण निबन्ध लिखा है।

**श्रीमती श्याम कुमारी नेहरू**—आप प्रयाग के पं० श्यामलाल जी की सुपुत्री हैं। आपने सन् १९२७ में एम० ए०, एल एल० बी० की सीनियर परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। आज तक आपको सात पदक मिल चुके हैं। आप अब इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत कर रही हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**डा० प्रेमप्यारीबाई वनी, एल० एम० पी०**—आगरे के प्रसिद्ध माथुर कायस्थ वंश में आप का जन्म हुआ। आप के पिता आगरे के जजेज़ कोर्ट में सरिश्तेदार थे। १३ वर्ष की अवस्था तक आपको घर पर मामूली हिन्दी और उर्दू की शिक्षा दी गई। १४ वर्ष की अवस्था में एक सुशिक्षत एवं सुयोग्य नवयुवक के साथ आप का विवाह हुआ पर दुर्भाग्य वश तीन साल के बादही आपको वैधव्य का कष्ट सहन करना पड़ा। १८ वर्ष की अवस्था में आपने अंग्रेजी पढ़ना प्रारम्भ किया आपकी बुद्धि इतनी तेज़ थी कि पांच ही वर्षों में आपने मैट्रीक्यूलेशन की पढ़ाई समाप्त करली और इसके पश्चात् आप डाक्टरी पढ़ने लगीं सन् १९२१ में आपने बड़ी योग्यता पूर्वक डाक्टरी की परीक्षा भी पास करली। बरेली के सरकारी अस्पताल और गया में कुछ दिनों तक चिकित्सा कार्य करने के बाद आप जयपुर के मेयोहास्पिटल में चलीं गईं तब से वहीं पर हेड लेडी डाक्टर का कार्य सम्पादन कर रही हैं आपके हृदय में स्त्री जाति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और अनन्त सेवा भाव ओत प्रोत है आप राजस्थान की अपढ़ और गँवार स्त्रियों से इतने प्रेम से मिलती हैं कि लोक प्रचलित अनियमित खान पान और रहन सहन के सुधारने के सम्बन्ध में आप के सरल और मधुर उपदेश देहाती स्त्रियों पर जादू की तरह काम कर जाते हैं स्त्री जाति की निस्वार्थ सेवा करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में आप अपनी विद्या और बुद्धि का जो सदुपयोग कर रही हैं उससे हमारी शिक्षित बहनों को उपदेश ग्रहण करना चाहिये।

**डाक्टर सुशीला जागीरदार**—आप राजस्थानकी ४८ लाख स्त्रियों में सर्व प्रथम महिला डाक्टर हैं। सन् १९२५ ईस्वी में बम्बई के कालेज आफ फिजिशियन्स एण्ड सरजन्स से आपने एल० सी० सी० और एस० की उपाधि परीक्षा पास की उसके बाद दो साल तक अजमेर में चिकित्सा कार्य करने के अनन्तर आप उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये यूरोप चली गईं। फ्रांस-इटली स्विज़रलैण्ड आदि देशों में भ्रमण करके आपने वहां के बड़े २ चिकित्सालयों का अनुभव प्राप्त किया। हालही में आयर्लैण्ड के संसार प्रसिद्ध स्त्री चिकित्सालय से आपने बड़ी योग्यता पूर्वक एल० एम० की परीक्षा पास की है इस समय इङ्गलैण्ड के विख्यात अस्पताल में आप बालकों के रोगों का विशेष अध्ययन कर रही हैं।

---

# अन्य देशों में सुशिक्षा

## संयुक्त राज्य अमरीका

यह वह देश है जहां के ज्ञान से आज सारा संसार चकित हो रहा है। कारण वहां के बालकों की मानसिक, नैतिक और शारीरिक शक्तियों को पूर्ण रूप से विकाश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करने के लिये विविध उपाय किये जाते हैं। स्वास्थ्यरक्षा, स्वच्छता, व्यायाम अपनी शक्ति पर भरोसा और हर एक काम के करने का साहस करने की शिक्षा बच्चों को इस प्रकार दी जाती है कि यदि बालक को कड़वी दवा देनी हो तो उससे कहा जाता है "औषधि और तुम में देखें किसकी जीति होती है ? तुम इस दवा को जीत कर पी सकते हो और यदि तुम नहीं पिओगे तो यह दवा तुम से जीत जायेगी," यदि बालक अधिक मिठाई मांगता हो तो उससे कहती हैं "तुमको आज मिठाई बहुत मिल चुकी है यदि और चाहते हो तो और भी मिल सकती है पर यदि अधिक खाकर कल पछताना हो तो भले ही और लेलो;" किसी से डर जाने पर उसे साहस इस प्रकार दिलाया जाता है "वह लड़का केवल तुमको डराता है तुमको उससे कभी नहीं डरना चाहिये यदि वह तुम्हें मारने आवे तो तुम भी उसे मारो तुम तो उससे अधिक बलवान हो। इस प्रकार बालकों को सुचरित्र, बलवान् और आदर्शवान माता ही बना देती हैं। विद्यालयों में केवल बच्चों को मनुष्यत्व की, नेतृत्व की, मिलनसार बनने की तथा अपने प्रश्नों को आप हल करने की शिक्षाएँ देने की आवश्यकता होती है। बच्चों की प्रत्येक विषय में सलाह लीजाती है, इससे उनकी विचार शक्ति बढ़ती है। स्वावलम्बी बनने और धनोपर्जन करने के लिये विशेषरूप



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



से उत्साहित किये जाते हैं। अमेरिका की माताओं ने अपनी संतान की शिक्षा के लिए निम्नलिखित सात बातें निश्चय करली हैं जिन से यदि उनको आदर्श मातायें कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

१—अमेरिका की मातायें अपनी सन्तान की क्रीड़ा, अध्ययन आदि में सङ्गिन बनती हैं न कि शापिका।

२—बालक किसी समय धमकाये नहीं जाते। सब विषयों में आत्मविकास के लिये मौक़ा दिया जाता है।

३—बालकों को देश भक्त होना, सत्य बोलना, आत्म सन्मान रखना, साहसी बनना, दूसरों के अधिकारों का मान करना और धन का मूल्य समझने की शिक्षा दी जाती है।

४—कष्ट में अत्यन्त हताश न होना और गिर पड़ने से चोट लग जाने पर हँसते रहने की शिक्षा।

५—घर के बाहर संसार की बातें जानना, प्रकृति के सौंदर्य का ज्ञान, पशु, पक्षी, पुष्पलता, वृक्ष आदि से परिचय, ऐतिहासिक गाथाओं का पाठ इतिहास और साहित्य का ज्ञान।

६—शरीर को पुष्ट और बलवान बनाने वाले खेलों का जानना, जैसे तैरना, घोड़े पर चढ़ना, तीर कमान और बन्दूक़ चलाना, मल्लयुद्ध और गेंद का खेल आदि।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



७—छुट्टी के समय खूब जी भरकर खेलना, धूम मचाना, कूदना, नाचना परन्तु काम के समय काम करना नियम उल्लंघन के दण्ड को सहर्ष स्वीकार करना, न्याय-परता और पितृ मातृ प्रेम।

इस प्रकार अमेरिका के बालक घर ही पर स्कूलों से कहीं अधिक कई प्रकार की शिक्षा पालेते हैं और अपनी मानसिक, नैतिक और शारीरिकोन्नति कर संसार में कीर्ति पाते हैं। इन्हीं गुणों से उनकी शोभा होती है न कि आभूषणों से। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने बहुत सोच विचार कर ऐसे खेल निकाले हैं जिनसे बालक आप ही आप, व्याकरण, भूगोल, ज्योतिष, शास्त्र, रेखागणित, अंकगणित आदि सीख जाते हैं। बालक बालिकाओं को अपनी देशभक्ति और उसके गौरव को जानने के लिये देश का इतिहास और देश के वीरों की कहानियां पढ़ाई जाती हैं। उनको जातीय उत्सवों में भाग लेने के लिये उत्साहित किया जाता है, जिसका फल यह होता है कि बाल्यकाल ही से वे देश प्रेम की शिक्षा पाकर बड़े होने पर अमेरिका का प्रत्येक स्त्री पुरुष अपने देशका स्वार्थ पहिले देखता है। आवश्यकता पड़ने पर वह तन मन और धन अर्पित कर देता है। इस समय अमेरिका में अनेकान महिलायें डाक्टरी का काम करती हैं, छापेखानों और अनेकों सुसाइटियों में सहस्रों की संख्या में स्त्रियां काम कर पुरुषों के बराबर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वेतन पाती हैं, इस समय दो महिलायें गवर्नरा भी हो चुकी हैं, बहुत सी स्त्रियां राष्ट्रीय व्यवस्थापिका सभा की सदस्या हैं और वकालत के पेशे में बहुत सी स्त्रियां बढ़ी चढ़ी हैं।

## जर्मनी

जर्मनी के भिन्न २ विश्वविद्यालयों में हज़ारों छात्रायें दर्शन, प्राकृतिक विज्ञान, कानून, अर्थनीति, डाक्टरी, थियोलौजी आदि विषयों का अध्ययन कर रही हैं। लाखों स्त्रियां भिन्न २ द्रव्योपार्जन के व्यवसायों में पुरुषों की भांति काम कर रही हैं। उनको पार्लीमेंट में वोट देने का भी अधिकार है। अकेले वर्लिन में १५० के लगभग महिलाओं की परिषदें हैं जिनमें सामयिक प्रश्नों पर विचार होता रहता है।

## बेलजियम

गत योरोपियन युद्ध के पश्चात् पश्चिमी एवं अमरीका आदि देशों में अधिकाधिक तलाक़ आदि के कारण यह भावना उत्पन्न होगई है कि वे पत्नित्व व मातृत्व और बच्चों को सुदृढ़ बनाने के लिये उचित साधनों प्रबध करें और पाठ्य-क्रम इस प्रकार रक्खे, जो कन्याओं के लिये व्यवहारिक दृष्टि से अधिक उपयोगी हो।

उपरोक्त धारणा से प्रेरित होकर बेलजियम ने वैज्ञानिक ढङ्ग से उपरोक्त प्रकार की शिक्षाओं के देने का प्रबन्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहरों से दूर मैदानों में किया है जिनका सारा खर्चा सरकार देती है। निर्बल बच्चों को बलवान बनाने और भावि सन्तान को निर्बलता को दूर करने के लिये प्रीवेन्टोरियम् खोले हैं जिसमें समाज के सभी श्रेणियों के ५–५॥ से लेकर १३ की आयु तक के बच्चे समस्त बेलजियम से स्कूल के डाक्टरों द्वारा भेजे जाते हैं। यहां का अधिकांश प्रबन्ध और कार्य्य स्त्रियों द्वारा ही सम्पन्न होता है। एक ही आयु के बीस बच्चों की संरक्षिक एक महिला होती है जो उनकी प्रत्येक प्रकार की देख भाल डाक्टर की हिदायत के अनुसार करती है। यहां पर रहने वाले प्रत्येक बालक बालिका को ६॥ बजे उठना पड़ता है उसके पश्चात् स्वांस सम्बन्धी व्यायाम करने पड़ते हैं। कलेऊ करने के पीछे बालक ८ बजे पढ़ने के लिये शिक्षा विभाग में जाते हैं जो पौने दस बजे समाप्त होजाती है लेकिन इस शिक्षा का अधिकांश भाग विविध प्रकार के खिलौना द्वारा सम्पन्न होता है। शिक्षा से छुट्टी पाकर बच्चे खेल के मैदान में जाकर अपनी रुचि अनुसार खेलते हैं। इस बीच में उन्हें एक २ प्याला दूध का दिया जाता है।

शारीरिक कसरत के समाप्त होने पर बच्चे थोड़ा आराम कर हाथ मुँह धो अपने कपड़े ब्रुश से साफ़ करते हैं। ठीक दुपहर को उत्तम पौष्टिक शीघ्र पचने वाला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन कर समुद्र के किनारे खेलने चले जाते हैं । जहां से ४ बजे अपने आश्रम को वापिस आजाते हैं। हाथ मुंह धोने के पश्चात् खाना खाकर ५ बजे स्कूल पहुंच जाते हैं। इस समय वहां पर गाना बजाना आदि सीखते हैं और सात बजे भोजन कर रेडियो द्वारा गाना व्याख्यान आदि सुन सो जाते हैं।

इसी प्रकार कन्याओं को गृहस्थ जीवन की शिक्षा देने के लिये शहर से दूर लीकेन में स्कूल खोला गया है। जहां की इमारतें बड़े २ वृक्षों से घिरे मैदान में फैली हैं। यह इमारतें कुछ पत्थर, कुछ ईंट और कुछ लकड़ी की हैं। इमारतों का विभाजन उच्च, मध्यम और साधारण श्रेणी के लिहाज़ से रखा है जिससे लड़कियों को जिस अवस्था में रहना पड़े उसका प्रबन्ध भले प्रकार कर सकें। इस स्कूल की शिक्षा केवल पुस्तकों तक ही परिमित नहीं रहती प्रत्युत उनको हर एक बात व्यवहारिक रूप में करनी पड़ती है जैसे गृह की सफ़ाई, भोजन बनाना और परोसना, कपड़े धोने, तरह तरह के मसालों से अलग २ चीज़ों के धब्बे छुड़ाना और इस्तरी करना, फिर उनको यथा स्थान रखना, नवीन कपड़े सीना, कशीदे काढ़ना, भोजन के बाद बर्तनों को साफ़ करना, बिस्तरे लगाना, घरकी सजावट करना, अचार और मुरब्बा बनाना, गायों का दूध मैशीनों से दुहना और उससे मक्खन, मलाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनीर तैयार करना, गाय और घोड़े तथा मुर्गियों को चारा दाना खिलाना, उनके रहने के स्थानों की सफ़ाई करना, ज़मीन खोदना, घास पात निकालना, पौध लगाना सींचनादि कृषि से सम्बन्ध रखने वाले कार्य भी वैज्ञानिक ढंग से करना, जो बालिका जितनी योग्यता से काम करती है उनको वैसे ही नम्बर दिये जाते हैं। इतना ही नहीं बालिका को बच्चे की माता होकर क्या और किस प्रकार करना चाहिये उसकी शिक्षा देने के लिये अनाथालय से बच्चा लाकर दिया गया है हर एक बालिका को एक महीने के लिये उसकी माता का स्थान ग्रहण करना पड़ता है। शिक्षात्री को अपनी पढ़ाई और नियमित कार्य करने के साथ बच्चे का स्नान, भोजन कराना, कपड़ा पहराना, दवा खिलाना और रोगी होने पर डाक्टर बुलाकर दिखाना, एवं रोगी को प्रत्येक प्रकार की परिचर्या करनादि कार्य्य करने पड़ते हैं—रोगी को किस और कैसा पथ्य बनाकर देना चाहिये। उन्हें भिन्न भिन्न रोगों से पीड़ित रोगों के लिये आहार की वस्तुएं तैयार करना। यह सब छात्रों को अपने हाथों से करना पड़ता है। उनको खाद्य सामग्री को कम से कम दामों खरीदना और व्यर्थ नष्ट न करना और उसका सदोपयोग भी सिखाया जाता है। छात्रों को वस्तुओं के गुणों और प्रभावों को समझाया जाता है और बताया जाता है कि वह शरीर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को कैसे उपयोगी हैं। इस प्रकार उनको स्वास्थ्य रक्षा के आवश्यक प्रत्येक तत्व का भोजन में रखना बताया जाता है। कहने का तात्पर्य्य यह है कि इस स्कूल में पुस्तकों की शिक्षा के साथ गृहस्थी के ज़रूरी कार्य्यों में कोई कार्य ऐसा नहीं छोड़ा गया है जिसकी व्यवहारिक शिक्षा वहां पर न दी जाती हो, प्रत्येक छात्रा गृह विज्ञान को जानने और समझने की चेष्टा करती है। क्योंकि यदि वे मनोविज्ञान से अनभिज्ञ रहीं तो गृहस्थी की गाड़ी चलाने में कठिनता पड़ जायगी—कारण गृहस्थ जीवन में, पारिवारिक नर नारियों और बच्चों को छोड़ और भी बहुत से व्यक्तियों से काम पड़ता है। यदि व्यवहार प्रत्येक की मनोवृत्ति दे अनुकूल होता रहेगा तो दोनों ओर सहूलियत रहेगी।

## श्याम

श्याम में ६० प्रति सैकड़ा विदुषी हैं। फ़ौज में सैकड़ों की संख्या में स्त्रियां ही सिपाहियों का काम करती हैं।

## इंग्लैंड

महाविदुषी राजराजेश्वरी मलिका विक्टोरिया ने किस प्रजावत्सलता, न्यायता और उदारता से ६० वर्ष के लगभग राज्य किया। महारानी कई भाषाओं को अच्छे प्रकार जानती थीं। आपके विद्या प्रचार के कारण ही आज इंग्लैंड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में १८ हज़ार स्त्रियाँ सम्वादपत्रों का ३०० के लगभग साहूकारी, ७३५ दलाली आढ़त और हुंडी का कार्य, ९८५ माल मोल लेकर बेचने का कार्य, २०० के लगभग व्यापारिन, १७५५ क्लर्की का काम, ३६७० नाटक कम्पनियों में और ७०० के लगभग समाचार पत्रों की सम्पादिका का कार्य करती हैं।

## जेनेवा

में अनेक स्त्रियां सुशिक्षिता हैं अभी हाल में वहां की महिलाओं ने बायस्कोप के बुरे चित्र बालकों को न दिखाने का प्रस्ताव पास किया है।

## चीन

में ड्यूं, च्यूं, कू, आदि महिलायें बड़ी विदुषी हैं। स्त्रियों को विदुषी बनाने का बड़ा यत्न करती हैं। दक्षिण चीन की स्त्रियां भी अपना अधिकार पाने के लिये प्राणपण से चेष्टा कर रही हैं।

## टर्की महिलायें

टर्की की महिलायें यद्यपि चिरकाल से परदे में रहती आई हैं किन्तु अब वे परदे से निकल कर समाज के बहुत से कामों का भार ले रही हैं। तुर्की स्त्रियों की प्रधान हितैषिनी श्रीमती हालिडे, अदीबहनूम हैं पाश्चात्य देशों में इन्हें टर्की की 'जोनआफ़यार्क' कहते हैं यह कमाल पाशा के मित्रों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में हैं। राज्य के गम्भीर विषयों में कमाल पाशा इनकी सलाह लेते हैं श्रीमती हनूम भी एक वीर विदुषी महिला हैं।

## मिश्र

में अब स्त्री शिक्षा पर बड़ा ध्यान दिया जाता है।

## रशिया

के राष्ट्र विभाग का संचालन **सिमानोवा** नामक महिला कर रही हैं आपकी आयु ३० वर्ष की है और सरल, सरस भाषण देती हैं।

**मि० एल बाई पालमेन**—यह रूसी महिला हैं आपने स्वदेशीय सरकार के लाभार्थ वायुयान की भांति उपयोगी एक प्रकार की मोटर का आविष्कार किया है। इस मोटर की गति २० घोड़ों के बराबर है। रूसी सरकार ने आपको उचित पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। इस समय आप रूस में इंजिनियर के पद पर नियुक्त हैं।

## जापान

में प्रति सैकड़ा ९९ पढ़ी लिखी हैं, ६० प्रति सैकड़ा ग्रेजुएट हैं, परन्तु जापान की स्त्रियां अपने देश और अपनी मर्यादा तथा रीति रिवाजों को भूली नहीं, क्योंकि यह सब बातें वहां के स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। सच पूछो तो इस देश की प्रतिष्ठा स्त्रियों के हाथ में है और प्रत्येक अव-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर पर उन्होंने अपने देश की सेवा की है। यहां पर शिक्षा अनिवार्य है। रूस जापान युद्ध के समय स्त्रियों ने बहुत कार्य किये। साधारणतया भी घरों में रसोई का काम, होटलों में प्रबन्ध का कार्य, ट्राम चलाना, स्टेशनों पर टिकट बांटना, दूकानदारी और आफ़िसों में भी स्त्रियां ही काम करती हैं। पत्रों का सम्पादन, विद्यालयों में शिक्षा का कार्य, अस्पतालों में चिकित्सा और सेवकाई का भार भी स्त्रियों को सौंपा जाता है।

---

# बिना शिक्षा के हानियां

प्रिय पाठक ! आपको यह भली भांति ज्ञात होगया कि जिस देश में जितनी उच्च शिक्षा होती है उतनी उसी की उन्नति होती है। भारत में ५ फ़ीसदी पुरुष एवं १ फ़ी सदी स्त्रियां शिक्षित हैं और बच्चों की शिक्षा का कितना और कैसा प्रबन्ध है उसके लिये तो पूंछिये ही नहीं, फिर किस प्रकार हमारा अभागा देश दूसरे राष्ट्रों की बराबरी कर सक्ता है ?

प्राचीन समय में पुत्र पुत्रियां समान भाव से अपने २ गुरुकुलों में सबही प्रकार की शिक्षा पाती थीं, उसी समय सब स्त्रियां नानागुणों में प्रवीण होती थीं और उन्हीं गुणों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में से विशेष गुणों के कारण उनके नाम भी अब तक प्रसिद्ध होरहे हैं। जैसे धन संचय करने के कारण लक्ष्मी, विद्योपार्जन से देवी या सरस्वती और गृह दक्षता में चतुर होने से गृहरक्षिणी इत्यादि कहलाती थीं परन्तु वर्तमान में स्त्री शिक्षा के न होने से सौन्दर्य–शील–लज्जा–धर्म–स्वच्छता साधुता–सहनशीलता–बोलने में मधुरता–पतिसेवा तथा पति में प्रेम यह सब बातें जाती रहीं। लक्ष्मी और देवी उनका नाम नाममात्र को लिया जाता है। संतान भी गुणहीन होने लगी। शान्ति स्वप्न में भी दिखाई नहीं देती। आदर सत्कार–गौरव मान यह सब भूल गईं। ऋग्वेद सूक्त ४७ मंत्र ३ में लिखा है कि बिना सुयोग्य स्त्री के सुख नहीं मिलता इसलिये समानाधिकार जान, बुद्धि से विचार कर, वेदों की आज्ञानुसार पुत्री शिक्षा का अधिकता से प्रचार कीजिये तब ही निम्नलिखित कार्य, गृहों में पूर्ण रीति से हो सकते हैं देखिये प्रत्येक गृह में १–संचय। २–आय व्ययका हिसाब। ३–गृह कार्यों में दक्ष होना। ४–स्वच्छता। ५–शिक्षा। ६–शिशुपालन। ७ पति आदि की सेवा। ८–शिशुशिक्षा। ९–एकता का बीज बोना। १०–नम्रता पूर्वक प्रियभाषण करना। ११–आपत्ति के समय धीरज धरना। आदि। वर्तमान समय में विद्या एवं शिक्षा के न होने से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) **संचय**—का तो यह दशा है कि फूटी कौड़ी पास न निकलेगी, यदि मियां दस पैदा कर लावें तो बीबी बारह में आग लगा देती हैं सो भी निकम्मे तथा निठल्ले कार्यों में (२) **आयव्यय का हिसाब** किताब कौन करे जब उनको दस तक की गिनती ही नहीं आती, अक्षर के स्वरूप को ही नहीं जानतीं। (३) **गृह कार्यों में चातुर्य होना** कैसा, वो न तो पाक विद्या को जानती हैं न शिल्प को, भोजनों की कुदशा के कारण नित्य प्रति गृह में रोग ही बने रहते हैं, निर्बलता ही दृष्टि आती है। (४) **स्वच्छता** जीवन के इस मूल पदार्थ से तो अत्यन्त ही अज्ञान हैं। वह सदा मैले कुचैले रहना, मैले कपड़े पहिनना भला जानती हैं, हां सोने चांदी के आभूषणों का लादना ही इनको आता है। **गर्भाधान के विधान** की वह कुछ पर्वाह नहीं करतीं परन्तु इन असमय की घटनाओं का फल यह होता है कि अल्पकाल में दोनों हाड़ की माला बनजाते हैं तथा आयु और बल की समाप्ति हो जाती है। इसके उपरांत लाखों गर्भ पात होते हैं, सैकड़ों स्त्री पुरुष संतान के अर्थ शिर ठोंकते रह जाते हैं, यदि सन्तान होने के उपाय किये जाते हैं तो यह कि धुना, जुलाहे, कोरी, माली, धीमर, काछी, आदि मूर्ख, भूत, भैरव, मियां शेखसद्दी को पुजवाते, उतारे उतरवाते, गंडा तावीज करते हैं जिसके कारण उनके रोग असाध्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होजाते हैं। बहुधा स्त्रियां हट्टे कट्टे सण्डे मुसण्डे नाम के साधु वैरागियों के पास जो गांवों के समीप मढ़ी बना कर रहते हैं, दर्शनों के बहाने आती जाती हैं, फिर उनसे नाना प्रकार के कौतुक भी कराती हैं जिससे और भी अपयश होता अर्थात् दोनों लोक बिगड़ जाते हैं।

(६) **शिशुपालन**—प्रथम तो गर्भाधान ही ने उनको सर्व सुख दे रक्खे हैं कि जिसके कारण न बल रहता न उत्साह, तिस पर उनको बच्चों को दूध पिलाने और नहलाने आदि का कुछ भी ज्ञान नहीं होता वरन् आप भी बिना बिचारे आहार विहार करती रहती हैं, कि जिससे बच्चों को अफरा, जमोघा, सूखा आदि रोग होजाते और अन्त को वह यमपुर चले जाते हैं, और स्वयं उनका बुखार, प्रसूत आदि ऐसे रोग होजाते हैं कि जिनके कारण जन्म भर रोती रहती हैं। फिर वैद्य की दवा कराने में तो पत्थर पड़ते हैं पर गण्डा तावीज़ के अर्थ चुपचाप धन लुटाती हैं। सच तो यह है कि जो बालक इन विपत्तियों से बच भी जाते हैं वे सदा निर्बल रहते हैं क्योंकि प्रथम तो बीज ही निर्बल होता है तिस पर न्यून अवस्था ही से विवाहरूपी बेड़ी डाल दी जाती है। (७) **पति आदि की सेवा** की यह दशा है कि जहां बहू जी ने होश संभाला पति के कान भरने शुरू किये, आप भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सास, ससुर, देवर, जिठानी आदि से तनिक तनिक बात पर ऐसा झुंझलाती हैं कि मानो किसी को कारूं का खज़ाना दे दिया है, वा भूमण्डल का राज्य इन्हीं के आधीन है, वा यह सब इनकी ज़र ख़रीद हैं, नित्यप्रति देवासुर संग्राम मचा रहता है, परस्पर ताली बजा बजा कर ऐसी लड़तीं कि खाना हराम कर देती हैं, अन्त को एक चूल्हे के दो करा कर भी प्रीतम प्यारे से प्रसन्न नहीं, वरन् माता पिता भाई इत्यादि के साथ ऐसी शत्रुता करा देती हैं कि एक दूसरे का मुँह तक भी देखना पसन्द नहीं करता। (८) **शिशु शिक्षा** का क्या कहना है उनको तो विद्यादि कुछ आती ही नहीं जो वह शिक्षा दें या उनको गुणवान और धार्मिक बनावें हां नाना भांति के अवगुणों ( हउआ, लुल्लू ) अंकुर उन बालकों के हृदय में जमा देती हैं कि जिनसे वह डरपोक आदि दुर्गुणों से युक्त हो जीवन पर्य्यंत बड़ी बड़ी हानियां उठाते हैं। (९) **एकता का बीज !** वाह जहां सब कार्य फूट से हो हों वहां एकता का क्या काम ? बहुधा स्त्रियां अपने सुयोग्य पति की जो उनकी सब तरह सेसुध लेता है किंचित् बात पर पगड़ी उतारने को तत्पर होजाती हैं तथा ऐसे कटु बचन सुनाती हैं कि जिनसे उसको सात पीढ़ी तक याद आती है। शरीर क्रोध में भस्म होजाता है, जब एक गृह में एकता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नहीं रहती फिर भला अन्यत्र एकता क्योंकर रहेगी।

**(१०) नम्रता पूर्वक प्रिय भाषण करना**—अजी साहब नम्रता का तत्व तो वे जानती ही नहीं अपनी २ ऐंठ में डेढ़ चावल की जुदा ही खिचड़ी पकाती हैं कोई किसी को नहीं गिनता। घर में बहूजो को अपना ही घमण्ड है, सास जिठानी अपने अपने नशे में चूर सब ऊट पटांग ही हांकतो रहतीं। **आपत्ति के साथ धीरज धरना**—क्या खूब, जब आराम तथा सुख से ही गृह रूपी राज्य का प्रबन्ध नहीं कर सकतीं तो भला आपत्ति में उनका क्या ठीक। ऐसे ऐसे अवसरों पर तो उनकी रही सही बुद्धि भी काफ़ूर होजाती है, हक्का बक्का होकर सारे दिन रोती रहती हैं उस समय अड़ोसी पड़ोसी तथा संबन्धी उसके हितू बन अपना २ मतलब बनाते हैं।

इन सबके उपरांत जब कभी पति आदि परदेश चले जाते हैं, तब वह घूंघटवाली स्त्रियां चिट्ठी पढ़ाने के अर्थ अन्य पुरुषों को बुलातीं या उनके पास आप जाती हैं तो सम्पूर्ण भेद खुल जाते हैं, तिस पर भी बहुधा बातें लज्जा के कारण लिखने से रह जाती हैं और इसके अतिरिक्त ऐसी स्त्रियों के फिर और भी गुल खिलते हैं जिनके तमाशे हम तुम देखते हैं भला बताओ तो सही, मेले तमाशे आदि में यह मूर्खा स्त्रियां क्या क्या लीलायें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रचतीं तथा आभूषणों के अर्थ गृहों में किस प्रकार द्वंद मचातीं कि पृथ्वी को उठा लेती हैं। चाहे एक आने रुपये का सूद दो, चोरी आदि कैसा ही दूषित कर्म करो परन्तु उनको छमछम अवश्य ही कराओ, चाहे रोटी मिले या न मिले, परन्तु उनका फ़ैशन बनाना चाहिये। यों तो हम लोगों में मुसलमानों का कोई पानी नहीं पीता, परन्तु जब कभी बच्चे बीमार होजाते या गर्भिणी स्त्री को किसी तरह की बाधा होजाती है तो उसी समय गृह की स्त्रियां थोड़ा पानी मसजिद में भेज मुल्लाओं से पढ़वा कर पिलाती हैं। २–जीव हिंसा करना हम सब के यहां महा पाप माना गया है परन्तु वह स्त्रियां काली देवी पर बकरा, मसानी पर घैंटा, मीरा पर कलेजी चटाना पाप नहीं समझतीं हैं। ३–बालकों के बुरे नाम रक्खे जाते हैं जिससे बड़े होने पर उनको लाज आने के कारण नाम पलटने पड़ते हैं, बालकों में झूंठ बोलने की बान डालने वाली भी स्त्रियां ही हैं, क्योंकि वह उनको खिलाने के समय कहती हैं कि लल्ला चीजी कौआ ले गया, या यों कहती हैं कि ले जारे कौआ ! ले जारी चिड़िया लेजा ! ऐसा कहकर चीज़ को छिपा देतीं, फिर दे जारे कौआ देजा ! ऐसा कह कर वस्तु को दिखलाती हैं। मान्यवरो ! ऐसे ही वार्तालाप से तरुणाई में मिथ्या बोलने को वे बुरा नहीं समझते। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने बहुधा रीतें ऐसी प्रचलित



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करदी हैं कि जिनसे सभ्य मण्डली के सम्मुख लज्जा आती है यथा—चाक, कुआं, चौराहा, धुरा, बांबी, बरगद, क़बर, कूकर आदि पूजना, मियां मदार की ज़्यारत को जाना, शेख़सद्दों पर चादर चढ़ाना इत्यादि । अस्तुद्रव

यदि आप प्राचीनकाल की भांति श्रीकृष्ण से योगीराज, व्यास से उपदेशक, युधिष्ठिर से सत्यवादी, भीष्मपितामह से जितेन्द्रिय, द्रोणाचार्य से गुरु, कर्ण से दानी, विदुर से विचारशील, रामचन्द्र से आज्ञाकारी, भास्कराचार्य से गणितज्ञ, अर्जुन व भीम से योधा, लक्ष्मण और भरत से भाई इत्यादि धार्मिक गुणों से परिपूर्ण सन्तान उत्पन्न करना चाहते हैं तो महाशयो ! कुन्ती, अनुसुइया, गार्गी, मन्दालसा, कौशिल्या, देवहुती, शिवा, सुलभा, सत्यरूपा आदि की भांति स्त्रियों को वेदादि सत्य विद्याओं से भूषित करो, क्योंकि देव तथा देवियों के ही समागम से देवी देवता उत्पन्न हो सकते हैं, अन्यथा देव और राक्षसी के संयोग से कभी पूर्ण सुयोग सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती। प्राचीनकाल में वेदों की आज्ञानुसार माता पिता अपने पुत्र तथा कन्याओं को अच्छी प्रकार शिक्षा देकर विद्वान् और विदुषी स्त्रियों के समीप बहुत काल तक पढ़वाते थे तब वह कन्यायें और पुत्र सूर्य्य के समान अपने कुल और देश के प्रकाशक होते थे जैसा यजुर्वेद अ० ११ मं० ३६ में लिखा है उसी समय यह भूमि विद्वान् स्त्री पुरुष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रूपी बहुमूल्य रत्नों को उत्पन्न करती थी । हे देश के सुधारने वालो ! हे सन्तानों पर दया करने वालो ! देवताओं के रक्त से उत्पन्न होने वालो ! हे ऋषि सन्तानों ! स्त्री शिक्षा के न होने से नाना प्रकार के दुःख रूपी तप्त कुण्ड में पड़े हुए भुन रहे हो। आओ इस भारतरूपी डूबती नैय्या को स्त्री शिक्षा रूपी बल्ली से पार कर भारत जननी के दुखड़ों को मिटाने के लिये पुत्रियों की शिक्षा विदुषी स्त्रियों से ही कराइये जिससे विद्या की वृद्धि हो । जैसा य० अ० २० मं० ८५ में कहा है—

चोदयत्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् यज्ञेदधे सरस्वती ॥

ऐसा ही ऋग्वेद अ० २ अ० ३ व० २२ मं० १ अ० १२ सू० १६ में कहा है कि जो स्त्री समस्त सांगोपांग वेदों को पढ़ के पढ़ाती है, वही सबकी उन्नति करती है। पुत्रियों की पाठशाला का स्थान जन समुदाय से प्रथक् तथा उसकी दीवारें इतनी ऊँची हों कि कोई जन उचक कर भी न देख सके, और पड़ोस में वेश्या का वास तथा नगर से बहुत मिला न हो परंतु स्थान रमणीक, पवित्र, शुद्ध जलवायु वाला हो। मनु० अ० ४ श्लोक १०७, १०८ में लिखा है कि धर्म की अतिशय इच्छा वालों को नगर ग्राम के समीप, दुर्गन्धित स्थान, मुर्दे गड़ने वाली भूमि, पापी कपटी मनुष्यों के निकट तथा भीड़ भाड़ में पठन पाठन न करना चाहिए। जैसाकि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नित्यानध्याय एव स्याद ग्रामेषुनगरेषुच ।
धर्मणैः पुण्यकामानां पूतिगन्धे च सर्वदा ॥
अन्तर्गतशवेग्रामे वृषलस्य च सन्निधौ ।
अनध्यायारुद्यमाने समवासेजनस्य च ॥

औशनस् स्मृति में लिखा है कि पवित्र वा एकांत जगह में ब्रह्मचर्य रख पढ़े पढ़ावे परन्तु पुत्रियां ब्रह्मचर्य आश्रम में भिक्षा न मांगें किन्तु उनके घर वाले भोजनादि का स्वयं प्रबन्ध कर देवें। अथर्ववेद कांड १८ सू० ३ मंत्र १० में उपदेश है कि पितर अर्थात् विद्वान् माता पिता आदि ऐसी शिक्षा प्रणाली चलावें कि जिससे कन्या और पुत्र बलवान्, विज्ञानवान्, तेजस्वी और सूक्ष्मदर्शी होकर संसार में कीर्ति पावें जैसा कि—

वचसामांपितरः सोम्यासो अञ्जन्जुन्तुदेवा मधुनाघृतेन ।
चक्षुषेमा प्रतरतारयन्ता जरसेमाजरदष्टिंवर्धन्तु ॥

इसलिये वेद ज्ञाता, तपस्वी, इस लोक और परलोक के यथार्थ मर्म के जानने वाले नाना प्रकार की विद्याओं के भूषण स्त्री और पुरुषों की पृथक् २ सभा बनाकर, कोर्स (पाठविधि) नियत कराकर, विद्या की शिक्षा कराइये। तब ही भारत का कल्याण होगा; क्योंकि जिस प्रकार बुद्धिमानों का निर्माण किया मार्ग यात्रियों को सुखदाई होता है उसी भांति विदुषी महिलाओं और योग्य नेताओं की सम्मति से निश्चय किया कोर्स ( पाठविधि ) लाभदायक और सुखदायक होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरुण और वृद्धाओं को थोड़ा थोड़ा समय गृह कार्य्यों से निकाल कर विद्याभ्यास करना चाहिये जिससे आपकी देखा देखी सन्तानें भी पढ़ने लिखने में चित्त लगावें, आपका चित्त भी नाना प्रकार की पुस्तकों के स्वाध्याय से अनेकान बातों को जान कर शांति प्राप्त करें। ताकि अपनी सन्तानों की आप परीक्षा भी कर सकें क्योंकि विद्या गुरु की शिक्षा अनुसार कार्य्य करने, अभ्यास, अन्वेषण और परीक्षा लेने से भले प्रकार आती और सुखदाई होती है, जैसा अथर्वकांड १८ सू० २ मं० ४ में कहा है। जब तुम कुछ जानती ही नहीं तो फिर उन पर तुम्हारा प्रभाव ही क्या हो सकता है। देखो अन्य देशों की महिलायें अपनी सन्तानों को बालपन में आप पढ़ाती और परीक्षा लेती रहती हैं परन्तु भारत देश की स्त्रियां अभी तक यही कहती रहती हैं—कहीं बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं। उनको यह नहीं मालूम कि जयदेव की स्त्री **पद्मावती** ने विवाह के पश्चात् काव्य को पढ़ा था **अहिल्याबाई** ने तीस वर्ष की आयु के उपरांत विद्या पढ़कर राज काज का भार लिया था। **लोलम्बराज की स्त्री रत्नकला** ने तरुणाई में काव्य और वैद्यक शास्त्र को पढ़ा था। महाशय **रानाड़े** ने अपनी स्त्री को विवाह होआने पर गृह कार्यों से थोड़ा थोड़ा समय निकलवा कर पढ़ाया और योग्य बनाया। इसलिये प्यारी महिलाओ ! यदि तुम अपना और संतानों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का भला चाहती हो तो स्वयं विद्या पढ़ अपनी संतानों को विद्या पढ़ाओ जिससे वह पूर्व लिखित स्त्रियों के समान अपने नाम को अमर कर सकें।

---

# विवाह

प्यारे सज्जनों, और सुयोग्य बहनों ! इस समय हमारे देश में बुखार, चेचक, प्लेग, हैज़ादि रोगों की बहुतायत है जिससे भारत की कुदशा हो रही है। तिस पर भी एक अन्य महान रोग फैला हुआ है जिस मूज़ो के फन्दे से कोई भारतबासी छुटकारा नहीं पाता, जहां वह रोग सिर पर चढ़ा फिर थोड़े ही दिनों में ऐसा थोथा कर देता है जिस प्रकार सत निकालने पर गेहूँ निकम्मा होजाता है। विचारशक्ति नाम को भी नहीं रहती उत्साह तथा साहस के स्वप्न में भी दर्शन नहीं होते। सच पूछो तो जैसे बुखार के रहने से तिल्ली आदि बीमारियां होजाती हैं उससे भी अधिक इस रोग के होने से प्रमेह, अफरा, दमा, खांसी आदि रोग उत्पन्न होकर शरीर की चमक दमक को नष्ट कर आलसी और क्रोधी बना बुद्धि भ्रष्टकर देता है, मानों इसी असाध्य रोग ने भारत के चारों कोने चौपट कर उसे सभ्य से असभ्य, राजा से फ़क़ीर और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घायु से अल्पायु बना दिया। भाइयो कहां तक गिनावें सब प्रकार के सुख तथा वैभव को इसने छीन लिया।

बहुधा हमारे पाठकगण इस बात को सुनकर अपने मन में विचार करने लगे होंगे कि यह महान रोग कौन बला है? वे उसका नाम सुनने के लिये विकल होंगे। हे सज्जनों! इस महान रोग को तो सब जानते हैं क्योंकि प्रतिदिन आपही के घरों में उसका निवास है, कौन ऐसा भारतवासी है जो वर्तमान समय में उससे न सताया गया हो, किसने उसके पापड़ों को नहीं बेला और कौन उसके दुःखों से घायल होकर नहीं तड़पता। यह वह मीठी मार है कि जिसके लगते ही सब अपने आप सर्व सुखों की पूर्ण आहुती दे मियां मिट्ठू बन जाते हैं। इसीका नाम जादू है क्योंकि कहा है—

क्या लुत्फ़ जो ग़ैर परदा खोले, जादू वही जो सिर पर चढ़ के बोले।

इस पर भी तुर्रा यह है कि जब यह बीमारी जिस गृह में प्रवेश करती है तो चार छः मास से अपनी आमद की खबर सुनाती है जब निकट दिन आते हैं तब यह सब गृह को पूर्णरूप से स्वच्छ कराती, कपड़े लत्ते सुथरे पहनाती, गृह में मङ्गलाचरण कराती, इधर उधर से भाई बन्धु बुलाती है। जिस रात को उस महारोग की आमद होती है सम्पूर्ण नगर में कोलाहल मच जाता है और उस गृह में तो ऐसा उत्साह होता है जिसका पारावार नहीं। दर्वाजों पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नौबत झड़ती, रण्डियां नाच नाच कर मुबारिकबादें देतीं, पण्डित जन मंत्र उच्चारण करते हैं। फिर सब मिलकर उस महा रोग को जिसके सिर पर मौर होता है, चपेट देते हैं और प्रातः होते ही सब स्थानों में मनादी होजाती है।

अब तो यह महान् रोग प्रत्यक्ष प्रकट होगया। कहिये किस धूमधाम से आता, क्या क्या खेल खिलाता, कैसे कैसे नाच नचाता और सबको बेहोश कर देता है। सच पूछो तो इस रोग का ऐसे गाजे बाजे से दखल होता है जिसमें किसी प्रकार की रोक टोक नहीं होती, वरन् सब मिल कर आप उस महारोग को बुलाते हैं कि जिसका नाम बाल्यावस्था विवाह है। मान्यवरो! जब हम संस्कृत व्याकरणानुसार विवाह शब्द के अर्थ पर विचार कर लेते हैं तो प्रतीत होता है कि वि (उपसर्ग है) का अर्थ विशेष कर और वाह का अर्थ है जोड़ना अर्थात् वह मेल या सम्बन्ध जो विशेषता से हो या जिसके द्वारा दो योग्य आत्माओं को समानावस्था में लाने के लिये मिला दिया जाय। अब आप विचारिये कि एक दूसरे का अटूट सम्बन्ध पूर्णावस्था से प्रथम किस प्रकार होसकता है, इसलिये शास्त्रकारों ने २५ वर्ष के पुरुष को १६ वर्ष की कन्या के साथ विवाह करने की आज्ञा दी है अर्थात् शरीर और आत्मा के बलवान होजाने के पश्चात् विवाह का समय नियत किया गया था, जिससे सब पुरुष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुचर्यानुकूल आहार विहार कर आरोग्यता से बल, धन सन्तान और यश को प्राप्तकर मनुष्य जीवन का उद्देश्य पूर्ण कर सकें। देखिये ऋग्वेद मंत्र ३ सू० ८ में लिखा है।

युवा सुवासः परवीति आगात्स उश्रेयान्भवति जायमना।
तं धीरास कवया उन्नयति स्वाधयौ ३ मानसा देवयन्तः॥

जो मनुष्य तरुण होकर विद्याध्ययन कर अच्छे प्रकार सुन्दर आचरणों पर चल कर विवाह करता है वह विद्वान् तथा महात्मा पुरुषों में पूजनीय होता है। ऋग्वेद मंत्र ३ सू० ५५ में लिखा है—

आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीःशवदु धाः शशया अप्रदुग्धा।
नत्या नव्या युवतयो भवन्तीर्महद्देवा नामसुरत्वमेकम्॥

अर्थात् तरुण पुत्री पूर्ण विदुषी होकर सुन्दर विद्यावाले जवान पुरुष से विवाह करे, और न्यून आयु में पुरुष का ध्यान तक न करे। ऋग्वेद मं० १ सू० ३७९ में लिखा है कि तरुण वर को युवा कन्या के साथ विवाह करने से सुसन्तान उत्पन्न होती और दोनों पूर्ण आयु को पहुंचते हैं। मनुजी महाराज ने अ० ३ श्लोक २ में लिखा है कि जिस मनुष्य ने विधि पूर्वक तीनों वेद अथवा दो वेद वा एक वेद पढ़ लिया है और ब्रह्मचर्य नियम खण्डित नहीं किया उसको विवाह करना उचित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वेदानधीत्य वेदौ वावेदं वापि यथा क्रमम् ।
अविल्पुत ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत् ॥

अथर्वकांड १३ मं० २७ में लिखा है कि पुत्र वा पुत्रियां जब ब्रह्मचर्य से यथावत् वेद विद्या को श्रवण, मनन, निदिध्यासन कर चुकें तब समावर्तन सस्कार होने के पीछे घर आकर विवाह करे। य० अ० १२ मं० १८ में स्पष्ट कहा है कि ब्रह्मचर्य उत्तम शिक्षा शरीर और आत्मा का बल, आरोग्यता, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग आदि सामग्री का संचय कर विवाह करे। य० अ० ८ मं० ११ में बतलाया है कि ब्रह्मचर्य्य से शुद्ध शरीर एवं उत्तम विद्या से युक्त होकर विवाह करने वाले कन्या और पुरुष युवावस्था को पहुँच परस्पर एक दूसरे के धन को अच्छे प्रकार देखकर विवाह करें नहीं तो धन के अभाव में दुख की उन्नति होती है। यजु० अ० ८ मंत्र १ में लिखा है कि विवाह की कामना वाली युवती को उचित है कि जो छल कपट आदि आचरणों से रहित प्रकाशवान एक ही को चाहने वाला, जितेन्द्रिय, सर्व प्रकार का उद्योगी, धार्मिक, विद्वान् हो उसी के साथ विवाह कर आनन्द भोगे। ऋग्वेद अ० १ अ० ५ व० १५ मंत्र १ अ० १३ सूत्र ७१ में स्पष्ट कहा है कि विद्या ग्रहण कीये बिना स्त्रियों को कुछ भी सुख नहीं होता। जैसे मूढ़ पुरुष उत्तम विद्वान स्त्रियों को पीड़ा देते हैं उसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार विद्या रहित स्त्री अपने विद्वान् पति को दुख देती हैं। अथर्ववेद कां० ५ सू० १० में लिखा है—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनडवान ब्रह्मचर्येणाश्वोव्यासं जिगीर्षति॥

ब्रह्मचर्य धारण कर विद्या पढ़ने के पश्चात् विवाह कर नियमपूर्वक बलवान सुशील सन्तान उत्पन्न करे। मनु० अ० ३ श्लोक १। विष्णुस्मृति० १ श्लोक १५। संवर्त-स्मृति अ० १ श्लोक ३४। शंखस्मृति अ० ३ श्लोक ४२। दक्ष अ० १ श्लोक ६-७। हारीत अ० १ श्लोक १५। मार्कंडेय पुराण अ० २८ श्लोक १४-१५ देवी भागवत स्कन्द १ अ० २८ श्लोक १६। पद्मपुराण तृतीय-सर्ग खंड अ० १६ श्लोक १५१ में यही लिखा है कि प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम को पालन कर संतान उत्पन्न करे। पुराण तथा स्मृतिकारों ने भी यही आज्ञा दी है कि प्रथम आयु के चौथाई भाग में गुरुकुल में रहकर विद्या पढ़े, दूसरे भाग में विवाह कर गृहस्थाश्रम में रहे। समावर्तन का अधिक से अधिक समय ४८ वर्ष और न्यून से न्यून २५ वर्ष है। जैसा आपस्तम्ब धर्मशास्त्र अ० २ मं० ११ खं० ३० में लिखा है—'सथाब्रतेनाष्टचत्वारिंशत्यरिमाणन, यही सनातन रीति है जिसके अनुसार प्राचीन काल में तुल्य गुण, कर्म स्वभाव से युक्त स्त्री पुरुष स्वयम्बर में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विवाह कर आनन्द भोगते थे जैसाकि य० अ० १५ मंत्र ८ में लिखा है—

तिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा—
संपदसि सम्पदे त्वा पेजोऽसि तेजसेत्वा ॥

महाभारत आदि पर्व अध्याय २२१ में श्रीकृष्ण महाराज ने बलभद्र जी से कहा है कि जो पुरुष अपनी कन्या का विवाह बिना उनकी इच्छा के करते हैं वे कन्या-दान नहीं करते वरन् अपनी कन्या को पशुवत् बेचते हैं, वे वेद तथा सदाचार के विरुद्ध हैं। इसलिये उक्त योगीश्वर आज्ञा देते हैं कि विवाह स्वयम्बर की रीति से होने चाहिये। यथा—

प्रदानमपि कन्यायाः पशुवत्कोनुमन्यते।
विक्रियं चाप्यपत्यस्य कः क्र्यात् पुरुषोभुवि ॥

और ऐसा ही मनुस्मृति अध्याय ९ श्लोक ९० में लिखा है

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत् कुमार्युर्तुमती सती।
ऊर्द्ध्वंतु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥

महाभारत अनुशासन पर्व अ० ४४ श्लोक १६, १७ में भी लिखा है। तीन वर्ष तक ऋतुवती होने के पश्चात् कन्यावर की इच्छा करे, तीन वर्ष उपरांत अपने समान पति को प्राप्त होने पर कन्या आप विवाह करे। देखो बाल्मीकीय रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग ११८ में—

पतिसंयोगसुलभं वयोदृष्ट्वातु मे पिता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सीताजी ने अत्रि ऋषि की स्त्री अनुसुइया से कहा कि पति के सहवास योग्य जब मेरी अवस्था हुई, उस समय राजा जनक ने यह प्रण कर स्वयम्बर रचा था कि जो कोई धनुष को तोड़ेगा उसके साथ सीता का विवाह होगा, जिसके लिए अनेक राजा महाराजा एकत्रित हुए, परन्तु महाराजा रामचन्द्र ने धनुष को तोड़ा, मैंने जयमाला डाली, फिर रामचन्द्र के साथ वैदिक रीत्यानुसार विवाह हुआ। इसी तरह राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री का विवाह मछली भेदने पर नियत किया था, जिसको अर्जुन ने भेद कर विवाह किया। अज का इंदुमती के साथ स्वयंवर की की रीति से विवाह हुआ था। शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ने पूर्ण अवस्था में अपनी इच्छा से राजा ययाति से विवाह किया था। कुन्ती से बहुत से राजा महाराजाओं ने विवाह करना चाहा, परन्तु इस महारानी ने पाण्डु को उत्तम समझ स्वयं अपना पति स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त अनेक दृष्टान्त महाभारत में पाये जाते हैं। लोपामुद्रा जो अगस्त महर्षि की पत्नी थी, अरुंधती जो बड़ी पतिव्रता श्रीमहर्षि बसिष्ठ जी की पत्नी थी, मैत्रेयी, गार्गी आदि बड़ी २ पंडिताओं के दृष्टान्तों से विदित होता है कि इनके विवाह पूर्ण अवस्था ही में हुए थे।

अब आप स्वयं विचार कर सकते हैं कि उस समय महारानी कुन्ती की क्या अवस्था होगी जब उन्होंने बड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


२ राजाओं को त्याग कर पाण्डु से विवाह किया। रुक्मणी की क्या अवस्था थी जब कि उन्होंने श्रीकृष्ण महाराज को पत्र लिखा था। अब स्पष्ट प्रगट हो गया कि उस समय इन सब की अवस्था युवा होगी और विद्या में भी योग्यता रखती होंगी, क्योंकि ऐसी परीक्षा बिना विद्या के नहीं हो सकती।

सुश्रुत शास्त्र अ० १० में स्पष्ट कहा है कि २५ वर्ष के पुरुष का १६ वर्ष की कन्या से विवाह होना चाहिये, उनसे उत्पन्न हुई संतान हो माता पिता की सेवा तथा धार्मिक काम करने वाली होती है,

यदि हम अन्य देशों की जातियों की ओर दृष्टि डालते हैं तो वही अपने पुराने पुरुषों की रीति ( जो वेद आदि सत्यशास्त्रों की है कि जिसको बुद्धि भी स्वीकार करती है) प्रचलित पाते हैं। देखलो भारत ही में मुसलमानों में तरुणाई पर शादी होती है, अंगरेज़ भी इसी तरह चलते हैं, जिसमें उनके डील डौल गुण, विद्या, साहस आदि देखने में आते हैं, जर्मनी के निवासी २५ वर्ष तक विवाह नहीं करते। इसी कारण उनकी विद्या और बुद्धि की प्रशंसा तथा सन्तान सुडौल और योधा होती है।

यजुर्वेद अध्याय ५ मन्त्र २ में रुद्र शब्द आता है, जिसके अर्थ ४४ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने के हैं। और इसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद मन्त्र में लिखा है कि तरुण पुत्री रुद्रब्रह्मचारी से विवाह करने से प्रथम माता पुनः पिता भ्राता और मित्र से सम्मति करे जिससे स्वयंवर में किसी प्रकार का धोखा न खाय। यजुर्वेद अध्याय ४ मन्त्र २४ में वसु, रुद्र, आदित्य तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों का वर्णन किया है अर्थात् २४, ३६, ४४ वा ४८ वर्ष, इससे विदित होता है कि इतनी आयु पश्चात् विवाह करना चाहिये। यजुर्वेद अध्याय ११ मन्त्र ५८ में वसु, रुद्र, आदित्य और वैश्वानर ब्रह्मचारियों के ब्रह्मचर्य के वर्षों की गणना, गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती और अनुष्टुप छन्दों के द्वारा बतलाई गई है। गायत्री २४ अक्षर, त्रिष्टुप् ४४ जगती ४८, अनुष्टुप् ३२ अक्षर का छन्द होता है, इसलिए वसु, रुद्र, आदित्य, वैश्वानर वह ब्रह्मचारी होते हैं जो २४, ३६, ४४, ४८ वर्ष ब्रह्मचर्य धारण करें।

इसी भांति यजुर्वेद अध्याय ११ मन्त्र ६१ में ब्रह्मचारिणी स्त्रियों की जनयः, ग्रा, वरुणी, धिषणः, अदिति ये ५ श्रेणी बतलाई गई हैं। (जनयः) अर्थात् शुभगुणों से प्रसिद्ध, (ग्रा) वेदवाणी को जानने वाली, (वरुणी) विद्या ग्रहण के लिये स्वीकार करने योग्य, (धिषणः) जिसका वाक्य और बुद्धि प्रशंसा के योग्य हो, (अदिति) अखण्ड विद्या पढ़ानेहारी।

अब इससे यह भी प्रकट होता है कि आदित्य के योग्य अदितिः रुद्र के धिषणां, वैश्वानर के वरुणी, वसु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के ग्ना या जनयः समझना चाहिये। अथर्वकांड ११ अनुवाक ३ मंत्र ६ में स्पष्ट आज्ञा है कि पुरुष को पूर्ण तरुण अवस्था तक ब्रह्मचर्य रखना चाहिये क्योंकि ऐसा ही ब्रह्मचारी गृहस्थी में सुगमता से सुख पाता है। ऋग्वेद मन्त्र १० सूत्र ८५ मन्त्र 'इमांत्वमिन्द्र मीढा' में मीढ और इन्द्र ये दो शब्द ऐसे हैं जिनसे स्पष्ट प्रगट होता है कि विवाह करने वाले में वीर्य सेवन की सामर्थ्य और धनाढय हो। वीर्य सेवन की पूर्ण सामर्थ्य पुरुष में २५ वर्ष से ४० वर्ष के पश्चात् तक होती है, इसलिये २५ वर्ष की आयु से लेकर ४४ वर्ष तक विवाह का समय है। इसी भांति यदि हम यह विचार करें कि मनुष्य किस अवस्था में धन एकत्र करने के योग्य होता है तो यह भी स्पष्ट है कि २५ वर्ष तक साधारण विद्या पढ़ किसी व्यापार को आरम्भ करे तो १० या १५ वर्ष में धनवान् होसकता है अर्थात् ३५ या ४० वर्ष की उम्र में धनाढय होजाता है। इसीलिये इससे मालूम होता है कि २५ वर्ष से पहिले पुरुष को विवाह न करना चाहिये। कन्या 'पंचदशः' अर्थात् १५ संख्या को पूर्ण करने वाले ब्रह्मचर्य का आचरण करे। अध्याय १५ मन्त्र १२ और अध्याय १ मं० १३ में कन्याओं के लिये दो प्रकार की अवधि दर्शाई गई है। इसके उपरांत वेद मं० में शिक्षा है कि लड़का और लड़की का विवाह ब्रह्मचर्य को पूरा करने के पश्चात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

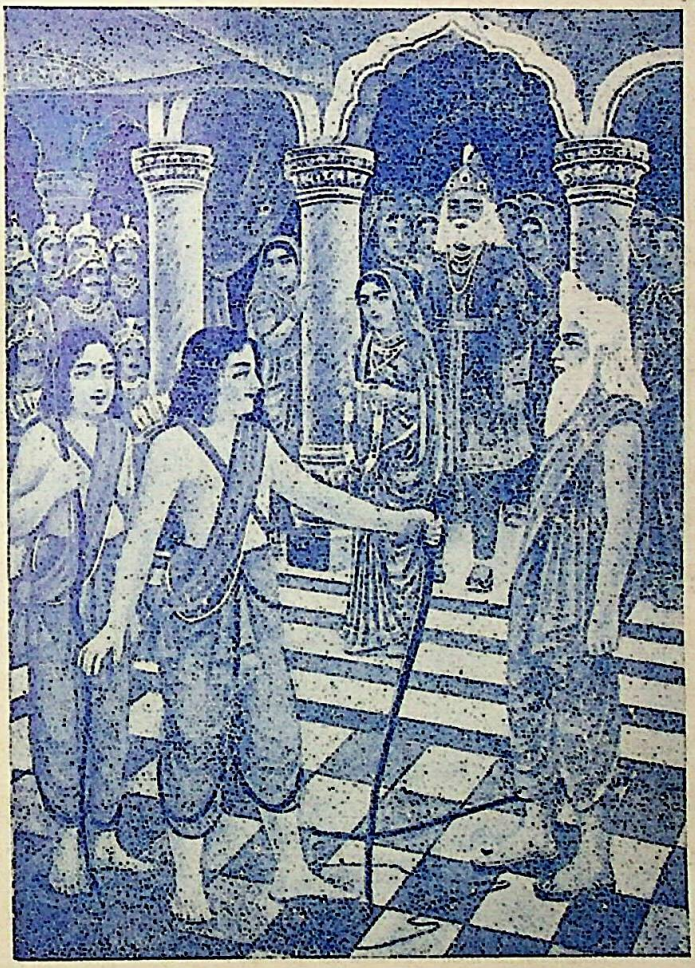

स्वयंवर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


योग्य समय पर होना चाहिये, इसलिये इस मं० से प्रकट होगया है कि—कन्याओं का विवाह सप्तदश (सत्रह) और एकविंशत इक्कीस और पञ्चदश ( पन्द्रह ) वर्ष ब्रह्मचर्य पूरा होने के पश्चात् ही होना चाहिये। ऋग्वेद मं० २ सू० ३५ मन्त्र ४ में लिखा है—

तपस्मेरायुवतयो युवानं मर्मृजतीः परियन्त्यापः।

अर्थात् जो उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत से अत्यन्त (युवतयः) बीस वर्ष से २४ वर्ष वाली हैं, वे कन्यायें जैसे जल या नदी, समुद्र को प्राप्त होती हैं वैसे (अस्मेराः) हम प्राप्त होने वाली अपने २ पसन्द, अपने से ड्योढ़ी वा दुगनी आयु वाले ( तपः ) उस ब्रह्मचर्य और विद्या से परिपूर्ण शुभ लक्षण युक्त (युवानम्) जवान पति को (परियन्ति) प्राप्त होती हैं। इस मं० में पूरी तरुण अवस्था वाली कन्या को ड्योढ़ी, दुगनी आयु वाले वर से विवाह करने की आज्ञा है। परन्तु शोक है कि वर्तमान समय में इस उत्तम रीति पर कुछ ध्यान न देकर लड़के लड़कियों के विवाह ८ तथा १० वर्ष में करना उत्तम समझते और कहते हैं—

अष्टवर्षाभवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्द्ध्वं रजस्वला॥
माताचैव पिता तस्या जेष्ठो भ्राता तथैवच।
त्रयस्ते नरकं यांति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्॥



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कन्या की ८ वर्ष में गौरी, ९ वर्ष के रोहिणी, दशवें वर्ष कन्या तदुपरांत रजस्वला संज्ञा हो जाती है। यदि इस समय लड़की का विवाह न हो तो माता, पिता और बड़ा भाई नरक को जाते हैं।

मान्यवरो ! लड़की का रजस्वला होना ईश्वरीय नियम हैं, आरोग्यता अथवा युवावस्था आरम्भ होने का चिन्ह है, फिर इसमें माता, पिता और बड़े भाई का क्या दोष जो पापी गिने जावें।

देखिये! महाभारतअनुशासन पर्व अ० २० में लिखा है 'कौमारं ब्रह्मचर्यं में कन्यैवास्मि न संशयः' अर्थात् जब तक लड़की का विवाह नहीं होता तब तक वह निःस्सन्देह कन्या ही रहती है। आगे शल्यपर्व अ० ५३ में 'ऋतुस्नानातुयाशुद्धा सा कन्येत्यभिधीयते' यानी जो ऋतुस्नान से शुद्ध होचुकी है उसका नाम कन्या है। पुनः देखिये दमयन्ती का विवाह नल के साथ युवती होने पर हुआ था। देखो महाभारत बनपर्व नलोपाख्यान अ० ५३ श्लो० १६,१७

तस्याः समीपे तु नलं प्रशंसुः कुतूहलात्।
नैषधस्य समीपेतु दमयन्ती पुनः पुनः ॥ १ ॥
तयोर्दृष्टः कोमोऽभूत श्रपवती सततं गुणान्।
अन्योन्यंप्रति कौन्तेय सव्यवर्धतहृच्छयः ॥१७॥

मनुष्य दमयन्ती के समीप नल और नल के पास दमयन्ती की बार बार प्रशंसा करते थे, जिस कुतूहल से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन दोनों को एक दूसरे के गुण सुन सुन कर कामदेव जो अदृष्टि हृदय में रहता है, उत्पन्न हुआ और बढ़ा।

अब आप विचारलें क्या रजोदर्शन से पहिले कामोत्पत्ति और वृद्धि हो सकती है ? कदापि नहीं, इससे प्रगट हुआ कि इनका विवाह रजस्वला होने पर हुआ। महाभारत वन पर्वान्तर्गत तीर्थ यात्रा पर्व में लोपमुद्रा की कथा है जिसमें विवाह के पूर्व से उसके यौवन की चर्चा स्पष्ट शब्दों में है—

यौवनस्थापि च तां शीलाचार समन्धिताम्।
न वव्रे पुरुषः कश्चिद्भार्यास्तस्य महात्मनः ॥ २८ ॥
वैभर्ति तु यथा मुक्तां युवतीं प्रेक्ष्य वै पिता।
मनसा चिंतयामास कस्मै दद्यामिमां सुताम् ॥३०॥

शीलाचार युक्त लोपमुद्रा को यौवन अवस्था में भी कोई पुरुष उस महात्मा (पिता) के भय से नहीं वरता था। तब पिता को इस तरह की युवती देखकर चिन्ता हुई कि इसका विवाह किससे करूं और युवती १३ वर्ष के ऊपर होती है, इससे भी रजस्वला होना प्रकट है। कवि तुलसी दासजी ने जहां सीताजी की छवि का वर्णन किया है उससे भी पता लगता है कि सीता की आयु ८, १०, १२ की नहीं थी वरन् १७ की थी।

डाक्टर जानसन साहब लिखते हैं कि विवाह केसम य स्त्री और पुरुष की अवस्था में कम से कम ७ वर्ष का अंतर होना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डाक्टर **कोन** साहब का मत है कि मनुष्य के शरीर में बहुत सी हड्डियां ऐसी हैं जो २५ वर्ष से पहले मज़बूत नहीं होतीं।

डाक्टर **डियूडवी स्मिथ साहब** भूतपूर्व प्रिंसिपल मेडीकल कालिज कलकत्ता का बचन है कि न्यून अवस्था के विवाह की रीति अत्यन्त अनुचित है, क्योंकि इससे शारीरिक तथा आत्मिक बल जाता रहता है, मन की उमंग चली जाती है, फिर सामाजिक बल कैसा ?

डाक्टर **नीवमिन कृष्णबोस** का बचन है कि शारीरिक बल के नष्ट होने के जितने कारण हैं उन सब में महान् न्यूनावस्था का विवाह जानो यह मस्तक के बल की उन्नति का रोकने वाला है।

मिसेज **जी० पी० फिफसिन** लेडी डाक्टर बम्बई का बचन है कि हिन्दुओं की स्त्रियों में रुधिर विकार तथा चर्म दूषण आदि बीमारियां अधिक होने का कारण बाल्य विवाह ही है क्योंकि संतान के शीघ्र उत्पन्न करने तथा दूध पिलाने से माता की रगें दृढ़ नहीं होतीं, इसीलिये माता दुर्बल होकर हर तरह के रोगों में फंस जाती है।

डाक्टर **महेन्द्रलाल सरकार** एम० डी० का बचन है कि बाल्यावस्था का विवाह अत्यन्त बुरा है इससे जीवन की उन्नति की बहार लुट जाती तथा शारीरिक उन्नति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का द्वार बन्द होजाता है। मैं तीस वर्ष की परीक्षा से कह सकता हूँ कि २५ फ़ी सदी स्त्री बाल्यावस्था के विवाह से मरती हैं तथा २३ फ़ी सदी मनुष्य इसीसे ऐसे होजाते हैं कि जिनको सदा रोग घेरे रहते हैं।

इसीलिये महर्षि चरक ने २४ वर्ष के पुरुष को १६ साल की स्त्री के साथ समागम करने की आज्ञा देने की शिक्षा की है और जो पुरुष न्यूनावस्था में समागम करते हैं उनका प्रथम तो गर्भ ही नहीं रहता यदि रहा भी तो पूरे दिनों तक नहीं ठहरता अर्थात् गर्भपात होजाता है या पूरे दिनों में होकर मरजाता है यदि उस समय बच भी गया तो दुर्बलेंद्रिय हो अल्पावस्था में परमधाम को चला जाता है जैसा कि—

ऊन षोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम्।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भंकुक्षिस्था सविपद्यते॥
जातोवान् चिरंजीवेज्जीवेद्वानिर्बलेन्द्रियः।
तस्मादत्यन्त बालायांगर्भाधानं न कारयेत्॥

इसके उपरांत अथर्ववेद कांड ७ सू० ३८ मंत्र १ में लिखा है कि विवाह में विद्वानों के बीच वस्त्र से गठिबन्धन करके बधू और वर प्रतिज्ञा करें कि पत्नी पतिव्रत और पति पत्नीव्रत होकर गृहस्थाश्रम को प्रीति पूर्वक निबाहे जैसा कि—

अभिस्वामनुजातेन दांधमिममवाससा।
यथासाममकेवलो नान्यासांकीर्तयाश्चन॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मं० ३९ में लिखा है वर बधू पञ्चों में प्रतिज्ञा करके सदाचार से रहकर धर्म पर चलते रहें । वह प्रतिज्ञायें निम्न लिखित हैं ।

---

## प्रतिज्ञायें

वर कहता है कि हे प्रिये ! मै ऐश्वर्ययुक्त तथा धर्म मार्ग में प्रेरक तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ । धर्म से मैं तेरा गृहपति और तू मेरी पत्नी है हम तुम दोनों मिल के घर के कामों की सिद्धि करें और जो हम दोनों के अप्रियाचरण व्यभिचार हैं उनको कभी न करते हुये घर के सब कामों की सिद्धि सन्तानोत्पत्ति ऐश्वर्य और सुख की बढ़ती करें ।

स्त्री कहती है कि हे भद्रवीर ! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुये, सो मेरे लिये आपके सिवाय इस जगत में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करने हारा सेव्य, इष्टदेव, कोई नहीं है, न मैं आपके अतिरिक्त दूसरे किसी को मानूंगी । जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करेंगे वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीतिभाव से न वार्ता करूंगी । आप मेरे साथ सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से प्राण धारण कीजिये ।

मित्रो ! इस प्रकार की प्रतिज्ञायें वर और बधू करते थे परन्तु आजकल वर और वधुओं से जो प्रतिज्ञायें कराई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं वह महादेव और पार्वती के नाम से होती हैं। वास्तव में प्रतिज्ञायें करना ही तो विवाह है इसलिये पंडितों को प्रतिज्ञा मन्त्रों को कदापि नहीं पढ़ना चाहिये क्योंकि विवाह वर वधू का होता है न कि उनका इससे भी यही सिद्ध होता है कि न्यूनावस्था में विवाह नहीं करना चाहिये क्योंकि छोटे बच्चे इन मन्त्रों को न बोल सकते हैं न समझ ही सकते हैं इसके उपरान्त वर्तमान समय में राज क़ानून भी १८ वर्ष से प्रथम की लिखा पढ़ी को नहीं मानता फिर विवाह और प्रतिज्ञायें कैसी ? हर्ष है कि १९३० में श्री रामबिलास जी शारदा की कृपा से न्याय-शील गवर्नमेंट ने १८ वर्ष से कम आयु में विवाह न करने के लिये कानून पास कर दिया जिससे भावी सन्तानों का विशेष कल्याण होगा।

प्यारे भाइयो ! अभी तक गाय, घोड़ी आदि पशुओं पर जब कि वे पूर्ण नहीं होजाते बैल घोड़ा आदि नहीं छुड़वाते कि जिससे उनकी संतान निकम्मी न होजावे। फिर मैं नहीं जानता कि स्त्री पुरुषों में जो संसार के जीवों में सर्वोत्तम हैं यह सुविचार ( जो गाय घोड़ी इत्यादि पशुओं के साथ किया जाता है ) क्यों छोड़ दिया गया ? क्या ये उन पशुओं से भी गये हैं ?

पाठकगणों ! जिस समय जिस वस्तु को मन की इच्छा होती है उसी समय उसके मिलने से परम सुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होता है बिना समय के वस्तु मिलने से कुछ उत्साह और उमंग नहीं होती, न किसी प्रकार का आनन्द आता है। जिस प्रकार भूख के समय में सूखी रोटी भी अच्छी जान पड़ती है उसी प्रकार बिना भूख के मोहनभोग को भी जी नहीं चाहता। छोटे छोटे २ पुत्र पुत्रियों का उस दशा में जबकि उनको कामअग्नि नहीं सताती और न उनका मन उधर को जाता है शादी करने से क्या लाभ होता है ? कुछ भी नहीं।

इसके उपरांत अथर्वकांड ६ सू० ८१ मन्त्र ३ में लिखा है कि स्त्री उसी पुरुष को पति बनावे जो उसको सहारा देसके अर्थात् रक्षा कर सके और रक्षा बल, बुद्धि और धन से होती है क्या आपकी समझ में यह तीनों बातें न्यून अवस्था के मनुष्यों में हो सकतीं है कदापि नहीं। दूसरे स्त्री स्वयं अपने पति को आप पसन्द करे कहिये यह बुद्धि पुत्रियों को बालापन में हो सकती है कभी नहीं। तृतीय स्त्री पूर्ण ब्रह्मचारिणी होकर विवाह करे। चौथे उपरोक्त मंत्र में पुत्र काम्याः पद अच्छे प्रकार बतला रहा है कि विवाह उसी समय होना चाहिये जब कि दोनों के हृदय में पुत्र प्राप्ति की इच्छा हो। विद्वान् योग्य पुरुष भले प्रकार जान सकते हैं कि २४ वर्ष से ऊपर पुरुष और १६ वर्ष से अधिक स्त्री को सन्तान की कामना होती है इसीलिये विवाह तरुणाई में होना चाहिये न कि न्यून अवस्था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में। पांचवें पति पत्नी का सम्बन्ध अटूट है इसलिये उनको प्रतिज्ञायें करनी होती हैं जिससे वह सम्बन्ध आयु पर्यन्त बना रहे इसके लिये भी तरुणाई की आवश्यकता है। इस के सिवाय विधवाओं का एक जत्था इसी न्यून अवस्था के विवाह के कारण बनता जाता है जिससे प्रत्येक घर में हाहाकार मचा रहता है वह विधवायें ये भी नहीं जानतीं कि हमारी चूड़ियां क्योंकर फूटीं उन विधवाओं के कारण जो २ हानियां हो रही हैं उनको आप हम सब ही जानते हैं फिर हमारी मूंछें मुंह पर शोभा नहीं देतीं, हमारी जवानी का नशा एक दम उतर जाता है, संसार में मुंह दिखाना कठिन होजाता है सच पूछो तो माता पिता इस जलती हुई चिता को अपनी छाती पर देख २ कर हाड़ों का सांचा बन जाते हैं। सन् १९३१ की रिपोर्ट देखने से पता चलता है कि सारे भारत में १५ वर्ष से कम आयु वाली विवाहिता कन्याओं की संख्या प्रति हजार में १५८ और लड़कों की प्रति हज़ार में ६६ है। साथ ही सिर्फ़ हिन्दुओं में विधवाओं की संख्या २ लाख और समस्त भारत में हजार पीछे १५५ विधवाओं का औसत था।

इस अनमेल और बेजोड़ तथा अशिक्षितावस्था की शादी का एक भयंकर यह भी परिणाम हुआ कि यहां प्रति वर्ष बच्चों की मृत्यु संख्या भी वृद्धि पर है सन् १९३१ में एक हज़ार में से १७८ बच्चे एक वर्ष से कम आयु के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काल के गाल में चले गये। भारत में जितने बच्चे मरते हैं उतने संसार के किसी देश में नहीं मरते देखो जहां भारत में १००० पीछे १७८ बच्चे मरते हैं वहां अमरीका का औसत ७४ इङ्गलेंड तथा वेल्स का ८० न्यूज़ीलेंड का ३५ है कहिये अब भी आप न्यून अवस्था के विवाह पर लट्टू बने रहेंगे। प्राचीन काल में जब कि विवाह बड़ी आयु में होते थे बाल विधवाओं की संख्या इतनी नहीं थी न छोटी उम्र में बच्चे मरते थे इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जब किसी खेत में गैहूं आदि अन्न बोते हैं तो जमने के पीछे दश पांच दिन में बहुत से पौधे मर जाते हैं एक महीने के पीछे बहुत कम, दो चार महीने के पीछे न्यून मरते हैं। इसी तरह जन्म से पांच वर्ष तक जितने बालक मरते हैं उतने दश वर्ष पर नहीं, दश वर्ष से १५ तक उससे भी बहुत कम क्योंकि न्यून अवस्था में सूखा, जमोघा दांत तथा शीतलादि रोग मृत्यु कारक होजाते हैं।

इसलिये आप सबसे श्रेष्ठ स्वयम्वर विवाह की रीति को प्रचलित कीजिए जो सबसुखों की देने वाली है। मनु महाराज जो आठ प्रकार के विवाह लिखते हैं वह गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण, देव, आर्ष, प्रजापति, असुर, गन्धर्व राक्षस एवं पिशाच यह आठ प्रकार के विवाह बतलाये हैं जिनमें से प्रथम के चार उत्तम और उनसे उत्पन्न हुई संतान को योग्य कहा है कि इन चारों में वैदिक विवाहों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की प्रतिज्ञायें, फेरे, और सप्तपदी आदि की सब विधियां होती हैं। शेष चार को निंदित कहा है।

पाणिग्रहण के मंत्रों में (१) सौभाग्य अर्थात् उत्तम संतान ऐश्वर्य का प्राप्त करना, (२) दम्पतिव्रत अर्थात् पुरुष एकही विवाहिता स्त्री से और स्त्री एकही विवाहिता पुरुष से अपना सम्बन्ध रक्खे (३) दीर्घ सम्बन्ध अर्थात् आयु पर्यंत का सम्बन्ध (४) परस्पर प्रसन्नता और समान जानना (५) परमात्मा को साक्षी जान प्रतिज्ञा करना (६) देव अर्थात् सभामण्डप में बैठे हुए विद्वान् लोग साक्षी हों जिनमें मित्र पितादि गुरु इत्यादि के बोधन करने वाला शब्द देवा से होता है जिनके सम्मुख प्रतिज्ञा की जाती है।

प्रतिज्ञा मन्त्रों में प्रथम बार वधू ज्ञान पूर्वक अर्थात् होश हवास सहित उपरोक्त बातों पर सदा चलने के लिए सभा में मण्डप के चारों ओर बैठे हुए मनुष्यों के सम्मुख घूम घूम कर करती है जिससे उसको सब मनुष्य सुनलें और ये मन्त्र चार प्रकार के हैं और चार बार घूम २ कर किए जाते हैं। इसलिए भाषा में इस प्रतिज्ञा को फेरे कहते हैं।

**सप्तपदी**—सप्त के अर्थ सात और पदी के अर्थ उद्देश्य के हैं और वे सात उद्देश्य सप्तपदी के उन सातों मन्त्रों से विज्ञान, आरोग्य, बल, धन, सुख, यश, सन्तान ऋतुगमन और ऋतुचर्या की रीति पर चलना मित्रता से रहना है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसलिए हम उपरोक्त चारों विवाहों को स्वयंवर विवाह कह सकते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सन्तान उत्पत्ति और सभा के सम्मुख प्रतिज्ञा द्वारा पूर्ण आयु तक मित्रवत् रहने और सुसन्तान उत्पन्न करने का है अतएव यदि किसी प्रकार स्वयंवर विवाह नहीं कर सकते हो तो वेदोक्त मिलान करके कार्य करना चाहिए जिससे देश का कल्याण हो। विधि अर्थात् लड़का लड़की के गुण मिलाने के विषय में वेदों में अच्छे प्रकार लिखा है जिसको सम्मुख रख कर मनु आदि स्मृतिकारों और पुराण तथा वैदिक ग्रन्थों में भली भांति आन्दोलन किया है जिसका संक्षेप रूप से मैं वर्णन करता हूँ।

## पुत्र के गुण

पूर्ण ब्रह्मचारी और युवा, विद्वान्, सदाचारी, निर्लोभी, दयालु, नियमानुसार कार्य करने वाला, आस्तिक, साहसी, उद्योगी, कुलीन, आरोग्य, मधुर वक्ता, उत्तम स्वभाव वाला, सन्तोषी, दम्पतिव्रत अर्थात् एक ही विवाहिता स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला हो।

अंगहीन, नास्तिक, मूर्ख, बुड्ढा और दुराचारी, श्वास रोग, मिरगी, वायु विकार, बहरे, लूला, लंगड़ा, कुष्ठी, नेत्रहीन और आलसी न हो। क्योंकि पैतृक रोगों से संतान में भी वही दोष आ जाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## पुत्री के गुण

जिसका शरीर छरछरा-कोमल, वाणी-मधुर, चाल हंस के समान व हाथी के तुल्य-गृहकार्य में निपुण-ब्रह्मचारिणी विदुषी और शुभाचरण आदि गुणों से युक्त हो उससे विवाह करे और बड़े बालवाली या बालों से रहित बहुत बकवाद करने वाली, लड़ाके, भूरे वर्ण व नेत्र वाली, अंगहीन, रोगनी, अधिकाङ्गी, दुष्ट स्वभाव वाली, दुराचारिणी, पीले वर्ण वनाखून, मोटे पैर वाली, टेढ़ी नाक वाली, माता पक्ष की या अपने गोत्र वाली, क्षय और हिस्टीरिया आदि रोग वाली को बहुत पतली, बड़ा लम्बा विषम उन्मत्त न बरे। क्योंकि उत्तम कुल वृक्ष के तुल्य है, सम्पति वालों के सदृश पुत्र मूलवत् जानों जो पुरुष अपनी पुत्रियों को सदा सुखी रखना चाहें वह मूलतत्व को विचार कर विवाह करें। क्योंकि जो मूल दृढ़ होगी तो वह बड़े २ प्रचण्ड वायु के झकोरों से वृक्ष को गिरने न देगी यदि मूल ही निर्बल होगी तो वृक्ष थोड़े ही झटके में उखड़ कर गिर पड़ेगा इसी प्रकार जो पुत्र सुपूत वा सुलक्षण होगा तो धन तथा कुल की प्रति दिन उन्नति करेगा और सर्व प्रकार से अपने बाप दादे के नाम तथा यश को फैलावेगा तथा नाना भांति से सुख आनन्द देगा, यथा—

एकेनापि सुपुत्रेण पवित्रगुणशालिना।
सुरभिःक्रियतेगोत्रश्चंदनेनेव काननम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक ही सपूत, गुणवान् उत्तम आचरण वाले पुत्र से सम्पूर्ण कुल शोभित और प्रख्यात होजाता है, जैसे चन्दन के एक ही पेड़ से बन का बन सुगन्धित रहता है इसलिये धन कुल आदि तन की अपेक्षा लड़के के गुण, कर्म, शील आदि का मिलाना अत्यन्त उचित है क्योंकि धन बादल की छाया के समान, प्रतिष्ठा पतङ्ग के रंग के सदृश और कुल केवल नाम के लिये है, इस कारण मूल पर सदा ध्यान रखने से परम सुख मिल सकता है, अन्यथा कदापि नहीं। किसी ने सच कहा है—

एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय।
जो तू सेवे मूल को फूले फले अघाय॥

अतः बर कन्या के उपरोक्त गुण मिलाकर विवाह करना चाहिये जिससे उन दोनों की प्रकृति सदा एकसी रहै जो सुख का मूल है, जैसा किसी कविने कहा है—

प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल सें न मिलाय।
दूध दही से जमत है, कांजी से फटि जाय।

इसलिये सदा उत्तम कुलों में उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले पुत्र और पुत्रियों का विवाह होना ठीक है क्योंकि जो सुख तुल्य रूप, विद्या, गुण, कर्म, स्वभाव वालों का होता है वह अन्य में कभी नहीं होता इसलिये ऋग्वेद अ० १। अ० २। व० ५। म० १। अ० ५। सू० २२। मंत्र ११ में लिखा है कि स्त्री अपने समान पुरुष अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुल्य स्त्रियों के साथ आपस में प्रसन्न होकर स्वयं इस विधान से विवाह करके सब कर्मों को सिद्ध करें।

अथर्वकांड ६ सू० ७२ मं० १ एवं ऋग्वेद सू० ११३ मं० १८, १९ में आज्ञा है कि वर और कन्या अपने माता पिता आदि बड़ों की भी सम्मति प्राप्त करें जिनके अनुग्रह से दोनों विद्या धन और सुवर्ण आदि धन और परस्पर एक चित होने और नियम पालन की शक्ति को प्राप्त किया है इस सम्बन्ध की बात चीत गुरु और गुरुआनी तक पहुँचाई जाय और वहां विवाह की बातचीत अच्छे प्रकार पक्की हो ऐसा ही अथर्ववेद सू० ३० में लिखा है प्यारे मित्रो सुयोग्य महिलाओ ! इस प्रकार विध मिलाकर विवाह होते थे तब जिस प्रकार बलवान घोड़ा मार्ग गवन कर अन्त में घास आदि भोजन के समय हिनाहिना कर प्रसन्नता प्रकट करता है इसी प्रकार विद्या समाप्ती पर पूर्ण विद्वान सामर्थ बलादि संयुक्त हो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करके आनन्द भोगते हैं और उसी समय रूपवान पराक्रमी धनवान्, गुणवान, यशवान तथा पूर्ण आयु वाली संतान होती हैं।

ऋग्वेद अ० १ अ० ८ व० २३। मं० १ अ० १७ सू० १२० मं० ५ में लिखा है, कोई विद्वान् मूर्ख स्त्री और विदुषी स्त्री किसी अपढ़ पुरुष के साथ विवाह न करे किन्तु मूर्ख मूर्खा से और विद्वान् विदुषी के साथ विवाह करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसके उपरांत यह भी देख लेना चाहिये कि लड़का ज्वारी, शराबी, रण्डीबाज़ और चोर तो नहीं है।

आज कल उपरोक्त प्रकार से गुण दोषों का मिलान न करके बलवर्ग, गण, राशि और नाड़ी आदि का कुम्भ, मीन इत्यादि से मिलान कर अनमेल मेल मिला भारत का सत्यानाश कर रहे हैं इस प्रकार के मिलान की आज्ञा ? शास्त्रों में नहीं पाई जाती और न पूर्व पुरुषा इस परिपाटी पर चलते थे। यदि किसी को दावा हो तौ श्रुति प्रमाण से सिद्ध करके दिखलावे या यही बतलावे कि श्रीरामचन्द्र और सीता, अर्जुन और द्रोपदी इत्यादि के विवाह क्या इसी प्रकारके मिलान मिलाकर हुये थे। देखिये यदि वर्तमान परिपाटी के अनुसार ही मिलाकर उनके विवाह हुए थे तो-

**नाड़ी दोष**—आदि नड़ी वरंहन्ति मध्य नाड़ी चकन्याकाम्।
अंत नाड़ी द्वयोर्मृत्युः नाड़ी दोषंत्यजेद्बुध ॥

यह श्लोक शीघ्रबोध के प्रथम प्रकरण में लिखा है जिसका अर्थ यह है कि यदि वर कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो तो वर की मृत्यु हो और दोनों की मध्य नाड़ी हो तो दोनों की मृत्यु हो। श्रीमान् ! द्रोपदी की अंत नाड़ी और अर्जुन की भी अंत नाड़ी थी इसी प्रकार बसिष्ठ और अरुंधती दोनों की अंतनाड़ी थी परंतु उनमें किसी प्रकार का क्लेश नहीं हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्गदोष—शीघ्रबोध प्रकरण १ श्लोक २२ के अनुसार अर्जुन का गरुड़ वर्ग है और द्रौपदी का सर्प वर्ग है जिनका प्रत्यक्ष बैर है परंतु फिर उनमें प्रीति क्यों रही ?

गण दोष—श्रीराम का जन्म पुष्य नक्षत्र का है यह सब जानते हैं रामचंद्रजी की कुण्डली अभी तक लिखी जाती है उसमें भी कर्क राशि ही मानी है। वाल्मीकीय रामायण का भी यह सिद्धांत है। इसी से शीघ्रबोध प्रकरण १ श्लोक २५—

अश्विनी मगरेवत्योहस्तः पुष्यपुनर्वसु।
अनुराधा श्रुतिः स्वातिः कथ्यते देवता गणैः॥

इसके अनुसार देवतागण हुआ, और बोलते नाम से शताभखा नक्षत्र पाते तो राक्षस गण होगा।

कृतिका च मघाश्लेषा विशाखाशततारका।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलंरक्षोगणः स्मृतः॥२७॥
फल—स्वगणैपरमाप्रीतिर्मध्यमादेवमर्त्ययोः।
मर्त्यराक्षसयोर्बैरं कलहोदेवराक्षसोः॥२८॥

देव राक्षस में कलह करना चाहिये। फिर सीता, राम में कैसी प्रीति थी और रावण जिसका गण नाम से सीता से मिलता था और साक्षात् जाति भी राक्षसी थी, फिर उस से प्रीति क्यों न हुई ! क्योंकि रावण के नाम से चित्रा नक्षत्र पाया जाता है। श्रीकृष्ण का रोहिणी नक्षत्र का जन्म सब ही जानते हैं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोप्यार्दा च रोहिणी।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २६ ॥

इसके अनुसार श्रीकृष्णचंद्र का गण 'मनुष्य' पाया जाता है और राधा का गण 'राक्षस' होता है। इन दोनों में भी बैर रहना चाहिये। फिर इन में प्रीति क्यों थी वा राधा कृष्ण की कथा सत्य नहीं है ?

## राशिमेलनम्

इसी तरह पूर्वकाल में राशि भी नहीं मिलाते थे। देखो शीघ्रबोध पृ० १ में—

षष्ठे स्त्री पुंसयोर्वैरं मृत्युः स्यादष्टमे ध्रुवम्।
द्विद्वादशे च दारिद्र्यं नवमं पञ्चमेल कलिः ॥

अर्थ—स्त्री की राशि से पुरुष की राशि वा पुरुष की राशि से स्त्री की रशि छठी हो तो बैर हो। आठवीं हो तो मृत्यु हो। २. १२ हो तो दरिद्र। ९. ५ हो तो कलह हो।

अब विचारिये कि रामचंद्र का जन्म राशि कर्क सिद्ध ही है। सीता की कुम्भ राशि मालूम ही है इसमें कर्क से कुम्भ ८ वां होता है और कुम्भ से कर्क ६ वां होता है, यह विवाह क्यों हुआ ? फल भी मालूम है।

इसलिये इस मिथ्या मिलान को छोड़ वेदोक्त विधि से विवाह करने का यत्न कीजिये तबहीं आनंद मिल सकता है, अथवा नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरांत वर्तमान समय में वर खोजने का कार्य नाई बारी इत्यादि से कराया जाता है, जो बुद्धि के विपरीत है। मित्रो ! सौ दोसौ रुपये का कार्य्य तो आप स्वयं करते हैं, फिर भला यह काम जो लड़का लड़की के जीवन भर के सुख का साधन है इसलिये अपने आप देखकर करना चाहिये क्योंकि निर्बुद्ध मनुष्य लोभ में आकर जो कर बैठें वह थोड़ा है। देखिये—

इस लोभ में आकर औरंगज़ेब ने अपने पिता और भ्राताओं को मार डाला, लोभ के कारण आजकल भ्राताओं में नहीं बनती, फिर भला उनका क्या कहना जो दिन रात धन की लालसा में लगे रहते हैं। चाहे लड़का काला कबरा आदि क्यों न हो, जहां लड़के के बाप ने उनकी मुट्ठी गर्म करने का कौल किया या खूब आवभगत से लिया कि वे लड़की वाले से आकर लड़का तथा कुल की बहुत प्रसंशा करते अर्थात् सम्बन्ध कराही देते हैं। यदि लड़के वाले ने सुध न ली तो लड़का उत्तम होने पर भी बहुत अप्रशंसा करते हैं, जिसके कारण पति पत्नियों में मेल नहीं रहता। इन्हीं कुप्रबंधों के कारण बहुधा जन नाना प्रकार के कुचाली होगये अथवा बहुतेरी बालिकाओं को जीते २ रंडापे का स्वाद चखा।

नाई बारी आदि के दुखड़े का तो रोना था ही, परंतु महान् शोक का स्थान है कि माता पितादि भी न लड़के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को देखें, न लड़की को यदि आँखें खोलकर देखते हैं तो कितना रुपया पास है, क्या २ माल टाल है। पुत्र, पुत्री, चोर, ज्वारी क्यों न हों, चाहे समस्त धन को दोही दिन में उड़ादें, लड़की अपने फूहरपने से गृह को पति के अर्थ जेलखाना भले ही बनाये, परन्तु इसकी उन्हें कुछ चिंता नहीं। और जब कोई बुराई मालूम होती है तो कहते हैं कि क्या करें हमारे यहां तो सदा से ऐसा ही होता आया है। प्रिय महाशयो ! नहीं नहीं देखिये, हमारे ऋषि पुकार पुकार कर कहते हैं कि चाहे पुत्र पुत्री मरण पर्यंत कुमारे रहें, परन्तु अदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण कर्म स्वभाव का विवाह न करें।

विष्णुस्मृति अध्याय १ श्लोक २ में लिखा है कि उत्तम कुल में उत्पन्न हुई सजातीय सुलक्षणा स्त्री से शास्त्रोक्त विधिवत् ब्याह करें।

अनेनेव विधानेन कुर्याद्दारापरिग्रहम्।
कुले महित सम्भूतां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥

इस स्थान पर यह भी स्मरण रहे कि कुलोंकी उत्तमता जाति वा धनादि से नहीं होती, वरन् मनुष्यों के कर्म, शील, गुण, इन्द्रियों के दमन अथवा नम्रता आदि से होती है। शुक्र-नीति में लिखा है—

कर्म शील गुणः पूज्यस्तथा जाति कुले नहि।
नामात्मना न कुले नैव श्रेष्ठत्वं प्रतिपद्यते॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कारण हमारे परम पूज्य विदुर जी महाराज ने लिखा है कि वही कुलश्रेष्ठ है, जिसके स्त्री पुरुष वेदों को पढ़कर यज्ञ दानादि श्रेष्ठ कर्म वेदानुसार करते हैं। जहां माता पितादि दुःख नहीं पाते, झूंठ नहीं बोलते, धर्म भ्रष्ट नहीं करते तथा जिसमें सुकर्म न होते हों वह कुल बहुत धन होने पर भी नीच तथा त्यागने योग्य है जैसा—

तपा दमा ब्रह्मवित्त वितानःपुण्यांविवाहाः सततंचान्नदानम्।
येष्वेवैते सप्तगुणाभवन्ति सम्यग्वृत्तास्तानि महाकुलानि॥
येषां व्रतं न व्यथतं न योनिश्चत्तमसादेन चरिन्त धर्मम्।
ये कीर्ति मिच्छन्तिकुलेविशिष्टांत्यक्तानृतास्तातिमहाकुलानि॥

मनु० अ० ३ श्लोक ६३ में लिखा है कि खोटे विवाहों, कर्म के छोड़ने, वेद के न पढ़ने और ब्राह्मणों की सेवा न करने से कुल नीचपन को प्राप्त हो जाते हैं।

कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदान ध्ययनेन च।
कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेण च॥ ६३॥

इस लिये अ० ३ के श्लोक १ वा २ में लिखा है कि जिन कुलों में (१) क्रिया कर्म वेदानुकूल न होते हों, (२) जो सत्पुरुषों से तथा (३) वेदाध्यायन से रहित हों, (४) मनुष्यों के शरीर पर बड़े बड़े बाल हों, (५) जिन कुलों में बवासीर, (६) धातु क्षीण, (७) मृगी, (८) दमा, (९) खासी, (१०) कोढ़ादि असाध्य रोग हों ऐसे कलों को धन, धान्य, गाय, अश्व, हाथी आदि राज्यश्री से सम्पन्न होते हुए भी त्याग देना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हीनं क्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्शकम् ।
सत्वामयाव्यपस्मारि श्वित्रिकुष्टिकुलानि च ॥
महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजाविधन धान्यतः ।
स्त्री सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत् ॥

शिवपुराण ज्ञानसंहिता अध्याय ३६ में ऐसा ही लिखा है।

मान्यवरो ! महात्मा मनु आदि ऋषि पुत्र पुत्री की विधि मिलान की इस प्रकार आज्ञा देते हैं कि पिता की सात पीढ़ी सगोत्र, पिता के गोत्र तथा ऊपर कहे दश कुलों को त्याग हंस हस्थिनी के समान गमन करने वाली सूक्ष्म लोम, उत्तम केश तथा कोमल दांत, सुन्दर शरीर, जिसका हो ऐसी पुत्री से पुत्र का विवाह करे। इसी भांति पुत्र के भी समान गुण कर्म शुभ लक्षण देखकर पुत्री का विवाह करे। इसी प्रकार ऋग्वेद मं० ४ अ० १ सूक्त मं० ७ में कहा है कि जो कन्या अपने समान वर और जो ब्रह्मचारी अपने तुल्य कन्या से विवाह करते हैं वे अन्तरिक्ष के मध्य में ईश्वर से स्थापित सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों के तुल्य शोभित होते हैं। जैसाकि—

तमिन्नयेव समनासमानमभिकृत्वापुनर्ताधीतिरश्याः ।
ससस्य चर्मन्नधि चारुपृश्नेरग्रेरूपआरुपितंजवारु ॥

यजुर्वेद अ० ११ मन्त्र ६३ में लिखा है कि जिसके हाथ कोमल उंगलियां सुन्दर कोढ़ आदि रोगों से रहित, ऐश्वर्यवान, कमाने वाले, उत्तम, गुणवान, और रमण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले पतिसे विवाह करे। मन्त्र ७० में लिखा है कि कन्या अपने से अधिक बल और विद्या वाले पति को स्वीकार करे और आ० १२ म० ६२ में लिखा है कि चोर अथावा चोरों से सम्बन्ध रखने वाले तथा हीन क्रिया वाले पुरुषों से विवाह न करना चाहिये।

प्रिय सुयोग्य महिलाओं और योग्य भाइयों! प्राचीन काल में उपरोक्त बातों को मिलाकर बहुत सोच समझकर जोड़े का जोड़ा देख भाल अपने मित्रों आदि से सम्मति लेकर विवाह करते थे तब ही रूपवान्, बलवान्, पराक्रमी, गुणवाली, विद्वान्, धनवान आदि गुणों सहित माता, पिता आचार्य्य की आज्ञा पालन करने वाली, देश सेवी, वैदिक धर्म प्रेमी, यशवान और पूर्ण आयु वाली सन्तान उत्पन्न होती थी। इसके उपरांत यह भी स्मर्ण रखना चाहिए कि विवाह दूर देश में करने से सुख और निकट करने से दुःख एवं कलह का कारण होता है जैसा ऋग्वेद अ० १ अ० ४ अ० ४। म० १। सू० ४८ म० ७ और यजुर्वेद अ० ११ मं० ७२ में लिखा है।

विवाह संस्कार के पश्चात् कन्या के पिता को योग्य है कि अपनी पुत्री को स्त्री धन अर्थात् योग्य वस्त्र अलङ्कार तथा धनादि पदार्थ दे जैसा अथर्ववेद कां० १४ सू० १ मं० १३ में उपदेश है और कां० १ सू० १४। मं० ४ में लिखा है कि वधू पक्षके स्त्री पुरुष विनती करके श्रेष्ठ वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को भूषण और वस्त्रों से सजा कर कन्या दे विदा करें। ऐसा ही सूक्त १४ मं० ४ में कहा है।

## विवाह के पश्चात् विदाके समय माता पिता की प्रार्थना वर से

अथर्व कां० १४ सू० मं० २ में लिखा है कि बधू के माता पिता वर से कहें कि यह सुशिक्षित एवं गुणवती कन्या आपको सौंपते हैं जो आप के माता पिता आदि समस्त कुटुम्बियों को पालन पोषण एवं अपने सुप्रबंध से प्रसन्न करती हुई स्वयं सुखी रहेगी।

## बधू की विदा

अथर्व कांड १४ सू० १ मं० २० में लिखा है कि प्रतापी वर गुणवती बधू को उत्तम रथ पर चढ़ाकर अपने घर को लेजावे।

## वर के घर पर बधू के पहुंचने पर गृही आदि स्त्रियों का कर्तव्य

अथर्व० सू० २ मं० ३४ में लिखा है कि बधू के घर पहुँचने पर कुल की स्त्रियां बधू का स्वागत कर शांति स्वस्तिवाचन आदि गान कर आनन्द मनावें वर बधू सब को नमस्ते करें। जैसाकि—

अप्सरसःसद्यमादंमदन्तिहविर्धानमन्तरासूर्यञ्च।
तांस्तेजनित्रमभिताः परेहिनमस्ते गन्धर्वर्तुनाकृणोमि॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फिर बड़ों की आज्ञानुसार शुद्ध जल आदि से स्नान कर अग्नि होत्र के पश्चात् यज्ञकुण्ड की परिक्रमा करे तथा कुटुम्बी लोग सन्मान से उन दोनों का स्वागत करें इसके पीछे सास ससुर आदि सुवर्ण के आभूषण आदि जो जो पदार्थ दें वधू उनको सादर स्वीकार कर घर के बाल बच्चों, सेवक, पशुओं, अन्न, जल इत्यादि के प्रबंध में प्रवृत्त हो और आनन्द के साथ पति में सदा पूर्ण प्रीति बनाये रहे जैसा कां० १४ सू० १ मं० ४० व ४१ में उपदेश है।

फिर सब मिल कर वधू को आशीर्वाद दें कि वह पति प्राणप्रिया हो सदा आनंद में रहे तथा दूरदर्शीवीर कीर्तिमान सन्तान को उत्पन्न कर सौभाग्यवती, विद्वानों का मान करे।

## नवीन बधू का कर्तव्य

कां० १४ सू० १ मं० २१ में उपदेश है कि बधू पतिगृह में पहुंचकर अपनी विद्वता, शुभगुणों, प्रिय बचन और बर्ताव से सबको प्रसन्न करे तथा अपने बड़े स्त्री और पुरुषों की हित, शिक्षा, आशीर्वाद, विद्या और बुद्धि के बल से अपने कर्तव्यों में ऐसी चतुर हो कि सास, ससुर, देवर, जेठ, नन्द आदि सब बड़े छोटे उसकी प्रतिष्ठा करें और जो दुष्ट स्त्रियां घर में आवें उनको बधू अपनी चतुराई से ऐसा परास्त करे कि वह अपना सा मुंह लेकर चली जावें और फिर वह कभी न आवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## नवीन वर बधू का कर्तव्य

१–परमात्मा को सब स्थानों और सब कालों में प्रत्यक्ष जान कर निर्विघ्नता से गृहस्थाश्रम के कर्तव्यों को पूरा करे।

२–परस्पर उत्तम गुण और उत्तम स्वभाव को हृदय में धारण कर विचार पूर्वक विघ्नों को हटाकर निष्कपट हो अपनी उन्नति की चेष्टा करें।

३–विद्या सुशीलता आदि गुणों से सुभूषित सुयोग्य इष्ट मित्रों सहित शुभ गुणों का आदर करके परस्पर हित करें और परमात्मा को धन्यवाद दें कि जिसके अनुग्रह से ऐसा शुभ अवसर मिला है।

४–शरीर के सब अंगों को सुडौल और हृष्ट पुष्ट बनाये रहें।

५–परस्पर शुभ गुणों और मर्य्यादाओं का सदा मान कर उत्तम प्रबंध से गृहस्थाश्रम की शोभा बढ़ा सब पदार्थों को उपयोगी बनाकर सुख भोगें।

६–सदा दोनों समय परमेश्वर की उपासना करके परस्पर प्रेम से सन्तान उत्पन्न कर उनको सुशिक्षित बलवान बनाने और धनों के संग्रह करने में सदा तत्पर रहकर कीर्तिमान हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## विद्वान् धर्मात्मा स्त्री पुरुषों का धर्म

धर्मात्मा वीर स्त्री पुरुष प्रयत्न के साथ विघ्नों को हटाकर वधू को धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त कर सदा उनको शिक्षा देते रहें कि तुम सदा परमात्मा का विश्वास कर उनकी उपासना करते रहो क्योंकि उन्हीं की कृपा से विद्वान् पति पत्नी का मेल हुआ है वही तुम्हारा प्रतिस्थान पर सहायक है और हम भी आशीर्वाद देते हैं कि वह तुम्हारी प्रति स्थान पर रक्षा करे।

## नई बधू के साथ कुटुम्ब के स्त्री पुरुषों का कर्तव्य

१-सब कुटुम्बी जन वधू को शिक्षा दें कि वह विदुषी बधू, योग्यता के साथ पति से प्रीति करके प्रसन्नता पूर्वक गृह कार्यों को सिद्ध करे।

२-सब कुटुम्बी लोग पुरुषार्थी बन मिलकर धैर्य से घर में रहें और सन्तान आदि को शिक्षा दान से बढ़ायें तथा ऐश्वर्य बढ़ाकर गृहस्थाश्रम को शोभायमान करें।

## बधू के गृहजनों का अन्तिम कर्तव्य

पुत्री के विवाह होजाने पर वधू के पिता आदि एक दिन यज्ञ कर ईश्वर और जिन स्त्री पुरुषों ने इस कार्य्य में सहायता दी है उनका अच्छे प्रकार धन्यवाद दें।

## वरके गृहीजनों का बधू के साथ कर्तव्य

प्रथम सब स्त्री पुरुष प्रयत्न करें कि पितृ कुल से पृथक् होकर जो नई बधू हमारे यहाँ आई है वह सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रकार से प्रसन्न रहे और बड़ी स्त्रियों के समान पौरुष ऐश्वर्य, व्यवहार, कुशल और तेजस्विनी प्रसन्नता पूर्वक गृहकार्यों को करती रहे।

## वर के माता पिता आदि का अन्तिम कर्तव्य

विवाह के अन्त पर एक दिन नियत कर यज्ञ करें और उस दिन शुद्ध अंतःकरण से जगदीश्वर और उन विद्वान् सज्जन मित्रों तथा सम्बन्धियों का सत्कार पूर्वक धन्यवाद दें जिनकी कृपा से वर को स्त्री रत्न की प्राप्ति हुई जैसा अथर्वकां० १४ सू० १ मं० २५ में कहा है।

परादेहि शामुल्यं ब्रह्मभ्या विभजाबसु।
कृत्यैषा पद्वती भूत्वा जापाविशाते पतिम्॥

## जो स्त्री पुरुष विवाह उत्सव में सम्मिलित हों उनका कर्तव्य

१—अथर्वकां० १५ में लिखा है कि कोई दुष्ट विवाह में विघ्न डाले तो सब मिल कर यथाशक्ति शाँति करा कार्य सिद्ध करायें।

२—शुभचिंतक स्त्री पुरुष ऐसा प्रयत्न करें जिससे विद्वान् जन प्रसन्न होकर आशीर्वाद दें कि बधूवर, कुटुम्ब, पोषण करने वाले तथा विद्वान् और पराक्रमी होवें।

३—परमात्मा की महती कृपा का ध्यान करके विद्वान् लोग बधूवर को वियोग के कष्ट से बचाकर परस्पर प्रेमास्पद बनावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४–विद्वान् लोग परमेश्वर से प्रार्थना करके आशीर्वाद देवें कि वर बधू अपनी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ रह कर सम्पत्ति और ऐश्वर्य प्राप्तकर के सदा प्रसन्न रहें।

अब वर्तमान समय में माता पिता इत्यादि सम्बन्धी, मित्र, पुरोहितकी सम्मति से जो कार्य होते हैं उनका भी संक्षेप से वृतान्त सुन लीजिये जिनके कारण धन और समय व्यर्थ जाने के उपरांत ब्रह्मचर्य का सत्यानाश होता है बराती और घराती नाना प्रकार के औगुणों को सीख लेते हैं जिस से देश और जाति का बड़प्पन जाने के उपरांत सभ्यता में अन्तर आ जाता है, अपने आप नानारोगों में फ़ंस संतानों को भी जीवन पर्यन्त दुःख उठाना पड़ता है यद्यपि आज कल एम० ए० बी० ए० और पंडिताई की अनेक उपाधियां प्राप्त कर लेते हैं तो भी निम्नलिखित बातों पर कुछ ध्यान ही नहीं देते जिससे भारत रसातल को चला जा रहा है इसलिये देश के हितैषियो ! यदि आप अपनी भलाई और सुख चाहते हैं तो नीचे वर्णन ! गई बातों को छोड़ दीजिये।

## * बरात में बहुत भीड़भाड़ ले जाना *

बरात को अधिक संख्या एवं ठाट बाट से ले जाने में दोनों तरफ क्लेश होता है। प्रबन्ध और आदर सत्कार भी अच्छी तरह नहीं होने पाता और धन भी ज्यादा खर्च होता है, अतएव थोड़े मनुष्य बरात में लेजाना श्रेष्ठ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## बखेर

बखेर करना सब तरह से हानिदायक है, क्योंकि लालच बुरी बला है बखेर का नाम सुनकर दूर दूर के भङ्गी आदि के साथ लूले, लंगड़े, अपाहिज, कंगले, दुर्बल भी इकट्ठे होते हैं, इधर नगर निवासी छोटे बड़े जन अटारियों तथा बाजारों में ठट्ठ के ठट्ठ लग जाते हैं। बखेर करने वाले भी वहां पर मुट्ठियां अधिक मारते हैं, जहां स्त्रियों तथा मनुष्यों के समूह अधिक होते हैं। मुट्ठी के चलते ही हज़ारों स्त्री पुरुष बाल बच्चे तले ऊपर गिरते हैं कि जिससे अवश्य ही दस बीस के चोट आती तथा एक आध अधमरे भी हो जाते हैं। अन्धे, ळंगड़े लूले आदि की अत्यन्त कुगति होती है और ऐसा कुहराम पड़ता है कि कोई किसी की नहीं सुनता समधी के दरवाज़े पर तो ठट्ठ के ठट्ठ लग जाते हैं, जब वहां रुपयों की मुट्ठी चलती है उस समय लूटने वालों को बेहोशी हो जाती है। जो वहां दुर्दशा होती है वह देखने ही से जानी जाती है। भला बताइये तो इस बखेर से क्या लाभ? कि जिनमें ऐसे २ कौतुक हों तथा धन भी व्यर्थ जावे? जितना रुपया फेंका जाता है उसमें आधे से अधिक मिट्टी आदि में चला जाता है, बाकी एक तिहाई हट्टे कट्टे भंगियों को मिलता शेष रहा सो सामान्य जनों को, लूले लंगड़े अपाहिजों के हाथ कुछ भी नहीं आता, वरन उसका काम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तमाम होजाता है। इस सूरत में आने जाने वाले लालाजी की कुछ लोग प्रशंसा भी करते हों, पर बहुधा वे जन कि जिनके चोट आ जाती या जिनकी कोई चीज़ खो जाती है वह सब लालाजी के नाम को रोते हैं।

## बाग़बहारी अर्थात् फूलटट्टी

फूलटट्टी की वर्तमान समय में वह चर्चा है कि रङ्गीन काग़ज और अबरख के फूलों के स्थान पर ( जो वह भी फ़ज़ूलखर्ची में कम न थे ) हुण्डी नोट, चांदी सोने की कटोरियां, रुपये अशर्फियों तकके तख्तों में लगाने की नौबत आ पहुंची। यों तो सब अपने रुपये और माल की रक्षा करते हैं, परन्तु हमारे देश भाई आंखों के सामने खड़े होकर कठिनता से संग्रह किया धन खुशी से लुटवा देते हैं, । कुछ लाभ नहीं उठाते, हाँ यह अवश्यमेव सुनने में आता है कि फ़लाने लाला या साहूकार की बरात में फूलटट्टी अच्छी थी, हरचंद बचाई गई पर न बची, लड़की वाले के द्वार तक न पहुँचने पाई कि फूलटट्टी लुटगई। अब विचार करने का स्थान है कि विवाह के कार्य की प्रसन्नता के पहले लूटने की अशुभवाणी मुँह से निकालना कि 'अमुक की फूलटटी लुट गई' कैसे बुरा है, इसके सिवाय इसमें लट्ठ भी चल जाते हैं, मजिस्ट्रेट तक नौबत पहुंचती है प्यारे भाइयो सच पूंछो तो आरम्भ ही में ग़मी का सामान होजाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## आतिशबाज़ी

इससे न कोई संसार का लाभ न पारलौकिक सुख, किन्तु वर्षों का उपार्जन किया हुआ धन क्षणमात्र में जलाकर राखकी ढेरी बना देते हैं। इस प्रकार भीड़-भाड़ होती है कि एक के ऊपर दस दस गिरते हैं, एक इधर जाती एक उधर, यहां तक धकापेल मचती है कि बहुधा देखने वाले बेदम हो जाते हैं। किसी की पैर की उँगली मिची, किसी की दाढ़ी जली, किसी की भौंहों तथा मूछों का सफ़ाया हुआ किसी का दुपट्टा तथा किसी का अंगरखा जल गया, किसी किसी के हाथ पांव भुन जाते हैं। बहुधा मकानों के छप्परों में आग लग जाती है कि जिससे हाहाकार मच जाता है, बहुधा उन में नुकसान हो जाते हैं कभी २ मनुष्य तथा पशु भी जल कर प्राण त्यागते हैं इस के अतिरिक्त वायु बिगड़ जाती है कि जिससे प्राणीमात्र की आरोग्यता में अन्तर पड़ जाता है और इन सबका पाप समधी के सिर पर चढ़ता है।

## रण्डी का नाच

रण्डियों केनाच ने तो भारत को ग़ारत कर दिया। क्योंकि तबला सारङ्गी के बिना भारतवासियों को कल नहीं पड़ती। बरात के आने जाने वालों की वह जीवन प्राण है, समधी तथा समधिन का पेट उसके बिना नहीं भरता। जहां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बरात चली, विषयी जन बिना बुलाये चलने लगते हैं, जो रुपया उसको दिया गया, उसका तो सत्यानाश हुआ ही उसके साथ ही बहुत सी हानियों के मार्ग खुल जाते हैं। नाच ही में कुमार्गी मित्र उत्पन्न हो जाते हैं, नाच ही में हमारे देश के धनाढ्य साहूकार लज्जा को तिलांजलि दे देते हैं, नाच ही में इनको शिकार फँसाने तथा नौजवानों का सत्यानाश मारने का समय ( मौका ) हाथ लगता है। बाप, बेटे, भाई, भतीजे सब एक महफ़िल में बैठ लज्जा को दूर कर उसका अच्छे प्रकार घूरते तथा आँखें सेकते हैं। सच पूंछो तो रण्डियाँ हैज़े और ताऊन का औतार हैं। हैज़ा दो घण्टे में काम तमाम कर देता है, प्लेग दो दिन में, लेकिन यह सुन्दरियां रुलारुलाकर और घुलाघुला जान मारती हैं यह वह काली नागिनें हैं जिनकी आंखों में ज़हर है। यह वह चश्मे हैं जहां से जरायम के सोते निकलते हैं यह वह मशीन है जिससे आतशक सुजाक आदि घृणित बीमारियाँ पैदा होती हैं। अनेकान सुयोग्य महिलायें उनकी बदौलत आजन्म खून के आंसू बहाया करती हैं कितने ही होनहार युवक इनकी बदौलत नष्ट भ्रष्ट हो गये किसी महात्मा ने कहा है।

दर्शनात् हरते चित्तं स्पर्शनात् हरते बलम् ॥
मैथुनात् हरते वीर्य्यं वेश्या साक्षाद्राक्षसी ॥

दर्शन से चित्त, छूने से बल, मैथुन से वीर्य्य नष्ट हो जाता है, अतः वेश्या को राक्षसी के समान जानों।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तिस पर भी तो बाप बेटे को कुछ नहीं समझता, जहां आँख लगी कि चकनाचूर हो जाते हैं, प्रतिष्ठा तथा जवानी को खोकर बदनामी का तौक़ गले में पहिनते हैं, अनेकान इश्क के नशे में चूर होकर घरबार बेचकर दो दो दानों को मारे मारे फिरते हैं, कोई धन कमा कमाकर इनकी भेट चढ़ाते हैं और स्वयं निर्धन होकर महा दुःखी होते हैं।

बहुधा स्त्रियाँ जो महफिल का नाच देख लेती हैं उन पर इसका ऐसा बुरा असर होता है जिससे घर के घर उजड़ जाते हैं, क्योंकि जब वे देखती हैं कि सम्पूर्ण महफिल के लोग उस मालजादी की ओर टकटकी लगाये हुये उसके नाज़ नखरे सह रहे हैं। जब वह थूकने का इरादा करती है तो एक आदमी उगालदान लेकर हाज़िर होता है। यदि पान खाने की ज़रूरत हुई तो भी निहायत नाज तथा अदब के साथ पेश किया जाता है। उसको सोने चाँदी के आभूषणों और अतलस, गुलबदन, कमख़ाब, सासनलेट, गिरंट आदि के इत्र में बसे हुए कपड़े पहरते देखकर विद्याहीन स्त्रियों के मन में कुवासनायें उत्पन्न होजाती है जिसका आखीर नतीजा यह होता है कि बहुधा खुल्लम खुल्ला लज्जा को त्याग रण्डी बनकर गुल छर्रे उड़ाने लगती हैं कोई २ रेल पर सवार हो अन्य देशों में जा अपने मनकी आशा पूर्ण करती हैं, क्या यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हमारी तुम्हारी बहू बेटियाँ नहीं हैं ? यदि हैं तो फिर कैसे शोक का स्थान है कि कुछ भी विचार न कर आंखों पर पट्टी बांधे हुये अपने पैरों में अपने हाथ से कुल्हाड़ी मारते चले जाँय।

इसके अनन्तर जब दर्वाजों पर रण्डियां गाली गाती हैं तब भीतर से उसका जवाब होता है। उस समय कैसे २ अपशब्द बोले जाते हैं जिसे अन्य देशी सुनकर हँसते हँसते पेट फुलाकर कहते हैं कि इन्होंने तो रण्डियों को भी मात कर दिया। धिक्कार है ऐसी सास आदि पर जो मनुष्यों के सम्मुख ऐसे ऐसे शब्द उच्चारण करवावें। अथवा रण्डियों से इस प्रकार की गालियां सुनकर भाई, बन्धु, माता, पिता आदि की किंचित् लाज न करें और गृह के बीच घूंघट में रहें तथा आवाज़ से बात भी न कहें। सच पूंछो तो विवाह क्या है, मानों परदेवालियों को बेशर्म बनाना है, इस पर तुर्रा यह कि खुश होकर रण्डियों को रुपया दिया जाता है जिससे वह ईद और बकराईद पर गुलछर्रे उड़ाती है। निश्चय इन हत्याओं का पाप भी हमारे सिर पर है। किसी कवि ने कहा है।

शुभ काज को छाँड़ कुकाज रचें, धन जात है व्यर्थ सदा तिनको,
एक राँड बुलाय नचावत हैं, नहिं आवत लाज ज़रा जिनको।
मिरदङ्ग भने धृक है धृक है सुरताल पुंछे किनका किनका,
तब उत्तर राँड बतावत है धृक है इनका, इनका, इनको॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यदि बुद्धिमानी से पक्षपात त्यागकर विचार कीजिये तो रंडियों के नाच ही के कारण बालहत्या, स्त्रीहत्या, पुत्र हत्या, गौ हत्या, कुलहत्या, आत्म हत्या और संसार हत्या के उपरांत धर्म और ईश्वर में श्रद्धा तथा सत्सङ्ग में इच्छा और उत्तम मित्रों से मेल नहीं होता जिससे भारत का सत्यानाश होगया और होता जाता है।

## भाँड़

ज्योंही वेश्याओं के नाच से निश्चिन्त हुए त्योंही भाँडों का लश्कर बरसाती मेंढकों की तरह भाँति भाँति की बोली बोलता हुआ निकल पड़ता है अब लगीं तालियां बजने, कोई किसी की घुटी खोपड़ी में चपत जमाता है। कोई गधे की भाँति चिल्लाते हुए अनेक प्रकार से कोलाहल मचाते तथा ऐसी नकलें बनाते और सुनाते हैं कि लालाजी, सेठजी, पण्डितजी आदि की प्रतिष्ठा में पानी पड़जाता है। ऐसे २ शब्दों को उच्चारण करते हैं कि जिनके लिखने में हमको लज्जा आती है परन्तु उस सभा के बैठने वाले जो सभ्य कहलाते हैं कुछ लाज नहीं करते वरन् प्रसन्नचित्त होकर हंसते २ अपना पेट फुलाते तथा पारितोषिक प्रदान करते हैं।

प्यारे सुजनों! इन्हीं व्यर्थ बातों से हमारी सन्तानों का सत्यानाश मारा गया। इस कारण इन मिथ्याप्रपंचों को शीघ्र त्याग विवाह आदि उत्सवों में महात्मा, संन्यासी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एवं विद्वान् उपदेशकों के व्याख्यान एवं उत्तम भजनीकों के भजन देशोन्नति, देश सेवा, विद्या की उत्तमता, ब्रह्मचर्य का महत्व, स्त्री शिक्षा के लाभ, वेद महिमा, वर्ण व्यवस्था-आदि विषयों पर कराइये तभी आत्मोन्नति करते हुये आप गृहस्थाश्रम के मुख्य धर्म उपकार को सीख सुख को प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार स्त्रियों को भी विवाह समय उपदेशयुक्त धार्मिक शिक्षा के भजनों को गाना तथा कोमलवाणी से स्त्री शिक्षा पर व्याख्यान भी देना उचित है।

अथोपरान्त दोनों ओर से कोई ऐसा काम न करना चाहिये कि जिससे आपस में प्रेम न रहे। बहुधा बरातों में दाने घास परोसे आदि तनिक तनिक सी बातों में ऐसे झगड़े डाल देते हैं कि जिससे समधियों के मनों में अन्तर पड़ जाता है कि जिसके कारण लाखों का दहेज देने पर भी आनन्द नहीं आता क्योंकि कहा है—

जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं यही प्रीति की बान।

सच है बिना प्रेम के सर्वस्व मिलने पर भी प्रसन्नता नहीं होती, अतः प्रीति पूर्वक प्रत्येक कार्य को करें कि जिससे दोनों तरफ प्रशंसा हो और खर्च व्यर्थ न हो। प्यारे सुजनों! तनिक तो विचार करो कि जब एक की बुराई हुई तो क्या वह हमारा सम्बन्धी नहीं है? क्या वह हमारी बदनामी नहीं हुई? सच पूंछो तो ऐसे संबधियों पर धता भेजना उचित है क्योंकि प्यारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भाइयो ! यह विवाह का समय आनन्द तथा प्रेम बरसाने या मृदुल कोमल वार्तालाप करने का है न कि एक दूसरे के विपरीत लीला रचकर युद्ध का सामान इकट्ठा कर लेने का और उन मनुष्यों की (जो मन से दोनों की अपकीर्ति चाहते हैं और बाहर से बहुत लल्लोपत्तो करते हैं ) बातों पर कदापि ध्यान न दो क्योंकि इस संसार में दूसरों को निरन्तर प्रसन्न करने के लिये मिथ्या प्रशंसा करने वाले बहुत हैं तथा सुनने में अप्रिय परन्तु वास्तव में कल्याण करने वाले बचनों को कहने और सुनने वाले पुरुष दुर्लभ हैं जैसा कि —

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्यतु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

बहुधा गुप्त शत्रु तथा दुष्ट लोग सम्मुख हां में हां मिलाते हैं और पीछे बुराई निकाल कर दर्शाते हैं, तथा सज्जन लोग मुंह पर प्रत्येक वस्तु के गुण व दोष वर्णन करते और परोक्ष में प्रशंसा करते हैं, अतः दोनों समधियों आदि को योग्य है कि आपस में प्रत्येक बात का निर्णय कर जो दोनों को लाभदायक हो अङ्गीकार करें, जिससे दोनों ही आनन्द में रहें । यही विवाह का मुख्य फल है ।

वर्तमान समय के पंडित लोग विवाह के समय हवन भी पूर्ण रीति से नहीं कराते, बरन् गणेश (महादेव के पुत्र) का पूजन वेदोक्त मंत्र (गणानांत्वा०) आदि से करते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा बीच बीच में दक्षिणा लेते जाते हैं, जिसकी आज्ञा पुराने ग्रन्थों में नहीं मिलती और यह बुद्धि के भी विरुद्ध है क्योंकि सब जानते हैं कि महादेव पार्वती के विवाह के पश्चात् इन गणेशजी का जन्म हुआ होगा, तो इससे पहले जो हमारे पूज्यों के विवाह संस्कार हुए होंगे उनमें इन गणेश का पूजन कैसे हुआ होगा ? इससे ज्ञात होता है कि प्रथम सब गुणों के ईश परमात्मा का पूजन होता था, जिसके स्थान पर अब मिट्टी के गणेश बना कर पूजन कराकर दक्षिणा लेने लगे।

मान्यवरो ! इस प्रकार बीच २ में दक्षिणा देना भी अत्यन्त बुरा है क्योंकि बीच में पंडित तथा यजमान में दक्षिणा का झगड़ा होने से वैदिक संस्कार का स्वाद बिगड़ जाता है तथा श्रोताओं को आनन्द नहीं आता, अतः संस्कार के अन्त में यथा रुचि दक्षिणा देना श्रेष्ठ है।

तदुपरान्त वर्त्तमान समय में विवाह संस्कार होने के पश्चात् पुत्र तथा पुत्री वाले दान भी करते हैं जो भूड़ दक्षिणा अथवा देहरी के नाम से ब्राह्मणों को मिलती है जिसमें हर साल हज़ारों रुपये के दान होजाते हैं। परन्तु वर्त्तमान समय की रीति से दाताओं से लेने वालों को एक दो दिन के भोजनों के सिवा कुछ लाभ नहीं होता, अतः दान करने की रीतों को विचार कर दान करना अभीष्ट हैं, जिससे दान का फ़ल दाताओं को मिले तथा देश का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कल्याण हो, धन भी व्यर्थ नष्ट न होने पावे क्योंकि धन एक उत्तम पदार्थ है।

---

# धन की महिमा

हे सज्जन पुरुषो और सुयोग्य महिलाओ ! संसार के सब कार्य लक्ष्मी जी के सहारे से चलते हैं। जितनी बातें हमारे जीवन के लिये आवश्यक हैं वा जिससे हमारा जीवन, भोगबिलास, सुखचैन तथा आराम से कटता है वे सब इन्हीं लक्ष्मीजी के अधीन है, इसी के द्वारा गौरव प्रतिष्ठा विभव ऐश्वर्य सुख आनन्द यश कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है अथवा यूं कहना अत्युक्ति नहीं है कि लौकिक और पारलौकिक सुखों का विकास इसी से होता है। इस लिये क्या राजा क्या प्रजा सब के सब इसी के लोभी बने भटकते फिरते हैं जैसा कि,

टकाकर्ता टकाहर्ता टका मोक्षप्रदायकः।
टका सर्वत्र पूज्यन्ते बिना टका टकटकायते ॥

आत्मा की शुद्धि ज्ञान से, ज्ञान आरोग्य शरीर से, आरोग्यता उत्तम अहार विहार सुनियम और निश्चन्तिता से एवं निश्चन्तिता धन से प्राप्त होती है। संसार में प्रतिष्ठा तथा राजसन्मान विद्या से होता है, विद्या गुरु सेवा से आती है और गुरु सेवा धन से होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकेन्द्र, सुरेन्द्र, महेन्द्र, राना, राव, साहूकार, सेठ, नव्वाब, मजिष्ट्रेटी आदि सब लक्ष्मी जी ही के तो खेल हैं। सी० आई० ई० सितारे हिन्द की उपाधियां सब लक्ष्मी जी ही की तो उपाधियां हैं। वास्तव में उस सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने धन को एक विचित्र और अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मानों उसको (उप) सर्व शक्तिमान बना दिया है। जिनके बाप दादे निर्धनता के कारण जुगुनू के सदृश चमकते थे आज उनके बेटे धन की बदौलत सूर्य के समान संसार में प्रकाशित हो रहे हैं। जिन घरों में चन्द्रमा की चांदनी के समान प्रकाश हो रहा था आज उन घरों में अन्धकार छाया हुआ है, चन्द्रवंशी तथा सूर्यवंशी जिनका प्रभाव चन्द्रदिवाकर की भांति समस्त भूमण्डल में हो रहा था अब वह बहुतेरे कर्ज़ के बन्धन में ऐसे जकड़े हुए हैं कि जिससे पलमात्र को चैन नहीं पड़ता और जिनकी जाति पाँति का नाम भी न सुना था वह राय, राव इत्यादि कहलाते हैं। हम क्या ? जगत के मनुष्य इस बात को कहते हैं कि ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि में धन को ही उत्तम पद दिया है, संसार के सब काम तथा सम्बन्ध उसी के आधीन रक्खे हैं। उस विश्वम्भर के पीछे हमारी आवश्यकता तथा सुख साधन के निमित्त से बढ़कर कोई पदार्थ नहीं। देखिये नीति में लिखा है कि जिस मनुष्य के पास धन है वही कुलीन, वही पंडित, वही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शास्त्र जानने वाला, वही गुणज्ञ, वही वक्ता, वही दर्शन करने योग्य है इसी के द्वारा मनुष्य आपत्तियों से बच जाते हैं। वीर हो, सुन्दर बोलने वाला हो परन्तु धन के बिना संसार में यश एवं कीर्ति को नहीं पाते, पद्मपुराण सर्ग ३ अध्याय ६४ श्लोक ३७ व ३८ में लिखा है कि माता, पिता, पुत्र, भ्राता, सुहृद तथा स्त्रियां निर्धन पुरुष को ऐसे छोड़ देती हैं जैसे वर्षा ऋतु के पीछे तालाब सूख जाने पर मछलियां तालाब को छोड़ देती हैं। महाभारत उद्योगपर्व अध्याय ७२ वा चाणक्य नीति तथा हितोपदेश में भी ऐसा ही कहा है। तदनन्तर जब फिर तालाब में पानी आजाता है तो फिर गये हुए पशु पक्षी फिर आ जाते हैं उसी भांति निर्धन जब धनवान होजाता है तो फिर उसको चारों तरफ से घेर लेते हैं।

किसी महात्मा का बचन है कि शील, शौच, शांति, चातुर्य, मधुरता, कुलीनता यह सब निर्धन मनुष्य को शोभा नहीं देते। भर्तृहरिजी ने लिखा है कि शील पर्वत से गिर कर चूर होजाय, शूरता भी जाती रहे, जाति भी रसातल को चली जाय, परन्तु केवल एक धन बचा रहे क्योंकि उसके बिना सर्व गुण तृण के समान जान पड़ते हैं ऐसा ही युधिष्ठिर ने यक्ष तथा अर्जुन को उपदेश दिया है कि धन से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और कीर्ति की उन्नति होती है : सच तो यह है कि निर्धनता से सारा उत्साह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और उमंग भीतर का भीतर ही नष्ट होजाता है । सारी इच्छाएं हृदय में ही रह जाती हैं। विचार की तरंगें हृदय रूपी मंदिर में नहीं ठहरतीं । मुख से दीन बचन निकलते हैं। इतना ही नहीं वरन् जिस प्रकार कंजूसों का यश, क्रोधियों के गुण, मूर्ख का सत्य, व्यसनों से जमा किया हुआ धन, विपत्ति से स्थिरता, चुगली से कुल और मद से विनय नष्ट होजाता है। उसी प्रकार दरिद्रता से अपनी प्रतिष्ठा का नाश होजाता है। जैसा कि किसी कवि ने कहा है—

अहोनु कष्टं सततंप्रवासस्ततोऽति कष्टः परगेहवासः।
कष्टाधिकानीच जनस्य सेवाततोऽतिकष्टा धन हीनता च ॥

अर्थात् विदेश में निरन्तर रहना कष्टदायक है लेकिन इससे अधिक दूसरों के घर में रहना तथा नीचजनों की सेवा दुःखदाई है। परन्तु इन दोनों से बढ़कर दुःख देने वाली दरिद्रता है। जैसा किसी ने कहा है।

वासुदेव जराकष्टं कष्टं निर्धनजीवनम् ।
पुत्रशाको महाकष्टं कष्टात्कष्टतरं क्षुधा ॥

अर्थात् संसार में सबसे बढ़कर कष्ट देने वाली दरिद्रता और उससे उठी हुई भूख की ज्वाला है । मियां नज़ीर ने कहा है—

कौड़ी के जहान में नक़्शे नगीन हैं।
कौड़ी नहीं पास तौ कौड़ी के तीन २ हैं॥

अथर्व कांड २ सू० १४ और कांड ५ सू० ७ मंत्र ८ में लिखा है कि निर्धनता के कारण मनुष्य घर से निकल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जाते और कुरूपी हो जाते हैं। क्रोध लोभ और मोह के वशीभूत हो अनेकान कुचेष्टायें करने लगते हैं लज्जा हीन एवं आलसी बन जाते हैं। इसलिए ऋग्वेद। १०। १५५। १ में लिखा है कि हे धनहीन, विरूप कुरूप दुखी करने वाली दरिद्रते! तुम निर्जन पर्वत पर चली जाओ नहीं तो वज्र के तुल्य दृढ़ अन्तः करण वाले मनुष्य अपने पराक्रम से तुम्हारा नाश कर देंगे इसका अभिप्राय यह है कि बलवान्, पुरुषार्थ द्वारा दुःख देने वाली दरिद्रता को दूर करे इसी भाव को लेकर किसी कविने कहा है।

चलीजा अलक्ष्मी कुरूपे विरूपे। बसो पर्वतों पै हटो, दूर जाओ॥
नहीं तो तुम्हारा बुरा हाल होगा। महाबीर्य्य शाली तुझे मार देंगे॥

यजुर्वेद अ० २१ मं० २७ में कहा कि जिस प्रकार विद्वान लोग ब्रह्मचर्य, धर्माचरण, विद्या, सत्संग आदि से सब सुख प्राप्त करते हैं। उसी भांति मनुष्य पुरुषार्थ द्वारा लक्ष्मी को प्राप्त करे। क्योंकि गृहस्थाश्रम रूपी यज्ञ सुवर्ण आदि धन के बिना प्राप्त नहीं होता। य०अ० ८ मं० ६३ में उपदेश है कि धनको सदा पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त करना चाहिये। भर्तृहरिजी ने अपनी राजनीति में भी लिखा है कि आलसी मनुष्य धन प्राप्त नहीं कर सकते जो लोग बिना उद्यम किये ऐसा विश्वास करते हैं कि अब धन होगा, अब धन होगा यह उनकी भूल है।

इसके उपरांत शास्त्र में प्रारब्ध को बीज के समान माना है मान्यवरो! विचार करने का स्थान है यदि किसी पुरुष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास बीज हों और वह पृथ्वी आदि में न बोकर और पानी आदि से उसका उचित सींचना आदि न करे तो अन्न आदि की उत्पत्ति कहाँ से हो सकती। इसी प्रकार प्रारब्ध रूपी भूमि में उद्योग रूपी जलके देने से ही कार्य्य रूपी अंकुर निकल कर मनुष्यों को सुख दे सक्ता है। चाणक्यनीति में कहा है कि उद्योग दरिद्रता का नाश करता है। अयोध्याकांड सर्ग २ श्लोक १६ में लक्ष्मण जी का वचन है कि डरपोक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और शूरवीर लोग उद्योग कर सुख प्राप्त करते हैं। ऋग्वेद में लिखा है कि उद्यम से लक्ष्मी और राज्य की प्राप्ति होती पुरुषार्थ के बिना विद्या, अन्न और धन कभी नहीं मिलता और न शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती। इसलिए यजुर्वेद अ० ४० में उपदेश है कि हे मनुष्यों जब तक जियो तब तक आलस्य रहित होकर उद्योग से धनोपार्जन करते रहो जैसाकि—

"कुर्वन्नेवेहि कर्माणिजिजी विषेच्छत ँ समाः"

सच तो यह है कि पुरुषार्थ ही जीवन और आलस्य मृत्यु है। नियम पूर्वक पुरुषार्थ और उद्योग करने से मनुष्य बड़े २ दुस्तर समुद्र नदी आदि पार कर जाते तथा ऊँची से ऊँची चोटी पर पहुँच कार्य करते हैं। आकाश में वायुयानों के द्वारा चक्कर लगाते हैं। पृथ्वी को खोद अनेकान् प्रकार के रत्न और समुद्रों में गोता लगाकर बहु प्रकार के मोती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


निकालते हैं पदार्थ और शिल्प द्वारा अद्भुत और अनौखी वस्तुयें बनाकर व्योपार द्वारा लक्षाधीश होकर आनन्द मंगल के साथ संसार यात्रा को पूरा करते हैं। भर्तृहरिजी ने कहा है कि उद्योगी पुरुषसिंह के पास लक्ष्मी स्वयं आ जाती है। दैव देगा यह कायर और आलसी पुरुष ही कहा करते हैं और शूर, साहसी मनुष्य अपने शरीर की नव शक्तियों द्वारा उत्तम पुरुषार्थ, उत्तम कर्म और उत्तम प्रबन्ध से अप्रमादी हो ईश्वरीय भंडार में से वैभव की प्राप्त कर अनेकान प्रकार के सुखों को भोग कीर्तिमान होकर यश को प्राप्त होते हैं। जिस मनुष्य के साहस, धीरज, उपाय, बल, बुद्धि और पराक्रम यह छः मित्र होते हैं उसको इस भूमंडल में किसी प्रकार की कमी नहीं होती। सफलता का मूल मन्त्र पुरुषार्थ ही है। कबीर महाराज ने कहा है।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी ढूंढ़न गई, रही किनारे बैठ॥

अतएव विद्वानों के सत्संग से महा प्रतापी, गुणी पुरुष, विज्ञान और धन संचय कर सामर्थ्य को बढ़ावें। इसलिए परमात्मा आज्ञा देते हैं कि हे मनुष्य! तू निरालसी नेता पुरुषों के समान पुरुषार्थ कर और जिस प्रकार चतुर नाविक सावधानी से धार को काटता हुआ जल प्रवाह के ऊपर की ओर यात्रियों को ठिकाने पर उतारता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है उसी भांति पराक्रमी और पुरुषार्थी बन सबको कठिनाइयों से निकाल कर सुख पहुँचा, सच तो यह है कि कि आनन्द की जड़ पुरुषार्थ और दुःख का केन्द्र आलस्य है। अथर्व० कां० १६ सू० ३ में लिखा है कि मनुष्य उद्योग करके विद्याध्ययन और सुवर्ण धन से गुणी मनुष्यों को पाकर संसार में मस्तक के समान मुखिया होवे और जो आलस्य से शिर झुकाकर औंघते रहते हैं उनको **विद्या, सुवर्ण और राज्यादि ऐश्वर्य्य नहीं मिलते** अर्थात् ऐश्वर्य्य उन्हीं को मिलता है जो शिर उठाकर कार्य्य करते हैं वही इन्द्र अर्थात् सेठ साहूकार प्रसिद्ध होते हैं। और आगे भी होंगे और हम से पहिले भी हुए। देखो छोटी से छोटी चींटी कितना परिश्रम कर अन्न को इकट्ठा कर वर्षा में आनंद से अपने दिन व्यतीत करती है। अ० कां० १ सू० ३० मंत्र २ में और अ० कां० ३। सू० ४। मं० ४। कां० ५ सू० ७। मं० ५ में लिखा है कि स्त्री पुरुष परमेश्वर का ध्यान कर पूर्ण श्रद्धा और सत्य प्रतिज्ञा से अपने **बाहुबल और बुद्धि बल,** से शारीरिक, सामाजिक, आत्मिक, उन्नति करता हुआ विद्या धन और सुवर्ण आदि धन बढ़ाकर निर्धनता के क्लेशों को दूरकर आनन्द भोगे। और ऋग्वेद अ० २ सू० २५ मंत्र १ में लिखा है कि आलस्य को छोड़कर धर्म सम्बन्धी व्यवहार से धन को प्राप्त कर उसकी रक्षा और स्वयं भोगकर दूसरों को दे और भोग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करा कर उत्तम प्रकार से पुरुषार्थ करते रहें जिससे सबको सुख प्राप्त होवे। अ० ५। सू० ६१ मंत्र ६ में लिखा है जो लोग रात्री के चौथे पहर में जागकर ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करके उत्तम गुणों और ऐश्वर्य्य को मांगते हैं वे पुरुषार्थ से अवश्य सफल मनोरथ होते हैं।

सच तो यह है कि भारतवासी नियमानुसार कार्य को नहीं करते हां अनियम के साथ धन उपार्जन और उसका व्यय करने में लगे रहते हैं। जिसके कारण नाना प्रकार की हानियां होती हैं फिर भला संचय करने और उत्तम कर्मों में व्यय करने की कौन कहे। अथर्ववेद कां० ३२ सू० १४ मं० २ में कहा है कि मनुष्य धनके उपार्जन और व्यय करने का ऐसा प्रबन्ध करें जिससे पठन पाठन, गौ आदि पशुओं का व्योपार और अन्न आदि में हानि न हो किन्तु सब पदार्थों के यथावत् संग्रह से सर्व सुख की बृद्धि रहे जैसा कि—

निर्वो गोष्ठादं जामसि निरक्षात्रि रुषान सात।
निर्वो मगुन्दया दुहितरो गृहेभ्यश्चतयामहं॥

प्रत्येक कार्य्य को नियत समय पर करना अभीष्ट है बिना कार्यों के किये मानुषी ज्ञान की उन्नति नहीं हो सकती। स्वाध्याय और महात्माओं के वचन विलास के बिना मनुष्य को कर्तव्य और अकर्तव्य का भी ज्ञान नहीं होता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इस हेतु जो पुरुषार्थ का आश्रय कर अच्छे प्रकार प्रयत्न करते हैं वह अक्षय लक्ष्मी को प्राप्त कर आनन्द भोगते हैं। अथर्ववेद के काण्ड ५ सूत्र १६ के दस मन्त्रों में लिखा है कि मनुष्य प्रथम ईश्वर और आत्मा के ज्ञान से अपना बल बढ़ा सत्, रज, तम तीनों गुणों के विज्ञान से उन्नति कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को वृद्धि करें।

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश से उपकार लेकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद अहंकार को वश में रखकर पांचों ज्ञानेन्द्रिय, मन और बुद्धि को जीत कर यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के अभ्यास से अशुद्धि का नाश और ज्ञान के प्रकाश से विवेक प्राप्त कर शरीर के नव द्वारों को शुद्ध रख और कष्ट सहने का स्वभाव बनाकर दान, शील, क्षमा, वीर्य्य, ध्यान, प्रयत्न, सेवा, उपाय, दूत और ज्ञान इन दश प्रकार के बलों से युक्त हो ऐश्वर्य्यवान् होवे, जो मनुष्य इन पूर्वोक्त दश मन्त्रों में कहे पुरुषार्थ को नहीं करता वह पुरुषार्थ हीन अपनी और दूसरे की वृद्धि नहीं कर सकता अब कहिये कितने स्त्री पुरुष ऐसे हैं जो इन ऊपर लिखी हुई बातों को यथावत् कर पुरुषार्थी बनते हैं। मेरी समझ में बहुधा जन यह भी नहीं जानते कि इतनी बातों के करने का नाम पुरुषार्थ है। यदि हम वेद की



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आज्ञानुसार ऐसाही पुरुषार्थ करते रहते तो भारत की यह कुदशा कभी न होती। देखिये अथर्ववेद कां० १ सू० १५ मन्त्र ३ में कहा है जिस प्रकार पर्वतों पर जल के सोते मिलने से वेगवती उपकारिणी नदियां बनती हैं जो ग्रीष्म ऋतु में भी नहीं सूखतीं इसी प्रकार सब मिलकर विज्ञान, और उत्साह से तड़ित अग्नि, वायु, सूर्य, जल, पृथ्वी आदि पदार्थों से उपकार लेकर अक्षय धन को बढ़ावे और उसको उत्तम कर्मों में व्यय करें जैसाकि—

ये वदीनां सं स्रवन्त्युत्सासः सदमक्षितः।
तेभिर्मे सर्वैः सस्त्र वर्धनं सस्वाक्यामसि ॥

वर्तमान समय में उत्साह एवं पुरुषार्थ तथा धर्म से धन को प्राप्त न कर चालाकी, छल, कपट एवं विश्वासघात से धनोपार्जन कर अपनी संतानों को भी वैसी ही शिक्षा देते हैं और आप तो रात दिन निर्बल, ग़रीब, विधवा एवं निस्सहाय छोटे छोटे बच्चों की दीन हीन दशा को देखते हुए भी बड़े २ हाथ मारते एवं घूंस के नाम से धन लेकर अपने मन के मलोले पूरे करते हैं उनको यह नहीं मालूम कि इस प्रकार से कमाया द्रव्य दरिद्रता से भी अधिक कष्ट दायक एवं अपयश का कारण होता है। ऐसे धन से गृहस्थाश्रम की आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर जीवन की सार्थकता और अक्षय सुखों की प्राप्ति नहीं हो सकती और न ऐसे धन से मनुष्यत्व की महत्वता विकसित हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सकती है। क्योंकि यह धन नहीं किन्तु कलपते और नाना दुःख यन्त्रणाओं से आक्रांत हृदयों का ठण्डी आह से भरा हुआ ज़हरीला विष एवं अनाथों की हड्डियां हैं। निर्बल आत्माओं का उष्णरक्त यह धन नहीं प्रत्युत सात्वाधिकारियों के हृदय द्रावक विलाप के स्वर से भरी हुई मनुष्यत्व का नाश करने वाली प्रज्वलित अग्नि तथा रोती हुई माताओं के आँसू हैं। अतएव जिन कुलों और घरानों में ऐसे धन की वृद्धि होती है वहां से सन्तोष, क्षमा, दया, सुबुद्धि, आरोग्यता, सुख और शांति का सदा के लिए लोप होता देखा गया है। क्योंकि मनु अध्याय १२ श्लोक ५ में कहा है पर द्रव्य अन्याय से लेना मानसिक पाप है "परद्रव्येष्वभिध्यानम्,, पराई वस्तु अथवा धन ले लेने में अनेक प्रकार से मिथ्या भाषण करना होता है इसलिये उनको वाणी के पाप भी होते हैं बिना दिये धन का ग्रहण कर लेना शरीर का अशुभ कर्म है। "अदत्तानामुपादनम्,,

इसलिये ऐसे नर नारियों को मन वाणी और शरीर इन तीनों द्वारा कृत कर्म का दण्ड भोगना पड़ता है उनको तीनों प्रकार की यातनायें सहनी होती हैं! जब वाणी के पाप से उसकी बुद्धि नष्ट होजाती है और मानसिक पाप के प्रतिफल में मनुष्य नाना बुरे संकल्पों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समूह में घिरा रहता है। तब शरीर में उसके सारे कार्य्य अधर्म्मयुक्त अथवा कल्याणकारी मार्ग से गिरने वाले होते हैं एवं उनके फल में नर नारियों के दुखों का राज्य बढ़ने लगता है। इसी को दूसरे प्रकार यों समझो कि मनुष्य का जैसा धन होता है उसका अन्न और सारी खाद्य सामिग्रियां भी उसी भाव से युक्त रहती हैं। एवं खाद्य भोजन से रस, रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेदा, मेदा से हड्डी, हड्डी से मज्जा, मज्जा से शुक्र अर्थात् वीर्य्य बनता है, साथ ही शरीर पोषक इन सप्त धातुओं में क्रमानुसार वह भाव भी जाता है। अतएव निकृष्ट भावों से बुद्धि पर वैसाही प्रभाव पड़ता है और बुद्धि नाश से मनुष्य का नाश अवश्यम्भावि है। इसी हेतु नाना अधर्मों द्वारा सञ्चित होने से दुष्टों का धन दुख देने वाला तथा धर्माचरण भाव से सञ्चित होने के कारण सज्जनों का धन सुख जनक होता है।

ऋग्वेद में कहा है कि जो अन्याय से इकट्ठे किये हुये किसी पदार्थ का भोग करते हैं उनका धन, सामर्थ्य विद्या और आयु का क्षय होता है। इसीलिये, कुरु पाण्डवों की सन्धि कराने के लिये हस्तिनापुर में गये हुए श्रीकृष्णजी ने भोजन के लिये निमंत्रित किये जाने पर महाराजा दुर्योधन से कहा था कि "आपका दुष्ट भावों से पूरित अशुभ अन्न मेरे ग्रहण तथा भोजन करने योग्य नहीं है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः ऋग्वेद अ० २ मं० २ सूत्र २७ मन्त्र ७ में लिखा है कि अन्याय से किसी के धन को ग्रहण करने की इच्छा न करो किन्तु धर्म्मयुक्त व्यवहारों से यथाशक्ति धन का संचय करते रहो। मं० १ अ० ३ सू० ३२ मं० १६ में कहा है कि जो कोई चोरों की भांति द्रोह से पराये पदार्थों को लेते हैं वे धर्म को नहीं जानते इस हेतु मनु महाराज ने कहा है कि धर्म से रहित धन को त्यागना उचित है क्योंकि पाप से कमाई करने वाले किसी कर्म के अधिकारी नहीं रहते अतः अपने जीवन के अर्थ अधर्म से धन को प्राप्त न करना चाहिये।

न्यायोपार्जितवित्तेन कर्तव्यं स्वात्मरक्षणम्।
अन्यायेनतु यो जीवेत्सर्वकर्म वहिष्कृतः॥

इस हेतू अन्यान्य शुद्धियों की अपेक्षा धन की शुद्धि मुख्य है अतएव जो धन को अन्याय अधर्म से सञ्चय नहीं करते वही वास्तव में पवित्र है मट्टी और जल से शरीर को धो लेना यथार्थ शुद्धि नहीं जैसा कि अ० ५ श्लोक १०६ में लिखा है।

सर्वेषामेवशौचानामर्थशौचंपरंस्मृतम्।
योऽर्थेशुचिहिस शुचिर्नमृद्वारि शुचिःशुचिः॥

साथ ही अन्याय और अधर्म से धन सञ्चय करनेवालों को बुद्धि भ्रष्ट रहने के कारण उनमें धर्म शिक्षा के सद्भाव नहीं ठहरते। यजुर्वेद अ० ४० मं० १५ में कहा है कि चमकीली धन आदि वस्तुओं की इच्छा रूपी बर्तन से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य का, सत्य रूप ब्रह्म का, सत्य रूप ज्ञान का अथवा सत्य रूप धर्म का मुख ढका हुआ है अतः यदि उसको प्राप्त कर अपनी उन्नति करना चाहते हो, अपनी महत्ता को प्राप्त करना चाहते हो, अपनी उच्चता और उत्कृष्टता को सिद्ध करना चाहते हो तो अपनी उस इच्छारूपी वर्तन को उठाओ अर्थात् चमकते हुये द्रव्यों की इच्छा से आँख मीच कर अर्थ-लोलुप न बनो।

हिरण्य मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्म्मायदृष्टये॥

इस हेतु ऐसी कुरीतियों से धन जमा करने का स्वभाव बनाने से प्रथम इस प्रकार धन बटोरने और संचित करने वाले अपने सम्बन्धियों और मित्रों पड़ोसियों तथा नगर निवासियों पर दृष्टि डालो तो मालूम होगा कि वह शारीरिक और सामाजिक दुःखों से निरन्तर दुखी हैं और वास्तव में जिन कार्य्यों अथवा मन्तव्यों की पूर्ति के लिये धन संचय करना आवश्यक था उस धन से इन कार्यों और मन्तव्यों की पूर्ति कोसों दूर होजाती है।

प्यारे भाइयो! इसका कारण यह है कि संसार में धन ही एक ऐसा पदार्थ है जिससे लौकिक और पारलौकिक इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। धन ही एक ऐसा स्रोत है जहाँ से सभी प्रकार के सुखों का विकास होता है अतएव जब तुमने अन्याय पूर्वक दूसरों से ऐसी मूल्य-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वान वस्तु को छीन लिया तब निश्चय जानो उसकी सारी उन्नतियों पर कुठाराघात किया। उसकी सारी इच्छाओं पर पानी फेर दिया। उसके सारे संकल्पों और मनोरथों को चूर्ण कर दिया। भला फिर आप और आपके परिवार की उन्नति कैसे हो सकती है ? आपकी इच्छायें कैसे पूर्ण हो सकती हैं ? आपके संकल्प और आपके मनोरथ कैसे सफल हो सकते हैं ? महात्मा भर्तृहरि कहते हैं जो जन अपने स्वार्थ के लिये दूसरों की स्वार्थ रक्षा का ध्यान नहीं रखते अर्थात् उनके हानि लाभ की पर्वाह नहीं करते वे मनुष्य नहीं किन्तु मानव स्वरूप में राक्षस हैं। देखिये यजुर्वेद में कहा है जो मनुष्य मन वचन, शरीर से झूंठे आचरण कर अन्याय से अन्य जनों को पीड़ा देकर अपने सुख के लिये औरों के पदार्थों को ग्रहण कर लेते हैं ईश्वर उनको नाना प्रकार के दुख देकर मरने पर नीच योनियों में जन्म देता है जहाँ वे अपने किये हुए पापों के फलों को भोगते हैं।

अथर्ववेद कां० ६ सू० ४ मं० १६ में कहा है कि धनादि पर-पदार्थ हरण करने वाले नर नारी ईश्वरीय नियम से कुत्ता, कुतिया, कछुवे और कीट आदि नाना हिंसक स्वभाव वाली योनियों में जन्म लेते हैं।

ते कुष्टिकाः सरमायेकूर्मेभ्या अदधुः शफान्।
अबध्य मल्य कीटेभ्यः शववर्तेभ्यो अधारयन॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी हेतु यजु० अ० ४० मं० १० में कहा गया है, कि सम्पूर्ण सृष्टि में जो दृष्टिगत होता है उन सबमें परमेश्वर व्यापक है जो नरनारी उसकी आज्ञाओं को भूल जाते हैं वे सब दुःखों को भोगते हैं, इसलिये हे जीव ! तू किसी का धन लेने की इच्छा न कर।

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

इसलिये सुख भोगने के हेतु अथवा मनुष्य जीवन को निर्दोष एवं निष्पाप बनाये रखने के लिये धर्म्म और न्याय से धन संचित करने का स्वभाव बनाओ ऋग्वेद में कहा गया है, कि हे मनुष्यो ! यदि तुम धन की इच्छा करो तो **धर्मयुक्त पुरुषार्थ** द्वारा सञ्चय करने की चेष्टा करो। यजु० अ० २० मं० ६९ में कहा है कि जो धर्म के आचरण से धन को बढ़ाते हैं वे ही **प्रशंसनीय** हैं। ऋ० मं० ५ सू० ६१ मं० १२ में बतलाया है कि जो पुरुषार्थ द्वारा **न्याय और धर्म** से चांदी सोना आदि धन धान्य को इकट्ठा करते हैं वे ही सूर्य्य तुल्य प्रकाशित और यशस्वी होते हैं एवं वेही महात्माजन सच्चे परोपकारी हैं। ऋग्वेद १६। मं० १० में लिखा है कि मनुष्य को परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे जगत् पिता ! आप हमको विद्या, सहनशीलता, प्रफुल्लता और दयादि के द्वारा उपार्जित धन से युक्त कीजिए। हे देव, सुबुद्धिमान् नेताओं की शुभ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मति और सहाय से हमको धन की प्राप्ति कराओ तथा हमारे कोषों को पवित्र धन से भरपूर करो और ऋग्वेद ३ १६ । ३ में कहा है हे तेजस्विन् ! आप हम सब को ऐसा धन दीजिए जो उत्तम पुरुषार्थ से युक्त, सन्तान सहित, निरोगता और बल से युक्त हो । यजुर्वेद अ० ६ मं० ७२ और अथर्व कां० ६ सूक्त ४० में भी लिखा है कि मनुष्य धर्म पूर्वक उत्तम २ पदार्थ प्राप्त करे लेकिन बहुत सम्भव है कि इसी रीति पर लक्षाधिपति न हो सकें परन्तु निश्चय रखो कि **अधर्म** और **अन्याय** से धन संचित करने वालों से कहीं अधिक **सुख** और **शांति** का अनुभव होगा । साथ ही यद्यपि लक्ष्मी चंचल कही जाती है परन्तु जो धर्म से उपार्जन करते हुए अपने कर्तव्यों को पूरा करते एवं किसी भी समय में धैर्य्य से विचलित नहीं होते, दान, अध्ययन, यज्ञ और पितृ, गुरु, अतिथियों की विधिवत् पूजा करते, जितेन्द्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, सत्यवादी, श्रद्धावान, अक्रोधी, पर-निन्दा से अलग, दानशील तथा अन्यों की उन्नति और समृद्धि की बढ़ती को देख ईर्षा द्वेष के वश को शत्रुता करने के ध्यान से विरत, श्रेष्ठाचार सम्पन्न, मितव्ययी, संचयी, और अपने हक़ पर सन्तुष्ट तथा दूसरों को भी उनके सत्व के अनुसार समग्र वस्तुयें देने वाले, कृपावन्त एवं सरल स्वभावी अपने कुटुम्बी अथवा सेवकों को यथोचित् भोजन वस्त्र धनादि से सन्तोषित रखने वाले लज्जाशील, दस बजे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पीछे शयन और सूर्योदय से प्रथम ब्रह्ममुहूर्त में उठ परब्रह्म के ध्यान में लगने वाले, मङ्गलमय सुन्दर सुन्दर वस्तुओं से द्विज श्रेष्ठों की पूजा में अनुरक्त, दीन हीन अनाथ आतुर, बूढ़े, निर्बल, अबला को सहायता देने वाले, त्रासित, दुःखित, व्याकुल, भय से आर्त, व्याधित, कृश, हृत सर्वस्व आदि आपदग्रस्त को आश्वासन, देने वाले, अहिंसक, सत्यनिष्ठ, सर्व जीवों पर यथेष्ट दया, एवं पर-स्त्री सम्पर्क को पाप समझने वाले, सदा दान, दक्षता, सरलता, उत्साह, अहंकार, हीनता, परम सुहृदता, क्षमा, सत्य, दान, तपस्या, शौच, करुणा, निष्ठुरता रहित मित्रों के विषय में अद्रोह, तथा असूया, निषाद, स्पृहा रहित, नीतिवान् साहसी, परिश्रमी होने के साथ अपने देश एवं मनुष्य जाति की आवश्यकताओं को देश और काल के अनुसार पूरा करने में लगे रहते हैं उनके समीप लक्ष्मी अपना चञ्चल-पन भी छोड़ देती है। अर्थात् बहुत दिनों तक बनी रहती है। जो स्त्री पुरुष अधर्म अर्थात् बेईमानी से धन को लाते हैं उनको अनेकान पुरुष खाते पीते चैन उड़ाते हैं परन्तु लाने वाला ही पाप का भागी होता है अन्य सब खा पीकर पृथक् हो जाते हैं जैसा विदुर जी महाराज धृतराष्ट्र ने कहा है।

एकःपापानि कुरुते फलं भुङ्क्ते महाजनः।
भोक्तारो पापमुच्यन्ते कर्त्तादोषेण लिप्यते॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लिए मोह में फंसकर सब पाप को अपने ऊपर लेना योग्य नहीं देखिए श्रीरामचद्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा है कि संसार में जीवन थोड़े दिन का होता है इस लिए अधर्म से पृथिवी का राज्य लेना भी भला नहीं। यही कारण था जिससे भरत महाराज ने माता की आज्ञा और राम के राज्य त्यागने पर भी अयोध्या के राज्य को ग्रहण नहीं किया इसका नाम है धर्म पर चलना। इसका नाम है परमेश्वर को उपासना। वेद में कहा है कि जिस कार्य्य के करने से धर्म जाता हो उसको कदापि न करना चाहिये, किन्तु अपने परिश्रम, साहस, उद्योग और पुरुषार्थ से जितना धर्मानुकूल धन आप प्राप्त कर सकें वही आपके हमारे और अन्यों के लिये अमृत के समान है वही यथार्थ में धन है वही सुख शांति देने वाला है उसी से आप के सच्चे मनोरथ पूर्ण होंगे उसी से संसार में कीर्ति और यश फैलेगा वही गृहस्थों में उत्तम गृहस्थ दर्शनों के योग्य है सत्सङ्ग के काबिल है, संसार के पार लगाने का वसीला है, ऐसेही उत्तम मनुष्यों को देव कहते हैं। आओ सब मिलकर परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमारे देश में धर्म से धन पैदा करने बाले गृहस्थी हों जिससे वानप्रस्थ और सन्यासी देश के उद्धार करने वाले निकल सकें। इसके उपरांत धन प्राप्त करने वालों को इस बात का भी ध्यान नहीं कि अन्याय से उपार्जित धन किसी को सुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देता और न अधिक दिन ठहरता है किन्तु महात्मा चाणक्यजी के लेखानुसार ग्यारहवें वर्ष के लगते ही मूल सहित नष्ट हो जाता है। जैसाकि—

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते एकादशे वर्षे समूलं तु विनश्यति॥

आपने यह भी सुना होगा जो धन जिस प्रकार आता है उसी प्रकार चला जाता है। जैसाकि "माले हराम बूद बजाए हराम रफ़्त। अर्थात्—

रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवे त्यों जाय।
जिमि अन्धी पीसत मरे चून स्वानिनी खाय॥

अतएव अधर्म से धन कमाने का स्वभाव छोड़ धर्म से धन कमाना और उसमें से थोड़ा २ संचय करना उचित है क्योंकि जैसे एक २ अक्षर पढ़ाने से विद्वान् और थोड़ा थोड़ा चलने से पर्वतों के पार पहुंच जाते हैं उसी प्रकार थोड़ा २ जोड़ने से बहुत धन इकट्ठा होजाता है देखिये अथर्व वेद कां० १ सू० १ मन्त्र ४ में कहा है कि जिस प्रकार दूध, घी और जल की बूंद २ मिलकर धारें बँध जाती हैं उसी प्रकार उद्योग करके थोड़ा २ संचय करने से बहुतसा धन एकत्रित हो जाता है। इसलिये धर्म से धन संचय कर उसको उत्तम कार्यों में व्यय करने का स्वभाव डालिये। क्योंकि सत्कार्यों में व्यय करनेसे ही सुख की प्राप्ति होती है जैसा कि अथर्व कांड ७ सूत्र ७४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मं० ११ में लिखा है कि जिस प्रकार गौ थोड़े मूल्य की घास खाकर और शुद्ध जल पीकर घी दूध दे उपकार करती है उसी भांति मनुष्यों को परिमित व्यय से शुद्ध अहार विहार करके संसार का उपकार करना चाहिये।

वर्तमान में वस्तुओं के अधिक मूल्य होने के उपरान्त हमारी आपकी इच्छायें इतनी बढ़ गई हैं जिसका कुछ वारापार नहीं जिसको देखो जिससे मिलो जिससे बात करो प्रत्येक नर नारी पहिले अगर वह रोटी, दाल खाते थे तो अब रोटी, दाल, भात दो चार तरकारी, पापड़, और शाम को कुछ मिठाई कुछ नमकीन कुछ चटपटी वस्तुओं के बिना पेट ही नहीं भरता कङ्गाल से कङ्गाल धनिया, निमक, खटाई की चटनी खाये बिना नहीं रहता प्रथम हम कुएँ के पानी से अपनी प्यास को शांति कर तृप्त रहते थे परन्तु अब चाहिये बर्फ़। जब हमारा हाजमा स्वयं (जितेन्द्रियता, व्यायाम, वायु सेवन, उचित अहार विहार से) हो जाता था परन्तु अब जठराग्नि प्रदीप्त करने के लिये लेमनेड और सोडा की बोतलें चाहिये, सिगार और सिग्रेट की ज़रूरत है। पहिले दिमाग़ी ताकत के लिये मामूली घी दूध, फल के अतिरिक्त किसी वस्तु के उपयोग की आवश्यकता न थी परन्तु अब अनेकान पौष्टिक और सुगन्धित तैलों की ज़रूरत। जब हमारी बढ़िया पोशाकका बिल १० का था तो आज सौ का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होता है और पचास से कम का तो किसी दशा में नहीं। ऊपर से कालर, टाई, नेकटाई, फुलबूट का खर्चा अलग रहा। शाम को बाजारों की सैर सपाटे में यारों दोस्तों का साथ होना ज़रूरी है साथ ही चार छः पैसे की तो कौन कहे चार पांच आने भी कम ही हैं। क्योंकि फूलों की माला आलू मटर की चाट कुलफ़ी की बढ़िया बर्फ़ पान सिगरेट इत्यादि लेना आवश्यक ही हैं। इसके उपरांत जितने बड़े आदमी हुये उतने ही अधिक सामान की ज़रूरत होती जाती है। त्योहारों, उत्सवों, विवाह इत्यादि में तो खर्च का कहनाही क्या ? स्त्रियों के वस्त्रों की लागत का अनुमान लगाना कठिन है नित्य नई फैशन निकलती है इसी भाँति शौकीनी चीज़ों की खरीदारी का बाज़ार ऐसा गर्म है कि एक बाइसिकल वा मोटर खरीदी गई उससे खूबसूरत और नज़र पड़ी तो वह मँगाई गई फिर यदि उस से भी अच्छी दृष्टिगोचर हुई तो उसके मंगाने का कारखाने को आर्डर भेजा यदि किसी कारण आने में देरी हुई तो डबल तार दिया गया। एक बग्घी घर पर है फिर भी रबड़ के पहियों की देख मन ललचा आया। इधर नौटङ्की, थियेटर, रासलीला, बाइस्कोप और सिनेमा के टिकट खरीदने में चकनाचूर होजाते हैं। नाजुक इतने होगये कि बिना छाता लगाए पैदल चला नहीं जाता। इक्का तेज़ रफ़्तार जो मिस्ल हवा के उड़ता जाय चाहे उजरत बजाय दो आने के चार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आने क्यों न लेलें, इतर फुलेल की फुरहरी हरदम कान में रहती है बेला चमेली के तेलों के खर्च के सिवाय मुंह हाथ बिना साबुन के साफ़ नहीं होते। हर घर में मर्द और बच्चे बूढ़े हर एक के पास एक २ साबुन की बट्टी देखलीजिये। विलायती कंघा, कंघी, आयना हर एक के पास दिखलाई देता है जहां दो चार पैसे की चूड़ियां पहन कर स्त्रियों की शोभा होती थी वहां अब चार छः आने में उतना आनन्द नहीं आता बल्कि रबड़ की उम्दा चूड़ियों की मांग बढ़ती ही जाती है, नाना प्रकार की बेलें हर स्त्री के पास देखलीजिये। इसके उपरान्त विलायती वारनिश किया हुआ सिलोपर एक नहीं दो नहीं तीन २। एक घरका, एक बाहर जाने का एक बक्स में बन्द जो ज़रूरत पर काम देता है। स्टील बक्सों की इतनी भरमार है कि एक घर में जितने आदमी उतने बक्स नहीं बल्कि किसी २ बड़े आदमियों के तो दो २ तीन २। हजारों नर नारियों के पास मनीबेग होंगे चाहे उसमें एक दुअन्नी ही क्यों न हो। उम्दा चश्मा तथा अच्छी हाथ में बांधने की बढ़िया घड़ी। स्वदेशी आन्दोलन इतना हुआ फिर भी फ़ैशनेबिल कपड़ों की लालसा दूर नहीं हुई। वही ६० लाख से ऊपर विलायती कपड़े की खपत होती है इसके उपरांत दो करोड़ की भङ्ग, चरस, दो करोड़ की ताड़ी, १० करोड़ की शराब, १॥ अरब की तमाकू पी जाती है। कोकीन,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सिगरेट जो विलायत से आते हैं वह अलग। ३ लाख के मिट्टी के खिलौने जो विलायत से आते हैं भारतीय शौक़ीनजन ख़रीद कर अपने घरों को सजाते हैं जहां घर पर कोई खुशी हुई गैस की या बिजली की रोशनी के बिना मज़ा ही नहीं आता।

मैं आपको कहां तक विलासिता के ख़र्च बताऊं हज़ारों रुपये के मसनूई सोने के ज़ेवर जर्मन आदि से आते हैं जिनको हमारे देश की स्त्रियां ख़रीद कर असली चांदी के सिक्के देकर अपना शौक़ पूरा करती हैं।

अनेकान छोटे दर्जे के आदमी फ़र्स्ट सैकन्ड में बैठकर सफ़र कर व्यय का बोझ अपने सर पर लेते हैं बहुधा भाई अपने को सिर्फ बड़ा सेठ दिखाने की गर्ज से ही अनेक प्रकार का आसायशी सामान खरीदते चले जाते हैं और यह नहीं सोचते कि एक अँग्रेज़ की आमदनी प्रति दिन ४रु० १२ आने और जापानी की ४=) है वहां प्रत्येक भारतवासी की आमदनी का औसत प्रतिदिन केवल ६ पैसा है और उसपर ख़र्चों की यह भरमार। बिलासिता की यह बूटी मनुष्यों को स्वतः अधर्म सधन उपार्जन और इकट्ठा करने को विवश कर देती हैं। प्रमाण के लिये जैसे २ यह कामनायें बढ़ीं तैसे २ ही बेईमानी छल, विश्वासघात का बाजार गरम होता जा रहा है कोई भी किसी विषय में अपने स्वार्थ के लिये चालाकी करने से नहीं चूकते, अपना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपराध होने पर भी दण्डनीय होने एवं प्रायश्चित करने की अपेक्षा, किसी प्रकार हमारे ऊपर यह अपराध सिद्ध न हो कि हम दण्डनीय हो सकें इसीके लिये हम अपनी सारी शक्ति ख़र्च कर देते हैं। सारांश यह है कि जैसे देखा देखी इन इच्छाओं की वृद्धि होती जा रही है वैसे ही हम अधर्म से धन कमाने में लवलीन रहते हैं धर्म और न्याय से हम धन एकत्रित नहीं कर सकते इसलिये व्यर्थ की इच्छाओं को दमन करने और फ़िज़ूल ख़र्ची छोड़ने का यत्न करना चाहिये। बुरी टेवों तथा व्यर्थ विलासता और नामवरी का झूंठा भूत भगा प्रतिदिन के व्यय को कम कर यथार्थ व्ययी बनकर संसार में सुख मार्ग का प्रचार कीजिये। वर्तमान समय में अनेकान जातियां यथार्थ ख़र्च कर अपने देश और क़ौम, का सितारा बुलन्द कर रही हैं आप सुखी होकर औरों को सुखमार्ग बता रही हैं। भारतवासी मस्त इतने हैं कि अगर उनके पास रुपया नहीं तो अपना ज़ेवर आदि जायदाद गिरवी रखकर फ़िज़ूल ख़र्च कर उस समय अपने मनको प्रसन्न करते हैं फिर थोड़े ही दिनों में ऋण पर सूद और सूद पर सूद अधिक होजाने के कारण उनको जायदाद एक दो तीन होजाती है फिर वह कौड़ी २ के लिये दरबदर मारे २ फिरते हैं विष खाकर या कुएँ में गिरकर अथवा घर से निकल अपना पिंड छुड़ाते



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं अथवा न्यायालयों में झूंठी हलफ़ उठा कर रुपया मारने की चिन्ता आदि न जाने क्या क्या कौतुक रचते हैं।

इसलिये यथार्थव्ययी बनकर अपनी और देश की रक्षा कीजिये। क्योंकि धर्मानुसार धन कमाने और यथार्थ व्यय करने को द्रव्य यज्ञ कहते हैं इसी से इस लोक परलोक के आनन्द मिलते अर्थात् 'धर्मोरक्षति रक्षतः' धर्म की रक्षा करने से धर्म हमारी रक्षा करता है। जिस प्रकार एक २ कौड़ी जमा करने से माल जमा हो जाता है इसी प्रकार एक २ कौड़ी व्यर्थ अपव्यय करने से क़ारुँ का ख़ज़ाना ख़ाली होजाता है।

इस हेतु सदा अपनी आमदनी को देखकर ख़र्च करने की टेव डालना मुनासिब है और सदा इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि आमदनी से ख़र्च कम हो क्योंकि कभी २ बीमारी, विवाह, इत्यादि बहन, भाई, बिरादरी के काम आते रहते हैं। इसके उपरांत सदा किसी व्योपार और काम में नफ़ा नहीं रहती कभी २ आसमानी आफ़तें भी आती जाती रहती हैं जैसे ओले पड़जाना, अकाल आदि। अगर हम अपनी आमदनी में से थोड़ा २ बचा कर जमा न करेंगे तो फिर ऐसे समयों पर कहाँ से लायेंगे उस समय हमारी क्या दशा होगी। यदि हमने ऋण लिय अथवा दूसरों के सामने हाथ पसारा तो हमारे मुख की छबि बिदा हो जायगी वह प्रतिष्ठा जो अब तक थी न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रहेगी। वरन् हमारे बेतुके ख़र्च करने पर लोग हँसेंगे। इस हेतु इन बातों को सोच समझ कर अपनी आमदनी के भाग को यथा योग्य ख़र्च करना चाहिये। इसी भांति विवाह आदि में प्रथम एक चिट्ठा तैय्यार कर उस पर अपने भाइयों, मित्रों से परामर्श लेकर व्यय करना अभीष्ट है, जिससे अपव्यय कर निर्धनता के दुःख न सहने पड़ें। घर घर मांगने की आवश्यकता न हो, ऋण लेने की ज़रूरत न पड़े क्योंकि वेद में लिखा है कि ऋण और अनुचित मांगने व्यभिचार आदि बुरे कर्मों के करने से संसार में अपयश होता है कुल की प्रतिष्ठा और यश जाता रहता है। स्वयं चोरी आदि कुकर्मों में फंस न मालूम किन किन आफ़तों का मुक़ाबिला करते करते यमपुर को चले जाते हैं। रहे धनवान उनको भी फ़िज़ूल व्यय को छोड़ देश सुधार में धन व्यय करना चाहिये वरन् इन मिथ्या कार्य्यों में धन व्यय करने का पाप उनको होगा। इसके उपरांत अन्य जन उनकी देखा देखी इन्हीं कामों को करने लग जायेंगे जिनके पाप भी श्रेष्ठ पुरुषों को होंगे। क्योंकि बड़ों की देखा देखी छोटे भी किया करते हैं इसलिये बड़ों को बहुत सावधानी से नियमानुकूल कार्य्य करना चाहिये।

प्राचीन काल में अपनी आमदनी व्यय करने के लिये विभाजित कर लेते थे जिसके कारण वह शांति के साथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक तीनों प्रकार की उन्नति करते थे इस विषय में अथर्ववेद कांड० ३ सू० २४ मंत्र ६ में लिखा है। सब कुटुम्बी लोग जो धन धान्य कमावें उसमें से अधिकांश अनदेखे बिपत्ति समय के लिये प्रधान पुरुष के पास रक्खें और शेष के सात भाग करके तीन भाग विद्यावृद्धि और राज्य प्रबन्ध आदि और चार भाग सामान्य निर्वाह खान पान वस्त्र आदि में व्यय करें जैसाकि—

तिस्रोमात्रां गन्धर्वाणां चतस्रो गृहपत्याः।
तासां या स्फांतिमत्तमा तया त्वामिमृशामसि॥

महात्मा रामचन्द्र अपने संचित द्रव्य के पांच भाग कर एक धर्म, दूसरा यश प्रकाशनार्थ, तीसरा भाग अपने खर्च में, चौथा भाग भाई बन्धुओं के लेन देन, पांचवाँ भाग बिपत्ति काल के सहायतार्थ कोष में जमा करते थे। इसी प्रकार प्रत्येक भारतवासी को धर्मानुकूल धन प्राप्त कर उसके भाग कर यथा योग्य व्यय करना योग्य है। इसके उपरांत बहुधा मनुष्य धन के कारण अहंकार में डूब अनुचित कार्यों को कर नाना प्रकार के कष्ट देते हैं ऋग्वेद में लिखा है कि सज्जनों का धन औरों के सुख के लिये और दुष्टों का धन औरों के दुख के लिये होता है इसलिये धन पाकर दुष्टता को त्याग कर कार्य्य करना भला है। नीति में लिखा है कि खल की विद्या विवाद के लिये, धन घमण्ड बढ़ाने के लिये और शक्ति दूसरों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पीड़ा देने के लिये होती है और सज्जनों कीविद्या ज्ञान के लिये, धन दान के और शक्ति रक्षा के अर्थ होती है जैसाकि—

विद्या विवादाय धनंमदाय शक्तिःपरेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधो विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय चरक्षणाय॥

इसलिये योग्य वही है जो धन को पाकर बौराते नहीं, युवा होकर चंचल नहीं होते, अधिकार पाकर घमण्ड में नहीं डूबते, इस हेतु विवाह आदि उत्तम समयों पर भी घमण्ड में डूब कर कार्य करने की टेव को छोड़ विचार शक्ति से कार्य करना उचित है। विवाह के समय नियत समय पर अच्छे प्रकार भोजन, ऋतु के फल के उपरांत प्रत्येक को रात के समय आध आध सेर दूध का प्रबन्ध करना योग्य है। मिथ्या और फ़िज़ूल ख़र्ची को दूर कर जितना होसके लड़का लड़की को दे जिससे उनको आनन्द मिले और उनको आनन्द में रहने से इधर भी आनन्द रहे। गोटा पट्टा आदि में अधिक व्यय न करे जिससे कुछ दिन के पीछे रुपये में छः आने रह जाते हैं मुख्य प्रयोजन यह है कि जो पदार्थ लड़के लड़की को दिये जावें वे सब अच्छे और काम केहोवें न कि पुरानी देगची क़लई की भड़क भला ऐसे देने से क्या लाभ ?

———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# धन प्राप्ति के साधन

प्रिय सज्जन् पुरुषो और सुयोग्य महिलाओ ! इस भूमण्डल पर पेट भरने, शरीर पालने, तथा आनन्द मंगल से रहने के लिये मनुष्य अनेक रीतियों से धनोपार्जन करते हैं उन साधन एवं उपसाधनों में खेती, चाकरी, भीख और वाणिज्य ( व्योपार ) यह चार साधन मुख्य हैं उनमें—

## खेती

इस देश के लिये सब से बड़ा साधन गिनी जाती है क्यों कि भारत कृषि प्रधान देश है अन्य सब देशों से यहां अन्न बहुतायत से पैदा होता है लेकिन पिछले कुछ वर्षों में ३२५००००० प्राणियों ने अन्न न मिलने के कारण अपने प्राणों का बलिदान कर दिया क्योंकि १७९३ से १९०० तक १०७ वर्ष में अन्न की पैदावार ही उतनी नहीं हुई जिससे भारतवासी एक समय तो भर पेट रोटी खा लेते। अब पैदावार न होने के कारणों को विचारिये तो ज्ञात होगा कि प्राचीनकाल में यहाँ के किसान पृथ्वी का संस्कार करना अर्थात् पृथ्वी के जोतने, बोने, कमाने और खाद डालने आदि की क्रियाओं को भले प्रकार जानते थे परन्तु अन्य देशों के अनुसार यहां न तो इस विद्या की शिक्षा देने के विद्यालय ही हैं न शिक्षक। जहां अमेरिका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रति लाख में २७०, स्वेज़लैण्ड में २०१, स्काटलैण्ड में १७८, फ्राँस में १०७, स्पेन में ८६, अस्ट्रेलिया में ७३, जर्मन में ७७, इङ्गलैंड में ७४, नार्वे में ७१, स्वीडन में ७०, इटली में ६९, हालैंड में ६३, जापान में ६२, पुर्तगाल और रूस में २२ उत्तम शिक्षक हैं वहां भारत के ३१ करोड़ नर-नारियों में प्रति लाख में १० शिक्षक हैं फिर बतलाइये कि यहां उत्तम फ़सल कैसे तय्यार हो। इसलिये सबसे प्रथम आवश्यकता है कि कृषि विद्या के विद्यालय खोले जावें। भोले किसानों के होनहार एवं परिश्रमी नवयुवकों को शिक्षा दी जावे कि कैसी पृथ्वी में किस प्रकार की खाद डाली जावे। अमुक फ़सल कितने दिनों तक किस प्रकार सुरक्षित रखी जावे? अमुक अन्न वा फल उपजाने के लिए कैसा बीज अच्छा होता है। किस प्रकार कितने जल से सिंचाई की जावे? नाना प्रकार के कीड़ों से खेती एवं सागपात को कैसे सुरक्षित रखा जावे? तथा अमेरिका, जर्मन, जापान आदि देशों में विद्या एवं विज्ञान द्वारा जो नए आविष्कार हों उनकी पुस्तकें प्रकाशित करा उनकी परीक्षा सहित शिक्षा दी जावे। महानुभावो! आपके वेद आदि सद् ग्रन्थ इस शिक्षा से खाली नहीं। देखिये अथर्व वेद तथा यजुर्वेद में लिखा है कि पहिले पृथ्वी की परीक्षा करे और मोटी मिट्टी को हल आदि साधनों से महीन कर खूब कमावे और जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पृथ्वी जिस वस्तु के बोने योग्य हो उसमें वही वस्तुएं बोवे। यजु० अ० १२ में लिखा है कि घी मीठा और जलादि से पृथ्वी का संस्कार कर तथा बीजों को सुगन्ध-युक्त कर बोवे जिससे अन्न फल फूल आदि रोग रहित उत्पन्न हों अ० २२ मंत्र २३ में उपदेश है कि जो मनुष्य यज्ञों से शुद्ध किए जल, औषधि, पवन, अन्न, फल, रस और कन्दादि पदार्थों का सेवन करते हैं वेही निरोग रह कर बल एवं बुद्धि से युक्त हो दीर्घायु वाले होते हैं इत्यादि। अब बतलाइये कि जिनको एक अक्षर तक पढ़ाया नहीं गया शिक्षा नहीं दी गई वह पृथ्वी की परीक्षा कैसे करें ? खेतों के जोतने के लिये दूसरे देशों में घोड़े और अंजन तथा मैशीनों से काम लिया जाता है उनका मिलना तो कोसों दूर है यहां खेती के जोतने के मुख्य साधन बैल और भैंसों तक का यह हाल है कि पहिले जो बैल भैंसे १०) रु० को मिलते थे वह ५०) तथा ६०) रु० को भी मोटे ताज़े नहीं मिलते कारण भारत में दिन प्रति दिन उत्तम नस्ल के गाय बैल और बछड़ों की संख्या कम होती जा रही है। बैल और भैंसों के प्रायः न मिलने एवं बहुमूल्य में मिलने के कारण करोड़ों किसान अपने आप खेतों को खोदते निराते और पानी देते हैं खाद का तो कहना ही क्या ? जहां भारत में पूर्व यज्ञों के लाभदायक राख का खाद डाला जाता था, यज्ञों के धुओं से समय समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उत्तम वर्षा होती थी और घने वृक्षों के कारण जल जहां का तहां भरा रह कर पृथ्वी को उत्तम उपज के योग्य बनाता था वह यज्ञ, वह उत्तम खाद, वह स्वादिष्ट जल की वर्षा अब स्वप्नवत् हो गई। स्वच्छ जल के स्थान पर चैबच्चे और मोरियों के गन्दे जल से खेतों की सिंचाई कीजाती है। उत्तम खाद जिससे खेत की उपज बढ़ती है उन्हें हम विदेश चालान कर रहे हैं, हमारे देश से प्रति मिनट के हिसाब से ७ मन हड्डी की खाद ६०० मन तेल के बीज और एक स्वस्थ गाय विदेश जा रही है जिससे बृटिश भारत में सन् १९१० ई० में प्रति बीघा धान की पैदावार ७ मन १५ सेर से घट कर सन् १९२७ ई० में ६ मन ३५ सेर होगई। हम अत्यन्त दीन दरिद्र होने पर तथा कम अनाज पैदा करने पर भी प्रति मिनट ११८ मन चावल ५० मन गेहूँ और ५५ मन मूंगफली बाहर भेज रहे हैं आज भारत में खाद के स्थान पर मनुष्यों की विष्ठा से काम लिया जाता है फिर बल बुद्धिदायक मस्तक कहां से हों ? गन्दे जल वायु एवं खाद से उत्पन्न हुए नाज को खाकर क़ब्ज़ की शिकायत क्यों न हो तथा रात दिन बीमारियों के शिकार भारतवासी क्यों न बनें ? सुगन्धमय घृत के स्थान में बने हुये घृत के सेवन से हृदय रोग खांसी और दमा बहुतायत से अपना घर कर रहे हैं कहां तक कहा जावे। प्राचीनकाल की तरह न शरीर न बल न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दिमाग़ न बुद्धि। क्यों ? इसलिये कि दूध की जहां नदियां बहती थीं वहां चार आने पैसे डालने पर भी गरम पानी की भांति दूध मिलता है। जहां गोबर का उत्तम खाद खेतों को उपयोगी बनाता था वहां घर के लीपने तक को गोबर कठिनता से प्राप्त होता है। हे गौओं को माता कहने वालो ! तथा तरन तारनी के नाम से पुकारने वालो! गौ रक्षक के स्थान पर गौ भक्षक मत बनो। जननी की भांति गौओं की रक्षा करो, उसकी सेवा करो तबही आप उत्तम खेती के यथार्थ लाभ को प्राप्त कर सकेंगे और उपरोक्त रीति से विद्यालयों को खोल कृषि की शिक्षा कराने से ही आपके घर धन धान्य से पूर्ण हो सकेंगे।

## चाकरी

चाकरी से मनुष्य अपने परिवार को छोड़ अपनी जन्म भूमि को त्यागन कर हज़ारों कोस जाते हैं, नौकरी कैसी ही प्रतिष्ठित वा कैसी ही बड़े वेतन की क्यों न हो बिना मालिक की आज्ञा के कोई कार्य्य अपनी स्वतंत्रता से नहीं कर सकता अर्थात् उसे अपनी स्वतन्त्रता धर्म तथा इच्छा को रुपये के पलटे में बेचना पड़ता है अतएव चाकरी की समता कूकर से दी गई है। चाकरी में सुख के स्वप्न में भी दर्शन नहीं होते। जिस प्रकार तुलसीदासजी ने कहा है 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' धर्मशास्त्र

CC-0,Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लिखा है कि जो पराधीन काम हों उनको प्रयत्न से त्याग स्वाधीन कर्मों को नित्य करे ऐसा ही यजुर्वेद अ० १५ मं० ५ में लिखा है। मनुजी महाराज का कहना है कि जितने पराधीन कर्म हैं वह सब दुःख और स्वाधीन हैं वे सब सुख देने वाले हैं यही सुख और दुख का लक्षण है। जैसाकि—

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशंसुखम्।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥

किसी चतुर स्त्री ने कहा है :—

नींद नारि भोजन हरो। तौ तुम कन्थ चाकरी करो॥

देखिये मौलाना हाली नौकरी को कैसी घृणित दृष्टि से देखते हैं।

नौकरी ठहरी है ले देके अब औक़ात अपनी।
पेशा समझे थे जिसे होगई वह ज़ात अपनी॥
न दिन अपना रहा और न रही रात अपनी।
जा पड़ी ग़ैर के हाथों में हर एक बात अपनी॥
वर्ना दिन रात फिरें ठोकरें खाते दर दर।
सनदें चिट्ठियाँ पर्वाने दिखाते दर दर॥
चापलूसी से दिल एक एक का लुभाते दर दर।
ताकि ज़िल्लत से बसर करने की आदत होजाय।
नफ़स जिस तरह बने लायके ख़िदमत होजाय॥

चाकरी करने वालों में बहुधा निर्धन ही रहते हैं और बिना धन के सुख आनन्द नहीं मिलते इसके उपरांत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भारत देश की मनुष्य गणना ३१ करोड़ है इन सब के लिये उच्च पद की नौकरियां कहां से आसकती हैं। इस लिये इस ओर ध्यान देना ठीक नहीं इस हेतु किसी कवि ने कहा है:—

उत्तम खेती मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी भीक निदान ।

**घूंस**—बहुधा भाई नौकरी को व्योपार आदि से इस लिये उत्तम कहते हैं कि व्योपार इत्यादि में अधिक रुपये की आवश्यकता होती है तिस पर टोटे का भय प्रति समय लगा रहता है और नौकरी में मासिक वेतन के उपरांत चपरासी से लेकर बड़ी पदवी तक यथा योग्य प्राप्ति होती है, परन्तु उनको यह नहीं मालूम होता कि संसार उनको घुसिया कहता है। और ऋग्वेद अ० १ अ० ३। व० २४। मंत्र १ अ० १८८। सू० २४ मंत्र ३ में कहा है कि चोर अनेक प्रकार के होते हैं, कोई डाकू, कोई कपट से हरता, कोई मोहित कर के दूसरों के पदार्थों को ग्रहण करता, कोई रात में सुरङ्ग लगाकर ग्रहण करते, कोई हाथ से छीन लेते, कोई नाना प्रकार की व्योपारिक दुकानों में बैठ छल से पदार्थों को हरते, कोई घूंस अर्थात् रिशवत लेते, कोई भृत्य होकर स्वामो के पदार्थों को हरते, कोई छल कपट से औरों के राज्य को स्वीकार करते, कोई धर्म उपदेश से मनुष्यों को भ्रमा कर गुरु बन शिष्यों के पदार्थों को हरते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इत्यादि ये सब चोर हैं, नृप श्रेष्ठ इनको निकाल धर्म से राज्य का पालन करे। जैसे—

आपत्यं परिपत्थिन मूर्षीवाणं हुरश्चितम्। दूर मधि श्रुतेरजा ॥३॥

बतलाइये जब वेद उनको चोर बताता है तो फिर क्या उस धन से आनन्द मिल सकते हैं? कदापि नहीं। तिस पर तुर्रा यह है कि प्रत्येक माता पिता अपने बालकों को नौकरी के लिये पढ़ाते है वरन् बहुधा दीन बाग़-बगीचे मकान आदि बेचकर इण्ट्रेन्स तक पहुंचाते हैं यदि नौकरी न मिली तो फिर वह इधर के होते हैं न उधर के। गवर्नमेंट सबको नौकरी कहां से दे। इस के उपरांत बहुधा लड़के जब उनको नौकरी नहीं मिलती जिससे वह अपना खर्च पूरा कर सकें तो कोई विष खा लेते हैं कोई नदी या कुए में डूब मरते, कोई रेल की सड़क पर लेट कर प्राण दे देते हैं। यह उन बालकों की बड़ी अज्ञानता है। आत्महत्या का घोर पाप भुगतना पड़ता है और उधर माता पिता को अपार दुःख हो जाता है। अतएव आत्महत्या कभी भूलकर भी नहीं करनी चाहिये किन्तु अपने से बड़ों से—बुद्धिमानों से ऐसे रोजगार तथा शिल्पकला को सीखना चाहिये जिससे भर पेट रोटी मिले और रिशवत आदि कुकर्मों से धन लेना न पड़े क्योंकि अधर्म की कमाई से कभी पूरा नहीं पड़ता किन्तु धर्म के धन से ही स्वास्थ, प्रसन्नता और बड़प्पन की प्राप्ति होती।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भीख

इससे मनुष्य तथा स्त्रियों की प्रतिष्ठा भङ्ग होजाती है द्वार २, गली २ मांगने के लिए जाना पड़ता है नाना प्रकार के कटु वचन सहन करने पड़ते हैं तिस पर भी पेट भर नहीं मिलता इसलिए भले चंगे मोटे ताज़े काम करने के लायक मनुष्यों का यह काम नहीं, किन्तु अन्धे, लूले, लङ्गड़े आदि का यह काम है क्योंकि उनमें परिश्रम नहीं हो सकता। अन्य देशों में ऐसे निकम्मे निठल्ले स्त्री पुरुषों के लिए भी स्थान बने हुए हैं वहां उनको भोजन वस्त्र मिलते हैं, लेकिन भारतवर्ष में अनुमान ११ करोड़ हृष्ट पुष्ट मनुष्य भीख माँगकर खाते हैं जिससे देश पर ख़र्चे का बोझा और भी बढ़ता चला जाता है। इसलिए देश वासियों को हट्टे-कट्टे मनुष्यों को भीख कभी न देनी चाहिए ज़िससे अनुचित मांगने वालों की प्रथा इस देश से उठ ज़ाय।

## बणिज और व्योपार

व्योपार करने से नाना प्रकार के लाभ होते हैं प्रथम धन की अधिक प्राप्ति, दूसरे देशाटन करने से मनुष्य बड़े चतुर गुणी तथा बुद्धिमान हो जाते हैं, तीसरे अनेक देशों में जाने से अनेक विदेशीय मनुष्यों से मिलाप होने से प्रीति का अँकुर जम जाता है जिससे अनेक कार्य सिद्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होते हैं नाना प्रकार की वस्तु यहां की वहां और वहां की यहां आती रहती हैं व्योपार तथा शिल्प की उन्नति होती है नाना भांति के अद्भुत एवं अनोखी वस्तुओं और यन्त्रकलाओं के प्रचार से मनुष्य महाधनो हो जाते हैं इसी लिये कहा है कि 'व्योपारे वसते लक्ष्मीः' इसी व्योपार से देश को यथार्थ लाभ होता है। व्योपार के कारण ही अङ्गरेज़ धनवान् एवं भारत के राजा हो गये। अमेरिका की उन्नति व्योपार से ही हुई। जर्मन और जापान का सितारा व्योपार से ही चमका। जिस देश में आवश्यकीय पदार्थ बनने लगते हैं वही देश मालामाल हो जाता है। आज भारत में दूसरे देशों से नाना प्रकार के वस्त्र, घड़ियां कलें, यन्त्र, जूता, छड़ी, बक्स, काग़ज़, झाड़ फ़ानूस, अनेकान प्रकार की विचित्र २ चूड़ियाँ-खिलौने, चित्र तथा सुई, दियासलाई, बाइस्कल, मोटर आदि वस्तुएँ बच्चों के दूध पीने का डिब्बा और घी तक विदेश से आकर बिकता है तो विदेशी जन क्यों न धनवान बनें। जिस समय इस प्रकार की सारीं वस्तुएँ भारत में बनती और विदेशों में जाकर बिकती थीं तब भारत के कारीगर एवं व्यापारी सुख की नींद सोते थे घर धन धान्य से परिपूर्ण थे आनन्द की बंसी बजती थी। आज भारत की कारीगरी को उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता प्रति योगिता की दौड़ में वह पनपने नहीं पाते तौ भी आज मुर्शिदाबाद की रेशमी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वस्तुएँ, काशी का कमख़्वाब और सलमे का काम दिल्ली में भी सलमे के काम की अनेक चीज़ें तय्यार होती हैं कश्मीर में शाल दुशालों में सुई का काम एवं कश्मीर आगरा, मिरज़ापुर, जयपुर, अजमेर, बीकानेर, मसूलीपटम, मैसूर और पूना में कालीन और दरी बनाने काकाम बहुत अच्छा होता है। लकड़ी की नक़्शी में ब्रह्मा सब से आगे फिर पञ्जाब एवं कश्मीर की बनी हुई एक एक खिड़की का मूल्य सौ सौ रुपया होता है। तिलहर में लकड़ी पर रंगसाजी का काम अच्छा होता है इसके अतिरिक्त नगीना सहारनपुर, फ़र्रुख़ाबाद, अहमदाबाद वा मैसूर में भी अच्छा होता है। देहली वा आगरे में हाथी दांत पर चित्रकारी, भरतपुर में हाथी दांत की चूड़ियां मथुरा में चंदन की पङ्खियां मैसूर में हाथी दांत की मेज़ कुर्सी तथा बक्स अच्छे बनते हैं। लकड़ी की पच्चीकारी में होश्यारपुर जालंधर, मैनपुरी, माईसूर प्रसिद्ध है। ढाका, भागलपुर, अहमदाबाद औरलुधियाने के बुने हुये कपड़े यौरोपियन कपड़ों से मुक़ाबला करते हैं अभी हाल में ही फ़रीदपुर में एक प्रदर्शनी हुई थी वहाँ ढाके का बुना हुआ बीस गज़ मलमल का थान दिखलाया गया था बीस गज़ का होने पर भी इसका वज़न तीन छटांक मात्र था। जयपुर की भिन्न २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रंगों और बेल बूंटों से छपी हुई साड़ी, दुपट्टे, फेंटे, अंगोछे, धोती और लंहगों की छींट अच्छी होती है इनका रंग पक्का होता है। सांगनेर की छपी हुई छीटों का मुक़ाबला विलायत की छीटें अबतक नहीं कर सकतीं क्योंकि इसका रंग कभी फीका पड़कर नहीं उड़ता और कपड़े में मज़बूत होती हैं। मथुरा, बृन्दाबन तथा कोटा में भी छपाई का काम अच्छा होता है, फ़रुख़ाबाद के पलंगपोश, टेबिल क्लाथ, खिड़कियों के पर्दे विलायत तक जाते हैं। मुरादाबाद में भिन्न भिन्न रङ्गों की फ़रदें लिहाफ़, छींटदार अच्छी रंगी और छापी जाती हैं जहांगीराबाद की तोशकें अच्छी होती हैं। बनारस वा मिरज़ापुर में पीतल के नजीबाबाद में फूल के मुरादाबाद में क़लई के बड़ौत में लोहे के कटक और बम्बई में चांदी के सुनहरे बर्तन और अलीगढ़ में लोहे वा पीतल के ताले अच्छे बनते हैं।

उपरोक्त व्यवसाय की जितनी उन्नति और इनके व्यवसायियों को जितनी उत्तेजना और प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है वह कहीं भी नहीं मिल रहा है इसका कारण हमारा स्वदेश के व्यौपार की ओर ध्यान न देना तथा अपने देश की वस्तुओं से प्रेम एवं उनका



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आदर न करना है। विद्वानों ने कहा है 'संसर्गजः दोष गुणाभवन्ति' अर्थात् संसर्ग से दोष भी गुण हो जाता है लेकिन आज इसका इस विषय में हम विपरीत परिणाम देख रहे हैं।

अनेक वर्षों से हम जिन उदार चेता, गुण ग्राहक विद्वान् एवं अनेक शुभ गुणों से युक्त स्वदेश प्रेम रस में पगी हुई अंग्रेज़ी जाति की छत्र छाया में हैं, जिनके सहवास में हमारे जीवन का प्रतिक्षण व्यतीत हो रहा है, आज हम उन्हीं के गुणों के विपरीत सारा का सारा कार्य्यक्रम कर रहे हैं। उन्होंने इतनी वर्षें भारत के क्षेत्र एवं भारत बसुन्धरा की गोद में व्यतीत करके भी अपनी पोशाक, अपने खान-पान में अपनी रहन सहन में परिवर्तन नहीं किया, और सात समुद्र पार आकर भी अपने प्यारे देश की भाषा, भाव, नीति और व्यवहार और स्वदेश प्रेम में यत्किञ्चित लौट-पौट नहीं किया परन्तु खेद है कि हमने स्वदेश में रहते हुए भी अपने स्वदेशी वस्त्रों को छोड़ दिया। हम अपने मकानों और कमरों को सजाते हैं तो स्वदेशी सुन्दर और अनोखी वस्तुओं के स्थान पर विदेशी पदार्थों से हम अपने मित्रों की दावत करते हैं तो अनेक स्वदेशी स्वादिष्ट फलों और सुस्वादु पकवानों के स्थान पर पश्चिमी देशों के बने हुए पदार्थों से। आज वायु सेवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के लिये सवारी की ज़रूरत है तो स्वदेशी सवारियों के स्थान पर विदेशी मोटरों साइकलों की अधिकता है। भला हमारी इस स्वदेश प्रियता की भी कुछ सीमा है ? इस प्रकार के स्वदेश कल्याण चिन्तन का भी कुछ ठीक है ? भला जिनके प्रभु जिनके अधीश तो अपने देश से सूखी वस्तुयें केवल स्वदेश प्रेम के विचार से मँगाकर खाएं, व्यवहार में लाएँ और हम यह सब अपनी आंखों से देखते हुए भी स्वदेशी वस्तुओं से घृणा करें ?

पश्चिमीय देशों में प्रत्येक व्यवसाय को मिलकर साझे द्वारा करने की नीति का प्रचार बहुत अधिक है और वे इस सम्मिलित शक्तिबल से यथेष्ट लाभ उठाते हैं जर्मन व्यवसाय की उन्नति का सबसे बड़ा कारण साझेदारी का प्रचार है, वे अपने देश भाइयों के साथ लड़ना व्यापार में उतरा चढ़ी कर कलह करना पसंद नहीं करते। प्रत्युत ऐसी विद्वेषाग्नि के उत्पन्न न होने देने के लिए अपने यहां के बने हुए मालका मूल्य सभा द्वारा निर्धारित करते और वही मूल्य सबका होता है।

इसी सम्मिलित शक्ति व सहयोगनीति से व्यापार करने के कारण यूरोप के उत्तरी भाग में बसे हुए छोटे से डेन्मार्क देश के किसान आज सब देशों के कृषकों से अधिक शिक्षित और धनाढ्य हैं परन्तु सन् १८८२ से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पहले उनकी दशा भी हमारे यहाँ के वर्तमान कालिक किसानों की भाँति थी।

वहां के किसान खेती करने की अपेक्षा गायों को अधिक पालते हैं उनके दूध, घी, मक्खन को बेचना ही उनका मुख्य व्यवसाय है। लेकिन इनके घी, दूध, मक्खन बनाने और बेचने का काम घर घर नहीं होता, प्रत्युत सबका दूध दुह कर एक ही स्थान पर इकट्ठा किया जाता और वहीं उससे सारी चीज़ें तैयार कर बेची जाती हैं। यहां प्रति वर्ष २५,००,००,००० क्रोन का मक्खन बिकता है जिसमें से २१,३९,८४,००० क्रोन का बाहर भेजा जाता है। एक क्रोन ।।।=) का होता है। दूध का मूल्य घी और मक्खन के हिसाब से दिया जाता है। इसका प्रबंध करने के लिये कमेटी होती है कमेटी के योग्य पुरुष प्रत्येक के घर जाकर गायों की देख भाल करते हैं। वर्षान्त होने पर हिसाब का ब्योरा प्रकाशित होता है जिससे प्रत्येक गाय पर कितना खर्च पड़ा, दूध कितना दिया, घी मक्खन कितना निकला और नफ़ा कितना हुआ, इत्यादि बातें मालूम होती हैं। अस्तु–

इस प्रकार साझेदारी के दृष्टांतों को पढ़ते और देश में अनेक बड़े २ व्यवसायों को कम्पनी द्वारा चलाकर प्रत्यक्ष लाभ उठाते हुए देखकर भी हम स्वदेश में स्वदेशी भाइयों के साथ इतनी प्रतिस्पर्धा करें कि यदि एक भाई -) के लाभ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से माल देता है तो दूसरा )॥। और तीसरा )॥ के नफ़े पर ही देने को उद्यत होजाता है। अनेकान यूरोपियन फ़र्मों और दुकानों में टाइम की पाबंदी और एक बात, एक मूल्य की उपयोगिता को देखते हुए भी हम एक आने की वस्तु का मूल्य छै छै आना कहने का स्वभाव बनाए हुए हैं और समय की पाबंदी के लिए तो कहना ही क्या ? इस प्रकार अनेकान उच्च गुणों से युक्त इंग्लिश जाति के सहबास से हमारी भाषा, भाव, व्यवहार, रीति, नीति में यदि कुछ परिवर्तन हुआ है तो उलटा। यदि कुछ हमने सुधार किया है तो वह नीचे की ओर लेजाने वाला है। अवश्य ही इन्हीं कारणों से रत्नगर्भा बसुंधरा की गोद में रहने पर भी हम भूखे और हमारा देश धनहीन होगया और होता जारहा है एवं सुखों के स्थान पर घोर अशांति का राज्य है।

यही नहीं जब तक हम अपने इस प्रकार के दुर्गुणों को न छोड़ेंगे अपने अधीश जाति के यथार्थ रूप से गुणों को धारण कर उनके वास्तविक सहवासी न बनेंगे, जब तक अपनी उस धुन को छोड़ दूसरे व्यवसायों की ओर ध्यान न देंगे, जब तक हम अपनी प्रिय होनहार संतानों को केवल नौकरी का अभिलाषी ( इच्छुक ) बनाने की अपेक्षा स्वतंत्र व्यवसाई बनाने को चेष्टा न करेंगे, जब तक हम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पुस्तकों के कीड़े और दफ्तरों में खाली क़लम घिसते रहने के बजाय छोटे से छोटे व्यवसायों द्वारा धन उपार्जन करना अच्छा न समझेंगे, जब तक अल्प वेतन भोगी मजदूरों के साथ भी काम करने में संकोचता के निम्न विचारों को न छोड़ेंगे, जब तक कृषि शिल्प और वाणिज्य को न अपनायेंगे, जब तक देश में इनकी शिक्षा के साधनों को सुलभ न करेंगे, तब तक हम यथेष्ठ धनोपार्जन नहीं कर सकते, तब तक हमारी और हमारे देश की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ सकती, तब तक हम सब संसार में यश प्राप्त नहीं कर सकते, अधिक क्या उस समय तक हम धन धर्म, जनित विमल सुख के भागी भी नहीं हो सकते। अतएव भावि संतान को खूब धनी और सुखी बनाने एवं देश की दशा बदलने के लिये हमको और हमारे नेताओं को कृषि शिल्प और वाणिज्य की शिक्षा के लिये पाठशाला, स्कूल, कालेज खोलने चाहिये और खुले हुए ( चलते हुए ) स्कूल, कालेजों में उपरोक्त विषयों की शिक्षा बढ़ा देना उचित है। हमारे दान दाताओं को ऐसे विषयों के उद्धार, ऐसी शिक्षा का विस्तार बढ़ाने में अपने दान को और अपने परिश्रम से सञ्चय किये हुए धन को लगाना चाहिये। हमारे नवयुवकों को इन्हीं विषयों का अध्ययन करना चाहिये, इन विषयों का प्रेमी और विद्वान् बनना चाहिये, भारत के लिये, अपने स्वार्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा अपने पेट पालन करने के लिये बी.ए., एम.ए. और एल. एल.बी. के पुछल्लों की वैसी आवश्यकता नहीं जैसी आवश्यकता है अच्छे कृषक अच्छे शिल्पी और अच्छे व्यापारी बनने की। देश के धनिकों, सेठों और साहूकारों को आढ़त और सर्राफ़े की दूकानें करने एवं खोलने तथा ग़रीब किसानों वा निर्धन श्रेणी के व्यक्तियों से तीन तीन और चार चार रुपये का सूद वसूल कर उनका रक्त चूसते हुये धन संचय करने की अपेक्षा भारत में कपड़ा, शक्कर, रंग, कांच, दियासलाई, पेन्सिल, लोहे के हथियार एवं नाना यन्त्रों के बनाने, खनिज पदार्थों के निकालने और साफ़ करने आदि के कारख़ाने खोलने चाहिये। भारत में इस प्रकार के कारख़ानों के चलाने के लिये और अन्यान्य योरोपीय देशों के समान कच्चे माल के मंगाने की अड़चन नहीं है। उपरोक्त प्रकार के व्यवसायों के लिये कच्चा माल यहां यथेष्ट मिल सकता है। कल कारख़ानों के अभाव से ही हमारे देश के कारीगर व दस्तकार और भी भूखों मरने लगे साथ ही अपने वंश परम्परागत कार्य्य को छोड़ देने पर वाध्य हुए। क्योंकि मैशीनों द्वारा आधुनिक ढंग से तैयार किया हुआ विविधि प्रकार का माल, विदेश से आकर भी देशी माल से सस्ता रहता है। मान्यास्पद स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले ने कहा था कि "नाना यंत्रों द्वारा बनी हुई वस्तुओं से हाथ की बनी वस्तुओं को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रति योगिता करनी पड़ती है तब उनका नाश होना स्वाभाविक है' ।

वर्तमान में इसी कारणवश फ़ी सैकड़े ७३ कच्चा माल बाहर भेजा जाता है और सैकड़े में ७७ फ़ी सदी बना बनाया माल बाहर से यहां आता है । अतएव कारखानों की स्थापना से प्रत्येक प्रकार की वस्तुऐं देश की देश में सुलभ ही न होंगी, श्रमजीवियों और निर्धनों का उपकार ही न होगा, प्रत्युत हम धन कुवेर भी होंगे । इस हेतु अपने देश को, अपनी जाति को और अपने घरों को धन का भण्डार बनाने के लिये इन्हीं उपायों को हस्तगत करना चाहिये । प्यारे भाइयो ! यदि पहिले से भारतवर्ष की ऐसी दशा होती तो निश्चय जानिये कि आज तक भारतवर्ष का नाम भी नहीं रहता । प्राचीनकाल में ऐसी शिल्पविद्या की अधिकता थी कि कोई विलायत इसकी समानता नहीं कर सकती थी । ढाका की मलमल अरब तक चमकती थी, बनारस की साड़ियां सारे संसार को ढकतीं, गुजरात के मिसरू मिश्र तक भड़कते थे, फ़र्रुखाबाद के लिहाफ़ ईरान तक पहुंचते थे, ठाकुरद्वारे की छीटें चीन की छीटों को चुनौती देती थीं, चन्देरी की ज़रबफ़्त सभी देशों के अधिपतियों के चित्तों को लुभाती थी, नदियां की दरियाई ने तातार के मरुस्थल में दरिया बहा रखे थे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारीजन भारत के माल को नाना देशों में पहुँचाते और उनसे इतना लाभ उठाते जितना समस्त भूमण्डल के व्यापारियों को होना असम्भव था। इसी कारण उस समय कोई ऐसा देश न था जहां के लोग यहां आने और इस सोने की चिड़िया को अपनाने की धुन में न हों। इस प्रकार एक दिन वह था जब कि चहुँ ओर भारत ही भारत था जब इसके बुरे दिन आये तो मिश्र, यूनान, रूम ने आनन्द उठाया। फिर समय के फेर ने इनको भी लिया, अब वर्तमान समय में इङ्गलैण्ड, जापान, जर्मनी, अमेरिका की कला जगमगा रही है, चारों ओर उन्हीं का डङ्का बज रहा है। पदार्थ विद्या में तो यहां तक हाथ मारे हैं कि मनुष्यगण देख कर चकित रह जाते हैं। देखो बे तार के तार में हज़ारों कोस के समाचार आन की आन में आते जाते हैं। समुद्र में जहाजों के आने जाने के मार्ग देखिये—चीन, जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इङ्गलैण्ड, हिन्दुस्तान आदि से नाना प्रकार के पदार्थ लदे हुए चले जाते हैं। कलों से कैसा कपड़ा बुना जाता है, तोप कैसी दूर गोला फेंकती है, घड़ी कैसा समय बताती है, नोट कैसा काम देते हैं। छापे को देखिये कि पुस्तकों को छाप कर घर घर कर दिया और कौड़ियों में मिलने लगीं। अन्धों के पढ़ाने के अर्थ कैसे कैसे यंत्र निकाले हैं। डाक्टरी के पूरे उस्ताद हो गए हैं। ज्योतिष भूगोल आदि में वह उन्नति की है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिसको देखकर मन उछलता है। बूटियों के खोज में कैसा परिश्रम किया। पहाड़ों को काट, नदियों के पुल बनाकर रेल को निकाल कर व्यौपार को चमका दिया है। अब आकाश विमानों द्वारा यात्रा करने का सुभीता होगया यद्यपि इस प्रकार की बातों को देख देख कर आश्चर्य तो सब ही प्रकट करते हैं परन्तु यह नहीं होता कि हम इन देशों में स्वयं जाकर अथवा अपनी संतान तथा मित्रों को भेज कृषि शिल्प एवं वाणिज्य सम्बन्धी आवश्यकीय बातों को सीख स्वदेश में उनके प्रचार करने का यत्न करे जिस से स्वयं सुखी और स्वदेश का पुनर्द्धार हो जैसाकि जापान वालों ने किया। लेकिन जिस प्रकार मलयागिरि पर चन्दन की, असभ्य देशों में ईश बन्दना की, बागों में फूलों और बन में फलों की चाह नहीं होती इसी प्रकार हमारे भाइयों को देशान्तर गमन करने की इच्छा ही नहीं होती। उनको घर की अंधेरी कोठरियों में, जन्मभूमि की कुंज गलियों में मर जाना अङ्गीकार है पर घर के बाहर जाने की क़सम है—घर को छोड़ना महा संकट का सामना करना समझ रखा है। उनके लेखे तो यश प्रतिष्ठा मान मर्य्यादा धन और जाति गौरव भले ही रसातल में चले जांय परन्तु वे अपनी टेक न छोड़ेंगे, अपनी परिपाटी न बदलेंगे, वे तो पुरुषाओं के गौरव पर ही अभिमान में चूर रहने तथा अधिक व्याज खाते रहने को ही स्वर्ग समझते हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


क्योंकि घर बैठे ही रक़म खिंची चली आती है, चुपचाप सूद की दर बढ़ाते चले जाते हैं इस प्रकार अपने ही भाइयों का स्वयं रक्तशोषण करते रहना ही इनके व्यापार का ध्येय है।

प्यारे सज्जनों ! इन बातों से क्या कभी देश की उन्नति हो सकती है ? कदापि नहीं। देश की उन्नति तभी होगी जब आप उत्तम पुरुषों की भांति उद्योग में लग जायें और विघ्न बाधाओं को सहते हुये अपने ध्येय से अणु-मात्र भी विचलित न हों।

सच तो यह है कि जिस किसी ने उद्योग किया उसने रसाल फल प्राप्त किया; जिस समय खलीफ़ा वलीद ने योरुप को विजय करने पर कमर बाँधी, हस्पानिया तक कोई रोकने वाला न मिला। वेही हस्पानियां अर्थात् स्पेन तथा पोर्तगाल वाले ऐसे बढ़े कि अमेरिका अर्थात् नई दुनियां को जीता। जिन यूनानियों की शिक्षा से योरुपीय सभ्य बने वह वर्षों पराधीन रहे। जिस रूस को लोग निर्धन तथा निर्लोभ जाति छोड़कर चले आये थे वोही रूसी धरती के छटे भाग के मालिक होगये। जिन पार्सियों ने ख़लीफ़ा उमर के मारे ईरान छोड़कर भारत वास किया था वह कैसे हो गये—बोसियों जहाज़ चलाते हैं बीसियों दस २ भाषा लिख पढ़ सकते हैं तथा देश देशान्तरों में करोड़ों रुपयों का व्यापार करते हैं। वस्तुतः संसार में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सबकी घटती बढ़ती इस उद्योग के ही आधीन है। यजुर्वेद में परमात्मा उपदेश देते हैं कि हे मनुष्यो ! नाना देशों में घूम फिर व्यापार करो क्योंकि देश में धन की उन्नति व्यापार तथा कारीगरी से होती है। अथर्ववेद का० ३ सूत्र १५ मं० २ में लिखा है कि व्यौपारी लोग विमान, रथ, नौकादि द्वारा आकाश, भूमि, समुद्र, पर्वतादि देश देशान्तरों में जाकर अनेकान प्रकार व्यौपार कर मूल धन बढ़ावें और धनाढ्य होकर घर आवें। ऋग्वेद मं० १ अ० ११। सू० १४ में लिखा है कि विद्वानों को चाहिये कि जैसे मनुष्य घोड़े आदि पशु पैरों से चलते हैं उसी प्रकार चलने वाली नावें रच कर एक द्वीप से दूसरे द्वीप वा समुद्र में युद्ध अथवा व्यौपार के लिये जाकर ऐश्वर्य बढ़ावें।

अथर्व कां० ७ सू० ३६ मंत्र ५ में उपदेश है जो मनुष्य वाणिज्य, वृद्धि आदि कार्यों के लिये दूर देशों में जावें वह अपने देश को भी लौट कर आवें और जिस प्रकार परदेश गया हुआ पुरुष प्रीति से घर वालों को स्मरण करता रहता है उसी प्रकार घर वाले प्रीति से उसका स्मरण रक्खें।

अब आप इन उपरोक्त वार्ताओं को जान पूर्व भारत-वासियों की भाँति उद्योग को धारण कर, इङ्गलिस्तान, जर्मनी, पेरिस आदि देशों में जाकर शिल्प विद्या तथा उप-योगी वा लाभकारी बातें सीख फिर अपने देश में आकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उन बातों का प्रचार कीजिये और व्यौपार के अर्थ अन्य क़ौमों की भांति पर्यटन कीजिये तो फिर भारत की कुदशा न रहे जैसा कि वर्त्तमान समय में मदरास, बम्बई, भड़ोंच अहमदाबाद, इन्दौर, कानपुर, कलकत्ता, आदि नगरों में कपड़े सूत आदि और लखनऊ में काग़ज़ कलों से बनता है, परन्तु वह सब कलें इतना सूत कपड़ा अथवा काग़ज़ नहीं बनातीं कि जितनी भारतवर्ष को आवश्यकता है अभी तो इनकी दशबीस गुणी हों और उन से भांति २ के वस्त्र तथा नाना भांति की आवश्यक वस्तु बनने लगें तो भारत के पेट में चैन पड़े। स्वदेशी वस्तुओं की तिजारत के लिये भारत के प्रसिद्ध २ नगरों एवं क़स्बों में दूकानें होनी चाहिये जिससे स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार में सुगमता हो। देशी कारीगरों को भी उचित है कि वे परिश्रम के साथ कुशलता पूर्वक वस्तु निर्माण करें जिससे व्यापार की वृद्धि हो और धन की बढ़ती से उनको भी चैन की रोटी मिलने लगे। इसके साथ ही देश के सेठ साहूकार एवं राजा महाराजाओं को भी अपने आधीनस्थ प्रजा की उन्नति के लिये कृषि शिल्प एवं वाणिज्य की उत्तम से उत्तम शिक्षा देने के लिये पाठशाला स्कूल क़ालिज खोलना चाहिये जिनमें उचित शिक्षा प्राप्त कर हमारी भी संतान उत्तम नागरिक बन सकें।

इन सब बातों के साथ प्राचीन पुरुषाओं की भांति ही हमको अपने देश की वस्तुओं से प्रेम करना चाहिये—तबही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रतियोगिता की दौड़ में हमारी वस्तुएँ ठहर सकेंगी और व्यापार उन्नति पर होगा और उसी समय भारत का सौभाग्य भी जग जावेगा।

## व्योपारियों के ध्यान रखने योग्य बातें

(१) छोटे २ व्योपारी बड़े २ व्योपारियों के आधीन अथवा पत्ती डाल कर साझे में जिसको अङ्गरेज़ी में कंपनी कहते हैं बनाकर काम करें (२) जो व्योपारी अनेक देश की भाषाओं को जानते हैं—समाचार पत्रों को पढ़ते हैं—अथवा अपने गुमाश्तों या और किसी प्रकार से भूमण्डल के देशों की पैदावार, भाव और यहां लाने या अपने देश से ले जाने के व्यय को जानते और अपने और अन्य देशों की आवश्यकताओं पर ध्यान रख कर व्योपार करते हैं वे लाभ उठाते हैं। (३) उत्तम स्वभाव वाले अनुभवी पुरुषों की सम्मति से मन लगाकर काम करे। (४) व्योपार में जो पुरुष कुशल, सर्वहितकारी हो उसको मुखिया प्रधान बनाकर धन से व्योपार करे। (५) जो व्योपारी अपनी चूक को मान कर विद्वानों की सम्मति से अपना सुधार करते हैं वे बड़े बुद्धिमान् व्योपारी होते हैं। (६) बड़े २ व्यापारियों को अपनी २ कोठियों के लेन देन का हिसाब प्रति दिन जानना चाहिये और दौरा करके वहां के प्रबन्ध पर दृष्टि रख योग्य अनुसंधान करना चाहिये। (७) नये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


व्योपारियों को पुराने व्योपारियों से व्योपार की हानि लाभ की रीतें समझ कर कुव्यवहारियों के फन्दे में न फँसना चाहिए। (८) सब काम यथा रीति नियत समय पर देशकाल को देख, आगा पीछा सोच तथा अपनी पूंजी का भी ध्यान रख करना चाहिए। इसके उपरांत आपको विश्वासपात्रों का विश्वासी बनना योग्य है। परस्पर की ईर्षा एवं द्वेष को त्याग कर दृढ़ प्रतिज्ञ होना—यर्थाथ पुरुषार्थ—शांति और परिश्रम से कार्य कर उन्नति करना हमारा परम धर्म है।

इस प्रकार कृषि, शिल्प एवं वाणिज्य द्वारा धन उपार्जन कर उसको यथाशक्ति शुभकार्य्य हेतु सुपात्रों को दान दे।

---

# दान महात्म

**मान्यवरो** संसार में **दान** एक अपूर्व पदार्थ है जिस के बड़े २ महात्म हैं। साधारणतया भी सुनने में आता है कि **जो देगा सो पावेगा** कवि तुलसीदास महाराज ने कहा है।

तुलसी दिया अनूप है दिया करो सब कोय।
कर का धरा न पाईयो जो कर दिया न होय॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राजा कर्ण तथा हरिश्चन्द्र ने इसी के कारण इस संसार में यश प्राप्त कर अन्त को स्वर्ग पाया। यजु० अ० १८ मं० २४ में लिखा है कि जो मनुष्य सत्य विद्या आदि पदार्थों का दान करते हैं वे अतुल कीर्ति को पाकर सुखी होते हैं और अन्य को भी सुखी रखते हैं।

होता यक्षत्समिधानं महद्यशः सुसृमिद्धं वरेण्यमाग्निमिद्रं वयोधसम्।
गायत्री छन्द इन्द्रिय त्र्यविंगांवयोदधि द्वेत्वाज्यस होतर्यज॥

पाराशरस्मृति में लिखा है कि दान से परम सुख तथा स्वर्ग मिलता है, अर्थात् दान करने से दोनों लोकों में प्रतिष्ठा होती है।

दानेन प्राप्यते स्वर्गो दानेन सुखमश्नुते।
इहामुत्र च दानेन पूज्यो भवेति मानवः॥

**महाभारत में** भीष्मपितामह का वचन है कि तीनों लोकों में दान से बढ़ कर कल्याण करने वाला कोई धर्म नहीं। **विदुर** महाराज ने कहा है कि दान करने से नाना प्रकार के सुख होते हैं। **परशुराम** जी ने दान देने से अतुल लाभ बतलाया है। महाराज **युधिष्ठिर** ने दान को परम शांति का कारण कहा है। **शुक्रनीति** और **चाणक्य-नीति** में लिखा है कि बिना दान के एक दिन भी व्यतीत न करना चाहिए। **मनुमहाराज** ने अपनी स्मृति के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अ० ४ श्लोक २२६ में लिखा है कि आलस्य को छोड़कर यज्ञ और दान सदा करना चाहिये क्योंकि उत्तम दानों से उत्तम कामनायें सिद्ध होती हैं।

अब जब दान करने के बड़े २ महात्म हैं तो दान करने की रीति को जो वेदादि ग्रन्थों में लिखी है उसके अनुसार छोटे से छोटे और बड़े से बड़े दान करने चाहिये। क्योंकि वही रोगी शीघ्र चङ्गा होता है जो सद्वैद्य की आज्ञानुसार औषधि खाकर उसके बताये हुये नियमों और पथ्यापथ्य पर चलता है। इसी प्रकार सब वैद्यों के परम वैद्य जगत पिता परमेश्वर ने दान करने के जो जो फल बतलाये हैं वह उसी दशा में प्राप्त हो सकते हैं जबकि मनुष्य वेदों में लिखे अनुसार दान देते हैं। उसके विपरीति दान देने से, बजाय उत्तम फल के नाना प्रकार के दुःख उठाने पड़ते हैं।

ऊसर भूमि में अन्न डालकर किसी ने अन्न नहीं काटा? बालू की दीवार से किसी ने अपने घर की रक्षा नहीं की? किसी ने नीम के बीज को बोकर आम नहीं खाये। हां अपने बीज, धन और परिश्रम को व्यर्थ खोकर नाना प्रकार के कष्टों को भोगते हैं। तिस पर भी आप अन्न, फल, फूल, गाय, घोड़ा, हाथी, सोने, चांदी के आभूषण अनेकान प्रकार के सूती ऊनी वस्त्र और शाल, दुशाले,


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गाड़ी, बग्घी, फ़िटन इत्यादि सवारी, उत्तम उत्तम मकान बाग़, बग़ीचे, गांव वगैरह छत्तीस प्रकार के भोजन, बहुत प्रकार के शरबत धड़ाधड़ अक्षयफल की प्राप्ति के लिये देते चले जाते हैं। कहां तक कहा जावे सहस्रों दीन, कंगाल, स्त्री पुरुष अपना पेट काटकर सुखों की चाहना के लिए प्रतिदिन अथवा आठवें पंदरहवें दिन आटा, दाल, घी, नमक, मसाला आदि पुण्य करते हैं परन्तु शोक यह है कि वह दान करने की शास्त्रीय आज्ञाओं को नहीं विचारते कि दान किस को किस लिए देने से अक्षयफल मिलता है। अथर्ववेद कां० १०। सू० ४। मं० २२ में आज्ञा है जिस प्रकार शुद्ध वायु से शिल्प विद्या की उन्नति होती है उसी प्रकार सुपात्रों को दान देने से कीर्ति बढ़ती है।

ऋग्वेद अ० २ सूक्त ९ मं० ५ और अ० २ सू० १९ में लिखा है कि जो संसार के उपकार के लिए सुपात्रों को दान देते हैं उनके कुल से धन का नाश नहीं होता। यजुर्वेद अ० ७ मं० ४६ में उपदेश है कि जो पुरुष धार्मिक, सर्वोपकारी, सुपात्र विद्वानों को उत्तम २ पदार्थों को देते हैं उनकी अचलकीर्ति होती है। इसलिये दान सुपात्र को ही देना चाहिए क्योंकि सु का अर्थ अच्छा और पात्र के अर्थ हैं जिसको वह दिया जाय अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों को जो दान दिया जाता है वही श्रेष्ठ दान कहाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद में कहा है कि जिस प्रकार पात्र अपनी बनावट और गुणकर्म तथा स्वभाव से उपादेय वस्तु का पात्र बनता है उसी प्रकार स्त्री और पुरुष भी अपने गुणकर्म और स्वभाव से पात्रता को प्राप्त होजाते हैं अर्थात् सत्कर्मी पुरुषार्थी, विद्वान् एवं विद्या विनय से सम्पन्न सत्पात्र और निष्कर्मी, मन्दभागी और आलस्य आदि अवगुणों से युक्त अपात्र कहलाते हैं। इसी प्रकार व्यास स्मृति में लिखा है कि वेदपाठी और तपस्वी ही सुपात्र हैं। महाभारत शान्तिपर्व में महात्मा कपिल ने कहा है कि सत्पात्र वही हैं जिन्होंने कभी पाप कर्मों का सहारा नहीं लिया तथा जो अग्निहोत्रादि कर्म करते हैं और जिनका जीवन पवित्र है। मनु० अ० ३ श्लोक ९८ में लिखा है कि जो मनुष्य विद्या और तप अर्थात् शुद्ध आचरणों से युक्त हो उसका मुख अग्नि के समान तेजमान और प्रकाशमान होता है (उसको सत्पात्र कहते हैं) उसको दिया हुआ दान कठिन रोगों, शत्रु एवं राजपीड़ाओं और दुःखों से बचाता है। श्लोक ९७ में कहा है कि जो गृहस्थ अज्ञानवश सत्पात्र को न जान वेद के अर्थ का तत्व न जानने वाले ब्राह्मण-देव एवं पितरों को दान देता है उसका वह दान राख में घी की आहुति देने के समान निष्फल होजाता है।

नश्यन्ति हव्यकव्यानि नराणामविजानताम्।
भस्मीभूतेषु विप्रेषु मोहाद्दत्तानि दातृभिः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बामन पुराण अ० ८२ में लिखा है कि जो सुपात्र को दान देता है वह सुखी रहता है। मारकण्डेय पुराण अध्याय २५ में लिखा है कि योग्य पात्र को ही दान देना चाहिए। शिवपुराण ज्ञानसंहिता अ० ६३ श्लोक ४४ में लिखा है कि सत्पात्र को ही मिष्टान्न और दक्षिणा देनी चाहिए। पाराशर स्मृति अ० १ श्लोक ४७ में लिखा है कि सुपात्र को दान देने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है। दक्षस्मृति अ० ३ श्लोक ४ तथा भविष्यपुराण उत्तरार्द्ध अध्याय १३२ में लिखा सुपात्र को दिये हुए दान का फल दाता को मिलता है। **महात्मा याज्ञवल्क्य** अपनी स्मृति अ० १ श्लोक ६ में लिखते हैं जो जन देश, काल और पात्र को देखकर श्रद्धा से दान देते हैं वही उत्तम दान कहाता है।

देशकाल उपायेन द्रव्यं श्रद्धा समन्वितम्।
पात्रे प्रदीयते यत्तत्सकलं धर्म लक्षणम्॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशकाले च पात्रेच यद्दानं सात्विकं स्मृतम्॥ गीता॥

शिव पुराण ज्ञानसंहिता अ० ६१ में लिखा है कि देश काल और पात्र को देखकर जो दान करता है उसको सब कुछ मिलता है। अब रहा **देश, काल** को देखकर दान करना उसका प्रयोजन यह है कि **दाता** जिस देश के लिये दान करे उस पर विचार करले कि वहां किस वस्तु की आवश्यकता है। कालका अर्थ ऋतुका है यानी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ऋतुको देखकर दान करे ऐसा न करे कि शरद ऋतु में ग्रीष्म के और ग्रीष्म में शरद ऋतु के पदार्थ दान करे। पात्र के विषय में ऊपर लिख आया हूँ। कहने का मुख्य प्रयोजन यह है कि जो स्त्री पुरुष देश, काल और पात्र को देख भाल सोच समझ कर दान करते हैं वही श्रेष्ठ दान यानी सात्विक अर्थात् उत्तम दान कहाता है। ऐसे दान दाताओं को श्रेष्ठ फल मिलते हैं।

ऋग्वेद अ० २ सू० ६ मंत्र २ अ० १ सू० ११ मं० २१ में लिखा है जो सबको विद्या देने और सत्योपदेश करने वाले के लिये बहुत श्रेष्ठ दक्षिणा देते हैं वे विद्वान् होकर शूरवीर होते हैं ऐसा ही य० २३ मंत्र २ अ० २ सू० ९९ में भी लिखा है। सुपात्र कुपात्र की भले प्रकार परीक्षा कर अच्छे सुपात्रों का सत्कार तथा बुरे कुपात्रों का अनादर करते हैं वेही आनन्द भोगते हुए उपकार करने वाले होते हैं। अथर्ववेद में लिखा है कि जो प्रशंशित कर्म करने वालों को दान देते हैं वही विद्या, धन और यशस्वी बन संसार में नाम पाते हैं। अथर्वकांड १८ सूक्त ३ मंत्र ४२ में उपदेश है कि वृद्ध लोग उत्तम क्रियाओं और विद्याओं द्वारा धन संग्रह कर सुपात्रों को दान करें अत्रिस्मृति श्लोक ३३९, ३४० में लिखा है कि वेद के ज्ञाता, चतुर माता पिता की सेवा करने वाले, अपनी स्त्री के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साथ ऋतुगामी, शीलवान्, उत्तम आचरण वाले तथा जो प्रातः स्नान कर नित्य कर्म करता हो और अपने कल्याण की इच्छा रखता हो उसको दान दे। संवर्त्तस्मृति श्लोक ४९, ५० में लिखा है कि वेदपाठी, कुलीन, सुशील, बुद्धिमान, तथा शुद्ध ब्राह्मण को दान दे। शङ्खस्मृति अ० ४ श्लोक १२ व १३ में लिखा है कि जो ब्राह्मण नियम पूर्वक शुद्ध आचरण से गायत्री का जाप करे उसको दान दे। ऐसा ही बनपर्व अ० १९९ में लिखा है। हारीत-स्मृति अ० १ श्लोक २२ व २३ में लिखा है कि वेद शास्त्र के ज्ञाता ब्राह्मणों ही को दान दे। बृहस्पति स्मृति श्लोक ४७ में लिखा है कि कुलीन, वेदपाठी, सन्तोषी, नम्र, सबका हितैषी, वेदाभ्यासी, तपस्वी, जितेन्द्रिय विद्वानों अर्थात् विद्वानों में उत्तम श्रेष्ठ को जो दान दिया जाता है वह अक्षय फल को देता है मनुजी ने अपनी स्मृति अ० ११ श्लोक ६ में लिखा है कि वेद के जानने वाले तथा बन में रहने वाले सुयोग्य ब्राह्मण को दान देने से दाता को स्वर्ग मिलता है। हितोपदेश में लिखा है जैसे समुद्र पर वर्षा व्यर्थ है, दिन में दीपक जलाना फ़िज़ूल है उसी भांति पेट भरे को भोजन कराना और धनवानों को दान देना व्यर्थ है।

वृथावृष्टिःसमुद्रेषु वृथा तृप्त य भोजनम्।
वृथादानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापिच॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दरिद्री कौन है ? दरिद्री वह मनुष्य है जो अङ्गहीन अर्थात् लूला, लंगड़ा, गूंगा, बहरा, अन्धा, असाध्य, रोगी अथवा विधवा व अनाथ जिनका पालनकर्त्ता कोई सम्बन्धी न हो वा ऐसे सत्पुरुष जो समय के हेर फेर से कङ्गाल होगये हों पर याचना करते सकुचते हों। दीनों की खान पान वस्त्र इत्यादि से सहारा रक्षा करना परम आवश्यक है न कि हट्टे कट्टे सण्डे मुसण्डे नाम के ब्राह्मण वा वैरागी साधु सन्तों को ( जो परिश्रम कर दो चार आठ आने रोज़ पैदा कर सकते हैं ) अच्छे प्रकार माल भेंट चढ़ा कर अपने को कृतार्थ मानना कि जिसके कारण वर्त्तमान समय में एक चौथाई भारतवासी भीख मांगकर भोजन करते हैं। जब मनुष्य देखते हैं कि विना परिश्रम किये नाना प्रकार के पदार्थ घर बैठे चले आते हैं तथा समस्तजन सेवा में रहते हैं तो फिर क्यों परिश्रम करें ? विद्या पढ़ने की कुछ आवश्यकता नहीं । आचरण कैसा ही हो, जहां तिलक छापे लगाये, कंठो माला गले में डाली, पत्रा बगल में दबा व जटा रखाली, चिमटा हाथ में लिया, पण्डितजी, महात्माजी, और बाबाजी आदि बन मज़े से चैन उड़ाते हैं। बहुधा उनमें से धन जमा कर नाना प्रकार के व्योपार करते हैं । एवं नवयुवकों तथा स्त्रियों के कान फूंक कण्ठी गले में बांध तन, मन, धन स्वामी के अर्पण करा अच्छे प्रकार आनन्द भोगते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कोई कोई जंगलों में मढ़ी बनाकर रहते हैं बहुधा प्रकट रूप से स्त्रियों को साथ रखते हैं, बहुधा पर-स्त्री तथा वेश्यागमन आदि कर चरस के दम मारते हैं कोई २ खड़े-श्वरी बन ऊँची भुजा कर लेते हैं, कोई झूले पर झूल अन्न त्यागन कर दूध उड़ाते तथा दूधाधारी कहलाते हैं, कोई सदा नंगे ही रहा करते हैं, कोई पञ्चाग्नि तापते हैं, कोई मौन धारण कर लेते हैं, कोई खाक पर लेट आयु व्यतीत करते हैं। क्या इन्हीं का नाम पंडित, ब्राह्मण, महात्मा या साधु, वैरागी आदि है। देखिये महाभारत के उद्योग पर्व में विदुरजी ने कहा है कि—

आत्मज्ञानं समारंभस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
विषयायंनकर्षन्ति सवै पंडित उच्यते॥
निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत्पण्डितलक्षणम्॥

जिसको आत्मज्ञान सम्यक् प्रारम्भ अर्थात् जो निकम्मा आलसी कभी न रहे, सुख दुख हानि लाभ मानापमान निन्दा स्तुति में हर्ष शोक कभी न करे, धर्म हो में नित्य निश्चित रहे, जिसके मनको उत्तम पदार्थ अर्थात् विषय सम्बन्धी वस्तु आकर्षण न कर सके, वही पंडित है।

जो सदा धर्मयुक्त कर्मों का सेवन, अधर्मयुक्त कर्मों का त्याग, मिथ्याचार की निन्दा करने हारा, ईश्वर, वेद आदि में अत्यन्त श्रद्धालु हो, वही पंडित का कर्तव्य कर्म है। हितोपदेश में भी लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।
आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥

पराई स्त्री को माता, अन्य द्रव्य को मिट्टी के ढेले के समान, अपने आत्मा के समान सब जीवों की आत्मा को जाने, वही पंडित है ।

श्रीकृष्णजी महाराज ने ब्राह्मणों के लक्षण गी० अ० १३ श्लोक ४२ में लिखे हैं ।

शमोदमस्तपः शौचं शान्तिरार्जवमेवच ।
ज्ञानं विज्ञानमस्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥

अर्थात् अन्तःकरण तथा इंद्रियों का निरोध, विचार करना, बाहर भीतर पवित्र, कोमलता, शास्त्रोक्त ज्ञान, अनुभव, विश्वास आदि उत्तम कर्म जिसमें हों उसको ब्राह्मण कहते हैं । और भी कहा है—

ऋतं तपः सत्य तपो दमस्तपः स्वाध्यायस्तपः ॥

यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वाक्य है कि शुद्ध भाव से सत्य कामना, सत्य बोलना, सत्य करना, मन को अधर्म में न जाने देना, ब्रह्म इंद्रियों को अधर्माचरण से रोकना अर्थात् शरीर, इन्द्रिय व मन से शुभ कर्मों को करना वेदादि सत्य विद्याओं का पढ़ना, वेदानुसार आचरण करना आदि धर्मयुक्त कामों का नाम तप है । इन्हीं कर्मों के करने वालों को तपस्वी, साधु, बैरागी और महात्मा कहते हैं ऐसा ही श्रीमद्भागवत स्कंध ११ अ० ११ में लिखा है ।

"साधयतिपरकार्याणिस्वकर्माणि ससाधुः"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अर्थात् जो मनुष्य यथावत् परोपकार करना ही कर्तव्य कर्म समझता है उसी का नाम **साधु** है। परमेश्वर के पूर्णज्ञान होने से जिसको प्रकृति के गुण तथा कार्यों में अरुचि होती है उसको **वैरागी** कहते हैं। पूर्ण ज्ञानी का नाम **महात्मा** है। धर्मात्मा, शास्त्रोक्त विधि को पूर्ण रीति से जानने वाला, विद्वान्, कुलीन, निर्व्यसनी, सुशील, वेद-प्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी मनुष्य को **पुरोहित** कहते हैं। जो साङ्गोपाङ्ग वेदों के शब्द, अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया का जानने वाला, छल कपट रहित, अति प्रेम से सबको विद्या का दाता, परोपकारी, तन, मन, धन से सबको सुख बढ़ाने में तत्पर निरपेक्ष होकर सत्योपदेष्टा, सबका हितैषी, धर्मात्मा व जितेन्द्रिय हो उसी को **आचार्य** अर्थात् **गुरु** कहते हैं। **देवता** वह है जो सर्वदा उत्तम कर्म करते हैं। **परोपकारी** वह हैं जो न्याय से धनको प्राप्त करते हैं। **उपदेशक** वह है जो पूर्ण विद्वान् होकर सत्यधर्म में जिनकी चेष्टा हो और विद्या की उन्नति में सदा तत्पर रहते हैं। **ज्ञानवान** वह हैं जो सत्य और असत्य बतलाते हैं। मुख्य प्रयोजन यह है कि बिना वेद विद्या पढ़े तथा उसके अनुसार आचरण सुधारे किसी को **महात्मा, वैरागी, साधु, सन्त, पुरोहित, आचार्य, देवता, परोपकारी, उपदेशक** और **ज्ञानवान्** न कहना चाहिये, परन्तु भारतवर्ष में इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समय वेदोक्त गुण विहीन नामधारी साधु इत्यादि बहुतायत से दिखलाई देते हैं जिनकी नाना प्रकार के फूल, फलों, भोजन, वस्त्र, द्रव्य इत्यादि से प्रतिदिन पूजा होती है बड़े बड़े सेठ साहूकार, पढ़े लिखे एम० ए० बी० ए० अर्दली में खड़े रहते हैं। कोई घर से लड़कर, कोई जमा मार कर, कोई पराई स्त्री भगा, कपड़े रङ्ग, तूंबा, चिमटा लेकर बाबा जी, साधू जी बनकर हरे कृष्ण, जयसीताराम, के भण्डार खोल देते हैं, यदि इनसे कोई कहता है कि आपने विद्या नहीं पढ़ी, आचरण नहीं सुधारा, तो बड़े क्रोध में आकर लाल आखें चढ़ाकर कहते हैं कि विद्या पढ़कर क्या होगा हमको कुछ दुनियाँ से काम नहीं, जङ्गल में रहना मंगल करना, माई के लाल बने रहें हमको कमी क्या है देख वो बच्चे माइयां आती हैं सब कुछ भेंट कर जाती हैं मन इच्छित फल पाती हैं अनेकान सेठ साहूकार सेवक हैं देखो यह मढ़ी मन्दिर यह कुआं उन्होंने बनवा दिया है। पांच रुपये रोज हमारे भङ्ग चरस आदि के लिये बंधे हुए हैं सेठ जी का मोहन नामक बच्चा हमारी दुआ का है इत्यादि बातें बनाकर अपने सेवकों और सहायकों की संख्या बढ़ाते जाते हैं—हालाँकि मनु महाराज ने ऐसे वेद विरोधी व्रत तथा नाना प्रकार के चिन्हों के धारण करने वाले निषिद्ध जीविका से जीने वाले बैडालवृत्ति वाले बतलाये हैं और उनके आदर करने की आज्ञा नहीं दी—फिर दान देना कैसा ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


परन्तु शोक तो इस बात का है कि आपने विद्या आचरणों के बिना देखे ही थैली का मुंह खोल माले मुफ़्त दिले बेरहम की भाँति नाम मात्र के साधू सन्त, वैरागी, संन्यासियों का घर भरते चले जाते हैं इसका दृश्य प्रत्येक स्थान पर दिखलाई दे रहा है और कुम्भ आदि के मेलों पर यह दृश्य अच्छे प्रकार दृष्टि आता है जहाँ लाखों बनावटी साधू महात्मा इकट्ठे होते हैं जिनके साथ हाथी घोड़े पर सोने की झूलें और काठी देखने में आती हैं अर्थात् गृहस्थियों से अधिक धन का प्रभाव साधुओं में आपको देखने में आता है जिनका धर्म धनत्याग था जिनकी बड़ाई विद्या और शुद्धाचरण से होती थी वहां अब विद्या और शुद्धाचरण के नाम की भी चर्चा नहीं बड़े २ अखाड़ों में बड़े २ चरस के दम लगाते दिखलाई देते हैं इसीसे उनकी बड़ाई होती है।

इसके अतिरिक्त गङ्गा, जमुना, हरिद्वार, काशी, प्रयाग, बद्रीनारायण, द्वारका, जगन्नाथ, सेतबन्धुरामेश्वर आदि में पुण्य के नामसे देना, मृत कुटुम्बियों के नाम पर सण्डों को खिलाना एवं इन्हीं के लिये काशी प्रयागादि में क्षेत्र खोलना और सुतरेसांई, मुसलनान फ़क़ीर अघोरियों को भी देना प्रारम्भ कर दिया। यह लोग आपके दान को धन से भट्टीखाने में शराबें पीते, भङ्ग चरस के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दम लगाते, मांस खाते, व्यभिचारादि नाना प्रकार के कुकर्म करते हैं जिनके सङ्ग से भारत सन्तान का नाश होता जाता है नशीली चीजों की खपत बढ़ती जाती है। क्या इसका पाप दाताओं के सिर पर न होगा ? मनु महाराज ने अ० २ श्लोक १५८ में लिखा है।

यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गविचाफल।
यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः॥

अर्थात् जिस प्रकार से नपुंसक मनुष्य स्त्रियों में, गौ गौ में, एवं विद्याध्ययन के विना ब्राह्मण निष्फल है। अतः मूर्ख ब्राह्मण को दान देना निरर्थक है। मनु० अ० ३ श्लोक १६८ में लिखा है।

ब्राह्मणस्त्व नधीयानस्तृणाग्नि रिवशाम्पति।
तस्मैहव्यंनदातव्यं नहिभस्मंनिहूयते॥

अर्थात् जैसे तृण की अग्नि झटपट शांत हो जाती है वैसे ही वेद रहित ब्राह्मण है, अतः उसको द्रव्य न देना चाहिये क्योंकि राख में हवन नहीं होता। मनु० अध्याय ४ के श्लोक १९४ में लिखा है—

यथा प्लवेनौपलेन निमज्जत्युदकेतरन्।
तथा निमज्जताऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ॥

जिस प्रकार पत्थर की नाव पर चढ़कर मनुष्य जल में डूब जाता है, उसी प्रकार मूर्ख दाता तथा प्रतिगृहीता दोनों नरक में डूबते हैं। इसी प्रकार गीता अध्याय १२ श्लोक २० में लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥

जो दान कुपात्रों को निषिद्ध देशकाल में दिया जाता है वह तमोगुणी अर्थात् राक्षसी दान कहलाता है व्यास स्मृति अ० ४ श्लोक १५ में लिखा है कि शौच से नष्ट तथा व्रत से विहीन ब्राह्मणों को अन्न तक न दे यथा—

नष्टशौचे व्रतंभ्रष्टे विप्रेवेदविवर्जिते ।
दीयमानं रुचस्येनं भयाद्वै दुष्कृताकृतं ॥

मनु० अध्याय २ श्लोक १५७ में लिखा है जिस प्रकार काठ का हाथी, चमड़े का हिरण, वैसा ही बिना पढ़ा ब्राह्मण केवल नाम को धारण करने वाला है ।

यथा काष्टमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।
तथा विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नामधारकः ॥

ऐसा ही भविष्यपुराण तीसरे अध्याय पूर्वार्द्ध तथा शांतिपर्व अ० २६ में युधिष्ठिर महाराज ने कहा है कि जो धर्मभ्रष्ट लोगों को दान देते हैं वे १०० वर्ष तक परलोक में पुरीष भोजन करते हैं । भविष्यपुराण के अ० १३९ उत्तरार्द्ध में कहा है कि अकुलीन, मूर्ख, लोभी, पिशुनी ब्राह्मण को कभी दान न दे । विष्णुपुराण अंश ५ अध्याय ४८ में अर्जुन ने कहा है कि बिना वेद पढ़े हुए ब्राह्मण को दान देने से नष्ट होजाता है।

मार्कण्डेय महर्षि ने बनपर्व अध्याय १९७ में लिखा है कि धर्म से हीन पतित, चोर, पापी, कृतघ्नो, वेद के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचने वाले और वैश्या से समागम करने वाले को कदापि दान न दे। विदुर जी ने धृतराष्ट्र से कहा है कि नमक, दूध, शहद, तेल, घी, तिल, फल, फूल, शाक, कपड़ा, गुड़, अन्न तथा सम्पूर्ण सुगन्धों के बेचने वाले ब्रह्मणों के पैर न धोना चाहिये। वृद्ध गौतमसंहिता में श्रीकृष्ण जी महाराज ने युधिष्ठिर से कहा है कि हे राजेन्द्र ! अपात्रों को विपुल दान करना भी राख में हवन करने के समान निष्फल है।

अपात्रभ्यस्तु दत्तानि दानानि सुबहून्यपि।
बृथा भवन्ति राजेन्द्र ? भस्मान्याज्याहुतिर्यथा ॥

मनुस्मृति अध्याय ११ के श्लोक ७० में लिखा है कि जो ब्राह्मण निन्दित जनों से दान लेता, व्यौपार, शूद्र की चाकरी करता हो, झूंठ बोलता हो, उसको दान लेने का अधिकार नहीं रहता।

कृमिकीटवयो हत्या मद्यानुगत भोजनम्।
फलैधः कुसुमस्तेयमधैर्यं चमलावहम् ॥

बृहन्नारदीयपुराण अध्याय १२ में लिखा है कि वेदनिन्दक, देवता अर्थात् विद्वानों का द्वेषी, कर्म रहित, परस्त्रीरत, परद्रव्यहारी, ईर्षक, कृतघ्नी, मायावी (जो नित्य याचना कर करता है) और हिंसक को दान देना निष्फल है। मनुस्मृति के अध्याय ४ श्लोक १९२ में मनु जी महाराज स्पष्ट आज्ञा देते हैं कि जिस ब्राह्मण की वृत्ति बिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा बगले के समान हो, जो वेद को नहीं जानता हो उसका जल मात्र से भी सत्कार न करे।

नवार्यपि प्रयच्छेत्तु वैडालवृत्तिके द्विजे।
न वकवृत्तिकेविप्रे नावेदविदि धर्मवित्॥

लिङ्गपुराण में लिखा है जिसके शरीर पर गर्म करके शंख चक्र की छाप लगाई हो वह जीते जी मुर्दा तथा सर्व धर्मों से पतित के समान त्यागने योग्य है। जैसा कि—

शंखचक्रे तापयित्वा यस्य देहः प्रदह्यते।
संजीवनः कुणयस्त्याज्यः सर्व धर्मवहिष्कृतः॥

फिर ऐसे चिह्न के धारण करने वाले ब्राह्मणों को लिङ्गपुराण के कर्त्ता ने भी दान देना उचित नहीं बताया है। पद्मपुराण में लिखा है कि जो मनुष्य तम्बाकू पीने वाले ब्राह्मण को दान देता है वह नरक को जाता है और लेने वाला ब्राह्मण गांव का सुअर होता है। देखो महाभारत शान्ति पर्व में व्यास जी ने कहा है कि वेद ज्ञान से हीन ब्राह्मणों को कभी दान न देना चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार कपाल में पानी तथा कुत्ते के चमड़े में दूध बिगड़ जाता है उसी भांति कुपात्र को दान देने से कोई लाभ नहीं होता। बृहस्पतिस्मृति के श्लोक ५७, ५८, ५९, ६० में लिखा है कि कच्चे पात्र में रक्खा हुआ दूध, दही, घी, शहद, पात्र की कमज़ोरी से नष्ट हो जाता है उसी प्रकार गौ, सुवर्ण, वस्त्र, पृथ्वी इत्यादि को जो मूर्ख लेता है वह सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नष्ट हो जाता है इसलिए कुपात्रों को कभी दान न देना चाहिए। इसके उपरांत जब इन उपरोक्त महाशयों का पेट सोने, चांदी, अन्न, घी, हाथी घोड़े आदि से भी न भरा तब उन्होंने स्त्रीदान का भी आर्डर सुना दिया। सज्जन-जनों वेदों में ऐसे घृणित दान का चर्चा तक नहीं—परन्तु दान करने वालों को भी बुद्धि से विचार करना योग्य है कि स्त्री दान करने से क्या लाभ और हानि! हे प्यारे भाइयो! गंगादिस्थानों पर बहुधा पढ़े लिखे और अनपढ़ भाई स्त्री का भी दान करते हैं फिर नाम मात्र के पुरोहित मुंहमांगी दक्षिणा यजमान से लेकर स्त्री फेर देते हैं। अब विचार कीजिये! कि यदि यजमान मुंहमांगे दाम न दे तो स्त्री गई, यदि दें तो पुरोहित जी मालामाल होगये और यजमान का यथेष्ठ धन गया। बिना मूल्य दिये स्त्री का वापिस लेना पाप का मोल लेना है क्योंकि अब तो पुरोहित जी का पूरा अधिकार है, अपने सौदे बेचने में स्वतन्त्रता है, जितने मूल्य पर चाहें बेचें। इसके अतिरिक्त यदि पति स्त्री से नाराज़ हो और पुरोहित जी को मुंह मांगा न दे तो पुरोहित जी वह माल उसी को देंगे जो अधिक दाम देगा; यदि स्त्री नवयौवना हुई तो पुरोहित जी के कुटुम्बीजन ही उसको अन्यत्र क्यों जाने देंगे, तो बताओ इस दशा में उस स्त्री का पतिव्रत धर्म गया या नहीं। इसके अतिरिक्त



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहित जी अपने यजमान की स्त्री को पुत्री के समान जानते हैं तो क्या वह पुत्री का दान लेते हैं अथवा उस कहावत को यथार्थ पूराकर दिखलाते हैं कि मन में राम बगल में ईंटें अर्थात हाथी के दांत दिखाने के और खाने के अन्य होते हैं। शोक है ऐसे यजमान और पुरोहित और पंडों पर जो ऐसे अनुचित कार्यों को करते हुए भी धर्मात्मा कहलाते हैं और यजमानों की आंखें तक नहीं खुलतीं।

हे प्यारे दाताओ ! इन सत्यानाश के मारने वाले दानों को त्यागो। इसके अतिरिक्त सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण में कुरुक्षेत्रादि स्थानों पर भी ऐसी ही लीला रचकर अपना पेट भरते तथा कहते हैं कि ऐसा समय दान का अति दुर्लभ है। इस समय दान देने से विशेष फल होता है। इसका कारण यह बतलाते हैं कि जब विष्णुजी देवताओं को अमृत बांट रहे थे उस समय राहु नामक राक्षस देवता का रूप धर उनके साथ बैठ गयाऔर अमृत पी लिया। तब सूर्य चन्द्रमा ने चुग़ली खादी तो विष्णु ने क्रोधकर चक्र से राहु का शिर काट डाला, पर वह अमृत पी चुका था अतः वह मरा नहीं, इसी से सूर्य चन्द्रमा को जहां तहां पकड़ लेता है फिर जब भारतवासी भङ्गी आदि को दान देते हैं तो वह छुटकारा पाते हैं। इस हेत सूर्य चन्द्रमा उन लोगों को 'जो दान देते हैं' आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सदा भला हो जो हमको छुड़ाया। हा अविद्या! तूने भारत-वासियों के जी में ऐसा विश्वास कराया है उनको कुछ भी विचार नहीं, जो जैसा चाहते हैं गपोड़े सुनाकर हाथ मारते हैं देखिये ग्रहलाघव में लिखा है—छादयत्यर्कमिन्दुर्विधभूमिभः अर्थात् जिस समय पृथ्वी घूमती हुई सूर्य चन्द्रमा के बीच आ जाती है तब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है, इससे चन्द्रग्रहण कहते हैं। इसी भांति जब सूर्य तथा पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आजाता है तब चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ती है अर्थात् सूर्य कटता सा दिखाई देता है, इसी को सूर्य ग्रहण कहते हैं। ऐसे ही अथर्व कां० १४ अनु० १ मन्त्र १ में लिखा है "दिविसोमोअविश्रितः" अर्थात सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है, अतः भूमि के बीच आ जाने से चन्द्रमा में अन्धकार होने लगता है अर्थात चन्द्रमा कटा सा दिखलाई देता है। इसी प्रकार अङ्गरेज़ी कालिजों तथा स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थी अच्छे प्रकार जानते हैं फिर पुराणों के इस लेख को मान भङ्गी तथा नाम मात्र के ब्रह्मणों अथवा कुपात्रों को सूर्य चन्द्र के छुटाने के लिये दान देना महा मिथ्या है।

इसलिये पाप से बचने और दान के फल प्राप्त करने के लिये प्रथम पात्र बनाने के लिये विद्या दान कीजिये। विद्या की महिमा मैं पहिले लिख चुका हूँ फिर भी आप से डंके की चोट कहता हूँ कि सम्पूर्ण विद्याओं का श्रोत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद है। उसके समान अन्य कोई पुस्तक ज्ञान प्रदायक नहीं। जो कोई स्त्री पुरुष चारों वेदों को ब्रह्मचर्य्य के साथ पढ़ते हैं वह सहस्रों भूषणों को धारण कर सर्वोपरि दर्शनीय होते हैं। इसलिये अथर्ववेद कां० १०। सू० ६ मं० ६० में कहा है कि जो स्त्री पुरुष अन्यों को विद्या का दान करते हैं वे संसार में आनंद पाते हैं। मनु महाराज ने अपनी स्मृति के अ० ४ श्लोक २२९ से २६२ तक इस दान के विषय में लिखा है कि इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् विद्या के दान से दोनों प्रकार के सुख मिलते हैं इसलिये सब से श्रेष्ठ दान विद्या दान कहाता है क्योंकि अन्य दानों का फल अन्य योनियों में मिलता है परंतु विद्या दान का फल मनुष्य योनि में ही मिल जाता है इसलिये सब स्त्री पुरुषों को जी खोल कर विद्या दान की ओर ध्यान दे जगत् पिता परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि-हे प्रभु! आप हमको शांति प्रदान करो। मैं विद्यावान् और धनवान् होऊँ, जिससे मैं बुद्धिमान संयमी विद्यार्थियों के लिये शिक्षा दान और धन दान कर सकूं।

जब देश में विद्या दान का प्रचार था तब प्राचीनकाल में गृहस्थीजन बानप्रस्थ आश्रम में जा अपने २ स्थानों यानी कुटियों पर स्त्रियाँ ब्रह्मचारिणी पुत्रियों को और पुरुष ब्रह्मचारी पुत्रों को विद्या पढ़ाया करते थे और संन्यासीजन भ्रमण कर नाना प्रकार के उपदेश दिया करते थे। अब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जब गृहस्थीजन ही विद्या नहीं पढ़े फिर उन घरों से निकले नाम मात्र के साधू संन्यासी विद्या किस प्रकार पढ़ायें ! उपदेश क्योंकर करें ! देश की उन्नति, क़ौमकी तरक़्क़ी के ख़्यालात वह कहां से लायें इसलिए इन सब बातों को जान जो लाखों और करोड़ों का दान अनधिकारी एवं कुपात्रों को देते हैं वह सब बन्द कर जहां प्राचीन प्रणाली के अनुसार ब्रह्मचर्य्य के साथ विद्या पढ़ाई जाती है, आचरण सुधारे जाते हैं जैसे गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन जहां फ़ीस लेकर शिक्षा होती है और गुरुकुल सिकंदराबाद और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जहां बिना फ़ीस के शिक्षा होती है जहां धन के अभाव से वहां के प्रबंधकर्ता यथार्थ प्रबंध नहीं कर सकते किन्तु धन की चिन्ता में ही अपने अमूल्य समय को देकर धन एकत्रित करने के लिए चक्कर लगाया करते हैं तो भी सहस्रों विद्यार्थी पुस्तक वस्त्र भोजनों के बिना शिक्षा से रह जाते हैं और उनका जीवन व्यर्थ जाता है। अनेक विद्यार्थी निकल निकल कर इधर उधर मारे २ फिरते हैं और धनवान, साहूकार, ज़मींदार, इत्यादि को स्मर्णकर आहें भरकर रह जाते हैं देखिये मैं आपको एक विद्यार्थी का पत्र सुनाता हूँ जो **शंकर** अश्विन कृष्ण १ संवत् १९८२ में छपा है।

मैं अब बी० ए० फ़ोर्थ ईयर में दाख़िल हो गया हूँ यह आज कलकी शिक्षा मेरे ग़रीब आदमी के लिए नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रहन, सहन का खर्च भयङ्कर है, पुस्तकें सब बदल गई हैं। मैं बिना पुस्तकों के ही क्लास अटेंड करता हूँ, पुस्तकों के मोल लेने के लिए उतने पैसे कहां से लाऊँ। जिनके पास पुस्तकें हैं खर्च करने के लिए दामों की कमी नहीं उन्हें पढ़ने की तमीज़ नहीं और मुझ जैसा ग़रीब छात्र भूखा रह कर रूखा सूखा खाकर बिना पुस्तकों के ही क्लास में जा बैठता हूँ किस को ध्यान है। इस स्वार्थ युग में कोई किसी के लिये ध्यान भी क्यों देवे, मेरे जैसे सैकड़ों एवं सहस्रों छात्र धना भाव के कारण वर्तमान शिक्षा से वञ्चित रहते होंगे मेरी दिक्कतों को आप जानते होंगे। मैं बड़ी परेशानी में हूँ".....

इस प्रकार एक नहीं अनेकों आत्मायें आर्यवर्त देश में बिलखती दिखाई देती हैं। इसलिये उपरोक्त प्रकार की पूर्ण शिक्षा के लिए दान देना गृहस्थों का मुख्य धर्म है। अथर्व वेद कां० २० सू० २७ में लिखा है बुद्धिमान राजा एवं सेठ साहूकार आदि सज्जन ऐसा प्रबन्ध करें कि जिससे ब्रह्मचारी लोग निश्चित् होकर उत्तम शिक्षकों से उत्तम रीति से विद्या प्राप्त करें यदि भारत इस वेद आज्ञा के अनुकूल कार्य करता तो भारत की यह कुदशा क्यों होती। देखो अमरीका, इंग्लैण्ड, जापान आदि देश वाले विद्या प्रचार आदि देशोपयोगी विषयों में अपने रुपयों को व्यय करते हैं जिसके कारण असभ्य देश सभ्य हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये और भारत जो सब देशों में सभ्यता का शिरोमणि गिना जाता था असभ्य हो गया। इसलिए भारतवासियों को भी विद्या प्रचार में ही दान देना उचित है। क्योंकि जब से विद्या दान और विद्या फैलाने के नियम को तोड़ा तब से ही भारत की ग़रीबी के दिन आगये। वीर्य्य रक्षा न कर कायर एवं आलसी बन परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़—संगठन के महत्व को भूल अन्य जातियों की दृष्टि में महा तुच्छ बन गये। अतएव उपरोक्त बातों पर ध्यान दे करोड़ों का दान विद्या के लिये दीजिये। स्मरण रखिये कि इसी एक दान में अन्य दान भी आजाते हैं जैसे विद्या पढ़ाने के लिए उसके प्रबन्ध में ही **कुआं, बावड़ी, तालाब बनवाकर,** विद्यार्थियों को स्नानादि के लिए जल की आवश्यकता को दूर करना, **अन्नदान कर भोजनों का प्रबंध, वस्त्रदान,** देकर शीत और उष्ण ऋतुओं में उनकी रक्षा करना **विद्यालय** आदि स्थान बनवाकर घर दान का फल प्राप्त करना **पृथ्वीदान** अर्थात् गांव आदि दान देकर **ब्रह्मचारियों, शिक्षकों प्रबन्ध कर्ताओं को** नाना प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त कर देना योग्य है जिससे वह निश्चिंत होकर विद्यार्थियों को विद्यादान करने में लगे रहें जैसा पहिले अभी वर्णन कर चुका हूँ। इसके उपरांत—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्टं कुलं भिन्न तड़ाग कूपं भ्रष्टं च राज्यं शरणागतं च ।
गौ ब्राह्मणं देवगृहंच जीर्णं य उरेद्धत् पूर्वचतुर्गुणानाम् ॥

१–नष्ट कुल वही है जिन में दूध पीते बालक बालिकाओं का कोई लालन पालन करने वाला न हो, जिनको अनाथ कहते हैं, उनकी पालना दान से यतीमखाने व अनाथालय बनवाकर करना चाहिए ।

प्यारे सुजनों ! इस ओर आप आंख भी नहीं उठाते हज़ारों अनाथ पादरियों ने लेकर धर्म से भ्रष्ट कर दिए, क्या यह पाप की बात नहीं कि हमारे तुम्हारे होते स्वदेशियों की संतानों को अन्य देशीय पालन कर पीढ़ी दर पीढ़ी का नाश मारदें । क्या यह शोक की बात नहीं ? क्या इन सण्ड मुसण्डों के लालन लालन से अधिक पुन्य की बात नहीं ? सच पूछो तो धिक्कार है हमको, जो हमारे जीते जी भारत संतान का धर्म भ्रष्ट कर सदा के लिए अपना दास बनालें, तिस पर भी हम दान का घमण्ड करें अथवा नशे में चूर रहें । ज़रा आँख खोलिए, अविद्या रूपी नशे में ऐसे न डूब जाओ कि घर की भी सुध न रहे । अब उठ बैठिये, क्योंकि अब शाहजहांपुर, बरेली, फ़िरोज़पुर, अजमेर, लाहौर, आगरा आदि में अनाथालय नियत हो गए हैं, जहां इन दुखियों का अपनी संतान से भी अधिक पालन पोषण होता है गवर्नमेंट भी सहायता देती है, बहुधा देश के शुभचिंतक भी दान देकर उनको सनाथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कर रहे हैं, अतः सब सम्पूर्ण भारतवासियों को इनके पालन की सुध लेना योग्य है।

२–टूटे फूटे कुएँ तालाबों की मरम्मत कराना, अर्थात् कुएँ बावली तथा तालाबों को ऐसे स्थानों पर बनवाना चाहिए जहां ग्रीषम ऋतु में बिना जल के पथिकों तथा पशु पक्षियों के प्राण संकट में पड़ते हों, वा पियाऊ लगवाना जिससे दीनों को उत्तम जल मिलता रहे।

प्यारे सुजनों ! बिना जल के प्राण जाते हैं, इस कारण इसका प्रबंध करना भी पुन्य है क्योंकि उस समय कोई दान काम नहीं देता अर्थात् रुपया, पैसा, मोती, कञ्चन आदि मिट्टी सदृश जान पड़ता है, जैसाकि किसी कवि का वचन है–

निरजन बन में प्यास सतावे।
मोती सीप काम नहिं आवे॥

३–( भ्रष्टराज ) अर्थात् राज्य पर विपत्ति हो तो उसकी सहायता करना भी पुन्य है, क्योंकि उसके रहने से नाना भांति के आनन्द रहते हैं।

४–(शरणागतं च ) अर्थात् जो मनुष्य आपत्ति वा विपत्ति के कारण अपनी शरण आया हो तो उसकी अवश्य ही सहायता तन मन धन से करनी चाहिए, परन्तु डाकू, चोर, बदमाश, राज्य का अपराधी आदि कुकर्मियों अधर्मियों की सहायता करना भला नहीं। क्योंकि ऐसे खोटे मनुष्यों के

CC-0.Pànini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाने तथा सहायता करने से ( जो सांसारिक जनों को नाना भांति के क्लेश पहुँचावें ) उनका पाप उन दाताओं के गर्दन पर होगा जिन्होंने ऐसे कुपात्रों की सहायता की है।

५–( गौ की रक्षा करना ) हे सज्जन पुरुषो ! गौ आप का बड़ा उपकारी जीव है, इसी कारण हमारे पूर्वजों ने इसके गुण देखकर 'तरण तारण' नाम इसी को दिया। गौमाता भी इसी को कहते हैं क्योंकि यह माता के समान अपने रक्षकों का समस्त आयु पालन करती है। इसे काम-धेनु भी कहते हैं क्योंकि यह सकल कामनाओं को पूर्ण करती है। इसका अमृत रूपी दूध मनुष्यों के जीवन का बीज, आयुर्बल, आकृति, धारणा, स्मृति, कांति का धारण, सौंदर्य तथा रूप का देने वाला शुद्ध तथा मनके मैल को पवित्र करने वाला है। ऐसा ही इसका घृत निर्बलता शोष ( खुश्की ) कृशता ( दुर्बलता ) पित्त वायु को हरने वाला, जीर्णज्वर चेहरे की ज़र्दी, नेत्रविकार आदि बिकारों को दूर करता है। इसलिये अथर्व वेद कां २ सू० २५ मंत्र ५ में लिखा है कि गौओं की सदा रक्षा करनी चाहिये जिन से सब स्त्री पुरुष दूध घी का सेवन कर हृष्ट पुष्ट होकर शूरवीर रहें और घरों में सब प्रकार की सम्पत्ति बढ़ती जावे। जैसाकि—

आहरणम् गवा क्षीरमाहर्षं भाग्य १ रसम्।
आहृता अस्माकं वीरा आ पत्नी रिदमस्तकम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


खेती का दारमदार इसी पर है इसके गोबर से खाद बनता है, घी से यज्ञ होते हैं, यज्ञसे वर्षा और वर्षा से अन्न फल फूल नाना प्रकार के तृण जिन से जीवन निर्वाह होता है इसलिये इसकी रक्षा और उन्नति के लिये दान देकर उत्तम प्रबन्ध करना चाहिये। बूढ़ी गाय के दान करने से कुछ लाभ नहीं। इस हेतु बीमार, बूढ़ी रोगी गायों की रक्षा के लिये रक्षागृह बनवा कर उनका पालन करना परम धर्म है। मनुने अपनी स्मृति अ० ४ श्लोक १६१ में लिखा है कि आचार्य पिता, माता, गुरु, तपस्वी और गाय की सदा रक्षा करनी चाहिये। तदउपरांत दीनहीन सुशील एवं विद्वान, गुणवान, ब्राह्मणों की सदा सहायता करना योग्य है क्योंकि इन्हीं के द्वारा वेदादि सत्य विद्याओं का प्रकाश हुआ, इन्हों के प्रभाव से ज्ञानरूपी प्रकाश ने संसार के अन्धकारों को मेट दिया, इन्हीं ने हमारे अर्थ अपने घर बार सकल परिवार को त्याग कर प्राण तक न्योछावर कर दिये। सच पूंछो तो जो कुछ वैभव, प्रकाश, तेज होगया, सब इन्हीं का प्रभाव था फिर भला कौन ऐसा मनुष्य है जो इस उपकार को न मानता होगा। अथर्व वेद कांड ५ सू० १९ में लिखा है कि जो अत्याचारी लोग विद्वान ब्राह्मणों कोसताते हैं वे घोर युद्धों में हार कर बड़े बड़े कष्ट उठाते हैं। इसलिये प्राचीन समय में ब्राह्मणों और गायों की रक्षा के लिये प्राणों को न्योछावर कर देते थे फिर धन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कौन कहे। देवगृह उन स्थलों को कहते हैं जहां पूर्वोक्त गुणयुक्त महात्मा ब्राह्मण संन्यासी निवास करते हों अथवा जहां सदैव नियत समयों पर धर्मोपदेश होता रहता है जिसे सुनकर सर्वजन धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

हे भ्रातृगणों ! ऐसे देवगृह प्रत्येक नगर में होने आवश्यक हैं, जहां प्रति दिन नियत समयों पर वेदादि सत्यशास्त्रों के व्याख्यान हों कि जिससे प्राणीमात्र परमेश्वर की आज्ञाओं को जान सदा प्रेम पूर्वक उन आज्ञाओं को पालन कर आनन्द को प्राप्त हों। सो वर्तमान समय में इस भांति के व्याख्यान न होने से देखिये भारत की क्या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबने अपने धर्म पर पानी फेर दिया, वेद का नाम ही नाम रह गया। मुख्य तो यह है कि सत्योपदेश के न होने से ही मत मतान्तर फैल गये कि जिनके कारण फूट ने अपना राज्य कर सबको तितर-बितर कर दिया। सुख आनन्द जाता रहा, विद्या का नाम ही मिट गया, जिसके कारण देवगृह के स्थान पर नाना भांति के मन्दिर बन गये, जहां मूर्ख बाबा जी झांझ, ढोलक, मंजीरा, शंख आदि बजा कर भंग, गांजा, अफयून आदि नशे जमाते हैं। सच पूंछो तो इन नाम मात्र के वैरागी, ब्राह्मण, संन्यासियों ने भारत को ग़ारत कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्यारे ! यह वही भारतभूमि है कि जहां धर्म का नक्कारा बजता था, यह वही भारतवर्ष है जो सभ्यता में अद्वितीय था। यह वही जम्बूदीप है कि जहां के निवासी सत्यता के कारण देव शब्द के नाम से पुकारे जाते थे। यह वही रत्न मय भूमि है कि जहां के सुजनों ने धर्म के लिये अपने प्राण तक समर्पण कर दिये। यह वही देश है कि जहां की स्त्रियां देवियों के नाम से पुकारी जाती थी। हा शोक ! आज वही आर्यावर्त्त है कि जहां के निवासी अपने धर्म को भी नहीं जानते। हाय भारत ! तुम्हारी क्या गति हो गई ? तुम्हारा तो स्वरूप ही पलट गया ? तुम्हारा नाम, प्रकाश, वैभव, प्रतिष्ठा सब सत्योपदेश अर्थात् धर्म पालन ही के कारण हुई थी, सो आज सब खाक में मिल गई। धन्य है उस जगत् पिता परमेश्वर को जिसने इस अंधेरे के समय में **स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज** को उत्पन्न कर दिया जिन्होंने भारत के धर्मरूपी प्राणों को सत्योपदेशरूपी अमृत पिला कर चैतन्य कर दिया कि जिसके कारण भारतवासी घोर निद्रा को त्याग कर भारत के पुनरुद्धार के लिये तन, मन, धन से नाना भांति की चिकित्सा कर रहे हैं वैसा पर शोक तो यही है कि अब भी लाखों का दान करने पर सच्चे दानों की ओर वैसा ध्यान नहीं कि जैसा होना चाहिये इस समय वेद प्रचार फ़ण्ड को दान देकर भूमण्डल के समस्त देशों में वेद प्रचार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराइये। देवालय अर्थात् आर्य्यमन्दिर बनाकर सदा प्रत्येक उत्सव तथा त्योहारों पर धूमधाम से हवन कर सत्योपदेश सुनिये जिसके कारण समस्त नगर में धर्म की चर्चा होने लगे, मनुष्य धर्म को जान उस पर चलें कि जिससे भारत में सुख और आनन्द की वर्षा होने लगे। इसीलिये यजुर्वेद अ० २४ मन्त्र ५८ में कहा है कि वेद प्रचार करने वाले उपदेशकों को घृतादि पदार्थों और गौ इत्यादि के दान से यथा योग्य सत्कार करें। और अ० २० मन्त्र ७९ में लिखा है कि गृहस्थ पुरुषों को उन्हीं पुरुषों का भोजन आदि से सत्कार करना चाहिये कि जो विद्या प्रचार और उपदेश करके अच्छे कार्यों के अनुष्टान से जगत के बल, पराक्रम, यज्ञ, धन और विज्ञान को बढ़ाते हैं। इसी प्रकार यजुर्वेद अ० २५ मन्त्र ५७ में कहा है कि वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता अध्यापक, उपदेशक आदि विद्वानों का सदैव सत्कार करे और वे विद्वान लोग भी सबके लिए उत्तम उपदेश तथा धन आदि पदार्थों को सदा देवें जिससे परस्पर प्रीति और उपकार में बड़े २ सुखों की प्राप्ति हो। जैसाकि—

अग्ने त्वन्नो अन्तम उतत्राताशिवो भवाःहव्यः।
वसुरग्निर्वसुश्रवाअच्छामक्षिद्युमत्तमंरविन्दाः॥

ऋग्वेद मं० १। अ० २४। सू० १६५ मं० ८ में लिखा है कि दीन कंगालों को धनाढ्य जन अन्नादि सामिग्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देकर प्रसन्न करे इसके सिवाय अपने कुटुम्ब तथा घराने या मुहल्लों के दीनों तथा सच्चे भक्तों की प्रत्येक प्रकार से सुध लेना परम आवश्यक है क्योंकि किसी कवि ने कहा है—

नौ बुलाये तेरह आये देखो यहां की रीत।
बाहर वाले खाय गये घरके गावें गीत॥

इसी प्रकार नगर और गावों की विधवाओं के खान पान तथा उनकी आत्मिक उन्नति के अर्थ शिक्षा, सत्योपदेश का प्रबन्ध करना भी आवश्यक है कि जिससे वह धर्म पर यथावत् आरूढ़ रहें तदनन्तर प्रत्येक नगर में और बड़े गांवों में औषधालय खोलने चाहिए जहां पर दीनों को नियत समय पर औषधि विना मूल्य मिला करे। धर्मशाला बनवानी चाहिये जहां रेल के मुसाफ़िरों के सिवाय दीन दुखी आराम से रह सकें। इसके सिवाय जहां जहां महात्मा, पूर्ण विद्वान् तथा शिल्पीजन रहते हों वहां क्षेत्र खोल कर विद्यार्थियों को नाना प्रकार की विद्या पढ़वानी चाहिए, न कि वर्तमान की भांति क्षेत्रों तथा धर्मशालाओं में लुच्चे, गुण्डे, धर्महीन, आलसी, मोटे ताज़े अच्छे प्रकार खा मज़े उड़ाते हैं और दीन, अन्धे, लंगड़ों के उपरांत विद्या पढ़ने वाले विद्यार्थी सच्चे साधू महात्माओं को नाम मात्र को भोजन आदि नहीं मिलते इन सब बातों का शोधन कीजिये। इसके उपरांत छुआछूत को दूर करना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाटिका लगवाना, मार्ग ठीक करना, दीनों की पुत्रियों का विवाह करना, नाना प्रकार के गुण सीखने के अर्थ निर्धनों को सहायता देना, धर्मग्रन्थों को अनेकान भाषाओं में अनुवाद करा कर बांटना, बड़े २ हवन कराकर वहां का जल वायु आदि शुद्ध करा देना, अथवा देशोपकारक कार्य्यों में बड़े २ नेताओं की तन, मन, धन से सहायता करना परम धर्म है अर्थात् श्रेष्ठ स्त्री पुरुषों की रक्षा करना, विद्या शिक्षा का फैलाना और दुष्ट आचरणों के दूर करने के लिये अपने धन को व्यय करना चाहिए जैसा ऋग्वेद सू० ३० । मं० १५ में लिखा है । जिस स्थान पर इन ईश्वरीय आज्ञाओं के अतिरिक्त विद्वानों के भोगने योग्य पदार्थ मूर्खों को दिये जाते हैं, तथा विद्वानों का तिरस्कार होता है उसी देश में अकाल, मरी तथा नाना प्रकार के उपद्रव होते हैं जैसे भारतवर्ष में इस समय हो रहा है ।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां चव्यतिक्रमान् ।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं व्यथा ॥

अतः अब मैं अपने भाई बहिनों से प्रार्थना करता हूँ कि यदि आपको दान फल की इच्छा हो तो सदा मन वचन और कर्म से परमेश्वरीय नियमों को यथावत् पालन कीजिये । क्योंकि परमात्मा की आज्ञा के प्रतिकूल कार्य करने में नाना प्रकार के दुख भोगने पड़ते हैं अतः उनकी आज्ञा का यथार्थ ज्ञान होने के अर्थ विद्वान् धर्मात्माओं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(कि जिन्होंने मन, बचन, कर्म को एक कर दिया है।) का समागम कर सदा पुरुषार्थ के साथ मनको काम, क्रोध लोभ, मोहादि दोषों से पवित्र करते रहिये। क्योंकि बिना मन की पवित्रता के किसी प्रकार के दान से यथार्थ फल नहीं मिल सकता। अतः मन को दोषों से बचा कर वाणी से सत्य बोलने का पूर्ण नियम अर्थात् व्रत धारण करके अपने स्वदेशियों को सत्यवाणी का पूर्णदान कीजिये कि जिससे प्राणी मात्र को आनन्द मिले।

प्यारे सुजनों! वाणी से प्रयोजन केवल शब्द ही से नहीं वरन् वाणी—शब्द, अर्थ, सम्बन्ध तीनों के योग को कहते हैं। सम्पूर्ण संसार का वाणी से ही प्रबन्ध किया जाता है, वाणी ही सारे मनुष्य तथा पशुसृष्टि पर आज्ञा चलाती है। वाणी में जो शक्ति है वह किसी इन्द्रिय में दृष्टि नहीं आती। वाणी ही ने समय पाकर कामों के विचारों को पलट दिया, वाणी ही मनुष्यों की प्रतिष्ठा के लिए सच्चा हथियार है उसकी सहायता से मनुष्य जाति ने समस्त भूमण्डल के जीवों को अपने आधीन कर रखा है जो वाणी न होती तो भला मनुष्य तथा पशु में क्या अन्तर होता अर्थात् वाणी मनुष्य को मोक्ष सुख का आनन्द दिलाती है और यही उनको नरक के दुःखसागर में ले जाती है। अतः आओ प्यारे भाई बहिनों! हम सब



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मिलकर पूर्ण प्रेम के साथ नम्रतापूर्वक उस जगत् पिता परमात्मा से मन, बचन, कर्म के साथ उस शुद्ध निर्मल वाणी के अर्थ प्रार्थना करें जिसको प्राप्त कर मनुष्यों ने अपने आप को ही नहीं वरन् हज़ारों जीवात्माओं को पाप के अथाह समुद्र से पार लगाया है। प्यारे भाइयो! हम सब अपने प्रेम से उस जगदीश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें ऐसी मधुर तथा आकर्षण शक्ति वाली वाणी से विभूषित करे जिसको पाकर संसार के सच्चे घरों में पहुंचने तथा अपने प्यारों के गले में लिपटने के लिये अपना तन मन धन सब न्योछावर कर दिया जैसा कि वेद में लिखा है।

पावकानःसरस्वती वाजेभिर्वाजनीवती यज्ञं वष्टुधियावसुः।

अब अगर हमको और आपको सुख भोगना है तो प्रथम जो आपके हाथ में दान करना है उसको ठीक २ रीति से करना आरम्भ कर दीजिए तो मेरे विचार से आपका देश १५ वर्ष में एक उत्तम देश बन जायगा। देखिए प्रति वर्ष प्रत्येक नगर में १० व २० विवाह होते हैं इनमें से होने वाले दान जिस स्थान पर बरात जावे वहां एक कमेटी बनाकर दानका रुपया उसके आधीन करदिया जाय पांच या दस वर्ष में जितना रुपया इकट्ठा हो उससे और अन्यदान जो समय समय पर होते रहते हैं एक बड़ी कमेटी सूबे के नाम से हो उसके पास रुपया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इकट्ठा किया जाय फिर सब सूबों की एक महासभा बना कर सब रुपया उसमें जमा करें और बड़े तीर्थों तथा मन्दिरों आदि में जो रुपया आता है उसका भी प्रबन्ध करके सब रुपयों से, विद्या प्रचार, वेद प्रचार, अनाथालय, औषधालय, अंधे, लूले कोढ़ी इत्यादि में आवश्यक कार्य्यों तथा शिल्पकला और यंत्रों के उन्नति इत्यादि में लगाया जाय। फिर ५२ हज़ार साधुओं में जो योग्य हों उनसे काम लीजिये इसके उपरान्त आगे होने वाले वानप्रस्थ सन्यासियों से प्रीति पूर्वक, उनकी इच्छा के अनुसार प्रचार कराइए, उत्तम २ ग्रन्थ लिखाइए। वानप्रस्थियों के अर्थ वानप्रस्थ आश्रम (गङ्गा, यमुना, नर्वदा, कावेरी, सिंध, ब्रह्मपुत्र आदि नदी व पहाड़ों पर जहां का जल वायु उत्तम हो) बना पुस्तकालय भी खोल दीजिये, और उनका प्रतिवर्ष का हिसाब साधारण से साधारण मनुष्यों को छपवा कर वितीर्ण कीजिये और पर्वों पर तीर्थ स्थानों पर दान महात्म, उत्तम दान के और परोपकार के फलों को बतलाइये देखिए फिर देशकी क्या दशा होती है।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गृहस्थाश्रम की प्रशंसा
## और
## वर्ण व्यवस्था।

प्रिय सज्जन पुरुषो और चतुर महिलाओ! वेद स्मृतियों में गृहस्थाश्रम को सब आश्रमों का मूल माना है इसलिये इस आश्रम का अनुष्ठान अच्छे प्रकार से करना चाहिये क्योंकि इस आश्रम के बिना मनुष्यों वा राज्यादि व्यवहारों की सिद्धि कभी नहीं होती, जैसा य० अ० ६ में लिखा है।

गृहामाविभीत मा वयध्वभूर्ज्ज विभूत एमसिऊर्जविभ्रजद्वः
सुमनाः सुमेधा गृहानैमिमनसा मोदमनाः।

अथर्ववेद कां० २ सू० १६ मं० २ में कहा है कि गृहस्थाश्रम, ईश्वरकृत नियम है इसकी रक्षा के लिये विद्वान् एवं महात्माजन बड़े २ प्रयत्न करते हैं राजा नियम बनाते और माता पिता वर एवं कन्या को उपदेश कर विवाह करते हैं। मनुजी ने कहा है कि जिस प्रकार वायु के आश्रय जीव रहते हैं उसी भांति अन्य आश्रम वाले अपनी जीविकाके लिये इस आश्रम का आश्रय लेते हैं।

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्व जन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः॥

अध्याय ६ श्लोक ९० में लिखा है कि जिस प्रकार से सम्पूर्ण नदी समुद्र में जाकर विश्राम पाती हैं उसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भांति सब आश्रम वाले गृहस्थी में जाकर ठहरते हैं। ऐसा ही वशिष्ठस्मृति अ० २ श्लोक ४६ में कहा है कि देवता (विद्वान्) मनुष्य और तिर्यक योनि वाले जीव भी अपना २ भोजन गृहस्थों से पाते हैं। श्लोक ४७ में लिखा है कि ब्रह्मचर्य्य, वानप्रस्थ और सन्यास इन तीनों आश्रमों की योनि (कारण) गृहस्थाश्रम ही है अतएव इसके दुःखी होने से उपरोक्त तीनों आश्रम दुखी होते हैं। शंखस्मृति अ० ४ श्लोक ५ में कहा है कि तीनों आश्रम गृहस्थ के प्रसाद से यथा विधि जीते हैं और अ० ३ श्लोक ७८ में कहा है कि गृहस्थ तीनों का यथा विधि सत्कार करता है इसलिये गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में बड़ा है। अ० ४ श्लोक ६ में कहा है गृहस्थ ही यज्ञ करता है वही तप और ज्ञान देता है इसलिए गृहस्थाश्रम सब से बड़ा है जैसा कि—

गृहस्थ एव यज्ञं ते गृहस्थस्तपते तपः।
ददाति च गृहस्थश्च तस्माच्छ्रेयान् गृहाश्रमी॥

पद्मपुराण द्वितीय भूमिखण्ड अध्याय ६० श्लोक १८, १९, २० में कहा है कि गृहस्थाश्रम से श्रेष्ठ कोई आश्रम भूतल पर नहीं। गृहस्थ का घर सर्व तीर्थमय वा सर्व देवमय होता है, क्योंकि गृहस्थाश्रम के आश्रित होकर सब जीव जन्तु जीते हैं, इसलिये गृहस्थाश्रम के समान अन्य आश्रम हम नहीं देखते जहाँ कि अग्निहोत्र होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और देवताओं की पूजा होती वा वेद पढ़े जाते हों। षष्ठ उत्तर खण्ड अध्याय ७४ में महादेव जी ने पार्वती से कहा है, तपस्वी वन में तपस्या करते हैं परन्तु जब उनको भूख लगती है तब वह गृही के यहां आकर भोजन करते हैं इसलिए इसको भी तपस्या का कुछ फल मिलता है। जो मनुष्य इस आश्रम को अच्छे प्रकार पालन करते हैं वह उत्तम फल को पाते हैं, क्योंकि गृहस्थाश्रम में ही देवताओं और अतिथियों को भोजन मिलता है और मार्ग चलने वालों का यही आश्रम है, इसलिए वह अत्यन्त धन्यवाद के योग्य है।

तप्त्वातपस्वी विपिने क्षुधार्तो गृहं समायातिसदान्नदातुः।
भक्त्यासवान्नं प्रददाति तस्मै तपोविभागं भजतेहितस्य॥

देवी भागवत स्कन्ध १ अध्याय १४ श्लोक ५६, ५७ में व्यास जी ने कहा है जो न्याय से धन लाता और वेदोक्त श्राद्धादि कर्म करता तथा पवित्र रहता है ऐसे गृहस्थ की, मध्यान्ह में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और यती व्रत-स्थितजन आशा करते हैं, इसलिये इस आश्रम के समान धर्म हमने न देखा न सुना। श्रीमद्भागवत स्कंध ३ अ० १४ में लिखा है कि जिस प्रकार मनुष्य नाव में बैठकर समुद्र पार हो जाते हैं उसी प्रकार इस आश्रम में रह कर सम्पूर्ण व्यसनों से पार हो जाता है।

सर्वाश्रमानुपादाय स्वाश्रमेण कलत्रवान्।
व्यसनार्णवमत्येति जलनावैर्यथार्णवम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसी स्कंध के अध्याय १५ में कश्यपजी ने कहा है कि इस आश्रम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है, इसी कारण यह सर्वश्रेष्ठ है। भविष्य पुराण अ० १५० में भी ऐसा ही वर्णन किया है। मारकण्डेय पुराण अध्याय २९ में गृहस्थाश्रम को काम-धेनु गाय की समता दी है।

प्रिय सज्जन पुरुषो और सुजन स्त्रियो ! उपरोक्त कथन से स्पष्ट प्रकट हो रहा है कि यह आश्रम सम्पूर्ण आश्रमों की जड़ अर्थात् मूल है, यही सब के पालन पोषण का केन्द्र यथा वर्णों का द्वार है।

इसलिये गृहस्थों के धर्मानुकूल कार्य करने से संसार की उन्नति होती है और इसके विपरीत कार्य करने से संसार बिगड़ जाता है, क्योंकि जड़की रक्षा से स्कंध ( डालें ) और डालों से डालियां और उससे पत्ते फल फूल इत्यादि हो जाते हैं और मूल के नाश होने से सब नष्ट हो जाते हैं। इसी हेतु यजुर्वेद अ० ८ मं० ३३ में स्पष्ट कहा है कि इस आश्रम के आधीन सब आश्रम हैं यदि इसको वेदोक्त व्यवहारों के अनुसार चलाया जावे तो इससे दोनों लोकों के सुखों को प्राप्ति हो सकती है जैसा कि—

आतिष्ट बृहनस्थ युक्ताते ब्रह्मणा हरी।
अर्षाचीनग्वं सुते मनो ग्रावा कृणोतुवग्नुना।
उपया मगहीतोसींद्रायत्वा षाडार्शन एवतयोनिरिन्द्रायत्वाशोडषिने॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथर्ववेद कां० १९ में कहा है कि जो स्त्री पुरुष बड़े २ विघ्नों और कष्टों को सह सकें वह ही गृहस्थाश्रमी बन सकते हैं। मनु महाराज ने कहा है कि दुर्बल इन्द्रिय वाले स्त्री पुरुषों को धारण करने योग्य यह आश्रम नहीं है। ऐसा ही पद्मपुराण षष्ठ उत्तर खण्ड अ० ७४ श्लोक ९ में महादेव जी ने पार्वती से कहा है कि अजितेन्द्रियों को यह आश्रम दुःखकारक है, इसलिये ब्रह्मादिक देवताओं ने इस आश्रम को बुद्धिमानों को सेवन करने की आज्ञा दी है।

ऋग्वेद अ० ३ सू० ५३ मं० ४ में लखा है कि जैसे दो श्रेष्ठ घोड़े रथ में बैठे हुए स्वामी को एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाते हैं ठीक उसी प्रकार परस्पर प्रेमी-प्रसन्न चित्त योग्य दो विद्वान अर्थात् स्त्री पुरुष ही गृहस्थाश्रम को शोभित करने में समर्थ होते हैं। अब आप विचारिये कि क्या हम और आप उपरोक्त आज्ञाओं के अनुसार कार्य करते हैं उत्तर मिलेगा नहीं ? इसके अतिरिक्त **श्रम** धातु का अर्थ तप करना या परिश्रम करना और **आ-श्रम** का अर्थ तप–परिश्रम या उन्नति करने के क्षेत्र अर्थात् स्थान हैं। योगवसिष्ठ में लिखा है कि जिन स्त्री पुरुषों में उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम यह छः गुण होते हैं वही गृहस्थाश्रम के सुखों को भोग सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रियपाठक गणों उपरोक्त गुण हम आप के पास नहीं इसलिये सुखों की प्राप्ति के लिये सब से प्रथम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रबन्ध कीजिये फिर वेदानुकूल अर्थात् गुण कर्म स्वभाव से वर्णों को नियत करें जो इस आश्रम के सुधार की जड़ है परन्तु वर्तमान में वेद आज्ञा के विपरीत वीर्य्य हो से वर्ण व्यवस्था मानो जाती है जिससे भारत की अधोगति हो गई। देखिये अथर्व वेद कां० १९ सू० ६ मं० ६ में लिखा है मनुष्य के शरीर में अंग के समान परमात्मा की सृष्टि में ब्रह्मचर्य आदि शम, दम, व्रत का सेवन तथा ईश्वर का जानने वाला मनुष्य **ब्राह्मण** मुख के समान, सर्व हितकारी वेद-वेत्ता, अधिक बल पराक्रम वाला **क्षत्रिय** भुजाओं के समान रक्षक, वेदज्ञ कृषि व्यौपार आदि से धनी होकर मनुष्य का हित करने वाला पोषक **वैश्य** शरीर के मध्य भाग घुटनों के तुल्य, और मूर्ख विद्याहीन चल फिर कर सेवा करने वाला शूद्र मनुष्य पैरों के समान उपयोगी है।

ब्राह्मणो मुखमासीद् बाहू राजन्योऽभवत् ।
मध्यंतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोअजायत ॥

यही मंत्र कुछ भेद से ऋग्वेद १०।१०।११ और यजुर्वेद ३१।१० में आया है कि वेद आज्ञा के अनुसार मनु महाराज ने अपनी स्मृति में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के लक्षण निम्न रीति से बतलाये हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ब्राह्मणों के लक्षण ।

अध्यापनमध्ययनं यजनं तथा ।
दानं प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

विद्या पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना कराना, विद्या वा सुवर्ण आदि का सुपात्रों को दान देना, न्याय से धन उपार्जन करने वाले गृहस्थों से दान लेना ब्राह्मणों का धर्म है। मनु० अ० १ श्लोक ८८।

## क्षत्रियों के लक्षण ।

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च ।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः ८९

दीर्घ ब्रह्मचर्य से वेदादि शास्त्रों का यथावत् पढ़ना, अग्निहोत्रादि का करना सुपात्रों को विद्या सुवर्ण आदि तथा प्रजा को अभय दान देना तथा उनको सब प्रकार से यथावत् पालन करने वालों को क्षत्रिय कहते हैं।

## वैश्यों के लक्षण ।

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च ।
बणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेवच ॥

वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, अग्निहोत्रादि यज्ञों का करना दान देना पशुओं का पालन करना, देशों की भाषा, हिसाब भूगर्भविद्या, भूमि बीजादि के गुण दोषों को जानना, सर्व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पदार्थों के भाव समझना, व्यौपार करना, सूद अर्थात् व्याज का लेना, खेती की विद्या का जानना, अन्नादि की रक्षा करने वालों को वैश्य कहते हैं। अ० १ श्लोक ९०

## शूद्रों के लक्षण

एकमेवतु शूद्रस्य प्रभुः कर्मसमादिशत ।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥

जिसको विद्या पढ़ने से भी न आवे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णों की निन्दा रहित प्रीति पूर्वक सेवा करे उसको शूद्र कहते हैं। इसी भांति हारितस्मृति अ० १ श्लोक ७७ तथा अत्रिस्मृति श्लोक १३, १४, १५। शंखस्मृति श्लोक २, ३, ४, ५। विष्णुपुराण के तीसरे अंश के अध्याय ८ मार्कण्डेय पुराण २७ के श्लोक २, ३, ४ ५, ६, ७। भविष्यपुराण अ० १ तथा शुक्रनीति अध्याय ४ श्लोक ५७, ५८, ५९। विदुरनीति तथा गीता, उद्योगपर्व और श्रीमदभागवत् में ऐसा ही वर्णन किया है।

प्रियवरो ! वर्णों का अन्तर गुणकर्मों के अनुसार नियत है, शूद्र ब्राह्मण तथा ब्राह्मण शूद्र होजाता है। यदि ब्राह्मण का बालक कर्मों से योग्य हो तो वह यथार्थ ब्राह्मण होता है, अन्यथा क्षत्रिय अथवा वैश्य शूद्र की पदवी को पाता है। इसी भांति शूद्र का लड़का मूर्ख हो तो वह शूद्र ही रहता है अन्यथा गुणकर्मों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य में पहुँच जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय वैश्य की भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशा होती है। जैसा कि मनु अ० १० श्लोक ६५ में लिखा है:-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यस्तथैव च ॥

शुक्रनीति अ० १ श्लोक ३८ में लिखा है कि जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, म्लेच्छ नहीं होते वरन् गुण तथा कर्म के भेद से होते हैं जैसा-

न जात्याब्राह्मणश्चत्र क्षत्रिया वैश्य एवच।
न शूद्रश्चैव न म्लेच्छो भेदितागुणकर्मभिः ॥
चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं गुणकर्म विभागशः।गीताअ०१२श्लोक१२

शुक्रनीत तथा मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि ब्राह्मण उत्तम गुणों के कारण सब वर्णों से श्रेष्ठ माना गया है। यथा-

सर्वाधिको ब्राह्मणस्तु जायतेहि स्वकर्मणः ॥

देखिये महाभारत बनपर्व अ० ३१२ श्लोक १०५ से १०९ तक यक्ष और युधिष्ठिर का इस विषय में सम्वाद है। यक्ष ने पूछा-

राजन् कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन वा।
ब्राह्मण्यं कन भवति प्रब्रूह्यं तत्सुनिश्चितम् ॥

अर्थात् हे राजन ! कुल से, चरित्र से, वेद पाठ से, वा विद्या से किससे ब्राह्मण होता है ? यह आप मुझसे निश्चय पूर्वक कहिये। युधिष्ठिर ने कहा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शृणु यक्ष कुलं तात ! न स्वाध्यायो न च श्रुतम् ।
कारणं हि द्विजत्वे च वृत्तमेव न संशयः । १०६ ॥
वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं ब्रह्मणेन विशेषतः ।
अक्षीणवृत्तो न क्षीणो वृत्तस्तु हतोहतः ॥ १०७ ॥
पाठकः पाठकाश्चैव येचान्ये शास्त्रचिन्तकाः ।
सर्वे व्यसनिनोमूर्खायः क्रियावान सपण्डितः॥१०८॥
चतुर्वेदोऽपि दुर्वृत्तः स शूद्रादतिरिच्यते ॥
योऽग्निहोत्र परोदान्तः सब्राह्मणइतिस्मृतः॥ १०९ ॥

अर्थ—हे यक्ष ! कुल से और वेदपाठ से ब्राह्मण नहीं होता है, किन्तु आचरणों से ही ब्राह्मण मानने योग्य है ॥ १०६ ॥ मनुष्यों तथा विशेषतः ब्राह्मणों को चाहिये कि यत्न से अपने आचरणों की रक्षा करें क्योंकि जो आचरण हीन है वही हीन है ।॥ १०७ ॥ पढ़ने पढ़ाने वाले तथा शास्त्र के विचार करने वाले मूर्ख और व्यसनी हैं । जो क्रियावान है वही पण्डित है ॥ १०८ ॥ चारों वेदों का जानने वाला यदि दुराचारी हो वह ब्राह्मण शूद्र से भी नीच है, जो अग्निहोत्र का करने वाला सदाचारी है वही ब्राह्मण है ॥ १०९ ॥ इसके पश्चात् युधिष्ठिर महाराज और सर्प का संवाद जो महाभारत बनपर्व अध्याय १०८ में है जिसके पाठ मात्र से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गुण, कर्म, स्वभाव से ही वर्णों की व्यवस्था नियत थी ।

## सर्प उवाच

ब्राह्मणःको भवेद्राजन् । वेद्यं किं च युधिष्ठिर ।
ब्रवीह्यतिमतिं त्वां हिवयं यैरनुमिमीमहे ॥श्लोक२७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् हे युधिष्ठिर ! ब्राह्मण किसे कहते हैं ? जगत् में कौन वस्तु जानने योग्य है ? आप हमारे इन दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये तो हम आपको बहुत बुद्धिमान् मानें। युधिष्ठिर ने कहा–

सत्यं ज्ञानं क्षमा शीलमानृशंस्यं तपो घृणा।
दृश्यते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्म इतिस्मृतः ॥श्लोक २१ ॥

हे नागेन्द्र ! जिसमें सत्य, दान, क्षमा, शील, लज्जा, तप और घृणा हो उसे ब्राह्मण कहते हैं। पुनः सर्प पूंछता कि हे युधिष्ठिर ! इस जगत् में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में सत्य, दान, क्षमा, लज्जा अहिंसा और घृणा हो तो क्या वह भी ब्राह्मण हो जावेगा ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि–

शूद्रेयत्तु भवेल्लक्ष्म द्विजेतच्च न विद्यते।
नवै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः ॥

जो लक्षण शूद्र में हैं वह ब्राह्मणों में नहीं हैं और यदि वह लक्षण शूद्र में हों तो शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और यदि शूद्र के लक्षण ब्राह्मण में हों तो वह ब्राह्मण भी शूद्र ही है। पद्मपुराण तृतीय सर्ग खण्ड अ० ११ में कहा है कि विद्या धन और जन्म द्विजत्व के कारण है, परन्तु जब वह ब्राह्मण आचार से भ्रष्ट हो जाता है तो यह सब निष्फल हो जाता है इसलिये पवित्रता का ब्राह्मण हेतु है। अ० २० में कहा है कि सब लोकों में सब कल्याणों से श्रेष्ठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सदाचार व्रत है, इसलिये अपने व्रत में चांडाल को ब्राह्मण कहते हैं। श्रीमद्भागवत में लिखा है—

यस्य यल्लक्षणम्प्रोक्तं पुंसावर्णाभिव्यञ्जकम्।
यद्यन्यत्राऽपि दृश्येत तत्तेनैव विनिर्दिशेत्॥

जिन मनुष्यों में जिस प्रकार के गुण होते हैं, वह उसी वर्ण में मिलने के योग्य होते हैं।

अथर्व वेद कां० १८ सू० ४ मन्त्र १२ में लिखा है कि जो ब्राह्मण अपने आचरणों को शुद्ध करके पक्के ज्ञानी होते हैं वह नीचे नहीं गिरते अर्थात् अपने वर्ण में बने रहते हैं अन्यथा आचरणहीन होने से अन्य वर्णों में चले जाते हैं। इसलिये परमात्मा ऋग्वेद मं० १ अ० १८ सूक्त १२२ में कहते हैं कि जिस राजा के राज्य में विद्या, अच्छी शिक्षा, उत्तम गुण-कर्म, स्वभावयुक्त ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र चार वर्ण और ब्रह्मचर्य,, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यास यह चार आश्रम और सेना प्रजा, तथा उत्तम न्यायाधीश हैं वह राज्य सूर्य के समान शोभायुक्त होता है। इस हेतु अ० कां० २० सू० ३६ मन्त्र १० राजा को आज्ञा दी है कि शूद्रों को विद्यादान और सत्य उपदेश से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य बना कर शत्रुओं के नाश के लिये मनुष्यों में धन और सुख की वृद्धि करे। जैसाकि—

आ संयतिमिन्द्रणः स्वास्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीम मृध्रम्
यथा दासा न्यार्यणि बूत्रा करो बजिन्तसुतका नाहुषाणि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसी प्रकार बुरे कर्मों के कारण बड़ा छोटा होजाता है जैसा कि "अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जगन्यं २ वर्णामपद्यतेजाति परिवृतौ ॥"

इसके उपरांत भविष्यपुराण पूर्वार्द्ध के प्रथम अ० में लिखा है कि जो ब्राह्मण वेद पढ़कर, वैश्यादि कर्म कर, शूद्र की सेवा कर तथा नट, और चिकित्सा से निर्वाह करे वह भी शूद्र कहाता है। मनुस्मृति अ० १ श्लोक ९७ में लिखा है कि मूर्ख ब्राह्मण को लकड़ी के हाथी तथा चमड़े के मृग के समान समझना चाहिये। शांति पर्व अ० ७७ में तथा याज्ञवल्क्य स्मृति के आपद्धर्म प्रकरण में लिखा है कि हस्तक्रिया, लेनदेन, गौ, घोड़ा, व्यौपार, लवण, तिल, फल, पत्थर, वस्त्र, रस, मधु, तक्र, पृथ्वी, कम्बल, गन्ध इनको ब्राह्मण कदापि न बेचें। दूध, दही, मदिरा बेचने वाला और नाचने वाला ब्राह्मण भी शूद्र है। बृहन्नारदीय पुराण अ० २३ में लिखा है कि आपत्ति के समय ब्राह्मण क्षत्रिय का और अत्यन्त अपत्ति पड़ने पर वैश्य का काम करले परंतु शूद्र का काम कभी न करे और जो मूढ़ द्विज ऐसा करे तो उसको चांडाल जनना चाहिये। श्रीमद्भागवत स्कंध ११ अ० १७ में ब्राह्मण को नीचवृति करने की आज्ञा नहीं है। बसिष्ठ स्मृति अ० ६ श्लोक ३ में तथा पाराशरस्मृति अ० ८ श्लोक ३ में लिखा है कि जो वेद नहीं जानता, व्यौपार से आजीविका करता है, संध्या अग्निहोत्र नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करता, खेती पालन पोषण करता है, वह नाम मात्र का ब्राह्मण है।

प्रिय सज्जन पुरुषो ! उपरोक्त कथन से प्रत्यक्ष प्रकट हो रहा है कि कर्म ही मनुष्य को ऊँची पदवी अर्थात् उच्च वर्ण में ले जाते हैं और कर्म से ही नीच होजाता है। ऐसा ही शान्तपर्व अध्याय १८८ में भारद्वाजने भृगुजी से कहा है, और भविष्य पुराण अध्याय ३६ में सुमन्त मुनि ने राजा शतानीक की शङ्काओं को समाधान कर कहा है कि कर्म ही ब्राह्मण का हेतु है जैसा कि अनुशासनपर्व अध्याय १४३ में महादेव जी ने पार्वती जी से कहा है। वनपर्व अध्याय १५०.में हनूमानजी ने भीमसेन से कहा है कि जो क्षत्रिय काम, क्रोध द्वेष से रहित होकर उचित रीति से दण्ड का विधान करते हैं, वह पंडितों की जाति को पाते हैं। चाणक्य स्मृति अ० ११ श्लोक ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७ में स्पष्टरूप से वर्णन किया है कि जो ब्राह्मण अच्छे कर्मों को करता हो ऋतुगामी हो वह द्विज तथा जो सांसारिक कर्मों में रत हो, पशुओं का पालन, बनियाई तथा खेती करने वाला हो वह वैश्य, जो लाखादि पदार्थ तेल, नील, घी, कुसुम, मधु और मद्य का बेचने वाला है वह शूद्र। जो दूसरे का काम बिगाड़ने वाला, दम्भी, अपने अर्थ का साधने वाला, छली, द्वेषी, मृदु



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तथा अन्तःकरण में निठुर हो वह बिलार। जो बावली कुआं आदि को बिगाड़ता है वह म्लेच्छ। जो देवता गरु के द्रव्य को हरता या परस्त्री के संग गमन करता तथा सब प्राणियों में निर्वाह कर लेता, वह चाण्डाल कहाता है। इसी प्रकार अत्रि जी महाराज ने ३७१ श्लोक में इस प्रकार के ब्राह्मण लिखे हैं जिनके लक्षण उपरोक्त कथन से कुछ कुछ मिलते हैं। जिनको अधिक जानने की इच्छा हो वह श्लोक ३७२ से ३८१ तक देखलें, हम विस्तार के कारण यहां नहीं लिखते हैं। शिवपुराण ज्ञानसंहिता अ० ११ श्लोक ३ वा ४ में लिखा है कि अल्पाचार, थोड़ा वेद पढ़ा हुआ, राजसेवक ब्राह्मण क्षत्रिय ब्राह्मण है। और कुछ आचार वाला, खेती वाणिज्य करने वाला वैश्य ब्राह्मण है। निन्दा करने वाला पराया द्रोह करने वाला ब्राह्मण चांडाल है।

प्यारे भाइयो! इस प्रकार वर्णव्यवस्था को जान धर्मानुसार वर्णों के धर्म करने से ही कल्याण होता है तथा अन्य वर्ण के धर्म करने से पतित हो जाता है। जैसे मनुजी ने अ० १० श्लोक ९७ में लिखा है—

वरं स्वधर्मो विगुणो न पारक्यः स्वनुष्ठितः।
पर धर्मेण जीवन्हि सद्यः पतति जातितः॥

इसी प्रकार गीता में श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन से, मार्कण्डेय पुराण में मन्दालसा ने अलर्क से और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रीमद्भागवत स्कंध ३ के २८ अध्याय के २ श्लोक में। हारीतस्मृति अध्याय ७ श्लोक १७-१८। दक्षस्मृति श्लोक ३, ४ तथा अत्रिस्मृति अध्याय १ श्लोक ३२। विष्णु पुराण अंश २ अ० ६ में कहा है।

अब आपको अच्छे प्रकार विदित होगया कि वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव से नियत होती थी जब तक यह रीति भारत में प्रचलित रही भारत का कल्याण होता रहा परंतु जब से जन्म से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र बनने लग गये भारत गारत होता गया अर्थात् इस जन्म परस्ती के असाध्य रोग ने सम्पूर्ण सुखों को भारत से भगा दिया। चक्रवर्ती राजा से ग़ुलाम बना दिया। इसलिये उठो विचार कर गुण, कर्म, स्वभाव की प्रतिष्ठा करो। जैसा कि प्राचीन पुरुखा करते थे जबही स्त्री पुरुष गुणी बनकर संसार में यश कीर्ति को प्राप्त कर चैन की बंशी बजा सकते हैं यदि आप प्राचीन ऋषियों की सन्तान हैं और वेद को ईश्वरीय ज्ञान का धर्म पुस्तक मानते हैं तो इस जन्म परस्ती के असाध्य रोग का जंज़ीर को तोड़ कर ग़ुण परस्ती की पूजा प्रचलित कर गुण, कर्म, स्वभाव से वर्ण व्यवस्था नियत करने की मर्यादा को क़ायम कीजिये तब ही भारत का उद्धार होना सम्भव है अन्यथा नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## गृहस्थ में विनोद ही जीवन है

गृहस्थी को नाना प्रकार की आपदायें प्रत्येक क्षण घेरे रहती हैं। उसे कभी खाने पीने की चिन्ता है तो कभी वस्त्रों की फ़िक्र है। कभी स्वयं बीमार है तो कभी बाल बच्चों एवं कुटुम्बी व रिश्तेदारों के दुःख से दुःखी होता है। इन्हीं चिन्ताओं में उसके जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत होता है।

प्रत्येक गृहस्थी इन आपदाओं से छुटकारा पा अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहता है परन्तु वह इसमें सफल नहीं होता। हो भी कैसे ? जबकि उसमें ईश्वर विश्वास और आत्मिक ज्ञान की न्यूनता तथा विनोद एवं हास्यरस की कमी है।

यदि गृहस्थी यह समझते हुये कि जो कुछ उसके पास है वह परम पिता परमात्मा का है और वह केवल अमानतदार है ( ईश्वर जब उचित समझे उससे अपनी अमानत ले सकते हैं ) उनका उपभोग करे और उनके अतिरिक्त उन वस्तुओं के भोगने की लालसा न करे जो उसके उपभोग के लिये नहीं दीं तो पूर्ण विश्वास रखिये कि ऐसे ईश्वर विश्वासी एवं संतोषी गृहस्थी को कभी उदासीनता के दर्शन न करने पड़ेंगे और उसका गृहस्थ जीवन सदा चिन्ताओं से विमुक्त होकर प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा। इसी प्रकार जो मनुष्य ईश्वर विश्वास रखते हुये कर्म करेंगे और उसके फल को परमात्मा पर छोड़ देंगे तो याद रखिये उनको किसी भी कार्य को सफलता से न खुशी होगी और न विफलता का दुःख होगा। उनके लिये दोनों अवस्थायें समान होंगीं। फिर इसलिये संसार में सर्वत्र सुख ही सुख दृष्टिगत होगा उसको सुख ही सुख दिखाई देगा। यही कारण है कि संसार में पराये उपभोग की वस्तुओं को लेने की लालसा में पड़ा हुआ धन-धान्य पूर्ण महलों का रहने वाला सदा रोता, कुढ़ता और झींकता रहता है और ईश्वर विश्वासी एवं संतोषी पुरुष सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

प्रत्येक मनुष्य को ऐसा आत्मिक ज्ञान होना सम्भव नहीं। इसलिये उनको उचित है कि वह अपने में विनोद एवं हास्यरस द्वारा प्रसन्न रहने का स्वभाव डालें और सांसारिक झंझटों को दूर रखते हुए शरीर में नवीन स्फूर्ति उत्पन्न करें। क्योंकि विनोद से मनुष्य की मानसिक प्रवृत्तियां विकसित होती हैं तथा उसके इस आन्तरिक विकास से उसका स्वास्थ बनता है मनुष्य जितना ही विनोदी और मनोरंजन प्रिय होता है उतना ही वह स्वस्थ और सुन्दर होता है। इसलिये युवकों और युवतियों को विनोद की बड़ी आवश्यकता है। बड़े बड़े अनुभवी एवं वृद्ध डाक्टरों वैद्यों का कथन है कि जहां किसी कठिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग में औषधि अपना काम नहीं करती वहां विनोदरूपी महौषधि अद्भुत एवं विचित्र प्रभाव दिखाती है दिल की धड़कन, भ्रम आदि रोगों में इस औषधि से संतोषजनक लाभ होता है। इससे फेंफड़ों में वायु का संचार हो, खून शुद्ध होता है। चंचल और हंसमुख विद्यार्थी अपने स्कूल में विनोद एवं मनोरंजन द्वारा ही सर्व प्रिय बन प्रत्येक बात को बहुत शीघ्र समझने वाले और चतुर योग्य तथा प्रतिभाशाली बनते हैं। कतिपय मनुष्य कहते हैं कि प्रकृति बदली नहीं जासकती परन्तु अनुभवी पुरुषों का कथन है कि विनोद एवं मनोरंजन से स्वभाव विचित्रगति से बदल जाता है। जिस प्रकार मनुष्य को खाना खाने और पानी पीने की नित्यप्रति आवश्यकता होती है उसी प्रकार नित्य मनोरंजन और विनोद की भी, इसलिये स्त्री पुरुषों को अपनी समाज में अपने मेल के लोगों में उठना, बैठना, खूब बातें करना और मन भरकर हंसना हंसाना, बहुत ही ज़रूरी है।

---

# पति-धर्म

मान्यवरो! सृष्टि-क्रम पर एक साधारण दृष्टि डालने से हमको ज्ञात होता है कि जिस प्रकार आंखों के लिये सूर्य, सूर्य के लिये आंख और बुद्धि के लिये ज्ञान और ज्ञान के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लिये बुद्धि की आवश्यकता है उसी प्रकार स्त्री के लिये पुरुष और पुरुष के लिये स्त्री का होना परमावश्यक है। वरन् जिस प्रकार सूर्य के न होने से आंख को और आंख न होने से सूर्य एवं बुद्धि के न होने से ज्ञान और ज्ञान बिना बुद्धि का आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता इसी प्रकार पुरुष के बिना स्त्री को और स्त्री के बिना पुरुष को इस आश्रम में सुख और परमशान्ति नहीं मिल सकती। सच पूछो तो परमेश्वर ने जगत के सम्पूर्ण कार्य्यों की सिद्धि के ही लिये स्त्री और पुरुष के जोड़े को बनाया। इनमें स्त्री विश्व-प्रेम की भण्डार जीवन की आधार एवं संसार के तीनों तापों से विरोध प्राणियों को अमृत के समान सुख पहुंचाने वाली सजीवनी है जिस प्रकार संसार में लोहा पारस पत्थर के संयोग से सोना बन जाता है उसी प्रकार श्रेष्ठ और उत्तम गुणवाली स्त्रियों के द्वारा देश पवित्र और प्रसिद्ध होजाता है उनकी ही योग्य संतानें संसार में शांति का राज्य स्थापित कर देती हैं जबही तो यह बीर कन्या वीर माता बीर पत्नी एवं बीर बधू कहलाती हैं। यही सन्तानों को ९ मास गर्भ में रखकर उत्पन्न होने के पश्चात् उनका पालन पोषण करती हैं। यही गृह कार्य्यों में दक्षता दिखलाकर सूर्य के तुल्य घर की प्रकाशिका हैं। रसोई गृह में ऋतु अनुसार स्वास्थ बढ़ाने वाले नाना व्यंजनों को बना परम तृप्ति और निरोगता देने वाली परमौषधि हैं। अपने हाथ के बनाये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उत्तम २ वस्त्रों को धारण करा सभा की शोभा को बढ़ाती उपार्जित किये धन का सदुपयोग तथा रक्षा और संचय कर विपत्ति समय उद्धार करने वाली हैं। नारि के हृदय का स्नेह रूपी दुःख संतानों के जीवन का आधार और उनकी परम गुरु हैं। उनका संग पाठशाला की पढ़ाई का सच्चा आदर्श है। ईश्वरी आज्ञा पालन करने के लिये स्त्रियां ही अपने माता पिता बहन भाई आदि प्रिय परिवार को छोड़ पति के साथ चली आती हैं। और बड़े २ कष्ट पड़ने पर भी पति और उसके परिवार का साथ नहीं छोड़तीं। बहुधा पति वियोग में अपने प्राणों तक को न्योछावर कर देती हैं। इसलिये वेद ने इनको घर की महारानी देवी और लक्ष्मी इत्यादि नामों से पुकारा है। परन्तु आज मनुष्य समाज ने समानाधिकार से वञ्चित कर पैर की जूती बना जब चाहा तब एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा और चौथा विवाह कर डाला। मृत और जीवित दोनों अवस्थाओं में उनका यह नियम चालू रहता है। आप बाहर स्वतंत्र रूप से मन माने रंग खेलते हैं परन्तु स्त्रियों को परदेमें भीतर रहना परम धर्म बता दिया है। घर में स्त्रियां पति के नाम की माला जपती हुई घुला करती हैं परन्तु आप परस्त्रियों के घरों को उत्तम आभूषण वस्त्र मेवा से भरते हुए नहीं लजाते। वे भूलजाते हैं कि हमने परमात्मा को साक्षी देकर विवाह की वेदी पर प्रतिज्ञा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की थी कि मैं तुझको छोड़कर अन्य स्त्री से कभी प्रेम न करूंगा और तेरी आज्ञा से ही सांसारिक और पारलौकिक कार्य्यों को करता रहूँगा। अथवा मन वचन काया से मैं तेरा और तू मेरी होचुकी। अस्तु ! अपनी प्रतिज्ञा की इस प्रकार अवलेहना करना क्या सभ्य पुरुषों को शोभा देता है। क्या हमारी उच्चता और महत्ता का यही चिन्ह है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है, पिता, बन्धु, पति, सास सुसर और जाति के अन्य जन दुर्गुणों को त्याग अन्न वस्त्र आभूषण सहित प्रीति पूर्वक कोमलवाणी से शक्ति के अनुसार स्त्रियों की पूजा अर्थात् सत्कार करें।

मातृ भ्रातृ पितृ ज्ञातिः श्वश्रू श्वशुर देवरां।
बन्धु मिश्चसियः पूज्यो भूषणाच्छादनाशनैः॥

मनुजी ने अ० ३ के श्लोक ५७ वा ५८ में स्पष्ट कहा है कि जहां स्त्रियों का आदर मान सत्कार होता है उस कुल की वृद्धि और देवता अर्थात् विद्वान् प्रसन्न होते हैं और जिस घर में उनका अनादर होता है वे क्लेशित रहती हैं वह कुल उनके शाप से तत्काल नष्ट होजाता है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्।
न शोचन्ति तु तत्रैतावर्धते तद्धिसर्वदा॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवतः।
यत्रतास्तुन पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलः क्रियः॥

इसके अतिरिक्त घर में जब स्त्री पुरुषों में ही नहीं बनती तो फिर अन्यान्य प्रकार के सुखों का क्या कहना ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सच तो यह है कि यदि बहू किन्हीं कारणों से एक बार रूठती है तो पति महाशय उमर भर को रूठ जाते हैं फिर क्या फिर तो अन्य पारिवारिकजनों के साथ बात २ पर लड़ाई झगड़े मचे रहते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि कोई परदेश में अपनी सारी आयु बिता देते हैं कोई कपड़े रंग साधु बन जाते हैं। इधर घर में माता पिता के अतिरिक्त पत्नि देवी अपनी करनी का फल भोगती अथवा कुल को लाज छोड़ अन्यान्य प्रकार से मन का कामनायें पूरी करती हुई पाप की वृद्धि करती हैं। क्या इस प्रकार की लीलायें आपकी आंखों से छिपी हुई हैं। नहीं, नहीं रात दिन ऐसे झगड़ों को देखते सुनते हुए भी स्वयं कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने के स्थान पर यह कहकर चुप होजाते हैं "वह है भी इसी लायक" ठीक लेकिन आपने अपने हृदय पर हाथ रख टुक यह भी विचारा कि इस योग्यता और अयोग्यता का कारण कौन है ? आपने ही तो उनको वेदाज्ञा के विपरीत विद्या रत्न से वञ्चित कर शूद्र बना दिया ब्रह्मचर्य तोड़ निर्बल निस्तेज और निर्बुद्धि कर दिया, मित्र सखा एवं सहधर्मिणी के पदों से अलग कर गुलाम श्रेणी में रख दिया परिणाम में हम और हमारी संतान निर्बल निस्तेज निर्बुद्धि होकर दूसरों से ठुकराये जाने वाले गुलाम बन गये इस प्रकार अपने हाथों अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मार अपने सर्व सुखों का नाश कर पंगु बन गये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस हेतु यदि आप स्वयं अपनी कलंक कालिमा को मिटाना चाहते हैं तो पुत्रियों को विदुषी स्त्रियों द्वारा गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य्य के साथ वेदाध्ययन कराकर सुशिक्षा से उनके अन्तःकरण को पवित्र बना कर गुण, कर्म, स्वभाव को मिलाकर स्वयम्बर के साथ विवाह करने की परिपाटी को शीघ्र प्रचलित करें। इसके उपरांत अब तक जिनके विवाह हो चुके हैं उनके लिये मनुष्यसमाज स्वार्थ को छोड़ स्वयं पढ़ावे अथवा वृद्धा स्त्रियों से उनको पढ़वाने, संध्या के समय अपने साथ सन्ध्योपासन करा अग्निहोत्रादि मिलकर करे तदनन्तर प्रेम के साथ काम, क्रोध इत्यादि को त्याग विद्वानों, महात्माओं गुरुकुल आदि के उत्सवों अथवा योग्य विदुषी स्त्रियों से सत्सङ्ग करा समाचार पत्र और उत्तम २ पुस्तकों का पाठ कराइये और स्वयं स्त्री व्रत धारण कर उनके चित्त को अपने वशीभूत कर नाना प्रकार के अवगुणों को उनसे छुटा उनको धार्मिक मार्ग पर चलाइये तब ही गृहस्थी के अपूर्व सुखों को भोग आप अपनी जीवन यात्रा को सुखमय एवं सफल बना सकते हैं।

---

# पति-पत्नी-धर्म

प्रिय सज्जन पुरुषो और सुयोग्य महिलाओ! ब्रह्मचर्य्य पूर्ण होने के पश्चात् जब विवाह हो जाता है तब स्त्री पुरुष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक स्थान पर रहते हैं– उस समय परस्पर एकता का होना परम आवश्यक है क्योंकि गृहस्थी एक राज्य है जिसका राजा पुरुष और स्त्री मंत्री है। अब आप जानते हैं कि जब एक राजा और मन्त्री विद्वान होने के पश्चात् एक मत होकर अपने अपने धर्म को नहीं करते तब तक उस राज्य की दशा प्रशंसनीय नहीं रहती वरन् नाना प्रकार के कष्ट राजा और प्रजा को उठाने पड़ते हैं और देश देशान्तरों में अप्रतिष्ठा होती है शत्रु भी समय पाकर अपना काम पूरा करते हैं अर्थात् थोड़े ही दिनों में वह राज्य नष्ट हो जाता है। मान्यवरो ! ठीक उसी भांति गृहस्थी रूपी राज्य को समझो यदि स्त्री और पुरुष विद्वान होकर सम्मति के साथ प्रबंध नहीं करते तो वह गृहस्थी रूपी राज्य भी शीघ्र नष्ट हो जाता है। इसलिये शास्त्रकारों ने स्त्री और पुरुष को यही आज्ञा दी है कि परस्पर पूर्णआयु प्रीतियुक्त रह पुरुषार्थ धन और श्रेष्ठ गुणों से युक्त होकर एक दूसरे की रक्षा करते हुए धर्मानुकूल सांसारिक और पारलौकिक कार्यों को कर इस संसार में नित्य आनन्द करें जैसाकि–

इषे राये रमस्व सहसे द्युम्न उर्जे अपत्याय।
सम्राडसि स्वराडसि सारस्वतौत्वोत्सौ प्रावताम्॥ ३५॥

यजुर्वेद अ० १४ मं० ८ में लिखा है कि पतिपत्नी आपस में प्राण के समान समझ, शास्त्रों का पाठ-प्रियाचरण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और यज्ञ का अनुष्ठान करें। मंत्र ३५ में परस्पर निर्भय हो दृढ़ आत्मा वाले और उत्साह बढ़ावें। अ० १२ मन्त्र ६४ में परस्पर प्रीति पूर्वक एक दूसरे की आज्ञा का पालन करते हुए गृहस्थ धर्म-पालन की आज्ञा है और जो एक दूसरे की आज्ञा का पालन नहीं करते वे चोर के समान हैं। अ० २३ मं० ३१ में लिखा है कि जो पुरुष अपनी स्त्री को छोड़ व्यभिचारी होता है वह शूद्र के समान है और जो स्त्री अपने पति को छोड़ व्यभिचार करती है वह कुल के नाश करने वाली होती है। इन कर्मों से संसार में निन्दा होती है। अतः निन्दित कर्मों को कभी न करे। अ० ११ में लिखा है कि जैसे प्यासे प्राणियों को जल तृप्त करता है वैसे ही स्त्री पुरुष परस्पर एक दूसरे को तृप्त करने वाले बनें। सर्वदा श्रेष्ठ गुणवान् विद्वानों की संगति कुसङ्ग त्याग कर शुद्ध आचरण एवं दूध पानी की तरह प्रीति वाले हों बिना मित्र के पुरुष और बिना सहेली के स्त्री के कार्य नहीं सधते इसलिये सहेली एवं मित्रों का बनाना उचित है परन्तु वे लालची लोभी एवं धन के इच्छुक हीन हो आज कल तो मित्रता केवल धन की ही की जाती है और धन लेकर फिर देने की इच्छा नहीं होती इसको मित्रता नहीं कहते क्योंकि मित्रता तन मन से होनी चाहिये और समय पर धन से भी दूसरों के दुःखों को दूर करना योग्य है और ऐसे कठिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समय की एक दूसरे को याद रख एक दूसरे का कृतज्ञ होना चाहिये यह सच्ची मित्रता है। निष्कपट होना परम आवश्यक है। जो स्त्री पुरुष इस प्रकार के मित्र तथा सहेली बनाते हैं उनको ही सुख की प्राप्ति होती है। अथर्वकांड २० सू० १२८ में लिखा है कि मित्र के साथ घात सती स्त्री को पाप लगाना, वृद्ध होकर अज्ञान की बातें करने से नीचगति प्राप्त होती है। उत्सव के समय मित्र एवं सहेलियों को निमन्त्रण दे सत्कार से बुला भोजनादि करावे यथा समय विद्वानों के उपदेश, भजन, एवं वाग्विलास और धर्म की चर्चा करे। जहां विद्या विलास, धर्म चर्चा में समय व्यतीत किया जाता है वहां सुमांत (मेल) का राज्य हो, धन धान्य की वृद्धि होती है। अथर्वकांड सू० १२१ मंत्र ५ में लिखा है कि जिस घर में पति पत्नी अच्छे कर्म करने वाले होते हैं वहीं आरोग्यता एवं धन धान्य की वृद्धि होती है।

प्यारे स्त्री पुरुषो! 'मननात् मनुष्यः' अर्थात् विचार पूर्वक कार्य करने से स्त्री पुरुष संसार के अन्य जीव-धारियों से बड़े कहे जाते हैं। और बुद्धि द्वारा मनन करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है बिना ज्ञान एवं विचार के कार्य करने में बड़ी हानि होती है जैसा किसी कवि ने कहा है—

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हसाय॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जग में होत हँसाय चित्त में चैन न आवे।
खान पान सम्मान राग रंग मनहि न भावे॥
कह गिरधर कविराय सदा नर रहे दुखारे।
खटकत है दिन रैन कियों जो बिना विचारे॥

इसलिये गृहस्थी में विचार पूर्वक कार्य कर विद्या, धन यश और ऐश्वर्य की प्राप्ति कर कुटुम्ब का पालन पोषन करते हुए आनन्द की प्राप्ति करनी चाहिये।

---

# स्त्री धर्म

प्यारी महिलाओ! प्रति दिन प्रातःकाल पति से प्रथम उठ शौचादि से निवृत्त हो परमात्मा का ध्यान कर धर्म के दश लक्षणों के यथावत् पालन करने का उद्योग करो और बड़े प्रेम के साथ पति में ध्यान रखती हुई उनके साथ अग्निहोत्र, स्वाध्याय से निवट गृह कार्य्यों को यथावत् करना ही तुम्हारा परम धर्म और परम कर्तव्य है।

स्त्री का पति ही सर्वोपरि धन और वही उसका इष्टदेव है, उसकी सेवा करने तथा आज्ञानुवर्तिनी होने से परम सुख अर्थात् बैकुण्ठ मिलता है और वही इस भवसागर में सुखों को देता, आनन्द को बढ़ाता और उसी से जीवन सुफल होता है वही सौभाग्य की उन्नति करता तथा शरीर में प्राण के समान है। मुख्य तो यह है कि पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के तुल्य इस संसार में कोई पदार्थ नहीं है यदि है तो वही पति स्त्री का तन, मन और धन है। इसलिये उसकी सेवा तथा आज्ञापालन इस भांति करना योग्य है कि जिससे तुम्हारे प्राणनाथ जीवनमूल सदा आनन्द में मग्न रहें। क्योंकि पति से अधिक तुम्हारा कोई मित्र नहीं। वह तुम्हारे जीवन भर के दुःख सुख का साथी है। बिना उसके तुमको संसार सूना जान पड़ता है, धरती आकाश भी दृष्टि नहीं आता, सम्पूर्ण ऐश्वर्य मिथ्या ( छूंछा ) मालूम होता है यथार्थ में बिना प्राणनाथ के प्राणों को चैन नहीं आता। जो स्त्री अपने पति को दुःख देती वा उसके दुःख में साथी नहीं होती, वह बड़ी अपराधिनी एवं दोष भागिनी होती है। वही नरक को जाती और वही तरुणाई में विधवा होती है, उसी को संसार में नाना क्लेश उठाने पड़ते हैं, इस कारण तुम सदा पति की सेवा करो।

देखो दशस्मृति अ० ३ श्लोक १ वा ५ में कहा है कि जो स्त्री नम्र पति के अन्तकरण की बात को जाने और उसके आधीन रहे वही पत्नी है और अन्य सब दुःख रूप हैं, क्योंकि उनके मनों में परस्पर प्रेम नहीं होता।

पत्नी मूल गृहं पुंसां यदि छन्दानुवर्तिनी।
गृहाश्रमात्परं नास्ति यदि भार्या वशानुगा ॥ १ ॥
सा पत्नी या विनीतास्याच्चित्तज्ञावशवर्त्तिनी।
दुःखाह्यान्यासदाखिन्ना चित्तभेदः परस्परम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शंखस्मृति अ० श्लोक १५ में कहा है कि जो स्त्री गृहकार्यों में चतुरा और पतिव्रता है अर्थात् जिसके प्राण पति में बसते हैं, जिसके सन्तान भी है वही भार्या है। पद्मपुराण द्वितीय भूमिखण्ड अ० ९१ में गौमिल दैत्य ने पद्मावती से कहा है कि उत्तम पतिव्रता वही है जो मन, बचन, कर्म से प्रतिदिन पति की सेवा करती है और भर्ता के क्रोधित होने पर भी अपने क्रोध को सहन कर उसकी उचित सेवा में न्यूनता नहीं करती। तथा तृतीय खण्ड अध्याय २० में लिखा है कि जो स्त्री अपने पति को स्नेह में पुत्र से सौगुणा, भय में राजा के समान और आराधना में विष्णु के तुल्य जाने वही स्त्री पतिव्रता है। जो नित्य सेवा करे, कभी मत्सरता न करती हो, कृपणता और मान भी करती हो, इसके अतिरिक्त मान अपमान को समान समझती हो, वही पतिव्रता है। वनपर्व अ० २०४ में युधिष्ठिर जी ने कहा है कि जो स्त्री अपने पति की सेवा तथा सत्य को धारण कर सन्तान के पालन पोषण में नियुक्त रहती है वही पतिव्रता है। यजु० अ० १४ मं० १३ में कहा है कि हे स्त्री! तू पूर्व दिशा के तुल्य प्रकाशमान है, दक्षिण दिशा के समान अनेक प्रकार की विनय और विद्या के प्रकाश से युक्त है और पश्चिम दिशा की भांति चक्रवर्ती राज्य के सदृश अच्छे सुख युक्त



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पृथ्वी पर प्रकाशमान है और ऊपर नीचे की दिशा के तुल्य तेरा घर में अधिकार है इसलिये तू पति को तृप्त कर।

राज्ञ्यास प्राचीदिग्विराडसि दाक्षया दिक सम्राडसि।
प्रतीचीदिक स्वराडिस्युदीची दिगधिपत्न्यसि बृहतीदिक॥

जिस प्रकार ऋतु और गौ अपने २ समय पर अनुकूलता से सब प्राणियों को सुखी करती हैं इसी भांति उत्तम स्त्रियां सब समय में अपने पति आदि को तृप्त कर आनन्दित करें। अथर्व अ० ६० मंत्र ३ में लिखा है कि जिस भांति अग्नि जीवन को, बिजुली प्रजा को, लक्ष्मी शोभा को और महाशयजन बल को उसी भांति सुलक्षणा स्त्री सुखों को देने वाली होती है और ऋग्वेद मं० ३१। अ० ५ सूक्त ६१ मंत्र १ में कहा है कि जिस प्रकार प्रातः वेला सब प्राणियों को जगाय कार्यों में प्रवृत्त करती है उसी भांति पतिव्रता होकर स्त्रियों को पति के साथ अनुकूलता से रह कार्य्य कर प्रशंसित होना योग्य है और मं० ३ में कहा है कि जैसा प्रातःकाल सम्पूर्ण भवनों के खण्डों को प्रकाशित करता है उसी भांति उत्तम स्त्रियों को उत्तम व्यवहार कर प्रकाशित करना चाहिये और मंत्र ४ में कहा है कि जिस भांति दिन का सम्बन्धी प्रातःकाल है वैसे ही छाया सदृश अपने पति के साथ अनुकूल होकर बर्ताव करना उचित है श्रीमद्भागवत स्कंद ६ अध्याय १८ में कश्यपजी ने दिति से कहा है कि पति ही स्त्री का परमदेव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के प्रकृतिखण्ड में लिखा है कि गुरु ब्राह्मण और इष्टदेव इन सब में बड़ा स्त्री का पति ही है, इसलिए स्त्रियों को सबसे अधिक उसकी पूजा करनी चाहिये।

याज्ञवल्क्यस्मृति श्लोक ८३ में लिखा है कि गृह कार्यों को कर पति की सेवा में तत्पर रहना ही स्त्रियों का धर्म है और श्लोक ८७ में लिखा है कि जो स्त्री इन्द्रियों को वश में कर पति की इच्छानुसार कार्य करती है उसकी सब लोक में प्रशंसा होती है तथा परलोक में सुख मिलता है य० अ० १४ मंत्र ५ में लिखा है कि जो स्त्री गृह कार्यों में कुशला हो उसको योग्य है कि घर के भीतर के सब कार्य अपने आधीन कर उनको यथोचित उन्नति दे इसलिए वैदिक आज्ञा के अनुसार ऋषियों ने धन संग्रह करना और व्यय, शौच, धर्म और रसोई बनाना, घर की वस्तुओं की देख भाल करना आदि की आज्ञा दी जैसा मनु० अ० ९ श्लोक ११ में कहा कहा है—

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत्।
शौचेधर्मेनियुक्तायाँ च पारिणाह्यस्य चेक्षणे॥

इसलिये प्रसन्न चित होकर घर के सब कार्यों को चतुरता से करती रहो गृह के बर्तन भांड़े ठीक २ बनाये रहो और व्यय करने में उदार न हो जैसा मनुजी ने कहा है।

सदा प्रहेष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और य० अ० २० मन्त्र ५८ में कहा है कि पतिव्रता स्त्री का धर्म है कि घृतादि उत्तम वस्तु आप न खाकर और धन व्यय न कर अपने पति के लिये रख उन सबसे उनका यथा योग्य सत्कार करती रहे। कभी कुटुम्ब के धन से बहुत खर्चा न करे और अपने धन से भी बिना आज्ञा पति के अलङ्कार आदि न बनवावे। जैसा मनु० अ० २ श्लोक १९९ में कहा है।

न निर्हारंस्त्रियः कुर्युः कुटुम्बादबहुमध्यगांत।
स्वकादपि च वित्ताद्धि स्वस्य भर्तुरनहैया॥

शुक्रनीति अ० ४ में कहा है कि स्त्री पति से प्रथम उठकर शरीर को शुद्ध कर शौचादि से निवृत्त हो शय्या के वस्त्रों को उठाकर घर को स्वच्छ करे फिर अग्निशाला को लीप पोत कर शुद्ध करे चिकने यज्ञ के पात्रों अर्थात् बासनों को गर्म जल से धोके अन्य पात्रों को शुद्ध जल से शुद्ध कर जल भर कर रखदे। चूल्हे को लीप अग्नि वा ईंधन उसमें रखदे रसोई के पात्रों वा रस अन्न, द्रव्य इनका स्मर्ण कर प्रातःकाल के काम को समाप्त कर सास ससुर को नमस्कार करे फिर भोजन बन जाने पर बलिवैश्यदेव करके कुटुम्ब के मनुष्यों को भोजन करा-कर पति को जिमावे फिर उनकी आज्ञा से आप खाकर शेष दिन आय व्यय अर्थात् आमदनी खर्च की चिन्ता में लगावे फिर सायङ्काल को घर शुद्ध कर भोजन बना भृत्यों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समेत पति को जिमाकर आप भोजन कर शय्या को बिछा कर पति की सेवा करे फिर जब पति सो जावे तब आप भी उन ही में मन लगाकर सोवे परन्तु नंगी न सोवे, मतवाली न रहे, काम को त्यागे. इन्द्रियों को जीते इसके उपरांत ऊँचे स्वर से अप्रिय वचन न बोले, किसी के साथ विवाद तथा वृथा बकवाद न करे। पति के धन में से अधिक व्यय न करे, चुगली, हिंसा, मोह, अहङ्कार, अभिमान, नास्तिकता, साहस, अविचार, कपट, चोरी, दम्भ इनको त्याग दे चाणक्यजी ने कहा है कि मधुर वचन के बोलने से सब जीव संतुष्ट होते हैं और इसमें कुछ देना भी नहीं पड़ता इसलिये मधुर वाणी बोलना योग्य है। इसके अतिरिक्त तुम कभी अभिमान भी न करो, देखो जिस प्रकार बुढ़ापा रूप को, आशा धीरज को, मृत्यु प्राणों को, दुष्टता धर्म को, क्रोध लक्ष्मी को नष्ट कर देती है वैसे ही अभिमान करने से निन्दा होती है अतः सत्य और कोमल बोलने का स्वभाव डालो, यह एक प्रकार का दान है इससे देश का बड़ा उपकार होता है। यजु० अध्याय ३५ मन्त्र २१ में कहा है कि गृहकार्यों को वही कर सकती है जो पृथ्वी के समान क्षमा को धारण करती है और क्रूरतादि दोषों को अपने पास नहीं आने देती, जैसाकि—

स्याना पृथिवीनोभवा नृक्षरानि बेशनी।
यच्छानः शर्मप्रथाः अपनः शोशवदघम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बहुधा नारी अपने सास, ससुर, देवर, जेठ, जिठानी आदि से बात २ पर लड़ती झगड़ती हैं अथवा दिन रात अपने पति के कान भरती हैं यहां तक कि बिना अलग हुये नहीं मानतीं। भला विचारो तो कौन ऐसे सास ससुर आदि हैं जो अपनी बहू बेटे का भला नहीं चाहते कि जिस बेटे के अर्थ अपना तन, मन, धन तक अर्पण किया, बहू के आने की बधाई बांटी। धिक्कार उस बहू पर कि जिसने उनको सुख के स्थान पर दुःख दिया तथा उनके मन को ऐसी ग्लानि करदी कि जिससे वह बहू का नाम तक नहीं लेते। जब कोई उनके सन्मुख बहू का नाम लेता है तो वे ठंडी साँस लेकर रह जाते हैं भला विचारिये तो कि ये जो अब तुम्हारे पति कहलाते हैं कि जिनके ऊपर तुम उछलती कूदती और नखरे करती हो किसने उनको पाल कर ऐसा किया तो कहोगी मात पिता ने, फिर भला उनके सुख बिना तुम्हें कहीं सुख मिल सकता है ? कदापि नहीं, थोड़े ही दिनों में जबकि तुम्हारी सन्तान का विवाह होगा तो वह तुम्हारी नई बहू आते ही तुमको वह फटकार बतावेगी कि तुम्हारे पते तक न लगेंगे। उस समय तुमको उपरोक्त क्लेश जान पड़ेंगे कि हाय हाय क्या किया बहू ने आते ही हमारी कुगति करदी, अब हम से काम काज भी नहीं होते हाय यह हमारा बुढ़ापा क्योंकर कटेगा, बड़े दिनों में तो ज्यों त्यों करके यह दिन नसीब हुआ था सो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भाग्यवश और भी अधिक दुख हुआ, इससे तो संतान न होती तो अच्छा था अब क्या करें कहां जांय, किसी ने सच कहा है—'जाके पैर न जाय विवाई, सो क्या जाने पीर पराई'। इस लिये तुम सदा अपने माता पिता आदि के समान अपने सास ससुर आदि को समझ कर उनकी आज्ञा पालन और सुश्रूषा करती रहो कि जिससे तुमको भी सुख मिले और दोष भागिनी भी न हो। इसके उपरांत क्या तुम्हारे पति को ( जो तुम्हारे साथ में रहता है ) अपने माता पिता के क्लेशित होने से प्रसन्नता रहती है? कदापि नहीं, किन्तु सदा चिंतारूपी ज्वाला में शरीर रूपी लकड़ी को भांति जलती ही रहती होगी, फिर भला सुख कैसा! इससे हे युवतियों! तुम कदापि ऐसा न करो, वरन् यजुर्वेद अ० ११ मं० ७१ के लेखानुसार पति के माता पिता अर्थात् सास ससुर आदि सम्बन्धियों-मित्रों और सहेलियों को सब काल में प्रसन्न करती रहो। ऋग्वेद २।१।५।१।१८ सू० १८ मं० ९ में कहा है कि जिस प्रकार प्रातः समय को बेला अन्धकार को दूर कर दिन को प्रसिद्ध करती है वैसे ही स्त्रियां सत्य भाषण पूर्वक माता, पिता, पति, सास, ससुर, आदि की सेवा करती हुई उनके अनुकूल रहें।

य० अ० १३ मन्त्र २० में कहा है कि जिस प्रकार दूर्बा औषधि रोगों का नाश कर सुखको बढ़ाने वाली और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सुन्दर विस्तार होती हुई बढ़ती है उस भांति विदुषी को चाहिये कि बहुत प्रकार से अपने कुल को बढ़ावे। देखो ऋग्वेद में लिखा है कि वही स्त्री प्रशंसा के योग्य है जो पिता और पति के कुल में श्रेष्ठ आचरण से दोनों कुलों को प्रकाशित करती है।

ऐषु धावीरवद्यशउषों मघोनि सूरिषु।
येनो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते।

इसलिये तुम सदा व्यभिचार और काम की व्यथा से रहित अर्थात् जितेन्द्रिय होकर धर्मानुकूल पुत्रों को उत्पन्न करो। जैसा अ० १३ मं० १६ में कहा है और इसके लिये अपने पति से नित्य प्रार्थना करती रहो कि जिस प्रकार मैं प्रसन्न चित्त होकर आपकी सेवा कर आपको चाहती हूँ आप वैसे ही मेरे ऊपर कृपाकर अपने पुरुषार्थ भर मेरी रक्षा करो, जिससे मैं दुष्टाचरण करने वालों की भांति पाप की भागिनी न होऊँ। जैसा य० अ० ८ मन्त्र २७ में और ऋग्वेद मं० २ सू० ६ मन्त्र ५ में तथा अथर्ववेद काण्ड २० सू० १२६ मं० ८ में लिखा है कि रूपवती एवं गुणवती स्त्री अपने पुत्र पुत्रियों को रूपवान बनाकर पति आदि को प्रसन्न करे। यजु० अ० मं० ३७ में लिखा है जिन चरणों में स्त्रियाँ पण्डिताओं से शिक्षा पाई हुई होती हैं वही अपने पतियों को सद्उपदेशों द्वारा कुकर्म से बचा सुकर्म में लगाती हैं। ऐसा ही अ० २७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मंत्र ५ में कहा है। और दक्षस्मृति अ० ३ श्लोक १६, १७ में कहा है जो स्त्री दरिद्र वा रोगी पति का तिरस्कार करती है वह मर कर बार बार कुतिया, गधी और मच्छी होती हैं।

दरिद्रं व्याधितं चैव भर्तारं यावमन्यते।
शुनी गृध्री च मकरी जायते सा पुनः पुनः॥

पाराशरजी ने अपनी स्मृति के अध्याय ४ श्लोक १६ में कहा है कि जो स्त्री दरिद्री, रोगी और धूर्त्त पति का तिरस्कार करती है वह मर कर बार २ कुतिया वा सुअरनी होती है। पद्मपुराण तृतीय खण्ड अध्याय १३ श्लोक १७५, १७६ में नारद जी ने कहा है कि पति कैसा ही हो परन्तु स्त्रियों के धर्म और सुख का देने वाला वही है, इसलिये जीते जी स्त्री का धन पति ही है, अन्य कुछ नहीं चाहे निर्धन, दुष्ट वचन कहने वाला, मूर्ख सब लक्षणों से रहित हो तो भी स्त्री का परम देवता पति ही है। विष्णु पुराण अंश ६ अ० २ में कहा है कि जो स्त्री मनसा, वाचा और कर्मणा से अपने पति की सेवा करती है, वह इसी एक कर्म से पति-लोक को जाती है। मनु अध्याय श्लोक १६४ में कहा है जो स्त्री पतिव्रत धर्म को छोड़ देती हैं उनकी इस लोक में निन्दा और मरने के पीछे गीदड़ी के पेट में जन्म लेती और सदा रोगी रहकर पाप के फल भोगती हुई दुःख पाती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


व्यभिचारात्तु भर्त्तुः स्त्री लोके प्राप्नोतिनिन्द्यताम् ।
शृगालयोनिं प्राप्नोति पापरोगैश्चपीड्यते ॥

वर्तमान समय में प्रायः देखने में आता है कि बहुधा स्त्रियां अपने पति को त्याग अनेक प्रकार की लीलायें रचती हैं अर्थात् कोई तो युवक पुरुषों के साथ तीर्थ यात्रा को जा उनके ही दर्शन से अपना जन्म सुफल समझती हैं, कोई गङ्गा यमुनादि के स्नान में बैकुण्ठ समझती हैं परन्तु इन सब बातों से नाना प्रकार की हानि के अतिरिक्त कोई भी लाभ नहीं वरन् इस प्रकार के कार्य करने से दोनों लोक बिगड़ जाते हैं और इस लोक में तो वह २ बुराइयां होती हैं कि जिनके वर्णन करने में लाज आती है और हृदय दाड़िम सा दरकता है। बाल्मीकीय रामायण अयोध्या कांड सर्ग २४ में श्राराम ने कौशिल्या जी से कहा कि पति का परित्याग करना अतिनिन्दित कर्म है, इसलिए मन से भी अति निन्दित पति का त्याग न करे। जब तक पति जीवित रहे तब तक आप उन्हीं की सेवा करे यही सनातन धर्म है। देखो जब सीताजी श्रीरामचन्द्र के साथ बन में अत्रि मुनि के आश्रम पर पहुंची तो उनकी स्त्री श्रीमती अनुसुइयाजी ने सीता को पतिव्रतधर्म का उपदेश किया उसके उत्तर में सीताजी ने कहा है स्त्रियों का जपतप आदि एक पति सेवा ही है वह इसी से स्वर्ग पाती हैं, जैसा सावित्री और रोहिनी ने पाया। देवी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भागवत स्कन्ध ९ में जरुत्कार मुनि ने कहा है, जो स्त्री अपने पति की सेवा करती है वह आनन्दलोक को पाती है और जो उसकी सेवा नहीं करती वह नाना प्रकार के दुःखों को भोगती है। पद्मपुराण तृतीय सर्ग खंड अ० ५ में शङ्कर ने सावित्री से कहा है कि स्त्रियों की परमगति भर्त्ता ही है। जरुत्कार मुनि की स्त्री ने कहा है कि पति का विछोह प्राणों के विछोह से भी अधिक है क्योंकि पतिव्रत स्त्रियों का सौ पुत्रों से भी अधिक पति प्रिय होता है इसी कारण पति का 'प्रिय' नाम है। जैसा पुत्रवान् पुरुषों का पुत्र में परमात्मा के उपासकों का हरि में, काने पुरुषों का नेत्रों में, प्यासे मनुष्यों का जल में, भूखों का अन्न में, कामी पुरुषों का मैथुन में, चोरों का परधन में, व्यभिचारिणी स्त्रियों का जार पुरुषों में, पण्डितों का शास्त्रों में उद्यमियों का व्यौपार में निरंतर मन लगा रहता है उसी भांति पतिव्रता स्त्रियों का मन पति में लगता है। सुन्दरकाण्ड सर्ग २४ में सीताजी ने कहा है कि हमारे जो पति हैं वही हमारे गुरु हैं, जिस प्रकार महा भाग्यवती इंद्राणी इन्द्र में, अरुन्धती बसिष्ठ में, रोहिणी चंद्रमा में, लोपामुद्रा अगस्त मुनि में, सावित्री सत्यवान में, श्रीमती कपिलदेव में, शकुन्तला दुष्यन्त में, केशिनी सागर में, दमयन्ती नल में उसी भांति मैं अपने पति में रत हूँ। पद्मपुराण भूमि खण्ड अ० २४ में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकला ने अपनी सखियों से कहा कि स्त्री का परम देवता पति है इसलिये उससे प्रथक् स्त्री न रहे और जो बहुत काल अलग रहती है वह पाप रूप हो जाती है इसलिये स्त्री को चाहिये कि मन, वचन और कर्म से सत्य भाव सहित अपने पति की सेवा करे और जो पति की विद्यमानता में स्त्री अन्य तीर्थ व्रतादि करती है वह सब निष्फल होता है और पर पुरुष गामिनी कहाती हैं। क्योंकि उन्होंने पति रूपी तीर्थ को छोड़ अन्य तीर्थ को पति बनाया। जिस स्त्री के ऊपर उसका पति सदा संतुष्ट रहता है वह संसार में सुख को पाती है। जो स्त्री अपने पति के विरुद्ध रहती है पृथ्वी पर उसको सुख रूप यश नहीं मिल सकता। स्त्रियों का रूप यौवन है, उस यौवन रूपी नौका का कर्णधार केवल अपना पति ही है जो नारी पति की सेवा करती है वह सुपुत्रवती होती है, उसी का यश संसार में होता है। इसलिये तुम कभी अपने माता, पिता, बांधव और धनादि के अभिमान से पति को त्याग अन्य पुरुष से सम्बन्ध न करो, क्योंकि ऐसी स्त्री के लिये मनुजी राजा को आज्ञा देते हैं कि उसको बहुत मनुष्यों के बीच कुत्तों से नुचवावे जैसाकि—

भर्त्तारं लंघयेद्यातुस्त्री ज्ञातिगुणदर्पिता।
ता श्वाभिः खादयेद्राजा संस्थाने बहुसंसिते॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और मनु अ० ३ श्लोक १८५ में कहा है कि जो स्त्री मन वाणी और शरीर से अपने पति को दुःखित नहीं करती वह पतिलोक को प्राप्त होती है और अच्छे जन उसको साध्वी कहते हैं, याज्ञवल्क्यजी ने कहा है कि जो स्त्री पति के प्रिय और हित कार्य को कर जितेन्द्रिय हो उत्तम आचरण से रहती है उसकी संसार में कीर्ति और परलोक में उत्तमगति होती है कात्यायनस्मृति खण्ड १९ के श्लोक १२ में लिखा है कि पति की सेवा से सर्व सुख और स्वर्ग की प्राप्ति होती है इसलिये इन सब बातों का ध्यान करती हुई पति की सेवा करो क्योंकि तुम पति की सेवा हीं से स्वर्ग में पूजी जाती हो तुम्हारे लिये यज्ञ, व्रत, उपवास पति से पृथक नहीं जैसा मनु अ० ५ श्लोक १५५ में कहा है **शंखस्मृति** अ० ५ श्लोक ८ में कहा है कि स्त्री को व्रत उपवास से स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती किन्तु पति पूजन से आनन्द मिलता है इस हेतु **व्यास** जी ने कहा है स्त्रियां पति की इच्छानुसार कार्य्य करें इसके उपरांत **पाराशर** जी महाराज अपनी स्मृति के अ० ४ श्लोक १९ में आज्ञा देते हैं कि जो स्त्री पति के जीते जी उपवास करती है वह अपने पति की आयु हरती है और आप नरक को जाती है ऐसाही मनु अ० ५ श्लोक १५५ और विष्णुस्मृति अ० २५ श्लोक १६ में लिखा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और अत्रिस्मृति श्लोक १३४, १३५ में भी ऐसा ही लेख है जैसा कि–

जीवेद्भर्तरि या नारी उपाध्य व्रतचारिणी ॥ १३४ ॥
आयुष्यं हरते भर्त्तुःसा नारी नरकं व्रजत् ॥ १३५ ॥

ऐसा ही बाल्मीक रामायण अयोध्याकांड सर्ग ११९ में अनुसुइया जी ने सीताजी से कहा है कि स्त्रियों के लिये पति ही सुख का दाता तथा बन्धु है इसलिये जो उसको दुःख देती हैं उनको नरक प्राप्त होता है।

पद्मपुराण तृतीय सर्ग खण्ड अध्याय ५ श्लोक ७० से ७२ तक सावित्री ने गायत्री से कहा कि स्त्रियों को पृथक् कोई कार्य्य करने की आज्ञा नहीं है वरन् पति जिस कार्य के करने की आज्ञा दे उसको सदा करती रहो। मनुजी ने कहा है कि यदि तुमको देवता का पूजन करना हो तो पति रूप देव का सदा पूजन करो जैसाकि "पति परमदैवतम्" ब्रह्मवैवर्तपुराण प्रकृति खण्ड में पतिपूजा की विधि इस प्रकार लिखी है कि प्रथम प्रातःकाल उठ रात्रि के पहने हुये वस्त्र बदल कर पतिदेव को प्रणाम करके स्तुति करे, फिर घर का कार्य कर स्नान करे धुले हुये वस्त्र पहन कर और सफ़ेद फूल हाथ में लेकर भक्ति पूर्वक पति देव की पूजा करे, प्रथम छने हुये निर्मल जल द्वारा पति देव को स्नान कराये, पहरने को धुले हुये वस्त्र देवे फिर पति के चरणों को धोवे पुनः आसन पर बिठाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


माथे पर चन्दन लगा गले में माला पहना निम्नलिखित रीति से स्वस्वितचन करे।

नमः कन्ताय शान्ताय शिव चन्द्रस्वरूपिणे ॥
नमः शान्ताय दान्ताय सर्वदेवाश्रायाय च।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय सतीप्राणाश्रयाय च ॥

पति को नमस्कार है जो कान्त, शान्त शिव चन्द्रमा का स्वरूप है, पतिको नमस्कार है जो शाँत ! दांत सम्पूर्ण देवताओं के आश्रय है, पति को नमस्कार है जो ब्रह्मस्वरूप है और भली स्त्री के जीवन का आधार है।

इसलिये तुम कदापि पति की आज्ञा के अतिरिक्त कोई ऐसा कार्य न करो और न कभी पर पुरुष या स्त्री के साथ गङ्गा स्नान वा तीर्थ यात्रा को जावो देखो शिव पुराण ज्ञान संहिता अ० ३५ श्लोक ४० में लिखा है कि पुत्र और स्त्रियों के तीर्थ घरों में ही रहते हैं, पुत्र के माता पिता और स्त्री का तीर्थ उसका स्वामी है। देवीभागवत स्कन्ध ९ अध्याय ४३ में राधिका का वचन है कि स्त्रियों को चाहिये कि पति की सेवा सदा धर्म से करें, क्योंकि स्त्रियों का पति ही बन्धु, वही आदिदेव और सद्मति है और परम सम्पति स्वरूप, मूर्तिमान भोगदायी, धर्मदायक, सुखदायक, निरन्तर प्रीतिदायी, शान्तदायी, सन्मानों करके देदीप्यमान, आनन्दमान है। स्त्रियों का बन्धुओं में भर्त्ता के समान अन्य कोई प्यारा बन्धु नहीं है। पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रीं का भरण पोषण करता है इससे उसका भर्त्ता नाम है, पालन करने से पति और स्त्री का ईश होने से स्वामी, काम देने से कान्त, सुख देने से बन्धु, प्रीति दान करने से प्रिय, ऐश्वर्यदान करने से ईश, प्राणों का ईश होने से प्राणनायक, कहां लो कहें, प्रिय से परे दूसरा कोई नहीं, जो कहो पुत्र बहुत स्त्रियों का प्रिय होता है, उसका भी यही हेतु है क्योंकि वह स्वामी के बीज से उत्पन्न होता है, इसी से प्रिय होता है, कुलीन स्त्रियों को सौ पुत्रों से भी अधिक पति प्रिय होता है और जो दुष्टा स्त्रियाँ हैं उनको हम कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि वे पति को अच्छी तरह जानती ही नहीं, फिर पति सेवा कैसी ? इसके उपरांत पति कामी और लोभी हो तो तुम अपनी बुद्धिमानी तथा चतुरता से उनके दोषों को धीरे धीरे दूर करो जिससे तुम्हारी और तुम्हारे घर और कुल का कल्याण हो।

प्यारी देवियों ! महारानी सीता शकुन्तला, पद्मावती, सुलोचना आदि पतिव्रता महिलाओं के जीवनों पर ( जिनका वर्णन हम पूर्व कर चुके हैं ) आपको विशेष ध्यान देना चाहिये कि अत्यन्त दुःखों के पड़ने पर भी पतिव्रत धर्म की रक्षा कर अपने पतियों का सङ्ग नहीं छोड़ा और तुम तनिक तनिक सी बातों तथा निर्धनता में अपने प्राण-प्यारों को तिलांजलि दे देती हो। याद रखो तुम्हारे जीवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की नाव का खेवट पति ही है बिना उसके तुम्हारा पार करने वाला इस भवसागर में अन्य कोई दृष्टि नहीं आता क्योंकि जैसे तुम अपने पति को नाना भांति से दुःखित रखती हो यदि वह भी तुम्हारी भांति अज्ञानी हो किसी अन्य स्त्री से प्रीति करले तो बताइये कि तुम्हारी क्या दशा हो ? मैं तो यही जानता हूँ कि फिर यह दुःख तुम्हारे टाले नहीं टलेगा, इसी अग्नि में जलकर भस्म होजाओगी यदि यह कहो कि हम भी ऐसा ही करेंगीं तो फिर विचारिये कि घर तो गया, नष्टता तो हुई, तिस पर कामी पुरुष एक स्त्री के बन्धन में नहीं रहते, जहाँ नवीन शोभायुक्त स्त्री पाते हैं तुरन्त मोहित होकर पहिली स्त्री को पुराने जूते के समान निकाल कर फेंक देते हैं, फिर बतलाइये उस समय आपकी क्या गति होगी ! सच पूंछो तो तुम्हारे प्राण सङ्कट में होंगे और अपने किये हुये को स्मरण कर पछताओगी परन्तु फिर पछताये क्या होता है 'जब चिड़ियां चुग गईं खेत' फिर तुम अपनी छाती आप ही कूटोगी वा अफ़यून खाओगी या दोदो दानों को मारी २ फिरोगी। यथार्थ तो यह है कि जो स्त्री अपने पति की आज्ञा के विरुद्ध चलती है वह इसी भवसागर में नाना नरकों को भोगती हैं।

बहुधा स्त्रियाँ अपने पति आदि से कपड़े आभूषणों पर ऐसे कटु वचन बोलती हैं कि जिसका कुछ पारावार



CC-0:Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नहीं। इसके उपरांत रोटी नहीं खातीं किन्तु सम्पूर्ण गृह की स्त्रियों से प्रत्येक बात पर लड़ती हैं, पति से बात भी नहीं करतीं। भला यह कौनसी बुद्धिमानी की बात है क्या पति आदि को अपनी मान बड़ाई प्रतिष्ठा स्वीकृत नहीं है? क्या सासु ससुर इत्यादि को अपनी बहू का पहरना ओढ़ना, खाना पीना अच्छा नहीं लगता?

सच पूंछो तो बहू बेटे के अर्थ अपने प्राणों को भी देना भला समझते हैं परन्तु क्या किया जावे जब उनको बचत ही न हो, यदि बचत होगी तो वह मनु आदि ऋषियों की आज्ञानुसार वस्त्र भूषण से अवश्य ही तुम्हारा सत्कार करेंगे, परन्तु तुम्हारे मुख्य भूषण पतिव्रतधर्म आदि गुण ही हैं, जिनसे सर्वत्र तुम्हारी पूजा होती है और बिना इन भूषणों के सोने चांदी के भूषण शरीर का भारही होते हैं और कुछ शोभा नहीं देते। पद्मपुराण द्वितीय भूमि खंड अ० ३५ में लिखा है कि स्त्रियों का प्रथम भूषण रूप और दूसरा शील, तीसरा सत्य, चौथा शृङ्गार, पांचवां धर्म, छटा मधुर बोलना, सातवां भूषण अन्तःकरण का भीतर और बाहर से शुद्ध रहना, आठवां पति की सेवा करना, नवां पति का मान रखना, दसवां सहनशीलता और रति में कुशल होना ही है। इसके पश्चात् शुक्रजी ने अध्याय ३ में वर्णन किया है कि घोड़े का वेग, बैल का धैर्य, मणि की कांति, राजा की क्षमा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वेश्या के हावभाव, गाने वाले का मधुर स्वर, धनवान का देना, सिपाही की शूरता, गौ का बहुत दूध देना, तपस्वियों को इन्द्रियों का दमन करना, विद्वानों का सभा में बोलना, सभासदों में पक्षपात न करना, साक्षियों में सत्यवादी, भृत्यों में स्वामी की भक्ति करना, मंत्रियों में राजा के हित के वचन, मूर्खों में मौन धारण करना उत्तम है वैसे ही स्त्रियों का पतिव्रत उत्तम भूषण है। इसलिये पतिव्रत रूपी भूषण को धारण कर संसार की भलाई करो जिससे तुम्हारा सर्वत्र मान हो। जैसा कि 'स्त्री रूप पतिव्रतम्' पद्मपुराण द्वितीय भूमि खण्ड अ० ४३ में लिखा है नारी बिना पति के शोभित नहीं होती चाहे वह अनेक प्रकार के द्रव्य भूषण रत्न और वस्त्रादिकों से क्यों न भूषित हो जिस प्रकार बिना चन्द्रमा के रात्रि, बिना पुत्र के कुल और दीपक बिना मंदिर शोभित नहीं होता, उसी भांति बिना पति के स्त्री सुशोभित नहीं होती। इसलिये हे सुन्दरियो! तुम पति के कठोर वचन को सुनकर अप्रसन्न न हो वरन् उनको प्रसन्न करना ही तुम्हारा परमधर्म है, जिस गृह में दुष्ट स्त्री होती है वहाँ ही नाना भांति से हानि दृष्टि आती है तथा पति को तो मरना ही सूझता है, यथा—

दुष्टा भार्या शठ मित्रं भृत्यश्चाप्युत्तरदायकः।
ससर्पेच गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः॥

अर्थात् दुष्टा नारी तथा मूढ़ मित्र अथवा नौकर उत्तर देने वाला हो तो उस घर में हे सुशीलाओ मूढ़ मित्र वा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उत्तर देने वाले चाकर और सर्प को दूर कर श्रेष्ठ मित्र वा चाकर कर सकते हैं कि जिससे सुख मिल सकता है परन्तु स्त्री त्यागने से मृत्यु ही होती है।

हे सौभाग्यवतियो! तुम उपरोक्त कथन पर ध्यान देकर अपने आचरण को इसके अनुसार सुधार कर अपने पति अथवा अन्य सास ससुर देवर जिठानी आदि से यथायोग्य प्रिय मधुर वाणी से नम्रता पूर्वक सत्य सम्भाषण करो इसीसे तुमको धन सम्पत्ति आदि अनेक सुख मिल सकते हैं जब तुम सुलक्षणा हो जाओगी तो पति आदि अड़ोसी पड़ोसी सब प्रसन्न होंगे तथा तुम्हारी बड़ाई होगी। सर्वजन तुम्हारा आदर सत्कार करेंगे गृह में भी आनन्द रहेगा, मानो साक्षात् स्वर्ग के सुखों को भोगोगी। जो तुम निठुर अप्रिय वा अत्यन्त भाषण करोगी, भोजन वस्त्र आभूषण आदि काम काज पर लड़ोगी तो आनन्द के स्वप्न में भी दर्शन न होंगे। सदा चिंता रूपी ज्वाला में जलकर एक राख की ढेरी बन जावोगी। इसके पश्चात् शराब या कोई अन्य नशे का पीना, कुमार्गिणी स्त्री वा पुरुष की संगत, पति से जुदाई, वृथा इधर उधर घूमना, बे समय सोना, दूसरे के गृह में निवास करना, इन ६ दूषणों को भी अपने निकट न आने दो जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है—

पानं दुर्जन संसर्गः पत्यां च विरहोटनम्।
स्वांगेऽन्यगेहवाश्च नारीणांदूषणानिषट्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


क्योंकि इनके कारण स्त्री का आदर नहीं होता, तथा नाना भांति के दोष उत्पन्न होजाते हैं, इस कारण इन उपरोक्त दोषों को त्यागने के साथ नीचे लिखी बातों का भी ध्यान रखना योग्य है।

(१) यदि पति से सम्मति करनी अथवा कुछ निवेदन करना हो तो यथा योग्य समय को देखकर शील स्वभाव से वार्त्ताकरो। (२) लड़ाई किसी के साथ न करो, धर्म और अर्थ का विरोध भी न करो। (३) असावधानी, उन्माद, क्रोध, ईर्षा, ठगई, अत्यन्त चुगलपन, हिंसा, वैर, अहंकार, धूर्त्तपन, नास्तिकता, चोरी और दम्भ इन सबको छोड़दो। (४) सदा प्रसन्न चित्त रहो, घर के कार्य बुद्धिमानी से अपने आप करो तथा बर्तन वस्त्र आदि सब वस्तुओं को पवित्र बनाए रहो। (५) व्यय करने में कभी उदार न हो। (६) गृह का मासिक हिसाब यथा योग्य रीति से लिख कर मास के अन्त में पति को दिखाकर यदि कुछ उसमें संशोधन कराना हो तो उनकी सम्मत्यनुसार करो। (७) कोई उत्तम वस्तु अपने सास, ससुर, पति के बिना भोजन कराये न खाओ। (८) द्वार व खिड़की के पास खड़ी न होओ। (९) जब पति परदेश को गये हों तो शृङ्गार न करो न अन्य घरों में जाओ। (१०) गृह में जब कोई उत्सव हो तो सास आदि की सम्मति से खर्च के व्योरे को लिखकर पति को सुना यथा योग्य व्यय करो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अर्थात् घर की प्राप्ति और गृह कार्य्य देख कर काम करो, मिथ्या प्रशंसा पर न मरो। (११) जब पति गृह में आवें, उठ कर नमस्ते कर उनके बैठने को आसन दो, पंखा करो तथा पान इलायची आदि से समयानुसार उनका आदर सत्कार करो। (१२) कभी और किसी दशा में पति की बुराई न करो वरन् अपने सब प्रकार के दुःखों को देश काल को देखकर निवेदन करती रहो। (१३) परमेश्वर की उपासना करो। (१४) कभी अन्य पुरुष से एकान्त में बैठ कर बातें न करो। (१५) फ़कीरों और बाबाजियों के यहाँ न जाओ, न अपने घर बुलाओ तथा उनको भिक्षा देने भी न जाओ। (१६) नौकरों और दासियों के कार्यों की जांच करती रहो। (१७) यह समझ कर कि यही मेरा पति सूर्य और चन्द्रमा से भी अधिक प्रकाशमान, सबसे बुद्धिमान्, शूरवीर, धनवान्, रूपवान तथा कुलवान् है सेवा में लगी रहो। चाहे अन्य पुरुष कैसा ही बुद्धिमान, धनवान्, कुलीन क्यों न हो स्वप्न में भी उसका ध्यान न करो। (१८) गृह कार्यों के समय नियत कर यथा योग्य उन्हीं समयों पर उनको कर, शेष आराम के समय उत्तम २ पुस्तकें, समाचार पत्र भी पढ़ा करो और अपनी सहेलियों आदि को सुनाया करो। (१९) प्राचीन पतिव्रता स्त्रियों के इतिहास अवलोकन कर उनके सार को ग्रहण करने की टेव डाल कार्य करो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(२०) पुत्रियों को पढ़ाती रहो, सीना पिरोना भी अच्छे प्रकार सिखलाओ, क्योंकि सन्तान सुधार तुम्हारे ही हाथ है। (२१) सदा ऐसे कार्य करो जिससे दोनों का यश और कीर्ति हो, इसी में तुम्हारी भलाई और सर्वोपरि लाभ है। (२२) लाज को कभी न त्यागो, परन्तु मिथ्या लाज में फँसकर प्राण भी न गंवाओ, लाज के मुख्य अभिप्राय को जान कार्य करो। (२३) यदि पति कुरूप हो और आप स्वरूपवान हो तो भी उसकी कभी निन्दा तथा घमण्ड न करो पति के मित्र को मित्र और शत्रुओं को शत्रु जान व्यवहार करो, इसके विपरीत नहीं। (२४) पति यदि पर-स्त्री गामी भी है तो भी तुम कभी पति से न लड़ो वरन् प्रेम भाव से यथा योग्य शिक्षा और उपदेश से उनको सुधर्मी बनाओ और सौतियाडाह कभी न करो इसके अतिरिक्त १—सदा सत्य कोमल प्रिय भाषण करो। २—बहुत न बोलो न अधिक चुप रहो अर्थात् समय पर न बोलना और कुसमय बोलना छोड़ यथार्थ भाषिणी बनो। ३—मनके भेद करने वाली बातें सभा में मत कहो ऐसी बात भी न बोलो जिसका कोई विश्वास न करे। ४—जानती हुई भी बिना पूंछे कोई बात न कहो अर्थात् जड़वत् बैठी रहो। ५—पीछे निन्दा भी न करो। ६—सदा सोच समझ आगा पीछा विचार सार वचनों को कहो। ७—आभूषण धारण करके स्नानादि को न जाओ। ८—रात्रि में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अचेत न सोओ। ९–अपने आभूषणों को तुच्छ दृष्टि से न देखो। १०–वृद्ध होने पर आभूषण धारण करने का स्वभाव न बनाओ। ११- बहुधा स्त्रियां मुख में दांत और शरीर में मांस न रहना पर भी तरुण स्त्रियों से अधिक गहना पहरने और शृङ्गार करने का चाव रखती हैं कोई कोई अड़ोसी पड़ोसियों का गहना मांगकर पहन दूसरों के घर जाती हैं, यह योग्य नहीं। १२–कान और नाक में भारी गहना पहरना अयोग्य है। १३–देशाटन के समय अधिक सामान और आभूषण लेकर न चलो। १४–तुम सदा सभ्यता से जगत् को और शत्रु को शील से, कृपण को धन से विद्वज्जनों को विद्या से, मूर्ख को प्रशंसा एवं मनोहर कथाओं से, स्वामी को भक्ति से, राजा को आज्ञा पालन से, क्रोधी को शांति से, कुटुम्बियों को स्नेह से, दीनों को दान से जीतने अर्थात् वश में करने का उपाय करती रहो, १५–गृह में गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं की देखभाल। १६–मकानों की मरम्मत वर्षा से प्रथम करा लिया करो। १७–कपड़ों को भी आठवें दिन देख भाल कर उनको धूप में सुखा लिया करो। १८–ऊनी कपड़े बरसात में बांधकर रखने से ख़राब होजाते हैं इसलिये हवादार खूंटी पर टांग चौथे या पांचवें दिन झाड़ दिया करो। १९–भोजन के पदार्थों को फ़सल पर लेने का प्रबन्ध कर लेने से लाभ होता है। २०–अवकाश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के समय सन्तानों की शिक्षा और आप स्वाध्याय करते तथा समाचार पत्रों को पढ़कर संसार के वृत्तांतों को जानती रहो।

प्यारी बहनों! अब तुम उपरोक्त प्रमाणों से समझ गईं कि पति के समान तुम्हारा कोई हितू, मित्र, सम्बन्धी तथा हितैषी नहीं। तुम्हारे लिये पूज्य सबसे बड़ा ईश्वर है उनसे उतर कर पति ही देव और स्वामी है अतएव उनकी सेवा बड़े प्रेम भाव से दासी के समान करो मंत्री के समान यथा योग्य सम्मति दो। माता के समान प्रेम एवं श्रद्धा से भोजन कराओ। शयन समय रम्भा के समान सुख देने वाली और विपत्ति के समय पृथ्वी के समान सहनशील वाली बनो। गृह में सेवक सेविकाओं से भली भांति कार्य लेती हुई घर के सब काम काजों को परिश्रम एवं ध्यान से देखो भालो। पशुओं की निगरानी भी अपने आप करो। त्योहार एवं उत्सवों पर अपनी आय के अनुसार प्रसन्नता पूर्वक व्यय करो। आमदनी में से कुछ न कुछ बचाती रहो, धन को सम्हाल कर रखो। याद रखो कि तुमही घर की लक्ष्मी, सन्तान सुधार की श्रेष्ठ अध्यापिका, बच्चों की लड़ाई के समय न्याय करने वाली रानी, घर का दीपक तुमही हो तुम्हारे बिना घर घर कहलाने योग्य नहीं रहता। इसलिये तुम सदा दत्तचित्त से आलस्य को त्याग नियमानुकूल गृहस्थी के कार्य्यों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करती हुई पति की परमभक्ति से सेवा कर उत्तम सन्तानों को उत्पन्न कर उनके लालन पालन के पश्चात् जब वह गृहस्थी के भार उठाने योग्य होजाँय तब तुम पति सहित बनवासिनी बन उसके पश्चात् योग्य समय पर संन्यास लेकर संसार के लड़के लड़कियों को उपदेश दे उनके अज्ञान को दूर करती हुई संसार में अपनी अमर कीर्ति छोड़ जाओ यही तुम्हारे जीवन की सफलता है।

---

# वेदोक्त शिक्षा

सत्यंवद–सत्य बोलो। धर्मंचर–धर्म पर चलो। मागृधः–लालच मत कर। ओ३म् ऋतोम्मर–हे जीव! ओ३म् का जप कर। कृतंस्मर किये कर्म को याद रख। अश्माभव–पत्थर के समान दृढ़ हो। अश्मा–तन्वकृधि–शरीर को व्यायाम से बलवान बना। यतोधर्मस्ततोजयः–जहाँ धर्म है वहाँ जीत है। पुराजरसामामृथा–बुढ़ापे से पहले मत मर। सत्यवक्ष्यामि नानृतम–सत्य हो सदा बोलेंगे झूंठ नहीं। नरिष्येत्त्वावतः सखा–ईश्वर का मित्र नष्ट नहीं होता। वयंजयेमत्वयायुजा–हम आपके साथ मिलकर विजय प्राप्त करें। ईशावास्यमिदं-सर्वम–ईश्वर सब जगह है। नाऽनाश्रान्तायश्रीरस्ति–बिना कष्ट उठाये धन नहीं मिलता। इन्द्रइच्चरितः सखा–परिश्रमी की प्रभु सहायता करता है। वयंभगवन्तःस्याम–हम धनवान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बने। कृण्वन्तोविश्वमार्यम्-सारे संसार को आर्य बनाओ। अस्तुमपिश्रुतम-मैं वेदपाठी बनूं। संश्रुतेनगमेमहि-हम वेदानुसार चले। माश्रुतेन विरोधिषि-वेद का विरोध मत करो। सपत्नाअस्मद धरेभवन्तु-शत्रु हमारे आधीन हों। अहं भूया समुत्तम-मैं सब से उत्तम बनूं। वयस्यामपतयारपीणाम-हम धन के स्वामी बनें। अभयनः पशुभ्यः-शत्रुओं से हम विजयी हों। सर्वाआशाममित्रं भवन्तु-दिशायें और आशायें मेरी मित्र हो। अक्षैमदिव्यिः-जुआ मत खेलो। कृषिंकृषस्व-खेती बाड़ी कर। मातृ पितृ आचार्य देवो भव-माता पिता और आचार्य का आदर करो। अदीनाः श्याम शरदः शतम्-सो वर्ष तक आज़ाद होकर जीवो। ब्रह्मचर्यण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत-ब्रह्मचर्य और तप से विद्वान मृत्यु को जीत लेते हैं। आत्म साहाय्यं हि उत्तमम् अपनी सहायता आप करना उत्तम है। सुहृद् अपत्काले हि संलक्ष्यते-आपत्कालमें मित्र की जाँच होती है।

---

# वेदों से अन्य शिक्षा

(१) जिस प्रकार सूर्य, चांद, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आदि ईश्वर ने रचकर उपकार किया है वैसे ही सब स्त्री पुरुषों को उपकार करना चाहिये।

(२) सदा विद्वान् धर्मात्माओं की चाल पर चलना अभीष्ट है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(३) शिल्प की उन्नति से देश की उन्नति होती है।

(४) सत्य वचन, धन, बल एवं विद्या से सुख और यश मिलता है।

(५) जो परमेश्वर में श्रद्धा रखते हुए अपने कर्तव्य का पालन करते हैं वह परमानन्द पाते हैं।

(६) व्यर्थ कार्य्यों में समय नष्ट न करो।

(७) परस्पर विरोध को मिटा जो परिश्रम से धन बढ़ाते हैं वे धन्य हैं।

(८) जो मन वचन कर्म से झूंठ नहीं बोलते वे माननीय होते हैं।

(९) किसी भद्रपुरुष को अपने मुख से अपनी प्रशंसा न करनी चाहिये और न अपनी प्रशंसा सुनकर आनन्दित होना चाहिये न हंसना चाहिये वरन् अपने समान सदैव सबकी उन्नति चाहनी चाहिये।

(१०) ९९ प्रकार के विष हैं उनके नाम, गुण, कर्म, स्वभावों को जान कर उन विष की प्रतिषोध करने वाली औषधियों को जान उनका सेवन कर विष सम्बन्धी रोगों को दूर करो।

(११) जगत में कीर्तिमान होना ही आयु का बढ़ाना है।

(१२) जो समुद्र के समान गंभीर, विद्वानों के समान परोपकारी, अपनी आत्मा के समान सब की रक्षा करते हैं वह सबको कल्याण और सुख देते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(१३) कभी ऐसी इच्छा न करो जिससे किसी के सुख की हानि हो।

(१४) सदा श्रेष्ठ कामनायें करनी अभीष्ट हैं।

(१५) जो अज्ञान से पाप होगया हो उसके दुःखरूपी फल को जान फिर पाप कर्म करने की कभी मन से इच्छा न करो।

(१६) ईश्वर भक्तजनों की आत्माओं में सब सत्य व्यवहारों को प्रकाशित कर देता है।

(१७) विना उत्तम बुद्धि के भी सुख नहीं होता, इसलिये धर्मात्मा विद्वानों के सत्संग से बुद्धि को निर्मल बनाओ।

(१८) वाणी वही उत्तम कहाती है जिसमें तीन गुण हों, प्रथम विद्या और शिक्षा से संस्कार की हुई, दूसरे सत्य भाषणयुक्त, तीसरे मधुर गुणयुक्त हो।

(१९) जीव कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में परतन्त्र है। फल का देने वाला ईश्वर है।

(२०) जो जन जिस कार्य में निपुण हो उसको उसी कार्य में लगाना चाहिये, जिससे कार्य सुगमता और उत्तमता से हो।

(२१) बिना ज्ञान के ईश्वर की उपासना नहीं होती।

(२२) जो मूर्ख और क्षुद्राशय पुरुष से सम्बन्ध करते हैं वे दुःखी होते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२३) मनुष्यों को योग्य है कि वह असत्य, खोटे कर्म, झूंठी स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा और व्यभिचार कभी न करे।

(२४) जिस सन्तान को माता पिता ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमों से उत्पन्न कर लालन पालन और विद्या पढ़ा धर्मात्मा बनाते हैं वही उनको सुख देने वाले होते हैं।

(२५) जो माता पिता के सच्चे अनुचर होते हैं वही श्रीमन्त होते हैं।

(२६) जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन, विद्वानों का सङ्ग कर बहु समर्थयुक्त मन को शुद्ध करते हैं उन्हीं को सब अवस्थाओं में आनन्द प्राप्त होता है। गम्भीर बुद्धि वाले ही विद्वानों में ही माननीय होते हैं।

(२७) मनुष्य शरीर धारण करने का यही फल है कि विद्या, उत्तम शिक्षा, उत्तम स्वभाव, धर्म, योगाभ्यास और विज्ञान को ग्रहण कर मुक्ति को प्राप्त करें।

(२८) जो धर्म मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते वे निरोग होकर पूर्ण आयु वाले होते हैं और उनकी मृत्यु मध्य में नहीं होती।

(२९) जिस प्रकार अग्नि, बिजली और सूर्य इन तीन से जगत् प्रकाशित हो रहा है उसी भांति उत्तम बल,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म, बुद्धि, धर्म से संचित धन, जीती हुई इन्द्रियां महान् सुख देती हैं।

(३०) जिस प्रकार समुद्र जलको भर जीवों की रक्षा कर नाना प्रकार के मोती आदि देता है उसी भांति धर्म से धन इकट्ठा कर दरिद्रियों की रक्षाकर आनन्द भोगो

(३१) जो परमात्मा की आज्ञा पालन करते हैं, वे लक्ष्मी और सन्तान से सम्पन्न तथा दीर्घ आयु वाले होते हैं।

(३२) पितर वे कहाते हैं जो अपनी उत्तम विद्या, उत्तम शिक्षा से दूसरों को पण्डित और धर्मात्मा बनाते हैं।

(३३) धर्मात्माओं के लिये संसार के सम्पूर्ण पदार्थ मंगलकारी होते हैं।

(३४) परमेश्वर पाप कर्मों के ही कारण मनुष्यों को लूला लंगड़ा, अंधा, बहिरा आदि करता है, इसलिये सदा शुभ कर्मों को करना उचित है।

(३५) जीव के रहने का स्थान शरीर है, इसको ब्रह्मचर्यादि से दृढ़ कर अपनी जठराग्नि को सदा तेज़ बनाये रक्खो।

(३६) जो जन आप्त विद्वान् सत्यवादी की शिक्षा पर चलते हैं उनको सदा विजय, राज्य, श्री, प्रतिष्ठा, बड़ी अवस्था, बल और विद्या प्राप्त होती है।

(३७) राजपुरुष और प्रजागण बहुत बल और धनाढ्य लोग यथेष्ठ ऐश्वर्य को पाकर किसी को भयभीत न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें किन्तु सदैव दरिद्री और निर्बलों को सुख पहुँचावे।

(३८) जो प्रजाओं को पीड़ा देने वालों को दंड देकर पुरुषार्थ से उन्नति कर विद्या विनय, उत्तम शीलादि का प्रकाश करते हैं वे माननीय होते हैं।

(३९) ऐश्वर्य की कामना करने वालों को सदा विद्वानों का संग, उनकी सेवा करते हुए उत्तम विद्या, श्रेष्ठ बुद्धि से उत्तम प्रयत्न के साथ अनेक व्यवहारों को सिद्धि करना चाहिए।

(४०) उन्हीं पदार्थों का भोजन करे जिससे बुद्धि का नाश एवं रोगों की उत्पत्ति न हो।

(४१) दयालु वेही स्त्री पुरुष हैं जो अन्यजनों के ऐश्वर्य की वृद्धि करते हैं जिन स्त्री पुरुषों में समुद्र के समान गम्भीरता—पृथिवी के समान क्षमा-गौ के तुल्य दान आदि गुण उपस्थित हैं वेही सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होते हैं।

(४२) जिस कुल के मनुष्य विद्वानों के उत्तमोत्तम व्याख्यान सुनत और स्वाध्याय कर उत्तम गुण—कर्म—स्वभाव वाले बनते हैं उसी कुल की वृद्धि होती है।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# नीतियुक्त शिक्षा

(१) गुण कर्म और शीलादि से मनुष्य की परीक्षा होती है।

(२) राजा, विद्वान्, गुरु, अग्नि और तपस्वी के साथ सावधानी से व्यवहार करें।

(३) शास्त्र ज्ञान के बिना धर्म मार्ग का ज्ञान नहीं होता।

(४) माता पिता गुरु स्वामी भाई पुत्र मित्र इनसे एक क्षण को भी विरोध न करे क्योंकि इन से वैर करने वाला दुःखी होता है।

(५) स्त्री, बालक वृद्ध और मूर्ख के साथ विवाद न करे।

(६) अकेला स्वादिष्ट भोजन न करे और न मार्ग में चले।

(७) निद्रा, तन्द्रा, भय क्रोध, आलस्य, दीर्घसूत्रता इन छः बातों को त्याग दे।

(८) शत्रु के गुणों का ग्रहण और गुरु के अवगुण छोड़ने उचित हैं।

(९) अपने घर में आए हुए क्षुद्र की भी यथा योग्य सेवा करनी चाहिए।

(१०) रोग और शत्रु को थोड़ा समझ कर न छोड़े, याचकों को तीखा उत्तर न दे। दाता, धार्मिक, शूरवीर इनकी ख्याति को यत्न से सुने। दीन, अन्ध, पंगु, बहिरे इनका हास्य कभी न करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(११) जिसने कुटुम्ब का पालन नहीं किया वह जीता ही मरों में गिना जाता है।

(१२) सींग, नख, दाढ़ वाले जीवों और दुर्जनों का कभी विश्वास न करे।

(१३) स्त्री, बालक, रोग, दास, पशु, धन और विद्याभ्यास और सज्जन सेवा का एक क्षण भी त्याग न करे।

(१४) श्रुति स्मृति इनके अर्थ का ज्ञान और उत्तम बुद्धि को प्रीति पण्डितों के सङ्ग से होती है।

(१५) तरुण स्त्री, धन और पुस्तक इनको पराधीन न करे।

(१६) गुरु, बलवान्, रोगी, शत्रु, राजा, श्रेष्ठ व्रतवाले और सवारी पर चढ़े को मार्ग छोड़ देना चाहिए।

(१७) गाड़ी से पाँच, घोड़े बैल से दश और हाथी से सौ हाथ दूर रहे।

(१८) धन देने के समय मित्रता को और लेने के समय शत्रुता को प्रकट करता है, इसीलिए बिना लिखा पढ़ी के कभी भी किसी को धन न देवे।

(१९) अलङ्कार, राज्य, पुरुषार्थ, विद्या इनसे मनुष्य की इतनी शोभा नहीं होती, जितनी भलाई रूपी भूषण से होती है।

(२०) बिना शास्त्र के जाने धर्म निर्णय, नीति, दण्ड, चिकित्सा, प्रायश्चित् और क्रिया के फल को वर्णन न करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(२१) अनिष्ठ वा कठोर वचन कहने वाला, जल और बाग़ को नष्ट करने वाला, नक्षत्र, सूर्य, राजा का बैरी, खोटा मन्त्री, कपटी, खोटा वैद्य, अशुद्ध रहने वाला, मार्ग का रोकने वाला, स्वामी द्रोहा, अधिक-व्ययकर्ता, अग्नि लगाने वाला, विष देने वाला, व्यभिचारी, अन्याय कर्ता, माता पिता आदि से द्रोह करने वाला, पराए गुणों में दोषों को ढूंढ़ने वाला, शत्रु का सेवक, मर्म का छेदक वंचक, अपन का द्वेषी, कुटुम्ब का विना पालन पोषण के तप करने वाला, मोटा ताज़ा होकर भिक्षा मांगे, कन्या बेचे, अधम का प्रचार करे, स्वतन्त्र पुत्र स्त्री, वृद्धों का निन्दक इनका सङ्ग त्याग दे।

(२२) धनवानों के सन्तान न होना और निर्धन होकर मूर्खता होना यह पाप का फल है इसलिए वही जीविका श्रेष्ठ है जिससे धर्म न छूटे।

(२३) धूर्त मनुष्य अन्य के उपदेश के लिए सदैव साधु के समान होते हैं परन्तु अपने प्रयोजन के लिए सैकड़ों कुकर्म करते हैं।

(२४) दुष्ट भार्या वाले गृहस्थ से मरना भला है, कुमन्त्रियों से राजा, कुवैद्यों से रोगी, कुत्सित राजाओं से प्रजा, खोटी संतान से कुल, कुबुद्धि से आत्मा सदैव नष्ट होती हैं। अति भ्रमण, अति भोजन, अति मैथुन,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अति परिश्रम से शीघ्र बुढ़ापा आता है इसलिए अति छोड़कर कार्य करे।

(२५) साधु तनिक उपकार को बड़ा मानता है, खल बड़े उपकार को भी भूल जाते हैं।

(२६) काम लगाने पर सेवकों की, दुःख आने पर बान्धवों की, बिपत्तिकाल में मित्र की, विभव के नाश होने पर स्त्री की परीक्षा करनी चाहिये।

(२७) स्त्री का विरह; अपने जनों से अनादर, युद्ध से बचा शत्रु कुत्सित राजा की सेवा, दरिद्रता, अविवेकियों की सभा ये बिना अग्नि के ही शरीर को जलावें हैं।

(२८) कुग्राम में बास, नीच कुल की सेवा, कुभोजन, कलही स्त्री, मूर्ख पुत्र, विधवा कन्या ये छः बिना आग के शरीर को जलाते हैं।

(२९) नदी के तीर का वृक्ष, अन्य गृह में जाने वाली स्त्री, मन्त्री रहित राजा शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(३०) आलस्य, मद, मोह, चञ्चलता, बुरी सलाह, अभिमान, कठोरता और भूल ये सात दोष विद्यार्थियों में होते हैं, सुख चाहने वाले को विद्या और विद्या की इच्छा वाले को सुख कहाँ ?

(३१) मूर्ख, नशों का पीने वाला, आलसी, अजितेन्द्रिय और रोगी इन के पास धन कभी नहीं रहता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(३२) जिन पति पत्नियों के हृदय से हृदय, मन से मन और बुद्धि से बुद्धि मिल जाती है उनको ही सुख प्राप्त होता है।

(३३) जिसका आचरण बुरा है दृष्टि पाप में रहती है बुरे स्थान में बसने वाला और दुर्जन इन पुरुषों की मैत्री शीघ्र नष्ट हो जाती है।

(३४) आचार से कुल जाना जाता है, बोली से देश, आदर से प्रीति और शरीर भोजन को बतलाता है।

(३५) कोकिलाओं की शोभा स्वर, स्त्रियों की पतिव्रत, तपस्वियों की शोभा क्षमा और सुपुत्र से कुल शोभित होता है, योग्य पुत्री से दो कुलों की शोभा होती और कुपुत्र से कुल शोभा रहित हो जाता है।

(३६) जहाँ स्त्री पुरुषों में प्रेम होता है वहाँ ही लक्ष्मी विराजमान रहती है।

(३७) सज्जनों की सबसे बड़ी यही परीक्षा है कि उनके मन बचन और कर्म एक होते हैं।

(३८) धन होने पर विवेक, विद्या के साथ विनय, बल के साथ नम्रता होना महात्माओं के लक्षण हैं।

(३९) बड़े महात्मा वही हैं-जो धन पाकर बौराते नहीं, युवा होकर चंचल नहीं होते, और अधिकार पाकर घमण्ड नहीं करते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४०) कान शास्त्र सुनने से शोभित होते हैं कुण्डल से नहीं। हाथ दान से शोभित होता है कंकण से नहीं। इसी भाँति शरीर परोपकार से शोभा पाता है चन्दन के लगाने से नहीं।

(४१) विपत्ति में धीरज, बढ़ती में क्षमा, सभा में वचन की चतुराई, युद्ध में शूरता, यश में रुचि और वेद में कामना यह महात्माओं को स्वभाव से ही होते हैं। दुष्ट मनुष्य सर्वदाही परनिन्दा से प्रसन्न होते हैं।

(४२) गुप्तदान देना, अतिथियों का आदर करना, भलाई करके चुप रहना, पराये उपकार का सभा में कथन, लक्ष्मी का गर्व और दूसरों की निन्दा न करना, इन व्रतों के करने वाले सज्जन कहलाते हैं।

(४३) सांप का विष दांत में, मक्षिका का शिर में, बिच्छू का पूंछ में परन्तु दुर्जन का विष सब अङ्गों में रहता है।

(४४) आरोग्य रहना, ऋणी न होना, परदेश में अधिक न रहना, सत्पुरुषों का सत्सङ्ग करना, अपनी वृत्ति की अजीविका और निर्भय होकर रहना ये इस लोक के सुख हैं।

(४५) मान अपमान पर ध्यान कर अपने कार्य को कर दिखलाना उत्तम पुरुषों का काम है। विवाह, मित्रता, व्यवहार ये तीनों समानता से ही शोभित हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(४६) तृण, भूमि, जल और सुन्दर मधुर बचन, ये सब सज्जनों के यहां सदा बने रहते हैं।

(४७) जब तक शरीर स्वस्थ अर्थात् निरोग है, मृत्यु दूर है जब तक अपना हित साधन करना चाहिये, जब प्राण का अन्त समय आजायगा तब कोई क्या करेगा?

(४८) कामनाओं के भोगने से कामना उसी प्रकार शांति नहीं होती जिस प्रकार से घृतादि होम सामिग्री से अग्नि शांति नहीं होती।

(४९) प्रज्ञा, कुलीनता, दम अर्थात् मन को दुष्ट कर्म से रोकना, शास्त्रज्ञान, पराक्रम, थोड़ा बोलना, यथाशक्ति दान कृतज्ञता अर्थात् दूसरे की भलाई को मानना ये दस गुण मनुष्य को उज्वल कर देते हैं।

(५०) जल में तेल, दुर्जन में गुप्त वार्ता, सुपात्र में दान और बुद्धिमान में शास्त्र ये थोड़े भी हों तो भी वस्तु की शक्ति से अपने आप विस्तार को प्राप्त हो जाते हैं।

(५१) आग, जल, स्त्री, मूर्ख, सांप और राजा के कुल ये सदा सावधानी से सेवन योग्य हैं क्योंकि ये छः शीघ्र प्राण के हरने वाले हैं।

(५२) क्षमावान, दाता, गुण का समझने वाला स्वामी और आज्ञाकारी, ईमानदार और चतुर चाकर कठिनता से मिलते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(५३) जिनका बल दुर्बलों की रक्षा के लिये—धन धर्म के लिये और वाणी सत्य के प्रकाश के लिए है वही संसार में कीर्ति पाते हैं।

(५४) अधम धन को—मध्यम धन और मान को तथा उत्तम मान को ही चाहते हैं इसलिये महात्माओं का धन मान ही कहा गया है।

(५५) जिस प्रकार सहस्रों गौ होते हुए बछड़ा अपनी माता के पास ही जाता है वैसे ही किया हुआ पाप कर्ता ही को लगता है।

---

# सीना पिरोना

इस विद्या का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक नारि का परम कर्तव्य है इसको भली भांति स्वयं सीख अपनी पुत्रियों को भी उत्तम रीति से सिखावे। जो स्त्रियाँ इसको नहीं जानतीं उनको अपने बच्चों के कपड़ों के लिये दूसरों का मुंह ताकना हो इस विद्या के मुख्य चार भेद हैं **सीना पिरोना बुनना और करतब्योंत करना।**

**बुनना:**—कुर्सियां कांटे तथा सिलाई से जो मोज़ा, बुनयान, गुलूबन्द, आदि का बुनना तथा सुई द्वारा रफ़ू करना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारायणी शिक्षा

कसीदा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**कतरव्योंतः**—कपड़ों का नाप लेना और उनका छांट करना।

**सिलाईः**—सुई द्वारा कपड़ों को विधिवत जोड़ने को सिलाई कहते हैं।

**पिरोनाः**—सुई में पिरो कर जो काम करते हैं उसको पिरोना कहते हैं-जैसे फ़ीता और बेल आदि का काढ़ना रेशम, ज़रदोज़ी, कलाबत्तू तथा सलमे सितारे का काम करना बटुये की डोरी गूंदना, एवं फूलों के अनेक आभूषण बनाना।

**सोने के लिये आवश्यक वस्तुऐंः**-सुई, तागा, गज, बेड़ा और तेज़ कैंची। सुई और तागा कपड़े के अनुसार मोटा या महीन लेनी चाहिये। डोरा बहुत लम्बा न पिरोवे क्योंकि इसमें प्रायः उलझन और गांठ पड़जाती है डोरे को खींच कर तोड़ो।

**सोने की रीतिः**—सुई को अंगूठे और बीच की अंगुली से थामते हैं और तर्जनी से दबाकर चलाते हैं, अनामिका में बेड़ा पहनते हैं और कोई २ बीच की अंगुली में भी पहन लेती हैं। जब कपड़े से सुई नहीं निकलती तो बेड़े से दबाकर निकाल लेते हैं। कोई २ नख से भी निकाल लेती हैं परन्तु यह अच्छा नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**बेड़ाः**-छोटा सा लोहे, तांबे तथा पीतल का होता है जिससे अंगुली का एक पोरुआ ढक जाता है ? इसमें बहुत छोटे २ खाने होते हैं जिनमें सुई का नक्का ठेलते समय जमजाता है और फिसलने का डर नहीं रहता। इससे सुई हाथ में नहीं बिंधती और अँगुली में ठेक नहीं पड़ती।

**सिलाई सीखने की रीतिः**-( १ ) सिखलाने की उत्तम रीति यह है कि पहिले आप सींकर उनको दिखलाये और फिर उधेड़ कर उनसे सिलावें जिससे उन्हीं डोरों के चिन्हों को देख कर वे सी लेवें और जब हाथ सध जाय तब पुराने कपड़ों में से काट २ कर उनको दे और उनसे सिलावे और फिर फटे पुराने कपड़े देदें जिनमें से वे काट कर सीवें और फिर उनको पुराने कपड़ों में से टोपियां, कुर्त्ते, थैले इत्यादि इसी भाँति की सहज सीधी सिलाई के कपड़े सीने को दें। जब सीना आजाय तब तुरपना बतावें और जब इन में भी अच्छी तरह हाथ सध जाय तो नये कपड़े सीने को दें। जो सीधी सिलाई के हों जैसे रज़ाई, गद्दा, दोहर जब इतना आजाय तो उनको कपड़े काटना बतावें।

**सिलाई**—कई भाँति की होती है सादा, तुरपना, बखिया टांकना, काज बनाना।

**(१) सादा सिलाई**–जिसको लम्बी और सीधी और सूपिज भी कहते हैं। यह रज़ाई तोशक दोहर आदि कपड़ों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के खड़े करने के काम में आती है। ऐसी सिलाई करते समय दो बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है प्रथम सिलाई सीधी अर्थात् उपर नीचे टेढ़ी मेढ़ी न होने पावे—दूसरे सब टाँके एक दूसरे से समान दूरी पर होने चाहिये।

(२) तुरपना—किसी भी फोंक के सिरों को भीतर की ओर मोड़ कर जो सिलाई की जाती है उसे तुरपना, उलटना या पलटना कहते हैं इसमें सुई हमेशा दाईं ओर से कपड़े की मोड़ के नीचे से घुसती और बाईं ओर मोड़ के ऊपर जाकर निकलती है। यह तुरपाई दो प्रकार की होती है। एक गोल, दूसरी चपटी, जिसे अमलपत्ती भी कहते हैं यह भी दो प्रकार की होती है एक तो जिसमें दोनों सिरे एक ही ओर को पलटे जाते हैं दूसरी जिसमें एक सिरा एक ओर को और दूसरा दूसरी ओर को तुरपा जाता है। यही सिलाई जब कुरतों के घेर, रूमालों के सिरे एवं चादरों के किनारे पर की जाती तब कोर सीना कहलाती है।

(३) बखिया—इस प्रकार की जाती है कि जहां से सुई चुभोकर निकाली जाय वहां से पिछाड़ी को लेजा कर आधी दूर पर चुभोई और पहिले की बराबर दूरी पर निकाली जाय फिर पीछे को लाकर जहाँ से पहिली सुई निकाली थी उसी छेद में उसको पिरोकर उतनी ही दूर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जा निकालो, इसी भांति करते रहें तो ऊपर की सिलाई एक दूसरे के बराबर चली जायगी और नीचे को दुहरी होती जायगी ŒŒ। यह भी दो प्रकार की होती है एक साधारण जिसका उपरोक्त वर्णन कर चुके हैं दूसरी कांटेदार इसमें यह लहरिया जो पड़ती है वह नीचे को भीतर की ओर रहती है और बखिया दो ओर होजाती है इसके उपरान्त तेपची और जाली की सीमन होती है। जाली की सीमन बहुत मज़बूत डोरे से कीजाती है और कांटेदार बखिया की भांति होती है। जहाँ इसका काम करते हैं वहाँ कपड़े के दोनों छोरों को उलट कर तुरप देते हैं जिससे यह चमकती है।

**सुजनी**—इसमें बखिया ही करनी पड़ती है। वह तीन प्रकार की होती है एक तो बे भरत की अर्थात् इस प्रकार की सुजनी में रुई वा कपड़े का भरत न भर केवल फलीता भर ऊपर के कपड़ों के परतों पर पैंसिल से जैसे बेलबूंटे काढ़ने हों छाप कर या हाथ से बनाकर उसपर दोहरा बखिया कर लेते हैं। दूसरे कपड़े की तह वा रुई की तह लगाकर ऊपर से दोनों परतों में पास २ सिलाई घनी रीति से कर लेते हैं। तीसरे इकहरे कपड़े पर ही काँटेदार बखिया कर देते हैं जैसे लखनऊ की टोपियों पर। घनी घनी सिलाई के कारण यह बड़ी मज़बूत होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलीता—यह काले व लाल रंग का डोरा होता है जो मगज़ी और संजाफ़ के किनारे पर लगाया जाता है। इसमें भी बखिया करनी पड़ती है।

टकाई—यह दो प्रकार की होती है एक सादा बखिया के टाँके की, दूसरी काँटेदार, सीधी टंकाई में बखिया के टाँके की, और काँटेदार में M इस प्रकार ऊपर नीचे को टाँके लिये जाते हैं। यह गोटा बेल बाँकड़ी और गोखरू किरन आदि के लगाने के काम में आती है।

काज—इसकी ज़रूरत प्रत्येक कपड़े में ही पड़ती है गले की शोभा अच्छे काजों से होती है यदि कमीज़ कुर्ते में काज अच्छे न बनें तो वह बेडौल सी प्रतीत होने लगती है। इसलिये इसके बनाने में अत्यन्त सावधानी रखनी चाहिये और यह भी ध्यान रहे कि इसकी कटाई बटन के अनुसार ही हो। काज बनाने के लिये डोरा ज़रा मोटा होना चाहिये और प्रत्येक टाँका पास और समान दरी पर लगाना उचित है इसके लिये कटे हुए काज के ऊपर एक निशान डाल लेना चाहिये। कटे हुए काजको बायें हाथ से इस रीति से पकड़ो कि वह तुम्हारे अंगूठे और बीच की अंगुली के बीच में दवा रहे सिलाई एक सिरे से आरम्भ करनी चाहिये सदा सुई को कटी हुई फोंक के नीचे से छेद ऊपर को आधी खींचो और फ़ौरन नीचे वाले तागे को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुमाकर सुई में फंदा डाल पूरी निकाल लो। इस प्रकार बराबर करती जाओ जब तक कि पूरा न सिल जावे। ऐसा फंदा देकर सिलाई करने में काज के नीचे गाँठोंदार जाली सी बनती जाती है जिससे काज मजबूत और टिकाऊ होजाता है।

**बेल काढ़ना**—यह सफ़ेद और रङ्गीन दोनों प्रकार के सूत तथा रेशम से काढ़ी जाती है कुछ को छाप कर और कुछ को अपनी अंदाज़ से भी बना लेते हैं—उनकी कढ़ाई भी कई प्रकार की होती है—यथा—फोंक, मरोड़े, लखनवी एवं खील की पक्की चिकन।

**फोंक**—किसी भी बेल को छापकर महीन २ फोंक द्वारा भर देते हैं।

**मरोड़े की**—बेल की पत्ती और डंडी पर साधारण फोंक भरते जाते हैं और दुबारा उन्हीं टाकों के धागे में सुई को निकालते हैं। O

**लखनवी**—इस कढ़ाव में बेल या फूल की पत्ती जितनी चौड़ी होती है उतनी ही कढ़ावट में भी बनी रहती है। इस कढ़ाव को बनाने में पहले पत्ती के बीचोंबीच में एक साधारण फोंक ऊपर के सिरे तक भर देते हैं बाद को सुई से कुछ तिरछा टांका पत्ती के एक सिरे से दूसरे सिरे पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेते हैं लेकिन यह ध्यान में रहे कि सिरे के यह तिरछे टांके पास २ होने चाहिये।

खील को—इसमें भी पत्ती के बीच में सादा फोंक भर कर आड़ी सुई निकालते हैं

पक्की चिकन जैसी बेल या फूल बनाना हो पहले से पेंसिल से बनाकर कढ़ाई आरम्भ करे यह प्रायः पक्के भने हुए तागों या रेशम से काढ़ी जाती है।

सुई में डोरा या पक्का रेशम पिरो दूसरे सिर में गाढ़ दे कपड़े के नीचे से छेदे ऐसा करने में डोरा सहज में अटक जाता है अब सुई जहां पर निकाली है वहीं से चुभोकर कुछ अगाड़ी निकालते हुए काज बनाने की भाँति से सुई के पिछले डोरे से फंदा डाल खींच ले फिर दुबारा उसी सुई के छिदे स्थान में से कुछ अगाड़ी को टाँका लगावे फंदा बराबर देता जाय इस प्रकार ऊपर एवं जंजीरें की सूरत बनजायगी।

सलमे के फूल बनाने के लिये या तो पेंसिल से बनावे अथवा लकड़ी बने छापों को खरिया मिट्टी पानी में घिस उसमें थोड़ा भीगा हुआ गोंद मिला बूटे अथवा बेल छापले इस प्रकार छापी हुई बेलें सूखने पर झड़ती नहीं। इस काम में तीन प्रकार का सलमा काम में लाया जाता है गिजाई कंगनी और कटीला। सलमा कंगनी बेल फूल की डंडी बनाने और गिजाई फूल के भराव में तथा कटीला किनारों पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांका जाता है. उसके टांकने के लिये बहुत बारीक सुई और मज़बूत एवं महीन तागे की आवश्यकता है—तागों की लच्छी बना पीले रङ्ग अथवा हल्दी में रंग लेना चाहिये। बहुधा स्त्रियां कगनी और कटी के सलमे को ही काम में लाती है फूल में जहाँ पर पत्तियों का जोड़ हो प्रथम एक छोटा सितारा छोटे से कटीले सलमे के टुकड़े के साथ ले सितारे के उसी छेद में सुई निकाल टाक दे बाद को सलमे के इतने बड़े २ टुकड़े क़ैंची से काट ले जितने कि पत्तियों में दुहरे होकर आजाय ▭ फिर ऊपर के सिरे का एक टाँका लगादे ताकि सलमा जमजाय इसी प्रकार अण्टा पत्तियों को भी बनाता जाय।

**ज़री का काम:**—यह काम मखमल या बेलबटीन पर किया जाता है इसके लिये लकड़ी के फ्रेम का होना बहुत ज़रूरी है, जिस कपड़े पर काम करना होता है वह लट्ठे या कंद पर टांक लिया जाता है और फिर फ्रेम में दबाकर जैसा फूल पत्ते बनाने हो पेंसिल से बना काँटे अथवा सुई से ज़री का काम करता है।

**बुनाई**—बुनावटें कई प्रकार की होती है परंतु उनमें सादा और फलीदार अधिक काम में आती है इनका सीखना भी बहुत सरल है—मोज़ा दस्ताना मफ़लर एवं गुलीबंद इन्हीं दो बुनावटों के बुने जाते हैं क्योंकि यह खिंचकर बढ़ जाती है और दूसरी बुनावटों की अपेक्षा ऊन भी कम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लगती है। इस काम को प्रथम से आरम्भ करने वाली स्त्रियों एवं पुत्रियों को पहले सिरा डालने का अभ्यास करना चाहिये-जिसके लिये दो सलाइयों और ऊन की आवश्यकता पड़ती है। पहले एक सलाई परएक सरकफूंद बनाकर डालो और फिर उसमें से दूसरी सलाई घुमाकर पीछे को निकाल पीछे लटकती हुई ऊन का फंदा सलाई पर डाल अपनी ओर को निकाल कर उसी सलाई पर चढ़ाते जाओ इसी प्रकार जितने फंदे डालने हों डाल लो। चीज़ के बुनने के पहले नाप लो इसमें ६-७ फंदे एक इंच चौड़ाई के लिये काफ़ी होता है।

**सादा बुनाई:**—जब इच्छानुसार फंदे डाल लो तब सलाई के आख़िरी फंदे में से सीधे हाथ में थामी हुई सलाई को पहले की भांति फंदे के भीतर डालो और उस पर ऊन का फंदा देकर अपनी ओर निकाल लो तो पिछली सलाई के फंदे को नीचे गिरा दो इसी प्रकार दूसरे फंदों में भी बुनते हुए आख़िर पहुँचेगी तो एक पांती समाप्त हुई समझो—अब दूसरी पांती में सीधे हाथ में थमी हुई सलाई फंदे में से बाहर निकालने के स्थान में पीछे से घुमाकर अपने सामने ही को निकालो और ऊपर से ही ऊन का फंदा दे पीछे की ओर निकाल दो सीधे हाथ वाली सलाई पर चढ़ा दूसरी सलाई का फंदा गिरादो—इस प्रकार



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आखीर तक बुनने पर एक पांती उल्टी बुनाई की समाप्त हो जायगी इस भांति एक पांती उल्टी और एक पांती सीधी बुनाई करने से सादा ही बुनाई होजाती है।

**फलीदार बुनावटः**—इसके लिये २ फंदे उल्टे और २ सीधे बुनों—आखीर तक ऐसे ही करते जाओ—चार पांच सलाई बुनने पर फली छिटक जायगी।

**चैक की बुनावटः**—यह दो रंग की ऊन के दो डोरों से चलती है अर्थात् यदि दो रंग की ऊन से सिरा डाला है तो ४ अंगुल फलीदार बुनावट कर लेने के बाद गुलाबी रंग की ऊन जोड़ लो और हरे रंग वाली को वहीं पर लटकने दो फिर चार फंदे गुलाबी रंग के बुनो और ४ हरे रंग के—इसमें सिर्फ़ एक सलाई उल्टी बुनाई की और एक सीधी बुनाई की जाती है।

## कपड़ों का कतर ब्योंत

काट छाँट सीखने की सामिग्री—मिलटन, खरिया, गुनिया (स्कायर) गज़ और क़ैंची हैं।

मिलटन—यह डबल अर्ज़ का डेढ़ गज़ कपड़ा होता है जिस पर खरिया से सब प्रकार के कपड़ों के नक़शे बनाने सीख जाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गुनियाँ—कपड़े की कान मालूम करने, नक़शों में सीधी लकीर खींचने, तथा कपड़ों पर सीधे निशान लगाने के काम में आती है।

सीखने की विधि—प्रथम मिलटन पर खरिया से कपड़ों का नक़शा बनाना सीखे जब यह सीख जाये तो कपड़ों का नक़शा कागज़ों पर बनाना और काटना सीखे। जब यह कार्य्य आजाये तो मोटे कागज़ पर मोडल बना काटकर रखले।

## ध्यान रखने योग्य बातें—

( १ ) नाप— नाप में सब से अधिक सावधानी रखनी चाहिए। इसकी थोड़ी सी भी भूल बहुत हानि करती है।

( २ ) शरीर की बनावट—शरीर पर कपड़ा तभी जचेगा जब वह शरीर की बनावट के अनुसार काटा व सिया जाये। कपड़ों को काटते समय मानव देह के सर्व प्रकार के दोषों को ध्यान में रखना उचित है, उदाहरण छोटा हाथ, ढालू या चौकोर कंधा।

( ३ )जांच—काट के पश्चात् कपड़े को कच्चा कर पहना, जांच करलो और यदि कोई ग़लती रह गई हो उसे ठीक करलो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नाप—कपड़ों को तैयार करने के लिये, उनका ठीक ठीक नाप लेना ज़रूरी है। नाप किस २ अङ्ग का कैसे लेना चाहिए लिखते हैं—

गला—गरदन को गोलाई या घुमाव।

पीठ या शेस्त—गरदन में रीढ़ के आरम्भ से कमर तक।

पुट या पुट्ठा—गरदन में रीढ़ की हड्डी से कन्धे के गोल हाड़ तक।

पुट कोहनी—पुट के आरम्भ से कुहनी तक। यह नाप कोहनी को मोड़ कर लेना चाहिए।

सीना छाती—बग़लों से फ़ीता निकाल कर छाती का घुमाव।

कमर—नाभी के पास कमर का घुमाव।

कूल्हा या बैठक—कूल्हा या चूतड़ का घुमाव।

पैर की लम्बाई—कांछ से एड़ी तक।

घुटना—घुटने का घुमाव।

मोहरी—पतलून के पैर के पास और कमीज़ आदि के हाथ की कलाई के पास का स्थान।

मोहरा—खवे—वह स्थान जहां पर आस्तीन पुट से जुड़ती है।

कटाई—कटाई में सदा नाप से आध इंच कपड़ा अधिक रक्खें ताकि सीमन में भले प्रकार दबाया जा सके।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**संजाफ़ और गोट**—यह भी दो प्रकार से लगाई जाती है, एक सुदेव सीधे कपड़े में से सीधी पट्टी कर बन जाती है, दूसरे औरेब जो दो प्रकार कतरी जाती है एक तो कपड़े में से टेढ़ी काटी जाती है और दूसरे कपड़े को औरेब थैला बनाकर काट लेते हैं जिसमें सीधी धज्जी उतरती चली जाती है टुकड़े जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती और उसके थैला बनाने की रीति यह है कि कपड़े को अर्ज में से मोड़ कर दोनों छोर मिला आधा करले और बखिया की तरह सीं दे फिर उसका आधा करे और फिर इसी आधे के बराबर कपड़े की लम्बान में से नाप कर चिन्ह कर दे, और फिर यहां से एक शिकन मोड़ कर वहां तक डाल दे जहां से अर्ज का आधा करके सिलाई की थी इसकी फिर जितनी चौड़ी गोट वा मग़ज़ी चाहे उतनी ही एक सिरे पर छोड़कर सीने से थैला सा बन जावेगा फिर इसको क़ैंची से काट लेने से एक लम्बी सी धज्जी हो जावेगी इसको दोहरा कर भीतर की ओर सिलाई करें तो गोट हो जाती है।

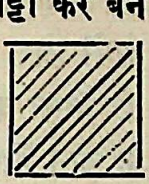

गोट भी दो प्रकार लगाई जाती है। (१) इकहरी अर्थात् इकहरे कपड़े पर लगाते हैं इसके लगाने की रीति यह है कि गोट को उलट कर और सीमन को ऊपर की ओर कर बराबर में पिसूज या बखिया की सिलाई करली जाती है। (२) दोहरी अर्थात दोहरे कपड़े पर जब गोट लगानी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो दोनों छोरों की उलट बराबर मिला सीमन भीतर की ओर कर गोट को भी दोहरा कर दोनों कपड़ों के दोनों छोर, और गोट के दोनों छोर मिलालो और गोट को भीतर कर उस पर बखिया की सिलाई करदो। गोट के कोने निकालने पड़ते हैं इस की यह रीति है कि सींते सींते जब किनारा आवे तौ सिंघाड़े की तरह मोड़ कर कोना निकाल सीलो।

**चुन्नट**—चुन्नट बनाना हो तो जितने में चुन्नट लगावे उतना मोड़कर हाथ से दबा ऊपर से सीवन करदे और ऊपर से कफ़ वग़ैरह जो लगाना हो लगा दे।

## कुर्ता क़मीज़

नाप—लम्बाई, छाती, पुट, पुटआस्तीन, गला और मोहरी का लेना चाहिये।

कितना कपड़ा लगेगा—यदि अर्ज़ छाती के बराबर है तो लम्बाई का दूना और आस्तीन की लम्बाई का एक हिस्सा और यदि अर्ज़ कम है तो लम्बाई और आस्तीन का दूना कपड़ा घेर के हिसाब से लिया जाता है।

**कुर्ता कलीदार**—इस में एक आगा, एक पीछा, दो आस्तीन, चार कलियां, दो चौबग़ला होते हैं। मुड्डे चौड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होते हैं। कंधों की ओर खुलाव और आगे में गला होता है। कलियां निचाव में उतनी छोटी होती हैं जितना बाहां के खलोते होते हैं।

काट—पहिले दोनों कंधों से आगा पीछा नाप काट लो, फिर आस्तीन नाप काट लो। इसके पश्चात् जितना चौड़ा आगे पीछा लिया हो, उतना ही चौड़ा और लम्बाई में आगे पीछे से बाहों के खलीते से कम कपड़ा लेकर चार कलियां जैसा चित्र में दिया हुआ है काट लो फिर आगे पीछे में बांह कलियां चौबग़ला जोड़ गला बनाओ तुरपन लगा सीलो।

**बिना कलो का कुर्ता**—इसमें आगा, पीछा और दो बाहें होती हैं जो कलाई के पास तंग होती हैं और जिन में बटन लगते हैं।

काट—घेर छाती के बराबर होता है। घेर के हिसाब से कपड़ा ले अर्ज़ का आधा और लम्बाई का दूना मोड़ चौपर्त कर एकसार तख़्ते पर बिछा उस पर नं० १,२,३,४ चित्र में दिये अनुसार नक़शा बनाओ।

नं० १ से दाईं ओर पहिला छाती के बारहवें भाग से कम और दूसरा पुट से कुछ अधिक नाप कर नं० ५ व ६ डालो। नं० १ से नीचे की ओर छाती के बारहवें भाग से कम और दूसरा छाती की चौथाई और तीसरा शेस्त के बराबर नापकर ७, ८, ९, डालो और नं० ४ से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध इंच ऊपर का लेकर नं० १० डालो। अब नं० ८ से छाती के एक चौथाई भाग से एक इंच अधिक लांबी लकीर खींचो और उसके अंतिम सिरे पर नं० ११ डालो। इसी प्रकार नं० ९ से कमर की चौथाई से एक इंच अधिक लांबी लकीर खींच बिन्दु १२ डालो बिंदु ६ से नीचे की ओर गर्दन से कंधे की नीचाई के बराबर बिन्दु नं० १३ लो अब बिंदु ५ को १३ से मिलाओ यह कंधा होगया, १३ को ११ से चित्र अनुसार मिलाओ यह मोहरा होगया, ११ को १२ व १२ को १३ से चित्र अनुसार मिलाओ यह दामन हुआ बिन्दु न० ३ को १० से तिर्छा मिलाओ यह घेर हुआ—

इन सबके मिला देने पर आगा पीछे का नक़शा हो गया। १०, ३, १२, ११, १३, ५, को मिला कर काट पीछा अलग कर लो ५ व ७ को वृताकार मिला आगे में काट गला बना लो।

आस्तीनों के लिये छाती की चौड़ाई से कुछ अधिक चौड़ाई और लम्बाई बाँह के बराबर ले चौपर्त कर उस पर नं० १४, १५, १६, १७ डालो। नं० १५ से छाती के आठवें भाग अथवा मोहरा का आधा नीचे को नापकर नं० १८ डालो और नं० १७ से मोहरी के आधे के बराबर नापकर बिन्दु नं० १९ लेलो और नं० १९ को १८ से लकीर द्वारा और १८ को १४ से चित्र में दिये अनुसार डेढ़ लकीर द्वारा मिला काट लो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सीना—पहिले कन्धा, पीठ और सामना जुड़ेगा फिर आस्तीन जोड़ गला लगादो।

कमीज़—इसमें आगा, पीछा, आस्तीन, तीरा, कालर और कफ़ होते हैं। इसका नाप बिना कली के कुर्ता की तरह होता है और उसीके बराबर कपड़ा लगता है। घेर सामने के प्लेट समेत छाती के नाप के तीन चौथाई होता है।

काट—घेर के हिसाब से आगे पीछे का कपड़ा ले, उसको बिना कली के कुर्ता की तरह चौपर्त भांजलो और भाँज किये हुये कपड़े में छाती तथा पीठ के प्लेट के लिये डेढ़ इंच चौड़ा कपड़ा बराबर लम्बाई तक रख पुट, छाती, मोहरी और गले आदि का नाप प्लेट के बाहर से लो, बिना कली के कुर्ता की तरह नक़शा बनाओ। घेर आगे गोल चित्र में दिये अनुसार १२ को बिन्दु १० से मिला कर बनालो किन्तु पीठ का घेर सीधा रखो।

आस्तीन—का कपड़ा भी बिना कली के कुर्ता की तरह लिया जाता है परन्तु कफ़ में प्लेट देकर मोहरी कम चौड़ी कर दीजाती है।

इसमें तीरा, कालर, और कफ़ बिना कली के कुर्ता से अधिक लगता है।

तीरा—लम्बाई पुट के दूने से अधिक और चौड़ाई में पुट से ३ इंच अधिक कपड़ा लेकर उसे लम्बाकर आधे में मोड़ चौपर्त कर उस पर १६, १७, १८, १९ डालो १५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से छाती के बारहवें भाग से कुछ कम नाप कर दाँई ओर २० और नीचे की ओर २१ बिन्दु लो उन्हें गले के काट की भांति वृताकार कर काटलो और १८ से १॥ इञ्च ऊपर २१ लेकर २० को २१ से मिला काटलो—

कालर—यह कई प्रकार का होता है सादा, गोल, लौट कालर, सिंधी कालर, पोलो कालर आदि।

सादा कालर—गले की लम्बाई से १ इंच अधिक और २ इंच चौड़ा कपड़ा से दो परत पट्टी लगाना सादा कालर कहलाता है।

गोल कालर—गले की लम्बाई से १ इंच अधिक और चौड़ाई में ३ इंच लेकर दो परत कर आधा मोड़ लो और चित्र मुताबिक काटो।

लौट कालर—इसमें गोल गले के अनुसार पहले नीचे की पट्टी काटो बाद दो लम्बाई नीचे की पट्टी से ३ इंच अधिक और चौड़ाई में ४ इंच कपड़ा ले दो परत मोड़ चित्र मुताबिक काटो और नीचे की पट्टी दे बीच में रख सिलाई करदो।

सिंधी कालर—यह खुले गले की कमीज़ों में लगाया जाता है। काट में इसके नीचे गोल गले की पट्टी नहीं लगती।

पोलो कालर—सिंधी की भांति ही कपड़ा लिया जाता है परन्तु उसकी नोकदार चोंचों के स्थान पर कुछ गोल और चौड़े किनारे रहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कफ़—३ प्रकार के होते हैं (१) पट्टी, (२) टेनिस और (३) डबल कफ़।

पट्टी कफ़—इसकी लम्बाई कलाई से कुछ अधिक अर्थात् कुल ९, १० इंच लम्बा और ६ इंच चौड़ा दो परत भाग आस्तीन में चुन्नट या प्लेट डाल लगा दो। इन्हीं कफ़ को यदि दोहरा कर दिया जावे तो वह डबल कफ़ होजाता है।

टेनिस कफ़—आस्तीन की मुहरी से १॥ इंच अधिक और चौड़ाई में ४ इंच कपड़ा ले आधा करो फिर चित्र के मुताबिक़ काट मुहरी पर लगा सिलाई करो।

## पाजामा

नाप—लम्बाई, पैर की लम्बाई, कूल्हा, कमर, घुटना मोहरी।

कपड़ा—गज़ भर के कूल्हे तक सिंगल अर्ज़ का कपड़ा लम्बाई के दूने से ६ इंच अधिक और डबल अर्ज़ को लम्बाई से ६ इंच अधिक लगेगा लम्बाई में पैर की लम्बाई घटा दी जावे तो आसन की लम्बाई निकल आती है।

पाजामा दो तरह के होते हैं एक औरेबी दूसरा सुदेव।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**औरेबी पाजामा**—घेर के बराबर चौड़ा और पाजामा तथा आसन की लम्बाई ३ इंच अधिक लांवा गोट के भांति थैली बना समतल तख़्ते पर रखो और इसके चारों सिरों पर १, २, ३, ४ डाल लो। नं० १ से नीचे की ओर आसन में बराबर नाप कर बिल्कुल नं० ५ और इसी प्रकार नं० ३ से ऊपर की ओर आसन के बराबर नाप बिन्दु ६ लेलो। अब बिन्दु ५ व ६ से मोहरी के आधे के बराबर सीधी लकीरें खींच उनके अन्त में बिन्दु ७ व ८ डाले अब ७ व ८ को चित्र में दिये अनुसार मिला काटलो—यह औरेबी पाजामा होगया।

सीना—इसे जोड़ ऊपर १॥ इंच मोड़ नेफ़ा और मोहरी पर १॥ इं० मोड़ पाजामा बनालो।

पाजामा सुदेव भी दो प्रकार के होते हैं सादा और सोने का पाजामा इनमें सिलाई एक ओर होती है।

**सादा सुदेव पाजामा**—जितना लम्बा पाजामा रखना हो इसके दूने से ६ इंच अधिक लेकर दुहरा कर चौड़ाई के बीच से मोड़ कर चौपर्त करलो और उस पर नं० १, २, ३, ४ डाल लो—नं० ४ से दाईं ओर को मोहरी के आधे के बराबर नाप कर बिन्दु ५ लो और नं० ३ से नीचे की ओर जितना आसन रखना हो नाप कर बिन्दु नं० ६ डालो और ५, ६ को चित्र में दिये हुये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अनुसार मिला काट लो। इनको जोड़ नेफ़ा व मोहरी को मोड़ सींलो इस पाजामा में कुछ लोग म्यानी डालते हैं यदि म्यानी डालनी हो तो चित्र में दिये अनुसार म्यानी बनालो।

**सोने का सुदेव पाजामा**—लम्बाई में दूने से ४ इं० अधिक ले चौड़ाई में मोड़ चौपर्त कर नेफ़ा के लिये ऊपर और मोहरी के लिये नीचे छोड़ उस पर नं० १, २, ३, ४ डालो—बिन्दु नं० ४ से पैर की लम्बाई के बराबर नाप कर बिन्दु नं० ५ लेलो। बिन्दु नं० ५ की सीध में कूल्हे की तिहाई के बराबर लकीर खींच बिन्दु नं० ६ डालो नं० ४ से दाईं ओर मोहरी के आधे के बराबर नापकर बिन्दु नं० ७ और नं० १ से दाईं ओर कमर की चौथाई से १ इञ्च अधिक लेकर नं० ८ लो। अब नं० ६ को ७ से और ७ को ८ से चित्र में दिये अनुसार मिला कर सींलो।

## पतलून

काट—इकहरे अर्ज़ के कपड़े को दो बराबर भागों में मोड़कर एकसार स्थानों पर बिछा चारों कोनों पर १, २, ३ व ४ नं० डाल निम्न प्रकार नक़शा बनाओ। रेखा २ व ३ में नं० २ से दो इंच नीचे नं० ५ और ३ से पैर की लम्बाई के बराबर नं० ६ और पैर की लम्बाई से आधे से कुछ अधिक पर नं० ७ डाल नं० ५, ६ व ७ से १ व २ के समानान्तर रेखा खींच उनके दूसरे सिरों पर नं०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


८, ९ व १० डालो। नं० २ से बांईं ओर रेखा १ व २ में कमर की चौथाई से कुछ अधिक नाप कर नं० ११ डालो और नं० ६ से रेखा ६, ९ में से बैठक अथवा कूल्हे के एक तिहाई नाप कर नं० १२ ले ६ व १२ रेखा को नं० १३ द्वारा दो समान भागों में बांट लो। और इसके पश्चात् १२ व १३ को बिन्दु १४ द्वारा दो समान भागों में बांटलो। पुनः १४ को ११ से मिलादो और जिस जगह पर यह रेखा ८ वा ५ को काटे उस जगह पर नं० १५ डालो। ११ व १४ को नं० १६ द्वारा दो समान भागों में बांट लो और १६ को १२ से चित्र में दिये अनुसार मिला लो। नं० २ से बांई ओर रेखा २ वा १ में एक इंच या कुछ कम बढ़तो दूरी पर जैसी सूरत हो नं० १७ लो और उसको चित्र में दिये अनुसार नं० ६ से मिलालो। नं० १३ से एक रेखा २ व ३ के समानान्तर खींचो। यह रेखा घुटने व मोहरी को दो समान भागों में विभाजितकर देगी। अब नं० १८ से घुटने की चौथाई चौथाई दोनों ओर नापकर १९ व २० लेलो और इसी प्रकार मोहरी को चौथाई चौथाई दोनों ओर नापकर २२ व २३ लेलो अब १२ व २२, २१ को और ६, १० वा २३ को चित्र में दिये अनुसार मिला काटलो यह पैंट की अगाई हुई।

पीछे के दोनों भाग काटने के लिये पुनः कपड़े को पहले की भांति मोड़ एकसार बिछाकर आगे के कटे हुये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


परत को ऊपर रखो या आगे के परत का नक़शा खरिया से खींच लो १६ से दो इंच ऊपर नं० २४ लो और १२ को २४ से मिला इस रेखा को ऊपर १, २ से ३ इंच ऊपर लेजाओ इस पर २५ डाल लो अब केन्द्र मान कर १४ और १७ का व्यास मान कर वृत खींचो जो १२ व २४ की रेखा को २६ पर काटे। २६ से १ इंच दूर विन्दु २७ लो और ६, १३, १४, १२ को १॥ इंच आगे को बांई ओर बढ़ा बिन्दु २८ लो और २८, १६ और २७ को चित्र में दिये अनुसार मिलादो। १७ तथा० से २॥ इंच दूरी पर २९ व ३० लो और ६ से १ इंच दूर ३१ लो अब २९, ३०, ३१ और २० को चित्र में दिये अनुसार मिलादो। २१ व २२ से १ इंच दूरी पर ३२, ३३ लो और अब ३३, ३२, २८ को चित्र में दिये अनुसार मिला दो। व १७ से १ इंच दूर पर ३४, ३६, ३५ आंख के समान बना लो ३४ से ३६, ५ इंच लांबा हो इन दोनों को मिला कर सिलाई करो जिससे कमर टेढ़ी हो जायगी। २७ को २५ और २५ को २९ से मिला दो। २५, २७, १६, २८, ३३, ३२, २३, २०, ३१, ३०, २९, २५ को मिला लो यह पीछा हो गया। काटते समय दोनों सिलाई के लिये १ इंच कपड़ा अधिक लो।

सिलाई—एक सामना और एक पीछा को मिलाकर सीओ ओर जो १ इंच अधिक कपड़ा रखा है उसे भीतर मोड़ दो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नेकर

इसका पोंठ पतलून के समान काटी जाती है और आगे में कुछ भेद होता है इस लिये यहां केवल सामने के बारे में ही लिखा जाता है जितना लम्बा रखना हो उतना कपड़ा ले पतलून की तरह मोड़ लो और उस पर नं० १, २, ३, ४ डाल लो रेखा २ व ३ पर २ से दो इंच नीचे बिन्दु नं० ५ लो और नं० २ से कमर से कूल्हे की दूरी के बराबर एक बिन्दु नं० ६ लो और नं० ६ कूल्हे और घुटने की दूरी से कुछ कम पर नं० ७ ले नं० ५, ६ व ७ से १ व २ के समानान्तर रेखा खींच उन पर नं० ८, ९, १० डाल लो रेखा २ व १ पर नं० २ से एक बिन्दु दो इञ्च अथवा कुछ कम बढ़ती और दूसरा कमर की चौथाई से कुछ अधिक दूर लेकर नं० ११ व १२ डालो और इस प्रकार रेखा ५ व ८ में ५ से ३ इञ्च या कुछ कम बढ़ती जो भी सूरत हो नं० १३ लो और रेखा ६ व ९ में नं० ५ से एक बिन्दु कूल्हे के एक चौथाई व दूसरा कूल्हे के एक तिहाई नाप कर नं० १४ व १५ लो और १४ व १५ को नं० १६ द्वारा दो समान भागों में बांटलो। नं० १२ को १६ से दो रेखा द्वारा मिलादो। नं० १४ से रेखा २ व ३ के समानान्तर रेखा खींचो जो रेखा ७ व १० को नं० १७ पर और ३ व ४ को नं० १८ पर काटेगी अब नं १७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कलीदार कुर्ता

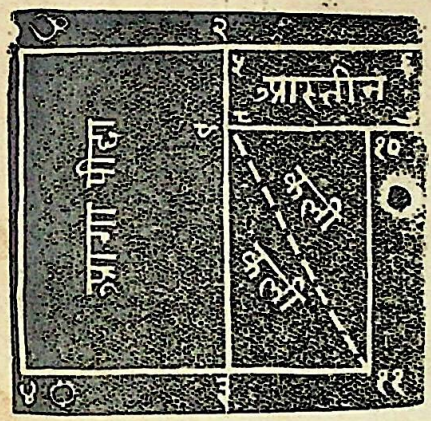


१ से २ = कंधा से कंधा
= ३ से ४
= चौड़ाई आगा पीछा
१ से ४ = २ से ३
= लम्बाई
५ से ८ = ६ से ७
= खलीता
५ से ६ = ७ से ८
= लम्बाई आस्तीन
८, १०, ११ = ९, ११, १२
= कली
९ से १० = ११ से १२
= चौड़ाई कली
= १ से २
९ से १२ = १० से ११
= लम्बाई कली

## तैयार कुर्ता

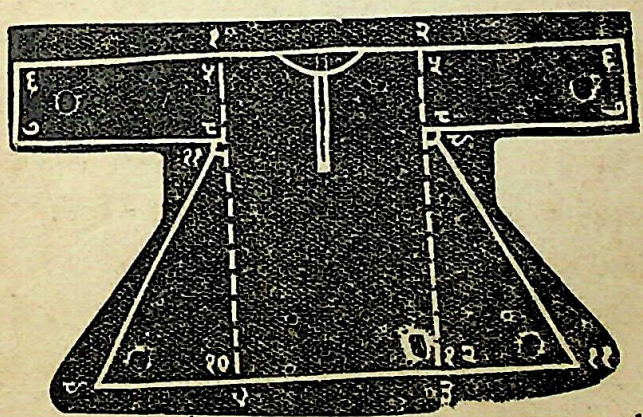

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं० ४३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिना कली का कुर्ता

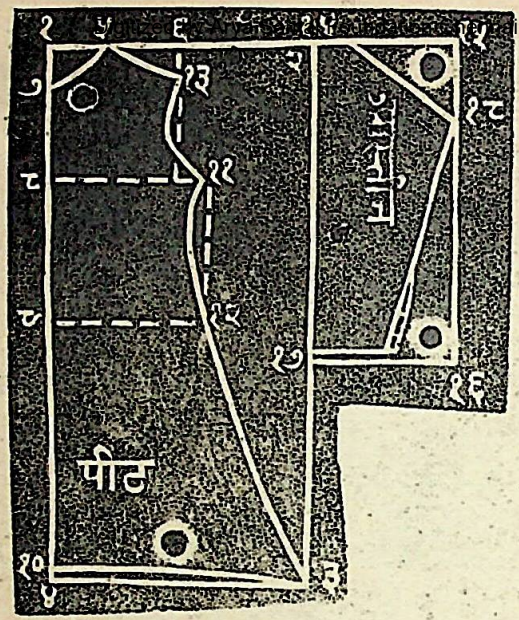


१ से ५ = १ से ७ = छाती का $\frac{1}{2}$
१ से ६ = पुट
१ से ८ = मोहरा = छाती का $\frac{1}{4}$
१ से ९ = शेस्त
४ से १० = $\frac{1}{2}$ इच
८ से ११ = छाती के $\frac{1}{2}$ से कुछ अधिक
९ से १२ = कमर की $\frac{1}{2}$ से कुछ अधिक
६ से १३ = गर्दन से कंधे की नीचाई
१ से १० = लम्बाई
१० से ३ = घेर
१४ से १७ = लंबाई आस्तीन
१५ से १८ = मोहरा का आधा = छाती का $\frac{1}{8}$

गृहस्थाश्रम
पृष्ठ सं० ४३९-४४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

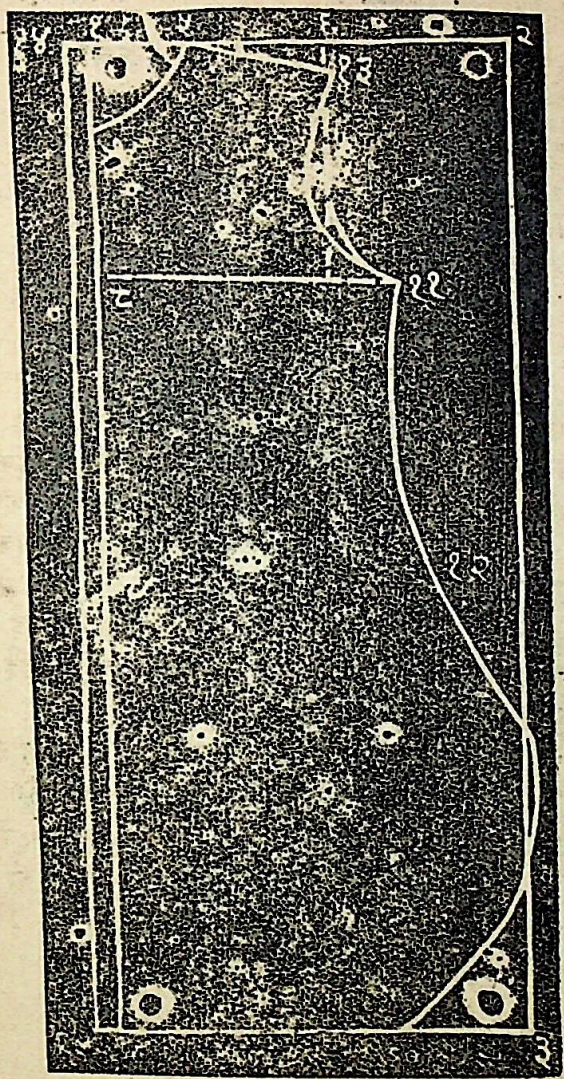


१४ से १५ = लंबाई
१४ से १ = १५ से ४ = आगे पीछे का सेट
१ से २ = ३ से ४ = घेर
= छाती का पौन
१ से ५ = छाती का ½ = १ से ७
१ से ८ = मोहरा
१ से ९ = शेरत
१ से ६ = पुट से कुछ अधिक
६ से १३ = गर्दन से कंधे की नीचाई के बराबर
८ से ११ = छाती की चौथाई कुछ अधिक
९ से १२ = कमर के ¼ कुछ अधिक



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कमीज़

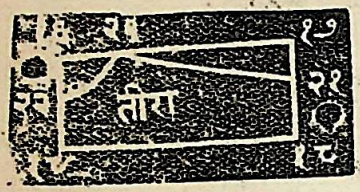


१६ से २० = छाती के $\frac{3}{4}$ से कुछ कम
= १६ से २२
१८ से २१ = $1\frac{1}{2}$ इञ्च

गृहस्थाश्रम पृष्ठ ४४१–४४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ओरेबी पाजामा

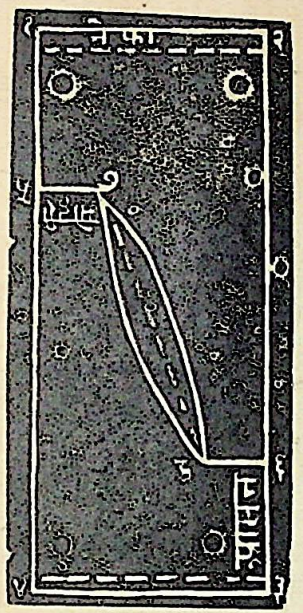


१ से ५=३ से ६ आसन
७ से ८=८ से ७ पैर की लम्बाई
५ से ७=६ से ८ मौहरी
१ से २=३ से ४ चौथाई घेर

## तैयार ओरेबी पाजामा

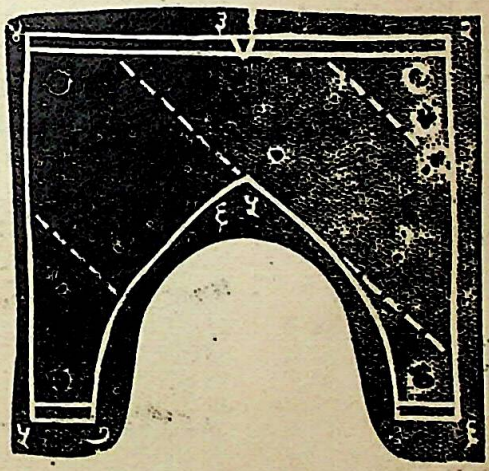

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं. ४३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सुदेव पाजामा

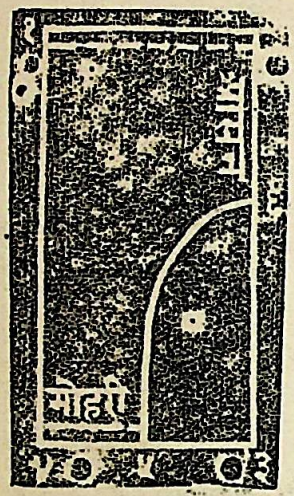


१ से २ घेर का चौड़ाई
२ से ६ आसन
३ से ६ पैर की लम्बाई
४ से ५ मोहरी
.....१ व २ नेफा
.....४ व ५ मोहरी

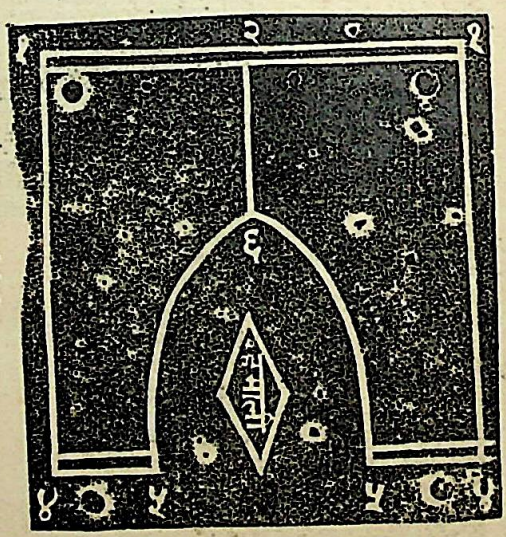


यदि रुमाली लगाना हो तो रुमाली को चौपर्त कर बिन्दु ६ पर रत्न पाजामा टांट रुमाली लगा लो।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सोने का पाजामा

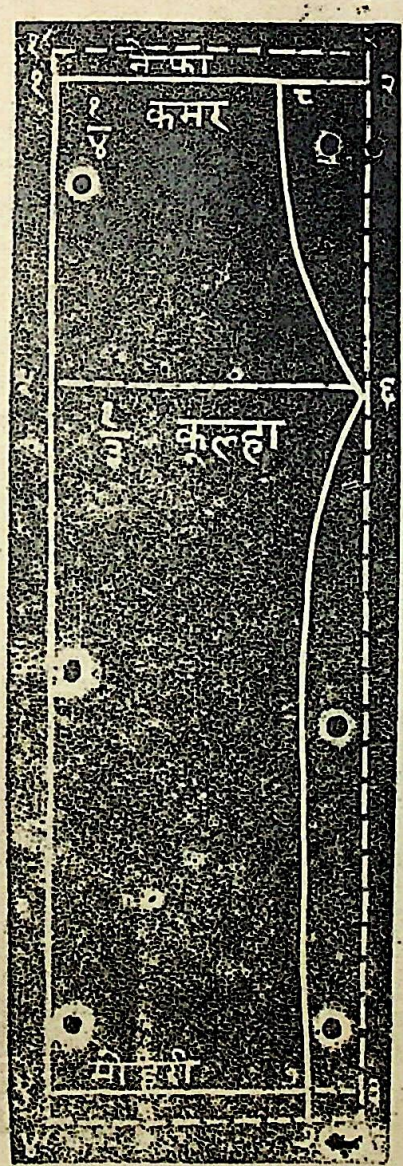


१ से ८ कमर की चौथाई से कुछ अधिक

५ से ६ कूल्हे के तिहाई

३ से ६=४ से ५ पैर की लम्बाई

४ से ७ मौहरी का आधा

१ से १′ } नेफ़ा
२ से २′ }

४ से ४′ } मोहरीका पलटाव
७ से ७′ }

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं. ४४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पतलून का अग्रभाग

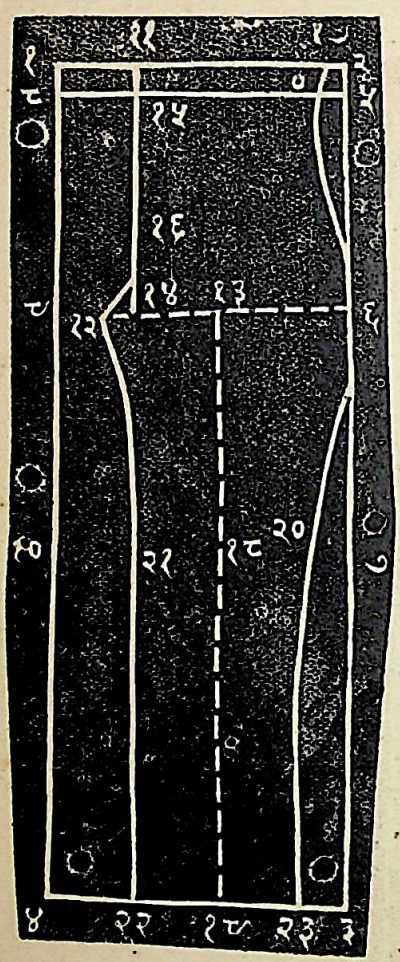


२ से ५=दो इंच=१ से ८
=११ से १५
३ से ६=पैर की लम्बाई
=४ से ९
३ से ७=पैर की लम्बाई के
आधे से कुछ अधिक
२ से ११=कमरकी चौथाई
से कुछ अधिक
६ से १२=कूल्हे के एक
तिहाई
६ से १३=१३ से १२=
कूल्हे का
१३ से १४=१४ से १२ कूल्हे
का
११ से १६=१६ से १४
२ से १७ एक इंच से कुछ
कम बढ़ती
० से १५ कमर की चौथाई
१८ से २०=१८ से २१ घुटने
के चौथाई
१९ से २३=१९ से २२
मोहरी का चौथाई

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं. ४४५—४४६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पतलून की पाठ

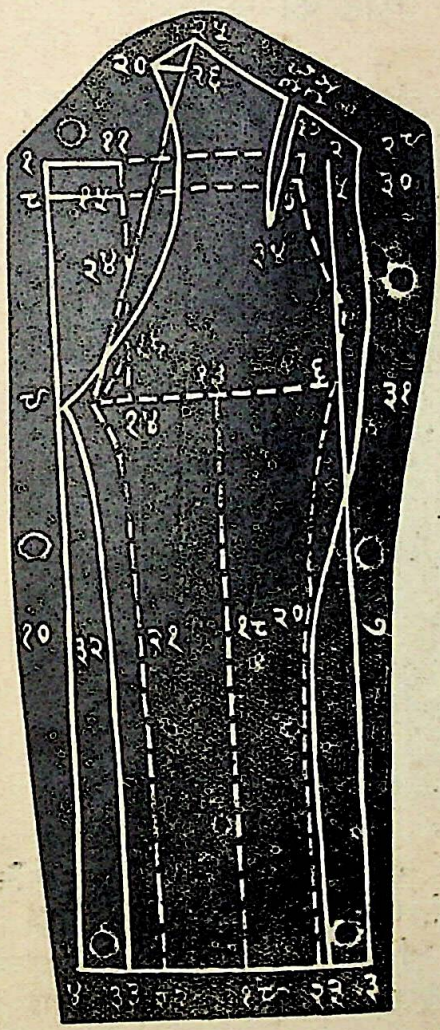

१६ से २४=२ इञ्च
रेखा १ व २ से २५=
२ इञ्च
२६ से २७=१॥ इञ्च,
१२ से २८=१॥ इञ्च
१७ से २९=० से ३०
=२॥ इञ्च
६ से ३१=१ इञ्च
२१ से ३२=२२ से ३३
=१ इञ्च
३४ से ३६=५ इञ्च

( नेकर का छांट पुस्तक के अन्त में है )

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं० ४४७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कोट की पीठ

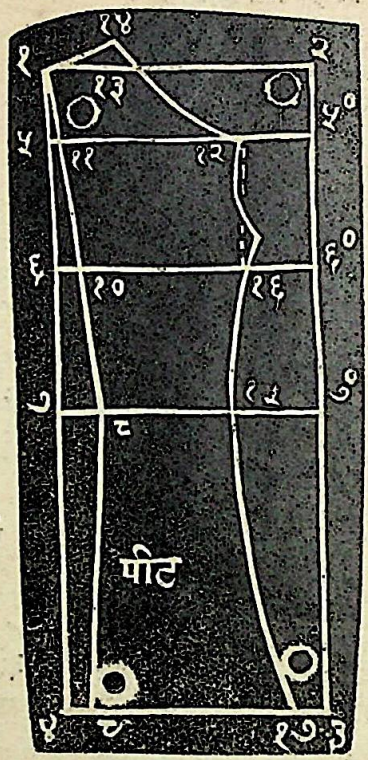


१ से ४ लम्बाई

१ से ५=२ से ५०° मोहरा का तिहाई

१ से ६=२ से ६०° मोहरा

१ से ७=२ से ७° शेस्त

७ से ८=२॥ इंच

४ से ९=१ इंच

११ से १२ पुट से कुछ अधिक

१ से १३ छाती का $\frac{1}{3}$

१३ से १४=१३ से कुछ ऊपर

८ से १५ छाती का $\frac{1}{2}$

५ से १२=६ से १६

९ से १७ छाती के $\frac{1}{2}$ से ३ इंच अधिक

गृहस्थाश्रम पृष्ठसं. ४४९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कोट का सामना

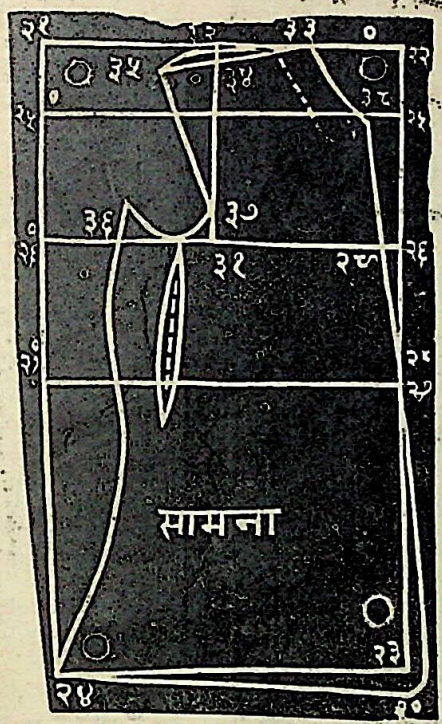


२२ से २५=२१ से २५° मोहरा का तिहाई

२२ से २६=२१ से २६° मोहरा

२२ से २७=२१ से २७° शेस्त

२७ से २८=२६ से २९=२३ से ३०

२४ से ३०=पीठ के ९,१७ का दूना

२६ से ३६=पीठ के १०, १६ का ना

२९ से ३१ छाती की चौथाई से कुछ कम=२२ से ३२

३२ से ३३ छाती के $\frac{1}{12}$ से कुछ अधिक

३३ से ३५ पीठ के १४ व १२ से कुछ कम

२६ से ३६=छाती आधे व पीठ के मोहरा की चौड़ाई का अन्तर

३२ से ३४=३१ से ३७

३३ से ०=० से ८=$\frac{1}{12}$ छाती सामना

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं. ४५०—४५१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ऊपर का पर्त

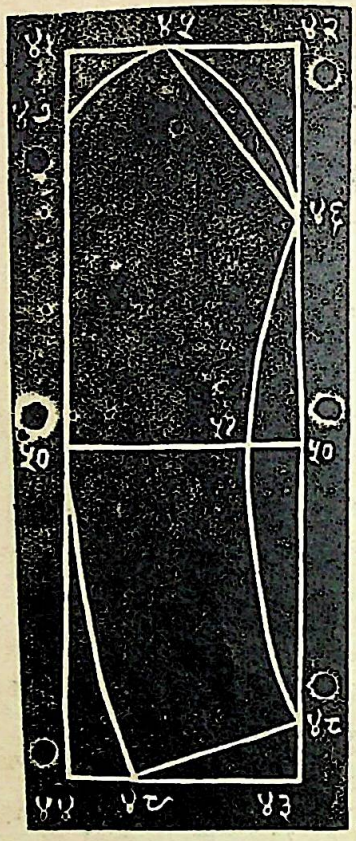


४१ से ४५=४२ से ४५
=४२ से ४६
४१ से ४७=४३ से ४८
४६ से ५०=५० से ४८
५० से ५१=१ इंच से
कुछ अधिक

## नीचे का पर्त

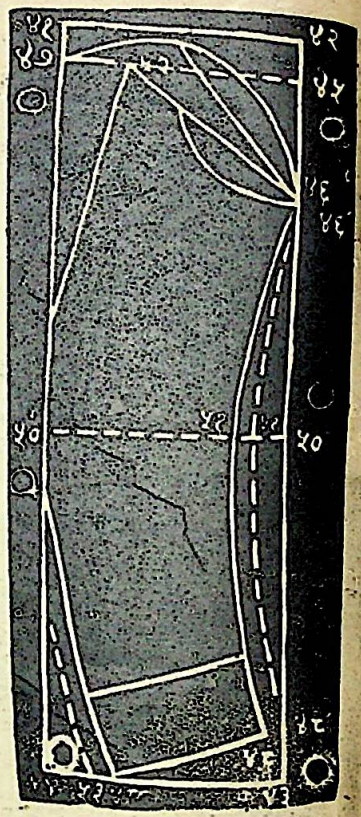


४७ से ५२=१ इंच
४९ से ५३=½ इंच
४६ से ४६'=½ इंच
=५१ से ५०
=४८ से ४९
=४९ से ५३

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं. ४५१=४५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शेरवानी ( पीठ )

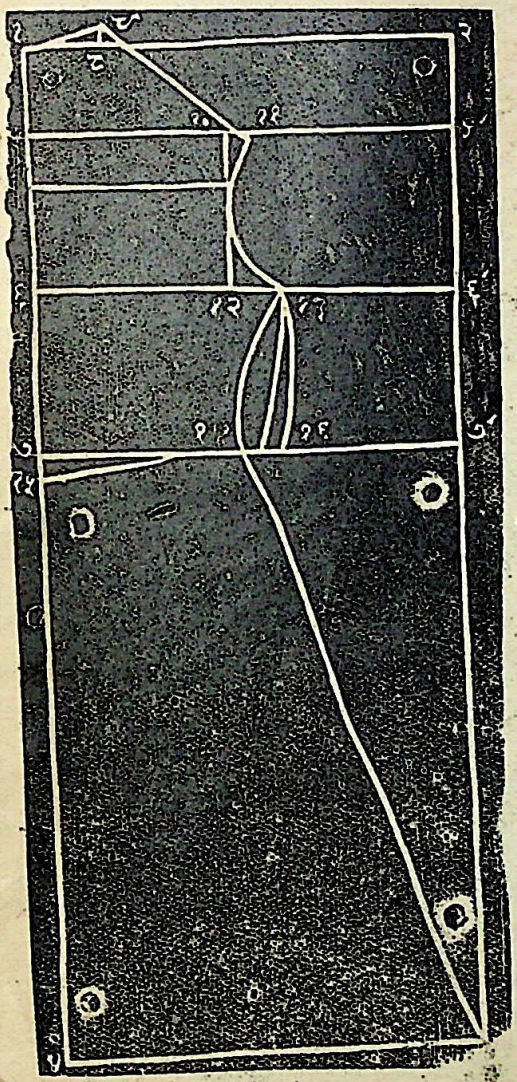

१ से ५=२ से ५'=
मोहरा का तिहाई
१ से ६=२ से ६'
मोहरा
१ से ७=२ से ७'
शेस्त
१ से ८ छाती के ½
से कुछ कम
५ से १०=पुट से कुछ
अधिक
=६ से ११
६ से १३ छाती के ½
से दो इंच अधिक
१० से ११ एक इंच
७ से १४ कमर की
चौथाई से कुछ अधिक
१४ से १६ दो इंच

गृहस्थ आश्रम पृष्ट से ४५३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

# शेरवानी का सामना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

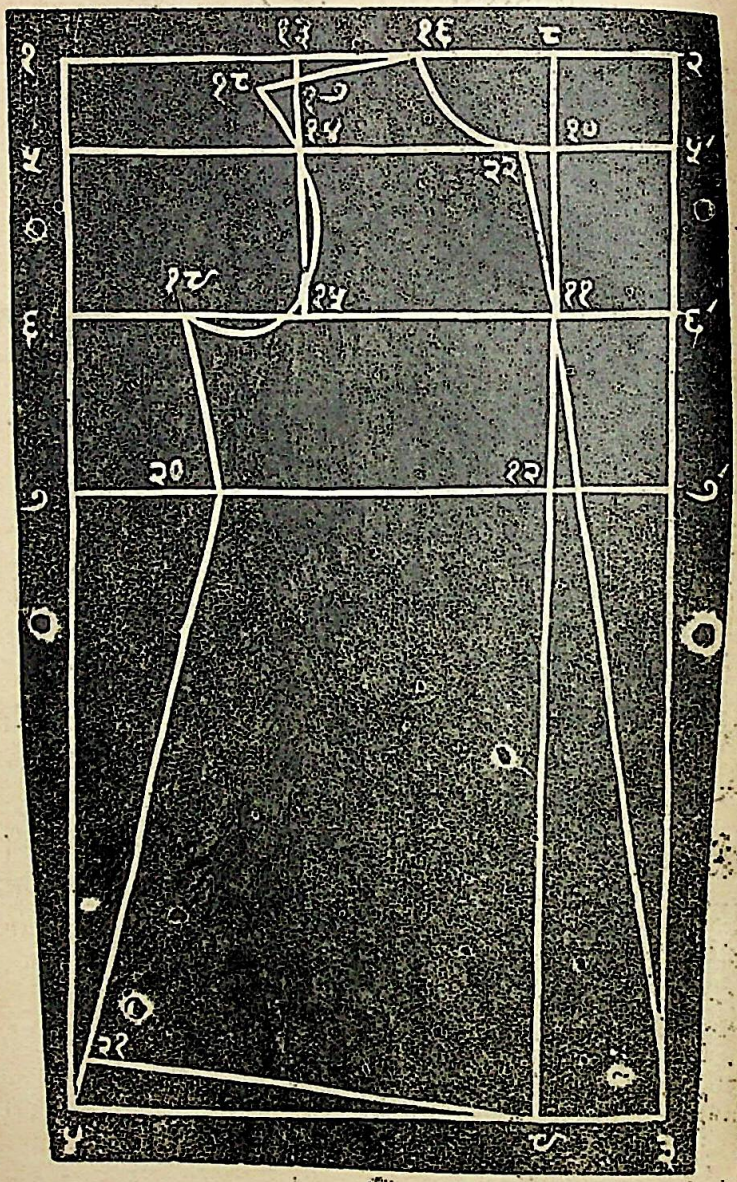

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## शेरवानी सामना

२ से ८=३ से ९
=लम्बाई $\frac{1}{2}$
=५' से १०
=६' से ११
=७'से १२
८ से १३=छाती का $\frac{1}{4}$
=१० से १४
=११ से १५
१३ से १६=छाती का $\frac{1}{3}$
से कुछ अधिक
१६ से १८ पुट से कुछ अधिक
११ से १९ छाती की चौथाई से
कुछ अधिक
१२ से २० कमर की चौथाई
से अधिक।

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं० ४५४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सेमिज़

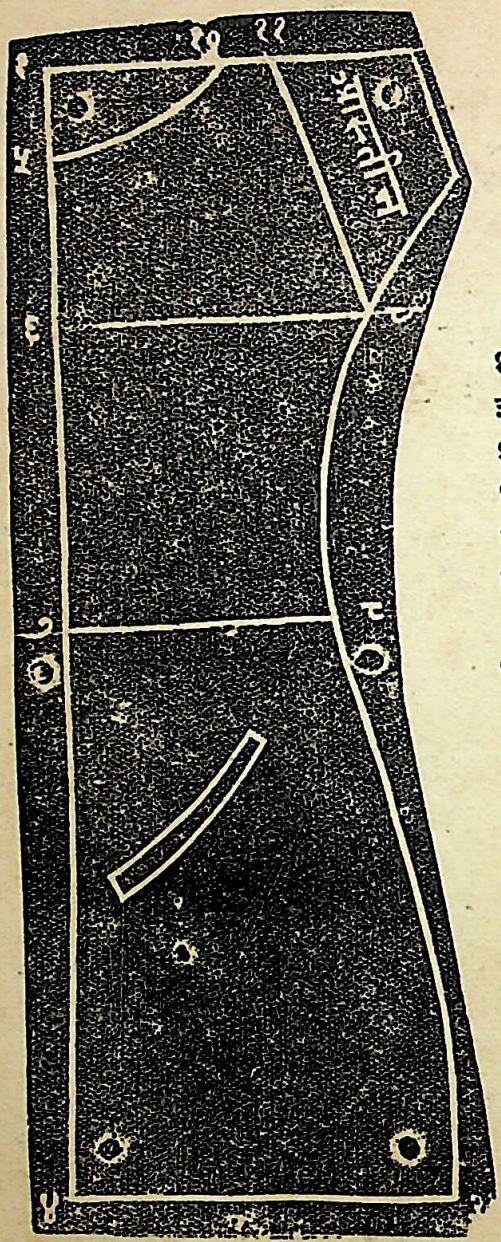


१ से ४ लम्बाई
३ से ४ चौड़ाई का चौथाई
१ से ५
१ से ६ मोहरा
१ से ७ शेस्त
६ से ९ छाती की चौथाई से कुछ ज्यादा
७ से ८ कमर की चौथाई से कुछ अधिक
१ से १०
१ से ११ पुट से कुछ अधिक
१२, १३, १४, १५=गले की पट्टी

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं० ४५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से दोनों और घुटने के चौथाई भाग नाप कर नं० १९ व २० डाल लो और इसी प्रकार नं० १८ पर दोनों ओर मौहरी के चौथाई नाप कर नं० २१ व २२ डाल दो। अब ११, १३, ६, २०, २२, १८, २१, १९, १५, १२ को चित्र में दिये अनुसार मिला, सिलाई के लिये कुछ अधिक कपड़ा रखते हुए काट लो।

## कोट

नाप—इसमें लम्बाई, छाती, शेस्त, पुट, पुट हाथ, कमर गला और आस्तीन का नाप लिया जाता है।

कपड़ा—यदि छाती गज़ भर की हो तो सिंगल अर्ज़ का कपड़ा लम्बाई व आस्तीन के दूने से ८ या ९ इंच अधिक और डबल अर्ज़ का लम्बाई व आस्तीन से ९ इंच अधिक लगता है। छाती यदि गज़ भर से अधिक है तो सिङ्गल अर्ज़ का लम्बाई का चौगना और डबल अर्ज़ का लम्बाई का दूना कपड़ा लगेगा।

पीठ—कपड़े को चौड़ाई में से दुल्लर कर भांज लो और उस पर नं० १, २, ३, ४ डालो। अब रेखा नं० १ व ४ पर मोहरा के तिहाई, मोहरा व शेस्त का निशान दे नं० ५, ६, ७ डाल उनसे १ व २ के समानान्तर रेखा खींच उनके दूसरे सिरों पर ५°, ६°, ७° डालो। नं० ७ से २½ इञ्च पर नं० ८ और नं० ४ से १ इञ्च पर नं० ९ डाल



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नं० ९ को ८ से मिलाओ। ८ को १ से मिला दो और जहां पर ६६°, ५५° को काटे वहां पर १० व ११ डाल दो। ११ से पुट से १ इञ्च अधिक नापकर नं० १२ लो नं० १ से दांई ओर छाती का बारहवां भाग नापकर नं० १३ लो और उससे कुछ ऊपर नं० १४ लो। नं० १ को १४ से मिला दो और १४ को १२ से मिलादो। अब ८ से छाती का छटा भाग ले उस पर नं० १५ डाल दो और नं० १२ से सीधी लकीर खींचो जो ६६° को नं० १६ पर मिले। ९ से छाती के छटे भाग से ३ इञ्च अधिक लेकर नं १७ डालो। १७, १५, १६ और १२ को आपस में मिलाओ यह पीठ हुई।

सामना—जिस ओर से पींठ काटी गई है उससे दूसरी ओर से सामना काटो। कपड़े को दुल्लर लम्बाई में दो इञ्च अधिक लेकर पुनः एकसार तख़्ते पर बिछा उस पर नं० २१, २२, २३, २४ डालो। पींठ को उस पर रख, नं० २२ से नीचे की ओर मोहरा की तिहाई, मोहरा तथा शेस्त का निशान बना उन पर नं० २५, २६ व २७ डाल उनसे रेखा २१ व २२ के सामानान्तर रेखा खींच उनके दूसरे सिरों पर २५°, २६°, २७° डालो। २७ से कुछ ऊपर बिन्दु २८ लो और २६ से बाईं ओर उतनी ही दूर नं० २९ और २३ से उतनी ही दूर नीचे की ओर ३० इस प्रकार लो कि २४ से ३० पींठ के नीचे के भाग "९ व १७" से दूना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होजाए। २४, ३०, २८, २९ को चित्र अनुसार मिला दो। २९ से बाईं ओर छाती के चौथाई भाग से कुछ कम दूर २६, २६ पर ३१ लो और उतनी ही दूर २२ से बाईं ओर रेखा २२ व २१ पर ३२ लेकर ३१ व ३२ को मिला दो। ३२ से छाती के बारहवें भाग से कुछ अधिक नाप ३२ व २२ के बीच ३३ लो। ३२ से कुछ नीचे ३२ व ३१ रेखा पर ३४ लो अब ३३ व ३४ को मिलाते हुए एक रेखा २१ व २४ की ओर खींच उसमें से पीठ के "१४ व १२" से कुछ कम नाप ३५ लो। २६ से बाईं ओर छाती के आधे और पीठ की मोहरी की चौड़ाई के अन्तर से २ इ० अधिक पर ३६ लो। जितनी दूर ३२ से ३४ है उतनी ही दूर ३१ से ऊपर की ओर ३७ लो और ३६, ३७ व ३५ को चित्र में दिए अनुसार मिला दो। अब ३३ से छाती के बारहवें भाग की दूरी पर चिन्ह ० ले उसे केन्द्र और ० व ३३ को व्यासमान वृतांश बनाओ और जहां यह वृत २५, २५ को काटे वहां पर ३८ डाल उसको २९ से मिलाओ।

आस्तीन—में ऊपर का पल्ला काट कर फिर नीचे का पल्ला काटना होगा। बचे हुए कपड़े को चौड़ाई में मोहरा की चौड़ाई और लम्बाई में आस्तीन की लम्बाई से दो इञ्च अधिक ले दुल्लर मोड़लो। दो इञ्च लम्बाई में मोड़ का दुल्लर कपड़े पर ४१, ४२, ४३, ४४ डालो—४१ व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



४२ को ४५ द्वारा दो समान भागों में बांटदो। ४२ व ४५ के बराबर ४२ से नीचे और ४२ व ४३ रेखा के ऊपर ४६, ४१ से कुछ नीचे ४७ व ४३ से कुछ ऊपर की ओर ४८ लो। ४८ से मोहरी के आधे के बराबर रेखा खींचो जो ४३ व ४४ को ४९ पर छुये। ४६ व ४८ को ५० द्वारा दो समान भागों में बांट दो और उससे ४१ व ४२ के समानान्तर रेखा ५०, ५०° खींचो और ५० से एक इञ्च बांई ओर ५१ लो। अब ४९, ४८, ५१, ४६, ४५ ४७, ५०°, ४९ को चित्र अनुसार मिला काट लो। यह ऊपर का परत होगया।

ऊपर के परत के अनुसार नक़्शा खींच नं० डाल लो नं० ४७ की सीध में दाईं ओर एक इञ्च दूर नं० ५२ लो और ४९ से ४४ की ओर आध इञ्च नाप न० ५३ लो ४६, ५१, व ४८ से आध आध इञ्च दूर सीधी ओर नं० ४६°, ५१°, ४८° लो अब ५२, ५०°, ५३, ४८°, ५१, ४६°, ५२ को चित्र के अनुसार मिला काट लो। यह नीचे के परत होगया।

## अंगरखा

इसमें छः कली, एक पीछा, दो आगा, एक पर्दा, दो बांह, दो बग़ल, चार चौबग़ला, एक गरेबान, और एक कमर पट्टी होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


काट— कमर की चौड़ाई से दो या ढाई गिरह अधिक पर्दा के लिये ले अर्ज़ से नापकर फाड़लो। चौड़ाई में पर्दा छोड़ बाक़ी के दो समान भाग कर फाड़ लो, छोटा भाग पींठ होगया। अब पुनः बाक़ी पर्दा को छोड़कर दो समान भागकर एक भाग फाड़लो, यह एक आगा हो गया और दूसरा एक आगा और एक पर्दा रह गया अब आगे और पर्दा मिले हुए कपड़े को चित्र में दिये अनुसार काट लो। इस प्रकार १, ५, ६, ७, ४, ८ तो पर्दा हो जायेगा और २, ३, ७, ६, ५ बांये ओर का आगा रहगा। १, ५, ६, ८ चोली को जितना रखना हो उतना नीचा नापकर काटलो। अब चोली को लम्बाई से घटा कर कली ब्योंत लो।

सीना पहिले दो २ कली जोड़, इनको पीठ में एक एक ओर जोड़ो। फिर दांये हाथ को जोड़ कली और जोड़ दो। बांये हाथ में एक आगा जोड़ एक कली जोड़ो और उसके पीछे पर्दा जोड़ो। पर्दा में से दौज के चांद की भांति गला काट लो और दो चौबग़ला कला के ऊपर जोड़ चौबगला पर बगल जोड़ दो। इसके पश्चात् बांह सीलो। कमर में कमर पट्टा और गले में गरेबान लगाओ, परन्तु याद रखो कि मुड्डे छांट कर जोड़े जाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## चोग़ा

इस में एक पीछा, दो आगे, ६ कलियां और दो बांहें होती हैं। इस में पर्दा नहीं होता। सीने का तरीक़ा अंगरखा के समान है।

## शेरवानी या अचकन

इसका घेर छाती से कम होता है अर्थात् छाती के ६ होता है। घेर के आधे को लम्बाई में दूना करके भांजलो और उस पर १, २, ३, ४ नम्बर डालो। १ और ४ के बीच मोहरे के तिहाई, मोहरा और शेस्त के निशान लगा नं० ५, ६, ७ डालो और उनसे १ व २ के समानान्तर रेखा खींच उनके दूसरे सिरों पर ५′, ६′, ७′, डालो। नं० १ से छाती के बारहवें भाग से कुछ कम पर नं० ८ डालो और उससे कुछ ऊपर नं० ९ डाल १ को ९ से चित्र में दिये अनुसार मिलादो यह गर्दन होगई। नं० ५ से पुट ब चौथाई तथा तीन चौथाई इञ्च पर नं० १० व ११ लो। इसी प्रकार नं० ६ पुट से चौथाई इञ्च तथा छाती के बारहवें भाग से दो इंच या कुछ कम बढ़ती जैसी सूरत हो नं० १२ व १३ लो, १० को १२ और ११ को १३ से चित्र में दिये अनुसार मिला दो। ७ से कमर की चौथाई से आध इञ्च अधिक दूरी पर नं० १४ ले, ११ को १३ और १३ को १४ से चित्र में दिये अनुसार मिला लो। ७ से कुछ नीचे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नं० १५ ले १५ को १४ पर रख सींदो। १४ से दो इंच या कुछ कम बढ़ती नं० १६ लो। यह पीठ होगई।

सामना—पींठ की भांति कपड़ा भांज, मुहरी की तिहाई, मोहर व शेस्त के निशान ५, ६, ७ लगा उन से १ व २ के समानान्तर रेखा खींच ५′, ६′, ७′ डाललो। नं० २ व ३ से बाईं ओर लम्बाई के आठवें भाग नाप नं० ८ व ९ ले दोनों को आपस में मिला दो और जहां यह रेखा ५५′, ६६′, ७७′ को काटे उन पर १०, ११ व १२ डालो। अब ८, १० व ११ से बाईं ओर छाती को चौथाई नाप नं० १३, १४, व १५ डाल तीनों को आपस में मिला दो। १३ से सोधी ओर छाती के बारहवें भाग से कुछ अधिक पर नं० १६ लो और नं० १३ से कुछ नीचे नं० १७ ले १६ को १७ से मिला आगे को रेखा खींचो और उस पर १६ से पुट से कुछ अधिक नाप नं० १८ लो। नं० ११ से छाती के चौथाई से कुछ अधिक नाप नं० १९ लो। १८ को १४, १४ को १५ और १५ को १९ से मिला दो। इसी प्रकार नं० १२ से कमर की चौथाई से कुछ अधिक नाप नं० २० ले, २० से १९ को मिला दो। नं० ४ से कुछ ऊपर नं० २१ लो और उसको नं० ९ व २० से मिला १६ को १० से मिला दो। नं० ३ से एक रेखा नं० ११ को मिलाती हुई ऐसे खींचो जो १६ व १० को मिलाने वाली रेखा को २२ पर काटे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नं० १६, १७, १८, १४, १५, १९, २०, २१, ९, ३, ११, २२ और १६ को काटलो। यह सामना होगया।

आस्तीन—कोट के अनुसार रहेगी।

## सेमीज़

नाप—इसमें लम्बाई, छाती, कमर, पुट और शेस्त का नाप लिया जाता है। कपड़ा लम्बाई के दूने से २ इंच अधिक लगता है। कपड़े की चौड़ाई छाती के नाप के बराबर कर बिना कली के कुर्ते की भांति चौपरत कर उसके चारों कोनों पर नं० १, २, ३, ४ डाला निम्न भांति नक़्शा बनाओ।

नं० १ से नीचे को ओर लम्बाई में मोहरे के तिहाई से कुछ अधिक, मोहरा व शेस्त के निशानों को लगाओ उनपर ५, ६, ७ डालदो। बिंदु ७ की सीध में दांईं ओर कमर की चौथाई से १ इंच अधिक नापकर बिन्दु नं० ८ लो तथा इसी प्रकार विन्दु ६ की सीध में छाती के एक चौथाई से १ इंच अधिक नाप नं० ९ लो। अब ९ को ८ व ३ से चित्र में दिये अनुसार मिलादो।

विन्दु नं० १ से दाईं ओर छाती के बारहवें भाग से २ इंच अधिक एवं पुट से २ इंच अधिक पर बिंद १० व ११ ले ११ को ९ से मिलादो और १० को ५ में चित्र अनुसार मिला काट लो यदि आस्तीन लगानी हो तो लगाओ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गला—इसमें सादा गला, चांद गला, तिकोना गला अथवा चौकोर गला होते हैं और गले की पट्टी दूसरे कपड़े की रहती है।

सीना—बिना कली के कुर्ते की तरह सिलाई करलो, भेद केवल यह कि विन्दु ११ चुन्नट द्वारा नं० १० पर आजायेगा, गले पर पट्टी लगेगी।

## साया या पेटी-कोट

नाप—लम्बाई में नीचे के घेर और कमर से दो इंच अधिक कपड़ा लो, ऊपर को प्लेट डाल कमर की बराबर करलो और कमरबन्द के लिये नेफ़ा मोड़लो और आगे दोनों छोर चौड़ाई में जोड़लो।

## लंहगा या दामन

नाप—जितने गज़ का बनाना हो तो उतने २ का पाट कर कली नुमा काट लो। पाटों को नीचे और कली को ऊपर रख चुन्नट डाल नेफ़ा लगालो। नीचे पतली या चौड़ी जैसी रुचि हो मग़ज़ी लगाओ। बेल आदि जो टांकनी हो लगालो।

## चोली व अंगिया या कञ्चुकी

नाप—यह ठीक ठीक बाँहें और छाती की लम्बाई व चौड़ाई के बराबर होती हैं। बांह कन्धे से चार २ अंगुल अधिक रहनी चाहिये। पीठ की ओर चार तनी होती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# कपड़े रंगने की रीति

प्रथम साफ़ पानी में कपड़े को इस प्रकार डुबाले जिससे सम्पूर्ण कपड़े पर एकसा रङ्ग आवे । फिर ऐसा रंगे कि धब्बे न पड़ने पावें । महीन वस्त्र में थोड़ा रंग और पानी लगता है, गाढ़े वस्त्र में अधिक लगता है । रंगने के पिछले डोब में पिसी फिटकरी या अमचूर का भीगा हुआ पानी या खट्टे का रस पानी में मिलाकर एक डोब और दे देता कि रंग खिल उठे और पक्का भी होजावे, जो रंग कच्चे हों उन्हें रंग कर कपड़े को छाया में और जो पक्के हों तो धूप में भी सुखा सकते हैं क्योंकि धूप में कच्चा रंग फीका पड़ जाता है ।

## कपड़े में से रङ्ग काटना

पानी को किसी धातु के वर्तन में औटावे और जिस कपड़े का रंग काटना हो उसको उस गरम पानी में डाल दे कि कपड़ा पानी के भीतर डूब जावे फिर थोड़ी सी फिटकरी डालकर औटाता रहे, रंग कट कट कर पानी में आजावेगा, कपड़े का रंग कटने से उसका और ही रंग होजाता है, परन्तु कच्चा ही रंग कट सकता है पक्के रंग नहीं कट सकते । बहुत से रंग ऐसे हैं जो कई रंग मिलाकर रंगे जाते हैं, इसलिये कपड़े का एक रंग निचोड़ कर सुखाले, फिर दूसरे में डुबा निचोड़ सुखाले, इसी प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अन्त तक करे, परन्तु यह न करे कि एक रंग में रंगा हुआ गीला ही दूसरे रंग में डोब दे, ऐसा करने से रंग अच्छा नहीं चढ़ता।

## रंगों के बनाने की क्रिया

काला रंग—माजूफल १ छटांक, कसीस आधी छटांक, बबूल का गोंद आधी छटांक, चीनी आधी छटांक सबको अलग २ पीस फिर मिलाकर सूखा ही रख छोड़े। जब रंगना हो तब १ छटांक चूरन को ढाई पाव गर्म जल में मिलाकर रंगने से बढ़िया काला रंग चढ़ता है।

हरा रंग—प्रथम पक्के नील के पानी में डोब दे, फिर हल्दी में जोश दिये पानी में थोड़ी देर पड़ा रहने दे, फिर फिटकरी के पानी में डोब दे सुखाले।

कासनी—तीन सेर पानी में दो तोले नील डालकर कपड़े को रंग कर सुखाले, फिर कुसुम के रंग में रंग खटाई के पानी में धो डाले।

पीला—पिसी हुई हल्दी में थोड़ी सी सज्जी मिला कपड़े को रंगले फिर पानी डाल डाल कर कपड़े को कई बार धो फिटकरी के पानी में डोब दे।

केसरिया—पानी में मंजोठ को औटाकर रंग निकाल ले, अनार के छिलके और हार सिंगार की डण्डी को साथ साथ औटाकर छान ले, कपड़े को फिटकरी के पानी में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पहिले डोबले फिर इन दोनों रंगों के पानी को एक संग मिलाकर कपड़े को रंगले।

नारंगी—हारसिंगार के फूलों को पानी में औटा कर कपड़े को रंगे। फिर कुसुम के पानी में रंग खटाई के पानी में रंगले।

बादामी—पावभर तुन के फूलों को सेर भर पानी में औटा लेवे, पहिले गेरू में कपड़े को रंग ले, पीछे तुन के आध सेर पानी में इसको डोब दे।

कपोसी- थोड़े से नील को पानी में घोल कर कपड़ा रंगले, पर रात को टेसू के फूल भिगो रक्खे प्रातः तनिक सा चूना डालकर निथारले फिर नील में डूबे हुए कपड़े को रंगे जब रंग चढ़ जावे तो खटाई के पानी में डोब दो डोबते ही रंग बदल कर कपासी होजावेगा।

सुरमई—कपड़े को पहिले टूली रंग में रंगे फिर सूख जाने पर चार पांच बार नील के रंग में रंगने से अच्छा सुरमई रंग होजाता है।

बैंजनी—नीले रंग में कपड़े को चार बार रंगे फिर आंवले की खटाई को पीस कर पानी में औटाकर उसके पानी में कपड़े को रंगे।

जंगाली तूतिया को बारीक पीसकर पानी में औटावे और छान लेवे। एक बर्तन में चूना की कलई को पानी में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भिगोकर पानी नितार ले। पहिले कपड़े को चूने के नितारे पानी में रंगे और सुखा दे, फिर खूब सूख जाने पर तूतिया के पानी में रंगने से अच्छा जंगाली रंग होजायगा।

आसमानी—नीलवरी के रंग में रंगने से आसमानी रंग होता है।

हरड़ का रंग—पीली हरड़ का बक्कल एक पाव लेकर एक सेर पानी में भिगो दे, एक दिन के पीछे औटाकर जब चौथाई पानी रह जावे तब उतार कपड़ा रंगे।

कसीस का रंग—कसीस बारीक पीस कर चौगुने पानी में भिगोवे एक दिन बाद औटाकर काम में लावे।

हरसिंगार का रंग—हरसिंगार के फूलों को एक दिन पानी में भिगोदे फिर कलई के बर्तन में औटा ले जब चौथाई पानी रह जावे तब उतार छान कर काम में लावे।

अनार का रंग—अनार के छिलके तिगुने पानी में औटा कर चौथाई रह जाने पर उतार ले और ठंडा होजाने पर काम में लावे।

हल्दी का रंग—हल्दी को खूब बारीक पीसकर पानी में घोलकर काम में लाओ।

अंगूरी—टेसू के औटाये हुये पानी में कपड़ा रंगे, फिर बहुत ही हल्का नील का रंग दे पुनः खटाई के पानी में डोब देकर सुखाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शरबती—तीन भाग हारसिंगार के फूल का रंग, एक भाग कुसुम का रंग जो रैनी के पीछे निकाला जाता है मिलाकर रंग ले।

अद्भुत दुरंगा—सीप, मूंगे की जड़, सफ़ेद गोंद इनको महीन पीस गुड़ मिला पानी के साथ खूब औटावे, फिर खरल करे, फिर महीन मलमल लेकर एक ओर इस रंग का लेप करे। जब खूब सूख जाये पहिले पक्के रंग ( जैसे नीले ) में डोब दे जब सूख जाय तब कच्चे रंग ( जैसे कसूम ) में डोबदे तो एक ओर धानी दूसरी ओर नाफ़रमानी होजावेगा या पहिले नील में रंग फिर हल्दी में डोब दिया जाय तो एक ओर पीला और दूसरो ओर हरा दिखलाई देगा।

गुलाबी—कसूम की थोड़ो सी गाद को पानो में मिला कपड़े को रंगले।

लाल—इसमें कसूम की गाद को गुलाबी से चौगुनी व छः गुनी देकर रंगना चाहिये, पीछे खटाई के पानो में डोब देकर सुखाले।

गुलेनार—पहिले कपड़े को कसूम के फूलों के दूसरे रंग में डोब लेवे फिर गाद के पानी में हल्दी पीस कर मिलादे और कपड़े को रंग खटाई के पानी में डोबदे।

पिस्तइ—कपड़े को हल्दी में रंग फिर साबुन के पानी में डोबे। इसके पीछे नीबू की खटाई के पानी में डाब दे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उन्नाबी—प्रथम हर्रे के पानी में, द्वितीय कुसुम के पानी में, तृतीय छटांक भर पतंग के औटाये हुए पानी में, चतुर्थ चार तोले फिटकरी के पानी में डोब कर सुखाले।

कांकरेजी—डेढ़ सेर पानी में पाव भर पतंग और महावर दो ड्राम, हिरमिची माजूफल एक एक ड्राम को औटाकर छानले फिर रंगे।

किशमिशी—पहले कपड़े को हर्रों के पानी में, द्वितीय अनार, तृतीय हल्दी, चतुर्थ कुसुम के उस पानी में जो रैनो के पीछे निकलता है, फिर अनार के छिकले के पानी में डोब देकर फिटकरी के पानी में धो डाले। परन्तु डोब सुखा सुखाकर दिया जावे।

मलागिरी—बालछड़, नागरमोथा, कपूर कचरी, पानड़ी, सफ़ेद चन्दन, सुगन्ध बाला, सुगन्ध कोकला, हार सिंगार के फूल दो दो माशे ले सेर भर पानी में औटा, छान कपड़ा रंग हाथों हाथ झटके से सुखावे।

---

# कपड़ों के धब्बे छुड़ाना

लोहे का धब्बा—नमक के पानी में धोने अथवा नमक और नीबू के रस के मलने या फटे दूध से रगड़ कर धोने से ज़ंग का दाग़ जाता रहता है।

फलों के रस के दाग़—पानी में कबूतर की बीट औटा कर धोवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मेंहदी और नील के दाग़ - ताज़े दूध को गर्म कर के धो डाले।

स्याही के दाग़—पुराने सिरके को पानी में घोल कर धो डाले। अथवा नीबू के रस और इमली के सत को मिला कर धो डाले।

चिकनाई के दाग़—नोन चूना पीस कर पहिले मले, फिर इसी को पानी में घोल कर धो डाले। घी की चिकनाई पर तेल को, तेल की चिकनाई पर घी लगाकर रखदे, पीछे पानी में उस कपड़े को डाल कर औटा लेवे। दाग़ छूट जावेगा।

पशमीन की चिकनाई—जौ की भूसी को पानी में औटा कर धोवे फिर गन्धक का धुआँ देवे, साफ़ हो जावेगा।

रेशमी कपड़े की चिकनाई—सूखा चूना और नोन पीस कर उस पर डाले, पीछे अलसी पीस कर डाले और इतनी देर तक रहने दे जब तक कि वह सब चिकनाई को सोख न ले।

सब भांति के दाग़ छुड़ाना—ऊँट की मेंगनी को पीस कर पानी में घोलले और उसमें कपड़े को भिगो एक रात रहने दे। दूसरे दिन धो डाले या हींग और साबुन के पानी से धोडाले सब दाग़ छूट जावेंगे।

चाय तथा कहवे—का दाग़ सुहागे के पानी से जाता रहता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वारनिश के दाग़—अमोनिया और तारपीन से साफ़ हो जाता है।

सोने चांदी की चीज़ साफ़ करने का सहज उपाय—नमक फिटकरी बराबर ले पीस कर मलीन ज़ेवर पर चढ़ा आग में तपा दे जब लाल हो जाय तो साफ़ पानी में डालकर कपड़े में रख इमली से ख़ूब मांज कर धोवे और आग के सहारे सुखाले।

तांबे पीतल पर क़लई करना—बालू से बर्तन साफ़ कर थोड़ा सा नौसादर छोड़ रांग घिस दे पिघलने पर एक कपड़े से सब जगह रगड़ कर बराबर कर दे।

---

## कपड़े और उनके रखने की व्यवस्था

कपड़े सदा स्वदेशी होने चाहिये। स्वदेशी कपड़ों में खादी सबसे उत्तम और सुलभ वस्त्र है। घर की देवियां यदि रुई कातकर पूर्व की भांति कोरी से कपड़ा बुनवालें तो उससे सर्व प्रकार के कपड़े तय्यार हो सकते हैं। इससे देश के बेकार व्यक्तियों को काम मिल जाता है, कम खर्चा होता है, स्वधर्म की रक्षा और अपना लाभ भी होता है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कपड़ों को सदा सँभाल कर रखो, तह खराब न करो। पहनने वाले कपड़ों को जब उतारो तो खुण्टी पर भली भांति टांग दो इधर उधर न फेंको। पहनने वाले कपड़ों से हाथ व शरीर आदि न पोंछो। जो कपड़े काम में न आते हों उन्हें बाहर न पड़ा रहने दो।

ऊनी कपड़े—इनको व्यवहार में लाने के पश्चात् खूब झाड़ लेना चाहिये, साफ़ कपड़े से पोंछ बुर्श कर खुली हवा तथा धूप दिखाकर उल्टा खुण्टी पर टांगना चाहिये और यदि पहनना न हो तो तह कर कपड़े में बांध रख देना चाहिये।

रेशमी कपड़े—इनको भी साफ़ कर उल्टा टांगना चाहिये। धराऊ कपड़ों को तह कर कपड़े में बांधकर रखना चाहिये।

कपड़ों को कीड़ों से बचाना—जिन कपड़ों में धब्बे लग जाते हैं तो कीड़े धब्बे वाली जगह पर अंडे दे देते हैं और सारे कपड़े को खाना शुरू कर देते हैं। कपड़े सदा ठंडे वस्त्रों में बांधकर रखें और उसमें तमाकू, कपूर, लौंग, नेपथलीन, चन्दन का बुरादा, सांप की कैंचुली, नीम आदि उग्र गंध के पदार्थों को छोटी २ थैलियों में बंदकर कपड़ों में रखना उचित है। इनकी गंध से कपड़ों में काड़े नहीं लगते। यदि कीड़े ने अंडे दे दिये हों तो कपड़े को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भीगे अंगोछे में लपेट भाप देदो या उन पर गर्म स्त्री करादो, कीड़ों के अंडे मर जायेंगे।

समय समय पर हवा तथा धूप दे देने से कपड़ों में कीड़े नहीं लगते।

रेशम व ऊनी कपड़े धोने की विधि—साबुन अथवा रीठे के फ़ेन गर्म पानी में उठा कपड़े को उसमें भिगोदो। कपड़े को कुछ देर बाद निकाल दूसरे पानी में नमक मिला कपड़े को डालदो और थपथपाकर निचोड़ कर सुखालो।

सर्ज धोने की विधि—साबुन को ठंडे पानी में घोलकर उसमें भिगो दो। कुछ देर बाद कपड़े को निकाल गर्म पानी में डाल धोना चाहिये।

---

## हिसाब रखना तथा आय व्यय का व्योरा

देवियो! धन की महिमा शास्त्रोक्त एवं धार्मिक दृष्टि से पहले लिखी जा चुकी है। ग्रहस्थो को बिना द्रव्य के सुख नहीं मिलता, लोभी बहुत से धन को पाकर उसका उपभोग नहीं कर सकता, फ़िजूल खर्च धनवान, धन को व्यय करके दुःख उठाता है। धन भले ही थोड़ा हो किन्तु उसका सुप्रबंध सहस्रों कार्य्यों को पूर्ण कर देता है। धन की आय व व्यय का जब तक सुप्रबंध न होगा ग्रहस्थो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कभी भी सुखी नहीं रह सक्ता। गृहस्थी को बालकों में बालकपन से ही हिसाब तथा जमा खर्च रखने और द्रव्य को समझने, संकट के समय के लिये रुपया बचा रखने की प्रथा डालनी चाहिये। व्यय सदा आय से कम रखे जैसा मनु महाराज ने कहा है।

सदा प्रहृष्टयः भाव्यं गृहकारेषु दक्षयः।
सुसंस्कृतो उपस्करिया व्यये चामुक्त हस्तयः॥

गृहणी सदा प्रसन्न चित्त और गृह कार्य्यों में दक्ष रहे, घर का सब सामान ठीक रक्खे और खर्च करने में हाथ साधे रहे।

घर खर्च की व्यवस्था पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में अधिक रहती है इसलिये स्त्रियों को जमा खर्च रखने की प्रणाली भले प्रकार सीखना उचित है।

हिसाब रखने के लाभ—इस से व्यर्थ व्यय करने की आदत जाती रहती है। खर्च करने की सुव्यवस्था पैदा होजाती है। संकट के समय को कुछ बचाने का भी ध्यान रहता है। व्ययों की मदें नियत हो जाती हैं, उचापत तथा उधार की आदत छूटती है जिस में सदा अधिक व्यय होता है, सौदा सदा नक़द लेने की प्रथा पड़ती है तथा क़र्ज़ लेने से घृणा होती है। फ़सल पर अच्छी वस्तुयें खरीदने की प्रथा का अनुकरण होने लगता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हिसाब रखने की विधि—हिसाब के रखने के लिये रोकड़ बही व खाते बही की ज़रूरत होती है। हिसाब रोज़नामचा या रोकड़ बही में तारीखवार लिखा जाता है। इसमें ८ खाने होते हैं पहले चार खाने आय के और दूसरे ४ खाने खर्च के होते हैं। जमा के पहले खाने में रोकड़ लिखी जाती है उसके आगे जिस से वह मिली हो उसका नाम लिखते हैं इसके नीचे दूसरे खाने में रक़म चढ़ा तीसरे चौथे खाने में उसका ब्यौरा लिखते हैं। यही तरतीब खर्च की ओर भी रखनी चाहिये इसी प्रकार प्रति दिन शामको घर की आमदनी और खर्च का जोड़ लगा अपनी बाक़ी बची हुई रोकड़ का मिलान कर लेना चाहिये। प्रत्येक रक़म के नीचे खाते के पृष्ठ की संख्या दे देना चाहिये।

खाता या लेखा बही में हर एक मनुष्य, माल, मद्द का हिसाब रोकड़ बही से छांट कर लिखा जाता है। सबसे पहले ऊपर वह नाम लिखा जाता है जिसका खाता होता है। इसमें छः खाने होते हैं, पहले तीन जमा के, दूसरे तीन नाम के। जमा और पहले खाने में रक़म और दूसरे व तीसरे खाने में ब्योरे के बदले तारीख महीना और रोकड़ का पन्ना लिखा जाता है, इसी प्रकार नाम की ओर होता है। इससे प्रत्येक मनुष्य, माल मद्द का हिसाब प्रथक २ ज्ञात हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# रोकड़ बही

❀ परमात्मनेनमः ❀

जमा | नाम

मिती पौष बदी एक सम्बत् १९९० वि० दिन सोमवार ५ जनवरी ३४

१०१) श्री रोकड़ बाक़ी

५०१) ज़मीदारी खाते के जमा

२०१) लगान ज़मीदारी रामनगर भूरा काश्तकार से बाबत रबी १३३९ के

१५०) आबपाशी मोहन पुरा के गङ्गाराम से सन् ४० के

१५०) ठेका तुलाई रामभरोसेलाल नौबतपुर वालों से बाबत् सन् ३९

५०१)

लेखा पन्ना १

३००) सोहनलाल नौबतपुर वाले

२००) रोकड़ी

१००) गेहूँ मन ४० दर २॥

३००) लेखा पन्ना १

९०२)

४५०।≡)॥ सामान खाते के नाम

२०) चावल बोरा २ तोल ५ मन दर ४) मन

५) उर्द बोरा एक २॥ मन दर २)

५) मूंग बोरा ६ तोल २॥ मन दर २)

।≡)॥ तुलाई

१८०) खांड़ बोरा १० तोल २० मन दर ९)

२४०) घी कनस्तर १५ तोल ६ मन दर ४०)

४५०।≡)॥

लेखा पन्ना २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


१०) जमोदारी खाते नाम

१०) वेतन रामप्रताप जिले दार को महीना दिसम्बर १९३३ ई०

१०) लेखा पन्ना १

१३५) कपड़ा खाते नाम

३॥।) लिहाफ़ नग दो

४।) तोशक नग दो

१२) दुतई नग ४

२०) कम्बल नग २

२५) कपड़ा कोट बच्चों

२१) कपड़ा कमोज

१९) धोती जोड़ा नग ८

३०) सोढ़ी ऊनी नग २

१३५)

ले० प० २

५९२।≡)॥

३०६।।)॥ श्री रोकड़ी

९०२)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## खाता बही

पन्ना (१)

| जमा | नाम |
|---|---|
| | |

खाता जमीदारी

५०१) मिती पौषवदी १ रो० प० १ — १०) मिती पौषवदी १ रो० प० १

खाता लाला सोहनलाल नौवतपुर वालों का

३००) मिती पोषवदी १ रो० प० १

पन्ना (२)

खाता सामान

४५०।≡)॥ मिती पौषवदी १ रो० प० १

खाता कपड़ा

१३५) पौषवदी १ रो० पन्ना १

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# वैद्यक विद्या

प्राचीनकाल में इस विद्या को स्त्री पुरुष दोनों पढ़ते थे। पुरुष पुरुषों की और स्त्रियां स्त्रियों की चिकित्सा करती थीं परन्तु भारत से ब्रह्मचर्य की प्रथा को तोड़ने से पुरुष भी इस विषय में निपुण बहुत कम होते हैं। स्त्रियों के लिये तो विद्या पढ़ने का अधिकार ही नहीं रक्खा जिसके कारण गृहस्थाश्रम में स्त्रियों, बच्चों इत्यादि के बीमार होने के समय बड़े क्लेश उठाने पड़ते हैं।

देखिये यजुर्वेद अ० १२ मं० ८२ में लिखा है कि स्त्रियों को चाहिए कि औषधि विद्या का ग्रहण अवश्य करें क्योंकि इसके बिना पूर्ण कामना, सुख प्राप्ति और रोगों की निवृत्ति कभी नहीं हो सकती। जैसाकि—

य: औषधी: सोमराज्ञीर्बह्वः शतविचक्षणः।
नासामसि त्वमुंतमारं कासायश्रुहृदे॥

## वैद्य

यजुर्वेद अ० २० मन्त्र ५९ और अ० १६ मं० ४ में लिखा है जिसने वेदों को अङ्ग उपाङ्ग सहित पढ़, हस्त क्रिया में कुशल हो, वैद्यकशास्त्र को अच्छे प्रकार विचार, पर्वत आदि स्थानों पर नाना प्रकार की औषधियों और जलों की परीक्षा की हो, शास्त्रों से छेदन भेदन को जानता हो और जो निष्कपटता से सब का कल्याण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चाहने वाला, प्रियभाषी, धर्मनीति का जानने वाला, दानी, और शील आदि गुण से युक्त हो वही उत्तम वैद्य है। जैसाकि—

अश्विना नमुचे सतस्रुसोम ँ शुक्रं परिस्रुता ,
सरस्वती तमाभरद वार्हिवेन्द्राय पातवे ॥

ऋग्वेद २। सू० ४ मं० ३६ में उपदेश है कि जो वैद्य न्याय पूर्वक उत्तम औषधियों और अच्छे पथ्य द्वारा मनुष्यों के उन्मादादि बड़े २ रोगों को दूर कर बल एवं पुरुषार्थ सहित सौ वर्ष तक का जीवन दान देते हैं वेही उत्तम वैद्य हैं। उन्हीं की औषधि सेवन करनी चाहिये। मूर्ख वैद्यों से कभी चिकित्सा न करावे क्योंकि अशिक्षित वैद्य के हाथ की अमृत के समान औषधि भी विष के समान होजाता है।

## वैद्य के साथ बर्ताव

श्रेष्ठ वैद्यों के साथ कभी किसी को विरोध न करना चाहिये और उनके साथ कोई ईर्षा न करे किन्तु प्रीति के साथ वैद्य की सेवा करनी चाहिये जिससे रोगों के दुखों से बचकर सुखों की बृद्धि हो जैसाकि ऋग्वेद अ० २। अ० ७। व० १६। मंत्र २। अ० ४। सू० ३३। मं० ४ में लिखा है।

मत्वा रुद्र चकुवामा नमोभिर्मादुष्टुती वृषभ मा सहूती।
उभ्नेः वीरों अर्पय भषजेभिर्भिरक्तन त्वामिषाजों शृणोमि॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यदि किसी वैद्य से विरोध होजाय तो विरोधी वैद्य की कभी औषधि न कराए।

## रोग

रोग दो प्रकार के होते हैं एक शारीरिक दूसरे आत्मिक। इसी हेतु वैद्य भी दो प्रकार के होते हैं एक शारीरिक रोगों के नाशक, दूसरे मनके रोग जो अविद्यादि से होते हैं उनके निवारण करने हारे अर्थात् अध्यापक और उपदेशक होते हैं। जहाँ वे दो प्रकार के वैद्य रहते हैं, वहाँ दोनों प्रकार के रोगों से छूटकर प्राणी सुखी रहते हैं। जैसा म० १ अ० ३० मन्त्र ५७ में लिखा है और ऋग्वेद मं० १ । अ० ४। सू० ३३ मं० १५ में स्पष्ट कहा है कि दुष्ट मति को उत्तम शिक्षा और वैद्यक की रीति से शारीरिक रोगों को निवारण कर अपने कुल को सदा सुखी करना चाहिये जैसाकि

परिणो हेतीरुद्रस्यं वृज्याः परित्वेषस्य दुर्मतिर्महीं गात।
अब स्थिरा मघलंदभ्यस्तनुष्व मीढबंस्तोकाय तनयाय मृत्न॥

## शारीरिक रोग

अथर्व वेद कां० १ सू० ३२ में उपदेश है कि भारी रोग दो प्रकार के होते हैं—एक हड्डी से उत्पन्न होने वाले अर्थात् भीतरी रोग जो ब्रह्मचर्य के खंडन और कुपथ्य भोजन आदि के कारण मज्जा और वीर्य के विकार से हो जाते हैं। दूसरे शरीर से उत्पन्न हुए बाहरी रोग जो मलिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वायु और मलिन घर आदि के कारण होते हैं उनको वैद्यक ज्ञान से रोगों का निदान कर उत्तम परीक्षित औषधियों से अच्छा करे। इसके लिये यजुर्वेद अ० ११ मं० ६० में राजा को आज्ञा दी है कि वह दो प्रकार के वैद्य रक्खे एक तो सुगन्ध आदि पदार्थों के होम से वायु वर्षा और औषधियों को शुद्ध करे दूसरे श्रेष्ठ वैद्य निदान आदि के द्वारा सर्व प्राणियों को रोग रहित रक्खे बिना इस कर्म के संसार में सार्वजनिक सुख नहीं हो सक्ता।

आपो देवी रूप सृज मधुमतीरयक्ष्मायाय प्रजाभ्यः।
तासामास्थाना दुज्जइ ता माषधयः सुपिप्यलाः॥

## जितने रोग उतनी औषधियां

यजुर्वेद अ० १२ मं० २७ में लिखा है कि जितने रोग हैं उतनी ही औषधियां परमेश्वर ने उत्पन्न की हैं उनको जान उनके प्रयोग से यथावत सुख प्राप्त करे किसी प्रकार निराश न हो वरन पुरुषार्थ करके योग्य वैद्यों और महात्माओं, योगियों को ढूंढ़ कर उनसे चिकित्सा करावे और आराम होने पर धर्म का आचरण करना चाहिये जैसा अथर्व कां० ५ सू० ५ मं० ४ और कां० ६ सू० ११ मं० ८ और अजुर्वेद अ० १२ मं० ८९ में लिखा है।

## रोग होने का मुख्य कारण

वेदों से प्रकट होता है कि सब स्त्री पुरुष अपने अपने कर्मों के अनुसार सुख, दुख भोगते हैं अर्थात जो जितनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ईश्वर की आज्ञा पालन करते हैं उनको उतना ही सुख और जितना विपरीत कार्य्य करते हैं उनको उतना ही कष्ट मिलता है। इन कष्टों में नाना प्रकार के रोग भी सम्मिलित हैं क्योंकि रोगी को नाना प्रकार के रोगों के कारण भूमण्डल का राज्य, स्वर्ग के आनन्द, कुबेरकोष, इन्द्र की पुष्पवाटिका इत्यादि कुछ अच्छा नहीं लगता। रोगियों की यही कामना, यही प्रार्थना, यही मन की बलवती इच्छा रहती है कि किसी प्रकार से यह मेरा दुःख, कष्ट, क्लेश शीघ्र नाश हो और मैं चंगा होजाऊं जैसा किसी महात्मा ने कहा है।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
प्राणिनां दुःखतप्तानां कामये दुःखनाशनम्॥

देखिये अथर्व कां० १ सू० २५ मं० २ व ३ में लिखा है कि वह परब्रह्म ज्वर आदि रोग से दुष्कर्मियों की नाड़ी को दुःख से ऐसे दबा डालता है जैसे कोई किसी को कल में दबाता है। मानसिक और शारीरिक पीड़ा, सूर्य की ताप वा जलसे उत्पन्न ज्वर, पीलिया आदि रोग ईश्वर ही के नियम से विरुद्ध आचरण का फल है। इसलिये उस न्यायी परमेश्वर का भय कर, पुरुषार्थ से पापों से बच, ईश्वरीय नियमों को पालन कर, उत्तम आचरण बना कर सदा शान्ति चित्त और आनन्द में मग्न रहे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## रोगों से कौन बचाता है

वास्तव में संसार की सब औषधियों में क्लेश नाशक रोगनाशक शक्ति का देने वाला वही औषधियों का औषधि परब्रह्म है जैसा कि अथर्व कां० २ सू० ३ मन्त्र २ में लिखा है। इस हेतु अ० कां० १९ सू० ४४ मं० ६ में स्पष्ट कहा है कि जो मनुष्य परमात्मा के नियमों पर चलते हैं उनको भौतिक औषधियों की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् वह बीमार ही नहीं होते।

देवाञ्जन त्रककुदं परिमा पाहि विश्वतः।
नत्वा तरन्त्योषधयो वाह्या पर्वतीया उतः॥

क्योंकि ईश्वरीय नियम तोड़ने वाले मनुष्यों को परमेश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से रोग आदि कष्ट देता है और आज्ञाकारियों को अत्यन्त सुख पहुंचाता है जैसा अ० कां० ४ सू० ९ मं० ८ में लिखा है और कां० १९ सू० ४ मं० १ व २ में भी कहा है। ऋग्वेद। १-२-१२ सू० १५९ मं० ६ में लिखा है जो इस संसार में अत्यन्त अविद्या अज्ञानयुक्त लोभातुर हैं वे शीघ्र रोगी होते हैं— यजुर्वेद अ० १५ मं० ७९ में लिखा है कि जिस प्रकार ओषधि तृण आदि फल फूल पत्ते स्कंद शाखा आदि से शोभायमान होते हैं उसी भांति रोग रहित शरीर शोभित होता है इसलिये अथर्व कां० सू० २०८ मं० ५ में राजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और वैद्यों को परमात्मा आज्ञा देते हैं कि वह दुखी प्रजा को यथावत् सुख पहुँचायें और कां० ६ सू०१० १ मं० २ में उपदेश है कि राजा निर्बल रोगियों को सुख पहुंचा कर राज्य को सदा बढ़ावे। इसलिये राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, धनाढ्यजन सदा से दीन दुखी रोगियों की सहायता करते रहे हैं और आगे भी करनी चाहिये औषधालय खोल बिना दामों के दवा बटवानी चाहिये और वैद्यों को रखकर बिना फ़ीस के उनकी चिकित्सा कराना चाहिए।

## ज्वरादि रोगों का स्थान

अथर्व वेद कां० ५ सू० २२ में लिखा है कि नीचे लिखे स्थानों में ज्वर आदि बलवान् रोग होते हैं इसलिये मनुष्यों को सावधान रहना चाहिये।

(१) बहुत नीचे जल वाले स्थानों (२) बहुत घास वाले, बहुत वृष्टि वाले (३) अधिक तृण वाले (४) अधिक ताप वाले देशों में (५) इसके सिवाय कृमी और नाना प्रकार के जन्तु मच्छर आदि वाले देशों से बचा रहे। और मं० ६ में लिखा है कि कुचाली, व्यभिचारी, हिंसक कुकर्मी, अपथ्यभोगी स्त्री पुरुष रोगी होकर दारुण दुःख भोगते हैं और सदाचारी, स्वस्थ रह कर सुख उठाते हैं इससे मनुष्य सुकर्मी और पथ्य भोगी होवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तब मन मात्रा वलासे न स्वस्ता कासिकब सह।
पाप्मा भ्रात व्येण सह गच्छामुमरण जनम ॥

हिंसा आदि अशुद्ध व्यवहारों से ज्वर आदि रोग होते हैं इससे मनुष्य शुद्ध व्यवहार रख कर सदा निरोग रहे।

जिस प्रकार रोगजनक जन्तुओं की शुद्धि जल, आग आदि द्वारा करने से स्वास्थ्य बढ़ता है इसी प्रकार आत्मिक दोषों को हटाने से आत्मिक शान्ति होती है।

विशीर्षाण त्रिककुदं क्रिमि सारङ्गमजु नम्।
शृणाम्यस्य पृष्ठीरपि बृश्चमि यच्छि ॥

अथर्व कां० ३ सू० ११ मंत्र ५ में लिखा है कि मनुष्य प्राणायाम और व्यायामादि से अपने प्राण और अपान, को अनुकूल रख कर शारीरिक अवस्था को सुधारे और दुराचारों से बचकर अपना जीवन शुभ कर्मों में लगावे और मं० ६ में लिखा है कि प्राण और अपान वायु के संचारक को बनाये रहे और शुद्ध जल अग्नि आदि पदार्थों का उचित प्रयोग करे और सू० १३ मं० २ में लिखा है कि मनुष्य शुद्ध स्थान, शुद्ध वायु के सेवन से प्राणवायु के संचार द्वारा शारीरिक बल बढ़ाकर अपान से पसीना आदि मल निकाल दोषों को नाश करके स्वस्थ रहे। और मं० ४ में कहा है कि इन्द्रियों के शोधन और श्वांस प्रश्वांस के यथावत् प्राणायाम से पंचभूतों को समान कर हृष्ट पुष्ट रहे। मन्त्र ५ में लिखा है ब्रह्मचर्य्य आदि शुभकर्मों द्वारा दुष्कर्मों से बचकर बलवान्, धनवान्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और निरोग होवे। कां० १९ सू० ३९ मं० १ में लिखा है कि जिस घर में गुग्गुल आदि सुगन्धित द्रव्यों का गन्ध दिया जाता है वहां रोग नहीं होते। कां० ४ सू० ६ मं० २ में लिखा है कि मनुष्य ऐसा उपाय करे कि आकाश पृथ्वी के सब गोचर पदार्थों में विष का संसर्ग न हो-पुष्ट कारक और बलवर्धक वस्तुओं के स्पर्श, दर्शन, श्रवण, मनन, संभोग आदि से आनन्द प्राप्त करे। अथर्वकाण्ड ६ सूक्त २० में लिखा हैं कि जहां पर उत्तम वैद्य होते हैं और जहां के मनुष्य उचित आहार बिहार करते हैं वहां ज्वरादि रोग नहीं होते। इसके उपरान्त अथर्व वेद में में लिखा है (१) वैद्य रोगों के प्रधान और गूढ़ कारणों को जानें (२) देश, काल, स्वभाव इत्यादि बातों का विचार करें (३) मन लगाकर निदानकर रोग का जानलें (४) ज्वर के साथ अन्य रोग न होने पावे (५) यदि रोग के कारण व्याकुलता से शरीर भङ्ग हो गया हो तो औषधि द्वारा उसको ठीक करें (६) रोगी को शिक्षा करें कि वह रोग के समय मानसिक चिन्ता छोड़ दे (७) जल द्वारा भी रोगों को शांति करने के उपाय को जाने (८) वैद्य, वैद्यक द्वारा औषधियों और अपने आविष्कृत अर्थात् अपने अनुभवी और बुद्धि के बल से जो नूतन जानकारी की हो उसका प्रचार करे (९) रोगियों को



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रातः वायु सेवन कराये धीरे २ दौड़ावे बागों में झूला झुलावे ( १० ) उत्तम २ औषधियों जैसे सोमलता इत्यादि के उत्तम स्वादिष्ट रस का सेवन कराये जिससे शरीर शीघ्र पुष्ट हो जावे और हृदय को शांति करे।

## पथ्यापथ्य विचार

प्रिय सभ्य पुरुषों और देवियों ! संसार में प्रत्येक वस्तु को नियमितरूपेण कार्य्य में लाने से वे सबही सुखद होती हैं और विपरीत दुःख के देने वाली। इसी भाँति हमारा शरीर रूपी इञ्जन है, यदि इसकी भले प्रकार पथ्यापथ्य रूपी महौषधि से सर्वदा रक्षा की जाती है तब तो सुखों का अनुभव कर सक्ते हैं, क्योंकि मनुष्य के स्वास्थ्य सुधार के लिये पथ्य से सरल, अल्प व्यय, अनमोल एवं अपने स्वाधीन कोई और उपाय अभी तक दृष्टिगोचर नहीं हुआ केवल पथ्य सेवन करने से ही बड़ी २ बीमारियां भी पास नहीं फटकतीं, रोगार्तजन भी पथ्य से शीघ्र आरोग्य लाभ करते हैं तभी तो सौ औधधियों का एक मूल औषधि पथ्य बतलाया गया है—परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता है कि आज कल हमारे शिक्षित भाई भी इस ओर विशेष रूप से ध्यान नहीं देते। फिर मूर्खा बहिनों की तो कथा ही क्या ? जिसके कारण नित्य वैद्य जी के द्वार पर खड़ा रहना पड़ता है और नित्य प्रति डाक्टरसाहब की फ़ीस देने औषधियाँ मोल लेने में व्यर्थ धन जाता है। रोगों का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मूल कारण कुपथ्य खान पान रहन सहन अर्थात् आहार विहार ही है, इसलिये कुपथ्य आहार विहार करने वालों को अच्छी गुणदायक औषधि के सेवन करने से भी लाभ की आशा सर्वदा छोड़ देनी चाहिये। अहो! अभागे भारत की कुपथ्य से बढ़ी हुई मृत्यु संख्या को देख कर भी हमको पथ्य सेवन की अभिलाषा नहीं! यही नहीं, किन्तु भारत की गृहिणी रोगी को बलात्कार लुका छिपा कर कुछ न कुछ खिला पिला अपथ्य करा बैठती हैं, तिस पर तुर्रा यह है कि चिकित्सक से भी छिपाती हैं। परन्तु कुपथ्य कभी छिपता नहीं, और देर में प्रकट होने से उस काल तक रोग की खूब वृद्धि होती जाती है। चिकित्सक महाशय कुपथ्य को न जान ठीक उसका प्रतिकार करने में असमर्थ होते हैं बस आखिरी परिणाम यह होता है कि रोगी यमपुर का मार्ग देखता है। इसलिये प्रिय सज्जन पुरुषो एवं गृहणियों! यदि युवावस्था में बुढ़ापे की झलक देखना नहीं चाहते तो आपको पथ्य सेवन करना उचित है। प्यारी महिलाओ! तुम्हारी रोगी की सब से बड़ी सुश्रूषा यही है कि उसको कुपथ्य आहार विहार से बचाये रहो। कदाचित् कोई कुपथ्य हो जावे तो तुरन्त वैद्य, डाक्टर से कह दो क्योंकि जितनी जल्दी कुपथ्य की सूचना मिलेगी उतना ही शीघ्र रोगी का कल्याण होगा, एवं, निरोगीजन भी बलवान् और रुष्ट पुष्ट बने रहेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उदाहरण—कांसी के पात्र में दश रात्रि तक घी रखने से कड़वा होजाता है रात्रि में जागना रुक्ष है दिन में शयन करना स्निग्ध है हां ग्रीषम ऋतु में थोड़ा सोना हित है अन्य ऋतुओं में दिन का सोना कफ और पित्त को करता है परन्तु घोड़े पर चढ़ने वाले, हिचकी रोग वाले, वृद्ध, बालक, बल से रहित भूंक और तृषा से पीड़ित, अजीर्ण, उन्मत्त और दिन में शयन के अभ्यास वालों को दिन में सोना भला है। विषसे पीड़त और कण्ठ रोगी को दिन में शयन न करने देवे।

औषधि सेवन के पांच समय हैं। प्रथम सूर्योदय, २—दिनको भोजन के समय, ३—सायंकाल भोजन के समय, ४—बारम्बार, ५—रात्रि में। परन्तु विशेष कर प्रातःकाल औषधि सेवन करना सब से उत्तम है।

( १ ) पित्त अथवा कफ़ के दोष में, पित्त पर विरेचन के लिये, कफ़ में बमन के लिये बातादि दोषों के कम करने के लिये रोगी को बिना भोजन किये प्रातःकाल औषधि देना चाहिये ( २ ) गुदा सम्बन्धी रोगों में भोजन करने के कुछ समय प्रथम। ( ३ ) अरुचि रोग में उत्तमोत्तम चाटने और फांकने वाले पदार्थों के साथ औषधि देना चाहिये। जो नाभि का वायु बिगड़ा हो तो अग्नि को तेज करने वाली औषधि भोजन पदार्थ में मिला कर देना चाहिये ( ४ ) यदि सम्पूर्ण शरीर का वायु और कफ़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विगड़ा हो तो भोजन करने के पीछे औषधि देनी चाहिए ( ५ ) वायु और कफ़ के रोग में भोजन के आदि और अन्त दोनों में देना चाहिये। ( ६ ) उदान बिगड़ने पर तो सायङ्काल के भोजन के समय घी आदि पदार्थों में मिलाकर एक २ ग्रास के साथ देना चाहिये। ( ७ ) जब प्राणवायु का कोप हो तब विशेष कर सायङ्काल के भोजन करने के पीछे। ( ८ ) वमन, हिचकी, श्वांस और विष दोष में अन्न रहित देना चाहिये। ( ९ ) ताप के को कम करने के लिए रात्री के समय पाचन अन्न रहित देना चाहिये।

## स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फांट, आदि की विधि

स्वरस—जो बनस्पति अग्नि तथा कीट आदि से दूषित न हुई हो उसको जङ्गल से लाकर तत्काल उत्तम पत्थर पर पीस वस्त्र से निचोड़ कर रस निकाल लो उसको स्वरस कहते हैं। दूसरे चार पल सूखी औषधियों को कूट कर मिट्टी के पात्र में आठ पल जल के साथ २४ घंटे भिगो कर छान लो। तीसरी सूखी औषधि से अठगुने जलको मिट्टी के पात्र में भिगो कर औटावे जब चौथाई शेष रह जावे तो छान ले, यह तीसरे प्रकार का स्वरस है। हां इतना भेद है कि प्रथम स्वरस की मात्रा दो तोले और दूसरे तीसरे की चार चार तोले देना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कल्क—गीली औषधि चटनी समान बारीक पीसे तथा सूखी को जल डालकर पीसने को कल्क कहते हैं। इसकी मात्रा एक तोले भर कही है। यदि कल्क में शहद, घी, तेल मिलाना हो तो मात्रा से दूना और शक्कर, गुड़ मिलाना हो तो समान और दूध जलादि गीले पदार्थ मिलाना हो तो मात्रा से चौगुना।

क्वाथ—चार तोले औषधि को कुचल कर उससे सोलह गुणा पानी ले मिट्टी के बर्तन में डाल हौले हौले आंच देवे, जब वह औटते २ आठवां भाग रह जावे, इसे क्वाथ कहते हैं इसकी मात्रा ३ तोले से ४ तोले तक होती है और निकृष्ट दो तोले।

हिम—चार तोला औषधि को कूट कर चौबीस तोला पानी के साथ मिट्टी के पात्र में रात भर भिगोकर प्रातः उनको छान ले इसको हिम कहते हैं, इसकी मात्रा एक तोला है।

फांट—चार तोला औषधि को कूट कर पाव भर जल के साथ मिट्टी के पात्र में डालकर आंच देवे, जब वह औटने लगे तब कुछ काल के पीछे उतार कर छान ले, इसीको फांट कहते हैं इसकी मात्रा ८ तोले तक है।

चूर्ण—सब सूखी औषधियों को पीस कर कपड़े में छान ले, उसी को चूर्ण कहते हैं, इसकी मात्रा एक तोला है यदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसमें गुड़ मिलाना हो तो समान, मिश्री दूनी, हींग अनुमान से, शहद दूना, दूध और गो मूत्र, जलादि चौगुनी और नीबू आदि का पुट देना हो तो उसके रस में अच्छे प्रकार भिगोओ।

अवलेह—औषधियों के काढ़े को औटते २ जब वह चटनी की भांति चाटने के योग्य हो जावे तब उतार ले उसको अवलेह या चटनी कहते हैं इसकी मात्रा एक पल, यदि गुड़ मिलाना हो तो दुगुना, शक्कर चौगुनी इसी प्रकार दूध गौ मूत्र जल आदि भी।

गुटिका—शक्कर आदि की चाशनी कर अथवा बिना चाशनी के अथवा जल दूध और शहद में मिलाकर गोली बांध ले, इसी को गुटिका कहते हैं।

घृत, तैल—जिन पदार्थों का घी वा तेल बनाना हो तो प्रथम उनका कल्क बनाना चाहिये और उससे चौगुना घी या तेल डाल कढ़ाई वा मिट्टी के पात्र में आंच दे, जब घी और तेल ही रह जावे उतार कर छानले।

क्षीरपाक—औषधि से आठगुणा दूध और चौगुना जल इन तीनों को एक में मिलाकर आंच दे, जब पानी जल कर दूध रह जावे तब उतार ले, इसको क्षीरपाक कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ऊष्णोदक—एक सेर पानी को आग पर चढ़ावे, जब गरम होजावे अथवा आधा चौथाई रह जावे तब उतारले।

## औषधि दीपन-पाचनादि विचार

दीपन पाचन—जो औषधि आंव को न पचावे और अग्नि को प्रदीप्त करे उसको दीपन कहते है, जैसे सौंफ। जो आंव पचावे और अग्नि को प्रदीप्त न करे उसको पाचन कहते हैं, जैसे चित्रक।

संशमन—जो औषधि बात आदि दोषों को दूषित न करे और न उनको शोधन करे अर्थात् पूर्व दशा ही पर स्थिर रक्खे और शरीर के बिगड़े हुये दोषों को ठीक करे, उसको संशमन कहते हैं जैसे गिलोय आदि।

स्रंसन—जो औषधि कोठे को बात आदि दोषों तथा मल मूत्र को गुदा द्वारा निकाल देवे उसे स्रंसन कहते हैं।

रेचक—जो औषधि पचे वा अनपचे अन्न आदि को तथा बात आदि दोषों को पतला कर निकाल देवे उसको रेचक कहते हैं, जैसे निसोत।

वमन—जो औषधि बिना पचे हुये बात तथा पित्त को बलपूर्वक मुख द्वारा निकाल देवे, उसको बमन कहते हैं, जैसे मैनफल।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संशोधन—जो औषधि अपने स्थान में बातादि दोष तथा बल सञ्चय को ऊपर को खींचकर मुख, कान आदि अथवा गुदा वा मूत्र द्वारा निकाल दे उसे संशोधन कहते हैं, जैसे देवदारु।

छेदन—जो औषधि रस धातु तथा बातादि को अपनी प्रवलता से छिन्न भिन्न करदे उसको छेदन कहते हैं, जैसे मिर्च पीपल।

लेखन—जो औषधि रस धातु तथा बातादि का अथवा वमन का शोषण कर पतला कर देती है उसको लेखन कहते हैं, जैसे बच।

ग्राही—जो औषधियां जठराग्नि को चैतन्य करें और आम आदि को पचावें उसको ग्राही कहते हैं, जैसे सोंठ।

स्तम्भन—जो औषधि रूखेपन, शीतलता, कटुता हल्कापन और पाचन इन गुणों से बात उत्पन्न करने वाली हैं उनको स्तम्भन कहते हैं, जैसे नागरमोथा।

रसायन—जो औषधि शरीर में बुढ़ापे और रोगों को दूर करने वाली हों वह रसायन कहलाती हैं जैसे शतावर, दूध।

धातुवर्द्धनी—जो औषधि धातु को बढ़ाती है उसको धातु बर्द्धनी कहते हैं, जैसे मूसली।

धातुचैतन्य—जो धातु को चैतन्य और उत्पन्न करती हैं जैसे दूध, आंवला, उड़द।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बाजीकरण—मनुष्य को जो द्रव्य घोड़े के समान सामर्थ देने वाले हैं, श्रेष्ठ वैद्यों ने उसे बाजीकरण कहा है, लोलम्ब-राज ने कहा है कि सुन्दरता और पुष्ट बलवीर्य इनके बढ़ाने वाले रसायन जर व्याधिनाशक औषधियां पृथ्वी पर बहुत हैं, परन्तु घी और मिश्री मिले हुए दूध से बढ़कर दूसरा कोई प्रयोग इस विषय में नहीं।

( १ ) हरड़, बहेड़ा और आंवला को त्रिफला कहते हैं यह रसायनों में उत्तम रसायन है। ( २ ) सोंठ मिर्च पीपल को त्रिकुटा कहते हैं। ( ३ ) चव्य, चीता, सोंठ, पीपल और पीपलामूल इनको पंचकोल कहते हैं। ( ४ ) बड़ी कटेली, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी और गोखरू को लघु पंचमूल कहते हैं। ( ५ ) शतावरि, बोरा, महाशतावरि, जीवती, जीवक और ऋषभक इन छः औषधियों के योग को बृहत-पंचमूल। ( ६ ) डाभ, कांश, ईख शर और चावल की जड़ इनको तृणसंज्ञक पंचमूल कहते हैं।

## देश और प्रकृति विचार

( १ ) जहां नदी, नाले, दलदल, छोटे २ वृक्ष, और बन अधिक हों वहां की प्रकृति बादी, कफकारक और शीतल होती है। ( २ ) जहां सूखे रेतीले मैदान व जंगल हों उसको जाङ्गल देश जानना, उसकी प्रकृति गरम पाचक और पितकारक होती है। ( ३ ) जहां उपरोक्त दोनों प्रकार के लक्षणयुक्त देश हों वहां प्रकृति मिली हुई जानना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## प्रकृति विचार

( १ ) जो मनुष्य दुबला और रूखा और जिसके बाल कड़े हों और बहुत बोलता हो उसे बात प्रकृति जानना चाहिये। ( २ ) जो पतला हो रूखा न हो, क्रोधी हो, पाचन शक्ति अधिक हो जिसके बाल बुढ़ापे से प्रथम श्वेत हो गये हों, उसको पित्ति प्रकृति जानना। ( ३ ) जो मनुष्य मोटा हो गम्भीर हो जिसके बाल नरम हों कम बोलता हो। कम सोता हो, स्थिरबुद्धि हो उसको कफ़ प्रकृति जानना चाहिये। ( ४ ) बात प्रकृति वाले पुरुष को रूखा ठंडा, बादी भोजन हानिकारक है और गरम तर पदार्थ लाभदायक हैं। ( ५ ) पित्त प्रकृति को पतला, शीतल, तर भोजन गुणकारी है और कड़ा गर्म चरपरा हानिकारक है। ( ६ ) कफ़ प्रकृति को श्रम, रूक्ष, गरम, आहार, शोषण वस्तु गुण दायक हैं और पतला चिकना व बहुत ठंडा दुःखदाई है।

## अवस्था विचार

(१) बाल्यावस्था में पित्त अधिक होती है फिर ज्यों ज्यों अवस्था बढ़ती है त्यों त्यों कफ़ और वायु की वृद्धि होती जाती है (२) तरुण अवस्था में कफ़ और वृद्धावस्था में वायु की अधिकता होती है इसी से बालकों की जठराग्नि प्रबल होती है, अनेक प्रकार का भोजन किया हुआ पच जाता है युवावस्था में बल पराक्रम अधिक होता है वृद्धावस्था में वायु की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिकता अच्छा भोजन मिलने पर भी धातु उपधातु सब शोषण हो जाते हैं, और वायु वेग से कार्य्य करती है तथा जठराग्नि विषम हो जाती है।

## औषधि पचने न पचने के कारण

वायु का यथास्थान रहना, मन की प्रसन्नता, क्षुधा और तृष्णा का लगना शरीर हलका, इन्द्रियां चैतन्य, शुद्ध डकार का आना, यह औषधि पचने के लक्षण हैं और ग्लानि, अङ्गदाह, शिथिलता, चित्त भ्रम, मस्तक में पीड़ा, बेचैनी आदि उपद्रव औषधि न पचने के होते हैं।

## बालरोग चिकित्सा वर्णन

बालचिकित्सा—जो रोग बड़े मनुष्यों को होते हैं, वही बालकों को भी होते हैं, इनकी औषधि की मात्रा इस प्रकार है एक वर्ष के बालक को एक रत्ती और दो वर्ष के बालक को २ रत्ती और दो वर्ष के पश्चात् एक माशा औषधि देनी चाहिये।

बालरोग परीक्षा—रोने से अथवा मुखका रङ्ग देखने वा स्तन खींचने से बालक के रोग की परीक्षा करनी चाहिए इसके उपरांत जहां हाथ लगाते ही बालक रोवे वहां दर्द जानना चाहिये मस्तक में पीड़ा हो तो आंखें मूँदता है गुदा में दर्द होता है तो बालक को प्यास ज़्यादा लगती है और जो मूर्छा होती है तो मल मूत्र रुक जाता है, श्वांस अधिक चलती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्य भेद—बालक तीन प्रकार के होते हैं, दूध पीने वाले दूसरे दूध पीने और अन्न खाने वाले, तीसरे अन्न खाने वाले।

( १ ) दूध पीने वाले बालक की माता को पथ्य करना और बालक को हितकारक औषधि देनी चाहिए। ( २ ) जो दूध और अन्न दोनों का आहार करते हों उनको दोनों प्रकार से औषधि देनी चाहिये। ( ३ ) जो बालक अन्न खाते हों उनको ही औषधि देनी चाहिये।

घांटी अर्थात् काक का गिरना—यह रोग गर्मी के कारण होता है इसलिये उन दिनों में बालक और दूध पिलाने वाली को गरम वस्तु खाने को न देना चाहिये जब यह रोग होता है तब बालक दूध पीना छोड़ देता है अथवा पीकर तुरन्त डाल देता है और बहुत रोता है और दुर्बल होने लगता है।

उपाय—( १ ) चूल्हे की राख, पान और काली मिरच को पीस उंगली पर लगा चतुर दाई उंगली के बल से घाँटी को उठा दे। ( २ ) माजू को सिरके में पीस उंगली में लगा काक को उठादे। ( ३ ) मुलतानी मिट्टी को सिरके में पीस तालू पर लगा दे।

हंसली का जाना—नार में एक हड्डी हंसली की भांति होती है उसमें झटका लगजाने से दर्द होने लगता है, जिससे बच्चे को बहुत दुःख होता है उसके क्लेश दूर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होने का उपाय यह है कि चतुर दाई से सुतवा देवे और गले में चांदी की हंसली बनवा कर डाल दे।

गला आजाना—इसके लिये कई बार शहद का शर्बत अथवा शर्बत शहतूत चटावे।

मुख पकना—चमेली के कोमल पत्ते और फूलों को शहद में मिलाय मुख में लगाये।

आँख का आना—आंख दुखने के कई कारण हैं कभी सर्दी, कभी गर्मी माता की आंख दुखने से, कभी दाँत निकलेने के कारण नेत्र पीड़ा होजाती है। इनमें दांतों के कारण जो पीड़ा होती है वह तो जब तक दांत अच्छे प्रकार नहीं निकल आते तब तक दुखती ही रहती हैं और कठिनता से अच्छी होती हैं। अन्य दोनों तरह दुखती हुई आंखों में यदि सर्दी से हो तो ( १ ) आंवला और लोध ले गौ के घी में भूनकर पानी में पीस लगावे घीग्वार के रस को आंखों में टपकावे। ( ३ ) बकरी के दूध का फोहा रक्खे ( ४ ) बालक के मूंत्र में रुई भिगोकर फोहा बांधे। ( ५ ) बांसी की पत्ती लेकर टिकिया बांधे। कान और आंख में कड़ुए तेल की दो दो बूँद डाले। ( ६ ) घी में फोहा भिगो कर गर्म २ बांधे। यदि गर्मी से हो तो (१) नीम की कौंपल पीस कर बांधे। ( २ ) रसोत का पानी आंखों में डाले। ( ३ ) गेरू को पीस उसमें रुई भिगोकर आंखों पर बांध दे, यदि बालक माता का दूध पीता हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तो माता को नियम से रहना चाहिये और कुपथ्य भोजानादि न करना चाहिये और यदि बालक की आंख किचड़ाती हो तो त्रिफला के रस से धोना चाहिये यदि उसको नींद न आती हो तो उसकी इन्द्रो पर पोस्त के दाने का तेल लगाना चाहिये।

कुथिथियों को दूर करने का उपाय—( १ ) कपड़ा हाथ पर रगड़ २ गर्म करके सेकना। ( २ ) तत्ता काजल आंजना ( ३ ) लोध, पुनर्नवा, सिंगाड़े कटैया, त्रिफला, बनभटा इन सबको बारीक पीस कर नेत्रों के पलक पर लेप करे।

आँख सूजने पर—हर्र, फिटकरी, रसोत, तीन २ मांशे और अफीम दो मांशे इन सबको घिसकर गुन २ कर तीन बार लगावे।

फूली—चिरचिटे की जड़ का रस शुद्ध शहद में मिला आंख में लगावे।

कर्ण रोग—यदि बालक के कान में दर्द हो तो सुखदर्शन का पत्ता गुनगुना कर कान में डाले अथवा माता के दूध की चार पांच बूंदें अथवा नीबू की कोपल के रस में मिलाकर डाले। ( २ ) बहुधा बलकों के कान से पीव आने लगती है, कारण उसका यह है कि बालक की माता बालक को औंघाते समय दूध पिला देती है वह दूध बहकर कान में चला जाता है वहां जमा होकर फुड़िया फुंसी, उत्पन्न करदेता है जिससे कान बहने लगता है, उस समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


माता को योग्य है कि कान में धुनी हुई रुई को लगाये रहे ( ३ ) फिटकरी के पानी से पिचकारी द्वारा धीरे २ धोकर बबूल की फलियों का चूर्ण कर कान में डाले। ( ४ ) समुद्रफेन, सुपारी, कत्था महीन पीस कर कान में डालना ( ५ ) मोटी सीप को सरसों के तेल में पकाकर उस तेल को डाले। ( ६ ) यदि कान के पीछे कटा हो तो सफेद कत्था एक माशे, जस्त की खील अर्थात् सफेदा एक माशे इनको छः मांशे मक्खन में धोय तीन दिन तक लगाये।

हिचकी—इस रोग के दूर करने के लिये नारियल पीस कर शक्कर मिलाकर चटावे और गीला कपड़ा तालू पर धरे।

बहुत रोना—प्रथम बहुम रुदन का कारण जानना चाहिये यदि हंसली डिगजाने के कारण बहुत रोता हो तौ नीम के पत्तों की धूनी दे, अथवा गुंजा की माला पहनाए। इसी प्रकार रोने के अन्य कारणों को जान तदनुसार औषधि देवे।

शिर रोग—बालक के कान में और शिर में सरसों का तेल डाले।

सिर दर्द—धनियां व सोंठ एक एक मांशे ले एक छटांक पानी में औटावे जब एक तोले रह जाय छान कर पिलावे।

गंज—मक्खी का मल जो छप्पर के लटके हुए तिनकों पर जमा रहता है पानी में पीस कर उसमें कबीला, तूतिया, मुर्दासन एक एक तोला पीस कर मिलाकर लगावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लार—जब गिरने लगे तब जवारिस मस्तंगी थोड़ी थोड़ी खिलावे।

खाल का चिपकना—जांघों में मैल के जमा हो जाने से वहां की खाल चिपक जाती है इसलिये नित्यप्रति तेल लगा कर गरम पानी से स्नान कराना चाहिए।

खाँसी—( १ ) अनार का छिकला थोड़ा सेंधा निमक पीस कर चटावे। ( २ ) वंशलोचन शहद में दे। ( ३ ) पोहकरमूल, पीपल, काकड़ासिंगी इनको पीस शहद में बारम्बार चटावे। ( ४ ) आक की मुंह मुदी कली लेकर उतनी मिर्च, पांचो निमक एक छोटी कुलिया में डाल कपरौटी कर आग में फूंक ले रात को थोड़ी २ चटा दिया करे। ( ५ ) बहेड़े को भूभल में भून नमक मिला कर चटाये। ( ६ ) अतीस, नागरमोथा, और मुलेठी को बराबर लेकर महीन पीस कर छान ले और बालकों की अवस्था के अनुसार आधी रत्ती से ५ रत्ती तक शहद के साथ दिन में चार बार चटावे यदि न चाट सके तो शहद और माता के दूध में मिलाकर पिलादे। ( ७ ) लौंग, मिर्च, बहेड़े के फल इन तीनों को सम भाग और सब के बराबर खैर मिलाकर महीन पीस और छान कूट बबूल के काढ़े के रस में खरल कर एक रत्ती की गोलियां बनाकर एक २ गोली नित्य रात को माता के दूध में घोल कर देने से सब प्रकार को खांसी जाती रहती है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खांसी ज्वर उल्टी—बालक को ज्वर खांसी के साथ उल्टी भी हो तो काकड़ासिंगी, पीपल, अतीस, नागरमोथा इनका चूर्ण शहद में मिलाकर चटाये ( २ ) बादाम की मींग पानी में घिसकर चटाये। ( ३ ) सुहागा अधभुना इसके बराबर काली मिर्च पीस घीग्वार के रस में चने के बराबर गोली बांध कर खिलावे। पोदीना का अर्क भी पिलाना योग्य है।

कूकर खांसी—( १ ) तिवर्षी मक्का की छूंछ जला शहद में रगड़ कर खवावे। ( २ ) ओंगा पोंगा की जड़ के बकल को जला सेंधा नमक मिला चटावे।

दूध पीने वाले बालक के लिये घुटी—कश्मीरी केशर, नागकेशर, तुरंजबीन, मुलहटी, मुनक्का, बंशलोचन, जायफल इन सबको सम भाग चूर्ण कर माता के दूध के साथ देने से बालक पुष्ट और निरोग रहता है।

दुबलापन—नित्य प्रातःकाल गाय वा बकरी का दूध ओटा हुआ और १० वर्ष के अवस्था वाले बालक बालिकाओं को धारोष्ण ( थन का दुहा ताज़ा ) दूध मीठा मिलाकर पिलाना चाहिये।

पियास—जब बालक को पियास अधिक हो तो ( १ ) मुनक्का को सेंधा नमक के साथ घोट कर दे। ( २ ) ज़हरमोराख़ताई पानी में घिसकर पिलावे। ( ३ ) कमलगट्टा की हरी मींग को निकाल कर सेंधे नमक के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


साथ पानी में पीस करदे। ( ४ ) साठी चावल की खली को कोरे बर्तन में भिगो दे और इस पानी को चुसावे।

पेट फूलना—जब पेट फूल जाता है तो बच्चा सुस्त रहता है, तो सोंठ एक चावल, रेवतचीनी दूनी, सौंफ़ का अर्क तिगुना ले दो खुराक कर प्रातः सायं खिलावे।

पेचिस—तज दो चावल, हींग, सौंफ़, बबूल का गोंद एक एक चावल, सोये के बीज चौथाई चावल इनको पीस पानी में औटा कर उतार ले जो बहुत छोटा हो तो आधी खुराक दे।

पेट बढ़ जाने पर—( १ ) शहद थोड़ा पानी मिलाकर देवे। ( २ ) जो पेट फूल जावे तो सेंधा नमक, सोंठ, इलायची, भुनी हींग, भरङ्गी इनको महीन पीस गर्म जल के साथ देवे अथवा छोटी इलायची, सूखा पोदीना, काली मिरच, पीपल, कालानोन सबको बराबर ले पीसकर तीन दिन तक खिलावे।

आंव लोहू—बालक को आंव मिले खून के दस्त आते हों तौ अधभुनी सौंफ को कूट कर उसमें शक्कर मिला खिलावे। ( २ ) मरोरफली को सेंधा नमक के साथ देवे। ( ३ ) सोंठ का मुरब्बा खिलावे।

कांच—( १ ) बालक को उसी के पेशाब से आबदस्त लिवावे। ( २ ) पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर उसके पानी को उस पर छिड़के।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चिनग—इस रोग में बालक पेशाब करते समय रोता है। बारम्बार इन्द्री को पकड़ कर खैंचे तो उस समय जानले कि इसको चिनग होगई है उस समय बबूल के गोंद की चार पांच डेली कपड़े में बांध कर पानी में भिगो देवे फिर उसमें मिश्री मिलाकर पांच बार पिलावे।

छारुये—यह पेट में पाचन न होने से होजाते हैं। दांत निकलने के समय विशेष कर होते हैं। इससे बालक आंखें नटेर जाता है, मुख नीला पड़ जाता है। इसकी पहिचान यह है कि सोते में गुदा को खुजाता है, नाक को मीचता है और दाँतों को करकर करता है। जब ऐसा हो तो जान ले कि पेट में छारुये होगये हैं।

उपाय—(१) कांजी का पानी पिलावे। (२) मुनक्का के दाने के बीज निकाल तथा बायबिड़ङ्ग पाँच सात दाने खिलावे। (३) शीतल जल के छींटे मुख पर दे। (४) हींग व नमक के पानी का फोहा बनाकर गुदा पर रक्खे। (५) इन्द्रजव पीस कर पिलावे। (६) नीम का तेल गुदा में लगावे।

फुड़ियों का होना—(१) सफ़ेदा कासग़री ६ माशे, मक्खन ८ माशे में मिलाकर चुपड़ देवे। (२) यदि फुड़ियां भरती फूटती हों तो किसी चतुर वैद्य से चिराकर नीम के पानी से धोवे और उसकी ही पुलटिस बांधे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फफोले—शीतला की भांति यह भी निकलते हैं जिनकी खाल बहुत पतली सफ़ेद सी होती है और चारों ओर ललाई होती है जो नित्य टूटते हैं।

उपाय—अफोह नाम के वृक्ष की डाली को चलनी में रख प्रातःकाल उसमें जल डाल कर तीन दिन तक इसी प्रकार स्नान करावे।

मूत्र रोग—(१) मिश्री, कालीमिरच, पीपर और धाय के फूल इनको शहद के साथ पिलावे। (२) जो मूत्र न उतरता हो तो मूसे की लेंड़ी को मट्ठा में पीस गर्म कर नाभि से पेड़ू तक लगावे। (३) टेसू के फूल व शोरा क़लमी पीसकर लगावे।

ज्वर—यदि बालक १ वर्ष से ७ वर्ष तक का हो तो मरोरफली, अमलतास, हर्रा के बीज, सौंफ़ और इन्द्रायन यह सब तीन २ माशे और मुरदाशंख १ रत्ती इन सबका पाव सेर जल में काढ़ा बनाय पैसा भर काढ़ा रहने पर उतार ठण्डा कर पिलावे। यदि डरने के कारण ज्वर आगया हो तो कान में हुरहुर की जड़ रखो।

जूड़ी—तुलसीदल आधा माशा, शहत डेढ़ माशा मिलाकर जूड़ी आने से दो घण्टा प्रथम देवे।

सर्व प्रकार के ज्वर पर क्वाथ—(१) धनिया, पद्माख, लालचन्दन, गुर्च और नीम की भीतरी छाल यह सब बराबर बराबर लेकर अधकचरा कर दो तोले दवा को पावभर पानी में डाल मिट्टी की हंडिया में रात को भिगोंदे सुबह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



औटावे जब आधा रहजावे तब मल छान ठण्डा कर पीवे इसी प्रकार पाँच दिन में उपद्रव जाता रहता है। (२) हरड़ की छाल २ तोला, मुलहटी, नागरमोथा, नीम की छाल यह सब छः छः माशे ले आध सेर जल में भिगोय चतुर्थांश काढ़ा कर छान ले फिर उसके अनुमान से दिन को दो बार मिश्री शहद डाल ४ दिन तक देवे।

उदर रोग—जब बालक को पतला दस्त आने लगे तो नेत्रबाला, धाय के फूल, बेल का गूदा, गजपीपर इनका काढ़ा अथवा चूर्ण खिलाने से दस्त बन्द होजाते हैं।

ज्वर अतीसार—ज्वर के साथ दस्त भी आते हों तो पीपल, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, इनका चूर्ण शहद में चटाये।

प्यास और ज्वर अतीसार—सोंठ, अतीस, मोथा, इन्द्रजव इनका काढ़ा पिलावे।

रक्त अतीसार—सोंठ और पाषाणभेद को पानी में घिस कर पिलावे अथवा कुड़े के बीज, सफ़ेद ज़ीरा, जलके साथ पीस मिश्री मिलाकर पिलावे।

खुजली—चूने के पानी में कड़ुवा तेल डालकर खूब हिलावे और जब हिलाते २ गाढ़ा हो जावे तब रुई के फोये भिगो भिगो लगावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बालकों का क़ब्ज़—इसकी प्रत्यक्ष परीक्षा यही है कि जब बालक का दस्त खुलकर न आवे और सोते २ रोने लगे तो प्रथम घुटी देनी चाहिये।

( १ ) कालानिमक, भुनी हींग, सुहागा इनको पीस गुनगुना कर पिलावे। ( २ ) अण्डी का तेल पिलावे या। (३) केसर को नीबू के रस में घिस चटावे।

मुंहा अर्थात मुख आजाना—जब बालक के मुंह में सफ़ेद मलाई सी जमी और फटी फटी वस्तु देख पड़े तो उसको मुंहा कहा करते हैं यह दो प्रकार का है एक लाल दूसरा सफ़ेद।

लाल मुंहा—त्रिफला को पाव भर पानी में औटाले फिर इसमें रुई भिगो कर दिन में तीन चार बार धो दिया करे।

सफ़ेद मुंहा—( १ ) कत्था ६ माशे, शीतलचीनी १० दाने कपूर एक रत्ती तीनों पानी में पीस अंगुली से लगावे ( २ ) कत्था सफ़ेद २ माशे को ६ माशे भेड़ के दूध में घिस कर लगावे। ( ३ ) छोटी इलायची के बीज, पपरिया कत्था और बंशलोचन पीसकर बुरका दे। सूखे केचुओं को जला राख करे और उसको मुंहा पर बुरक दे तो सर्व प्रकार का मुंहा जाता रहे।

टूंडी का पकना—(१) मोम का मरहम कपड़े पर लगाकर लगादे। ( २ ) थोड़ो सी सेलखड़ो पोस टुड़ी में फुरहरी से कड़ुवा तेल चुपड़ भर दे। कपड़े को सरसों या गोले के तेल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में भिगो फाया डाल दे। अगर सूजन हो तो उसे कपड़े को गरम कर सेकें। [ ३ ] पीली मिट्टी को गरम कर दूध डाले उसका बफारा दे।

टूण्डी का आना-लक्षण—बालक को पतले दस्त आने लगते हैं और दस्त के समय फिट फिट का शब्द होता है तथा रोता भी है चतुर दाई वा बड़ी स्त्री से जो इस बात को अच्छी तरह जानती हो उठवा देना चाहिये।

अलाई—वर्षाऋतु में जो बहुधा छोटे चकत्ते पीठ, छाती, और शरीर पर निकल आते हैं उनको अलाई कहते हैं।

उपाय—मसूर के और आंवले के छिलकों को जला इन्हीं के बराबर मेंहदी और कबीला पीस घी में मिला उन पर लगा दे और मेंहदी डाल पानी को औटा छान नहलावे।

शीलता—यह रोग माता पिता के रजवीर्य खराब होने से होता है इसकी उत्तम वैद्य से चिकित्सा करानी चाहिये। जब शीतला अच्छी होजाये तब गर्मी शांत करने के लिये धनियां, व सफ़ेद ज़ोरा, एक २ तोले ले शाम को पावभर पानी में भिगो दे प्रातःकाल उसी पानी में पीस मिश्री डाल एक सप्ताह पिलावे। विशेष हमारी बनाई गर्भाधान विधि नामक पुस्तक में देखिये। मूल्य ।)

मसान और पसली—मसान रोग सौर में मैला कुचैला रहने से उत्पन्न होजाता है और इसमें पसली भी चलने लगती है, पसलियों में कफ़ जमजाता है, ज्वर होजाता है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दस्त भी आने लगते हैं, बालक अचेत हो जाता है। यह कब्ज़ सर्दी और गर्मी के कारण दो प्रकार का होता है, जो गर्मी के कारण होता है उसमें कुछ भय नहीं होता परन्तु सर्दी से जो रोग उत्पन्न होजाता है, उसमें बहुत डर रहता है।

वायु पित्त के लक्षण—दस्त पतला हो, पेशाब कम और गर्म हो, प्यास के कारण होंठ चाटे, दूध भी कम पीये, सिर को बराबर घुमावे और हाथ पैरों को तन्नाये।

वायु के लक्षण—मलके सूख जाने से पाखाना नहीं होता, पेट फूल जाता है, पेशाब भी कम होता है अथवा नाक के छेद सूख जायें तथा नाक की राह श्वांस भी कम आवे, पेशाब का मुकाम भीतर को सिमट जाय, मुख की रंगत सफ़ेद हो जाय, नाक की ओर बार बार हाथ चलाये। यह रोग शीघ्र भयंकरता तथा उग्ररूप धारण कर जाता है इस लिये तुरन्त योग्य वैद्य से चिकित्सा कराये।

पसली कभी न चले—उपाय :- जिस समय बालक उत्पन्न हो और नार काटा जाय, उस समय चार चावल उत्तम कस्तूरी १ माशा कोयले के साथ में महीन पीसकर उस कटे हुए नार पर लगाकर काटे और थोड़ी टूँडी में भर सावधानी से नहलावे।

खाज—नीलाथोथा, कबीला, पारा, आंवलासार-गन्धक बावची, मुर्दाशंख, सिंदूर, सिंगरफ़, बायबिड़ङ्ग, कूट और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पमाड़ के बीच यह सब बराबर ले पीस छान कर सौ बार धोये हुए मक्खन में मिलाय नित्य लेप करे।

मृगी—इस रोग से बालक बेसुध हो पानी आग इत्यादि में गिरपड़ते हैं यदि दूसरा मनुष्य पास न हो तो इनमें गिरकर मर भी जाते हैं। यह मस्तक के बेसुध होने से होता है इसलिये मस्तक को सुस्त न होने दे। मृगी वाले को आग और पानी के पास न जाने दे। पानी को देख मृगी बहुत आती है इसका इलाज उत्तम वैद्य से करावे। *

नकसीर—जब नाक से रुधिर बहने लगे तब पोता मिट्टी के डेले पर पानी डाल डाल कर सूंघे। ( २ ) शिर पर पानी डाले।

श्वेत कुष्ट की अनुभूत औषधि—त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, नागरमोथा, बायबिडंग, बच इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर नित्य एक तोला गरम पानी के साथ रात को खाय। अवश्य ही अठारहों तरह के कुष्ट नाश होंगे।

श्वेत कुष्ट पर लेप के लिये--त्रिफला, बायबिड़ंग, चब, बच, सुनच्चा, पीपल, शुद्ध भिलावां, सङ्खपुष्पी, बावची, भृङ्गराज सबको बराबर लेकर चूर्ण करे, फिर चूर्ण को कांजी में पीस शरीर पर लेप करे।

* बालकों के कठिन रोगों की चिकित्सा हमारी बनाई बालरोग चिकित्सा में देखिये मू० ।=)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शिर दर्द—मेंहदी की पत्ती ३ माशे, केशर, मुचकुन्द के फूल चार २ माशे, चन्दन का बुरादा ६ माशे, कपूर डेढ़ माशे पानी में पीस शिर पर लेप करे, कैसो ही शिर पीड़ा हो अवश्य ही दूर होगी ।

लू लगने पर—कच्चे आम का भरता कर पानी मिला पिलावे । या बच्चे को बंद कोठरी में लेजा नंगा कर केले के पत्ते पर लिटा उसी के पत्ते से एक मिनट ढक दे । इसी तरह दिन में दो बार करे । बालक को हटा कपड़े पहना दे । एक मिनट से अधिक बालक को न रखे ।

## स्त्री रोग चिकित्सा

स्त्रियों को अनेक रोग होते हैं, उन सबका समावेश इस पुस्तक में नहीं किया जा सकता । यहां पर केवल मुख्य २ रोगों की औषधियां तथा उपचार लिखेंगे यदि पाठक वृंद विशेषरूप से जानकारी करना चाहें तो उन्हें हमारे बनाये हुये युवती रोग चिकित्सा में देखें जिसका मूल्य ।=) है । स्त्रियों के मुख्य२ रोग यह है सोम, प्रदर, हिस्टीरिया प्रसूत, संग्रहणी, गुल्म । स्त्रियों के सोम और प्रदर दो रोग ऐसे हैं जो गर्भाधान में अधिक बाधक होते हैं इसलिये हम उनकी चिकित्सा भी लिखते हैं ।

सोमरोग- बारम्बार मूत्र होने को सोमरोग कहते हैं मुलहटी और आंवला की समान बुकनी दूध के साथ पीवे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रक्त प्रदर रोग—यह अति भोजन, अतिशयन, अति मैथुन करने से होता है। जिसमें स्त्री की जनेन्द्रिय से एक प्रकार का पानी बिना मैथुन के ही गिरता रहता है जिससे वह बहुत ही दुर्बल होजाती है।

( १ ) एक तोला फालसे की छाल को एक मिट्टी के कुल्हड़ में भिगोदे प्रातः छान मिश्री मिलाकर पीलेवे दस बारह दिन में आराम होजावेगा।

(२) आम की गुठली का चूर्ण, घी, खांड और हाथ चक्की की मैदा का हलवा बना खाये (३) आम की गुठली भून कर खाये। (४) लौंका को छील काट कर धूप में सुखा पीस छान चूर्ण कर बराबर की मिश्री मिलाये फिर ताज़ी घी मिला रखले और एक तोला प्रातः सायं बकरी के दूध से खाये या (५) कतीरा रात्रि को भिगोकर प्रातः मिश्री मिलाकर पी जावे। (६) भुनी फिटकरी तीन माशे, मिश्री तीन माशे पाव भर दूध के साथ सात वा चौदह दिन तक खावे। (७) गूलर के कच्चे फल के रस में शहद मिलाकर चाटे और दूध भात खावे। या अशोक की छाल को काढ़ा बना दूध में औट ठंडाकर प्रातःकाल पीवे। (८) अनार की कली ४, कच्चे गूलर २, दोनों कच्चे दूध में पीस मिश्री मिला खाना चाहिये।

(९) चिकनी सुपारी को पीस घी मिलाकर शक्कर मिलाय दो दो तोला प्रतिदिन दोनों समय खाय तो प्रदर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रोग जाता रहता है। (१०) सूखे बेर ४ माशे मोच रस दो माशे, रसौत दो माशे, पुराना गुड़ आठ माशे इन सबको मिलाकर दूध या चावल के धोवन के साथ सेवन करे। या अडूसे का रस, आंवले का रस, शहद और मिश्री सबको मिला दिन में दो तीन बार सेवन करे। (११) माजूफल, पुरानी सुपारी, धाय का फूल, लोध और गोंद इनको पावभर लेकर मंजीठ, मोचरस, मैदालकड़ी और सोंठ प्रत्येक को तीन माशे ले कूट पीस छान कर एक सेर घी में भिगोये और दो सेर मिश्री की चाशनी करके लड्डू बना लेवे अनन्तर उसमें से प्रति दिन एक छटांक प्रातःकाल सायङ्काल खावे तो सब प्रकार का रोग नाश होता है।

श्वेत प्रदर की बड़ी परीक्षित औषधि —(१) भिंडी की जड़ सूखी पाव भर पिंडारू ( सुथनी भी कहते हैं ) सूखा हुआ पाव भर दोनों कूट छान छः छः माशे की पुड़िया बनाले, पावभर गौ के दूध में एक तोला चीनी मिलाकर एक पुड़िया मुँह में रख शाम सवेरे उतार जाया करे, रोग जाता रहेगा।

(२) बड़ के अंकुर, धाय के फूल, नाग केसर, आम की छाल, जामन की छाल और आंवले सबको बराबर लेकर कूट काढ़ा बनावे और शहद मिलाकर प्रातः व सायं पीवे अथवा सेमल की मूसली, सफ़ेद मूसली, खरेटी की जड़ और भिंडी की जड़ को बराबर २ लेकर कूट पीस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


छानले फिर मिश्री मिला सुबह शाम छः छः माशे गाय के दूध के साथ पीवे।

(३) कत्था की जड़ पीस छान कर पुराने चावलों का मांड़ और शहद मिलाकर पीवे तो नया और यदि रतालू लाल, शकरकन्द को बराबर लेकर सुखा कूट पीस छान ले छः छः माशे चूर्ण में चार बूंद बड़ का दूध डाल खा गौका दूध पीवे तो पुराना श्वेत प्रदर जाता रहेगा।

(४) पठानी लोध छः माशे, फांक कर ठंडा पानी पी पका हुआ केला खाये।

सर्व प्रकार के प्रदर—सुपारी का फूल, पिस्ता का फूल, मजीठ, सरपली के बीज, ढाक का गोंद चार चार माशे ले पीस पानी के साथ फांकले तो लाल, पीला, सफ़ेद और काला चारों प्रकार के प्रदर जाते हैं। *

परहेज़—तेल, खटाई मिरच आदि गर्म वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिये।

हिस्टीरिया या पोषापस्मार—यह रोग आज कल बहुत स्त्रियों में फैल रहा है। ऋतु के न होने या कम होने से, खून की अधिकता या कमी, क़ब्ज़, पतिविरोध, निष्ठुर व्यवहार, शोक आदि कारणों से युवा स्त्रियों के छाती में दर्द, सर में चक्कर और देह में भारापन होजाता है और

स्त्रियों के समस्त रोगों की औषधियां हमारे बनाये युवती रोग चिकित्सा नामक पुस्तक में देखिये मूल्य ।=) डाक ।=)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हाथ पाँव काँपने लगते हैं, स्त्री को बेहोशी के दौरे होने लगते हैं, कोई रोती व चिल्लाती है, किसी को वमन और मुख से फैन आने लगते हैं। रोग होने पर तुरन्त इलाज कराना चाहिये।

घुटनों से नीचे टाँगों पर पट्टी बाँध दे। ऐसा उपचार करे जिससे दस्त साफ़ आता रहे। मासिक धर्म ठीक हो, अजीर्ण न हो, सदा शीघ्र पचने वाले भोजन, फल, दूध और घी खाना चाहिये। राई, खटाई, लालमिर्च वासी भोजन, गर्म खुश्क, रूखी वस्तुयें न खाये। संतान होजाने पर यह रोग प्रायः चला जाता है।

बेहोशी—यहां इसके होने पर तुरन्त पानी के छींटे कायफल या एमोनिया या नौसादर व चूना सुंघावे या कालीमिर्च व नमक को पीस पानी में घोल छान चार चार बूंद दोनों नत्थनों में डाल रोगी को होश में लावे। दूधिया बच, ब्रह्मी एक एक माशे को पीस शहद दो माशे मिला चटावे। शीत कल्याण घृत या ब्रह्मी घृत सेवन कराये या जटामासी का काढा पिलावे, कमज़ोरी में अश्वगंधारिष्ट, खून कमी से द्राक्षारिष्ट, प्रदर में अशोकारिष्ट, मासिकधर्म में कष्ट हो तो कुमारीआसव, कलेजा भारी होने पर शंखवटी या गंधकवटी, पेशाब साफ़ न होने पर शतावर व गिलोयरस का सेवन कराये, हिमसगार या नारायणी या प्रसारिणी तैल की मालिश करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रसूत—यह भीषणरोग प्रायः सौर में ही असावधानी के कारण होजाता है और बहुत कष्ट देता है। इसके उपाय निम्नलिखित हैं। खाने के अलावा विषगर्भ तथा मरीच्यादि तैल की मालिश कराये।

(१) सन्तान उत्पन्न होने के पीछे प्रसूता को गुणकारक पानी बनाकर देने की विधि—सतावर १॥ तो०, असगंध १॥ तो०, सालममिश्री १ तो०, मूसली सफ़ेद १॥ तो०, बंशलोचन १ तो०, तोदरी सफ़ेद वा सुर्ख़ एक एक तो०, बहिमन सफ़ेद वा सुर्ख़ एक २ तो०, जावित्री १ तो०, चुनिया गोंद १ तो०, तालमखाना २ तो०, इन्द्रजौ मीठा १ तो०, छोटी इलायची के दाने १ तो०, मोचरस १। तो०, सतगिलोय १ तो०, गोखुरू छोटे बड़े एक एक तो०, समुद्रसोख १ तो०, बीजबन्द १ तो०, दारुचीनी १ तो०, मूसली सेमल २ तो०, गोंद बबूल २ तो०, गुलधावा १ तो०, बांस के पत्ते २ तो०, कांस के पत्ते २ तो०, कांच के बीज १ तो०, तीखुर १ तो०, कमरकस १ तो०, चिरयाकन्द १॥ तो०, जायफल २ तो०, वायविड़ङ्ग १ तो० हालम १ तो०, नारजीलका छिक्कल २ तो०, सिंघाड़ा १ तो०, छोटी बड़ी माई डेढ़ डेढ़ तो०, मुलहठी १॥ तो०, छोटी पीपल १॥ तो०, बायुखुम्बा १॥ तो०, सुपारी के फूल १ तो०, कल्मीतज १ तो०, पत्रज १ तो०, सोंठ १। तो०, जायफल १ तो०, बड़ी कटाई १ तो०, अतीस १ तो०,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


काकड़ासिंगी १ तो०, जवासा १ तो०, देवदारू १ तो०, मीठे कूट की जड़ १ तोला इन सबको कूट समान २ सात पुटरियाँ बना एक पोटली को चरुये की हाँड़ी के ( हाँडी में कुछ मिट्टी लगादे ताकि वह पटक न जावे ) ६ सेर पानी में डाल धीमी २ आँच से औटाकर प्रसूता को पिलावे, उक्त पोटली तीन दिन बाद बदलदे। इस प्रकार सिद्ध किये पानी को २१ दिन तक पिलाने से प्रसूता स्त्री प्रसूता सम्बन्धी सर्व रोगों से मुक्त रहती है।

प्रसूता और नवजात बच्चे को पुष्टता देने वाला सुहागसोंठपाक

दवा – सोंठ बैतरा १॥पाव–बकरी का दूध ५ सेर घी गऊ का १ पाव, चीनी २॥ सेर-दालचीनी १॥ तो० तेजपात १ तो० छोटी इलायची २ तोला–नागकेसर १॥ तोला–स्याह जीरा १ तोला–सौंफ १। तोला–अकरकरहा १॥ तोला–जावित्री १ तोला–बिधारा १। तोला-कमलगट्टा की गिरी १॥ तो० पिपरामूल १ तोला–त्रिफला २ तो०–बरियारा की जड़ २ तो०–चाव १ तो०–चीता १ तो०–मोथा १॥ तो०–खस १॥ तो०–नागौरी असगन्ध २ तो०–सफ़ेद चन्दन १ तो० काला अगर १ तो०–सफ़ेद ज़ीरा १ तो०–लौंग १॥ तो० शतावर १ तोला–सफ़ेद मूसली २ तो०–सोंठ २ तो०–पीपर १ तो०–मिर्च १॥ तो० जायफल १। तो० सिंघाड़ा २ तो० कंकोल १॥ तो०–अजमोद एक तो०–मुनक्का एक छटांक



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


किशमिश १ छटांक—अखरोट २ छटाँक—बादाम और पिस्ता एक एक पाव।

बनाने की रीति—सबसे प्रथम सोंठ को कूट छान ले, पुनः दूध को कढ़ाई में डाल औटावे जब आधा जलजाय तब उसमें पिसी हुई सोंठको डाल देवे और कलछी से बराबर चलाता रहे जब खोया हो जावे तब कड़ाही में घी डालकर मन्द मन्द अग्नि से खोये को भूने फिर साफ़ कड़ाही में चाशनी कर सब कुटी छनी औषधियां और कतरी हुई मेवा और भुना हुआ खोया डाल कर आधी २ छटांक के लड्डू बांध ले प्रातःकाल सायंकाल अपने बल के अनुसार लड्डू खाकर ऊपर से एक पाव दूध मुवाफिक की मिश्री मिला कर पीले इस पाक के खाने से बच्चा और प्रसूता स्त्री सब प्रकार निरोग रहेगी। परन्तु ध्यान रहे कि यह पाक जाड़े में कातिक से माघ तक खाया जाता है। जाड़े के अतिरिक्त और ऋतु में कदापि सेवन न करे। आधी छटांक गोखरू को कूट एक सेर पानी में औटावे जब छटांक भर रह जाये तो उसे छान उसमें एक छटाँक बकरी का दूध मिला कर पीवे।

दशमूलादि अर्क—सरवन की जड़ ऽ। मिथवन की जड़ ऽ। छोटी बड़ी भटकटैया की जड़ ऽ। गोखुरू, गणियारी सोनापाढ़ी, खंभारी, पाढ़ा, इन सबकी जड़ पाव पाव भर, बहेड़े की जड़की छाल ऽ। रूसाकी जड़ की छाल ऽ। चीते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की जड़ ऽ= भारंगी देवदारु लौंग हर्र बहेड़ा आंवला साठी इन सब की जड़ पाव २ भर, बंशलोचन ऽ= मिर्च ऽ- पीपर ऽ- अदरख का रस ऽ। शहत ऽ॥ इन सबको अधकुटा कर मज़बूत मिट्टी के बर्तन में सोलहगुने जल में भिगो पात्र को पृथ्वी में गाड़ दे परन्तु पात्र का मुंह खुला रहे, २१ दिन बाद निकाल भवके द्वारा अर्क खींचले। इसकी मात्रा १ तोले से ३ तोले तक है। दिन में दो या तीन बार इस अर्क के पीने से क्षयी, संग्रहणी, अरुचि, शूल, कास, श्वास, मंदाग्नि, कुष्ट एवं मूत्रकृच्छ आदि रोग शीघ्र आराम होते हैं। परन्तु बालक, गर्भिणी स्त्री और दाहयुक्त रोगियों को नुक़सान करता है।

मरीच्यादि तेल—काली मिर्च, निसोत, दात्पूणी, आक का दूध, गोबर का रस, देवदारु दोनों हल्दी, छड़, कूट, रक्त चन्दन, इन्द्रायन की जड़, क़लौंजी, हरताल मैनसिल कनेरकीजड़, चित्रक, कलिहारी की जड़ नागर मोथा बायविड़ङ्ग, पमार, सिरस की जड़, कुड़े की छाल, नीम की छाल, सैजने की छाल, गिलोय, थूहर का दूध, किरमाला की गिरी, खैरसार, बाबर्चा, वच, मालकांगनी, इन सबको दो दो टके भर ले, सिंगीमुहरा चार टके भर, कड़ुआ तेल चार सेर, गौ मूत्र १६ सेर फिर इन सबको एक में करके मन्द आंच से पकावे जब सिवाय तेल के कुछ भी न रहे तब उतार कर छानले। इस तेल मर्दन से यौवन का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विकास होता है। वायु के सब रोग समूल नष्ट होजाते हैं।

विषगर्भ तेल—धतूरे की जड़, निर्गुंडी, कड़वी तूंबी की जड़, एरंड को जड़, असगंध, पमारू, चित्रक, सहंजने की जड़, कागल हरी, करिहारी को जड़, नीम की छाल, वकायन को छाल, दशमूल, शतावरी, चिरपोटन गौरीसर, विदारीकन्द, थूहर का पत्ता, आक का पत्ता, सनाय, दोनों कनेरों की जड़, चिडचिड़ा या अपामार्ग, सीप। इन सब को तीन २ टके भर ले। इन्हों के बराबर काले तिलका तेल ले इतना ही अंडी का तेल ले फिर चौगुना पानी डाले फिर सब औषधियों को कूट कर उस तेल और पानी में डालकर मन्द आँच में पकावे। पकते २ जब औषधियां और पानी जल जाय केवल तेल मात्र रह जाय तब उतार ले। फिर इसमें सोंठ, मिर्च, पीपल, असगन्ध, रास्ना, कूट, नागरमोथा, बच, देवदारु इन्द्रयव, जवाखार, पांचों नोन नीलाथोथा, कायफल, पाढ़, भारंगी, नौसादर, गन्धक, पुहकरमूल, शिलाजीत और हरताल—ये सब धेले २ भर लेकर सिंगीमुहरा एक टके भर ले। फिर सबको महीन कूट पीस कपड़छन करके तेल में मिला ले। इस तेल को शरीर में मलने से बात के सब रोग दूर हो जाते हैं। शरीर के सब प्रकार के दर्द, सूजन, हड़फूटन, कर्णशूल, कंठमाला भी दूर हो जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संग्रहणी—अनार का दाना ८ भाग, तज, पत्रज, छोटी इलाइची, नागकेशर तीन तीन भाग, सोंठ, कालीमिरच चार चार भाग मिश्री कूँजा की ३२ भाग ले इनको कूट महीन कपड़छानकर नित्य प्रातःकाल एक तोला भर शीतल जल से खावे तो अरुचि, संग्रहणी दूर हो, अग्नि दीप्त होकर पाचन शक्ति को बढ़ावे या लाई चूर्ण या गगाधर चूर्ण मठा के साथ खाये।

परहेज—खट्टे द्रव्य, खट्टे फल, कुलथी, मटर और मूली के साथ दूध और मूली उरद की दाल के संग और उरद की दाल गुड़ दही घृत इनके साथ बड़हल और तक्र दही तोड़ के साथ तथा फल के साथ केले की फली और पीपल मिर्च शहद गुड़ के सङ्ग मकाय को न खाना चाहिये।

गुल्म—लवण भास्कर चूर्ण मठा के साथ खाये।

दूध बढ़ाने के उपाय—यदि स्तनों में दूध कम हो तो उसके बढ़ाने के लिये निम्नलिखित उपाय काम में लावे।

ज़ीरा पाक खाये अथवा जीरा सफ़ेद व साठी चावलों की खीर बनाकर खाये अथवा गेहूँ का दलिया दूध में खाये, दूध में सतावर और मीठा डाल पीवे अथवा सतावर तैल की मालिश शरीर पर करावे।

दूषित दूध को शुद्ध करने के उपाय - यदि माता का दूध दूषित हो तो भारंगी, दारुहल्दी, बच और अतीस तीन २ माशे घोट पानी में पिया करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


थनैली—सहजने के पत्ते पीस कर लेप करे अथवा गुलाब, अनार, सेव और मेंहदी को पत्ती पीस गर्म कर लेप करे या अंडी के पत्ते के रस में बार २ कपड़ा भिगो कर रखे या नागरमोथा तथा मेथी को बकरी के दूध में पीस लगावे।

छाती के फोड़े—घी तथा मोम मिलाकर मले।

छाती के अगले भाग में घाव—यदि छाती के अगले भाग में घाव होगया हो तो नीम के पानी से धोये और फूल के बर्तन में लौनी को सौबार धोकर उसमें मुर्दासंख, सिंदूर और रस कपूर मिलाकर घाव पर लगावे।

## साधारण चिकित्सा

आँख दुखने का लेप - छोटी हर्र, सेंधा नमक, गेरू, रसौत इन चारों को सम भाग ले महीन पीस गुनगुनाकर सोते समय पलकों पर लेप करे।

रतौंधी का अंजन—रसौत, दारुहल्दी, नीम के पत्ते इन सबको बराबर ले गोवर के रस में घोट गोली बनाले। दोनों समय पानी में घोट अंजन करे या बकरे की आंत की बत्ती से सरसों के तेल का दीपक जलाकर काजल पारले और उसको आँखों में आँजे या पान के रस की ३ या चार बूंद आँखों में डाल ठंडे पानी से धो डाले या गाय के गोबर के रस में छोटी पीपल घिस आँखों में लगावे तो रतौंधी जाती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी, सिर पर चमेली के तेल को लगा कर स्नान करे। दुग्ध, घी, मिश्री और कालीमिर्च आदि शीतल चीजें खावें।

आँख की फुली—बड़ के दूध में कपूर घिसकर लगावे।

कान में दर्द - सुखदर्शन का पत्ता निचोड़ गर्म कर या कड़वे तेल में कबीला पका या बन्दूक की दो रत्ती बारूद को एक तोला मीठे तेल में पका कान में डाले।

कान में कीड़ा घुस जाने पर—मकोय के पत्तों का स्वरस कान में डाले।

दंत दर्द—वायबिडंग या हल्दी चिलम में धर कर पीवे। लौंग तथा दालचीनी का तेल लगावे।

मसूड़े फूलने पर—कड़ुवे तेल को दाँतों और मसूड़ों पर मले। तथा सेंधे व काले नमक को पीसकर तवे पर भूने, पुनः भुने हुये को पीस फिर भूने इस प्रकार पाँच वार करे उसमें भुना हुआ ज़ीरा मिला रोज़ मालिश करे।

गले का दर्द—धनियां व मिश्री या काली मिर्च व मिश्री मुख में डाल रस चूसे।

कंठ माला—चिड़चिड़े की जड़ पान में खाये तथा गले में लगाये।

सिर दर्द—गर्मी व खुश्की से हो तो बकरी का मक्खन मले, यदि जुकाम से हो तो बनफ़सा, मुलेठी, लिसौड़ा मुनक्का, कालीमिर्च का काढ़ा बना मिश्री मिलाकर पीवे अथवा एमोनिया सूंघे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आधाशीशी—कालीमिर्च व नमक को पीस पानी में घोल पाँच छः तह कपड़े की बना छानले चार चार बूँद दोनों नथनों में दिन में दो बार डाले।

मुख के छाले—फिटकरी के कुल्ले करे या चमेली के पत्ते चबाये या कबाब चीनी व मिश्री को मुख में डाल रस चूसे या पपरियाकत्था, वंसलोचन छोटी इलायची पीस छालों पर बुरक मुख नीचे को करदे।

मुंहासे—गौरोचन व कालीमिर्च पीस मुख पर लगावे या माजूफल को दूध में घिस कर लगावे।

नाक की खुश्की—गाय का दही और गुड़ प्रातः बिना कुछ खाये, गुलाब का फूल सूंघे। कड़वा तेल नाक में लगावे।

नक्सीर—गौ का ताजा घी अथवा अनार के फूल व सफेद दूब का रस सूंघे या पीली मट्टी पर पानी डाल सूंघे।

पीनस—पिडोल मट्टी पीस पानी में घोल सर पर रखे, नाक व मुख पर पिडोल ढीले कपड़े में लपेटे, पृथ्वी पर पेट के बल लेट नाक एवं मुख के आगे पिडोल डाल उसका पानी डलवावे ज्यों ज्यों उसकी बू भीतर जायेगी त्यों त्यों कीड़े बाहर निकल आयेंगे। यह कई दिन करे।

वीर्य्य उत्पन्न करने वाली औषधि - तत्काल का दुहा गौ का दूध, दोनों बहमन, तोदरी, अलसी, बादाम, पिस्ता, इन्द्र जौ, नारियल, केशर, दालचीनी, शतावरि, असगन्ध, पक्के आम को खाकर दूध पीना मीठा अनार, सेब, ताल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मखाना, लालधान, उरद, दूध, गेहूँ की रोटी, मक्खन, घी मलाई, छोटी इलायची समय पर शीतल भोजन, प्रसन्नता कारक कार्यों से वीर्य उत्पन्न होता है।

वीर्य्य को गाढ़ा और पुष्ट करने वाली औषधि—सफेद मूसली स्याह मूसली, सेमर की मूसली, गोंद बबूल, कामराज, बीजबन्द, मखाना, बंशलोचन, शतावरि—काले तिल, असगन्ध सिघाड़ा और मिश्री। अथवा सतावर का चूर्ण मिश्री व गर्म दूध रोजाना पीवे।

पेशाब का रुक रुक कर आना—हज़रत जहूर पत्थर को घिस कर या ढाक के फूल और मिश्री पीस कर पिलावे।

पेशाब बन्द होने पर—ढाक के फूल व शोरा पीस या चूहे की मेंगनी पानी में पीस पेडू पर धरे।

प्रमेह—गिलोय का स्वरस एक भाग शहद दो भाग मिला सायं व प्रातः खाये। या चन्दन के तेल और बैरोजे के तैल की चार चार बूंद बताशे में रख कर खावे।

पेशाव की जलन—एक तोले गेंहूँ को शाम के समय पाव भर पानी में भिगो व प्रातः पीस मिश्री डाल कर पीवे—

हिचकी और कै—मोर पंख जला शहद में मिला कर खाये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हिचकी—आम के सूखे पत्ते चिलम में धर कर पीवे।

पेचिश—सोंफ कच्ची पक्की, सोंठ कच्ची पक्की, कच्ची खांड, तीनों को मिला दिन में कई बार मुंह में डाल रस चूसे। या छोटी हर्रों को घी में भून पास ले—कच्ची खांड मिला छः छः माशे प्रातः व सायं फांक ऊपर से दही पीवे।

पेचिश मरोड़—सोंठ, सोंफ, हर्र, बेल का गुदा, पोस्त का डोंडा और काला नमक बारीक पीस भून चूर्ण बना तीन तीन माशे बराबर खाये, मसूड़ की दाल व पुराने चावल की खिचड़ी खाये।

आंव लोहू—प्याज़ पीस छः बार पानी से धोये। उसमें से छः माशे को एक छटांक गाय के दही के साथ दिन भर में तीन चार बार खाये।

तिल्ली—सरफूँका के पत्ते दो तोले दही के पानी में पीस कर खाये। झाऊ की जड़ की लकड़ी के बने कटोरे में पानी पीवे।

जिगर—औसरिया गाय का पैशाब पीवै।

अंड वृद्धि—छोटी इन्दरायन की जड़ बारीक पीस तेल में घोट लेप कर और इन्दरायन का चूरण फांक गाय का दूध पीवे।

मृगी—सफ़ेद प्याज़ का रस कान में डाले और सूंघे।

श्वेत कुष्ट—कच्चे अंजीर पीस लगावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फाल पांवया—गाय के पेशाब में सरसों पीसकर लगावे

रक्त शोधक—त्रिफला एक तोला शुद्ध गंधकआंवलासार, गुलाब के फूल, सौंफ़, मुलेठी, उशवा, एक एक माशे मिश्री मिला गर्म दूध के साथ पिलावे।

बुद्धि वर्द्धक ब्रह्मी—सफ़ेद सरसों, बच, पीपल, मीठाकूट, मालकुकनी।

( १ ) मुलहटी, वंसलोचन, पीपल, सेंधा नमक, लोहा, चांदी, तांबा, शीशा, रांगा, बच, शहद, घृत इसमें से किसी एक के साथ मिश्री त्रिफला, मिला कर सेवन करने से रोगों को नाश करती है यह रसायन है धारणाशक्ति आयु, स्मृति और बुद्धि को देती है।

( २ ) ब्रह्मचारी लोग चीते की छाल को छाया में सुखा दूध के साथ एक महीने तक पियें।

( ३ ) जाड़े के दिनों में मालकांगनी और शक्कर छः माशे मिला प्रतिदिन खाये।

लघुहरीत की बनाने का विधि—पीली पीली बड़ी हर्र लेकर एक रात मट्ठा में भिगो कर प्रातः उनको पानी से धो स्वच्छ कर उनका पेट चीर बीज निकाल सोंठ, पीपर, और भुनी हींग आठ आठ माशा, मिरच, पीपरामूल, चीता, चाव, ज़वाखार और सज्जी एक २ तोला, अजवायन, अजमोद, सेंधा निमक, सांभर, कालानोन, खारी और बिड़नोन डेढ़ २ तोला इन दवाओं को नीबू के या चूक के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रस में चार पहर घोट उक्त हर्रों में भर कर १० दिन तक नीबू के अर्क में भिगो कर रखदे। यह हर्र बात विकार वालों को बहुत लाभदायक है। सोते समय खाने से एक या दो दस्त साफ़ आजाते हैं। इसके सिवाय हैज़ा-अजीर्ण अग्निमन्द और वायु से जो पेट में दर्द होता हो उसको दूर करता है।

लवणभास्कर चूर्ण- समुद्र नमक ८ तोला, कालानमक ५ तोला, जवाखार, सेंधा नमक, धनिया, पीपर, पीपरामूल, कालाजीरा, तेजपात, नागकेशर, तालीसपत्र और अमलबेत दो २ तोला, मिरच, जीरा सफेद, और सोंठ एक २ तोला, अनार का सूखा दाना ४ तोला, इलायची छोटी के दाने ५ माशे, दालचीनी ५ माशे इन सबको कूट छान कर नबू के रस में घोट झरबेरी के बराबर गोली बनाले।

खाने की विधि -गुल्म, संग्रहणी और उदर सूजन में गौके मट्ठे के साथ देना चाहिये। तिल्ली, बादी बबासीर, बलग़मी खांसी और स्वांस रोग में यह चूर्ण गरम जल से १ माशे तक और बालक को आधा माशा।

आचारबटी—हल्दी, दारूहल्दी, मिरच, आंवला, सोंठ, हर्र, चीता, कूट पीपर, सेंधा नमक एक २ तोला नीम के पत्ते और नीम पर की गुरच दो २ तोला, मोथा ६ तोला इन सबको छान कर बकरी के पेशाब में खरल कर चने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बराबर गोली बना ले। ( १ ) नित्य ज्वर, अंतरा तिजारी, चौथिया और प्रसूत का ज्वर में दो २ घण्टे के बाद एक एक गोली को पानी के साथ देवे। ( २ ) इसको घिसकर आंखों पर लगाने से आंखों के सन्मुख से अंधियारा जाता है। ( ३ ) स्त्री के दूध में घिसकर लागाने से पलकों का चिपकना जाता है। बकरी के दूध में घिसकर लगाने से नवीन फूली जाती है। ( ४ ) तिल के तेल से रतौंधी जाती है। ( ५ ) केले के जल में लगाने से आँखों का पानी बन्द हो जाता है इस गोली के सेवन करने वालों को मौतदिल भोजन करना चाहिये।

हाज़मे की गोलियां—काला नमक, सेंधानोन, बड़नोन, अजवाइन, जीरा, कालाजीरा, काली हर्र बायबिडङ्ग, धनियां सूखा पोदीना चित्रक का छिलका एक २ तोला और अमलबेत १॥ तोला सुहागा ६ माशे इन सबको कूट छान कर काग़जी नीबू के रस की तीन पुट देकर जंगली बेर के समान गोली बनाले। प्रातः सायं एक २ गोली खाने से खूब भूख लगती है तिल्ली और बाई जाती रहती है।

गन्धक बटी—शुद्ध आमलासार गन्धक, चीते की छाल, आक की बन्द कलियां, काली मिरच, सोंठ, जवाखार, सांभरनोंन, सेंधानोंन, कालानोंन इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर नींबू के रस में सात दिन खरल कर चार २ रत्ती की गोलियां बनावे। रोग अनुसार १ से ४ तक गोलियां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गर्म जल से नित्य खाले तो आम, अजीर्ण, शूल, गोला, अफरा, आदि रोग तुरन्त दूर होवें यह अत्युत्तम और स्वादिष्ट बटी है।

लोलम्बराज चूर्ण—सोंठ ५ तोला, सुतियां सोंठ ४ तोला अजमोद २ तोला इसको कूट पीस छान कर ४ माशे प्रतिदिन गरम जल प्रातःकाल खावे इससे बदहज़मी बायगोला आदि सब रोग जाते रहते हैं।

पाचन चूर्ण—स्याह सफ़ेद ज़ीरा, सोंठ, छोटी पीपल, अजवायन, काली मिरच सेंधानमक इनमें से दोनों जीरों को भून सबको बराबर ले कूट छान कर मिलाले, रोटी खाते समय प्रथम १ माशे एक ग्रास के साथ खावे फिर रोटी को खावे ( २ ) आक के वृक्ष की बोंड़ी, कालीमिरच कालानमक, इन तीनों में बोंड़ी पावभर शेष पौंन पौंन तोला लेकर पीस गोली बांध कर धूप में सुखा ले।

पुराने ज्वर का पथ्य—आँखों में अंजन लगाना स्नान वायुसेवन करना दाह शांन्ति करने वाली औषधियाँ जैसे स्वेत चन्दन, कपूर, शीतलचीनी, खस, सुगंधवाला इत्यादि वस्तुओं को न्यूनाधिक करके गुलाब के अर्क में पीस छाती और माथे आदि में लगाना खाने में मूंग तथा अरहर की दाल, पुराने चावल का भात, गेहूँ या जौ की रोटी, गौ, बकरी का दूध मक्खन, ताज़ा घी, परवल, रामलौकी, मूली की जड़ और कोमल बीज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रहित बैंगन की भाजी, स्वच्छ गङ्गाजल अथवा फिल्टर किया हुआ पानी देना चाहिये ऐसा सुश्रुत आदि में लिखा है।

मलेरिया—बारहसिंह का सींग घिसकर सर और हाथ पैरों के नाखूनों पर लगावे।

दिल धड़क ने के समय—सेवती का गुलकन्द सेवन करे।

उत्तम स्वर होने के हेतु—कुलीजन खावे।

दाद—गन्धक एक छटांक, चौकिया सुहागा एक छटांक सीप का चूर्ण एक छटांक, राल एक छटांक, नीलाथोथा आधी छटांक इन सब को पीस छान भैंस के तजे घी में मिलाकर लगावे।

दमे का अच्छा करना—प्याज़ का स्वरस शहद में मिलाकर चटावे या नौसादर को चिलम में धर कर पीवे या बायबिडङ्ग तीन माशे और पांच सात काली मिरच और थोड़ी सी सोंठ इन सबको पानी में पीस गर्म करके ठंडा कर पीजावे और ५ मिनट तक गले में रख दबाकर निकाल दे खटाई और लालमिरच से परहेज करना उचित है। प्रांत तीसरे दिन ऐसा करता रहे जब तक आराम न हो।

बवासीर खूनी या बादी—प्रतिदिन प्रातःकाल शौच से निवृत्त होने पर नीम की निबौली वृक्ष से तोड़कर पांच सात निगल जावे। तेल खटाई लाल मिरच का परहेज़ बनाये रहे। यदि ताज़ी निबौली न मिले तो ५ व ७ सूखी निबौलियों को रात में भिगो कर कपड़े में बांध दे प्रातः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खा जावे। ( २ ) मूली के बीज नगरकोटी, रसौत, नीम के पत्ते ये तीनों सम भाग ले भङ्ग के रस में अच्छे प्रकार खरल कर एक एक माशे की गोलियां बांध १ गोली नित्य प्रातः १५ दिन तक मक्खन में धर कर खावे। ( ३ ) मिरच, पीपर, सोंठ, चीता इनको पीस और चीता से चौगुना ज़मीक़न्द ले और इनके बराबर गुड़ मिला कर उपरोक्त रीति से गोली बांध खावे ( ४ ) ज़मीक़न्द ८ भाग चित्रक की छाल ४ भाग, हर्र ५ भाग, मिर्च ५ भाग पीपल २ भाग, पुराना गुड़ १४ भाग, चूर्ण कर उपरोक्त रीति से गोली बनाय प्रतिदिन खाय। ( ५ ) शोधा हुआ भिलावां इनके बराबर सोंठ लेकर पुराना गुड़ बराबर मिला चना बराबर गोली बनाकर खावे। गेंदे की पत्ती, नीम की पत्ती, बक़ायन की पत्ती एक २ भाग छोटी हर्र काला नमक चौथाई २ भाग पीस कर झरबेरी के बराबर गोली बना प्रातः सायं बासी पानी के साथ खाये तथा दोनों को करेले के रस में छः माशे मिश्री मिला दिन में तीन बार पीवे।

अखरोट के तेल में रुई भिगो मस्सों पर बांधने से अथवा लगाने से जलजाते हैं तथा थूहर का दूध और उससे आधी हल्दी दोनों को बारीक पीस मरहम बना मंगल से शुक्रवार तक लेप करे दोनों प्रकार का अर्श जाता रहेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थूल को पतला कृश को मोटा करने की औषधि—स्थूल पुरुष को शहद के साथ पानी मिलाकर सेवन करने से स्थूलता जाती है। कृश मनुष्य पान अन्न औषधि इनको यथायोग्य सेवन करे चिन्ता को सदा दूर कर आनन्द में रहे तो बलवान होजाता है।

कृमिनाशक चूर्ण—रेवन्दचीनो, बायविड़ङ्ग कबीला इन तीनों को बराबर लेकर महीन पीस ले १ माशे से ३ माशे तक शाम सवेरे फांक आधा पाव गऊ का कच्चा दूध पीवे थोड़े काल में केंचवें इत्यादि नष्ट हो जावेंगे।

केश उत्तम करने का उपाय—( १ ) कुम्हेरन की जड़, पियाबांसा के फूल, केतकी की जड़, लोहचूरा, भंगरा, त्रिफला का जल और तेल इनको लेकर लोहे के पात्र में भरकर पकाय एक महीने पृथ्वी में गाड़ कर निकाल ले, फिर केशों पर लगावे तो भौंरा के समान काले लम्बे केश होजायें।

( २ ) काकमार्ची, जौ, चमेली और काले तिल इन सब का तेल यंत्र द्वारा निकाल लेव आर बालों पर मले तो बाल अति काले हो जाते हैं।

( ३ ) बालों के बढ़ाने के लिये आमले का तेल बड़ा लाभदायक है।

जलजाने की औषधि—( १ ) जलते ही सेक दिया जाय, ( २ ) रेल के कोयले को तेल में पीसकर लगाया जावे,



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( ३ ) इमली की छाल को जलाकर गो के घी में मिलाकर लगावे, ( ४ ) जलते ही आलू पीस कर लगावे।

हैज़ा के साध्य और असाध्य लक्षण—शरीर का ऐंठना, जँभाई का आना, दाह, शरीर का रङ्ग बदलना, देह कांपना, हृदय और शरीर में दर्द, पेशाव का न होना यह बातें धीरे २ घटती जावें और रोगी को निद्रा आजावे, शरीर गर्म और रोगी तीन चार दिन बना रहे, कफ़ और बात का कोई रोग न हो तो रोगी बच जाता है। और हाथ पैर में ऐंठन अधिक हो, स्वरभंग, बल घटता जावे, भीतर दाह, ऊपर शीतल हो, रोगी को कल न पड़े, पेशाब न उतरे, प्यास की अधिकता के कारण गले में काँटे पड़गये हों, हिचकी आती हों, नाड़ी रुक २ कर चलती हो तौ रोगी नहीं बचता।

( १ ) प्रातः सायं शुद्ध वायु सेवन करना योग्य है ( २ ) हैज़े के दिनों में प्रति दिन बेल का शरबत पीना अच्छा है ( ३ ) कपूर का सूँघना और कपूर का पानी १ तोला या २ तोला दोनों समय पीना श्रेष्ठ है क्योंकि कपूर सेवन से हैज़ा नहीं होता। ( ४ ) तङ्ग कोठरी में मुंह ढांप कर न सोवे, (५) तङ्ग स्थान में बहुत आदमियों के साथ न रहे, (६) हैज़े के स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में चला जावे। ( ७ ) सुबह शाम गृह व बैठक में गन्धक या धूप एवं गूगुल की धूनी दे। ( ८ ) हैज़े वाले के कपड़े और मल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को इधर उधर न फेंके वरन् उनको धरती में खोद कर गाड़ देवे नहीं तो हैज़ा नगर में फैल जाता है।

चिकित्सा—हैज़ा होते ही फ़ौरन् दस्त बन्द करना चाहिये, फिर शरीर में बल आने और पेशाब खोलने का उपाय किया जावे।

हैज़े का प्रधान औषधि—अफ़ीम, कपूर, ब्राँडी, सौंफ़, गुलाब, पोदीना और बर्फ़ है।

बिशूचिकाँत बटी—सिमरख महमूदाबादी एक तोला को १२ पहर काग़ज़ी नीबू के रस में खरल कर छाया में सुखा ले इसके बाद सिमरख के बराबर अफ़ीम ले दोनों को खरल में डाल पानी से घोट कर बाजरा के बराबर गोलियां बना ले ये हैज़े में रामबाण का हुक्म रखती हैं।

अनुपान—हैज़ा शुरू होते ही गोली पानी से खिला देनी चाहिये यदि गोली क़ै से गिर जावे तो फिर गोली को पानी में पीस कर पिला दे, गोली के पचते ही क़ै दस्त बन्द हो जांयगे यदि दस्त बन्द न हों तो ३ घण्टे के पीछे जैसी ताक़त हो वैसी एक या दो गोली खिला देनी चाहिये। फिर भी बन्द न हों तो १० घण्टे तक गोली न दे। प्यास बमन रोकने के लिये उपाय करे अर्क़ सौंफ़ पाव भर, पोदीना का अर्क आधपाव, गुलाब आधपाव, कपूर का पानी आधी छटांक बर्फ़ का पानी पावभर इन सबों में जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिल जाय मिला कर एक एक तोला दस दस मिनट में पिलाता जाय।

गोली—शुद्ध लहसुन की पत्ती, कालाज़ीरा, शुद्ध आंवला-सार गन्धक, सेंधानोन, सोंठ, मिरच, पीपल, घी में भुनी हींग, यह सब बस्तु सम भाग ले चूर्ण कर नींबू के रस में भिगोवे फिर भावना ( पुट ) दे खरल कर चार २ रत्ती की गोलियां पांच पांच नित्य गर्म जल से दे तो शीघ्र ही विशूचिका ( हैज़ा ) तथा अजीर्ण ( बदहज़मी ) दूर होकर भूख लगे।

धूप—इसके जलाने से रोग उत्तपादक कृमों का नाश होता है इसलिये ज़रूर रोज़ाना जलाये।

गुगल जलाने से खांसी, इनफ्लूएंजा, ज़ुकाम तथा राज-यक्ष्मा और लोवान की धूनी से निमोनियां दूर होजाता है।

साँप--( १ ) घी खूब खिलावे और तुलसी के पत्ते खिलावे, तम्बाकू घोलकर पिलावे, गौ मूत्र और गोबर का रस जितना पी सके पीवे।

साठी की जड़ ६ माशे और कालीमिर्च ११ को पीसकर दो चार बार पिलादो। (२) हुक्के की गुल को निकाल उसकी चने के बराबर गोली बांधकर उसमें थोड़ा घी मिला कर काटे हुए सांप वाले को खिलादो और काटने के स्थान पर भी लगादे। ( ३ ) लाल फिटकरी, नोसादर, तूतिया इन तीनों को पीस सांप काटे घाव में भरदे यदि घाव न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो चाकू से करले, इसके करने से खून निकलना जारी हो जावेगा। १० मिनट के अन्तर पर बार २ करता रहे और उपरोक्त औषधि ही रोगी को जब तक चेत न हो बारम्बार पाव २ घंटे के पीछे खिलाता रहे अवश्य ही आराम होगा। आक के पत्ते की सफ़ेदी नाखून से उतार जमा कर लेवे उसमें आक के पत्ते का दूध मिलाकर चने के बराबर गोली बनाले आध २ घण्टे पीछे एक एक गोली दे सातवीं गोली कड़वी मालूम होगी और रोगी अच्छा हो जावेगा (४) जहां पर सांप काटे उस स्थान को कुछ छोड़ कर एक डोरी से कड़ा करके बांध दे और फिर चाकू से खून निकाल गर्म शलाखों से दाग़ देवे और जहां बांधने की जगह न हो छुरी आदि से छील दाग़ दे अथवा बोंबी से वायु निकलावे।

कुत्ता—(१) लाल मिरच को पीस कर भरदे, ऊपर से तेल डाल कर तांबे के पैसे बाँध दे। ( २ ) जमालगोटे की मींग जला कर भर दे। ( ३ ) कुचला पीसकर लगा दे। कुत्ते का गू जलाकर लगावे या घोंग्वार का पट्टा एक ओर छोल नमक बुरक कर बाँध देवे।

बिच्छू—१—मूली के पत्ते का रस लगा दे। २—काशी फल के ऊपर जो डण्ठल होता है उसको घिस कर लगा देवे। ३—जमालगोटा पानी में घिस कर लगादे। ४—चिरचिरा पीस कर लगादे। ५—औंधा पेड़ की लकड़ी को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने हाथ में रखले। ६–पानी में दियासलाई के मसाले को घिसकर लगा दे। कटी हुई जगह पर नौसादर मले और नौसादर बाँध पानी की धार दे। ७–खांड को पानी में मथकर बिच्छू के काटने की जगह पर लगादे।

कांतर—के ऊपर कड़ुवा तेल डाल दो टुकड़े २ होकर मरजायगी। ( २ ) मूली के पत्ते का रस निचोड़ दो तो तुरन्त ही छुट जायगी। काशीफल का डण्ठल ले पानी में पीस कर लगावे।

मकड़ी—( १ ) नीबू के रस में चना पीस कर लगावे, अमचूर घिस कर लगादे।

मक्खी—घी को लोहे से घिसकर लगादे। मक्खी का गू ही लगादे। कंडा की राख पानी में भिगोकर लगावे।

ततैया—( १ ) पानी में काग़ज़ भिगोकर रख दे। ( २ ) खाने का चूना या नौसादर लगादे। मट्टी का तेल वा टिंगचर और इतर भी लगा सकते हैं। गेंदे की पत्ती मले या शहद घी बराबर मिला कर मले।

## विषों को उतारने की रीति

चूहे—सरस की जड़ बकरी के पेशाव में घिस कर लगाये।

( १ ) अफ़ीम का विष उतारना हो तो हींग को पानी में घोल कर पिलावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( २ ) रीठे का जल या सुहागा चौकिया घी में पीस सुंघावे।

( ३ ) फिटकरी का चूर्ण और निबौली का सत। (३) नारी के पत्तों का रस पिलावे ( ४ ) चौलाई वा अरहर के पत्तों का रस पिलावे ( ५ ) जिसने अफ़ीम खाई हो उसको सोने न दे और टहलाता रहे।

संखिया का विष—उतारना हो तो गूलर की छाल औटा कर पिलावे अथवा कत्था खिलावे और पिलावे।

धतूरे का विष - अदरक का रस पिलावे। (२) निबौली की मींगी घोट कर पिलावे। ( ३ ) बैंगन या उसके पत्तों को पानी में पीस पिलावे।

सोंगिया का विष—नारङ्गी का रस पिलाने से उतर जाता है।

भंग—इमली का पत्ता खावे, अरहर की दाल उबाल कर दें।

## दीमक से बचने के उपाय

जहां दीमक लगने का भय हो वहाँ पर कपूर और तम्बाकू को बराबर ले पीस चौथे आठवें दिन बुरका दिया करे। हींग घोल पानी छिड़कने, अथवा नीम का खली का बुरादा बुरके।

## उपयोगी बातें

माणिक्य, मूंगा, इन्द्रनील, गोमेद, बैडूर्य, मोती, पुखराज, पाची, बज्र यह ९ रत्न हैं। माणिक्य लाल, मंगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पीला, रक्तकांति, पुखराज पीला जिसमें स्वर्ण की झलक हो, इन्द्र नील कृष्ण सजल मेघ के समान कांति, गोमेद किंचित् पीला लाल और वैडूर्य में बिल्ली के नेत्र की काँति तुल्य लकीरें होती हैं।

मोती—लाल, पीला, सफ़ेद श्याम कांति वाले उत्तम हैं। पाची-मोर वा बांस के समान वर्णवाली अच्छी होती हैं। तारों के समान चमक वाला वज्र होता है। इन सब में जो रत्न हलके और बड़े होते हैं उनका मूल्य अधिक होता है गोल आकार वालों का मूल्य सबसे अधिक होता है।

## मोती की परीक्षा

मोती बनाये भी जाते हैं इसलिये उष्ण जल में रात्रि को भिगो दे, प्रातः धानों से मले, यदि मैला न हो तो उत्तम वरन् खराब अर्थात् बना हुआ जानना चाहिये।

गौ—जिसके सींग अच्छे, दुहने में सुशील, बहुत दूध दे बछड़ा अच्छा हो तरुण हो, चाहे छोटी हो।

बैल- जिसके सींग अच्छे, हों बलवान हो बोझ ले जाने में समर्थ हो तेज चलता हो, आठ बिलस्त ऊँचा हो, जिसकी तालू और जीभ नीली हो दांत टेढ़े हों। और जिसके दाँत न हों, जिसको बड़ा बैर हो जिसमें बहुत मद हो और जिसकी पीठ कांपती हो, जिसके अठा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रह से कम नख हों जो मन्द हो जिसकी पूंछ भूमि पर लटकती हो उसको न मोल ले। और इसके विपरीति उत्तम होते हैं। उनके मद्र, भद्र मृग, मिश्र ये चार भेद हैं।

भद्र—जिसके दाँत मधु के समान और बलवान् जिसके अङ्ग सम हों आकार गोल, सुन्दर मुख और अङ्ग अच्छे हों।

भद्र—जिसकी कोख स्थूल हो, सिंह के समान दृष्टि हो गला और शूंड बड़े हों, अङ्ग मध्यम हों लम्बी कमर हो।

मृग—जिसके कण्ठ, दांत, कान, शूँड ये सब पतले हों, नेत्र, हृदय और ओष्ठ बड़े तथा जो छोटा हो।

मिश्र - इन सबके चिन्ह जिसमें मिलें वह गज मिश्र कहाता है।

अँगुलो से नापा जाय उसको माप कहते हैं, बाँटों से जो तोला जाय उसे उन्मान—किसी पात्र से नापा जाय उसे परिमाण और कौड़ी से लेकर रत्नपर्यन्त को द्रव्य और पशु-वस्त्र आदि को धन कहते हैं।

## हीरे की पहिचान

साफ़ हीरे के नीचे उँगली रख देने से यदि उँगली की रेखा ऊपर दीखे तो झूंठा यदि न दीखे तो सच्चा। एक काग़ज में छेद करे और होरे में से देखे यदि एकही छेद दीखे तो सच्चा वरन् झूंठा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## कस्तूरी की पहिचान

चार पांच लहसुन के जवों को पत्थर पर महीन पीसकर बिलस्त भर तागे को उसमें भिगो सुई में पिरो नाभे में छेद कर डोरे को खींचले यदि नाभे के भीतर उत्तम कस्तूरी होगी तो लहसुन की दुर्गन्धि जाती रहेगी कस्तूरी की सुगन्ध उसमें आजावेगी।

## खुली कस्तूरी की परीक्षा

बहुधा ठग कोयले आदि वस्तु को महीन खाक कर कस्तूरी को पानी में घोट उसी में खाक को तर कर साया में सुखा लेते हैं इसी प्रकार दो तीन पुट देकर मेलों में जाकर बेचते हैं। उसकी परीक्षा के लिये एक रवे को आग पर धर उसकी सुगन्ध को ले यदि असली होगी तो बराबर धुआं सुगन्धित निकलता जायगा नहीं तो पहिले सुगन्धित फिर सुगन्धरहित।

कस्तूरी के गुण—गर्म, बात, श्लेष्मानाशक, धातु उत्तेजक, बाजीकरण अग्नि और बलवर्द्धक होती है। खुराक आधे चावल से चार चावल तक, धनाढ्य लोग जाड़े में पान में रखकर खाते हैं शीत मिजाज वालों को अति लाभदायक है।

कस्तूरी की गोली—कस्तूरी ६ माशे, अनबिधे मोती १ तो०, जावित्री १॥ तो०, केशर २ तो०, जायफल २ तो०, छोटी इलायची और अकरकरहा, कालीमिर्च

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दो २ तो०, कपूर छः माशे, कुचला या कुचले का सत् ४ चावल, सोने के वर्क १०, चांदी के वर्क २० ।

बनाने की विधि—मोतियों को पक्के खरल में गुलाब के अर्क में ४ पहर घोट ले और कुचला को शोध ले, और न डाले तब भी कोई हानि नहीं सबको खरल में डाल २ तोला शहद और गुलाब के अर्क में घोट मटर के बराबर गोली बना साया में सुखा शीशी में बन्द कर रखदे, चौथाई गोली से दो गोली तक खावे इसके सेवन से शक्ति बढ़ती है, लकवा, गठिया, नपुन्सकता आदि रोग जाते हैं, खाने के समय तेल, मिरच, खटाई, बासी अन्न बाजरा आदि न खावे । दूध, मलाई, पुराने चावल का भात, मीठा सेव, अनार, पौंडे की गंडेरियां खावे ।

जल जाने की औषधि (१) जलते ही सेंक दिया जाय, (२) रेल के कोयले को तेल में पीस कर लगावे, (३) इमली की छाल को जला कर गौ के घी में मिला कर लगावे । (४) जलते ही आलू पीस कर बाँधे ।

---

# ऋतुकाल और गर्भ

देवियों ! मानव जाति की उन्नति और उसका पालन पोषण आपके आधीन है । उसका सुख और स्वतंत्रता आप पर निर्भर है । आपके वैद्यक के साधारण ज्ञान से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अनभिज्ञ होने के कारण बच्चे ही नहीं प्रत्युत समस्त मानव जाति प्रत्येक क्षण संशय में पड़ा रहता है तथा सहस्रों की संख्या में अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ अपने रोगों को बहुत छिपाती हैं जिसके कारण वह स्वयं भयंकर कष्ट उठाती हैं और अधमरी एवं निर्बल संतान छोड़ स्वर्ग सिधारती हैं। इसलिये आवश्यक है कि देवियाँ वैद्यक ज्ञान को प्राप्त करें ताकि वे स्वयं अपना और अपनी संतान की साधारण चिकित्सा कर सकें।

यौवन के लक्षण— जब शरीर के अंग और उपांग भली भाँति बढ़ और पुष्ट होजाते हैं तो छाती फैल जाती है, स्तन बढ़ जाते हैं, आँतें परिपूर्ण होजाती हैं, गर्भस्थली का मुख योनि से मिल जाता है, शरीर में तेज और लावण्य उत्पन्न होजाता है, स्वर में गम्भीरता एवं माधुर्य्यता आजाती है। इसी समय रजोदर्शन आरम्भ होजाता है, परन्तु याद रहे कि इस समय शरीर पूर्ण रूप से नहीं बढ़पाता, हड्डियाँ छोटी होती है और अंग और उपांग निर्बल होते हैं। युवा गर्भ धारण के योग्य १६ वर्ष से पूर्व नहीं होती।

ऋतु—यह केवल मात्र गर्भ धारण करने के समय को बताने का चिन्ह है। यह प्रत्येक मास नियत तिथि पर अथवा दो एक दिन आगे पीछे होता है मासिक धर्म की गड़बड़ी से गर्भाशय विकार युक्त तथा स्वास्थ नष्ट होजाता है और स्वस्थ दशा में भारत जैसे गर्म देश में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


१३ साल से लेकर ४० व ४५ वर्ष की अवस्था तक जारी रहता है।

ऋतु होने के कारण—स्त्री के गर्भाशय में एक डिम्ब कोश होता है जिस में एक चर्मस्थली होती है। उसमें बेशुमार छोटे छोटे बुलबुले होते हैं। हर एक बुलबुले में एक छोटी सी थैली होती है। प्रत्येक मास एक बुलबुला पक कर गर्भाशय की चर्मस्थली पर उभरा हुआ दिखाई पड़ता है और फिर फूटकर उससे और गर्भाशय से रुधिर निकलने लगता है। इसी को मासिक धर्म तथा ऋतु कहते हैं। ऋतु का स्राव २ से लेकर ५ तथा ६ दिन तक रहता है।

उत्तम ऋतु की पहचान - जिस रज का रंग लाख के रंग के समान लाल हो, कपड़े पर लगा हुआ धब्बा धोने से छूट जाये, जो चिकना न हो, जिसमें दाह और शूल न हो, कम से कम तीन दिन और अधिक से अधिक चार दिन तक, न बहुत और न कम ही हो, वह शुद्ध रज कहलाता है।

मासिक धर्म में सावधानी—इसके ठीक समय पर होते रहने से प्रत्येक स्त्री का शरीर निरोग बना रहता है। इसमें खराबी आने से ही बड़े २ भयंकर रोग अपनी जड़ जमा लेते हैं इस हेतु इस समय बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। ठंडी हवा और ठंडा जल, बर्फ़, ओस, खराब हवा, बाहर घूमना, परिश्रम करना, क्रोध, चिन्ता, उपवास,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शृंगार, पतिदर्शन, अति स्नान, ठंडे वादी एवं कामोद्दीपक पदार्थों का भोजन, दिवाशयन से बचना चाहिये। सारी बुराइयों से दूर रहे। रजोनिवृत हो शुद्ध स्नान कर शृङ्गार आदि करे।

गर्भ स्थिति समय—मासिक धर्म के आरम्भ होने से लेकर १६ दिन तक ऋतु काल माना गया है—इन्हीं दिनों में गर्भस्थली का मुख खुला रहता है। इस हेतु इसकी पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, ग्यारहवों और तेरहवी रात्रि तथा अष्टमी, पूर्णमासी, अमावस्या एकादशी तथा तेरस छोड़ देनी चाहिये। छठे, आठवें, दशवें, बारहवें और चौदहवें दिन के गर्भ में पुत्र बाकी दिनों में पुत्री होती है।

गर्भाधान संस्कार—सोलह संस्कारों में इसका वर्णन इसी पुस्तक में अन्यत्र किया है।

गर्भाधान विधि—इस विषय का पूर्ण रूप से हमारी बनाई हुई "गर्भाधान विधि" नामक पुस्तक में विवेचना की गई है।

गर्भ स्थिति और वृद्धि—स्त्री पुरुष के रज वीर्य्य के संयोग से गर्भ स्थित होता है और बढ़ने लगता है तो गर्भाशय की झिल्ली में तबदीली होने लगती है और वह मोटी होजाती है। तीसरे मास में एक दुहरी थैली गर्भ के बाहर होजाती है जिसका बाहरी भाग खुरदरा और भीतरी चिकना होता है। चिकना भाग पानी से भरा रहता है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और उसी में बच्चा तैरता रहता है। बच्चे की टूँढ़ी से नाल निकल कर बाहरी भाग को ओर जा लगता है।

तीसरे मास के अन्त तक जरायु बन जाता है। इसके दो भाग होते हैं। एक वह जिसमें माता का खून दोरा करता है दूसरा वह जिसमें बच्चों की रगें होती हैं। इसकी बनावट से यह लाभ होता है कि बच्चे का रुधिर मां के रुधिर के निकट बहता है केवल रगों की महीन दीवारों द्वारा प्रथक रहता है और मां तथा बच्चे के खून का लेन देन आसानी से होता है।

प्रथम मास में स्त्री को इसकी स्थिती का पता नहीं लगता क्योंकि तीस दिन में एक कीड़े के तुल्य आकार होता है पश्चात २ महीने में उसके अंग उपांग बनने लगते हैं और तीसरे महीने सब बनकर तैयार हो जाते हैं, चौथे मास मस्तिष्क से लेकर अन्य सब अवयव बढ़ने लगते हैं, पाँचवें मास बालक के शरीर में विशेष कर वृद्धि होती है। छटे महीने केश और पुत्र पुत्री के चिन्ह साफ़ दीख पड़ते हैं। सातवेंमास सारे अंग उपांग बन पूर्णता को प्राप्त होकर आठवेंमांस पुष्ट होकर नवेंमास में उत्पत्ति होजाती है।

गर्भ में बालक की वृधि—बालक की वृद्धि माता के रुधिर से होती है। बालक का नाल माता के गर्भ में स्थित फूल के साथ मिला होता है। यही फूल गर्भिणी के रुधिर को शोषण कर इसी नाल द्वारा बालक की देह में डालता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रहता है। इस नाल में तीन रगें होती हैं जो एक दूसरे पर पेच की तरह लिपटी रहती हैं। इनमें से दो रगों द्वारा मैला खून जरायू की ओर जाता है और एक के द्वारा साफ़ किया हुआ खून जरायू से बच्चे की ओर आता है।

गर्भ के लक्षण—तीसरे मास के अन्त तक (१) मासिक धर्म का बंद होना, (२) तलपट का बढ़ना और उसके मुख का मोटा होना (३) स्तनों का भारी होना, फूल जाना और उनके मुख का रंग बदल जाना (४) स्तनों में दूध का आजाना (५) गुह्य इन्द्री का रंग बैंजनी होना (६) सवेरे जी का मचलना, व क़ै का होना, खान पान में अरुचि (७) रुचि का बदल जाना।

पांचवें मास में—बालक की हरकतों का मालूम होना, बालक के दिल का धड़कना, तलपट का सुकड़ना।

सातवें मास में—पेट की दीवारों पर सफ़ेद लकीरों का दिखाई देना, स्वांस लेने में कष्ट।

आठवें व नवें मास—रागों में अकड़ाई, पेशाव का शीघ्र २ आना, अजीर्ण का रहना और बवासीर का कभी २ होजाना।

झूठा गर्भ या गर्भ का वहम—यद्यपि गर्भ नहीं होता तो भी गुमान होता है कि गर्भ रह गया है किन्तु यह बीमारी होती है। मासिक धर्म के बन्द होने से अथवा बे क़ायदे होने से अजीरण और बादी से पेट फूल जाता है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वमन होने लगती है छातियां बढ़जाती हैं दूध भी आजाता है, परन्तु एक दो मास में यह सब चिन्ह काफ़ूर होजाते हैं ।।

यदि पेट फूल जाने की अवस्था में स्वयं अच्छी तरह परीक्षा न कर सको तो डाक्टरनी से परीक्षा कराओ वह क्लोरोफ़ार्म सुंघाकर शरीर के अंगों को ढीला कर बता देगा कि गर्भ बढ़ा है या नहीं। जलोधर तथा रसोलियां के कारण भी पेट बढ़ जाता है और गर्भ का शक होने लगता है।

गर्भावस्था में सावधानी—इस समय गर्भिणी को अपने शरीर और मन के स्वस्थ रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये। चिन्ता, भय, शोक आदि मानसिक व्याधियों से सदा दूर रहे, दौड़ना, कूदना, उछलना, धमक कर किसी स्थान पर पैर रखना, सफ़र करना, जल में तैरना, अधिक परिश्रम करना, अधिक सोना, अधिक जागना, दृष्टि पर ज़ोर डालना, अति गरम वस्तुओं को सेवन करना अथवा भूख रोकना, मैला कुचैला रहना, ज़ोर से बोलना, मल मूत्र के वेग को रोकना, दस्तावर वस्तुओं का खाना हानिदायक है। इनसे गर्भस्राव अथवा गर्भपात होने का भय रहता है।

गर्भ स्राव व गर्भपात के लक्षण—(१) शक्ति का एकाएक क्षीण होना, चित्त का व्याकुल होना, जी का ऊबना और दिल का डूबना, कमर पेडू और दोनों जांगों में रुक रुककर वेदन होना, मूत्र स्थान से पानी का झरना।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गर्भ स्राव तथा गर्भपात का भेद—गर्भ रहने से चार मास तक गर्भ गिर जाये तो गर्भ स्राव और चार मास के पश्चात् गर्भ नष्ट हो तो गर्भ पात कहते हैं।

गर्भ स्राव या पात होने के कारण—अति परिश्रम, अति भोजन, रात्रि में अधिक जागने से, अधिक प्रसन्नता और अति शोक, भय, अति मैथुन, कूद फांद अथवा दौड़ धूप करने से माता की बीमारी से ज्वर से गर्भस्राव या पात होने की आशंका होजाती है। इसीलिये इन बातों से बचना चाहिये।

गर्भ स्राव—यदि गर्भस्राव का भय हो तो सतावर और दुद्धी का काढ़ा पीवे अथवा पक्के गूलर खाय गाय का दूध पीवे यदि रुधिर निकलना आरम्भ होगया हो तो सिंघाड़े खाय गाय का दूध पीवे। कमर से सच्चे मोती बांधे।

गर्भ स्राव व गर्भ पात में सावधानी—यदि गुह्य इन्द्री से खून जारी होगया और उसके साथ सच्चे दर्द भी उठें तो गर्भ नहीं ठहरेगा गर्भिणी को आराम से लिटा दो, हल्का भोजन दो परन्तु गर्म न हो।

गुह्य इन्द्री में उंगली डाल कर मालूम करो कि गर्भ का मुख खुलता जाता है या नहीं।

यदि गर्भस्राव या पात हो गया हो तो गर्भ में रहे हुये भाग को औषधियों तथा डाक्टर द्वारा निकलवा दो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अन्यथा गर्भिणी के खून जारी रहेगा—या टुकड़े भीतर सड़कर बुखार पैदा करेंगे या इकट्ठे होकर तलपट को खराब करेगा। गर्भपात होजाने के पश्चात् गर्भिणी को लेटा रहना चाहिये।

## गर्भ अवस्था के रोग और उनका उपचार

गर्भ अवस्था में प्रायः अनेक रोग हो जाया करते हैं इसलिये गर्भिणी को आरम्भ से ही खान पान, रहन सहन में बहुत सावधानी रखनी चाहिये जिससे बीमारियां उत्पन्न न हों। गर्भ अवस्था में किसी रोग के होने पर शीघ्र औषधि सेवन न करना चाहिये, प्रत्युत सदा सोच विचार करयोग्य वैद्य या डाक्टर की सम्मति से कार्य करना चाहिये।

गर्भ वेदना या पीड़ा – गर्भिणी को गर्भ के कारण बहुधा वेदना और पीड़ा होजाया करती है। यदि पहिले मास में गर्भवेदना प्रतीत हो तो इस समय गौ के दूध में पदमाख खस, लाल चन्दन, एक २ पल डाल पीवे अथवा मुलहटी देवदारू शीरकाकोली को पीस गौ दुग्ध के साथ पीवे। दूसरे महीने में पीड़ा होने पर सिंघाड़ा, कसेरू, सफ़ेद जीरा, बेल पत्र, छुहारा समान भाग में लेकर पानी में पीस दूध मिलाकर पीवे। तीसरे मास में चंदन सफ़ेद, खस, नागरमोथा, पद्माक कमलककड़ी पानी में पीस गाय के दूध में पिये। चौथे मास में नीलोफल की जड़, गोखरू, कसेरू को पीस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गौ दूध में पीवे। पाँचवें मास में दोनों कटेहरी कमलनाल को पीस दूध में पिये। छटे मास में गोखरू, सहजना, मुलैहटी, पृष्ठपर्णी, खरैटी को पीस गौ दूध में पिये। सातवें मास कसेरू, पोहकरमूल, सिंघाड़ा, नीलोफ़र को पीस गौ दुग्ध के साथ पिये। आठवें मास पीपल, कमल का फूल, कमलगट्टे की मींग और धनियाँ समान मात्रा में ले पीस गाय के दूध में पिये।

वमन—वमन की अधिकता से गर्भणी दुर्बल होजाती है और उसको महान कष्ट होता है। ऐसी अवस्था में खाने के चूने की हांडी में से थोड़ा पानी नितार कर दूध में मिला पिलावे या एक पोरुआ सिरका की चटनी चटादें या गेरू को आग में ख़ूब गर्म कर पानी में बुझा ले और उस पानी को पिलावे या बड़ की जटा की राख शहद में मिलाकर खाये अथवा कपूरकचरी को पानी में बारीक पीस मूँग की बराबर गोली बनाले और उस मुख में डाले रहे। गरिष्ठ भोजन कदापि न करे।

अजीर्ण—गर्भाशय का बोझ गुदा पर पड़ने से होता है। बिना भूख खाना कभी न खाये। खुली हवा में प्रातः सायं धीरे २ टहलें। प्रातः पाखाने जाने से पूर्व ठंडा पानी दो घूँट पीले। साबूदाना, दलिया खाये, दूध पीवे। दो तोले गुलकन्द सौंफ़ के साथ खाले। अधिक कब्ज़ होजाने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पर मुनक्का दो तोले, गुलाब के फूल एक तोला और दो अंजीर पीसकर सोते समय खाये।

अफ़रा—बच, रसोत, हींग और काला नमक दूध में औटाकर पीवे।

दस्तों का जारी होना—यह रोग प्रायः दलिया, साबूदाना आदि हल्का भोजन करने और फल खाने से स्वयं जाता रहता है।

बवासीर—यह गर्भाशय और भरी हुई गुदा के बोझ से होती है। दबाव से नसें फूल जाती हैं और खून बन्द होजाता है प्रातः साफ़ दस्त आजाने के लिये रात्रि को दूध में घी या बादाम का तैल डालकर पीवे अथवा मुरब्बे की हरड़ खाये या त्रिफला का सेवन करे। यदि मस्से बाहर निकल आये हों तो उनको गर्म पानी के टकोरों से धो देवे।

पेशाब का रुकना—हज़रत ज़हर पत्थर को पानी में घिसकर पिलावे अथवा कुश, कांस और दूब की जड़ पानी में औटाकर पीवे या वारलीवाटरपीवे अथवामूत्र स्थान में एक रेशा असली केसर रख दे।

वायू के बढ़ने पर—पाँच बादाम और एक माशे गेहूँ की भुस्सी को जल में पीस छान कर पीवे।

ज्वर—लाल चन्दन, खस, मुलेठी, धनिया, नेत्रवाला, दारवा, गौरीसर और मिश्री को समान भाग में ले काढ़ा कर पीवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मुंह में पानी आना—फिटकरी या बबूल के पत्ते और अमरूद के पत्ते के पानी से कुल्ले करें।

दाँतों का दर्द—गर्भावस्था में यह दर्द बिना किसी खराबी के उठा करता है ऐसी अवस्था में दाँतों को निकलवाने में कोई लाभ नहीं होता है। दाँतों को साफ़ रखना चाहिये और कड़वे तेल और नमक को मिलाकर दाँतों से मल लेना चाहिये।

खाँसी—पहिले मासों में बिना कारण और अन्तिम मास में गर्भाशय के दबाव जो फेंफड़ों पर पड़ता है, होती है। पोदीना या मुलेठी खाने से यह रोग चला जाता है यदि न जाये तो योग्य वैद्य या डाक्टर से उपचार करावे।

ग़शी—इस अवस्था में गर्भिणी को लिटादे और मुख पर पानी छिड़के। अथवा योग्य वैद्य या डाक्टर द्वारा दवा कराये।

नसों का फूल जाना—गर्भिणी को अधिक चलने फिरने न दो और जब वह लेटे तो खाट के पांइत के पायों के नीचे ईंट लगाकर ज़रा ऊँचा कर दो।

सूजन—यदि सूजन के साथ, दर्द और ग़शी हो तो डाक्टर द्वारा तुरन्त दवा कराओ।

पेशाब का रुकना या रुक कर आना—योग्य डाक्टर एवं वैद्य द्वारा इलाज कराये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सफ़ेद पानी का जारी होना—फिटकरी के गुन गुने पानी से गुह्य इन्द्री को धोवे या पिचकारी लगावे।

इनके अतिरिक्त और भी बीमारियां हैं किन्तु प्रत्येक अवस्था में योग्य वैद्य एवं डाक्टरों द्वारा इलाज कराये।

गर्भाशय का अपनी जगह से टलना—यदि नीचे को गिर-जाये और गर्भवती को कष्ट हो तो छल्ला लगाकर गर्भाशय को दो तीन मास तक सहारा दो।

आगे का गिरना—पीटीएसे बांधे जिससे पेट के नीचे के भाग को सहारा मिले।

पीछे का गिरना—तो पेशाव की नाली पर दवाव पड़ता है, पेशाव रुक २ आता है, मासने में दर्द, गुदा पर दवाब होने से अजीर्ण हो जाता है। गर्भ गिर जाने का भय होता है ऐसी अवस्था में डाक्टरनी को बुलाओ।

नोटः—गर्भवती को बुख़ार, चेचक, निमोनियाँ, दिल की बीमारी, तपैदिक, पांडूरोग, अधिक पेशाब आना, आतिशक आदि बीमारी से हानि होती गर्भ गिर जाता है या बच्चा मर जाता है।

## धात्रि शिक्षा और प्रसव

आजकल भारत में यह कार्य्य प्रायः नीच श्रेणी की अपढ़ और मूर्ख एवं सदा गंदी रहने वाली जाति की स्त्रियाँ ही करती हैं जिनकी मूर्खता, असावधानता एवं दूषित प्रणा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लियों के कारण अधिकांश स्त्रियाँ जन्म भर दुःख उठाती हैं। देवियो ! नवजात शिशु एवं प्रत्येक स्त्री के जीवन मरण का भार इस विद्या के ज्ञान पर है, इसलिये इसका ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक स्त्री के लिये परम आवश्यक है।

प्रसूतिगृह—यह यथेष्ट बड़ा और इसका द्वार उत्तर वा पूर्व को होना चाहिये जिस से ठंडे हवा के झोंके और गर्म हवा की लू न पहुंच सके। नीचे का फ़र्श, दीवारें सील और दुर्गंध रहित, सुन्दर लिपी, पुती प्रकाश पूर्ण हों तथा सूर्य्य की किरणें उसमें भली भाँति आ, जासकें और पानी निकलने के लिये मोरी हो। इस कमरे के सामने बरामदा ज़रूर होना आवश्यक है जिससे प्रसूता अकेली न रहे।

प्रसूति घर में रखने योग्य सामिग्री—पलंग ,खूब कसा हुआ, बिछौना ऋतु के अनुसार परन्तु नरम और गुदगुदा होना चाहिए, ओढ़ने को चादर कम्बल, बदलने के लिए धोती, क़मीज़, मोमजामा या बरसाती बालक के लिए पुराने कपड़े की बिछौनियां १० (नये कपड़े की बिछौनियाँ से बालक का शरीर छिला सा होजायगा) दश बारह, मोटे, परन्तु साफ़ सुथरे और धुले हुए पुराने गाढ़े के पोतरे, ज़च्चा के काम में लाने के लिए साफ़ व धुला व फटा गूदड़, नाल काटने के लिए तेज़ धार वाली क़ैंची या अस्तुरा, नाल बाँधने के लिए रेशम अथवा डोरा, समय जानने के लिए ठीक टाइम देने वाली घड़ी, मिट्टी का ऐसा बर्तन जिसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बालक को स्नान कराया जासके, पानी डालने के लिए करुआ, कुछ तेल एवं बेसन सोंठ अजवाइन और गुड़, धुनी हुई रुई गर्म दूध और पानी, दहकती हुई आग, जच्चा के पेट पर लपेटने वाली साफ़ गाढ़े की आठ अंगुल चौड़ी, ४, ५ गज़ लम्बी पट्टी, तेल का दीपक जो सर्वदा प्रसूता के सिरहाने रखा रहे, गर्म एवं ठंडे जल के बर्तन, यह सब चीज़ें पहिले ही इकट्ठा कर लेना चाहिए ताकि समय पर इधर उधर देखना न पड़े और प्रसूता को कष्ट न हो।

प्रसूत समय अधिक स्त्रियों का जमघट नहीं करना चाहिए और न शोर गुल होने दे। उसके पास केवल चतुरदाई और उसके कार्य्य में यथेष्ट सहायता एवं सब प्रकार प्रसूता की सेवा सुश्रूसा करने, प्रेमयुक्त उत्साह, वर्धक शब्दों द्वारा प्रसूता को ढाड़स बँधाने वाली दो तीन स्त्रियों का रहना आवश्यक है।

प्रसव काल—इसका नियत समय बताना बड़ा कठिन है परन्तु बच्चा उत्पन्न होने के एक दो सप्ताह पूर्व ऐसे चिन्ह प्रकट होने लगते हैं जिनसे ज्ञात होजाता है कि अब प्रसव काल निकट है।

गर्भाशय से बच्चा पेड़ू में उतर आता है जिससे पेट छोटा, ऊपर से ढीला मालूम होने लगता है, शरीर हल्का और स्वांस लेने में आराम ज्ञात होता है। जांघो और मसाने में पीड़ा बढ़ जाती है, पेशाब और पखाने की हाजत जल्दी २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होती है, कभी २ इन स्थानों में जलन भी होने लगती है, कमर और कोख में दर्द होता है। इस समय गर्भाशय की गर्दन छोटी होने लगती है और योनि से कफ़ के सदृश लसदार पानी बहने लगता हैं।

बालक पैदा होने के समय के चिन्ह—(१) पीड़ा के उठते ही गर्भाशय का सुकड़ना (२) लसदार पानी का खून के साथ मिली हुई अवस्था में निकलना (३) गर्भ का मुख नर्म होकर खुलने लगना।

प्रसव पीड़ा—यह दो प्रकार की होती है—एक झूठी दूसरी सच्ची।

झूठे दर्द—बे क़ायदे उठते हैं और उनका कोई प्रभाव गर्भाशय पर नहीं होता, यह अजीर्ण से होते हैं और शौच के पश्चात् नहीं रहते।

सच्चे दर्द—कमर से आरम्भ होकर पेड़ू की ओर आते हैं—यह बराबर होले २ बराबर समय पश्चात् उठते हैं, बढ़ते जाते हैं और फिर होले २ कम होजाते हैं। यदि गर्भणी के पेट पर हाथ रखे तो गर्भ सुकड़ता हुआ मालूम होता है गर्भ का मुख पानी की थैली के दबाव से दर्द के समय तन जाता है।

यह दर्द तीन भागों में बांटा जासकता क्योंकि आरंभ से अन्त तक तीन बार बड़े ज़ोर से उठता है। पहिले दर्द में गर्भाशय का मुख खुल जाता है दूसरे में बच्चा निकल आता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है और तीसरे में आंवल खारिज होता है। यदि प्रसव पीड़ा अधिक हो तो नाभि पर अंडी का तेल लगावे तथा गर्म दूध अथवा वच उबालकर पिलावे।

पहिला दर्द—यह दर्द उस समय तक रहता है जब तक कि गर्भाशय पूर्ण रूप से खुल न जावे तथा पानी के थैली जिसमें बच्चा रहता है फट न जाये। इससे गर्भ के सुकड़ने से गर्भ का भीतर और बाहरी मुख खुल जाता है। गर्भ का मुख पानी के थैली के दबाव से खुलता है। इसमें कभी २ कै आजाती है और जच्चा कांपने लगती है परन्तु इसका कुछ डर नहीं। इस दर्द के अन्त मेंपानी की थैली फट जाती है। यदि यह थैली न फटे तो फाड़ देना चाहिये ताकि बच्चा शीघ्र होजावे और अगर थैली दर्द के आरम्भ में फट जाये तो बच्चे के होने में देरी बहुत होजाती है।

दूसरा दर्द—जब थैली या झिल्ली फट जाती है और बालक का सर बच्चादानी के मुख पर आजाता है तब गर्भाशय ज़ोर से सुकड़ने लगता है और दर्द ऐसे होने लगते हैं कि प्रसूता लंबी सांस लेकर अपना सारा ज़ोर नीचे को लगाता है, रान और पेड़ू में दर्द जोर से होता है थकावट भी बढ़ जाती है। यह दर्द रह रहकर हुआ करता है। इस दर्द में बालक का सर बाहर को आता है त्योंही उसका ज़ोर प्रसूता की सीवन पर पड़ता है—पहलौटी स्त्री की सीमन को दांई हाथ का सहारा दिये रहे—सर के निकलते वक्त बहुत ज़ोर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का दर्द होता है और प्रसूता चीख़ मारती है और इस चीख़ से सीमन का दबाव कम होजाता है। सर के निकलने के पश्चात् बालक आसानी से निकल आता है और दर्द का दूसरा दर्जा समाप्त होजाता है।

तीसरा दर्द—आंवल निकलने के लिए होता है यह पहिले दर्दों से हलका होता—किन्तु आंवल निकलते समय ज़ोर पकड़ जाता है। आंवल ( जरायु ) के साथ .खून भी आता है जब तक आंवल न निकल जाये बच्चे को मां से प्रथक न करे।

प्रसूता को ध्यान रखने योग्य बातें—प्रसूता को प्रसन्न चित रहना चाहिए। दर्द आरम्भ होने पर टहलने, बैठने, या कुर्सी व पलंग पर झुक कर खड़े होने अथवा जिस तरह आराम मालूम हो उसी प्रकार अपने आपको रक्खें। टहलने से गर्भाशय के मुख के खुलने में सहायता मिलती है। गर्म दूध के अतिरिक्त और कुछ भोजन न करे। पेट, एवं गुदा के ख़ाली रहने से प्रसूता को प्रसव में सहायता मिलती है।

दर्द के प्रथम भाग में ज़ोर कदापि न करे, अन्यथा दर्द के दूसरे भाग में जब ज़ोर की ज़रूरत पड़ेगी तो उसमें कमज़ोरी के कारण ज़ोर न कर सकेगी।

पीठ में जब दर्द हो तो दाई पीठ को दबाव दे और यदि पेट में .दर्द हो तो दाई से पेट पर हाथ रखवा कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गर्भाशय इस प्रकार दवावे कि जिससे आराम मिले। ऐठन बहुत होवे तो पीठ व जांघों को दाई से मलवावे और यदि दर्दों की बीच नींद आजावे तो अच्छा है, इस से थकान कम होजाता है।

दर्द के दूसरे भाग में कभी न टहले किन्तु पलंग पर लेट जाये टहलने से बालक के गिरने का भय रहता है।

बच्चा के उत्पन्न होजाने के पश्चात् माता को चित लेटना चाहिए और छः सात घण्टे इसी प्रकार लेटी रहे। थोड़ा सा गर्म दूध पीवे और कमरे में अँधेरा करा लेवे और कोई बाहर भी बात चीत न करे ताकि प्रसूता सोजाये और उसकी थकावट जाती रहे।

## साधारण बल पैदा होना तथा सर का पेड़ू में होकर गर्भ से निकलना

परमपिता परमात्मा की दया से पेड़ू से गुज़रते समय सर की ऐसी गति होती हैं जिनसे सरका छोटा भाग चांद से गुद्दी तक आर पार हो जाता है।

सरकी गति—यह गति चार प्रकार की होती है और एक दूसरे के पीछे स्वयं होती जाती हैं (अ) झुकना, (आ) घूमना, (इ) सीधे होना, और (ई) पुनः घूमना,

(अ) झुकजाना—जब गर्भाशय का दवाव बालक की पीठ की हड्डी द्वारा सर पर पहुँचता है तो पीठ की हड्डी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के गुद्दी से मिले होने के कारण दवाब का प्रभाव पेशानी के बजाय गुद्दी पर होता है और इसीलिये सर छाती पर झुक जाता है और सरका सबसे छोटा नाप पेड़ू के तिरछे नाप के बराबर होकर सर नीचे को उतरता है।

(आ) घूमजाना—पेड़ू की दीवार की तिरछाई के कारण पेड़ू के जोफ़ में पहुंचकर झुका हुआ सर तिरछे नाप से आगे पीछे के नाप में आजाता है और सरका लम्बा नाप पेड़ू के लम्बे नाप के बराबर होजाता है।

(इ) सीधे होना—जब गुद्दी नीचे पहुँच जाती है और आगे को बढ़ नहीं सकती तो दवाब सर के सामने का पेशानी पर पड़ता और वह आगे बढ़ जाती है जब तक कि मुँह बाहर को न निकले।

(ई) पुनः घूमजाना—सर के बाहर निकल जाने के पश्चात् बच्चे की गुद्दी फिर उसी ओर को घूम जाती जहां पहले थी और उसका मुँह मांकी दूसरी टाँग की ओर हो जाता है। इस हरकत से बच्चे के कंधे गर्भ की गर्दन के बाहरी ओर लाँवे नाप में मुड़ जाते हैं फिर दाहना कन्धा नीचे आता है और उसके पश्चात् बायां कंधा निकलता है।

साधारण अवस्था में सर नीचे को होता है और बालक के सर के बल चार रुखों में से किसी एक रुख़ आता है।

चार रुख़—गर्भाशय के दायें और बायें दो रुख़ होते हैं और बालक की गर्दन की पीछे की गुद्दी सामने को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है या पीछे को होती है। इस प्रकार पेड़ू में बालक चार रुखों से आता है। अर्थात् ( १ ) गद्दी सामने को हो और माता की बाईं ओर हो ( २ ) गुद्दी सामने हो परन्तु माता की दाहिनी ओर हो ( ३ ) गुद्दी पीछे और माता की दाहनी ओर ( ४ ) गुद्दी पीछे और गाता की बाईं ओर।

( १ ) जब गुद्दी सामने और मा की बाईं ओर हो तो पेशानी से लेकर गुद्दी तक अर्थात् सरका लम्बा नाप पेड़ू के किनारे के बराबर होता है। परन्तु पेड़ू से गुज़रते समय सरकी गति से अर्थात् झुक जाने, घूम जाने, सीधे होने ओर पुनः घूम जाने के कारण सर पेड़ू से आरपार हो जाता है, और बालक का मुख मां की दाहनी टांग की ओर आजाता है।

(२) दूसरे रुख़ में जब गुद्दी सामने और माता की दाहिनी ओर हो तो भी पहिले की भांति चारो गति होती है। सर पेड़ू में दाहिनी ओर से आता है इसलिए चौथी गति में बालक का मुख मांकी बांईं ओर घूम जाता है।

(३) तीसरे रुख में जब गुद्दी पीछे और मां की दाहिनी ओर हो तो गुद्दी पीछे से लेकर सर पेड़ू के दाहिने तिरछे नाप में आता है परन्तु दूसरी गति में सर उतना घूम जाता है कि दूसरे रुख की तरह गुद्दी आगे कूल्हे के सामने की हड्डी के नीचे आजाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(४) चौथे रुख में वैसे ही घूमने से सर पहले रुख के अनुसार आता है।

## बालक का असाधारण बल पैदा होना

कभी कभी साधारण बल पर न आकर बालक असाधारण बलों से आता है और इस अवस्था में विशेष सावधानी की ज़रूरत है क्योंकि प्रसूता व शिशु दोनों के जीवन को आशंका होती है।

(१) तीसरे व चौथी रुख की अवस्था में यदि दूसरी गति पूर्ण रूप से न हो तो पेशानी आगे रह कर कूल्हे की सामने की हड्डी में रह जाती है और गुद्दी पीछे रह कर सीवन से गुजरती है। सर छोटा और पेट बड़ा हो तो सर निकल जाता है परन्तु ऐसा न हो और देरी होती हो या दर्द रुकते हो तो सर निकालने के लिये औजारों की जरूरत होगी इसलिए डाक्टर को तुरन्त बुलाना चाहिए।

(२) बालक का मुँह के बल आना—इसमें ठोड़ी छाती पर नहीं झुकती अर्थात् इस बल में पहली गति नहीं होती। ठोड़ी के आगे पीछे तथा माता के दाहनी व बाईं ओर के हिसाब से सर के रुख की तरह मुँह के भी चार रुख होते हैं।

(अ) गुद्दी मां की बाईं ओर, और सामने हो, किन्तु ठोड़ी मां के दाहने और पीछे हो।

(आ) गुद्दी मां की दाईं ओर, और सामने हो, किन्तु ठोड़ी मां के बाईं ओर और पीछे हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इ) गुद्दी माँ की दाईं ओर, और पीछे हो किन्तु ठोड़ी मां की बाईं ओर सामने हो।

(ई) गुद्दी मां की बाईं ओर, और पीछे हो, किन्तु ठोड़ी दाहिने ओर और सामने हो।

इसके बल पहचानने के हेतु उंगली से टटोलना चाहिये यदि नाक, मुख, आंख मालूम हों तो विश्वास रखो कि सर मुख के बल आरहा है।

इस बल की अवस्था में बहुधा जब ठोड़ी पहले कूल्हे की हड्डी से नीचे आजाती है और माथा और गुद्दी सोंवन से गुज़रती है तो बालक के होने में बहुत देर लगती है और बालक मर जाता है। यदि ठोड़ी सोंवन की ओर हो तो भी बालक मर जाता है। इसलिए दाई तुरन्त डाक्टर को बुलाये शायद वह बालक को घुमा कर या औज़ारों द्वारा उसकी जान बचाले या ओपरेशन करे।

(३) माथे के बल आना—इस अवस्था में यदि ईश्वर की कृपा से सर छाती पर झुक जावे तो बालक साधारण बल होजाता है। यदि सर ज़्यादा पीछे को होजावे तो बालक मुंह के बल होजाता है। ऐसी अवस्था में डाक्टर को बुलाए और जब तक वह आवे और दर्द ठहर जावे तो उँगली भीतर डाल मुंह की ओर माथा दबाये रखे और बाहर से बालक की पीठ को नीचे और गुद्दी की ओर



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दबाए। प्रसूता को उस करवट रखो जिस ओर बालक के हाथ पैर हों शायद ऐसा करने से सर सीने पर झुक जावे और बच्चा साधारण रीति से पैदा होजावे।

(४) बालक का चूतड़, पैर आदि क बल आना—इस अवस्था में साधारणतया बालक चूतड़ के बल आता है किन्तु घुटने फैले हुए और पैर रान पर मुड़े हुए होने की अवस्था में घुटने और टांग पसरी हुई हो तो पैर आगे आते हैं। इस प्रकार जो बालक आते हैं वह प्रायः पूरे दिन के नहीं होते इसलिये छोटे होने के कारण आसानी से पैदा हो जाते हैं, परन्तु पूरे दिन के होने की अवस्था में प्रसूता व बालक दोनों के प्राण संकट में निम्न प्रकार पड़ जाते हैं।

(१) सर के साथ नाल के पेड़ू से गुज़रने की अवस्था में कूल्हे के सामने की हड्डी तथा सर के बीच नाल के दबजाने से ख़ून की गति बंद होकर बालक के मरजाने की अशंका रहती है।

(२) गर्भाशय के द्वार पर चूतड़ तथा पैर का पूरा दबाव नहीं पड़ता परन्तु थैली के फट जाने के कारण गर्भाशय ज़ोर से सकुड़ता है और सुकड़ने के ज़ोर का बालक के सर तथा शरीर पर इतना दबाव पड़ता है जिस से बालक की मृत्यु का भय रहता है और मर भी जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) जब आंवल गर्भाशय और बालक के सर के बीच दबकर खून की गति बंद होजाय।

(४) गर्भाशय के मुख पर चूतड़ आदि का दबाव पूर्णरूप से न पड़ने के कारण न खुले और प्रसूता को हानि पहुँचे।

कभी २ इस बल आने में बालक के पैर ऊपर कंधों में फँसे होते हैं ऐसी अवस्था में दाई को उचित है कि भीतर हाथ डाल एक एक कर कंधे से उतार घुटनों को झुका पैर को बाहर निकाल ले। उपरोक्त अवस्थाओं में दाई बड़ी सावधानी से काम ले और योग्य डाक्टर को तुरन्त बुलावे।

बालक का हाथ के बल आना—बालक का हाथ के बल आना बड़ा कष्टकारक एवं भयानक होता है। इस अवस्था में प्रायः प्रसूता तथा बालक दोनों को मृत्यु होजाती है या मरा बालक उत्पन्न होता है। डाक्टर को शीघ्र बुलाना चाहिए शायद वह दोनों जानों के बचाने के हेतु कोई ओपरेशन करे या प्रसूता के प्राण बचाने के हेतु बालक के टुकड़े २ कर निकाले।

जब टटोलने से ज्ञात होजाये कि बालक हाथ के बल आरहा है और पानी की थैली फटी न हो तो हाथ डाल सर को नीचे कूल्हे की ओर और चूतड़ को ऊपर की ओर ढकेल बाल को सर के बल कर पट्टी बांध दे। और यदि थैली फट गई हो तो सर या पैर जो बल भी घुमाने से आसानी से होसके उसे ही कर लेना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कभी २ इस भयानक अवस्था में परमपिता की कृपा से एक विशेष गति स्वयं ऐसी होती है कि हाथ निकला रहता है और उस गति में बालक का शरीर मुड़ जाता है। पहले पेट फिर चूतड़ उसके पीछे टांग व पैर बाद कन्धा और अन्त में सर निकलता है परन्तु ऐसा हज़ारों में दो एक ही बार होता है।

## दाई के कर्तव्य

दाई को सब से पहले पूछना चाहिये कि दर्द कब से उठ रहे हैं और किस प्रकार के हैं ? पहला गर्भ तो नहीं है यदि नहीं तो पहले बालक आसानी से पैदा हुये थे अथवा नहीं। पेशाव पाखाना कब हुआ है। प्रसव सम्बन्धी सब सामान तैयार है या नहीं। यदि नहो तो मंगाले। इसके पश्चात् प्रसूता को पीठ के बल लिटा पेट पर हाथ रख कर मालूम करे कि बच्चा किस रुख़ पड़ा है। सर किस ओर, और पीठ किस ओर को है। गर्भ सुकड़ रहा है अथवा नहीं। बालक गर्भ में फिरता है या नहीं है। कान लगाकर बालक के दिल की आवाज़ से मालूम करे कि बालक बली है या निर्बल। यदि बालक हरकत न करता हो तो तुरन्त योग्य डाक्टरनी द्वारा उसे निकालने का प्रबन्ध कराये।

दाई के नाखून यदि बढ़ रहे हों तो उन्हें कटा हाथ को कारबोलिक साबून और गर्म पानी से खूब साफ़ कर कारबोल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लोशन लगा गुह्य इन्द्री में उँगली डाल मालूम करे कि गर्भ का मुख सख़्त है या नर्म है, कितना खुल गया है, पानी के थैली फट गई है या साबित है, बच्चा किस रुख़ आरहा है, उसके लिये जगह काफ़ी है या नहीं, पाखाने का मुकाम खाली है या नहीं तथा गुह्य इन्द्री सूखी है, या तर है या गर्म है। यदि गर्भ का मुख नर्म हो और खूब फैलता हो तो प्रसव शीघ्र हो जायेगा और अगर सख़्त है तो देर लगेगी।

यदि गर्भ पहला हो और गर्भ का मुख खुला न हो तो प्रसूता को टहलावे या गर्म दूध पिलावे और यदि गुदा खाली न हो तो एनीमा दे खाली करादे।

यदि गर्भाशय आगे को झुक रहा हो तो टूड़ी पर पट्टी बांध गर्भ को सीधा करले। प्रसूता को पीड़ा के प्रथम भाग में ज़ोर न लगाने दे और न कूंखने दे। यदि पीठ में पीड़ा हो तो पीठ, और पेट में पीड़ा हो तो पेट इस प्रकार मले तथा दबावे जिससे प्रसूता को आराम मिले और गर्भाशय सुकड़ कर बालक को बाहर लाने में सहायता दे। यदि ऐंठन अधिक हो तो पीठ और जांघों को मले।

जब गर्भ का मुख खुल जावे तो पानी की थैली स्वयं फट जाती है यदि न फटी हो तो पीड़ा के प्रथम भाग के अन्त में चुटकी से फाड़ देवे। यदि थैली चारों ओर से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक दम टूट गई हो और बच्चे का सर निकलने पर झिल्ली का टुकड़ा लगा हुआ हो तो उसे तुरन्त उतार दे ताकि बालक का दम न घुटे।

दर्द के दूसरे भाग में प्रसूता लेटी रहे—उसके नीचे साफ़ कपड़ा होना ज़रूरी है यदि बरसाती हो तो और अच्छा। पलंग के सिरहाने तौलिया और पाँयते एक रस्सी आर पार बांध दे ताकि प्रसूता को तौलिया पकड़ कर और रस्सी में एड़ी लगाकर सारा ज़ोर नीचे को लगाने में सहायक हों। प्रसूता बाईं करवट घुटने ऊपर खींच कर लेट जावे दोनों घुटने के बीच कोमल तकिया दे और चतड़ पलंग के दाहिने किनारे पर रहे तो दाई सीवन की रक्षा आसानी से कर सकती है और प्रसूता को नंगे होने की ज़रूरत नहीं होती। प्रसूता के पीछे एक ओर स्त्री को बैठा दे ताकि वह प्रसूता की पीठ पर धीरे धीरे हाथ फेरती रहे और जब पीठ दबाने की ज़रूरत पड़े तो उसे दबादे।

सींवन की रक्षा—सर जितने धीरे से निकले उतना ही अच्छा है क्योंकि सींवन जितनी आहिस्ता से फैलती है उसके फटने का उतना ही भय कम होता है। दाई सींवन पर हाथ न रखे अन्यथा उस पर दबाव पड़ेगा और उसके फटने का भय अधिक हो जायेगा। गर्भाशय का मुख खुल जाने के पश्चात् बच्चे का सर योनि में आजावे और सींवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अधिक ज़ोर हो तो खूब गर्म जल में मुलायम कपड़े डाल निचोड़ मूत्र स्थान को ज़रा सेक दे तो प्रसूता को आराम मिलेगा और सींवन फटने का भय न रहेगा। दाई को जब सर दिखाई दे और सींवन पर ज़ोर मालूम न हो तो दाई अपने दाहिने हाथ की दो उँगली बालक की गुद्दी पर रख और अंगूठा सामने की आर पर रख कर उसके माथे को ऊपर को दबा निकलने से ज़रा रोकले। ऐसा करने से सर झुका रहेगा और शनैः शनैः आगे को बढ़ जायेगा आर यदि न बढ़े और दर्द ठहरता मालूम हो तो दाई को उचित है कि बाये हाथ की उँगली प्रसूता की गुदा में डाल बालक के मुख को आगे की ओर ढकेले रह जब तक कि वह सींवन से न निकल जाये। जब सर निकल जावे तो बालक घूम जाता है और उसके कन्धे गर्भ के बाहरी मुख के आगे पीछे के नाप में आजाते हैं। इस समय दाई एक हाथ से सर को सहारा दे और दूसरे हाथ से गले और कन्धों को धीरे से निकाल बालक को निकाल ले। इसके पश्चात् दाई को पेट पर हाथ रख देखना चाहिये कि गर्भ में और बच्चा तो नहीं है।

नाल - बालक के जन्मते ही यदि आवंल (जरायू) बाहर निकल आवे तो नाल को बालक की नाभि से तीन उंगल छोड़ रेशम व सूत से मज़बूत बाँध देवे, इस बद से दो उँगल और नाल नाप कर अर्थात् नाभि से पांच उँगल पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दूसरा बन्द बांध दे और दोनों के बीच से काट दे और उस पर कोयला वा कस्तूरी की बुकनी लगा दे पर ध्यान रखे कि ख़ून न निकलता रह जाये। ख़ून निकले तो नाल को एक जगह और बांध देवे।

यदि आंवल न निकला हो या निकलने में देर हो तो उस समय तक न काटे जब तक कि उसकी धड़कन बंद न हो जाये। जब धड़कन बंद हो जाये तो पूर्व की भांति काट देवे। किन्तु जब बालक के गले में नाल लिपट रहा हो तो उसको धीरे ढीला कर सर के ऊपर से शरीर के ऊपर से निकाल दे और यदि न निकल सके तो बालक के जीवन के हेतु नाल और गर्दन के बीच उंगली रख कर नाल को काटना पड़ेगा। नाल काटते समय दाई को अपने हाथ, कैंची, उस्तरा, डोरा रेशम आदि गर्म पानी से धोकर साफ़ कर लेना चाहिए।

नाल को कभी न खींचे—नाल के खींचने से ( १ ) नाल के टूटने ( २ ) गर्भाशय की दीवारों से आंवल के बीच में से अलग होजाने और गर्भाशय से बहुत सा ख़ून जारी होने (३) आंवल के किसी टुकड़े का गर्भाशय में रह जाने। ( ४ ) तथा गर्भाशय के भीतरी भाग का उलट कर बाहर आजाने का भय रहता है जिनसे अनेक उपद्रव तथा रोग उत्पन्न होजाते हैं। नाल को काट बालक की आंखों को महीन कपड़े को गर्म पानी में भिगो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कर पोंछ दो ताकि बालक के आंख खोलने पर कोई ख़राब वस्तु उसमें न जाने पाये।

बच्चा पैदा होकर शीघ्र सांस न लेवे तो उंगली डालकर मुख और गले को साफ़ करदे अर्थात् घांटी करदे। यदि फिर भी सांस न ले तो बालक की पीठ पर थपकी दे और मुख पर फूँक मारे या ठंडा पानी छिड़के।

दाई को चाहिए कि पेट पर हाथ रख कर मालूम करे कि गर्भ सुकड़ रहा या नहीं अगर अभी तक ख़ूब न सुकड़ा हो तो उसे ऊपर से मलना चाहिए और बच्चे को दूध चुगाना चाहिए।

आंवल या जरायू—बहुधा दो दर्दों के पश्चात् आंवल गर्भाशय से प्रथक हो बाहर निकल जाता है। यदि न निकले और यह मालूम हो कि गर्भाशय आंवल पर चढ़कर ऊंचा होगया है और सुकड़ कर छोटा होगया है और नाल का भाग बाहर अधिक लांबा होगया है तो गर्भाशय को ऊपर से पकड़ कर नीचे को दबाओ ताकि आंवल बाहर निकल जावे।

जब आंवल बाहर निकल रहा हो तो उसको हाथ में ले धीरे २ घुमाना चाहिए ताकि झिल्ली जो पीछे निकलती है अपने आप उस पर लिपट जाये और उसके फटने का भय न रहे। जब आंवल निकल आवे तो देखना चाहिए कि वह और उसकी झल्ली साबित निकली या कोई टुकड़ा भीतर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रह गया जब तक पूरा न निकले प्रसूता के पेट पर से हाथ न हटाये किन्तु हाथ फेरती रहे और मलती रहे ताकि दर्द उठकर जरायू बाहर निकल जाये। यदि आंवल न निकले खींचकर कदापि न निकाले अन्यथा हानि होगी, यदि प्रसव के होने को आध घण्टे में न निकले तो पेट पर गीली मिट्टी रखकर दर्द उठाना चाहिए। भोजपत्र और गुगल को कूट प्रसूता को कमर को धूनी दे अथवा लांग का जड़ का पानी में पीस प्रसूता के हाथ पैर में लेप करे। यदि इस पर भी न निकले या निकलने पर साबित न मालूम दे तो तुरन्त योग्य वैद्य या डाक्टर द्वारा निकलवाने का प्रबन्ध करे। अथवा हाथों को गर्म पानी व कारबोलक साबुन से खूब साफ़कर कारबोल लोशन या गर्म नारियल का तैल हाथ से लगा एक हाथ से गर्भाशय पकड़ दूसरे हाथ की उंगली गर्भाशय में डाल आंवल को गर्भाशय से सावधानी से अलग कर निकाल दे और गर्भाशय को ऊपर से मल दे।

आंवल के टुकड़े भीतर रह जाने पर भय—(१) खून बहुत जारी होवे (२) टुकड़े सड़ जाने से प्रसूता को बुखार चढ़े (३) टुकड़े के बढ़ जाने से रसोली बन जावे।

यदि गर्भाशय के सुकड़ने और मलने से खून बंद न हो तो बालक को दूध पिलाना शुरू कर दे खून बंद हो जायगा। जब खून बन्द होजाये प्रसूता को पूछ पींठ के बल लिटा दो और पट्टी बाँध दो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक को देखो—बालक में कोई कमी तो नहीं है अर्थात् पेशाब व पाखाने की जगह बन्द तो नहीं है। यदि है तो डाक्टर से ठीक करा दो। बालक को गुसल देकर गर्म कपड़े में लपेट मां के पास रखदो और उसको दूध पिलाओ।

शीघ्र दूध पिलाने से लाभ—( १ ) गर्भाशय ज़्यादा ज़ोर से सुकड़ता है। ( २ ) दूध की नलियां खुल जाती हैं दूध ज़्यादा पैदा होता है ( ३ ) जो दूध पहले निकलता है वह बच्चे को जुल्लाब का काम देता है।

तिथी ... पुस्तक ...

नोट—यदि प्रसूता बालक उत्पन्न होने में बहुत देर होजावे तो कपड़े की कई तह करके पेट से बाँध देवे। पट्टी एक बालिश्त चौड़ी हो लाँबी खूब हो फुलालेन, बनात या मलमल की हो।

नोट—यदि दर्द ठंडे पड़ गये हों और कई घंटे हो गये हों तो योनि में गर्म पानी की पिचकारी लगावे या टब में गर्म पानी पीठ तक भर बैठाये और अजीरण हो तो एनीमा से दस्त करादे या पेडू को गर्म पानी से सेके तो दर्द बढ़ जाये।

प्रासविक उपचार—( १ ) दूसरे दर्द में एल्यूमोनियम का कंधे ले प्रसूता के दोनों हाथों में इस प्रकार रखे कि कंधे के दाँतों पर पोरुये रहें और तथा एक सा भाग अंगूठे के बराबर हथेली पर रहे फिर प्रसूता से मुट्ठी बंधवा कर कंधा दबवाये तो तुरन्त प्रसव हो जाये।

( २ ) प्रसूता अपनी लट को मुख में डाल ले तो भी प्रसव शीघ्र होजाये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( ३ ) बकरी का दूध व तिल के तैल को पकाकर प्रसव स्थान पर मले।

( ४ ) साँप की कैंचली की धूनी दे।

## नवजात शिशु की रक्षा

बालक पैदा होते ही सांस लेने तथा रोने लगता है। यदि ऐसा न हो तो उसे गर्म कपड़े से ढक हलाने की चेष्टा करे, आंख व मुख को धुनी हुई साफ़ रुई को गर्म पानी में भिगो धो पोंछ कर साफ़ करे परन्तु नाक और मुख में पानी न जाने दे। मुख में उँगली डाल साफ़ करे अर्थात् घाँटी करे। यदि न रोवे तो गर्म कपड़े में लपेट उलटा करे, करवट बदल वाये, गर्म पानी से धोने के पश्चात् ठंडे पानी के छींटे मारे, पीठ पर थप थपाये, मुख पर मुख रख कर फूँक मारे, बालक अवश्य रोयेगा। बालक को ठण्ड न लगने दे, नाल को सावधानी से जैसा दाई के कर्तव्यों में बताया है काट बालक को तालिया में लपेट शहद चटा लिटा दो बालक सो जायेगा और थकावट दूर हो जायगी।

नीला पीला बालक—यदि बालक मुरदा सा अथवा नीला पीला हो, सांस न लेता हो तो उसे मुरदा समझ न छोड़ देना चाहिये। ऐसी अवस्था में यदि नाल की धड़कन बंद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाये तो नाल के ख़ून को बच्चे की ओर हाथ से कर नाल को बांध काट ऊपर की भाँति रुलाने की चेष्टा करे. यदि न रोंये तो बालक की जीभ को आगे की ओर ज़रा खींच भीतर को हवा जाने का रास्ता करदे, वरांडी अथवा तेल को छाती के फैलाने के लिये छाती से मले। अगर इस पर भी न रोवे तो बच्चे की दोनों कोहनियों को हाथ में पकड़ सरकी ओर उठावे और फिर उनको छाती के दोनों ओर लाये, ऐसे १० या १५ मिनट तक करे। ऐसा करने से छाती फैल जाती है, और बालक सांस लेने लगता है यदि मुख पीला हो तो बालक को एक मिनट गर्म पानी में रखे फिर ठण्डे पानी में डबो शीघ्र शरीर को मले ऐसा दो तीन बार करे बालक सांस लेने लगेगा, परन्तु बालक को ठण्ड न लगने दो। सांस लेने के पश्चात् बालक को गर्म जल से स्नान कराओ, आटे के लोये, वेसन अथवा चिकनाई उतार नहला कर किसी गर्म कपड़े में लपेटो यदि नाल से ख़ून निकलता हो तो नाल को एक और जगह बाँध दो।

मालिश उवटन व स्नान—बालक के स्वास्थ का सौर से ही ध्यान रखे. १५ या २० दिन तक रोज़ाना तेल को मालिश कर चन्दन व हल्दी कूट उवटन करे तथा गोरख मुंडी व खस के गर्म पानी से स्नान कराये। बालक को अच्छी तरह पोंछ, सुखा कपड़े में लपेट लिटादे परन्तु सर्दी न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लगने दे और नाल को उस समय तक न भीगने दे जब तक कि वह पृथक न हो जाये। यदि आँख में लाली हो अथवा पीव निकले तो साफ़ धुनी रुई को फिटकरी के खीले के गर्म पानी में भिगो साफ़ कर दिया करो। गूगल, खस, राल व हल्दी की धूप देवे।

कपड़े—बालक के कपड़े ढीले सादा और ऋतु अनुसार होना उचित है ताकि आसानी से रोज़ाना साफ़ धुले हुये बदले जासकें।

दूध—माता के स्तनों में दूध प्रायः तीसरे दिन भली भाँति आजाता है। लेकिन बच्चे के मुख में स्तन पहले दिन से ही देनी चाहिये चाहे दूध दो चार बूंद ही क्यों न निकले क्योंकि माता का यही दुग्ध बच्चे को जुलाब का काम देता है। साथ ही माता के गर्भाशय के सुकड़ने में मदद करता है। दुग्ध पान नियत समय पर होना चाहिये प्रति समय बच्चे के मुख में स्तन देते रहने से बच्चे को अफ़रा आदि होने का भय है ऐसे बच्चे ही बार २ दूध पटका करते हैं। इसीलिये तीसरे दिन से दिन में दो २ घंटे पीछे अगर रात को बालक सो जावे तो जगाना नहीं चाहिये। एक मास पश्चात् ढाई २ घंटे और तीन मास पश्चात् तीन २ घंटे बाद नियत समय पर दूध पिलाये, सात मास पश्चात् रात्रि को १० बजे के पश्चात् दूध न पिलावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विधि—छाती को दूध पिलाने के पूर्व और पश्चात् गर्म पानी या नीम के पानी से धो डाले। एक समय में एक और दूसरे समय दूसरी छाती पिलाये। शुरू में करवट लेकर पिलाये परन्तु एक मास का हो जाने के पश्चात् बैठ कर दूध पिलाये। यदि छाती तनी हो और बालक न दावे तो पहले मशीन अथवा हाथ से दबा दूध निकाल दे फिर दूध पिला वे यदि मां के दूध काफ़ी न हो या किसी रोग के कारण न पिलाना हो तो बकरी का दूध पिलावे। यदि धाय का पिलाना चाहे तो ऐसी स्त्री ढूँढो जो स्वस्थ हो और जिसका बच्चा ३ मास से अधिक का न हो यदि गाय का दूध पिलाना हो तो ३ मास की आयु तक आधा दूध और आधा पानी मिलाकर और तीन मास पश्चात दो तिहाई दूध और एक तिहाई पानी मिलाकर गर्म कर चीनी डाल पिलाये।

दूध छुड़ाना—जब ६, ७, दाँत निकल आवें तो बालक का दूध छुड़ाना शुरू कर दो, दूध में रोटी भिगो या भुने हुए गेहूँ का आटा दूध में पका दो बार खिलाओ और दो वर्ष की आयु तक दूध छुड़ालो अन्यथा मां व बालक दोनों कमज़ोर होजायेंगे।

परहेज़—प्रसूता गर्म वस्तुयें तथा बहुत घी न खाये। बालक को मसालेदार खाना, कच्ची गाजर और बेर आदि न खाने दे। अफ़ीम कभी न दे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रोग से बचाने की विधि—त्रचटा चटावे तथा आठवें दिन घुटी देवे। तथा सफ़ेद सरसों, वचदुद्धी, चिड़चिड़ी, सतावर सरवन, ब्रह्मी, पीपल, हल्दी, कूट और सब को घी में पका छान डाले। घृत को रोज़ाना चटावे।

जब अनाज खाने लगे तो मुलेठी, वच, पीपल, चीता, त्रफला को घी में पका कर चटावे।

जब दूध छूट जाये तो दशमूल, दूध, तगर, देवदारु, काली मिर्च, शहद, वायविडंग और मुनक्का, दोनों ब्रह्मी को घी में पका चटावे।

दाँत—सुहागे चौकिया का फूला शहद में मिला मसूड़ों पर मले। हड़ताल तबक़ी को कूट काले कपड़े की पट्टी में रख गले में बांध दे दाँत शीघ्र व बिना कष्ट के निकल आयेंगे।

बालक को अजीरण—सफ़ेद तथा हरे रंग के दस्त आना, पेट में दर्द अथवा बालक का टांगें मारना, क़ै आना, हुचकियां आना, बादी से पेट का फूल जाना, अगर दस्त और कय हो तो नितरे हुए चूने का पानी एक चम्मच को १ पाव गुनगुने दूध में मिला थोड़ा २ पिलावे बच्चे की माता को हल्का भोजन दे।

यदि पेट में अजीर्ण हो और दिन में दोबार दस्त आवे तो बाल घुटी १ चुटकी ज़रा सा गुड़ डाल औटा छान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पिलावे—अथवा बड़ी हरड़ पानी में घिस मां के दूध में मिला चम्मच से पिला देवे।

यदि बादी हो तो २ रत्ती सौंफ़ या २ रत्ती अजवायन को पीस छटाँकभर पानी में पका एक २ चम्मच कर बच्चे को पिलावे।

यदि बच्चे का सारा बदन बार २ पीला पड़जाता हो और पेशाब गहरे रंग का आता हो तो उसको दस्त करादे।

अगर बच्चे का मुंह आजावे तौ चौकिया सुहागे को भून शहद में मिला लगावे अथवा बकरी के दूध को धार लगावे या गधी का दूध लगावे।

## बालक उत्पन्न होने के पश्चात् प्रसूता की सेवा

प्रसूता को बालक उत्पन्न होने में बहुधा सर्दी और थकावट के कारण बुखार हो जाता है इसलिए फारिग़ होने पर पोंछ साफ़ कर प्रसूता को तुरन्त गर्म दूध पिला चित्त लिटा दें, आराम करने दे, सोने के समय कमरे में अंधेरा करदे उसके आस पास भी कोई बातें न करे। यदि बालक पैदा होजाने पर प्रसूता बेहोश होजाये तो लम्बी चादर की कई तह कर लपेटने से आराम मिलता है।

नाड़ी साधारण मनुष्य से भी धीरे २ चलती है किन्तु यदि अधिक तेज़ चले तो दाई को साथ रक्खे क्योंकि रुधिर जारी होने का शीघ्र भय है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पेशाब व पाखाना करना—प्रसूता के चमड़े पर पसीना आता है, नींद खूब आती है परन्तु पेशाब में कभी २ कष्ट होता है। यदि संतान होने के आठ या दस घंटे तक पेशाब न हो तो मसाने को गर्म पानी की थैली अथवा बोतल से सेंके। पेशाब की जगह को गर्म पानी की टकोरों से सेके यदि इस पर न हो तो डाक्टरनी को बुला नली द्वारा निकलवादे क्योंकि इसके रुकने से गर्भ सुकड़ना बंद होजाता है, पेशाब यदि पांव पर बैठ कर करे ऐसा करने से जो मैल गर्भाशय में रह गया है वह निकल जाता है। यदि क़ब्ज हो और दो दिन तक जच्चा को पाखाना न हो तो औषधि एवं एनीमा द्वारा करा देवे।

भोजन—प्रसव के दिन केवल दूध जिसमें सोंफ़ और अजवायन औटाई गई हो दे, दूसरे दिन दूध साबूदाना, बिना लगे पान, बादाम का हरीरा, तीसरे दिन से दलिया दूध, हरीरा, हल्दी, गोंद पाक, ज़ीरा पाक ताज़ा मीठे फल। जाड़ा हो तो खुशक मेवे जात। हरीरा में सोंठ और ज़ीरा अजवायन अवश्य हो—गर्मी हो तो मेवे और सोंठ न दे। अधिक घी न दे इससे क़ब्ज़ होने, भूक मारी जाने एवं बुखार होजाने का भय होता है।

धूनी—सौर गृह में गुग्गुल, लोबान, राई, सफ़ेद सरसों व नीम के पत्ते की धूनी दे परन्तु धुआं न होने देवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दर्द—बालक पैदा होने के पश्चात् गर्भ के सुकड़ने के कारण दर्द होते हैं यह दर्द गर्भ के प्रसव में थक जाने तथा गर्भाशय में कुछ खराब ,खून रहजाने के कारण भी होते हैं। गर्भाशय पर हाथ रख देखे यदि नर्म है तो टिंक्चर आफ़ आरगाट ६० बूंद आध औंस पानी में मिलाकर देवे और सुकड़ गया हो परन्तु तो भी दर्द होते हैं तो टिंकचर आफ़ औपीयम २० बूंद दो यदि बुखार भी हो तो योग्य वैद्य या डाक्टरनी से तुरन्त चिकित्सा कराओ।

गर्भाशय—गर्भाशय प्रसव होने के दिन नाभि से नीचे रहता है फिर ऊँचा होने लगता है। यदि ऐसा हो, मलने से न सुकड़े, खून न निकलता हो तो ठीक किन्तु उसपर या उसके किसी और दर्द हो, खून जाता हो, दवाने व मलने से न रुके तो तुरन्त चिकित्सा कराओ। याद रखो एक मास तक गर्भाशय पेट में मालूम पड़ता है परन्तु दूसरे मास के अन्त तक अपनी असल जगह पर आजाता है। यदि गर्भ न सुकड़े तो स्त्री कमज़ोर होजाती है और सफ़ेद पानी बहने लगता है यह बीमारी कमज़ोरी तथा जल्दी बोझ उठाने से भी होजाती है। इसका शीघ्र इलाज कराओ।

मैल - मैल का रंग चार दिन तक लाल रहता है बदबू नहीं होती है, दाग़ एकसा होता है अर्थात् बीच में हल्का और किनारों पर गहरा नहीं होता। पाँचवें से नवें दिन तक हरा और कुछ खून जैसा होता है। नवें दिन पश्चात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मटिमैला और फिर कम होते होते तीसरे सप्ताह बंद हो जाता है। याद रहे स्वस्थ अवस्था में इसमें बदबू नहीं होती यदि बदबू हो अथवा चार दिन से अधिक लाल रहे या हरा होकर लाल होजाये या बिल्कुल बंद रहे तो तुरन्त योग्य वैद्य एवं डाक्टरनी से इलाज कराये। मैल बंद होजाने से या तो दूध नहीं रहता या बुखार आजाता है।

छाती—दूध के एक साथ उतरने से प्रायः छाती तनकर लाल होजाती है बगलों में गाठें भी पड़जाती हैं ऐसी दशा में कड़ुआ अथवा मीठा तेल गर्मकर धीरे २ हल्के हाथों से चुपड़े, पोस्त के डोंडो को पानी में औटा उस पानी को छाती पर धार से डाले, यदि छाती का अगला भाग दुखता हो या कुछ सूज गई हो, बुखार भी आगया हो तो चतुर हकीम वैद्य की सम्मति से काम करे।

स्नान—प्रसूता को शीघ्र स्नान न कराये। दसवें दिन तेल मल गर्म जल से स्नान करना चाहिये।

मालिश—चालीस दिन तक प्रसूता के शरीर पर मरीच्यादि, विष गर्भ अथवा लाक्षादि तैल की मालिश करना चाहिये—तेलों के बनाने की विधि इसी पुस्तक में स्त्री रोग चिकित्सा में लिखी है।

पानी—प्रसूता को १२ या १५ घंटे तक पानी न दे यदि प्यास लगे तो दूध दे, इसके पश्चात दस दिन तक बत्तीसे का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी पिलावे या दशमूल का काढ़ा दे इन के बनाने की विधि इसी पुस्तक में स्त्री रोग चिकित्सा में देखियेगा।

प्रसूता कब तक रहती है—प्रसव के पश्चात जब तक पुनः रजस्वला न होजावे तब तक प्रसूता ही रहती है जैसा आयुर्वेद में लिखा है।

प्रसूता साधमी सान्ते दृष्टे वा पुनरार्त्तव।

जब तक प्रसूता रहे उसकी देख रेख बड़ी सावधानी से करनी चाहिये।

## प्रसव काल के रोग

प्रसव के पश्चात बहुत खून जाना—जरायू के निकलने के पश्चात् चार या पांच छटाँक रुधिर निकलना स्वाभाविक है। यदि इससे अधिक निकले तो प्रसूता का गश आजाता है, शरीर ठंडा होजाता है पीला पड़ जाता और प्रसूता मुंह फाड़ कर सांस लेने लगती है। ऐसा होने पर बच्चे दानी को खूब दबावे, मूत्र स्थान पर बारीक कपड़े कई तह कर बर्फ़ के पानी में भिगोकर रखे, ठंडे पानी की पिचकारी लगाये, प्रसूता को बैठने न दे, चित लिटाये रखे, सर के नीचे का तकिया निकाल दे, पांयत ऊँचा करदे यदि फिर भी बंद न हो तो योग्य डाक्टरनी या वैद्य को बुला औषधि कराये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शरीर का काँपना—शरीर कांपता है, मुख फिर जाता है, आंखें ऊपर को खिंच जाती हैं, मुँह स झाग निकलते हैं, होश नहीं रहता।

रूमाल या चम्मच को दाँतों में रखदे ताकि जीभ न कट जाये, होश आने पर जुलाब देवे या एनीमा देवे। और तुरन्त अच्छा इलाज कराये।

पेट में बालक की मृत्यु—इसके चिन्ह यह है। बालक का हिलना फिरना बन्द होजाये, अधिक बोझ मालूम दे। चित्त उदास रहे, बुखार आजाता हो, भूख नहीं लगती, रात को कल नहीं पड़ती। बदबूदार मवाद निकलने लगता है, दर्द उठकर मरा हुआ बच्चा भी पैदा होजाता है। जब पेट में बच्चे को मृत्यु का पता लग जावे तो तुरन्त योग्य डाक्टरनी द्वारा बालक को निकलवा दे व इलाज कराये।

# पाक विद्या का वर्णन

## भोजन विचार

संसार में मनुष्य योनि ही परमात्मा ने ऐसी बनाई है जो प्रभु रचित विचित्र जगत के अद्भुत पदार्थों से नाना प्रकार के मधुर, खट्टे, चरपरे एवं रसीले आदि रसों का आस्वादन कर सकती है। भारतवर्ष अनेक श्रेष्ठ खाद्य वस्तुओं का भंडार है जिस समय में यहाँ के पाक विद्या विशारद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य और षट्रसों द्वारा भोजन सिद्ध करने वाली चतुर युवतियाँ अपनी पाक क्रिया की कुशलता, चातुर्यता, पवित्रता और सरसतायुक्त भोजनों से गृह परिवार को ही नहीं किन्तु अतिथि स्वरूप में आये हुए साधु महात्मा एवं इष्ट मित्रों तथा अपने भाई बन्धुओं को तृप्त करती थीं उस समय दूर देश निवासी भी यहाँ के स्वादिष्ट भोजनों के लिये ललचाया करते थे। परन्तु शोक आज पुरुषों की तो कौन कहे घर की मालकिनियों एवं बहू बेटियों को आलस्य ने इस प्रकार जकड़ दिया कि घर का भोजन बनाना तक मुश्किल है। प्यारी महिलाओ! सब से पहिला कर्तव्य तुम्हारा अपने आप भोजन बनाना था जब से तुमने इस कार्य को तिलांजलि देदी उस समय से तुम्हारा शरीर तुम्हारी चाल ढाल एवं तुम्हारी आरोग्यता का ही नाश होगया। रात दिन रोगी रहने का एक मात्र कारण उत्तम भोजनों का न मिलना ही है। यों तो नित्य प्रति घरों में भोजन बनाया ही जाता है परन्तु यह भोजन नहीं है कि आधे चावल गले आधे कच्चे, दाल ऐसी जिसके देखने से जी घबड़ाये साग, भाजी के दर्शनों से ही भूख विदा होजाय। कहीं नमक ज़्यादा कहीं कम। अब आपही बतलाइये कि जहाँ साधारण भोजनों को यह दशा वहां अन्य उत्तम भोजनों के बनाने की क्या कहें। कवि गिरधर ने फूहड़ स्त्रियों के लिये यों लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


काची कूची कचकची मक्खी दंश कचार ।
फूहर वही सराहिये कि परसत चूवेलार ॥
परसत चूवेलार धाय लड़कन सौंचावे ।
कुल्हा पोछे हाथ दुहत्थहिं सिर खुजलावे ॥
कह गिरधर कविराय बात सब सांची सांची ।
दाल बहे दरियाब भात, रोटी सब काची ॥

प्यारे गृहस्थियो ! यह विद्या बहुत बड़ी है इसी को सूप विद्या भी कहते हैं यजुर्वेद अ० ३३ मं० ५९ में लिखा है कि स्त्रियां सदा वैद्य के समान सबकी हितकारिणी हो औषधिवत अन्न बना मधुर भाषण पूर्वक सबको भोजन करा सुखों को प्राप्त हों जो स्त्रियां इस पाक विद्या को पूर्ण रीति से जानती हैं वही युक्तियों द्वारा एक २ वस्तु से नाना प्रकार के भोजन बना अपने कुटुम्ब को प्रसन्न करती हैं अथर्ववेद कां० ४ । सू० ४ । मं० ५ में लिखा है कि उत्तम अन्न और फलों के सेवन से मनुष्य ऐश्वर्यवान और बलवान होते हैं ।

## भोजनों की क्यों आवश्यकता होती है ?

प्रतिदिन काम करने से शरीर के पंचभूतों में जो कमी आजाती है उसी को पूर्ण करने के लिये भोजनों की आवश्यकता होती है जिससे कि शरीर फिर कार्य्य करने के योग्य बनजाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भोजन प्रकार

भोजन खाने की रीति से ६ प्रकार के होते हैं जैसे–

१–भोज्य–जो रौंथ २ कर किया जाय जैसे दाल, रोटी पूड़ी, कचौड़ी।

२–भक्ष्य–जो निगल कर किये जांय जैसे लपसी–खीर आदि।

३–चब्य–जो चाव २ कर खाये जायँ जैसे–चना, परमल दाल, सेब।

४–चोष्य–जो चोखा जाय या चूसा जाय गन्ना, आम।

५–पेय–जो पिया जाय जैसे–दूध, चाय।

६–लेह्य–जो चाटी जाय जैसे चटनी, सोंठ।

## षट रस

मधुर, खट्टा, खारी, चरपरा, कड़ुआ और कसैला यह छः रस होते हैं।

## आहार

आहार तीन प्रकार का होता है १–सतोगुणी, २–रजोगुणी, ३–तमोगुणी। श्रीकृष्ण महाराज ने गीता में कहा है–

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आयुः सत्वबलारोग्यं सुख प्रीति विवर्धनः ।
रस्या स्निग्धाः स्थिराहृद्याश्चाहाराः सात्विकः प्रियाः ॥
कट्वम्ललवणत्युष्णातीक्ष्णरुक्ष विदाहिनः ।
आहाराराजसस्येष्ठा दुःखशोका भयप्रदाः ॥
यातयामंगतरसं पूतिपर्युषितं चयत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजन तामस प्रियम् ॥

अर्थात् आयु, वीर्य, बल, आरोग्यता, सुख और प्रीति के बढ़ाने वाले रस युक्त, कोमल, तर, बहुत काल तक ठहरने वाले और जिनके देखने से मन प्रसन्न हो इस प्रकार के भोजन करने से सात्विक भाव और अत्यन्त चरपरे, खट्टे, नमकीन, गरम, तीखे, रूखे और दाह डालने वाले भोजनों से राजसी भाव तथा बहुत देर के बने, ठंडे, बासी, सड़े दुर्गन्धयुक्त और जूठे भोजनों के करने से तमोगुणी भाव उत्पन्न होते हैं इसलिये तमोगुणी और रजोगुणी भोजनों को छोड़ सतोगुणी भोजन करना ही श्रेष्ठ है क्योंकि इसी के सेवन से शरीर अच्छे प्रकार हृष्ट पुष्ट हो रोग रहित बनता है। सतोगुणी पदार्थों के भोजन को ही भक्ष्य कहते हैं। और जिन पदार्थों से शरीर, मन, बुद्धि एवं धातु विषमता को प्राप्त हो उसे अभक्ष्य कहते हैं। छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि अभक्ष्य पदार्थों को छोड़ घृत, दुग्ध, चावल, गेहूँ और फल आदि शुद्ध आहार करना योग्य है क्योंकि इसी से बल पुरुषार्थ एवं शुद्ध बुद्धि को प्राप्ति होती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है। यजुर्वेद अ० २० मन्त्र २२ में लिखा है कि अन्न आदि भक्ष्य पदार्थों को शुद्ध कर सेवन करने से सुख और विपरीत पदार्थों के सेवन से दुःख मिलता है अतएव सात्विक भोजनों का ही सेवन करना श्रेष्ठ है।

## जूठा व अति भोजन खाने का निषेध

किसी मनुष्य को किसी का भी जूठा भोजन कदापि न करना चाहिये और न जूठे मुँह किसी स्थान को जावे। बार बार अधिकता से तथा प्रातः काल और सायंकाल के समय भोजन न करे जैसे मनु० अ० २ श्लो० ६३ में कहा है।

नोच्छिष्टंकस्यचिद्दद्यान्नद्याच्चैवतथान्तरा।
न चैतत्यशनं कुर्यान्नोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत॥

अर्थात् एक थाली वा पत्तल में अधिक मनुष्यों को भोजन करना योग्य नहीं है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव पृथक् पृथक् होता है, कोई चाहता है दाल भात को मिला कर खाऊँ किसी की रुचि इसके विरुद्ध है इस प्रकार अन्य जनों का अन्य स्वभाव होता है, तो इस दशा में अरुचि से भोजन करना पड़ता है, अरुचि के कारण अन्न अच्छे प्रकार नहीं पचता। बहुधा मनुष्य इसी हेतु से भूखे उठ बैठते और बहुतों को नाना प्रकार के रोग एक से दूसरे में प्रविष्ट होजाते हैं, इसीलिये कोढ़ी को कोई भी अपने साथ भोजन नहीं कराता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वस्तुतः जूठा भोजन करना महा पाप है क्योंकि इससे केवल शारीरक रोग ही उत्पन्न नहीं होते वरन् यह बुद्धि को मलिन कर देता है जिससे मस्तिष्क गंदा और सोचने और विचारने की शक्ति का भी ह्रास होजाता है, इसी हेतु मनु आदि ऋषियों ने जूठा अथवा एक थाली में बहुतों के भोजन करने का निषेध किया है। अतएव हमको अपनी थाली में अपने बच्चों को भी नहीं खिलाना चाहिये। भारत में यह कुप्रथा प्रेम की निशानी समझी जाती है, घर के बड़ बच्चों को बड़े स्नेह से अपना झूठा खिलाते, पिलाते और स्वयं उनका झूठा भी खाते हैं जिससे उनकी नव विकसित बुद्धि और कोमल मस्तिष्क की नसों पर घातक प्रभाव होता है। इसके अतिरिक्त अभागे भारत में बहुत से ऐसे मत ( धर्म ) चल गये हैं जिन्में शिष्य और शिष्यायें गुरु का झूठा खाना और पीना स्वर्ग लेजाने वाला मानते हैं। शोक महाशोक।

इसी प्रकार अति भोजन अथवा भरे पेट पर भी कुछ खा लेने से भी अनेकान रोग उत्पन्न होजाते हैं और कभी कभी तो प्राणों पर ही बन आती है अतएव जो जन सदा नियत समय पर ऋतु और पथ्या पथ्य के अनुसार प्रमाण से भोजन करते हैं उनको मिताहारी और मात्रा प्रमाणी कहते हैं।

## पाकशाला

भोजन बनाने के स्थान को पाकशाला या रसोई घर कहते हैं। यह स्थान लिपा पुता और हवादार होना चाहिये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और उसमें धुवां निकलने को रोशनदान वा धुआंरे हों परन्तु उसके पास में पाखाने पेशाब की रसोई घर की खिड़की और दर्वाजों पर जाली लगी हो जिससे मक्खियाँ भीतर न आने पावें भोजन के पदार्थ बना सफ़ेद कपड़े के अङ्गोंछे या लकड़ी आदि के ढक्कन से ढकदे जिसमें कोई जीव न पड़े।

१–पाकशाला में ही एक ओर एक छोटी अलमारी में एक मसालादान जिसमें सब मसाले शुद्धता से पिसे रक्खे हों मीठे बूरा आदि के बर्तन, दूध छानने की छलनी आदि आवश्यकीय चीज़ें तथा एक लकड़ी के पटरे पर भोजन बनाने के बर्तन साफ़ रखे रहें।

२–रसोई बनाने वाले स्त्री या पुरुष मैला कुचैला कुरूप क्रोधी इत्यादि न हो किन्तु नित्य प्रति स्नान करने वाला नख और हाथों को साफ़ रखने वाला प्रेम से भोजन कराने वाला शान्त स्वभाव, पाक विद्या में कुशल, उदार और हुक्का न पीने वाला हो। ३–पाकशाला में सब बासन मँजे और पवित्र रक्खे हों। ४–प्रत्येक भोजन पृथक् २ रक्खा जावे अर्थात् एक दूसरे से न मिले। ५–एक बासन में जब कोई पदार्थ रख दिया हो और उसमें दूसरा रखना चाहे तो फिर उसको धोकर साफ़ कर रक्खे ताकि उसके स्वाद और रूप में अन्तर न पड़े। ६–मसाला, नमक अधिक वा शून्य होने न पावे वरन् यथायोग्य और यथारुचि हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


७–भोजन जलने न पावे और न कच्चा रहे। ८–एक मोटा अँगोछा अपने पास रखना उचित है। ९–फोड़ा, फुन्सी, खांसी आदि रोग वाली स्त्री या पाचक को भोजन नहीं बनाना चाहिये। १०–प्रत्येक वस्तु को इस प्रकार से रखना उचित है जिससे परोसने में कठिनता न हो। ११–खटाई और उसकी पड़ी वस्तुओं को साफ़ कांच व पत्थर तथा मिट्टी के बासन में रखना उचित है क्योंकि पीतल वा ताँबे में रखने से वह पितला जाती है। १२–पदार्थ बनाने से प्रथम प्रत्येक आवश्यक वस्तुओं को शोध कर अर्थात् अन्न को बीन, छांट, फटक और हरे सागों को धोय धाय और गले संड़े पत्तों को निकाल कर ठीक कर लेना उचित है।

## भोजन शाला

भोजन करने का स्थान पाकशाला से अलग कुछ दूर पर हो और उसकी दीवारें चूना वा खरिया से पुती हों! नीचे का भाग प्रति दिन गोबर से लीपा जाय। किनारे २ हरे गमले अथवा अन्य मनोहर वस्तुयें नेत्रों के आनन्द देने वाली रखी हों। बैठने के लिये कुश के वा कम्बल के आसन तथा दो बालिस्त ऊँचे और एक गज़ लम्बे और पौन पौन गज़ चौड़े लकड़ी के पटरे भोजन रखने के लिये पड़े हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## भोजन रखने की विधि

भोजन सदा ढक कर रक्खे, खुला कभी न रहने दे। वर्षाऋतु में भोजन वायु के स्थान अथवा कपड़ा लगाकर टोकरी आदि में रक्खे जिससे हवा लगती रहे क्योंकि इस ऋतु में दबाने से शीघ्र बुस और सड़जाता है। जाड़े में भोजन दबा कर रक्खे नहीं तो ठंडा होकर कड़ा व सूखा हो जायेगा। गर्मी में ठण्डा करके रक्खे अन्यथा ख़राब हो जायेगा। भोजन एक स्थान से दूसरे स्थान पर खुला हुआ न लेजाय, न अपवित्र स्थान में होकर लेजाये और अपवित्र तथा मैले कुचैले मनुष्यों के हाथ का भोजन न करे अन्यथा अरुचि, ग्लानि और रोग उत्पन्न होंगे।

## भोजन के बरतनों की धातु

रसोई के बरतन प्रायः धातुओं के होते हैं उनके गुण दोष नीचे दिये जाते हैं।

पीतल—रुक्ष, गर्म, क्रमि एवं कफ़ नाशक किन्तु बात कारक हैं।

ताँबा—हितकारक तथा रुचि को बढ़ाने वाला है।

जस्ता शीतल और बल कारी होता है।

कांसा—रुचि वर्द्धक, शरीर पोषक तथा रक्त पित्त नाशक है।

राँगा—शीतल—दाह, कृम तथा कमल और बात नाशक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोहा—अग्नि वर्द्धक तथा जठराग्नि सम्बन्धी रोगों का नाश कारक होता है।

चाँदी—शीतल, नेत्रों के लिये लाभदायक, पित्त नाशक तथा एवं वायु वर्द्धक होता है।

सोना—त्रिदोष नाशक एवं नेत्रों को लाभदायक है।

पत्थर—गुण दोष रहित होता है।

कांच—बलवर्द्धक, पीलिया एवं सूजन को नष्ट करता है।

लकड़ी—वृक्षानुसार उसके गुण दोष होते हैं।

ढाक तथा केले के पत्ते—रुचि कारक तथा अग्नि वर्द्धक है, किन्तु ढाक का पत्ता विष नाशक भी होता है खट्टी वस्तुऐं सदा पत्थर, कांच, मिट्टी, एवं रांग के बरतनों में रक्खें। तांबे, पीतल और कांसों में रखने से खराब होजाता है।

## भोजन करने का समय

वैद्यकाचार्य श्रीवाग्भट्ट जी का उपदेश है कि जब पाखाना पेशाब साफ़ हो जाय शरीर हलका हो खट्टी डकार पेट में गुड़गुड़ाहट और भारीपन न हो हवा साफ़ घूमती हो, खूब भूख लगी हो उस समय भोजन करे। वैसे प्रातः १० बजे तक और शामको ७–८ बजे तक भोजन करने का समय है। बच्चों, बूढ़ों और गर्भिणी स्त्री तथा मानसिक परिश्रम करने वालों को प्रातः ७-८ बजे और ४, ५ बजे तीसरे पहर दूध आदि बलदायक खाना भी उचित है। रोगी को वैद्य के बतलाये समय पर भोजन देना श्रेष्ठ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## भोजन परोसने के नियम

१–भोजन परोसने के पात्र सब साफ़ धुले हों। २–नमकीन वस्तुओं के चमचे अलग और मीठी चीज़ के परोसने के अलग हों। ३–भोजन परोसते समय मीठे पदार्थ एक ओर फीके एक तरफ़ तथा नमकीन तीसरी तरफ़ रखे जायें। शाक भाजी अलग २ परोसी जाय। ४–खट्टे वा दही के पदार्थ कूंड़ी वा काँच के बर्तन में। ५–पत्तले रसेदार क़लई या फूल की कटोरियों में। ६–चटनी, अचार आदि पत्थर की प्यालियों में परोसने चाहिये। इस प्रकार परोसने से सब वस्तु अलग अलग रहेंगी और खाने में स्वाद आवेगा। प्रत्येक वस्तु के परोसते समय सदा इस भाँति ध्यान रखे कि वह घर के समस्त प्राणियों के लिये पूरी होजावे। ७–जब भोजन के सर्व पदार्थ परोस दिये जायँ तब सबको देख भाल ईश्वर को धन्यवाद दे भोजन करने का प्रारम्भ करे और निम्न लिखित बातों का भी ध्यान बनाये रखे।

## भोजन में उपयोगी बातें

भोजन तय्यार हो जाने पर बलिवैश्वदेव (इसकी व्याख्या पंचयज्ञों में की है) कर पहिले बालकों को, २–नई बधू, ३–बुड्ढों को, ४–गर्भिणी, ५–अतिथि, ६–अपने आश्रय रहने वाले फिर पति को भोजन करा अपने आप भोजन करे। ७–हाथ पांव धोकर स्वच्छता से भोजन करे।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



८–मार्ग में चलते २ कभी भोजन न करे। ९–भोजनों के स्थान में कोई ऐसी वस्तु न हो जिससे घृणा उत्पन्न हो। १०–भोजन करने के समय माता, पिता, स्त्री, भाई और मित्र, पाक कर्ता तथा वैद्य के सिवाय अन्य कोई न हो। ११–भोजन के समय यदि कोई भूखा आजाय तो उसे शक्ति अनुसार अवश्य खिला दे। १२–विष मिले पदार्थों की परीक्षा निम्न प्रकार से करे।

## विष की परीक्षा

१–भोजनों में सब मीठे और फीके पदार्थों में से अग्नि पर डालो यदि अंगारों में बड़े ज़ोर से धुआं उठे और जल्दी शांति हो जावे तथा अग्नि में से कबूतर की गर्दन के सदृश नीली पीली ज्योति निकले तो भोजनों में विष मिला समझना। २–अग्नि पर विष मिले हुए पदार्थ चट चट शब्द कर उछल कर दूर गिरते हैं। ३–कौआ विष की चीज़ खाते ही गड़बड़ा जाता है, चकोर की आखें बदल जाती हैं, मोर घबड़ाया सा होजाता है, तोता मैना ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं और बन्दर बार बार बिष्टा त्यागता है इसलिये विष की परीक्षा के लिये ऊपर कहे हुए जानवरों में से किसी एक को अपने पास अवश्य रखना उचित है। ४–शाक, दाल, भात में विष मिलाया गया हो तो उसमें बदबू आने लगेगी। ५–शराब और दूध आदि पतले पदार्थों में विष मिले हुये की यह पहचान है कि उसमें नीली पीली लकीरें मालूम होती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



६–पक्के फल में ज़हर मिलने से फूट जाते हैं।

७–कच्चे फलों में विष मिलाने से पिलपिले पके से होजाते हैं।

८–गरम पदार्थों में यदि विष मिलाया जावे तो उसकी भाप लगते ही आँखों में पानी निकलने लगता है।

९–ज़हर मिला अन्न मुंह में जाते ही जिह्वा कड़ी पड़ जाती है, अन्न का स्वाद ठीक नहीं मालूम पड़ता और जीभ में जलन सी मालूम पड़ती है।

## भोजन करने के नियम

अथर्व कांड २० सूक्त २४ मन्त्र ८ में लिखा है कि मनुष्य उत्तमोत्तम पदार्थों को रूचि के साथ खावे, जिससे हृदय में उत्तम रस उत्पन्न होकर सब शरीर में फैले और बल बढ़े। भोजन सदा देश, काल एवं ऋतु के अनुसार होना चाहिये। भोजन नियमानुसार, यथा समय, यथा रुचि, प्रसन्न चित्त, चिन्ता रहित होकर छाती उठा स्वच्छता पूर्वक चबा चबा कर स्वच्छ स्थान में साफ़ बरतनों में भोजन खाना चाहिये। भोजन में पहिले मीठा, फिर नमकीन और उसके पश्चात् खट्टे पदार्थों को खावे। भोजन के साथ हरे शाक ख़ूब खाये, परन्तु पानी भोजन के आदि व अन्त में तथा बिना प्यास और भूख लगने पर खाली पेट पर न पीकर भोजन के मध्य तथा दो घंटे पश्चात् पीवे। बहुत गरम, बहुत ठंडे, रूखे, सूखे भोजन तथा सड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पदार्थ न खावे। भोजन अधिक, कुसमय एवं अपनी प्रकृति के विरुद्ध न करे और जब तक किया हुआ भोजन न पच जाय तब तक भोजन न खाये। भोजन करने में शीघ्रता न करे और न बहुत आहिस्ता से ही करे। भोजन करने में न अधिक बोले और न अधिक हंसे। भोजन नाना प्रकार के करे और एक ही प्रकार के भोजन करने की टेव न डाले।

## भोजन में ध्यान रखने योग्य बातें

( १ ) बहुत मीठा खाने से ज्वर, श्वांस, मल, गण्ड, कृमि, स्थूलता, प्रमेह, तुतलापन, मोटापन और मन्दाग्नि रोग हो जाते हैं। बहुत खटाई खाने से खुजली, पीलिया, पांडु, सूजन और कुष्ट आदि रोग होजाते हैं। बहुत नमक खाने से नेत्र पाक, रक्त पित्त की बीमारी और शरीर में सलवटें पड़ जाती हैं तथा बाल झरने लगते हैं और जल्दी सफ़ेद हो जाते हैं। अधिक चरपरा खाने से मूत्रकृच्छ, गर्मी मूर्छा और प्यास की बीमारी हो जाती है और बल तथा कान्ति का नाश होता है। ( २ ) बहुत गरम गरम भोजन करने से बल घटता है सूखा खाने से पेट में दर्द और सड़े पदार्थों के खाने से अरुचि रोग तथा पेट में कीड़े हो जाते हैं। ( ३ ) पित्त उत्पन्न करने वाले पदार्थों को खाकर पित्त शांति के लिये मिश्री मिला दूध पीना चाहिये। ( ४ ) भारी पदार्थ दो प्रकार के होते हैं। एक स्वभाव से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी जैसे बाजरा, उड़द, मटर आदि । दूसरे वह जो स्वभाव से हलके होते हैं परन्तु संस्कार द्वारा किसी वस्तु के मेल से भारी हो जाते हैं जैसे खीर, कचौड़ी, मालपुआ हलुआ आदि । ( ५ ) यह स्मरण रखना चाहिये कि हलकी से हलकी वस्तु अधिक खाने से भारी और भारी से भारी वस्तु कम खाने से हल्की के समान पच सकती है थोड़ा एवं नियम से खाने वाले आरोग्य एवं सुखी और अधिक भोजन करने वाले सदा रोगी रहते हैं । ( ६ ) भोजन ठंडा होजाने से पूर्व अर्थात् गरम ही लेना चाहिये, कारण गरम भोजन लेने से सुगमता से उसका रस बनकर जठराग्नि में जाता है और वहाँ पर उसका पाचन भी सुगमता से हो सकता है, देह का वायु उलटी चाल से ऊपर को चढ़ता आता हो तो ठंडा भोजन उस पर कुछ असर नहीं कर सकता, परन्तु गरम भोजन उसको नीचे उतार कर ठिकाने पर जा बिठाता है और पाचनशक्ति को कम करने वाले कफ़ के ज़ोर को भी नष्ट कर डालता है । ( ७ ) भोजन रूखा न हो वरन् घी या तेल में तैयार किया हुआ या मिला हुआ होना चाहिये । कारण घी या तेल के योगवाला भोजन जठराग्नि में पहुँच कर अपने आप ही नरम हो आता है, पाचन शक्ति को बल देता है, पचता जल्दी है, ऊपर चढ़ते हुए वायु को दबाता है, शरीर की बनावट को दृढ़, बलिष्ट और तेजस्वी करता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( ८ ) भोजन उतना ही लेना अच्छा है जितना बिना किसी प्रकार का कष्ट दिये ठीक समय में पच जाया करे। कफ, बात और पित्त ये तीनों दोष शरीर को टिका रखने वाले हैं, परन्तु जब इनके मार्ग में कुछ भी गड़बड़ होजाती है तो यही तीनों दोष तुच्छ मनुष्य की तरह ज़रा साकारण पाकर ही बड़ी हानि कर डालते हैं, मात्रा के अनुसार लिया हुआ भोजन इन तीनों दोषों को बिना दबाये परिणाम पाकर आयु को बढ़ाता है। कारण इसका यह है कि वह सुख पूर्वक अच्छी तरह से पच जाता है, और दस्त भी साफ़ आने में रोक टोक नहीं होती। पाचनशक्ति को दबाने वाला भोजन दस्त साफ़ नहीं होने देता परन्तु मात्रा के अनुसार लिया हुआ भोजन पाचनशक्ति को बिल्कुल नहीं दबाता इससे भोजन मात्रा ही के अनुसार लेना चाहिये पचने के पूर्व ही जो दूसरी बार भोजन कर अपक्व रस दूसरी बार के भोजन के ताज़ा रस में मिलकर ऐसा ख़राब असर करता है कि बात, पित्त और कफ़, कुपित होकर अनेक रोग उत्पन्न करते हैं, हैज़ा आदि प्राण घातक रोग भी ऐसी भूल से ही पैदा होजाते हैं। जो पहिले का भोजन अच्छी तरह पचजाने पर दूसरी बार भोजन किया जाय तो प्रथम के भोजन के रस के पचने की क्रिया बिना अड़चन के पूरी हो चुकने के कारण बात पित्त और कफ़ तीनों दोष अपना अपना काम करके अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्थान में बैठ जाते हैं पाचनशक्ति नया काम करने के लिये तैयार रहती है, भोजन करने की रुचि भी प्रबल होजाती है, पदार्थों के लिये अपने अपने स्थानों पर पहुंचने के लिये मार्ग भी खुल जाते हैं, डकारों में अजीर्ण का लेश मात्र चिन्ह नहीं रहता, आमाशय साफ़ होजाता है, वायु नीचे उतरने लगता है, और वायु तथा मलमूत्र के वेग को मार्ग मिल जाता है। इससे पीछे से लिया हुआ भोजन शरीर के भीतरी किसी भी तत्व को दूषित नहीं करता और सुगमता से पाचन होकर आयुष्य को बढ़ाता है। इसलिये पहिले का भोजन अच्छी तरह पचजाने पर ही दूसरी बार भोजन करने का नियम रखना चाहिये। ( ९ ) खाने के कितने ही पदार्थ शीतवीर्य अर्थात् गरमी नष्ट करने वाले होते हैं और कितने ही उष्ण वीर्य अर्थात् सरदी ठंडक को नष्ट करने वाले होते हैं। शीतवीर्य और उष्णवीर्य दोनों को परस्पर विरुद्ध स्वभाव वाला समझना चाहिये, परस्पर विरोध रखने वाले मनुष्य एक जगह इकट्ठे होने से जैसे परस्पर लड़ाई करते और स्थान को खराब कर देते हैं वैसे ही परस्पर विरुद्ध स्वभाव रखने वाले भोजन के पदार्थ साथ साथ शरीर में जाने से परस्पर की विरुद्धता के कारण विषैला तत्व उत्पन्न करके शरीर को हानि पहुँचा देते हैं क्योंकि वह विषैला प्रभाव देश काल के अनुसार नपुंसकता, अंधापन, जलोदर, विस्फोटक,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्माद, भगंदर, कुष्ट, ज्वर, क्षय आदि रोग उत्पन्न कर देता है, समय पर ऐसा भी होता है कि कसरत आदि कारणों से प्रबल पाचनशक्ति वाले मनुष्यों के शरीर में इस प्रकार का विषैला असर कुछ भी काम नहीं कर सकता परन्तु और लोगों के साथ ऐसा नहीं होता है, वैसे मनुष्यों को भी अपने ऊपर असर न करने वाले उन विषैले दोषों को तुच्छ न समझना चाहिये, बारम्बार हारकर पीछे हट जाने वाला शत्रु भी समय पर प्रबल होकर दबा बैठता है, परन्तु सचेत होकर चलने वाले पर उसका बल नहीं चल सकता, इसलिये परस्पर विरुद्ध असर रखने वाले भोजन के पदार्थों का साथ साथ उपयोग न करना ही कल्याण-कारी है। (१०) खाने में बहुत जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये, जल्दी जल्दी खाने की आदत रखने वाले को खाते खाते पसीना आजाता है, घबराहट होती है, और भोजन ठीक न चबाने के कारण उससे मिलने वाला बल, पुष्टि आदि फल भी नहीं मिलता है। (११) बहुत धीरे २ खाने की आदत भी अच्छी नहीं होती, धीरे २ खाने वाला मात्रा से अधिक खा लेता है और परोसने में आए हुए पदार्थ अधिक समय लगने से ठंडे होकर उलटा असर दिखाते हैं। (१२) खाते समय अधिक बोलना अथवा अधिक हँसना नहीं चाहिये, क्योंकि खाते समय अधिक बोलने एवं हँसने से भोजन ठीक २ चबाया नहीं जाता,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अधूरा चबाया हुआ ठीक ठीक पच नहीं सकता, अधिक बोलने तथा हँसने से छाती में आंटी पड़ जाया करती है जिससे छाती में थोड़ा बहुत दर्द होने लगता है, (१३) भोजन के विषय में जितनी बात याद रखने योग्य हैं उनमें अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि अपनी प्रकृति का विचार करके ही भोजन करना चाहिये, बहुत से आदमियों की आदत होती है कि वे प्रबल पाचनशक्ति वाले मनुष्यों के साथ खाने में समानता करने लगते हैं दूसरों के साथ पड़कर अपनी प्रकृति के अनुकूल न आने वाले भोजन करना हानिकारक हैं, इसलिये भोजन करने में पल पल पर अपनी प्रकृति का विचार करते रहना चाहिये (१४) स्वाभाविक रीति से पच सकने योग्य आहार से अधिक आहार पचाने की लालसा से बहुत से मनुष्य नशीली चीजों का सेवन कर पाचन शक्ति को उत्तेजित करने का यत्न करते हैं, परन्तु वास्तव में देखा जाय तो ऐसा करने में पाचनशक्ति कम होती है, अपने स्वाभाविक वेग से दौड़ते हुए घोड़े को जब चाबुक लगाया जाता है तो वह उस समय तेज हो जाता है, परन्तु चाबुक लगाना घोड़े की चाल को तेज़ करने वाला समझने के बदले उसको थकाने वाला ही समझना चाहिये, इसी तरह नशीली चीज़ें पाचनशक्ति को उत्तेजित करने वाली होती हैं, इससे पाचनशक्ति को नशीली चीज़ों से उत्तेजित करने का कभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रयत्न नहीं करना चाहिये। (१५) अधिक भोजन करते रहने में शरीर में बल नहीं आता है, बल तो आता है खाया हुआ भोजन अच्छी तरह पाचन होने से। इसलिये पाचन शक्ति को निर्बल करने वाला अधिक अथवा भारी भोजन करना नहीं चाहिये इस बात को अच्छी तरह ध्यान में रखना चाहिये कि भोजन उतना और वैसा करना चाहिये कि जिसमें पीछे से पिए हुए पानी और वायु को पेट में फिरने ठहरने का स्थान मिल सके और सुगमता से पाचन होने से अड़चन न आवे। (१६) भोजन के पश्चात् ताज़े जल से ख़ूब कुल्ला करे जिससे दांतों में लगा हुआ अन्न भली भांति निकल जाये। अन्न के लगे रहने से कीड़ा लग जाता है। यदि दांतों में गड्ढा हो तो उसमें से चांदी सोने या नीम की सीक से हिलगे हुए अन्न को निकाल दें।

## अजीर्ण एवं मन्दाग्नि होने के कारण

१–खाया हुआ भोजन न पचने पर दूसरा खा लेने से। २–कुसमय और अधिक खाने से। ३–जिस वस्तुको जी न चाहता हो उसको खाने से। ४–अनमेल वस्तुओं के साथ भोजन करने से जैसे दूध के साथ खटाई और दही खाने से। ५–काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा, द्वेष, भय, चिन्ता, शोक, मानसिक और विकारों में भोजन करने से। ६–भोजन के समय अधिक पानी पीने से अथवा मलमूत्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वेग को रोकने से। ७--दिन में सोने और रात्रि के जागने से। ८--झुक कर भोजन करने, पेट दब जाने, पक्वाशय की धमनी निर्बल होजाने से, भोजन करने के पश्चात् मैथुन करने से। उपरोक्त प्रकार का अजीर्ण प्रायः टहलने, गरम पानी पीने एवं उपवास ( कुछ न खाने से ) करने से दूर हो जाता है। परन्तु वर्तमान समय में भूँखा रहने का नाम ही उपवास है यह सर्वदा ही हमारी समझ में अनुचित है क्योंकि अजीर्ण के बिना जब अन्न नहीं मिलता तो सम्पूर्ण इन्द्रियां मन सहित विकल हो जाती हैं। मुख पर उदासीनता एवं हाथ पांव में शिथिलता आ जाती है, आंख निकली पड़ती हैं प्यास के मारे कण्ठ सूखने लगता है तथा एक एक पल वर्ष के समान बीतता है। भजन करने के लिये मन की एकाग्रता की आवश्यकता है, क्या ऐसी दशा में मन आराम पा सकता है फिर व्रत कैसा ? तिस पर विशेषता यह है कि बालक, बूढ़े, दुर्बल गर्भिणी आदि को भी यह व्रत कराए जाते हैं जिससे नाना प्रकार की हानियां होती हैं। इसलिये अजीर्ण के बिना उपवास नहीं करना चाहिये।

इसके उपरांत बहुत से ऐसे भी व्रत हैं कि जिनमें बासी भोजन खाये जाते हैं जैसे 'देवी महारानी का बस्योरा'। क्या ही आश्चर्य का स्थान है किहम श्रीकृष्ण जी महाराज की आज्ञा पर तनिक भी ध्यान नहीं देते। उन्होंने गीता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के १२ अध्याय के १० श्लोकों में बासी भोजन करना मना किया है क्योंकि उससे तामसी भाव उत्पन्न होता है, अर्थात् बुद्धि मलीन हो जाती है आलस्य भरा रहता है। इसके अतिरिक्त बहुधा स्त्रियां अन्न छोड़ देती हैं। हे प्यारी बहिनों! इससे तुम्हारी बड़ी हानि हो जाती है, नाना रोग तुमको घेरे रहने के कारण सन्तानों को भी बड़े बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं। प्रत्यक्ष देखो कि उन दिनों में तुम्हारी क्या दशा हो जाती है यही नहीं बहुधा स्त्रियां नमक छोड़ देती हैं और इसी को वे परम तप समझती हैं यह भी उनकी बड़ी भूल है क्योंकि प्रथम स्वाद न होने के कारण भोजन नहीं खाया जाता, दूसरे मनुष्य के रक्त के साथ बहुत सा भाग नमक का है नमक के साथ भोजन पचता है बिना इसके खाए बलका नाश होजाता है, अन्त में उनके शरीर में कीड़े पड़ जाते हैं कि जिससे उनको नाना क्लेश भोगने पड़ते हैं। बहुधा व्रतों में अन्न का निषेध किया है और व्रतों में सिंघाड़ा, पोस्ता, फाफड़ा, घुइयां, आलू आदि कुपथ्य भोजन किया जाता है कि जिससे स्वास्थ्य ठीक रहना अति कठिन है गेहूँ, दाल, चावल, तरकारी जो सदा पथ्य है उनके भोजन करने में पाप बताना अज्ञानता का कारण है हां शुद्ध आचरण से रहने का नाम व्रत है जिसको हम आगे वर्णन करेंगे—इन सब बातों के अतिरिक्त यजुर्वेद अ० १० मं० १४ में लिखा है कि जो मनुष्य ऋतुओं के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अनुकूल आहार, विहार कर विद्या योगाभ्यास और सत्संग का अच्छे प्रकार सेवन करते हैं वे सब ऋतुओं में सुख भोगते हैं इसी प्रकार महात्मा चरक का कहना है कि जो ऋतु के अनुसार दिनचर्या अर्थात् आहार विहार करते हैं उसी परिमित भोजी मनुष्य का बल और कांति बढ़ती है और जो मितभोजी ऋतु विरुद्ध कार्य्य करते हैं उनके स्वास्थ्य में अन्तर पड़ जाता है इसलिये ऋतु अनुकूल भोजन विधि लिखते हैं।

## शरद ऋतु के आहार बिहार

अश्विन ( क्वार ) और कार्तिक दो मास शरद ऋतु के धर्मशास्त्रानुसार तथा वैद्यकमतानुसार कार्तिक और अगहन कहलाते हैं।

मासैर्द्विसंख्यैर्माद्याद्यैः क्रमाद्षड्ऋतुवः स्मृताः।
शरोऽस्थवसंतश्च ग्रीषम वर्षा शरद्धिमाः॥

वर्षाकाल में पानी की ठण्डक से शरीर के रोमकूप प्रायः बन्द रहते हैं। जिससे शरीर की गरमी बाहर न निकल कर शरीर के भीतर ही इकट्ठी होती रहती है वह गरमी शरद ऋतु में सूर्य की तेज धूप से यकायक उमड़ जाती है जिसे पित्त का कोप कहते हैं। पित्त के कोप से नीचे लिखे रोग हो जाते हैं। शरीर में फुन्सियां होना, खट्टी और धुरोली डकार आना, प्रलाप करना, पसीना अधिक निकलना, बेहोश होना—शरीर में बदबू आना, त्वचा का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फट जाना, नशा जैसा मालूम होना, संधि बन्धनों का ढीला पड़जाना, फुंसियों से शरीर का पकजाना, कहीं भी मन न लगना, प्यास अधिक लगना, चक्कर आना गरमी मालूम होना, भूंख न लगना, आंखों के सामने अँधेरा तथा जलन होना, मुंह का स्वाद कडुआ खट्टा और चरपरा होना, शरीर का पीला पड़ जाना, पेट में ऐसी पीड़ा होना मानो कोई चीज़ पकतो हो यदि किसी का पित्त अधिक कुपित है तो उसे यह सब रोग होते हैं और यदि कम कुपित होता है तो इनमें से कुछ होते हैं इसीलिये इस ऋतु के लगते ही कड़ा या मुलायम जैसा कोठा हो उसके अनुसार किसी सुयोग्य चिकित्सक के परामर्श से जुलाब अवश्य लेना चाहिये अथवा फ़स्त खुलवावे या तिक्त घृत सेवन करे या प्रातः काल चीनी के शरबत में नीबू का रस डालकर पीवे। इस ऋतु में भोजन कडुआ, मीठ, कसैला, हलका और ठण्डा भूंख लगने पर करना चाहिये। मिश्री, चावल, मूंग, आंवला, परवल, घी और नदी का निर्मल जल लाभकारी होता है। इन ऋतु में ओस, खारी चीज, अधिक भोजन, दही, खटाई, दिन में सोना, रात में जागना, तेल, चर्बी, घाम, नशीली चीज़ों का सेवन इन बातों से दुश्मन की तरह बचाना चाहिये क्योंकि यह चीजें शरद ऋतु में रोग पैदा करने वाली हैं। इस ऋतु में निम्न लिखित प्रयोगों से पेट साफ़ कर लेना उचित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जुल्लाब की औषधियां—निसोत, मोथा, नेत्रबाला, चन्दनचूरा, मुनक्का, गुलाब के फूल, सनाय, सड़ी सुपारी अमलतास एक एक तोला लेकर पाव भर पानी में भिगो दे प्रातः क्वाथ बनाकर पीवे, परन्तु जुल्लाब के दिन और उससे दो दिन पहिले खिचड़ी घी डालकर खावे।

तिक्त घृत—छितवन, अतीस, अमलतास, कुटकी, पाढ़ा, मोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापड़ा, परवरलता, नीम की छाल, मँजीठ, पीपल, कमलगट्टा, कचूर, लालचन्दन, धमासा इन्द्रायण, हल्दी, गिलोय सफ़ेद, कालोसारिवा, मूर्वा, अडूसा शतावर, त्रायमाण, इन्द्रजौ, मुलहटी, चिरायता बराबर २ ले चौगुना घी, घी से अठगुना पानी तीन दिन तक पानी में भिगो धोमी २ आंच से पकाना चाहिये। यह घृत कुष्ट, वातरक्त, रक्तपित, खूनी बवासीर, पाण्डुरोग हृद्रोग, वायु-गोला, प्रदर, गण्डमाला और ज्वर में भी दिया जा सकता है।

## बदहज़मी (क़ब्ज़) दूर करने का सरल उपाय

१—छोटी हरड़, गुलाब के फूल, कालीदाख, मग़ज़बादाम, सौंफ इन को छः छः माशा ले कूट पीस पानी से गोली बनाले तीन तीन माशे की एक गोली रात को पाव भर गुनगुने दूध में मीठा डाल कर उसके साथ गोली खा ऊपर से दूध पीले। २—त्रिफला की ६ माशा की फंकी लगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ऊपर से दूध या गुनगुना पानी पीवे। ३–एक या दो मुरब्बे की हरड़ अथवा दो तोले मुनक्का बीज सहित खावे। ४–पाव भर दुग्ध में ३ तोले बादाम या रेंड़ी का तेल पीवे ५–३ तोले गुलक़न्द खाकर ऊपर से गुनगुना दुग्ध मीठा डालकर पीवे। कब्ज़ दूर करने को और पेट के समस्त रोगों से बचने के लिये प्रातः शौच स्नान से निवृत होकर एक गुदगुदे आसन पर अच्छे प्रकार बैठ नाभि की ग्रन्थि को सांवार * मेरुदण्ड ( यानी पीठ की हड्डी जिसको रीढ़ कहते हैं ) से मिलावे अर्थात् पेट को ऐसा खलावे कि नाभि धुस कर पीठ की हड्डी से लग जाया करे ऐसा प्रति दिन नियत समय पर करने से जठराग्नि बढ़ भूख खूब लगती है।

## अधिक सर्दी अर्थात् हेमन्त ऋतु के भोजन

पूस और माघ यह दो मास सर्दी के हैं इसमें दही, दूध घी, उड़द, गेहूँ, चना, बाजरा, मकई, चावल, मुश्क, केसर, पिट्ठी के पदार्थ, गुड़, मिश्री चीनी, रबड़ी, खोवा, मलाई, तिल, अदरख जिमीक़न्द, बथुआ, बिलायती अनार, सेब आदि गर्म पदार्थ तथा बादाम आदि मेवा का सेवन करना

* नोट—प्रथम अभ्यास करने वालों को दो चार दिन २०. २५ से आरम्भ करना चाहिये फिर धीरे २ बढ़ाकर सौ तक पहुँच जावे। इस क्रिया के करने के पीछे १ घण्टे तक पानी न पिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बातकारक चीज़ों से परहेज करना रुई वा ऊनी कपड़े पहनना और कसरत करना चाहिये।

## बसन्त ऋतु का पथ्य

बसन्तऋतु अर्थात् फागुन और चैत में—गेहूँ, चावल, मूंग, जौ, परवल, बैंगन, चीनी, दूध, केला आदि गर्म तर पदार्थों का सेवन मीठा, चिकने, भारी क़ब्ज़ करने वाले दही और दिन में सोना हानिकारक है इस ऋतु में कफ़-कारक चीजों को न खाना चाहिये।

## ग्रीष्म ऋतु का पथ्य

बैसाख और जेठ में गर्मी रहती है इसमें गेहूँ, चावल, मिश्री, दूध, बरफ़, गुलाब, केवड़ा, खस और मोतिया का इत्र सूँघना, हल्के, सूतीवस्त्र लू चलने के समय मोटे वस्त्र पहनना, ठंडे मकान में रहना, रात को ओस में सोना, प्रातःकाल शरबत पीना, शीतल पदार्थों का सेवन, सुन्दर पुष्पों की माला पहनना, चंदन का लेप करना, तथा कस-रत, धूप में फिरना, चरपरे, गर्म और रूखे पदार्थों का सेवन, और सफ़र करने से हानि होती है।

## प्रावृट् ( आषाढ़ श्रावण )

इस ऋतु में मक्का, चना, गेहूँ, खट्टे मीठे पदार्थ मट्ठा दही और नमकीन पदार्थों का सेवन और गरम तथा



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रूखे पदार्थों का खाना और नदी में स्नान करना हानिकारक है। सावन में दूध भी न पीवे तथा बात (वायु) उत्पन्न करने वाली वस्तुओं का सेवन न करे। मिट्टी लगा कर कसरत करे।

## वर्षाऋतु ( भादों क्वार )

इसमें गेहूँ, चावल, उड़द, दूध मट्ठा बात नाशक और हल्के पदार्थों का सेवन करे। वर्षा होने के कारण अन्न कम पचता है इसलिये भोजन कम करना चाहिये। वायु तथा पानी के ख़राब हो जाने से मलेरिया, शीतज्वर, हैज़ा, दस्त आदि बीमारियां फैल जाती हैं उनसे बचने के लिये पौनपेट भोजन करना योग्य है। वर्षा के पानी में भीगना, ओस में सोना—नदी का जल पीना स्नान करना या उसके पास रहना—विषय, गरिष्ठ पदार्थों का सेवन—खीरा, करेला, फूँट का खाना हानिकारक है इसके अतिरिक्त निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

चैते गुण बैशाखे तेल, जेठे पन्थ अषाढ़े बेल।
सावन दूध न भादों मही, क्वार करेला कातिक दही॥
अगहन जीरा पूसे धना, माहे मिश्री फागुन चना।
जो यह चारों देय बचाय, ता घर वैद्य कबहुँ न जाय॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## कतिपय वस्तुओं के पचने का समय

| नाम वस्तु | समय |
|---|---|
| आलू | ३ घंटे |
| गेहूँ की रोटी | ३ ,, ३० मिनट |
| बाजरा मकई की रोटी | ३ ,, ४० ,, |
| उड़द की दाल | २ ,, ४० ,, |
| साबूदाना | १ ,, ४५ ,, |
| सेम की फली | ३ ,, |
| चावल | १ ,, ४५ ,, |
| गोभी | ३ ,, ३० ,, |
| दूध उबाला हुआ | २ ,, |
| जौ की रोटी | ३ ,, २० ,, |
| प्रत्येक प्रकार की दाल | २ ,, ३० ,, |
| मूँग की दाल | २ ,, ३० ,, |
| चुक़न्दर गाजर | ३ ,, ३० ,, |
| अरारोट | १ ,, ३० ,, |
| कचौरी | ४ ,, |

## पान

भोजन करने के बाद एक पान भी खाना योग्य है। यह मुख की दुर्गन्धि को दूर कर और उसकी शोभा बढ़ाता है, जिह्वा और दांतों को स्वच्छ करता है, खाने में स्वादिष्ट, शौच को लाने वाला और बल को देने वाला है। परन्तु इसके अधिक खाने से शरीर का बल न्यून और आंखों का प्रकाश कम हो जाता है एवं दांत और कान को भी हानिदायक है तथा पाचनशक्ति को भी कम करता है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इससे नासूर भी होजाता है। भूँख, नेत्र पीड़ा, बेहोशी में पान न खाना चाहिये इसको भारतवर्ष में नागरबेल कहते हैं। दूध पीने के पश्चात् शीघ्र ही पान न खाना चाहिये।

## भिन्न भिन्न पदार्थों के गुण

गेहूँ—वात, पित्त, कफ़ को समान रूप से रखने वाला, मधुर, शीतल, जीवन कर्त्ता, वीर्यवर्द्धक, कफ नाशक, दस्त साफ लाने वाला तथा भारी होता है।

जौ—रुक्ष मधुर, बुद्धि और अग्निवर्द्धक, शीतल, भारी, मिष्ट, बहुअधो वायु कारक, दृढ़ताकारी, बलकारी, क़ब्ज विकारों और प्यास रोग को नाश करने वाले होते हैं।

तिल—कुछ कसीला, स्निग्ध तथा मधुर, तीक्ष्ण, बात पित्त नाशक, कफकर्त्ता अग्नि और बुद्धि को बढ़ाने वाला है सब प्रकार के तिलों में काला तिल उत्तम है।

मटर—अत्यन्त बादी और बात करता है।

मसूर—पाक में मधुर और मल को रोकने वाली, ठण्डी वादी और कफ पित्त, खून विकार और बुखार को रोकती है।

उड़द—पुष्टिकारक, तृप्तिकारक, अत्यन्त बातनाशक स्निग्ध, ऊष्ण, मधुर, गुरु, बलकर्त्ता, मलबर्द्ध और शीघ्र ही पुन्स्त्वप्रदायक है।

मूंग—मूंग की दाल कषाय, मधुर, रुक्ष, शीत वीर्य, कटुपाकी लघु, कफ पित्तनाशक और बुखार के रोगियों को पथ्य है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मोंठ—रस और पाक में मधुर, हल्की, अग्निवर्द्धक, रुक्ष, शीतल तथा रक्तपित्त और ज्वर में हितकारी है।

चना—हल्का, शीतल, कषाय, रुक्षकर्त्ता, कफ पित्त में हितकारक है।

कुंगनी, कोंदू, नीवार शामक—शीतल, हल्का, वातकर्ता कफ और पित्त हर्ता है। जिसमें कुङ्गनी टूटे को जोड़ती और धातुओं को पुष्ट करती है।

कुलथी—गरम पाक में खट्टी, वीर्य, पथरी, श्वांस, पीनस तथा खांसी, बवासीर, कफ बात को नाशती और विशेषतः रक्त पित्त को देती है।

अरहर—कफ पित्त नाशक, वातकर्त्ता, गरम, खुश्क और मधुर होता है।

सब प्रकार की बरी—क़ब्ज़ और बादी को बढ़ाने वाली होती हैं।

पकौड़ी—बगन अथवा और कोई शाक भर कर पकौड़ी बनाई जाती हैं वह बातकर्त्ता होती हैं।

चावल—कई प्रकार के होते हैं उनमें से आगरा व अवध में साठी और कुमोद अर्थात् शाली चावल ही अधिकता से खाया जाता है। साठी चावल ही ६० दिन में बाली में ही पक जाता है। यह मीठे शीतल मल को बांधने वाले हल्के और पित्त को शांत करने वाले होते हैं कुमोद हल्का, मीठा सुगन्धित मल बन्धक और त्रिदोश नाशक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होता है हल्का मीठा चावल मोटे प्रकार का और पीलीभीत ज़िले का बारीक चावल तथा देहरादून के ज़िले का बांसमती भगवानदास और रामअजबायन नामक चावल खाने में बहुत स्वादिष्ट होते हैं इसलिये रोगियों को पुराने महीन चावल ही खिलाने चाहिए सब प्रकार के चावल मीठे से खाने से बहुत शीघ्र पच जाते हैं और बलदायक एवं स्वास्थ को स्थिर रखने वाले होते हैं बात और कफ के रोगियों को चावल कम खाना चाहिये।

सत्तू—बातकर्ता—रुक्ष—मल को बढ़ाने वाले, पुष्टिकारक, प्यास पित्त और कफ को दूर करता है जो पानी में घोल कर पिया जाता है वह तत्काल बल करने वाला, भेदी और बातनाशक होता है, जो सत्तू चाटा जाता है वह मृदु होने के कारण शीघ्र ही पच जाता है।

खील—दीपन, कफ़ बलकर्ता, कसीली, मीठी, हल्की, प्यास और मल दूर करती है।

खील के सत्तू—प्यास दाह नाश करता है।

चिरवा—धान भिगोकर जो कूटे जाते हैं और फिर भाड़ में भूने जाते हैं उन्हें चिरवा कहते हैं। ये रक्त, पित्त दाह ज्वर के नाश करने वाले भारी स्निग्ध और कफ़ वर्द्धक होते हैं। चिरवा बिना भुने नहीं खाने चाहिए।

धान—नवीन धान के चावल भारी, दाहकर्ता, विष्टम्भी और पुष्टि को बिगाड़ने वाले होते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## मसाला

सोंठ—अग्नि दीपक, बात, कफनाशक, मधुर पाकी, हृदय प्रिय और रुचिवर्द्धक होती है।

छोटी इलायची—शीतल, बातघ्न, कासनाशक, अग्नि को दीप्त करती है।

बड़ी इलायची—हल्की, रूखी, गर्म अग्नि सन्दीपन है कफ़ तथा बात नाशक है। खांसी एवं मुख रोगों को दूर करती है।

काली मिर्च—कड़वी, चरपरी है कफ एवं बात नाशक है अग्नि संदीपन तथा पित्त कारक है शूल स्वांस एवं कृमि नाशक है।

लौंग—हल्की, हितकर, दीपन, पाचक एवं रुचि कारक है। बातघ्न, शूल कास नाशक है दिमाग़ को ताक़त देती है।

हल्दी—हल्की, कटु, तिक्त, हृद्य, पाचक है। पाण्डू, कफ़, चर्म रोग नाशक, कृमि नाशक, तथा नेत्रों को लाभ पहुंचाने वाली है।

मैथी—पित्तवर्द्धक, कटु तथा गर्म है। बलवर्द्धक, ज्वर बात कफ़ नाशक है।

राई—पाचक हृद्य तथा बल कारक है।

अजवाइन—तीखी, चरपरी, गर्म और पाचक-पित्त वर्द्धक एवं बात, कफ़ शूल, कृमि नाशक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तेजपात—तीक्ष्ण, हल्का, बात कफ़ हृदय रोग नाशक है।

पोदीना—बमन नाशक, पाचक, ठण्डा और बात नाशक है।

पीपल हरी—कफकर्ता और भारी और सूखी बातनाशक, कटु, उष्ण होती है।

मिरच—यह उष्ण, अग्नि संदीपन और कफ बात को जीतने वाली है।

हींग—कफ़ बात को दूर करने वाली अग्नि संदीपन और शूल नाशक पाचक और रोचक भी होता है।

अदरक—कफ़ बात नाशक, शूल को दूर करने वाली, स्वाद में कटु, वीर्य में उष्ण, रोचक, हृदय को हितकारी है।

सफेद जीरा काला जीरा—काला जीरा पाक में कटु, रुचि वर्द्धक, पित्त अग्नि को बढ़ाने वाला, स्वाद में कटु, कफ़ और बात को मारने वाला और सुगन्धित है। सफेद, रुचिवर्द्धक और अग्नि सन्दीपन है।

हरा धनियां—स्वादिष्ट होता है, सुगन्धयुक्त और हृदय को भाता है।

सूखा धनियां—पाक में मधुर, प्यास और जलन का नाश करने वाला है।

सेंधा नमक—रोचक, दीपन, हृदय प्रिय, नेत्र हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर सब नमकों में उत्तम है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समुद्र नमक--पाक में खारी कुछ उष्ण, जलन को दूर करने वाला, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकर्ता नहीं होता है।

काला नमक--पाक में हल्का, वीर्य में उष्ण और कटु होता है यह गुल्म शूल का नाशकर्त्ता, हृदय को हितकारी, सुगन्धित और रोचक होता हैं।

सांभर नमक—तीखा अत्यन्त गर्म कटुपाकी, वात नाशक हल्का, बहुत बारीक, रोमकूपों में प्रवेश करने वाला, मल को फाड़ने और मूत्र लाने वाला है।

खारा नमक—हल्का, तीक्ष्ण, उष्ण कफ़ को कुपित करने वाला, सूक्ष्म चरपरा, कटु और क्षारयुक्त होता है।

## शाक ( साग )

पालक—भारी और सर्द है श्वांस, पित्त को नाश करता है।

गाजर—तीक्ष्ण है, पित्त वालों को हितकारी है।

ज़िमीकन्द - दीपन, रुचि में हित, कफ़ को नाशता और हल्का है बवासीर के रोग में पथ्य है।

सरसों—गरम बादी, अग्निवर्द्धक, पेट के कीड़ों को नाश करने वाली और मल मूत्र को रोकने वाली है।

चौलाई—कसोली होने से विष्टा को नहीं फाड़ती, मूत्र को नहीं बढ़ाती न कफकारी है, रस में स्वाद पाक में मीठो तृप्ति करता, दूध बढ़ाने वाली और रुचिवर्द्धक, रक्त पित्त में हितकारी, मद और विष नाशक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सम—रुक्ष, कसीली, विष रोग, शोथ कफ़ ।और दृष्टि को कम करने वाली बिदाही, मृदु पाकी दस्त कराने वाली और बादी और पित्त को बढ़ाती है ।

पोई—पाक रस में मिष्ट, पुष्टिकारक बात पित मद नाशक, दस्तावर, चिकनी बलकारक, कफ़ करता और ठंडी होती है ।

कुलफ़ा—शहद और दूध के साथ न खाय, क्योंकि इसके खाने से वर्ण तेज, वीर्य का नाश नपुंसकादि कठिन रोग उत्पन्न होते हैं । वैसे शीतल अग्निदापक, बवासीर और मंदाग्नि को नष्ट करता है ।

ककोड़ा—मल, रुचि, खाँसी, सांस और बुखार नाशक तथा अग्नि दीपक है ।

कटहल—बातकारक, भारी, बलदायक, कफ़ और मेद बढ़ाने वाला है ।

ककड़ी—स्वादु, भारी विष्टम्भी और शीतल है ।

कूंटघिया—मल भेदक, रुक्ष, शीतल भारी है ।

पेठा किसी देश में इसे कोला कहते हैं । पक्के पेठे की तरकारी भारी पित्त खून विकार और बात नाशक और वीर्यवर्द्धक है कच्चे की अग्नि दीपक बहुत पेशाब लाने वाली, मृगी और पागलपन को दूर करने वाली होती है आगरा में इसकी मिठाई बनाई जाती है जिसके खाने से दिलकी ताकत बढ़ती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कसेरू--भारी, विष्टम्भी और शीतल है।

बथुआ—त्रिदोष नाशक और मल भेदक है बवासीर, तिल्ली, रक्तपित्त और कीड़ों का नाश करने वाला है।

मकोय--त्रिदोष नाशक, वृष्य, रसायन न अत्यन्त शीतल न अत्यन्त उष्ण है। कण्ठ को हित और कोढ़ को नाश करती है।

मैथी--पित्त नाशक है।

बैंगन--कई प्रकार के होते हैं। गोल बैंगन को मारू लम्बे को बतिया कहते हैं। रङ्ग भी दो प्रकार के हैं काला और श्वेत ये बादी और काबिज़ हैं।

गुड़हल--कफ़ बादी नाशक, चरपरा, रोचक, कड़वा, हल्का, दीपन है और खाने में नुनखरा और पित्त करता है।

गोभी--कफ़ पित्त नाशक, बात करता, भारी रस में कसीला, पाक में मधुर, प्रमेह मूत्र कृच्छ और खून विकार को दूर करती है।

काशीफल--पित्तनाशक, अधपका कफ करता, पका हुआ हल्का, गर्म नुनखुरा, दीपन और बस्तिशोधक है।

करमकल्ला—दीपक विष दोष नाशक कड़वा और बादी है।

करेला—दीपक पित्तनाशक बल कारक है।

नाड़ो—विषनाशक गरम और बादी है।

परवल—कफ़ पित नाशक गरम और चरपरा बादी रहित, कटुपाकी पुष्टिकारक रुचिवर्द्धक और पाचक होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


खीरा—कच्चा खीरा जिसका रङ्ग नीला होता है वह पित्त का हरने वाला है। पीले रंग का पका हुआ कफ़-कर्ता, भारी, रसमें कसीला, पाक में मधुर और शीतल है।

पिंडाले—कफ़कर्ता, बादी का कोप करने वाला और भारी होते हैं।

ब्राह्मी—कसीली पित्तमें हितकारी, रस पाक में स्वादु और हल्की होती है।

शकरकंद—भारी, कफ बादी करने वाली और पित्त नाशक है।

चने का शाक—पाक में मिष्ट और देर में पचने वाला है।

सेंजनी की फली—बात नाशक है।

अदरक क शाक—कफ़ बात नाशक, स्वर को हितकारी, शूल को दूर करने वाला, स्वाद में कटु, वीर्य में उष्ण, रोचक, हृदय को हितकारी और बल कारक होता है।

मूली—छोटी मूली रसमें कड़वी, चरपरी हृदय को प्रफुल्लित करने वाली रुचि को बढ़ाने वाली, जठराग्नि को प्रबल करने और सम्पूर्ण दोषों को दूर करने वाली, हल्की और कण्ठ को हितकारी है।

बड़ी मूली—भारी मल को रोकने वाली और तेज होती है। कच्ची-त्रिदोष हरने वाली है। घी में भुनी पित्त को दूर करने वाली कफ और बादी को जीतने वाली होती है। सूखी त्रिदोष को शमन करने वाली और हल्की होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आलू—सब प्रकार के आलू बल वीर्य वर्द्धक, उष्ण मधुर-भारी-रूखे-विष्टम्भ-दुष्टरक्त पित्तको दूर करने वाले हैं और मल मूत्र को गिराने वाले हैं।

भिण्डी—भारी, बलकारक, बात पित्त रोगों को दूर करती है।

छोटी तोरई—चिकनी-आम कफ को बढ़ाने वाली-भारी और रक्तपित्त को जीतने वाली है।

खरबूजा—मूत्र को लाने वाला-कोष्ठ को शुद्ध करता तथा बल वीर्य को बढ़ाने वाला-चिकना-स्वाद-शीतल वात पित्त नाशक है यह मीठे खरबूज़े के गुण हैं।

ढ़ेणस—रुचिकारक-भेदी-पित्त कफ को दूर करने वाले-शीतल- बात कारक-रूखे मूत्रकारक और पथरी नाश करने वाले हैं।

सेमर के फूल—कफ पित्त रक्त विकारों को दूर करता ग्राह्य. बातकारक मधुर कसैला-शीतल और भारी होता है और स्त्रियों के दुःसाध्य प्रदर के रोग को दूर करता है।

सहजने के फूल—गरम, तीखा, चरपरा, नसों में सूजन करने वाला, कीड़ा तिल्ली और बायगोले को नाश करने वाला है।

केले—रक्तपित्त, प्रदर और क्षय रोग का नाश करने वाला चिकना, मधुर, और कसैला होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अगस्त के फूल का साग—स्वाद, कटु, तिक्त, कसैला, बात पित्त कफ को जीतने वाला, रतौंधी दूर करने वाला और पीनस का नाशक है।

कंले की फली—चिकनी, मधुर, कसैली, भारी, शीतल, बात, रक्त, पित्त क्षयी रोग नाशक है।

सूखा शाक—मूली के सिवाय और सब सूखे शाक, विष्टम्भी बात और पित्त करता हैं।

विशेष सूचना—कीड़ों का खाया हुआ, धूप या हवा का मारा हुआ सूखा पुराना, कुऋतु का बिना घी तेल से पकाया हुआ, उबाल कर बिना निचोड़े शाक न खाना चाहिये।

## अन्य पदार्थों के गुण

गेंहूँ- आदि के चून में जो दूध डाल कर पदार्थ बनाये जाते हैं वे उत्साह कर्त्ता, हृदय प्रिय सुगंधित, अदाही, पुष्टिकर्त्ता, दीपन और पित्त नाशक होते हैं। उनमें सेः—

घेवर—बलकर्त्ता, हृदय को हितकारी, कफकर्त्ता, बात पित्त कर्त्ता, पुष्टिकारक, भारी और रुधिर मांस को बढ़ाता है।

गुड़ के पदार्थ—गुड़से बनी हुई पूरी, लड्डू बात पित्त नाशक, वीर्य, कफ, वर्द्धक भी हैं। गूझा, पुआ, लड्डू, खुरमा अथवा बालूसाई, ये भारी हैं, लड्डू देर में पचता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तिलकुट—तिल और गुड़ कूट कर बनाया जाता है वातकर्त्ता है।

पूरी—कफ़ पित्तकर्त्ता और उष्ण वीर्य है। पिट्ठी से बने भोजन कफ, पित्तकर्त्ता हैं।

मैदा के पदार्थ—वातपित नाशक और पुष्टिकर्ता हैं। इन में से फेनी हृदय को हितकारी, पथ्यतम और हल्की होती है।

उरद की दाल के पदार्थ—विष्टम्भी, पित शमनकर्ता कफ-नाशक, मलको फाड़ने वाले, बलकर्त्ता और भारी होते हैं।

खोये से बने पदार्थ—भारी और कुछ पित्त करने वाले हैं।

घृत पक्व—घी में पकाये हुए पदार्थ हृदय को हितकारी, सुगन्धयुक्त पुष्टिकर्त्ता हल्के बात पित्त हरता, बलकारक वर्ण और दृष्टि को प्रसन्न करते हैं।

तेल पक्व—तेल में पकाये पदार्थ भारी, कटुपाकी, उष्ण, बात और दृष्टि के कम करने वाले पित्त और त्वचा को बिगाड़ते हैं।

खीर—कब्ज़ करने वाली, बलकर्त्ता और बातनाशिनी होती है।

खिचड़ी—कफ पित्त करने वाली, बलकर्ता, और बात-नाशिनी होती है।

शिखरण—पुष्टिकर्ता वीर्यवर्द्धक, चिकनी, बलकारक और रोचक होती है। तीन प्रकार का जो पानक अर्थात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पना होता है वह कफ और मल दोषों को निकालता है गुड़ ( खांड शक्कर गुड़ादि ) से बना हुआ खट्टा भारी और मूत्र को लाता है और जो खांड़ दाख और शर्करा, इमली, सोंठ, मिरच, पीपल आदि डाल कर बनाते हैं वह बहुत उत्तम हैं।

## फल

सामान्यगुण—सम्पूर्ण फल सामान्य रीति से खट्टे पाक में भारी वीर्य में उष्ण पित्त करता वात नाशक और कफ को कठिनता से निकालते हैं।

अनार—कसीला, पित्तकरता, रुचि करता हृदय को हितकारी और मल को रोकने बाला होता है। अनार दो प्रकार का होता है एक मीठा और दूसरा खट्टा। मीठा त्रिदोष नाशक है। और खट्टा बादी कफ को दूर करता है।

आंवला—मीठापन लिये हुये खट्टा, चरपरा, कसैला, कडुवा, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, सम्पूर्ण, दोषों को नाश करने वाला और पुष्टिकारक है। खट्टा होने के कारण बादी को दूर करता है। मीठा ठंडा होने से पित्त नाशक है रूखा कसैला होने से कफ दूर करता है और फलों से गुणों में अधिक होता है।

बेर—झाड़ीबेर और गोल बेर ये दोनों कच्चे पित्त को नाशते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पक्का बेर--पित्त बात को दूर करता है, चिकना, मीठा दस्तावर है।

पुराना बेर--प्यास को कम करता, दीपन, हल्का है।

सौंवर--अर्थात् बड़ा बेर चिकना मीठा और बात पित को जीतता है।

कसेरू--शीतल, मधुर, वीर्य वर्द्धक, पित्त, खून विकार, दाह और नेत्र रोग नाशक है।

बादाम--गरम, मधुर, चिकना, पित्त कफ़ बात नाशक और वीर्यवर्द्धक है यही गुण अखरोट के हैं।

नाशपाती--शीतल, मीठी, बात पित नाशक और वीर्यवर्द्धक है।

ख़रबूज़ा--मल मूत्र को साफ़ करने वाला, मधुर वीर्य वर्द्धक और कफ नाशक है।

तरबूज़-पेशाब साफ़ लाने वाला बादी भारी कफ़ कारक और वायु को बढ़ाने वाला होता है।

बेल--कच्चा बेल कफ़, बात और शूल को नाश करने वाला और बेलपका हुआ का गूदा खाने से दस्त बन्द होजाते हैं और अग्नि को मन्द करने वाला है।

शहतूत--मधुर, शीतल, पित्त बात नाशक, गले को खोलने वाला होता है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सिंघाड़ा—शीतल, स्वादिष्ट, भारी, वीर्यवर्द्धक, कसैला, बात और कफ़ करता, पित्त, रुधिर विकार, दाह को नष्ट करता है।

चकोतरा—स्वादिष्ट, शीतल, भारी, पित्त, हिचकी और भ्रम को दूर करता है।

खुमानी—शीतल, भारी, कफ़ पित्तनाशक और विष्टम्भी है।

सेब—कसैला, मीठा और शीतल है।

कैथ—कच्चा कैथ बोली को बिगाड़ देता है, कफ़ नाशक और बादी है। पक्का कैथ—बादी को दूर करता, रस में मीठा, खट्टा और भारी है।

पक्का आम—रस में कसैला, मीठा, बात नाशक, भारी, कुछ पित्त करता और वीर्य को बढ़ाने वाला है।

बड़हर—त्रिदोष और कब्ज़ियत करता तथा वीर्य को नाश करता है।

करौंदा—खट्टा, प्यास को मारने वाला, रुचिकर्ता, पित्तनाशक है।

आँड़ू—हृदय को हितकारी, मीठा, कसैला, खट्टा, मुख का शोधने वाला पित्त कफ को दूर करता, चिरपाकी, विष्टभी और शीतल है।

नारङ्गी—खट्टी, मीठी, हृदय को हितकारी, भोजन में रुचि बढ़ाने वाली बात नाशक और देर में पचने वाली, भारी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जंभीरी—प्यास, शूल, कफ़ को कठिनता से निकालने वाली, बमन और श्वाँस को निवारण करने वाली होती है वादी, कब्ज़ियत को दूर करती है भारी और पित्त करती है।

बड़ी जँभीरी—खट्टी, रक्त पित्त करने वाली है।

जामन—अत्यन्त बादी, कफ़, पित्त को दूर करने वाली होती है।

खिरनी—चिकनी, मीठी, कसैली और भारी होती है।

सीताफल—कसैला, मीठा, रूखा, कफ़ बादी को जीतता है

मोलिश्री—मोठी, कसैली, चिकनी और दाँतों को दृढ़ करने वाली है।

अञ्जीर—दस्तावर, स्निग्ध तृप्ति करने वाली भारी होता है।

फालसा—कच्चा, अत्यन्त खट्टा, कुछ मीठा, कसैला, हल्का, पित्तकर्त्ता और पका हुआ, मीठा और बात पित्त को रोकने वाला है।

ताड़ फल—मिष्ट, भारी और पित्त नाशक है।

नारियल—भारी, चिकना, पित्तनाशक स्वादिष्ट शीतल, बल और मांस का बढ़ाने हारा, हृदय को हितकारी, प्यास, दाह नाशक और वीर्य बद्धक है।

केले की फली—बादी, कसैली, ठण्डी, रक्तपित्त नाशक, पुष्टिकर्त्ता, रुचिकारी, कफ़कर्त्ता और भारी होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दाख—दस्तावर बोली को सुधारने वाली, मधुर, चिकनी, शीतल, होती है रक्त पित्त, ज्वर, तृष्णा, श्वांस, कास और क्षय को नाश करने वाली है।

खजूर—चोट, क्षय को दूर करता है, हृदय को हितकारी, शीतल, तृप्ति करने वाला, भारी रस पाक में मधुर, रक्त और पित्त नाशक होता है।

महुआ—महुआ का फूल, वृहण, हृदय को अहित और भारी है. महुआ का फूल बात पित्त नाशक है।

लिसोड़ा—भारी, कफ़ कर्त्ता, मधुर और शीतल है।

हरड़—गरम, दस्तावर, बुद्धिदात्री, दोष नाशक सूजन और कोढ़ को दूर करने वाली, कसैली दीपन, खट्टी और नेत्रों को हितकारी है।

बहेड़ा—हल्का, रूखा, गरम, स्वर को अहित, नेत्रों को हितकारक स्वादु पाकी, कसैला और कफ़ पित्त को जीतने वाला है।

सुपारी—कफ़, पित्त नाशक, रूखी, मुख की क्लेदता और विरसता को दूर करने वाली, कसैली कुछ कुछ मीठी और कुछ दस्तावर भी होती हैं।

जावित्री जायफल, लौंग—यह चरपरी, कड़वी, कफ़नाशक हल्की, तृषा नाशक मुख की गीलापन और दुर्गन्ध को दूर करती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कपूर—चरपरा, सुगन्ध युक्त, शीतल, हल्का होता है प्यास मुख की विरसता अर्थात् स्वाद ( जायका दुरुस्त ) करने में उत्तम है।

चिरोंजी की मींग—मीठी, पुष्ट कर्ता और पित्त वात नाशक है।

अमलतास का गूदा—स्वाद पाकी, अग्नि बलवर्द्धक, चिकना पित्त को मारने वाला होता है।

विशेष सूचना—व्याधिता, कीड़ों से खाया हुआ जिसका पकने का समय बीत गया हो अनुचित काल में उत्पन्न हुआ और अपक्व फलों को न खाय।

## फल अन्न से भी अधिक जीवनदाता हैं

प्राचीन एवं अर्वाचीन महान् पुरुषों एवं विदेशीय विज्ञानवेता डाक्टर, रसायनशास्त्री, तत्त्वज्ञानी विद्वानों ने बड़ी छान बीन के साथ यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्यों की तन्दुरुस्ती, सात्विक वृत्ति शरीर और मानसिक शक्तियों का विकाश करने वाला फलाहर ही है केवल फलाहार पर ही निर्वाह करने से अनेकों रोगों का जड़मूल से नाश होजाता है फलाहारी मनुष्यों के हृदयपट पर दैवशक्ति का प्रकाश पड़ता है आत्मिकोन्नति तथा देशोन्नति के कार्यों में उत्साह फलों के सेवन से ही होता है। पाश्चात्यदेशीय धर्मविद्या तथा प्राणी शरीर-शास्त्र के विज्ञानवेत्ता डाक्टर किंग्स्फार्ड एम० याववेट, वेरनक्यूविपर, लिनेयस,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफ़ेसर लारन्स, चार्लसवेल, जेसेन्डी, फ़लाउरेन्स आदि महानुभावों ने मुक्तकण्ठ से कहा है कि मनुष्य शरीर के पुर्ज़े फलाहारी जीवों के सदृश्य कार्य कर सकते हैं अर्थात् मनुष्य केवल फलों पर ही निर्वाह करे तो संधिरोग गठिया, नासूर, क्षय, कुष्ट, रक्तपात, बात रोग, दमा, विषम रोग, मधुमेह और हृदय रोग इत्यादि दूर हो सकते हैं। डाक्टर हेग अपने अमूल्य ग्रन्थ में लिखते हैं कि मैं सर्वदा सिर दर्द के रोग से दुखी रहता था जब मैंने केवल फलाहार का ही सेवन किया तो बीमारी बिलकुल दूर होगई। डाक्टर एडमभर्ग्यूसन् का कथन है कि ६५ वर्ष की अवस्था में जब मुझे लकवा होगया तब मैंने अपने परममित्र डाक्टर ब्लैक की शिक्षा से फलाहार पर ही निर्वाह किया जिससे मैं ३० साल आयु वाले मनुष्य के समान शक्तिवान् एवं निरोगी बन गया। सरबाल्टरस्काट कहते हैं कि उसका आदरनीय, पूजनीय कारण फलाहार ही है।

यूनान और ग्रीस के पहलवान और घूंसेबाजी खेलने वालों का आहार अँजीर, दलदार फल और मक्का का भोजन था। रोमन लड़ैते जौ की रोटी और तेल पर निर्वाह करते थे। १७-१८ शताब्दी तक अँग्रेज़ी किसानों की मुख्य ख़ुराक बनस्पती फल और अनाज ही था। स्काटलेंड निवासियों का मुख्य आहार ओट ( एक प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का अनाज ) और दूध था। आयरलेंड का खाना, बैंगन, आलू और मक्का था इसी खुराक को खाकर उन्होंने मालवर और बेलीगटन की लड़ाई में विजय प्राप्त की उसका कारण फलाहार ही था।

काबुल के लोग फलों का सेवन करने से ही कैसे हृष्ट पुष्ट होते हैं और कुश्ती घूंसेबाज़ी में बड़े शक्तिशाली होते हैं। बम्बई निवासी मिस्टर एच० ई० ब्राइनिंग ने फलाहार के कारण शारीरिक शक्ति के प्रभावशाली खेलों ( साइकिल के दौड़ाने आदि ) में विजय प्राप्त की और मिस्टर ब्राइनिंग पैदल चलने में सबसे अधिक बलवान् गिने जाते हैं।

अर्थशास्त्र, रसायन शास्त्र, विज्ञान शास्त्र के फ़्लोसफ़र, पिथेगोरस, फ़ोरोस्टर, जेनोर्डनियल, राम्येडोक्स, साक्रेटिस, ल्पेटो, मिल्टन, जोनवल्सली, वाल्टयर, ग्लैडरमीथ पोय, पेल, इजेकन्यूटन, थेकरे, जीनपालिरिचटर, लिनेयस, वायरन, हार्टली, विलियमलेनिम्ब, सरइजेकपीटमेन, थोर्यू, हर्वर्टसब्रास गेरेवाल्डी, एपोलेनिस, मेथ्यू, जेम्स, पीटर जार्जफ्रेंडरिकवाटस, जनरलब्रूथ, मिसेसविसेन्ट, सेनफ्रांसीस, डी० ऐसीसो, सेने का रेवनडआर, जे० केम्पबेल, लार्डचार्ल्स ब्रेसफोर्ड, कोरनेर, जनरल सरएडवर्डबुलरलियोनार्डो, डा० विंसी, मि० सीडीनीएज विपर्ड, सरविलियम अर्नशाकूपर स० आई० सरप्रभाशङ्कर डी० पटनी के० सी० आई० ई० कप्तान करे, रेबरेन्ड ए० एम० मिचेल, प्रोफ़ेसर एच०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शेफहासन आदि २ तथा महान डाक्टरों में (१) डाक्टर जोशिया औल्ट फिल्ड एम० ए० डी० सी० एल० एम० आर०, मी० एस०, एल० आर० सी० पी० (२) डाक्टर एलेक्जेन्डर हेग एम० ए० एस० डी० ए० आर० सी० पी० (३) डा० रावर्ट बेल० एम० डी० एफ० आर० एफ़. पी० एस० आदि महानुभाव एक स्वर से कह रहे हैं कि मानवीय शरीर को शारीरिक आत्मिक और सामाजिकोन्नति फलोहारी जीवन द्वारा सरलता से हो सकती है। अपने आचार्य तथा रसायनादि तत्ववेत्ता तो अपने अमूल्य ग्रन्थों में उपदेश देते हैं कि ऐ मनुष्य ! यदि तुम अपने जीवन को सतोगुणी प्रकृति वाला एवं आरोग्य बनाना चाहते हो तौ कन्दमूल, बनस्पति, फलों का ही आहार करो। शरीर को दोषों से मुक्त करने वाला आत्मा को परमात्मा में लवलीन करने वाला एवं सुख शांति प्रदाता फलाहार ही है कौन नहीं जानता कि इसी आहार के सेवन से हमारे प्राचीन ऋषि, मुनि, महात्मा, सन्त एवं सद्गृहस्थियों ने साइन्स के मुख्य २ तत्वों को जाना था जिसके कारण हमारा देश साइन्स की खान कहलाता था। फलाहारों के द्वारा ही महाभारत के घोर संग्राम में महारथियों ने कितने भयङ्कर युद्धों को किया। फलाहार के कारण ही वीर मातायें पतिव्रता धैर्य शीला एवं वीर प्रसू कहलाती थीं। कहां तक कहूँ अपने एवं शास्त्रों इतिहासों को विचार पूर्वक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देखिये तब आपको पता लग जायगा कि फलों का सेवन कर ही भारत के पुरुषाओं ने कैसे २ पुण्यकारी एवं विचित्र कार्य किये जिनका आख्यान पूर्ण रीति से इस पुस्तक में कैसे किया जा सकता है।

## दूध

जगत् नियन्ता प्रभु ने इस विचित्र संसार में प्राणी मात्र के जीवन के लिये नाना प्रकार के उत्तमोत्तम पदार्थों को बनाया है उनमें सर्व श्रेष्ठ दूध है। कहा है कि:— "अमृतंक्षीरभोजनम्" अर्थात् दूध से बनाया हुआ भोजन अमृत के समान है वास्तव में दांत न निकलने की अवधितक शिशु कुमारों का लालन-पालन इसी से होता है दुर्बलों को बलवान्, युवाओं को पहलवान, बूढ़ों को जवान और कामियों की अभिलाषा पूर्ति इसी रसायन से होता है। यह शीतल और पाक में मधुर, जीवन को हितकारी और बात दूर करने वाला होता है।

भैंस—का दूध अत्यन्त भारी, मधुर और जठराग्नि को मन्द करने वाला होता है।

बकरी—का दूध ठण्डा, मीठा, हल्का, अतिसार, क्षय, ज्वर को दूर करने वाला होता है।

हथनी, घोड़ी, ऊँटनी और भेड़—के दूध का सेवन मनुष्य को नहीं करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धारोष्ण—थनों से निकाला हुआ दूध हितकारी, पथ्य, आयु, धातु, कांति और भूँक बढ़ाने वाला, नींद लाने वाला तथा बल बढ़ाने वाला होता है। गाय का ही धारोष्ण दूध पीना चाहिये अन्य का नहीं।

दूध की मलाई—भारी, चिकनी, शीतल, वीर्य पैदा करने वाली, पुष्टिकारक, बातपित्त और ख़ून विकार को दूर करती है।

दूध का फेन—त्रिदोष नाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निदीपन, तृप्तिकारक, हल्का, जीर्णज्वरी, मन्दाग्नि और दस्त के रोगी को लाभदायक है। कच्चा दूध भारी, देर में पचने वाला और क़ाबिज़ होता है। बासी दूध त्रिदोष-कारक है। स्त्री का शीतल, हल्का, अग्निवर्द्धक और बातपित्त नाशक होता है। आंख और कान के दर्द में कच्चा ही प्रयोग करना चाहिये। स्त्री के दूध को कभी गरम न करे।

**खीस** जब गाय भैंस ब्याती है तो आठ दस दिन तक उनका दूध फट जाता है उसको पेवसी या खीस करते हैं। यह विष्टम्भी और अत्यन्त वादी तथा क़ाबिज़ होता है।

**खोवा** जिसको मावा भी कहते हैं यह पुष्टिकारक, भारी, कफ़कारक और बात पित्त नाशक है उसको बूरा मिलाकर खाना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## समय समय का दूध

प्रातःकाल का दूध भारी, विष्टम्भी, शीतल और सायंकाल का हल्का और बात कफ़ को नष्ट करने वाला होता है। दूध को प्रातः ९ बजे तक और सायंकाल को भोजन के १ घण्टा बाद मीठा डालकर गुनगुना स्वांता २ पाने से बलबुद्धि, वीर्य और अग्नि की वृद्धि होती है। शौच साफ़ आता है। दुग्ध बिना गरम किये और बिना मीठा मिलाये कभी न पीना चाहिये और बालकों को आधा दूध आधा पानी मिलाकर औटाकर (पावभर में १ तोला के हिसाब से) चूने का नितरा हुआ पानी मिलाकर पिलाना चाहिये। भारी, मलाईदार दूध बच्चे को कभी न पिलावे। रात को कम से कम पाव भर दूध मीठा डालकर भोजन करने के बाद अवश्य पीना चाहिये। इससे बल की वृद्धि होती है और सुबह पाख़ाना साफ़ होता है।

## बर्जित दूध

दुर्गन्धवाला, खट्टा, जिसका रङ्ग बदल गया हो, नमकीन और जिसमें फटकर गांठें पड़ गई हों तथा बाज़ार के नीले पीले दूध को नहीं पीना चाहिये।

## दही के गुण

दही—रस में कसैला, स्निग्ध और गरम होता है पीनस, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि, मूत्र और कृशता इन रोगों को दूर करता, पुष्टिकारक प्राणों को चैतन्य करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दही के भेद गुण—दही चार प्रकार का होता है यथा **मीठा दही** बहुत अभिष्यन्दी कफ़ और मेदा को बढ़ाने वाला। **खट्टा दही** कफ़ और पित्त का करने वाला है। **अत्यन्त खट्टा** रुधिर के दूषित विकारों को दूर करने वाला। **खट्टा मीठा** मल-मूत्र को निकालने वाला, त्रिदोष-कारी, बूरा मिला हुआ दही खाने से प्यास दाह दूर होती है और गुड़ मिला हुआ दही वात नाशक और पुष्टकारक है।

दही का ताड़—कसैला, पित्तकारक, रुचिकारक, खट्टा हल्का और ताक़तवर होता है।

दही की मलाई—वीर्यवर्द्धक, पित्त कफ़ को बढ़ाने वाली, वात और अग्नि को नासने वाली, पाखाना साफ़ लाने वाली होती है और बिना मलाई का दही दस्तों को बन्द करने वाला, वातकारक, कसैला, हल्का, रुचिकारक और अग्नि-वर्द्धक होता है। रक्त, पित्त, ज्वर, कोढ़, पीलिया, सूजन, मृगी और पीनस के रोगियों को दही नहीं खाना चाहिये तथा रात्रि में भी बिना बूरा डाले दही न खावे।

गाय का दही—चिकना, अग्नि संदीपन, बल का बढ़ाने वाला होता है बादी को दूर करता, शुद्ध निर्मल और रुचि को बढ़ाने वाला है।

बकरी का दही—कफ़ पित्त का नाश करता, हल्का, वादी और क्षयी को दूर करने वाला है, बवासीर में हितकारी है और अग्नि को बढ़ाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मट्ठा के गुण—मधुर, खट्टा, कसैला, हल्का, उष्णवीर्य, अग्नि संदीपन होता है। विष, सूजन, अतीसार, संग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर, तापतिल्ली, गुल्म, अरुचि, विषमज्वर, तृषा वमन कफ़ वात रोगों को दूर करता, पाक में मीठा हृदय को हितकारी मूत्रकृच्छ और स्नेह रोगों को शांत करने वाला। मीठा मट्ठा—कफ़कर्ता और पित्तनाशक है। खट्टा—बादी नाश करने वाला है।

मट्ठा देने का निषेध—जिसके घाव होगया हो उसको न पिलावे, गर्मी की ऋतु में दुर्बल मनुष्य को, मूर्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त वाले को थोड़ा देवे।

## मट्ठे का सदुपयोग

पेट में दर्द, क़ब्ज़ वा त्रिदोष के शूल और कफ़ की अधिकता में कालानमक, सोंठ, पीपल, राई, कालीमिर्च, काला ज़ीरा और हींग मूनकर मट्ठा में मिलाकर पीवे और यदि बादी से पेट में दर्द हो तो केवल सोंठ, पीपल और सेंधा नमक डाले। पित्त के विकार में बूरा और कालीमिर्च मिलाकर पीवे। सावन भादों में मट्ठा का अधिकतर प्रयोग करना चाहिये। मूँगफली का क़ब्ज़ भी मट्ठा पीने से दूर हो जाता है। नित्यप्रति दोपहर को भोजन के साथ मट्ठा पीने से पेट की कोई बीमारी नहीं होती। बवासीर के रोगियों को नित्य मट्ठा सेवन करना चाहिये। संग्रहणी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के रोग वालों को गाय की छाछ सेवन करना अत्युत्तम है। स्वस्थ पुरुष को दोपहर भोजन के साथ ज़ोरा नमक मिलाकर थोड़ा मट्ठा पीना चाहिये।

## घी के गुण

सामान्य से घी शीतवीर्य्य, मृदु, स्वाद. उन्माद मृगी, शूल, वातपित्त, नाशक, अग्नि संदीपन, बुद्धि, कान्तिऔर स्मरणशक्ति का बढ़ाने वाला रसायन, स्वर, सुकुमारता, तेज और बल का बढ़ाने वाला, आयु को वृद्धि करने वाला, पुष्टिकारक, नेत्रों को हितकारी, चिकना और कफ़ पैदा करने वाला है। पुराने बुखार, खांसी हैज़ा और नशे के रोगों में घी कभी न खाना चाहिये अन्य अवस्थाओं में सोच विचार कर वैद्य की सम्मति से देना चाहिये। कच्चे दूध से निकला हुआ घी मन्द, मूर्छा, भ्रम, दाह, पित्त, रक्त विकार को दूर कर मस्तक के बल को बढ़ाता है और जो औटे हुए दूध को जमा कर घी निकालते हैं जिसे लौनी कहते हैं वह हलकी, शीतल, अग्निदीपक और मल को बांधने वाली है। लौनी यदि एक दिन के जमाये हुए दूध से निकाल कर ( अर्थात् ताज़ी ) सेवन की जावे तो उससे थकाई, कमज़ोरी, पीलिया, कमल आदि नेत्र रोगों को बहुत फ़ायदा पहुँचता है। शहरों में कच्चे दूध का मक्खन बहुत बिकता है उसको अथवा घर पर निकलवा कर मिश्री के साथ सेवन करना चाहिये। इससे शिर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के समस्त रोग दूर होजाते हैं। घी को पानी डाल कर धो लेवे और उसको दाद, फुड़िया, खुजली, घाव पर थोड़ी रेवतचीनी मिलाकर लगावे तो रक्त विकार सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। छः महीने से ऊपर का घी नहीं खाना चाहिये। यद्यपि वैद्यक ग्रन्थों में पुराने घृत के सेवन के भी गुण लिखे हैं परन्तु उत्तम वैद्यों की सम्मति के बिना गृहस्थियों को उसका सेवन नहीं करना चाहिये। किन्तु सदैव ताज़ा घी खाना योग्य है।

१—ज्वर या शरीर में दाह हो तो सौ बार से हज़ार बार तक का धोया हुआ घी कपूर डाल कर मलना। २—गर्मी के सिर दर्द पर मक्खन लगाना। ३—हाथ पैर में आग निकलने पर भी लौनी लगाना। ४—एक सेर घी को क्वार की शरद पूर्णिमा के दिन रात को चन्द्रमा के प्रकाश में फूल या कलई के कटोरे में भर रखदे प्रातःकाल उसमें आधपाव कालीमिर्च और एक सेर बूरा सफ़ेद मिलाकर आधी आधी छटांक के लड्डू बनाकर रखले और एक लड्डू प्रातःकाल खावो इससे कमज़ोर आंख की दृष्टि तेज़ होजाती है और आंखों के आगे जो अंधेरासा हो जाता है वह दूर होजाता है। ५—मृगी रोग वालों को घी का हुलास फ़ायदामन्द है। ६—सांप ने काट खाया हो तो कालीमिर्च और घी पिलाना चाहिये। ७—गाय का या बकरी के घी को पिलाने से धतूरे का विष उतर जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


८–पिती उछलने वा शरीर में खुजली हो तो धुला हुआ घी मले फिर गोबर से बदन को रगड़ कर एक घंटे बाद बेसन का उबटना कर न्हा डाले। ९–नकसीर में गाय का ताज़ा घी नाक में ठण्डा डालना चाहिये। १०–हिचकी रोग में पुराने चावलों के भात में मिलाकर घी ख़ूब खाने से हिचकी बन्द होजाती हैं। ११–गर्भिणी स्त्री को पुराने घी में ४ रत्ती होंग घोटकर नाक में सुगाने से तिजारी या चौथइया ज्वर दूर होजाता है। १२–सूर्य निकलने से पहिले ताज़े घी का नाश लेने से नजला दूर होता है इसके उपरान्त विशेष विशेष रोगों में वैद्य की सम्मति से ब्राह्मीघृत* शितावरीघृत व चांगोरीघृत का भी सेवन करना उचित है।

गऊ का घी—विपाक में मधुर, शीतल, बात, पित्त, विष रोगों का नाशक, नेत्रों को हितकारी, अग्नि बढ़ाने वाला है। सम्पूर्ण प्रकार के घृतों में गऊ का घृत उत्तम है।

बकरी का घी—दीपन, नेत्रों को हितकारी, खाँसी, श्वांस, क्षयी रोगों में हितकारी और पाक में हल्का होता है।

भैंस का घी—बात पित्त और रक्त पित्त नाश करने वाला, कफ़कर्त्ता और शीतल होता है।

---

* यह घृत हमारे औषधालय में ताज़े बनते हैं आवश्यकता पड़ने पर वी० पी० द्वारा मंगा सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पुराना घी—दस्तावर, त्रिदोषनाशक और उन्माद, उदर, मृगी, योनिरोग और कान, आंख, शिर की पीड़ाओं को नाश करता है।

मक्खन—यह नवीन निकला हुआ दीपन, हृदयप्रिय, ग्रहणी और अर्श रोगों को दूर करने वाला है। प्रातःकाल मिश्री के साथ खाने से विशेषकर शिर और नेत्रों को लाभ देता है।

## शाक और उनके बनाने की रीति

वैद्यक शास्त्र के ज्ञाताओं ने शाकों के दोषों को दूर करने के हेतु भिन्न प्रकार के मसाले डालने की परिपाटी प्रचलित की थी परंतु वर्तमान समय में लोग केवल स्वाद बढ़ाने के लिये बिना किसी प्रकार के विचार के अंधाधुन्ध मसाला मिर्च एवं खटाई डाल मंदाग्नि को निमंत्रण देते हैं। उदाहरण के रूप में मसाले की विधि तथा निषेध के बारे में लिखते हैं।

बादी वस्तुओं को मैथी से छोंके जैसे काशीफल, उर्द की दाल। गरिष्ठ पदार्थों को अजवाइन से छोंके जैसे अरबी, मूली, ग्वार की फली, केला, कटहल, भिंडी।

साधारण वस्तुओं को हींग ज़ीरा आदि से छोंके तथा बघार दें। गर्म खुश्क वस्तुओं में लालमिर्च तथा गर्म मसाला न डाले जैसे मैथी का शाक, करेला, ज़मींक़ंद।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शाक कंद, मूल, फल, फली, फूल तथा पत्तों के अपनी अपनी रुचि अनुसार हैं, कोई साधारण रीति से तो कोई कोई भरता, कोई भरवां, कोई तलवां, कोई रसेदार, और भुजिया कर खाते हैं।

## शाकों की साधारण रीति

आलू—प्रथम आलुओं को उबाल छील लें, फिर आलुओं से चौथाई घी कढ़ाई में घी गरम कर हींग ज़ीरा हल्दी भून, आलुओं को डाल खूब भूने। फिर पिसा हुआ नमक गरम मसाला, मिर्च डाल करछुले से चला थोड़ा सा पानी डाल पकाकर उतार ले।

भिंडी—इसको धोकर टुकड़े कर ले—कढ़ाई अथवा बटलोई में घी गर्म कर अजवाइन भून भिण्डी छोंक दे ऊपर हल्दी, नमक मिर्च डाल ढक दे पकजाने पर उतार ले।

परवल—धो, छील काटकर बनार ले, पुनः बटलोई में घी गरम कर ज़ीरा, हींग, हल्दी भून परवलों को डाल भून ले जब भुन जावे तब थोड़ा सा पानी डाल नमक मिर्च डाल दे जब गल जाये तब गर्म मसाला डाले।

तोरई, लोका, रामतुरई एवं टंडे—मुलायम को लेकर छील छोटे २ टुकड़े कर धोले, बटलोई में घी गरम कर हींग ज़ीरा का छोंक दे हल्दी, नमक, मिर्च डाल गलने दे जब गल जाये तब गर्ममसाला डाल करछुली से चला उतार ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जमींकंद—कपड़ोती कर भाड़ में भुनाया इमली के पत्ते या आंवले की खटाई में उबाल ले। ऐसा करने से उसकी परपराहट जाती रहती है; फिर उसको चाकू से तराश कर सोंठ, धनियाँ, मिरच इस मसाले को पीस घी में भून जमीकंद को डाल खूब भूने; फिर उसके पीछे थोड़ा सा दही छान कर उस पर डाले और पानी जलने पर उसको उतार ले।

उत्तम घुइयां या अरवी—बड़ी २ लेकर उनको उबालकर छील ले फिर मट्ठा जिसमें पिसा हुआ नमक पड़ा हो दो तीन दिन तक भिगोवे फिर निकाल कर सुखालेवे, जब वह करकरी हो जावें तब कढ़ाई में घी छोड़ कर पूरी की भांति उतार ले और उसमें नमक, कालीमिर्च और खटाई बारीक पोसकर मिला दे।

साधारण घुइयाँ—सूखी छील कर और उबाल कर बनाई जाती हैं। कढ़ाई में घी डाल कर उसमें अजवायन, मिर्च, हल्दी आदि मसाले को अच्छे प्रकार भूने, जब भुन जावे तब उसमें घुइयां डाले यदि उबाली हों तो पानी डालने की कुछ आवश्यकता नहीं वरन् थोड़ा सा पानी गलने के योग्य डाल दे; जब गल जावें तब उतार ले।

रतालू—इसको छील कर कतर ले और आलू की भांति बनाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बैंगन—इनको प्रथम छील ले और फिर चाकू से तराश ले और बटलोई में घी डाल कर पिसा मसाला छोड़ कर भून ले; फिर बैंगन को कलछी से चलावे और उसके अनुसार नमक डाल और एक कटोरे में पानी भर ऊपर रखदे और धीमी २ आंच दे। एकबार कलछी से चला दे और जब गल जावें तो उतार ले।

फूल गोभी, बंद गोभी, गाँठ गोभी—इसके फूल का साग अच्छा होता है परंतु नरम डांडी भी इसके संग में बना लेते हैं; जो कड़ी हो तो उसका छिल्का छील गूदा निकाल उसको धो लेवे और फिर हींग मसाले का बघार देकर उसमें धुली हुई गोभी और महीन पिसा हुआ मसाला और उसी के अनुसार नमक डाल खूब चला दे और फिर थोड़ा पानी कर ढक दे और जब गल जावे तब उतार ले। ऐसे ही बंद गोभी यानी करमकल्ला और गांठ गोभी की तरकारी बनती है। इन सब में आलू मिलाये जाते हैं।

काशीफल—टुकड़े कर धो कढ़ाई में घी गर्म कर मेंथी भून छौंक नमक मिर्च डाल बनाये। जब अधरँधा होजाये तब खटाई डाले जब गल जाये गरम मसाला डाल उतार ले। अगर काशीफल पका हुआ हो तो उतारने से पूर्व थोड़ा मीठा और घी डाल भून ले।

ख़रबूज़—टुकड़े कर हींग ज़ीरे का छौंक दे नमक हल्दी मिर्च डाल पकाये अधपके होने पर खटाई डाले और पक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जाने पर गरम मसाला डाले। यदि खरबूज़ पक्का हुआ हो तो मीठा घी डाल भून काम में लावे।

गाजर—धोकर टुकड़े करे परन्तु नर्रे को निकाल फेंक, हींग ज़ीरे का छोंक दे नमक मिर्च हल्दी और थोड़ा पानी डाल पकने दे जब अधपकी होजाये खटाई डाले और पकजाने पर गर्म मसाला डाल उतार ले।

मूली—चंदा बना घी अजवाइन से छौंक नमक, मिर्च, हल्दी, पानी डाल पकाये अधरँधी होजाने पर खटाई और पकजाने पर गर्म मसाला डाल उतार ले।

कटहल—छील और काट कर धो कढ़ाई में अच्छे प्रकार घी हींग और अजवाइन दे छौंक थोड़ा पानी और नमक डाल ढक दे—गल जाने पर धनियां लालमिर्च गरममसाले के साथ थोड़ा घी और दे खूब भून उतार ले।

लिसौड़ा—कच्चे लसैड़ों को फोड़ गुठली निकाल पानी में ४-५ घंटे तक के लिये भिगो दे—अथवा गुठली निकाल धूप में सुखा दे फिर कढ़ाई में अजवाइन हींग दे छौंक नमक और थोड़ा पानी डाल दे, जब गल जावे तौ खटाई सौंफ़, धनियां, गरम मसाला तथा मिर्च डाल खूब भून उतार ले।

सिंघाड़ा—कच्चे सिंघाड़े को छील, काट, ज़ीरे हींग से छौंक नमक डाले कसेंड़ी के ऊपर कटोरे में पानी भर कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रख धीमी २ आंच से आंच दे। जब गल जाय खटाई आदि मसाले डाल उतार ले।

केला—छिले और कटे हुए केले को अजवाइन हींग हल्दी बटलोई में डाल छौंक नमक डाल ढकदे। गल जाने पर धनियां गर्ममसाला डाल उतार ले।

सगरी आलू- दोनों ओर की नौक तोड़ दरांत या चाकू से बारीक २ तराश, आलू भी छील काट दोनों को धो बटलोई में अन्यों की भाँति छौंक गलने पर नमक आदि और गरम मसाला डाल उतार ले।

सेंम आलू- सेंगरी आलू की भांति इसका भी शाक बनता है।

गूलर कच्चे गूलरों को फोड़ पानी में उबाल निचोड़ डाले-पीछे कढ़ाई में हींग, जीरा, हल्दी दे छौंक दे धनियां गरम मसाला खटाई एवं पिसा नमक डाल खूब भून ले।

कचनार का फली—पहले इनको उबाल निचोड़, बटलोई में हींग जीरे से छौंक हल्दी पिसी नमक डाल चलावे पश्चात् खट्टे दही का घोल और गरममसाला दे भून उतार ले।

## भरता

यह भाड़, भट्टी, देहरा अथवा चूल्हे में भून कर बनाया जाता है। इस लिये यह उन्हीं वस्तुओं का बनता है जिन में प्राकृतिक पानी अधिक होता है जैसे बैंगन, आम, ज़िमीकन्द, आलू, घुइयां, रतालू आदि।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बैंगन का भुरता—बड़े २ गोल मारू बैगनों को लेकर सूजे से गोद कर भून ले फिर छिलके को छील पिसी हुई खटाई नमक धनिया हाथ से मल कर मिला अच्छे प्रकार घी दे हींग ज़ीरा डाल छौंक खूब उलट पलट कर भून ले मसाला मिर्च डालले।

आम—बड़े कच्चे आम को बिना छेद किये ही भून ले और भुनजाने पर पत्थर के वर्तन में छील उसकी गुठली निकाल फैंक दे और बूरा, बड़ी इलाइची, भुना ज़ीरा, हींग और बहुत कम नमक डाले।

जिमीकंद - पुराने कपड़े में लपेट ऊपर चिकनी मिट्टी की मोटी तह लगा भाड़ में भुनवावे-फिर मिट्टी कपड़ा अलग कर, छील काट पूर्वोक्त प्रकार से छौंक ले।

इसी प्रकार भरता भुने हुए आलू घुइयां और रतालू का बनाया जाता है।

## रसादार शाक

रसादार शाक वैसे तो प्रत्येक सब्ज़ी का बन सकता है परन्तु जिन शाकों के रसेदार बनाने की प्रथा है उन्हें बताते हैं। रसादार शाक में घी, खटाई, मिर्च, दालचीनी, हरा धनियां, गर्म मसाला विशेष रूप से डाला जाता है।

आलू—यह दो प्रकार से बनाया जाता है कच्चे आलुओं को चाकू से छील दो फांकें करले अथवा आलू को उबाल छील कर टुकड़े करले और घी में हींग ज़ीरा हल्दी भून

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


छोंकलें हरा धनियां पानी और नमक डालदें। जब खूब उबल जायें तब दही, या खटाई डाले एक उबाल दें मिर्च, दालचीनी, गर्म मसाला डाल उतार लें।

अरवी—कच्ची बड़ी २ घुइयां को छील बरक बना धोले और बटलोई में घी गरम कर अजवाइन, हल्दी भून छोंक ले, पानी, हरा धनियां, नमक डाल पकावें जब अधरंधी होजायें तब दही, मट्ठा, खटाई जो डालनी हों डाल पकायें और गर्म मसाला मिला उतार लें।

रतालू तथा बंगाली गट्टे—यह रसादार घुइयां की तरह बनते हैं।

परवल—परवलों एवं आलुओं को छील काट धोले, पतीली में घी गरम कर उस में हींग जीरा, हल्दी डाल परवल व आलू को भूनले, पुनः मसाला जो पीस कर तैयार किया हुआ रखा डाल, करछली से मिला जितना रसा करना हो उतना पानी और नमक डाल पकालें जब अधरंधे से होजावें तो थोड़ा अदरक नीबू गर्म मसाला मिर्च आदि डालना हो डाल उतार लें।

फूल गोभी और आलू, शकरकन्द और आलू, टमाटर आलू, लौका तोरई, भी परवल आलू की तरह बनाये जाते हैं।

जमींकन्द—को भाड़ में भुना अथवा इमली या आंवले में उबाल छील काशा करलें फिर खूब घी बटलोई में गर्म कर हींग, जीरा, हल्दी डाल खूब भून लें और पानी नमक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डाल पकायें जब उबाल आजाये तब खट्टा दही डाल पकायें जब पकने पर आजायें तो बड़ी इलाइची, दालचीनी पीस डाल आग पर रखदें, ठण्डा होने पर काम में लावें।

कटहल – कटहल को छील टुकड़े कर नमक व हल्दी मिला थोड़ी देर को रख दे पुनः बटलोई में घी डाल हींग, ज़ीरा, अजवाइन, हल्दी भून कटहल को डाल खूब भूने फिर थोड़ा पानी डाल नमक डाल रांधे जब अधरंधी होजाये खट्टा दही, मिर्च, गर्म मसाला, हरा धनियां आदि डाल धीमी आग पर पकावें।

भमोड़े वा कंवल ककड़ी—इनको भली भांति छील साफ़ कर बटलोई में हींग ज़ीरा डाल छौंक रसादार के लिये अच्छी तरह पानी दे ज़रासा खाने वाला सोडा और नमक डाल ढक दे। जब गलजांय तौ हरे धनिये के साथ पिसी खटाई मिर्च गरम मसाला दे उतार ले।

## भरवां शाक

प्रायः करेला भिंडी, परवल, तोरई, टंडे, चीर कर पेट में मसाला भर कर छौंके जाते हैं।

करेला—पहले धोकर किसी वर्तन में छोले, सारा छालन इकट्ठा कर सिल पर कूट निचोड़ हरा २ पानी निकाल दे फिर धनियां, सौंफ, खटाई, नमक, हल्दी पानी में पीस कर करेला के पेट में भर कर बटलोई में घी दे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


छौंक इंगठी के ऊपर एक लोटा पानी रख धीमी धीमी आग जलावे।

नोट-करेला की कड़वाहट निकालने के हेतु करेला को छील नमक मिलाकर रख दे और पांच छः घन्ट के पश्चात निचोड़ले अथवा मट्ठा में काला नमक डाल छील उस में डाल दे। चार पांच घंटे बाद निचोड़ कर छोंक ले।

भिंडी—इन्हें पहिले धोले फिर बीच में से चीर उन में खटाई, सौंफ़, धनियां, अदरक, मिर्च, गर्म मसाला, हल्दी पानी में पीस और भर कर बटलोई में घी डाल अजवायन एवं मेंथी भून भिंडी डाल धीमी आंच से पकावे।

परवल तोरई और टंडे—भी भिंडी की भांति बनाये जाते हैं केवल भेद इतना है कि छौंक में हींग ज़ीरा पड़ता है।

## तलवां

जिन शाकों को केवल घी या तेल में भूनकर पकाते हैं अथवा तेल या घी में भूनकर फिर शाक की तरह छोंकते हैं उन्हें तलवां कहते हैं। तलवां शाक प्रायः करेला. आलू ज़िमीक़ंद का बनाया जाता है।

करेला—इसको भरवां शाक की भांति बना, भर, डोरा से बांध घी अथवा तेल में तल ले।

आलू—बड़े बड़े आलू को उबाल, छील वरक बना घी अथवा तेल में तल ले फिर तले हुए को शाक की भांति ज़ीरा, हींग, हल्दी में छौंक नमक, खटाई, दही डाल पकाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिमीक़न्द—हाथों में घी चुपड़ कच्चे जिमीक़ंद को छील बारीक टुकड़े कर कढ़ाई में पूरी की भांति सेक ले और आध सेर जिमीक़ंद के लिये पाव छटांक सखे आंवले पानी में पीस रख, बटलोई में १ छटांक घी और हींग जीरा दे तले हुए जिमीक़ंद को छौंक ऊपर से आंवले का पानी और नमक डाल ढक धीमी २ आंच दे।

## हरे शाकों की भुज्जी

मेथी, पालक कुलफ़ा चौराई सरसों लाई और बथुआ चना तथा मूली की भुज्जी को जाती है। यह दो प्रकार से होती है एक उबाल कर दूसरे कच्ची ही छौंक कर लेकिन भुज्जी बनाने से पहले साग में से घास पात गले सढ़े पत्ते कड़े डंठल निकाल ख़ूब धोकर काटे। साग के साथ आलू अवश्य डाले जाते हैं अतएव यदि उबालकर करनी हो तो साग के साथ आलू भी उबाल लें और कच्चे के साथ आलू कच्चे ही छौंक दिये जाते हैं।

## दाल बनाने की रीति

उड़द की दाल जो पहिले ही से स्वच्छ कर रक्खी हुई है प्रातःकाल भिगो दे, जब भीग जाय तो हाथों से मलकर चलनी में रखकर पानी डाले जब छिलके ऊपर आजावें उनको उतार दे। इसी भांति उसको पानी डाल कर धोले तत्पश्चात् दाल को फिर साफ़ करले अर्थात् उसमें के टोरे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आदि निकाल कर बटले में पानी डाल चूल्हे पर रख गर्म कर दूसरे बर्तन में करले, फिर बटलोई में घी डाल ऊपर से वह गर्म पानी जो पहले से कर रक्खा था इतना डाले कि दाल से दो अंगुल ऊपर रहे फिर अनुमान से नमक डाल ढक, धीमी धीमी आंच दे, जब दाल हो जाय उसको उतार अङ्गारों पर रख दे, दाल में मोंठ धनियां पैसे पैसे भर, दालचानी, कालीमिरच छदाम छदाम भर, इलायची दो इनको महीन पीस कर आध सेर में इस मसाले में से आधो डाल दे, फिर ज़ीरा तथा राई का छौंक दे, मानो दाल बन गई।

ऐसे ही मूँग, अरहर आदि की दालें बना लें अलबत्ता मसाला कम डाले क्योंकि दोनों दालें गर्म हैं। मूंग की दाल में लौंग का छौंक देते हैं और अरहर की एक सेर दाल में एक छटांक अमचूर वा दही डाल दे क्योंकि खटाई अधिक रहने से स्वादिष्ट होती है। कोई मूँग उड़द व चना आदि की दालों में से दोनों को मिलाकर राँधते हैं, उनकी भी यही रीति है। यदि साबुत मूंग बनानी हो तो प्रथम बड़ी २ रोल कर भाड़ में बालू से अकुरवाले फिर गलने पर चावलों का थोड़ा सा मांड डाल दे तो बहुत सांधी हो जायगी।

**दाल में साग**—हरे शाकों में, पालक, मेंथी और चने के साग में मूँग और मौंठ की दाल डाली जाती है शाक का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पहले बीन किसी गहरे वर्तन में दो लोटा पानी डाल मसल कर धो खूब बारीक काट दाल शाक एक साथ बटलोई में चढ़ादे, इसमें पानी केवल इतना दे जिसमें वह डूब जावे, हल्दी नमक डाल ढक दे, जब दाल गल जाय तो कटोरे में टके भर आटा ( चाहे गेहूँ का चाहे मक्का ) पतला २ घोल बटलोई में छोड़ चला दें यदि पतला कम मालूम हो तो इसी समय पानी और देदे—खूब फदक जाने पर हींग ज़ीरे का छौंक दे उतार ले इसी को आलन का साग कहते हैं। कुलफ़ा और बथुओं के साग में चना और उरद की दाल भी डाली जाती है।

आलन की मूली—पहले बारीक काट कर कढ़ाई अथवा सिल पर खूब कूट कर निचोड़ दाल के साथ चढ़ादे और गलने पर पूर्वोक्त विधि से आलन और छौंक दे उतार ले।

**मुँगौड़ी वा चुनौड़ी**—बरी उरद, मुंगौड़ी मूंग और चुनौड़ी चने की बनाई जाती हैं। इन सब के दो भेद हैं। एक ताज़ी दूसरी सूखी। ताज़ी, जिस दाल की बनानी हो उसकी पिट्ठी तैयार कर मसाला मिला कढ़ाई में तेल अथवा घी दे उसी में पकौड़ी की भांति सेक दुबारा बटलोई में घी, हल्दी ज़ीरा हींग डाल छौंक देते हैं पानी दाल की भांति दिया जाता है। अधिकाँश जन बड़ी, मुंगौड़ी के साथ आलू भी डालते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सूखो, मूँग या चने की—बनाने के लिये दाल को बहुत सवेरे पानी में डाल देना चाहिये ताकि पिट्ठी पिसकर धूप निकलने के साथ ही तैयार होजाय। पिट्ठी न बहुत मोटी और न बहुत बारीक प्रत्युत साधारण पिसनी चाहिये। फिर उस में हींग, धनियाँ, गरम मसाला, ज़ीरा, लालमिरच डाल खूब फेंटे जब पानी के बर्तन में पकौड़ी की भांति से तोड़ने पर वह ऊपर को तैरने लगे तब समझ लो कि पिट्ठी तैयार होगई फिर पलंग पर चटाई बिछा छाटी २ तोड़ के धूप में भली भांति सुखा बर्तन में रखले जब बनाना हो तो बट-लोई में घी दे भूनो और फिर घी, हल्दी, ज़ीरा, हींग का बघार दे छौंक दो।

उरद की सादा बरी—पूर्व की भांति पिट्ठी तैयार कर तेजपात, दालचीनी, लौंग, बड़ी इलायची, काली मिर्च, लाल मिरच, धनियां, ज़ीरा, डाल फेंट बना सुखा ला।

उरद की खट्टी बरी—के लिये पिट्ठी पीसकर काठ के अथवा क़लई के बर्तन में पिट्ठी रख चारों ओर पानी के हाथ से चिकनी कर बीच में एक गढ़ा बनाकर उसमें हींग और थोड़ा पानी डाल देते हैं ताकि हींग फूल जावे, इसके पश्चात् एक रात ढक कर रख दे और दूसरे दिन सारी पिट्ठा में पानी में फूली हुई हींग को मिलो खूब फेंट मसाला मिला बड़ी तोड़ सुखाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उरद की पेठे की बरी—पेठा (कुम्हेड़ा) छीलकर कद्दूकस में कस ले और उरद की पिठी सूर्य निकलने से पहले तैयार कर पूर्वोक्त मसाला और कसा हुआ पेठा मय उसमें से निकले हुये पानी के मिला खूब फेंट बड़ी तोड़ ले। यह बरी बहुत फोकी और आलू के साथ बनाने पर बड़ी स्वादिष्ट होती है।

उरद की मेंथी के साग की बड़ी—उरद की ताज़ी पिठी में मसाले के साथ हरे मेथी के साग और हरे धनिये को महीन २ काट कर मिला फेंट कर बड़ी तोड़ते हैं। यह बड़ी पंजाब में अधिकतर बनाई जाती हैं।

## रोटी

प्रथम गेहूँ के आटे को छान अच्छी परात में माड़ कर थोड़ासा पानी देकर लोच दे, उस आटे को भिगोकर रख दे। फिर थोड़ी देर के पीछे आटे को माड़ कर ठीक कर लेवे कर्थात् आटा बहुत अच्छे प्रकार लोचदार हो जावे, इतने में दाल को जो पहिले से चूल्हे पर होने को रखी थी उतार कर घये में रख चूल्हे पर तवा रख दे, फिर छोटी लोई तोड़ चकले पर वेलन से बेल तवे पर सेक घये अर्थात् चूल्हे में अच्छे प्रकार सेक ले पर रोटी जलने न पावे। लोई हाथ से बढ़ाकर सेकने से रोटी पाचक होती है। चने गेहूँ की रोटी बनानी हो तो गेहूँ चने का आटा मिला कर माड़ लेते हैं, बाजरा, मक्का, ज्वार की रोटी करने में आटे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को लोचदार उसी समय बनाते हैं, जिसको ईंछना कहते हैं जो मीठी रोटी करना हो तो आटे में मीठा डाल माँडले और पनपथी रोटी पानों के हाथ से बढ़ा ऊपर की भाँति सेकले।

## बाटी

गेहूँ के मोटे २ आटे का ले उसके चौथाई भाग बेसन मिला, खूब गर्म पानी अथवा गर्म दूध या दही डाल मांढ़े। आटा जितना कड़ा गूँदा जाये गूँध ले। इसके पश्चात् छोटी छोटी बाटी बनाये और कढ़ाई में खूब खोलते हुए पानी में बाटी जितनी उसमें डूब सकें डाल पकायें. जब पकते २ पीले होजायें निकाल रेत पर अँगौछा बिछा उस पर रखदें जब फरेरी होजायें तब कंडे की आग पर जिसमें धूआं न निकलता है रख सेक लें। जब इस प्रकार सिक जावें तब कढ़ाई में घी डाल पूड़ी की तरह सिंकी हुई बाटियों को उतार ले यह बाटी बन गईं। बाटी से बचे हुए पानी का आलन दाल में डाल दे साथ ही घी डाले दाल घुट कर बड़ी स्वादिष्ट हो जायेगी।

मीठा चूरमा—यदि बाटियों का चूरमा करना हो तो मिसल चूरमा करले—कढ़ाई में घी डाल भूने और फिर बूरा मिला लड्डू बनाले।

नमकीन चूरमा—बारीक चूरमा प्रथक करने के पश्चात् जो मोटा चूरमा बचा हुआ है उसे कढ़ाई में घी डाल खूब कुरकुरा भून नमक मिर्च खटाई मिला उतार ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## पूड़ी, कचौड़ी, परांवटे

पूड़ी फीकी, मीठी, नमकीन, मैदा की पूरनपूड़ी, लुचई, नागौरी पूड़ी आदि कई प्रकार की बनती हैं।

पूड़ी—साधारण पूरी एवं अन्य पूरियों के बनाने के लिये आटा गूंदने में ज़रा कड़ा रखा जाता है। पूरी की लोई बेली जाती है, जितनी बड़ी या छोटी पूरी बनानी हो उतनी छोटी बड़ी लोई बना चकले पर बेल कढ़ाई में घी खूब गरम हो जाने पर छोड़ पौने से उलटे पुलटे सिक जाने पर उतार ले यह पूरी बनाने की साधारण रीति है।

नागौरी पूड़ी—पांच सेर मैदा में डेढ़ सेर घी और डेढ़ छटांक नमक और एक छटांक अजवायन डाल कर गुनगुने पानी में माढ़ कर ऊपर की रीति से बनाले।

पूरन पूड़ी—यह चने वा अरहर की दाल की बनती हैं दोनों में से किसी एक दाल को लेकर उबाल ले और पानी को निकाल दाल के बराबर बूरा या गुड़ मिला महीन पीस ले फिर उसमें अन्दाज़ा से बड़ी इलायची के दाने, किशमिश, सौंफ़, मिच और थोड़ा गोला कतर कर तथा औरों को पीस कर मिलाले फिर पूड़ी की लोइयों में भर कर सेंकले यह बड़ी स्वादिष्ट होती हैं।

मीठी पूड़ी—के लिये अधपई सेरक हिसाबसे मोयन डाल आटा से आधा बूरा या नमक डाल अन्दाज़ा से पिस्ता—



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बादाम–अदरक–दालचीनी–लौंग यह सब बराबर २ ले पीस लोई के भीतर भर कर पूड़ी की तरह सेंकले।

लुचई–मैदा की बनती हैं, आटे में मोयन पड़ता है, बड़ी और पतली बेली जाती है।

सिंघाड़े की पूड़ी– यह कच्चे और पक्के सिंघाड़ों की बनती हैं। कच्चे सिंघाड़ों को छील मींग को सिल लोड़ी से पिट्टी की भांति पीस सुखा गेहूँ या सिंघाड़े का ही आटा मिला पूड़ी की तरह पूड़ियाँ बनाले। पक्की मींग के छोटे २ टुकड़े कर चक्की से पीस पूड़ी बनावे। इसके सिवाय यदि कूटू के आटे या किसी नाज की बनानी हो तो अन्न को शुद्ध कर आटा पीस ऊपर की रीति से पूड़ियाँ बनाळे।

कचौड़ी–का आटा पूड़ी के आटे से पतला रहता है और उसमें साधारण रीति से उड़द की दाल भिगोकर पीस उसमें हींग, सौंठ, सौंफ़ महीन पीसकर लोईके भीतर भर बेल पूड़ी की भांति सेंकले। उड़द की दाल की पिट्ठी के सिवाय अन्य दालों की पिट्ठी बना कर भी भरते हैं। कोई २ आलू, चना, बथुआ आदि भर कर भी कचौड़ी बनाते हैं।

ख़स्ता कचौड़ी–पांच सेर मैदा में डेढ़सेर घी आधसेर असली सरसों या तिल्ली का तेल, दो सेर पानी, एक छटांक निमक डाल कर मांड़े और सवासेर उड़द की पिसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पिट्टी में १ छटाँक धनियां और सौंफ़, सोंठ, मिर्च, लौंग, ज़ीरा, दो २ तोला पीस कर मिला इस पिट्ठी को आध सेर घी डाल भूनले और एक बर्तन में हींग का पानी रख उस पानी में हाथ बोर बोर कर पिटठी की लोई मैदा की लोई में भर गोल कर हाथ से चौड़ाकर घी की कढ़ाई में डाल सेंकले। यदि कम ख़स्ता करना हो तौ कम मोयन डाले। इसमें पिट्ठी को घी में भून फिर मसाला मिलाकर लोई में भरते हैं अन्य पिट्ठी में जो घी में नहीं भूनी जाती उन में पिट्ठी पीस कर ही मिला देते हैं। चने की दाल की पिट्ठी में मीठा भी मिला सकते हैं यदि मीठी पिट्ठी की बनानी हो तौ मीठा डाले और नमकीन बनानी हो तौ नमक आदि मसाला मिलादे। बाजरे की पूड़ी बनाने में पानी में मीठा घोल उस पानी में आटा माड़ते हैं इन्हें बाजरा की टिकिया भी कहते हैं। कोई २ पिट्ठी भरकर भी बाजरा की कचौड़ी बनाते हैं। आलू, घुइयां या बथुआ आदि को भरना हो तौ उस को उबाल लेना फिर छील साफ़ कर पिट्ठी की तरह पीस कर भरना चाहिये।

टिक्कर या परांवटे—पूरी से ढीला आटा माढ़ कर लोई को बेल तवे पर इधर उधर थोड़ा घी डाल दोनों तरफ़ अच्छी तरह सेंके और जब सिक जावे तो उतार ले, इस रीति से घी कम लगता है, परन्तु उत्तम बनाने से घी अधिक लगता है और बड़ा स्वादिष्ट होता है। उस की रीति यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है कि आटे को प्रथम दूध या मलाई डाल कर गूंध ले, फिर लोई पटे बेलन से बेल परत लगा लोई करे, फिर पूर्व की भाँत सेंकले । यह पिट्ठी आलू और बथुआ को भर कर भी किये जाते हैं ।

## भात

यह चावल, समाँ, कुकमी, बाजरा, एवं जौ का प्रायः होता है ।

चावल—अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु प्रत्येक क़िस्म के चावलों में नये और पुराने होते, पुराना चावल, अधिक पानी और अधिक आग लेता है परन्तु यह फैलता अधिक है । इसके विपरात नया चावल कम पानी कम आँच लेकर फैलता नहीं है । भात सदा पुराने चावलों का ही उत्तम होता है । बनाने मे पूर्व, बीन साफ़ कर स्वच्छ करले । चावल तीन प्रकार से बनाये जाते हैं, सादा, नमकीन और मीठा ।

सादा—यह दो प्रकार का होता है एक माढ़दार, दूसरा पसाकर बे माड़ का—

माढ़दार चावल—बनाने के लिये चावलों से छः वा सात अंगुल ऊँचा पानी देकर चूल्हे पर चढ़ावे और जब डेढ़ कनी गल जाये और पानी भी कम मालूम होने लगे बट-लोई को थोड़े से अंगारों पर रख तश्तरी ढकदे कुछ देर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शेष कनी गल जावेगी तब करछुले की डंडी से हल्के हाथों से चला ढकदे और १०-१५ मिनट बाद खाने के काम में लावे।

आधा माढ़ दार—ऐसे चावलों में पूर्वोक्त प्रकार के चावलों से पानी थोड़ा अधिक रखते हैं और डेढ़ कना गलने पर कसेड़ी के मुख को गाढ़े के अंगोछे से लपेट पानी निकाल कुछ अंगार निकाल उस पर बटलोई रख कुछ घी चावल में चम्मच से छोड़ तश्तरी से ढक दे-ऐसे चावल १०-१५ मिनट बाद खाने योग्य हो जाता है।

पसा कर- बहुत पुराने और बढ़िया क़िस्म के चावल प्रायः पसा कर ही बनाये जाते हैं क्योंकि इसमें "कन" बहुत कम रह जाता है, फैलते अधिक हैं इसलिए दूने और तिगुने पानी की आवश्यकता होती है-ऐसे चावलों को चूल्हे पर चढ़ा कर पास बैठा देखता रहे क्योंकि जरा सी अधिक आंच लगने पर ही खराब होजाता है-गल जाने के साथ तुरन्त ही पीतल की चलनी या अंगोछे में पसा १ थाल में फैला ऊपर से घी चम्मच से डाल दे।

केसरिया, हरा, बादामी रङ्ग का—एक सेर पानी के अदहन में १ पैसे भर केसर महीन कपड़े की गांठ बांध डालदे

हरा-हरे पोदीने को पानी में पीस-अदहन में छान दे। अथवा सोये के साग को पानी में पीस छान दे। बादामी केसर को नीबू के रस में घोट पानी में डाल दे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमकीन चावल—चावल धोकर बटलोई में घी छोड़ जीरा, हींग मिर्च डाल चावल छोंक पानी डेढ़ अंगुल से अधिक न दे क्योंकि यह पसाये नहीं जाते।

मीठे चावल—एक पाव उत्तम धुले चावल उससे आधा घी और उतना ही दूध और एक छटांक चीनी ( बूरा ) सबको पाव भर पानी डाल चूल्हे पर चढ़ा धीमी २ आंच से पकावे, पौन गल जाने पर कोयलों पर रखदे।

केसरिया चावल—चावलों को धोकर अदहन में चढ़ाकर एक सेर में ९ माशे केसर पीस कर डाले और गरममसाळे का छोंक दे और नमक डाल दे।

मीठे केसरिया—एक सेर उत्तम चावलों को तीन बार धो कर १॥ सेर पानी में १॥ तोला हारसिंघार की दण्डी और १ तोला केसर पीस ले और सेर भर मिश्री की चाशनी करे। पाव भर घी बटलोई में डाल १५ लौंग, तथा तीन माशे बड़ी इलायची का बघार दे, केसर का पानी उसमें डालदे और फिर ऊपर से चावल भी डालदे। जब आधे गल जावें तब चाशनी को डाल धीमी धीमी आंच देकर पकावे, जब पौन गल जाय तब छोटी इलायची, तीन माशे, जायफल, जावित्री एक एक माशा और पाव सेर मेवा डाल ढक कर कोयलों पर रखदे, फिर इसके आनन्द को देखे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समा, कुकनी, चेना, कोदों और बाजरा को खूब कूट, छिलका प्रथक कर गिरी निकाल भात बनाया जाता है।

समा, कुकनी—यह पसाये नहीं जाते इसलिये पानी डेढ उंगल ऊपर रखकर पकाये। यदि मीठे बनाने हों तो दूसरी बटलोई में रंधे हुये पाव भर चावलों के लिये डेढ़ छटांक घी छोड़ रंधे हुये चावलों डाल ऊपर से बूरा, बादाम, गोला, किशमिश आदि मेवा, व बड़ी इलायची डाल करछुले से चला दे और दस या पंदरह मिनट अंगारों पर रख काम में लाये।

चैना तथा कोदों—इनको भी समा तथा कुकंनी की तरह बनाया जाता है।

बाजरा—इसको मोया दे कूट, छान, गिरी निकाल फरेरा कर चौगुने गर्म पानी में डालदे—जब गल जावे अगारों पर उतार रखदे। इस भात के लगजाने का भय होता है इसलिए इसे बार २ चलाया जाता है। यदि मीठा बनाना हो तो समा तथा ककनी की भाँति मीठा बनाले।

## कोमरी

गेहूँ, ज्वार और मक्का—की कोमरी बनाई जाती हैं। इनको मोटा २ छाँट, बीन, साफ़ कर घी डाल छोंक पानी में भात की भांति उबाले, जब गल जाये तब घी डाल, अंगारों पर रखदें। दस पन्द्रह मिनट में उतार शकर व दूध, शकर व मट्ठा अथवा केवल शकर के साथ खाये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## दलिया

दलिया—यह गेहूँ मक्का का बनाया जाता है। सादा नमकीन और मीठा होता है।

गेहूँ—साफ़ किये गेहूँ को भाड़ पर अकुरवाकर दर लेवे या कच्चे ही दल कर बटलोई में थोड़ा घी डाल अकौरे नमकी अकोरे हुए एक हिस्सा दलिया-डेढ भाग मूंग या मसूर की दाल मिला बटलोई में एक चम्मच घी डाल हींग जीरे का बघार देकर छौंके, दाल की बराबर पानी छोड़ नमक डाल ढक दे।

मीठा—दलिया बनाने के लिये पहले बटलोई में दाल की भांति पानी गरम करले—खूब खौल जाने पर दलिया छोड़ ढकदे, गलजाने पर दूध छोड़दे—पश्चात् जब खूब घुटजावे तब मीठा डाल अंगारों पर रखदे।

मक्का—मोटी २ मक्का छांट बीन दल ले—और चावल की भांति पानी खौल जाने पर दलिया छोड़ ढकदे। यह पसाया नहीं जाता प्रत्युत उपरोक्त प्रकार से तैयार किया जाता है। कढी, दाल, दूध मट्ठे के साथ खाया जाता है।

खिचड़ी—यह मूंग, मसूर, उरद चना, अरहर और मटर की दाल की बनाई जाती है। लेकिन चना, अरहर और मटर आदि को देर में गलने वाली दालें हैं इसलिये चावल के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ न मिलाकर पहले अदहन में इनको डाल देते हैं और दाल के कुछ गलने पर चावलों को छोड़ देते हैं। खिचड़ी का अदहन भी, खिलवा, गाढ़ी और बहुत पतली बनाने के लिये, कम, कुछ अधिक एवं बहुत अधिक रखना होता है। इसी प्रकार कुछ एक भाग चावलों में दो भाग दाल मिलाते हैं और कुछ दोनों चीज़ बराबर रखते हैं कुछ डेढ़ भाग दाल का डालते हैं और डेढ़ भाग चावल का और आधा भाग दाल डालते हैं जैसी रुचि हो वैसे दाल चावल मिला धीन धो खौलते अदहन में छोड़ हल्दी नमक डाल ढक दे गल जाने पर हींग ज़ीरे का छौंक लगादे। कोई २ पहले ही घी में हींग ज़ीरा भून खिचड़ी को छौंक ऊपर से पानी देती है—लेकिन इस प्रकार केवल खिलवां खिचड़ी बनाई जासक्ती है पतली और गाढ़ी में पीछे ही छौंक लगाना चाहिए क्योंकि छुकी हुई खिचड़ी में यदि दुवारा पानी दिया गया तो वह सीठी हो जायगी।

तहारी—केवल उरद और मूँग की दाल की बनाई जाती है पहले कुछ मगौड़ियों को भून निकाल ले फिर चावल और उर्द की धुली हुई दाल बराबर ले बड़े २ आलुओं को छील लम्बी २ काशो में बनार यदि हरे चने और हरी मटर तैयार हो तब उनको भी डाल सबको एक साथ बटलोई में घी दे हल्दी, हींग ज़ीरा भून छौंक दो अंगल ऊँचा पानी छोड़ नमक और कतरी हुई अदरक डाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ढकदो। जब चावल और दाल के गलने में ज़रा भी कसर न रह जाये तब उतार अंगारों ढकी हुई रखदे और १०–१५ मिनट पश्चात् खाने के काम में लावे।

## कढ़ी

दही का मट्ठा बना उसमें बेसन घोल रखले और कुछ कढ़ाई में घी या तेल की पकौड़ियां सेकले। पश्चात् आधपाव पानी में हल्दी घोल, कढ़ाई के घी में हींग, ज़ीरा छोड़ ऊपर से हल्दी के पानी को कढ़ाई में डाल और मट्ठे में घुले हुये बेसन को धीरे २ छोड़ नमक डाल उस समय तक चलाती रहो जब तक कि वह खूब न औट जाय, कढ़ी जितनी औटाई जाती है उतनी ही अच्छी होती है।

कढ़ी इमली की—इमली के कच्चे चोइयों को सिलवर का पतीलो में उबाल गाढ़े के अंगोछे में मसल कर छान उसका खट्टा रस तैयार करलें इसीमें फिर बेसन घोल ले और पूर्वोक्त कढ़ी की भांति बनाले।

आम की कढ़ी—कच्चे आम को या तो उबाल कर अथवा भूनकर रस छान मट्ठे की भांति पतला कर बेसन घोल ले और पूर्वोक्त विधि से तैयार करे सब प्रकार की कढ़ी में बेसन की पकौड़ी के स्थान पर बेसन की चबेनी, बूंदी और आलू एवं चावल भी डाल लेते हैं। यदि आलू

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डालना हो तो कढ़ाई में आलुओं को छौंकदे और गलजाने बेसन घोला हुआ खट्टा रस डाले।

झोर उरद का—उरद की दाल को साफ़ धो दो हिस्सा महीन और दाल का एक भाग कुछ मोटा पीसना चाहिये, महीन पिट्ठी में हींग देकर इतना फेरो जो उसकी पकोड़ी पानी में तैर जावे। बाद को कढ़ाई में घी दकर पकौड़ी सेकलो पश्चात् मोटी पिटठी को गहरे वर्तन में पानी डाल बेसन की भांति घोल कढाई के घी में हींग ज़ीरा डाल पिट्ठी के पानी छौंक दो और धीरे २ चलाना चाहिये। कुछ समय बाद सेकी हुई पकौड़ियाँ एवं धनियां, गरम मसाला डाल दो जब पिट्ठी की अधकचरी दाल गली मालूम हो उतार लो।

झोर मूंग का—यह भी उरद की दाल की भांति का बनाया जाता है।

आलू का झोर—बड़े २ आलू उबाल कुछ को लम्बी २ काशों को काट ले और कुछ को सिल से पीस पानी में घोल लो और कढ़ाई में घी डाल हींग ज़ीरा दो, आलू का बना हुआ घोल छोंक दो, धनियां एवं गरम मसाला, लालमिर्च भी छोड़दो, कुछ देर बाद कतरे हुये आलू और एक पाव दही का गाढ़ा मट्ठा भी डाल दो, खूब फदक जाने पर उतार ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोर आम का – पके आमों को छील, छिक्कल एक बर्तन में और रस एवं गुठली एक बर्तन में रखता जाय। जब सारे आम छील चुके तो थोड़े पानी छिक्कलों का रस धो गुठली के रस में मिलाले। पश्चात् मिट्टी की हांडी में घी डाल हींग, ज़ीरा और हल्दी दो, वह गुठली सहित रस छोंक ऊपर से एक तोला पानी में पिसी हुई सौंफ़ और लालमिर्च तथा मुनासिब का बूरा या गुड़ डाल फदकने दो। परन्तु आँच धीमी होनी चाहिये वरना हाड़ी के टूटने का डर है।

## रायता

यह दो प्रकार का होता है (१) नमकीन (२) मीठा

**नमकीनः**–पोदीना, बथुआ, काशीफल, आलू, लोका और बूंदी का बनता है परन्तु कुछ लोग बैंगन, गाजर, मूली और कचनार की कली का भी बनाते हैं। दही को छन्ने में छान कुछ पतला कर अथवा मठा को बांध गाढ़ा कर धुंआर दो। धुंआर हींग और लालमिर्च, का प्रायः दिया जाता है। इसकी विधि यह है कि आग के दहकते दहकते हुये अंगार पर घी डाल हींग या लालमिर्च डाल, साफ़ किये हुये बरतन को जिसमें रायता करना हो उस पर औंधा करदो। जब डाले हुये पदार्थ जल जायें तो सीधा कर तुरन्त दही या मठा डाल बरतन का मुख बन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करदो। इसके पश्चात् जिस चीज़ का रायता बनाना हो उसीको धुंआर दिये हुये दही में मिला दो और नमक, भुना हुआ जीरा और हींग तथा मिर्च पीस कर डालो।

पोदीना– पीस कर डालना चाहिये।

बथुआ, काशोफल, कचनार की कली, आलू—इनको उबाल व मथ कर दही में डालना चाहिये।

ककड़ी, गाजर, लौकी, मूली—इनको छील कद्दूकस में निकाल उबाल निचोड़ कर दही में मिलावे।

लौकी—कद्दूकस में महीन कस जोश दो निचोड़ दूध में औटा दही जमादो, फिर इस दही को बिलो धुआंर दो नमक, मिर्च, हींग, जीरा डाल दो। यह सबसे स्वादिष्ट रायता बनता है।

बूँदी—यह बेसन की छाँटी जाती है। रायते के लिये सेकते समय ही पानी में डालते जाते हैं। पश्चात् उसमें से निकाल दही या मठा में मिला देते हैं।

मूली—दही के साथ इसका खाना वर्जित है इसलिये इसका रायता न बनाना चाहिये।

**मीठा रायता**—यह बूंदी बताशे और मेवे का बनता है। नमकीन रायते की भांति दही को छान पतला कर यथा रुचि मीठा और बड़ी इलायची पीस कर डालो। जिस वस्तु का बनाना हो उनको इसमें डालो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बताशा—कढ़ाही में गरम घी कर नीचे उतार लो और उसमें बताशे डाल पोनिया पर पूरी की भांति उतार दही में डालदो।

मेवा—दही, चिरोंजी, किशमिश, मखाने और पिस्ते डाले जाते हैं।

## खीर

खीर बढ़िया चावलों की श्रेष्ठ होती है इसलिए, हंसराज, वासमती या कमोद के चावलों को बीन धो कढ़ाई या बटलोई में, यदि २॥ सेर दूध हो तो १ छटांक घी डाल पिसी हुई बड़ी इलायची ६ माशे छोड़ चावल छोंके और पश्चात् दूध डाल चलावे, आंच धीमी रखे वरना ऊफांन आने पर दूध के निकल जाने का भय होगा। खीर में चावल एक छटांक सेर और मीठा सेर पीछे एक पाव के हिसाब से डाले।

रसखीर—गन्ने के रस को कढ़ाई में छान औटावे और उस पर मलाई सी आजावे करछुली से उसको उतार ले फिर १ छटांक दूध डालदे और फिर मलाई आवे उसे भी उतारले तत्पाश्चात् उत्तम चावल डाल रांधे। जब खीर की भाँति रस गाढ़ा और चावल गल कर घुट जांय तो उतार ले।

सेमई की खीर—बारीक सेमई बटलोई में घी डाल धीमी आंच से अकोरे जब यह सुर्ख पड़ जांय तब ऊपर से दूध छोड़ चलाता रहे—जब सेमई गल जावें और दूध की खीर की भाँति गाढ़ा होजाय उतार यथारुचि बूरा डाल ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुहारे की खीर—आदपा छुहारे गर्म पानी में उबाल गुठली निकाल लम्बी और पतली काशे अथवा सिल पर पीस औटे हुए दूध में डाल धीमी आंच से पकावे जब दूध में गाढ़ापन आजावे मेवादि तथा बूरा डाल उतार ले।

आम की खीर—कच्चे आमों को कद्दूकस में कस, दस बार पानी में मसल २ कर धोकर काठ के गहरे वर्तन में रख ६ माशे पिसी फिटकरी डाल ५ घंटे के लिये ढक कर रखदे; बाद को कसे आम उस पानी में से निकाल फिर ८–१० बार पानी से धोवे–इस प्रकार जब खटाई का सारा अंश निकल जावे तो कढ़ाई में घी डाल कुछ भून दूध छोड़ धीमी आंच से चलावे और दूध के गाढ़ा होने पर मेवा बूरा डाल उतार ले।

उर्द की दालकी खीर—इमरती के लिये तैयार की हुई १ पाव पिट्ठी १ पाव घी डाल कढ़ाई में भूने–और जब बेसन की भाँति भुनने की खुशबू आने लगे औटा हुआ दो सेर दूध डाल धीमी आंच दे तैयार होने पर मेवा बूरा डाल उतार ले।

मखाने की खीर—एक सेर दूध में तीन छटांक मखाने काफी होते हैं। मखाने को पहले बिना घी के भून कुछ कूट ले जब दो उफान दूध में आजावे तब मखाने डाल चलाता रहे–आँच धीमी रखे, मखाने जब खूब गल कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घुट जाँय तब साफ़ की हुई मेवा ( किशमिश चिरौंजी बादाम और पिस्ता के वरक़ ) ६ माशे पिसी हुई बड़ी इलायची और ४ बूँद केवड़ा एवं बूरा डाल उतार ले।

गोला की खीर—एक सेर दूध में १ पाव कसा हुआ गोला डाल धीरे २ चलाते रहना चाहिये जब दूध में गोला गल कर घुट जाय तब पूर्वोक्त मेवादि के साथ आधी छटांक खरबूज़े की मींग भून और अधकुटी कर के घी डाल देना चाहिये।

काशीफल की खीर—इनको पहले कद्दूकस में कस कर उबाल निचोड़ लेते हैं। फिर कढ़ाई में दे ज़रा भून दूध छोड़ दे—जब दूध गाढ़ा हो जाय पूर्वोक्त मेवा और बूरा डाल ले।

लौकी की खीर—काशीफल की भाँति बनाई जाती है।

## दूध की वस्तुयें

( १ ) खुर्चन—दूध को रबड़ी की भाँति लच्छे करे ( जितने दूध का बनाना हो ) जब सब दूध के लच्छे हो जावें तब उनको सावधानी के साथ ( अर्थात् लच्छे टूटें नहीं ) कढ़ाई में डाल घी में भूने, जब बहुत थोड़े नम रहें तब उन में कन्द और बड़ी इलायची पीस कर मिला उतार ले और सुगन्धित के लिये गुलाब या केवड़े के इतर को छिड़क दे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( २ ) रबड़ी—मिश्री पावभर, छोटी इलायची १ तोला। इनको पीसकर रखले फिर दो सेर दूध कढ़ाई में डाल गरम करे जब अच्छी तरह से गरम होजावे तब धीमी धीमी पंखे की हवा करे और दूसरे हाथ से पड़ती हुई मलाई को उतार २ कढ़ाई के किनारों पर जमाता जावे और कभी २ दूध को भी चला दिया करे, जब सेर एक रह जावे तब कढ़ाई उतार ले और थोड़ा सा गुलाब का इतर तथा किनारों में लगी हुई मलाई और पहिले की पिसी हुई चीज़ों को डाल मिलाले, उम्दा रबड़ी बनेगी।

( ३ ) नमश—चार सेर दूध को इतना औटावे कि आधा रह जावे, औटाने में ऐसा करे कि मलाई न पड़ने पावे, जब इस प्रकार दूध औटा चुके तो आग से उतार कर जिस पात्र में वह दूध हो उसे वस्त्र से ढांप कर रात को ठंड में रक्खे सवेरे आध सेर मिश्री, तीन तोले समुद्र झाग लेकर छिलका उतार बारीक पीस कर और आध पाव केवड़ा या गुलाब उस दूध में मिलावे, पुनः इन सब को रई से मथ कर जो झाग निकले उसे एक पात्र में धरता जावे, इसी झाग का नाम नमश है, बहुत स्वादिष्ट होती है।

( ४ ) कुल्फी की बरफ़—टीन या लोहे के चढ़ा उतार लम्बे नली ले एक ओर मंह बन्द करवादे ऊपर के चौड़े मुंह रखे



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उसका ढक्कन बनवाले इन सांचों की नली में दूध भर थोड़ा नीबू का रस और मुआफ़िक की चीनी डाल ढक्कन लगा उसकी संदे आटे से बन्द कर इन कुलफ़ियों को एक बड़ी हांड़ी में भर उसके ऊपर नमक और बरफ़ डालदे एक घण्टे में बरफ़ तय्यार होजायगी इसी को कुलफ़ी की बरफ़ कहते हैं।

## पकवान

यह दो प्रकार के होते हैं। एक जो मीठे से बनते हैं या ऊपर से उनमें मीठा चढाया जाता है। दूसरे नमकीन।

चाशनी—जितनी खांड़ हो उससे आधा पानी डाल खांड़ को भट्टी के ऊपर कढ़ाई में चढ़ा दे और मुसद्दी (जो काठ की बनी होती है) से घोले और आंच दे, जब उफान आने लगे तब मन पीछे २॥ सेर पानी खड़े होकर ऊंचे से चारों ओर कढ़ाई में डालदे, जब मैल फूल कर झाग बन जावे तब उसको पौना से (जो लोहे का होता है) उतार किसी बर्तन में रखता जाय जब सब मैल पौने से ले चुके तब एक मन में सवा सेर दूध और ढाई सेर पानी मिला कर दो तीन बार ऊँचे से उस कढ़ाई में छोड़ता रहे और मैल फिर पौना से उतार ले। फिर टोकरे या डलिया में स्वच्छ कपड़ा भिगोकर एक बड़े बर्तन के ऊपर टिकटी रखकर उस कढ़ाई के मीठे पानी को टोकरे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में डोई से डाल डाल कर छान ले इस छने हुए को बक्खर कहते हैं। यही बक्खर सब जगह काम आता है।

लड्डू—यह अनेक प्रकार के बनते हैं, उनमें से मोतीचूर, बेसन का लड्डू मूँग की पिट्ठी, बख़्ते का चून, तिल, गुड़धानी, मुरमुरा, मेथी, कंगनी और फाफड़ा के प्रसिद्ध हैं।

मोतीचूर—इसको बूँदी और नुक्ती का भी लड्डू कहते हैं, इसके बनाने के लिये प्रथम चाशनी इस प्रकार से बनावे कि उसके स्वच्छ पानी को कढ़ाई में चढ़ा भट्ठी पर रक्खे, जब उसमें चमकदार बुलबुले उठने लगें तब उसमें एक सींक डालकर अंगूठे पर लगा पास की उंगली से देखे, जब छः सात तार मालूम पड़ें तब कढ़ाई उतार ले और मन भर के पीछे पाव भर बताशे मींज कर डाले फिर बेसन को पतला फेंट दही के पानी का छींटा देकर पुनः फेंटे महीन छेदों की छटनी बूँदियाँ ठोक कर छांट तल ले और बूंदी तथा मेवे डाल लड्डू बांध ले।

अंगूरदाना अर्थात् बूँदी—जब चाशनी बन जावे तब बेसन से ड्योढ़ा उत्तम घी लेकर स्वच्छ कढ़ाई में चढ़ाकर जब वह बोलने लगे तो एक बर्तन में बेसन को घोल, छांट, पौने से उनको लौट फिर निकाल निकाल कर चाशनी में डाल एक कौंचे से भिगो भिगो कर कढ़ाई के किनारों की ओर जमाता जाय, बूँदी और दाना बनाना हो तो उनको निकाल कर इतर लगादे, यदि लड्डू बनाना हो तो मेवा काटकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और बड़ी इलायची के दाने पीस कर उसमें मिला इच्छानुसार छोटे बड़े लड्डू बनाले।

बेसन के लड्डू—बेसन के बराबर घी लेकर कढ़ाई में चढ़ा दे और धीमी धीमी आग से भूने, जब भुन जाय और कच्चा न रहे और जलने पर आवे उसको उतार ठण्डा करके सवाया या ड्योढ़ा बूरा मिलावे और फिर बूरे और बेसन को एक रस करके मेवा डाल लड्डू बांधले।

मूंग या उड़द की पिट्ठी के लड्डू—दाल को पानी में भिगो कर खूब धोले कि छिल्का न रहे, उसकी महीन पिट्ठी पीस नुक्ती छांट ले और मोतीचूर की भांति बांधे। अथवा बड़ी बड़ी मूंग को छांट कर भाड़ में भुना ले और दल कर उसका छिलका उतार फटक चक्की से पीस ले, उसके चून से आधा घी डालकर थोड़ा भून और फिर सेर आटे पीछे तीन पाव घी और तीन पाव बूरे को डाल कर लड्डू बांध ले।

सूजी वा मगद के लड्डू—सूजी के बराबर घी कढ़ाई में चढ़ाकर मन्दी मन्दी आग से भूने, कौंचा से चलाता जाय, जब उसका रंग बादाम का सा होजावे और सुगन्ध उठने लगे तब उतार कर ठण्डा करले और सवाया बूरा और मेवा डाल कर लड्डू बनाले।

मख्ते का लड्डू—खिले हुए चनों के छिलके उतार बहुत महीन पीस ले और धीमी धीमी आंच से भून ले क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तनिक सी तेज़ आंच में जल जाते हैं और बूरा मिला कर ऊपर की रीति से लड्डू बांध ले।

चुटिये का लड्डू—एक सेर मैदा में आधपाव घी डाल कर हाथ से मसल ले और गुनगुने पानी से उसन कर छटांक छटांक भर की मुठिया बनाले और घी में उतार ले और फिर कूट कर कढ़ाई का बचा हुआ घी भी उसमें मिलादे और उसी के बराबर बूरा और मेवा वा कन्द डाल कर लड्डू बनाले।

चूर में, तिल, गुड़धानो, मुरमुरा, फाफड़ा—के लड्डू बनाना कुछ कठिन नहीं है। पूरी को मींज़ कर बूरा वा गुड़ मिला कर बांध लेते हैं और अन्य चूरों को भून गुड़ वा बूरे की चाशनी करके इन्हें मिला कर बांध ले परन्तु चाशनी बनाने के समय यह देखले कि डालने से जमती है या नहीं।

मेथी—उसके बीज को आठ दस दिन तक भीगने देवे और जब भीग जावे तो खूब मल कर कई पानी से धो डाले और सुखाकर महीन पीस ले और उसमें आधा गेहूँ का आटा मिलाकर घी में भून ले और बूरा डालकर लड्डू बांध ले।

कंगनी—इसे खूब दलवा फटकवाकर महीन पीस ले और फिर उसमें गेहूँ का आटा मिला कर घी में भून ले और बूरा डालकर लड्डू बांध ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालपुवा—आधी छटांक सौंफ़ और कालीमिरच को आधपाव पानी में भिगो दे, थोड़ी देर पीछे स्वच्छ करले फिर छानकर एक सेर आटे में आध सेर शरबत खांड़, बताशे, मिश्री या गुड़ को छान कर डाले, फिर सब को भले प्रकार मथे कि जिससे उनमें फेन उठ आवे, फिर कढ़ाई में घी डाल कर आंच दे, जब घी गर्म होजावे, तब कटोरे अर्थात् बेले में उस घुले हुए आटे को ले फैली हुई रीति से कढ़ाई में डाल उलट पुलट कर खूब सेके फिर पौने या थापी से निचोड़ कर निकाल कर रखता जाय। ऐसे ही थोड़े घी के चीले बनते हैं।

जलेबी—जब बनाना हो तो प्रथम ख़मीर बनाना चाहिये जाड़ों में यह कई दिन में उठता है और गर्मियों में एक दिन में अर्थात् एक दिन में पहले मैदा को मथ कर एक मिट्टी के बर्तन में रखदे तो दूसरे दिन ख़मीर उठ आवेगा और अगर जाड़े के दिन हों और शीघ्र बनाना हो तो गर्म पानी वा धूप और भट्टी के पास रखने या सौंफ़ का पानी डालने से शीघ्र उठ आता है। सौंफ़ का पानी पकाने के लिये सौंफ़ को पचगुने पानी में औटावे।

जलेबी की चाशनी—बनाने की पहिचान यह है कि इसमें जब चार पांच तार देख पड़ें तब उतार कर रखले और जब करने को बैठे तब ख़मीर को खूब फेंटले और एक छोटी सी मलय्या के पेंदे में कलम के बराबर मोटा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छेद करले, घी को कढ़ाई में दे भट्टी पर चढ़ादे जब घी होजावे तब उस मलय्या में खमीर को भरे और छेद एक उंगली से दबाले फिर सीधे हाथ में उसको ले उंगली को हटा प्रत्येक जलेबी के लिये चार पांच चक्कर देकर कढ़ाई या तई में जितना हो सके करे फिर उस छेद को उंगली से बन्द करदे, जब वह सिक कर ऊपर आजावे तब बांस की आधी उंगली बराबर मोटी और हाथ भर लम्बी और सीधी लकड़ी से पलट कर सेके फिर उसी लकड़ी से निकाल निकाल कर चाशनी में डाल पौना या कलछी से बोरे तथा निचोड़ कर अलग किसी थाल में रखता जाय। चाशनी मैदा से दुगुनी या ढाईगुनी होनी चाहिये।

इमरती—उड़द की दाल को तीन पहर अच्छे प्रकार भिगो कर खूब धोवे जिसमें छिलका न रहे, फिर उसको बीन कर बहुत महीन पीसे और एक कपड़ा बालिश्त भर लम्बा चौड़ा लेकर उसके बीच में छेद कर उसको चारों तरफ़ से सींदे. फिर जितनी करनी हो उससे तिगुनी उपरोक्त प्रकार की चाशनी बना कर रक्खे, इसके पीछे भट्टी पर घी तई में चढ़ावे, और पिट्ठी को अच्छे प्रकार मथ-मथ कर या प्रथम ही से मथ ली हो अथवा अन्य कोई पुरुष मथ मथ कर देता जाय उसको उस छेद वाले कपड़े में रख कर सीधे हाथ से घी खरा होने पर कपड़े को हाथ से दबा और फिरा कर एक छोटा सा गोलाकार बनावे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर गोल के दाहिनी तरफ़ से छोटे छोटे गोल खाने एक तरफ़ बनाता जावे, इसी भांति इमरती तोड़े, फिर बांस की सींक से उलट कर सेंक ले और जलेबी की भांति निकाल कर चाशनी में डुबो अलग किसी थाल में रखता जाय।

पेड़ा—गौ या भैंस का ढाई सेर उत्तम खोया लेकर उसको धीमी २ आंच से स्वच्छ कढ़ाई में भूने और सेर भ या शक्कर डाल फिर थोड़ी देर चला कर उतार ले, जब ठण्डा होजावे तो शक्कर मिला कर खूब मले और इलायची, पिस्ता, गोला और चिरौंजी डाल कर छोटी छोटी सी आटे को तरह लोई ले हाथ या कढ़ाई में दबाकर थाल में चुनता जाय।

बर्फ़ी—गौ या भैंस का ताज़ा खोया ढाई सेर ले स्वच्छ कढ़ाई में धीमी धीमी आंच से भून ले, जब अच्छी तरह भुन जावे तो उतार अलग रख दे और जब थोड़ा गर्म रहे तो डेढ़ सेर कन्द डाल फिर खूब हाथ से मिला घी चुपड़ी हुई थाली में गुनगुना भर कर ऊपर से थोड़ा सा कन्द, पिस्ता, चिरौंजी इलायची बुरकावे और फिर दो घण्टे बाद चाकू या छुरी से तराश लें।

यदि इनमें बादाम की पिट्ठी, पिस्ता की पिट्ठी, हरे गोला की गिरी, केले की फली आदि खोबे के साथ भून लोज बनालें तो जो चीज़ डाली जायेगी लोज उसी के नाम से कही जायेगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलाई के लड्डू—गाय या भैंस का उत्तम खोया ढाई सेर ले भूनले फिर उतार कर अलग रखदे। जब अच्छी तरह ठण्डा हो जावे तो डेढ़ सेर क़न्द और दो बूंद केवड़ा या गुलाब का इतर डाल हाथ से मल गोल लड्डू पैसे २ भर के बांधे और क़न्द लपेट कर रखता जावे।

कपूरकन्द—उत्तम और ताज़ी रामतुरई ले चाकू से इतना छीले कि उस में हरियाली न रहे, लोहे के पंजे से लच्छे उतार कर पानी में डालता जावे फिर चूना या फिटकरी के पानी में थोड़ी देर भिगोवे, फिर अच्छे स्वच्छ पानी से साफ़ करले और कढ़ाई को स्वच्छ कर जलेबी की तरह चाशनी बनाले, रामतुरई के लच्छों को निचोड़ कर चाशनी में डाले और जब डालने के पीछे जलेबी की तरह चाशनी होजावे तब उतार कर घी डाल खुरपी से लौट पौट कर सुखाले, फिर हाथ में केवड़ा या गुलाब का इतर लगा लच्छों को सुरभा २ किसी बर्तन में रखता जावे।

गुझिया—प्रथम आटे की मोटी मोटी पूरियां बना कर सेंके फिर उसको कूट २ कर धूप में सुखावे, तत्पश्चात् चलनी में छानकर जो टुकड़े रह जावें बस चक्की में पीसले फिर तीन सेर में सवा सेर खांड डाले यह गुली कहलाती हैं, फिर गेहूँ के आटे को महीन वस्त्र में छान कर (जिसको मैदा कहते हैं) माड़े, जितनी बड़ी बनाना हो उतनी बड़ी लोई काटकर पूरियां बेले, तिनमें उनके योग्य गुली भर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फिर हाथ से गोंठ कढ़ाई में घी डाल उत्तम प्रकार से सेंक ले।

खोये की गुझिया—बनाना हो तो गुली की जगह खोया और सजी घी में भून कर भरना चाहिये।

मेवा की गुझिया में मेवा भरी जाती है, इस प्रकार अन्य चीज़ें भी भरी जासकती हैं।

अन्दरसे—प्रथम ढाई सेर साठी वा कोदों के चावलों को तीन दिन तक पानी में भिगोवे, चौथे दिन मलकर साफ़ पानी से धोकर सुन्दर सफेद वस्त्र फ़ैला कर हवा लगने दे, जब सरदी दूर होजावे तब ऊखली में मूसली से कूटे अथवा सुखा कर चक्की में पीस ले। कूटते समय १ सेर खांड मिलादे पश्चात् थोड़ी देर तक एक बर्तन में रखदे फिर कढ़ाई में घी डाल पुआं की भांति घी में छोड़ सेंक कर रखले अथवा आटे का आधा बूरा और आठवां भाग दही मिलाकर ख़ब कड़ा मांढ़ ले। तेल से चुपड़ कर बेल घी में पूरी की तरह उतारे।

नानख़ताई—मैदा के बराबर घी और बूरा लेकर और एक सेर के पीछे ३ माशा समुद्रफ़ेन डाल बिना पानी के मांड आलू की बराबर छोटी २ गोल लोई बनावे, फिर उसके दो भाग बराबर करे फिर तीन ईटें रख कर उसमें पक्के कोयले सुलगावे और एक लोहे के तसले में कोयले सुलगावे फिर एक थाली में कागज बिछा उन टुकड़ों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी २ दूर पर रख थाली को ईंटों के ऊपर रखदे, फिर उस तसला को जिसमें कोयले सुलग रहे हैं ऊपर से रखदे, जब वह सिंक जावे और खिलकर बादाम की सी रङ्ग आजावे तब उतार ले इसी भांति और भी सेंक ले।

सद्दक—लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल इनको पीस कर दही में मिलाकर मथे, फिर कपड़े में छान ले, ऊपर से अनार दाना और कपूर का चूरा बुरकावे इसका नाम प्रमोदक सद्दक है।

सोहन पपड़ी—सेर भर मैदा को आध सेर घी में मध्यम आंच से भून उतार ले और दो सेर शकर क चाशनी करे और जब चाशनी की गोली बने तब दांत से दबा कर देखे जब दांत में न चिपके तो उतार ले और फिर उस चाशनी को तयी या परात में ठण्डा करे फिर उसमें मैदा डाल फुरती से मिला बेलन से बेल दे इस प्रकार पपड़ी बनती है, इससे भी अधिक खस्ता बनाना हो तो अधिक घी डाले।

गुलाब जामन—सेर भर खोये में पाव भर कच्ची मैदा मिलाकर एक रस कर हाथ से फुलैंदा जमनो के बराबर गोल या लम्बी बना फिर स्वच्छ कढ़ाई में घी डाल कर सेंके और उस चाशनी में ( जो जलेबी की भांति तीन तार की पहिले से तैयार कर लेनी चाहिये ) डालता जावे।

खुरमा अर्थात् बालूसाई—यह दो प्रकार की होती हैं एक सादी दूसरी दही की जिसको दहीबड़ा भी कहते हैं। सादी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सेर भर मैदा को आध सेर घी में माड़े और जिस क़दर पानी की ज़रूरत हो उतना पानी भ डाल ले और डेढ़ डेढ़ पैसे भर की लोई तोड़ गोलकर हथेली पर रख दूसरी हथेली से दबाये और बीच में अँगूठा से धीरे से दबा कढ़ाई में मध्यम आग से सेंके और जलेबी को भांति चाशनी में पाग ले। दूसरी प्रकार बनाने की रीति, सेर भर दही को कपड़े में बांध खूंटी में ६ या ७ घंटे तक टंगा रक्खे और पानी टपकने दे, फिर उसको कूण्डे में डाल मथे फिर जितनी मैदा उसमें पड़ सके डाले और एक पैसा का सोडा खस्ता करने के लिये अवश्य डालकर ऊपर की भांति बनाले।

रसभरी या रसगुल्ला—मूँग की पिट्ठी कर कूण्डे में डाल अच्छे प्रकार पैंठे और अगर रङ्गदार बनाना चाहे तो सिंगरफ या केशर की रङ्गत दे, गुल्ला बना जलेबी की भांति चाशनी में पाग ले।

दन्दाद—खांड़ को सोहनपपड़ी की भांति चाशनी बना एक परात में घी चुपड़ चाशनी को उसमें लौटे, इकट्ठी कर पिसी काली मिरच मुवाफिक की डाल थोड़ी हवा लगा फ़ौरन ही पट्टी की तरह लम्बी २ खींचले।

पेठे की मिठाई—पक्का पुराना पेठा लेकर साफ़ छील टके टके भर की कतलियां कर पानी में डालता जावे फिर सोडा के पानी से बार २ खूब धो सूजा से गोद जलेबी से २१ चाशनी में पाग ले और खुशबू के लिये केवड़ा डाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मोहनभोग व हलुआ

यह सूजी, गङ्गाफल, गाजर, आम, मलाई, दही, चोब-चीनी, सुपारी, छोहारा, केशर का बनता है।

सूजी—प्रथम सूजी ( रवे ) के बराबर कढ़ाई में घी डाल सूजी को खूब भूने फिर सूजी से तिगुना खौलता हुआ गर्म पानी डाले व इतना ही दूध ढ्योढ़ा बूरा डाल अच्छे प्रकार चलावे और मेवा डाल उतार ले। इसी को मोहन भोग वा सूजी का हलुआ कहते हैं ऐसे ही मैदा का हलुआ बनता है। ध्यान रहे हलुआ ज़रा मोटे आटे का अच्छा बनता है।

बादाम—जितने बादामों का हलुआ बनाना हो उतनों को फोड़रात्रि को पानी में भिगोदे, प्रातः पानी में से निकाल छील, सिललोढ़ी से पिट्ठी की भाँति पीस कढ़ाई में डाल घी में भून ले, और मिश्री की चाशनी दूध में एक तारा बना भुनी हुई पिट्ठी को उसमें डाल घोट धीमी २ आग कर पका और थाली में जमा लो और वरक़ लगा काम में लाओ।

किशमिश—सेर भर किशमिश को साफ़ कर, पानी मिला पीस आध सेर घी में खूब भून लो, इसी प्रकार आध पाव खोवा को घी में भून उतार लो—पावभर मिश्री की एक तारा चाशनी बना भुनी हुई पिट्ठी व खोवा को उसमें डाल घोट धीमी २ आंच पर चला हलवा बनाला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मखाना—सेर भर मखाने का आटा ले आध सेर घी में सूजी की तरह भून, बराबर का बूरा और दुगुना पानी डाल हलुआ बनाये और उसमें इच्छानुसार मेवा डाल काम में लाये।

छोहारा—आध सेर छोहारे की गुठली निकाल एक रात पानी में भिगोकर सवेरे निकाल उनको महीन कूट कर एक सेर गेहूँ के आटे को एक सेर गाय के घी में खूब भून कर एक सेर मिश्री में पानी डाल छुहारे पकावे, फिर भुना हुआ आटा डाल कर उतारे और उसमें पिस्ता, बादाम, चिरौंजी, चिलगोज़ा मिलाकर खावे।

मलाई का हलुआ—आधसेर कन्द पाव भर मलाई में डालकर मन्द २ आँच पर धरे फिर हिला २ कर पाव भर घी गरम करके उसमें मिलावे जब हलुआ बन जाय तब इलायची और मेवा डाल चांदी के वर्क़ यथायोग्य लगावे, यह हलुआ एक छटांक से आध पाव तक खाय तो बल बढ़े और वीर्य अधिक होवे।

केसर का हलुआ—गेहूँ के आधसेर मैदा को आधसेर गाय के घी में भून फिर एक सेर मिश्री में दो सेर पानी, पाव भर शहद मिलाकर पकावे, इसके पश्चात् उसमें मैदा मिलाकर हलुआ की भांति केशर तीन माशे, ख्यारैन, बादाम, पिस्ता, चिलगोजा चिरौंजी दो दो तोला मिलावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गङ्गाफल--इसको छील बीज निकाल टुकड़े कर उबाल ले, फिर काशीफल से दूनी मिश्री ले चाशनी कर उबले हुये को उसमें डाल दे और कौंचे से पाव घण्टे तक मिलावे और धीमी २ आंच से घोट हलुआ तैयार करले।

गाजर--मोटी मोटी गाजर लेकर उसको छील बीच की ठेठ निकाल उबाल ले अथवा कद्दकश में निकाल उबाले। खोवा को भी भून गाजरों में मिलाये इसके पश्चात् मिश्री या बूरा की एक तारा चाशनी कर भुनी हुई काजर के खोवा को मिलाये और मेवा डाल उतार ले।

पेठे का हलुवा--गाजर के हलवे के तरह बनाया जाता है।

हलुआ आम का--मीठे आमों का रस तीन सेर, खाँड १ सेर घी आध सेर, शहद पाव भर, बादाम की मींग ४ तोला, सिंघाड़े का आटा ४ तोला पहिले बादाम की मींग को पीस सिंघाड़े के आटे के साथ घी में भून ले, फिर शहद और दूध को कलई के बर्तन में पकावे फिर सब वस्तुओं को डाल हलुआ बनाले।

चोबचीनी—सवासेर गेहूँ के आटे को आध सेर घी में भूने फिर दो सेर शहद में मिलाकर धीमी २ आँचदे और जब हलुवा की तरह बन जावे तब बादाम, पिस्ता, चिरौंजी इत्यादि हर एक चार २ तोला मिलावे उसके पीछे चोबचीनी सत्रह तोला लौंग, छोटी इलायची, दालचीनी और अजवाइन, देशी इद्रजौ, पीपल, नागरमोथा प्रत्येक पांच २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तोला कूट छान कर मिलावे यह शरीर को बलवान् और पुष्ट करता है।

सुपारी—कपूर साफ़ १॥ माशे, तज, पत्रज, नागकेसर, नागरमोथा, पीपल, छोटी इलाइची प्रत्येक साढ़े तीन तीन माशे। तालीसपत्र, जावित्री, बंशलोचन, सफ़ेद चन्दन, कालोमिर्च प्रत्येक पौने दो दो माशे, जायफल सात माशे, ज़ीरा सफ़ेद चौदह माशे अरण्डी की जड़, पुष्प नीलोफ़र, बिनौले को मींग, कमलगट्टे की मींग, लौंग, धनिय की जड़ प्रत्येक चौदह २ माशे सिंघाड़ा, शतावरि प्रत्येक पौने दो तोला, चिरौंजी बादाम की मींग दो दो तोला, पिस्ता, मिर्च छः छः तोला, दक्खिनी सुपारी चौदह तोला इनमें जो दवा कूटने पीसने छानने की हों उनको कूट पीस छान और मेवा को लोढ़े से पीस ले। सुपारी को पांच सेर गाय या भैंस के दूध में जोश दे कि वह सम्पूर्ण दूध पीजायें तब उसे उतार पृथक् रखदे फिर मिश्री आध सेर, शतावरि का शीरा एक करके चाशनी बनावे फिर गाय के आध सेर घी में पिसी हुई दवा और सुपारियों को भून कर चाशनी में डाल कर हलुआ की तरह बनाले।

मोहनथाल—यह चने के बेसन का बनता है। १ सेर बेसन, आध सेर खोवा, २ सेर बूरा, १ सेर घी, छोटी इलायची के दाने २॥ तोले, बादाम की मींग ५ तोला, गोला किशमिश एक छटांक। मेवा को काटकर साफ़ करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ सेर बेसन को चलनी से छान पाव भर घी का मोयन दे। फिर कढ़ाई में घी डाल आग पर खोवा भून कर बचे हुये सब घी में बेसन डाल खूब धीमी २ आंच से भूने; जब लाल हो जावे तब उतार खोवा चीनी और मेवा डाल कर थाल में जमा दे। यह बड़ा स्वादिष्ट बल देने वाला है। इसी प्रकार उड़द की दाल का बना सकते हैं।

हल्दी—एक भाग हल्दी, गेहूँ का आटा, सफ़ेद क़न्द, गाय का घी—हर एक तीन भाग। आटे और हल्दी को घी में भूने और क़न्द की चाशनी बनाकर उसमें डाल दे, यह धातु को रोकता है।

## नमकीन

नमकीन बहुत प्रकार का बनता है परन्तु यहाँ पर साधारण वस्तुओं का ही उल्लेख किया जायगा।

दाल—यह तीन प्रकार से बनाई जाती है। भुनी, छुकी और तली हुई होती है। मूँग, मोंठ, चने व मसूर की दाल तथा साबित मसूर, मटर और चना को मोटा २ छांट बीन और साफ़ कर नांद में डाल, उनके ऊपर आधी बालिश्त से ऊँचा पानी भरदो। एक दिन एक रात खूब भीगने दो। जब फूल जायें तो पानी निचोड़ लो। यदि छौंकना हो तो पतीली अथवा कढ़ाई में घी, हींग, जीरा



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डाल छोंक नमक डाल गलने दो जब गल जाये तो खटाई, मिर्च आदि डाल काम में लाओ।

यदि भूनना हो तो निचोड़ने के पश्चात् घूप में डाल, फरेरा कर, भार पर भुना, नमक, मिर्च मिला काम में लाओ।

यदि तलना हो तो निचोड़ी हुई दाल को फरेरा करो और कढ़ाई में घी डाल खूब गर्मकर फरेरी की हुई दाल को एक जगह न डाल फैलते हुये हाथ से डालो। जब तल कर ऊपर आजाये तो उसे घी से निकाल एक बरतन में निचुड़ने रखते जाओ और जब निचुड़ जाये तो उसमें नमक, मिर्च, टाटरी या अमचूर जो मिलाना हो मिलाले। साथ ही साथ जो ठरी दाल कढ़ाई की तलहटी में बैठ जाये उसे निकाल अलग दूसरे बरतन में रखते जाओ।

सेव—अच्छे चनों की उत्तम दाल महीन पीस बेसन के अनुसार लाहौरी नमक, अजवायन, मिरच पीसकर डाल दे और उसको कड़ा माड़ कढ़ाई में घी चढ़ा मध्यम आग में पेंच या चलनी द्वारा सेव झाड़ लकड़ी से उछाल कर सेकें। यदि चलनी में छांटना हो तो कढ़ाई पर टिखटी रख छटनी से छांटे। बिना छटनी कभी न छांटे अन्यथा जलने का भय है।

खरबूज, तरबूज, कांशीफल एवं पेठे की मींग—खाली कढ़ाई में डाल, कपड़े से चलाता हुआ भूने जब खूब भुन जायें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो थोड़ा थोड़ा घी डालता जाये और पोनिया से चलावे। इस प्रकार भून दाल की भांति मसाला मिलावे।

सूखे करेला, खरबूज के सूखे छिलके, मूंगफली की मींग, सेम के बीज, पिस्ता, बादाम, ऊपर की विधी के मुताबिक भून मसाला मिला काम में लावे।

कचरी—यह कार्तिक के महीने में होती है, जब यह अधपकी हो तो उनको छील उन्हीं के अनुसार मटठा और उसमें नमक डाल कचरियों को ५। ६ दिन तक भीगने दे, फिर निकाल धूप में सुखा कतरे कर रख छोड़े, जब आवश्यकता हो घी में तले अथवा खाली कढ़ाई में डाल मुलायम आंच से कपड़ा हाथ में ले भूने और थोड़ा थोड़ा घी डाल ऊपर से नमक मिरच डाल कर खावे।

टंटी—यह जेठ के महीने में होती हैं इनको एक मिट्टी के बर्तन में पानी भर कर कम से कम १० दिन भीगने दे, तीसरे दिन पानी बदलता रहे, फिर निकाल धूप में सुखा रख छोड़े और कचरी की भांति भून कर खावे।

उबले हुए सूखे आलुओं के वरक, और उबले आलुओं का जीरा, तथा कच्ची सूखी हुई ग्वाल की फली भी ऊपर की विधि से भून मसाला मिला काम में लावे।

सेम, मठरी या सकलपारे—सेर भर मैदा को पाव भर घी में पाव छटांक अजवायन को साफ़ कर मिला आटे को माड़ले और रोटी के बराबर पटे पर बेल चौपरता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कर लम्बी २ चाकू से काट घी में मध्यम आग में सेंकले, यदि गोल बनाना हो तो बालूसाई की भांति बनाये। इसी भांति सकलपारे भी बनावे, बेलने में मोटे रक्खे और चौकोर या तिकोने काट उपरोक्त प्रकार से भूने।

समोसे वा तिकोने—ये कई प्रकार से बनाते हैं आलू के और दाल ( कूर ) के। प्रथम मैदा को ले मोयन डाल माड़ले फिर छोटी लोई ले पटे पर बेलन से गोल २ बेल उसको दो सम भाग कर कूर भर हाथ से गोंठ कर अलग रख दे और जब सब गुठ जांय फिर कढ़ाई में घी डाल कर अच्छे प्रकार उलट पुलट कर सेंके।

कूर बनाने की रीति—प्रथम आलू को उबाल छील उसमें निमक, गरम मसाला, अमचूर डाल अच्छे प्रकार पीस एक या दो दिन सुखा कर काम में लावे। द्वितीय गली हुई दाल का बचा हुआ ठरी रहता है उस दाल को पोस मसाला डाल कर काम में लावे।

फाल्गुन में हरे चने, और हरी मटर को छील-छौंकदे परन्तु पानी उसमें न डाल बटलोई के ऊपर कटोरे या लोटे में रखदे, भाप में ही यह गल जावेंगे बाद को सिल पर पीस, दाल का मसाला मिला काम में लावे।

टिकिया—एक सेर मैदा में पाव भर घी, पाव छटांक अजवाइयन, मुआफिक का नमक घोल, एक पाव बिना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पगी बालूसाही का चूरा—अथवा बालूसाही बिना पगी डाल मैदा को माड़ले और छोटी २ लोई को बेल सेकले।

सोंठ या हर्र की टिकिया—पूर्वोक्त प्रकार से तैयार की हुई मैदा में माड़ले। पूर्व घी में भुनी हुई छोटी हर्र पीस कर डालले—और यदि सोंठ ही बनाना होतो सोंठ के वर्कों को घी में भून पीस मैदा में डालले।

पापड़—सवा सेर उर्द की दाल को पानी में भिगो धो डाले, फिर सुखादे भली भाँति सूख जाने पर फटक बीन ऐसा साफ़ करे कि उसमें काला छिक्कल या उर्द न रहजावे—फिर इसको चाक्की से महीन पिसवाले अब यह आटा १ सेर रह जायगा। जिस दिन पापड़ बनाने हों उससे एक दिन पहले आधी छटांक सज्जी को आध पाव पानी में उबाले और फिर कपड़े में छान किसी पत्थर के वर्तन में रखदे ४ घंटे बाद इस पानी में कुछ काली २ गाद सो नीचे बैठ जावेगी इसीलिये ऊपर का पानी किसी दूसरे वर्तन में नितार १ छटांक जोरा डाल ढक कर रख दे। पापड़ की मैदा माड़ने में पहले यही सज्जी का पानी डालना चाहिये यदि अधिक कड़ी मैदा रह जावे तो थोड़े छींटे दूसरे पानी के देलो। माड़ने से प्रथम आटे में आधी छटांक नमक आधी छटांक अधकुटी काली मिर्च, चने बराबर हींग, पाव छटांक बड़ी इलायची मोटी मोटी पीस डालले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अब मड़े हुए आटे को सिल पर या किसी पटरे पर, मूसल अथवा इमामदस्ते की मूसलो से चुपड़ २ कर खूब कूटे—जितना कुटेगा उतना ही पापड़ खस्ता होते हैं—जब खूब कुटजावे तो लम्बी २ लोई बना चाकू से काट लोई किसी चिकने बरतन में रख ढकदे—और एक २ लोई को इच्छानुसार बड़े—अथवा छोटे बेल धूप में सुखादे वरना सड़ जावेंगे। अच्छी तरह सूख चुकने पर घी में भून काम में लावे।

मोहन पकौड़ी—एक सेर चावलों को पानी में धो किसी मोटे कपड़े में बाँध खुंटी से लटकादे—४ घंटे बाद उनको खोल कर फटक कर चोकी से पिसवाले, फिर तीन पाव सेर पानी में घोले, मुआफिक का नमक और आधी छटांक सज्जी का नितरा हुआ पानी भी इसी में डाल पीतल अथवा क़लई के वर्तन में चूल्हे पर चढ़ादे और पीतल के चमचे से ही चलाता जाय वरना लोहे की चम्मच से चलाने मे काली हो जायगो। जब यह मैदा लेही की भांति खूब गाढ़ी होजाय तो उतार खजूर की चटाई पर हाथ से बड़ी की भाँति तोड़दो और सूख जाने पर घी अथवा तेल में भून काम में लावे।

चावलों की जलेबी—पूर्वोक्त प्रकार से तैयार की हुई मैदा को जलेबी के छन्ने में डाल चटाई पर जलेबियां तोड़दे और सूख जाने पर तेल या घी में भून ले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूंग की दाल के चीले—साफ़ धुली दाल को महीन पिट्ठी बना, हींग, ज़ीरा, नमक, हरा धनियाँ मिला पहले तवे पर दो चार परावटे सेक ले जिससे उसके गरम होने का भली भांति ज्ञान होजाय, दूसरे चिकना भी हो जायगा, फिर पिट्ठी डाल तीन उँगलियों की सहायता से फैलावे, चन्द मिनट बाद करछुला की नोंक से चारों किनारों को धीरे २ उचेल पलट दे और घी लगा करारे सेकले। इसी प्रकार वेसन के, रमास की दाल, मौठकी दाल, कूटू और सिंघाड़े के आटे के भी बनाये जाते हैं।

पकौड़ी—यह वेसन, मूंग और उड़द की बनती हैं। बेसन की बनाने की यह रीति है कि प्रथम महीन वेसन में निमक, मिरच, अजवायन उसी के अनुकूल डाल खूब फेंटे और फिर हाथ से घी की कढ़ाई में पकौड़ी तोड़ अच्छे प्रकार सेंक ले, इसी भांति मूंग उड़द इत्यादि की बनती हैं।

मूली की उत्तम पकौड़ी—प्रथम इसके कतरों को उबाल सिल बट्टे से खूब महीन पीसे और खरे चनों का आटा पिसा हुआ और नमक, गरम मसाला मिलावे फिर छोटे २ आलू के बराबर गोले बना कर धीमी धीमी आँच से घी में सेकें। इसी भाँति बथुए के साग को उबाल पीस उसमें उपरोक्त वस्तु डाल गोले बना सेंक ले ये दोनों बड़ी स्वादिष्ट पकौड़ियां होती हैं। ऐसे ही बैंगन की पकौड़ी बनती हैं। बैंगन की पकौड़ी केवल नमक मिरच डाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बेसन फेंट सेंक ले। अरवी, रतालू के पत्तों की पकौड़ी बनाना हो तो इनका फेन गाढ़ा रक्खे और बेसन में पत्तों को लपेट डोरे से बाँध घी में पूरी का भाँति बनाते हैं। इसी प्रकार काशीफल के फूल, सोया, पा रुक, पान, केले और अंगूर के नरम २ पत्तों के बनाये जाते हैं, ये भी खाने में स्वादिष्ट होती हैं।

बड़े—यह मूंग और उड़द दोनों की पिट्ठी के बनते हैं, पहिले जिसके करने हों उसकी पिट्ठी बना घी में पूरी की भांति बनावे।

मेवा के दही बरे—उरद की दाल में साधारण मसाला डाल कर अच्छे प्रकार पीस एक गीले कपड़े को एक स्वच्छ तख्ते वा पटे पर बिछा थोड़ी सी पिट्ठी की लोई ले उस को गोल कर उस कपड़े पर हाथ से पानी लगा गोल २ चौड़ावे और उस पर भुना सफ़ेद ज़ीरा, गरम मसाला, एक कालीमिरच, एक धुली हुई किशमिश कतरा हुआ पिस्ता और गोला, बादाम, चिरौंजी को रख एक दूसरी चौड़ाई हुई लोई को कपड़े पर उसके किनारे मिला दे और फिर इसी भांति बना बना कर कढ़ाई में सेंक कर पानी में डालता जाय, फिर उत्तम दही को मथ, छान जिसमें पिसा हुआ नमक, कालीमिरच, भुना हुआ सफ़ेद ज़ीरा पड़ा हो पानी से निकाल कर डलता जाय।

## मुरब्बा

यह आम, सेव, बिही, अनन्नास, आंवला, अदरक, पेठा, इमली, छुआरा, कद्दू, गाजर, बादाम तथा अखरोट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि का डाला जाता है। यह बूरा, मिश्री, क़ंद या शहद की चाशनी में पड़ता है। चाशनी में जब तार उठने लगे तब ही समझ लेना चाहिये कि चाशनी होगई।

आम—बेरेशा के बड़े गोदादार आम को छील, सीप से साफ़ कर तेज़ चाकू से गुठली के ऊपर के गोदे की पूरी खाँप उतार, उसको कांटे से गोद, क़लई की हुई बटलोई में चूने अथवा मिश्री के पानी में जोशदे निचोड़ ले और यदि चूने के पानी में उबाला हो तो ताज़ी पानी से इतना धोवे कि चूने का कुल अंश जाता रहे तब निचोड़ फरेरा करे। गोदे से ड्योढ़े मीठे की चाशनी बना डाल दे। यह बलकारक होता है और पाचन शक्ति को बढ़ाता है।

बिही, सेब—इसको छील टुकड़े कर मिश्री के पानी में उबाल शहद या चीनी की चाशनी में डाल दो। यह हृदय और मस्तक को बलवान करता है।

अनन्नास—इसके ऊपर और भीतर के भाग के बड़े लम्बे टुकड़े कर गोद प्रथम भीतर के लम्बे २ टुकड़ों को क़लई की बटलोई में बिछा पुनः ऊपर के टुकड़ों को उन पर बिछा बटलोई का मुंह बन्द करदे और मुलायम आग से उबाले। जब वह गल जावें तब उतार उसको साफ़ कर मिश्री की चाशनी में डाल दे। यह दिल की धड़कन को दूर कर दृढ़ करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आंवला—आंवला को तीन दिन चूना के पानी अथवा मट्ठा और पानी में भिगोदे और पानी रोज़ बदलता रहे चौथे दिन निकाल, धो कांटे से गोद उबाले और धूप में थोड़ी देर फरेरा कर खांड की चाशनी में डाल दे, चांदी के वर्क़ के साथ खाने से तीनों दोषों को हरता है अर्थात् खट्टा रस से वात, शीतल और मीठे अंश से पित्त और रूक्ष तथा कषाय के प्रभाव से कफ़ को नाश करता है।

पेठा—पेठा को छील भीतर का गूदा साफ़ कर चौकोर कतर कर थोड़े पानी में उबाले फिर कंद की चाशनी कर उसमें डाले यह दिल और मस्तक को बलवान करता है और इसके प्रातः और सायं काल खाने से रक्त पित्त, स्वर, क्षय, प्यास, श्वांस आदि रोग जाते रहते हैं और धातुक्षीण वाले मनुष्य को लाभ करता है।

कद्दू—ताज़े कद्दू को उबाल शहद की चाशनी में डाल दो यह हृदय और मसाने के लिये लाभकारी है।

गाजर—इनको छील, बीचकी ठेठ निकाल, कतरे कर पानी में उबाल क़न्द की चाशनी कर उसमें डालदे। यह पुष्ट तथा मीठा होता है। स्वर, खांसी और नज़ले के लिये हितकारी है।

अदरक—इसको पानी में उबाल शक्कर की चाशनी में डाल दो यह पेट के दर्द तथा मसाने के लिये लाभदायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्ड—इसको हरी ले एक डेग में पानी डाल ग्यारह दिन तक भिगोवे और तीसरे दिन पानी बदलता रहे, बारहवें दिन निकाल थोड़ा उबाल शहद की चाशनी में डाल दो। मस्तक और हृदय को ताकत और पेट को नरम करता है तथा बवासीर को लाभदायक है।

छुहारा—छुहारों को रात भर पानी में भिगो सवेरे निकाल गुठली अलग कर शक्कर की चाशनी में मुरब्बा डालदे यह वीर्य को बढ़ाता है।

बादाम—बादाम की मींग को दूने शहद की चाशनी में पका इमरतबान में रखले। यह खांसी और खरखराहट को दूर करता है।

अखरोट—इसके छिलके को प्रथक् कर गिरी शक्कर की चाशनी में डालले। यह मेदे को ताकत तथा वीर्य को बढ़ाता है।

## गुलक़न्द

यह अग्नि अथवा सूर्य्य की गर्मी से बनता है, परन्तु सूर्य की गर्मी से बना हुआ उत्तम होता है, इसलिये उसीको हम लिखते हैं।

गुलाब का गुलक़न्द—गुलाब के फूल की पत्तियाँ साफ़ करके सफ़ेद चीनी व बूरा मिलाकर दोनों हाथ से मलें जब पत्तियां सुकड़ जायें तब अमृतबान में डाल नित्य प्रति धूप में दो मास तक रक्खे। उत्तम गुलकन्द बन जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## शरबत

शरबत बनफ़शा—आधसेर बनफशा लेकर तीन सेर पानी में रात को भिगो देवे, सवेरे मसल कर आग पर चढ़ावे, जब जलते जलते तीन पाव पानी रह जावे तब उतार ठंडा कर एक क़लईदार डेगची में छान ले और साफ़ की हुई शकर सवा सेर डाल कर धीमी धीमी आँच से पकावे जब अंगुली में लेने मे तार बंधने लगे तब उतार ठण्डा कर बोतल में भरले। खुराक १ तोला से ३ तोला तक है। इसके सेवन से अन्तःकरण की गरमी, दाह, प्यास, बुखार, खाँसी, जुकाम वा सिर दर्द दूर होता है।

शरबत अनार—बिलायती मीठे और बड़े २ अनार ४ सेर ले और उन्हें फोड़ कर दाने निकाल चीनी या पत्थर के बर्तन में रक्खे फिर हाथ से खूब मसल कर उनका अर्क़ निकाले और क़लईदार डेगची में अर्क छान ले। फिर ४ सेर चीनी डाल एक तार की चाशनी आने तक आग पर पकावै और छान ठण्डा कर बोतलों में भरले खुराक एक तोले से तीन तोले तक। दिल दिमाग़ को ताक़त देता है। नज़ला, प्यास और दाह को शांत करता है। गर्मी के दिनों में अत्यन्त लाभ देता है। दिल की गर्मी को खोता और आंखों को तरावट पहुंचाता है।

शरबत उन्नाव—आधसेर विलायती उन्नाव के दाने लेकर तीन सेर गरम पानी में रात भर भिगोदे सबेरे हाथ से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब मल मल कर कढ़ाही में कपड़े से छान दो और उसमें दो सेर साफ़ शक्कर डाल कर उक्त प्रकार से शरबत तय्यार करलो। खुराक दो तोला। खून के फ़िसाद को दूर करता है।

शरबत जामुन—पकी जामुन का अर्क़ १ सेर और गुलाब का अर्क़ आध सेर, इन दोनों को एक क़लई दार डेगची में डाल कर ढकन से ढक कर आग पर चढ़ा कर मंदाग्नि से पकावे। जब तीन हिस्सा पानी जल जाय तब उतार कर कढ़ाही में छान देवे और एक सेर शक्कर डाल कर ऊपर की रीति से शरबत बनाले। खुराक १ तोले से २ तोले तक। यह वमन उबकाई को खाते ही बन्द कर देता है और खून के दस्त, संग्रहणी और बवासीर को दूर करता है।

शर्बत पोदीना—हरा पोदीना १ सेर लेकर तीन सेर पानी डालकर किसी क़लईदार बर्तन में काढ़ा बनावे जब दो सेर पानी जल जावे केवल १ सेर रह जावे तब उतार छान दो सेर शक्कर मिला शरबत बनाले। खुराक १ तोला से २ तोला तक। यह बमन उबकाई और हिचकी को दूर करता है भूख बढ़ाता और पाचन करता है।

शरबत गुलाब—आध सेर गुलाब के फूल लेकर आठ हिस्से करलो फिर खूब महीन कपड़े में ढीली ढीली आठ पोटली उन्हीं हिस्सों की बांधलो फिर एक बर्तन में आठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सेर पानी आग पर चढ़ाओ उसी में एक पोटली डाल देओ और ढक्कन से ढक देओ जब १ सेर पानी जल जावे तब उसके भीतर पोटली निचोड़ कर निकाल लो और दूसरी डाल दो फिर १ सेर पानी जल जावे तब दूसरी पोटली को भी निकाल लो ऐसे ही जब आठो पोटली होजावें तब आधं सेर पानी जो रह जावे उसमें सवा सेर चीनी डाल शरबत बनालो। खुराक १ तोला से ३ तोला तक है। यह प्यास, दाह, दिल की गरमी, घबराहट को दूर करता है दिल और दिमाग को ताक़त देता, मन को प्रसन्न करता है, बड़ा खुशबूदार है और बमन को भी बंद करता है।

शरबत चन्दन—पावभर सफ़ेद चन्दन का बुरादा लेकर १ सेर गुलाब के अर्क़ में रात को भिगो दो सुबह आग पर चढ़ा मन्दाग्नि से काढ़ा करें जब पाव जल कर रह जावे तब उतार कर मलकर छानकर १ सेर शकर डाल फिर पकावे चाशनी आने पर उतार ले। खुराक १ से २ तोले तक दाह प्यास दिल की गरमी, घबड़ाहट और पागलपन को दूर कर दिलको ताक़त देता है।

शरबत सेब—पके हुए सेब लेकर छीलले और बीज निकाल निकाल कर पत्थर की सिल पर पीस पीस कर उनका अर्क़ निकाल ले। १ सेर अर्क़ में १॥ सेर चीनी डाल आग पर चाशनी करले। खुराक १ तोले से २ तोले तक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह शर्बत पित्त के दस्त-वमन को दूर करता है। मेदा और दिल को ताक़त देता है, चित्त को प्रसन्न करता है। इसी तरह से शरबत अनन्नास, बिही, नाशपाती, केला, शन्तरा और अमरूद के भी बनते हैं। और शरबत सेब की तरह फ़ायदा करने वाले हैं। शंतरा, नीबू, जामन, इमली का शरबत मिट्टी की हांड़ी में बनाना और काठ की डोई से चलाना चाहिये।

## अचार

प्रायः अचार सभी वस्तुओं का अनेक प्रकार की रीति से डाले जाते हैं। अचार में नमक कम होना चाहिये अन्यथा वह शीघ्र खराब होजायगा।

अचार—पानी, तेज़ पानी, तेल और बिना तेल पानी का होता है।

पानी का—जिसका अचार डालना हो उसको छील साफ़ कर डंठल निकाल उबाले। फिर उनको ठण्डा कर बर्तन में भर इतना पानी डाले दश या बारह अंगुल ऊपर रहे। फिर अंदाज़ का नमक, हल्दी, राई, मिर्च पीसकर डाल बर्तन के मुख को कपड़े से बाँध धूप में रखदे। इस प्रकार के अचार गर्मी में ४ दिन और जाड़ों में ५–६ दिन में खट्टा होजाता है और प्रायः ५, ४ दिन ही इसमें खटाई रह कर फिर उतर जाती है। यदि पानी अधिक शीघ्रता से खर्च होजायगा तो और भी जल्दी उस पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सफ़ेदी आजाती है। उपरोक्त रीति से, गाजर, मूली, गट्टा, अरवी, आलू, गोभी, सेम; काशीफल, लिसौड़े, आँवले, हरीमिर्च का डाला जाता है।

तेल पानी—यह तीन प्रकार का होता है। ( १ ) पानी में उठा कर तेल में डाले जाते हैं। या अचार उठा तेल में डाला जाता है ( २ ) तेल पानी का मोया जाता है। ( ३ ) मसाला और थोड़े तेल में वस्तु को मिलाकर तीसरे दिन अधिक तेल पानी डालते हैं।

( १ ) टेंटी—इनमें खून पानी भर एक सप्ताह तक धूप में रख दें जब यह खूब पीली पड़ जाय तथा ऊपर का डंठल नरम होकर आसानी से छूट सकै तब तीन चार बार स्वच्छ जल से धो डंठल तो हल्दी, मिर्च, नमक, राई, धनियां, सौंफ पीस डाल तेल में भिगो वर्तन में भरदें। और जब टेंटी में नमक भिद जाय तेल डाल दे।

( २ ) लिसौड़ा, करोंदा—इसका पानी के अचार में खट्टा कर यदि अधिक दिन तक रखना हो तो उन्हें निकाल नितरे तेल में डाल दे। अथवा आरम्भ से ही पानी के साथ थोड़ा तेल भी डाल दे।

( ३ ) आम का अचार—जो अचार एक वर्ष तक रखते हो तो अषाढ़ या श्रावण के महीने में आमों को डाल दे ताजे टूटे हुए मगवा पानी से धो चौफका कर एक ओर की गुठली निकाल मसाला सावित मिर्च मसाले को तेल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सान कर भरदे। एक सेर आमों के लिये आधी छटांक पिसी हल्दी, एक छटांक कुटी सौंफ़, आधी छटांक कुटा धनियाँ, आद पाव नमक कुटा हुआ, १ छटांक मेंथी, साबित आदपाव चना, आधी छटांक लालमिरच, २॥ तोला राई, २ रत्ती हींग डालना चाहिये। इन भरे हुए आमों को चिकने घड़े में अथवा किसी एसे बर्तन में जिसका मुंह छोटा हो भरकर मुख बांध ऐसे स्थान पर रखे जहां रात को ओस और दिन में धूप लगती रहे। तीसरे दिन बर्तन के गले तक पानी और ऊपर से थोड़ा कड़ुआ तेल डाल दो।

**तेल का अचार**—तेल पानी के आमों की भांति वर्तन में भरकर, पानी के स्थान में ऊपर तक तेल भरदे।

**आम की अचारी**—जिसको लोंजी भी कहते हैं। यह भी छिलकादार तथा बिना छिलके की होती है। आम का गूदा उतार कर नमक में चराकर रखदें। एक रात इसी प्रकार रहने दे और दूसरे दिन निचोड़ धूप में सुखा राई, मिर्च, धनियां, सौंफ़, आदि पिसे हुए मसाले चराये हुए पानी में कुछ तेल डाल अचारी में मिला बरतन को ऐसे स्थान में रखदे जहां धूप तथा ओस लगती रहे।

**हरी मिर्च**—चीर आम की भांति मसाला भरे। दो तीन दिन पश्चात तेल डाल रखदे।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करेला— इसको पहिले चीर कर आम की भांति मसाले से भर ऊपर से डोरा बांध बर्तन में भर मुख बंद कर रखदे और तीसरे दिन तेल डाल दे। अथवा तेल के आम के अचार में डाल दे।

करोंदा—कच्चे करोंदों को फांक कर बीज निकाल सौंफ, धनियां, हल्दी, राई, नमक, लाल मिर्च कुछ तेल में मिला बर्तन में भरदो और तीसरे दिन ऊपर तक तेल डालदो।

बिना तेल का अचार—यह चार प्रकार का होता है (१) नमक या नमक मीठा, (२) स्वरस, अर्क या तेज़ाब (३) सिरका।

नमक या नमक मीठा—अचार के वास्ते कार्तिक का काग़ज़ी नीबू उत्तम होता है। एक सेर नीबू को दुफका या चीर उसमें सोंठ, मिर्च काली, पीपल, बड़ी इलायची, ज़ीरा आधी आधी छटांक, हींग ६ माशे, सौंफ १ तोला काला ज़ीरा १॥ तोला, छोटी इलायची ६ माशे, काला नमक २॥ तोला, सेंधा नमक १ छटांक को महीन कूट पीस भर कर बर्तन में रखदे। यदि नीबू को अर्क में डालना हो तो आधों का अर्क निकाल मसाला तथा अर्क भर रखदे और यदि नीबू मीठे करने हो तो एक सप्ताह बाद ऊपर से १ पाव बूरा रख धूप में रखदे। और कभी कभी हिला दिया करै।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलूचा—नीबू का मसाला अलूचा, और बूरा एक वर्तन में भर आठ दिन तक धूप में रक्खो।

आम की मसालेदार लांजी—आम को छील गूदा उतार नमक मिला चरादे। रात भर इसी प्रकार रहने दे दूसरे दिन निचोड़ सुखाले इसके पश्चात् नीबू वाला मसाला तथा चराया हुआ पानी डाल कर रखदे।

आक के पत्तों का अचार—आक के अधपके अर्थात् कुछ पीले और कुछ हरे पत्तों को खौलते पानी में डाल थोड़ी देर तक ढके रक्खे फिर निकाल कपड़े से पोंछ फरेरे कर सोंफ़, सोंठ, धनियां बारह बारह भाग, बड़ी इलाइची ५ भाग, छोटी इलायची, काला ज़ीरा, लोंग एक एक भाग, पोदीना, सफ़ेद भुना जीरा दो दो भाग, दालचीनी ६ भाग, काली मिरच ८ भाग, पीपल ३ भाग, जावित्री ६ भाग, तथा जायफल ४ भाग, और नमक ९० भाग लेकर दरदरा पीस पत्तों के ऊपर नीचे अच्छी तरह बुरका लगाकर अचारी में भरकर रखदे, जब मन चाहे तो खावे।

(२) स्वरस, अर्क़, तेज़ाब—नीबू, खट्टा या आम के स्वरस में अथवा अर्क़ नाना या पानी मिले तेज़ाब में डाला जाता है।

अदरक—इसको छील पतले और लम्बे कतरे कर उनमें अजवाइन, नमक, नीबू का रस डाल कर रखदे, यह दस दिन में खाने योग्य होजाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हर्ड का अचार—१ सेर बड़ी बड़ी और मोटी हर्ड ले थोड़ा उबाल सुखा पत्थर वा काठ के बासन में चार अँगुल ऊपर तक नीबू का रस भर ७ दिन तक भीगने दे। आठवें दिन निकाल चीर इसमें कालीमिरच, सोंठ, पीपल, सौंफ़, धनियाँ, फूला सुहागा १ तोला, हींग छः माशे, भुना हुआ ज़ीरा ९ तोला, नमक १५ तोला, पोदीना १४ तोला, दालचीनी छः तोला, पत्रज ३ तो०, बड़ी इलायची के दाने छः तोला, नीबू के रस में वा चूक में सान कर भरदे और वह नींबू का पानी जिसमें हर्ड भिगोई थी वह भी डाल दे यह बड़ी पाचक होती है।

बादाम, किशमिश तथा पिस्ता—को नीबू या खट्टा के रस में डाल नमक इलायची, ज़ीरा, कालीमिर्च, हींग डालदे।

छुआरों—को गर्म पानी में जोश दे और चीर कर आम की तरह गुठली निकाले और उसमें नीबू की भाँति मसाला भर डोरे से बांध नीबू, खट्टे या आम के स्वरस में डाल नमक हींग, जीरा, इलायची आदि पीस डालदे।

आड़ू—छील कर नीबू के स्वरस में डाल, नमक, हींग, मिर्च, ज़ीरा, इलायची पीसकर डालदे।

सेब—छील, काशकर आड़ू की भाँति डाले।

अचार नमक—प्रथम सौ नीबू का अर्क़ निकाल कर बुझावे फिर उसको छानकर उसमें २। सेर खांड और आध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेर साँभर की डेलियां और पाव भर कालीमिर्च, आध पाव इलायची इन सबको पीस अमृतबान में डाल दे एक महीने पश्चात् खावे।

**अर्क नाना**—यह बाज़ार में बना बनाया मिलता है और सिरका से तैयार होता है। इसमें करोंदा मिर्च तथा कंवल ककड़ी डाली जाती है।

मिच—हरी मिर्चों को चोर पानी में जोश दे, धूप में फरेरी कर अचार की भांति मसाला भर डोरे से बांध चौड़े मुख की बोतल में भर अर्क डाल दे।

करोंदा—चीर कर दो फका करै उबाल फरेरा कर नमक मिला अर्क नाना में डाल दे।

कंवल ककड़ी—छील, चन्दा काट जोशदे फरेरा कर नमक, मिर्च, लोंग, हींग पीस मिला अर्क नाना में डाले।

बांसा—कच्चे कूले को छील, साफ़ कर कतले बना नमक डाल अर्क भरदे।

**तेज़ाव**—गधक के तेज़ाब में पानी मिलाकर तैयार किये हुये खट्टे पानी से तुरन्त काम में लाने के लिये अचार बाज़ार के दुकानदार डालते हैं। यद्यपि इस विधि से अचार शीघ्र तैयार होजाता है और खट्टा भी होता है परन्तु पाचन शक्ति के लिये उपयोगी नहीं होता और शीघ्र खराब होजाता है। इसमें स्वरस, अर्क वाले सब अचार पड़ते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


काली मिर्च का अचार—गंधक के थोड़े तेज़ाब में सावित काली मिर्च डाल, उसमें नमक, बड़ी इलायची, लौंग हींग, ज़ीरा आदि डाल, रखदे—कुछ दिन में बहुत अच्छा अचार बन जायेगा यह पेट के दर्द में काम में लाया जाता है।

**सिरका**—यह गुण, रस या राब को सड़ा छान कर बनाया जाता है परन्तु रस का सिरका सबसे अच्छा होता है। इसमें जिस चीज़ का अचार डालना चाहो उसको डाल रखदो थोड़े दिनों में सिरके का अचार तैयार हो जायेगा।

आम, हरी मिर्च - पके आम को तथा हरी मिर्च पानी में धो फरेरा कर सिरके में डाल दो।

अदरक, मूली पपीता, बांस के कच्चे कूले, भसूड़ा—इनको छील पतली २ काटकर या चन्दा बना धूप में फरेरा कर डालो।

सँहजने की फली—कच्ची फली के टुकड़े कर फरेरा कर डाले जाते हैं।

छुआरे किशमिश—साफ़ कर सिरका में डाले जाते हैं।

## चटनी

ताज़ी चटनी—साधारणतया हरा धनियां, हरा पोदीना, नमक, मिर्च, धनियां, सोंठ, हींग, ज़ीरा और खटाई डाल कर बनाते हैं परन्तु चटनियां बहुत प्रकार की बनती हैं उन्हें हम नीचे देते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखी चटनी—धनियाँ, पोदीना, सोंठ, इलायची बड़ी लालमिर्च, काली मिर्च, ज़ीरा व हींग भुनी हुई, अदरक, खटाई, चूक, अनारदाना, दालचीनी और नमक कूट पीस, छान कर रखले जब खाना हो नीबू के रस अथवा पानी में मिला कर खाये—यदि दाल साग में डालना चाहे डाले।

चटनी बादाम—कद्दू और बादाम की गिरी पृथक् २ २, २ तोले और बबूल का गोंद, कतीरा, मुलहटी का सत्त तीन तीन तोला और क़द सफ़ेद ५ तोला ले पीस कर उसमें इतना शहद मिलाये कि पतली रहे या क़न्द की चाशनी कर मिला ले यह गले की खरखराहट और खांसी को दूर करती है।

चटनी गोंद पिस्ता—मुरमुकी, केशर १७ माशा, काली-मिरच, चीनी, निशास्ता, सोसन की जड़, अजवाइन, सिलारस प्रत्येक तीन तीन तोला, सुपिस्ता सोसन की शाख, बबूल का गोंद प्रत्येक ९ तो०, मीठी बादाम, कड़वी बादाम प्रत्येक १५ तो०, मुनक्का पावभर सबको बारीक पीस दूने शहद में मिलावे, यह गले की खरखराहट, पीव, खून और कफ़ थूकने को लाभदायक है।

चटनी अलसी—भुनी हुई अलसी, बादाम की मींगी प्रत्येक पन्द्रह माशे कतीरा, मौरेठी, चिलगोज़ा की मींगी, निशास्ता, गौंद बबूल सात माशे ले इनको कूट पीस कपड़ छन कर मीठा डाल ऊपर की रीति से बनाले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चटनी बनफ़शा—बनफ़शा ३ तोला, सकमुनिया भुनी हुई, मौरेठी, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक ३ माशे कूट कर १० तोला शहद में बनावे यह खांसी को दूर करती है।

चटनी ख़शख़ास—केसर एक माशा, मौरेठी का सत, निशास्ता प्रत्येक छः छः माशा, गुलाब के फूल, बबूल का का गोंद प्रत्येक एक एक तोला, बंशलोचन एक तोला, ख़शख़ास सफ़ेद महीन पिसा हुआ एक तोला ले और १० तोला शहद में तय्यार करे यह छाती और फोड़े की प्रत्येक बीमारी को लाभदायक है।

चटनी गोंद बबूल—बबूल के गोंद को पानी में डालकर साफ़ करे इसके पश्चात् बादाम के तेल में पकावे, जब गाढ़ा हो जाय तो मुवाफ़िक की मिश्री डाल उतार ले, यह सूखा खांसी को दूर करती है।

चटनी छोहारा—जावित्री, केशर, इलायची बड़ी, प्रत्येक छः माशा, जायफल तीन माशा, लौंग, पीपर, दालचीनी, पिस्ते के फूल, सुपारी के फूल प्रत्येक एक एक तोला, छोहारा, नारियल हर एक २० तोला, बादाम की मींगी, गाय का घी प्रत्येक आध पाव, कस्तूरी ३ माशे, चांदी के वर्क़ २० इनको कूट तीन पाव शहद में मिलावे, इसको बच्चा पैदा होने के बाद औरत को खिलावे तो प्रसूता की बीमारी जावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमकीन आम की चटनी—एक सेर आम को छील कर गूदा उतार ले और उसमें सांभर छटांक भर, अदरख, लौंग दो दो माशा, लालमिरच, कालीमिरच, धनियां एक एक तोला. जायफल जावित्री, दालचीनी ३ माशे, पोदीना सूखा एक तोला और एक छटांक नीबू का रस डाल खूब बारीक पीस ले और अमृतबान में भर कर रखदे।

मीठी चटनी – एक सेर आम को छील कर गूदा उतार ले और धनियां एक तोला बड़ी इलायची ६ माशे, लौंग, जायफल जावित्री, दालचीनी, एक एक माशे, पोदीना डेढ़ तोला आधी छटाक अदरक ( महीन पिसा ) और बादाम की मींगी एक तोला पिस्ता ६ माशे, किशमिश आध पाव धोकर घा में भून ले और आध सेर खांड़ की चाशनी कर आधपाव छोहारे और पाव भर शहद इन सबको खूब मिलावे और फिर उतार कर किसी अमृतबान में रखदे।

दूसरी प्रकार—आम का कच्चा गूदा ७ सेर, चीनी ५ सेर, सिरका अँगूर का दो बोतल, लाल मिरच ३ छटांक, बादाम की गिरी १ पाव, धनियां १ पाव, किशमिश ३ पाव, अदरक डेढ़ पाव इन सबको डाले। यह चटनी दो प्रकार से बनती है एक में आम के कतले रहते हैं दूसरे में आम का पीस लुग्दी की जाती है पहिले आम को छील महीन कतर सिल पर पीसले फिर मिरच, धनियां, अदरक को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सिरका के रस में पीस ले बादाम को महीन कतर ले फिर सब चीज़ों को क़लई के बरतन में भर चूल्हे पर धीमी २ आंच देकर पकावे और क़लई या लकड़ी के चम्मच से चलाता जावे, जब जानों कि खूब पक गई और महक आने लगी तो उतार कर कांच के बर्तन में रखले यह चटनी अति स्वादिष्ट होती है।

चटनी गोखरू- हरे गोखरू लेकर इतने पानी में डाले कि वह तैरने लगें थोड़ा उबाल फिर उनका पानी निचोड़ सिल पर पीस शहद मिलाले।

सिरका चटनी—बड़े २ आम छील कद्दूकश में गूदा निकाले। सिरका तथा गुड़ की एक तारा चाशनी बना उसमें गूदा डाल पकाये, गलजाने पर उतार नमक, मिर्च हींग, ज़ीरा भुने हुये, इलायची, कालीमिर्च, मेंथी, तेजपात, सौंफ़ पिसी हुई मिलावे और जो मेवा या अदरक डाले तो मिला कर थोड़ा सिरका डाल पुनः पकाये परन्तु चलाता बराबर जाय जब गाढ़ी होजाये उतार ले। इसी प्रकार गुड़ में कच्चे आम की मीठी चटनी बनाई जाती है।

## मांस भक्षण निषेध

समस्त संसार के बड़े बड़े विद्वानों ने रसायनिक क्रिया द्वारा मांस की परीक्षा कर सिद्ध किया है कि मांस में कोई पौष्टिक अंश नहीं है जो बनस्पति आदि में न हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजरा, मटर, चना, गेहूँ आदि में मांस से कहीं अधिक पुष्टकारक तत्व वर्तमान है, परन्तु उनमें मांस को सी उत्तेजकता नहीं है। मांस की यह शक्ति वनस्पतियों की शक्ति की तरह स्थाई रूप से शरीर में ठहरने वाली नहीं होती। सूक्ष्म दर्शक यंत्र से यदि देखा जाये तो पता लगेगा कि प्रथम तो मांस में मानव शरीर को हानि पहुंचाने वाले बहुत से कीटाणु होते हैं। दूसरे क़साई खानों में वे ही पशु काटे जाते हैं जो नाना बीमारियों में फंसे रहते हैं। एक अंग्रेज़ विद्वान् का कथन है कि यदि बीमार पशुओं का काटना बंद कर दिया जावे तो कसाई खाने ही बंद करने पड़ें क्योंकि निरोग पशुओं का मिलना ही कठिन है तीसरे मनुष्य प्रायः क्षयी, खुजली, दाद, फोड़े आदि से बीमार पशुओं को बेचने के लिये नख़ासों में ले जाते हैं अथवा घर पर बेचते हैं। चौथे, मोटे ताज़े निरोग पशुओं का मूल्य बहुत होता है। प्यारे मांस खाने वाले भाइयो! क्या आपको यह निश्चय नहीं कि बीमार पशुओं का मांस खाने से आपके शरीर में नाना रोग उत्पन्न होजाते हैं जिसके कारण अनेक मांसाहारी रात दिन बीमार होकर अपने उद्यम करने से लाचार होजाते हैं दिन रात हकीम डाक्टरों को फ़ीस देने और दवा ख़रीदने पर मज़बूर होते हैं। प्यारे भाइयो! वेदादि सद्ग्रन्थ भी मांस खाने का निषेध करते हैं देखिये अथर्व कांड ४ सूक्त ३ मं० में लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यः पौरुषेयेणक्रविषासमङ्क्तेयो अश्वेन पसुना यातुधानः ।
यो अध्याया भरति क्षीरमग्नेतेषांशीर्षाणिहरसापिवृश्च ॥

राजा को उचित है कि जो पुरुष घोड़े तथा अन्य पशु और पक्षियों का मांस खाता है और गौओं को मार कर दूध की न्यूनता करता है उसका सिर कटवा दे। यजुर्वेद अ० २५ मंत्र ३६ में लिखा है कि जो मनुष्य घोड़े आदि उपकारी पशुओं और उत्तम पक्षियों का मांस खावें उन सबको राजा अवश्य यथा योग्य दण्ड देवे। अ० ३ मं० ३७ में लिखा है कि मनुष्यो ! तुम लोग पशुओं को मत मारो उनका पालन करो मैंने उनको तुम्हारी रक्षा के लिये बनाया है इसी प्रकार अ० १२ मं० ५१ व अ० ११ मं० ५० व अ० १३ मंत्र ३९ पशुओं के न मारने और मारने वाले को राज दण्ड देने का उपदेश है।

वैद्यक विद्या के शिरोमणि महर्षि धन्वन्तरिजी का भी ऐसा ही मत है कि अमेध्य अर्थात् बुद्धि को बिगाड़ने वाले पदार्थों को कभी सेवन न करे, क्योंकि ऐसे ही वस्तुओं के खान पान से बुद्धि भ्रष्ट होजाती है जिससे 'अध्यात्मिक' 'आधिभौतिक' और 'आधिदैविक' ये तीनों प्रकार की तापें घेरे रहती हैं और सुख के स्वप्न में भी दर्शन नहीं होते। मनुजी ने लिखा है कि 'वर्ज्जयेन्मधुमांसंच' अर्थात् शराब और माँस आदि हानिकारक पदार्थों को भक्षण न करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्राचीन भारतीय मनुष्यों ने सर्व जीवधारियों को (जिससे देश का उपकार होता है जैसे गाय, भैंस, बकरा, घोड़ा, हाथी इत्यादि की रक्षा का नाम ) तीर्थ माना है।

इसी प्रकार चाणक्य मुनि ने ८ अ० के १३ वें श्लोक में लिखा है।

नतृष्णायाः परोव्याधिर्न च धर्मो दया समः ॥ १३ ॥

अर्थात् दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है फिर मांस खाने वालों को यह बड़ा धर्म कैसे मिल सकता है कदापि नहीं ? जैसाकि कहा है—

लोभ लुब्धे कुतो लाभो मांसाहारो कुतो दया।

महाभारत के अनुशासन पर्व अ० ११६ के १८ श्लोक में लिखा है कि 'अहिंसा परमोयज्ञः'। अहिंसा परम यज्ञ है अर्थात् हिंसा न करने से देश का बड़ा उपकार होता है और यज्ञ से भी देश की भलाई होती है परन्तु अहिंसा यज्ञ का मूल है क्योंकि हिंसा होगी तो घृतादि पदार्थों की न्यूनता होगी तो फिर भला यज्ञ किस प्रकार होंगे। जैसा कि वर्तमान में हो रहा है। पूर्व मीमांसा में भी लिखा है। 'अहिंसा परमोधर्मः' महाभारत में लिखा है।

सर्वहिंसा निवृत्तिश्चनरः सर्वसहाश्रये।
स्वर्गस्याश्रयभूताश्च तेनरः स्वर्गगामिनः॥

इस कथन से प्रत्यक्ष प्रगट है कि हिंसा करना महापाप है। फिर न जाने भारतवासियों ने कौन से प्रमाण से मांस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


खाना स्वीकार किया है ? बहुधा जन यह भी कहते हैं कि जीवहत्या का दोष करने वालों पर होता है खाने वालों को क्या ? इसलिये उनको मनुजी महाराज के अ० ४ श्लोक १५ को देखना योग्य है ।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकः ॥

अनुमन्ता अर्थात् जिसकी सलाह से मारा जावे, विशसिता जो पशु के अङ्ग को शस्त्र से जुदा करे और मारने, माँस को लेने माँस का बेचने, माँस का बनाने, परोसने, भोजन करने वाले ये आठों घात करने वाले ही कहलाते हैं परन्तु अब विचार का स्थान है कि यदि सब जन माँस खाना छोड़ दें जैसा कि पहले इस देश में था तो क्यों कसाई लोग पशुओं को मारें ? क्योंकि जिस पदार्थ की बिक्री अधिक होती है उसी को बेचने वाले लाते हैं, इस लिये पशुओं के मारे जाने में खाने वाले ही मुख्य पापी हैं, शेष उसकी सहायता करने से दोष भागी हैं ।

कप्तान प्रोल्टकारी साहब का कथन है कि मद्य मांस आदि मादक द्रव्य मनुष्यों को सेवन नहीं करने चाहिये । अमेरिका के डाक्टर जान हार्न साहब का मत है कि बनस्पति की अपेक्षा मांस देर में पचता है इसे पचाने के लिये आमाशय को भी पाचक अम्लरस अधिक उत्पन्न करना पड़ता है जिससे आमाशय शीघ्र खराब होजाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर एलकजेन्डरहेक एम० ए० एम० डी० ने यह भी कहा है कि मनुष्य की अँतड़ियों में मांस पाचन की शक्ति नहीं यही कारण है कि जो मनुष्य माँस खाना प्रारम्भ करते हैं उनकी उद्दीपन शक्ति बढ़ जाती है और नस नाड़ी थोड़े ही दिनों में कमज़ोर हो शरीर को दुर्बल कर देती हैं जिसके कारण मांस खाने वाले को गठिया नासूर क्षय आदि अनेक भयङ्कर बीमारियां हो जाती हैं। डब्ल्यू गीब्स वार्ड एवं प्रो लारेन्स का भी यही मत है लोकमान्य लार्ड-रावर्टस हिन्दुस्तानी बहादुरों पर अपनी विजय का घमंड रखते थे उन्होंने यूरोपीय महायुद्ध के समय में कहा था कि हिन्दुस्तानी शूरवीरों में मांस न खाने से आत्मिक बल मौजूद है। हमारे प्रतापी सम्राट शिरोमणि जार्जपंजम महाराज ने भी माँस और शराब से दूर रहने के लिये अपने योद्धाओं को यूरोपियन महायुद्ध में उपदेश किया था। श्री रा० रा० श्री लाभशंकर लक्ष्मीदास जी का कथन है कि यूरोपीय महायुद्ध के समय बीमारियों का मूल कारण समझ कर मांस का बहुत कम व्योहार होने लगा यहाँ तक कि सिर्फ़ इङ्गलेण्ड में ही ५००० से ज़्यादह कसाबखाने बंद हो गये और गोश्त की जगह लोग फलों का व्यवहार करने लगे।

इण्डियन मेडिकल जर्नल ने १५ दिसम्बर सन् १९१२ ई० के पत्र में लिखा है कि मांस भक्षकों के मत्र में खराबी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आजाती है। मांस भक्षकों के गुर्दों को ज़्यादह काम करना पड़ता है। डाक्टरजानबुड साहब लिखते हैं कि मांस खाने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि यह तन्दुरुस्ती को बिगाड़ने वाला ही नहीं किन्तु प्रकृति के विरुद्ध है। मांसाहारी उतने पहलवान नहीं हो सकते जितने कि शाकाहारी। मांसाहारियों की स्मरण शक्ति भी ठीक नहीं रहती।

मांसाहारियों का यह भी कहना है कि मनुष्य प्रकृति से मांस खाने वाला बनाया गया है अतः हम शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवों के बनावट में भेद बतलाते हैं जिससे स्पष्ट हो जायगा कि प्रकृति से मनुष्य मांस भक्षक नहीं। देखिये भोजन के विचार से सृष्टि के समस्त प्राणी पाँच भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। १–अन्नाहारी–जैसे मनुष्य। २–फलाहारी–जैसे तोता आदि। ३–मांसाहारी जैसे सिंह, चीते, भेड़िये आदि। ४–तृणाहारी–जैसे गाय भैंस आदि ५–सर्व भक्षक–सूअर आदि। प्रकृति ने सबके अवयव भी अलग २ बनाये हैं। देखिये खाने के काम में दाँत एक प्रधान अंग हैं इसलिये उनकी बनावट पर ही विशेष ध्यान देना चाहिये। अन्नाहारी के मुंह में ३२ दान्त होते हैं जिनमें ८ राजदन्त, ४ शूल दन्त–८ चौभड़ और १२ दाढ़ें होती हैं। २–फलाहारियों के चोंच होती है। ३–तृणहारियों के दाँत दो प्रकार के होते हैं। एक केवल नीचे की ओर दाँत वाले जैसे गाय, भैंस आदि। दूसरे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दोनों ओर दान्त वाले जैसे घोड़ा आदि। उनके ६ दाढ़ें ८ या १६ राजदन्त होते हैं तथा उनके जाबड़े चारों तरफ़ से काटने वाले होते हैं। ४–सर्व भक्षक के थूह। ५–मांसाहारियों के दांत एवं शूल दन्त अधिक पैने, नुकीले, लम्बे एवं मुड़े हुए होते हैं और इनके जाबड़े एक ओर से काटने वाले होते हैं। सर रेलन फ्रेस्टर के० सी० बी० एफ० आर० एस० ने दिसम्बर सन् १९०९ ई० के दी डेली टेलोग्राफ़ नामक पत्र में लिखा है कि मनुष्य के दाँत नरम खुराक खाने के लिये गोलाकार, पोले और चौरस बने हैं–मनुष्य स्वाभाविक रीति से मांस खाने वाला नहीं है।

गोश्त खाना स्वाभाविक प्रकृत के प्रतिकूल भी है क्योंकि (१) जितने मांसाहारी जानवर हैं उनके शरीर से पसीना नहीं निकलता है (२) सर राबर्टहोम इत्यादि (जो इल्म नबातात के आलिम थे) लिखते हैं, कि मनुष्य के दाँत और उनकी अंतड़ियाँ वा सम्पूर्ण शरीर की बनावट और स्वभाव से प्रकट होता है कि वह माँसाहारियों की तरह उत्पन्न नहीं हुआ, (३) जो जन्तु माँसाहारी नहीं हैं वह पानी को घूंट बाँध कर पीते हैं, (४) मनुष्य की भाँति बनस्पति खाने वाले जीवों के मुंह में जितना अधिक थूक रहता है उतना गोश्तखाने वाले जीवों के नहीं रहता।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गाय और बकरी के मांस खाने से फेफड़े का रोग, शीतला, विषैले फोड़े, कण्ठमाला, क्षयरोग, पक्षाघात, बात रक्त उपदंश और गठिया आदि रोग होजाते हैं। सूअर के मांस में कद्द नामक कीड़े रहते हैं जिससे अनेक रोग हो जाते हैं। बकरे के मांस में ट्रिकनास्पिक्टस नामक कीड़ा रहता है उससे ट्रिकनोसिस नामक रोग हो जाता है। इसके अतिरिक्त मांस में केवल १०१ में ३६ भाग वह सत्ता रहती है कि जिससे मनुष्य पुष्ट होता है, शेष ६४ भाग पानी परन्तु अनाज में ८० से ९० फ़ी सैकड़ा सत्ता (ताक़त) होती है और सिवाय इसके मनुष्य की स्वाभाविक उष्णता के लिये जिस उष्ण वस्तु की आवश्यकता है जिसको कारबोनिसश कहते हैं वह मारे हुये पशु के मांस में बनस्पति की अपेक्षा बहुत कम रह जाती है और जिस वस्तु से हड्डियां बढ़ती वा पुष्ट होती हैं वह भी बनस्पति में अधिक होती हैं फिर क्या कारण कि मिथ्या पशुमार कर देश का सत्यानाश मार देवें और तनिक भी विचार न करें। इस समय जो ४० करोड़ बौद्ध मतवाले हिन्दुस्तान, चीन, जापान में रहते हैं जो माँस खाने का नाम भी नहीं लेते, वे इन माँसाहारियों से बल, पौरुष, बुद्धि, आयु आदि कौनसी बात में कम हैं? इसी भांति अन्यत्र देशों में जो मनुष्य मांस नहीं खाते कि जिनको 'विजीटेरियन' कहते हैं उन लोगों की समस्त आयु इस बात का प्रमाण है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उनको मांसाहारियों की अपेक्षा शारीरिक रोग बहुत कम होते हैं।

इंगलैंड और अमेरिका के विजीटेरियन, लोगों में आज तक एक में से कोई भी पुरुष विशूचिका ( हैज़ा ) के रोगों में ग्रसित नहीं हुआ। स्पार्टा के रहने वाले जो दुनियां की समस्त जातियों के इतिहास में धैर्य, साहस, उद्योग, बल, वीरता और हृष्ट पुष्टता के विचार से अनुपम थे, मांस भक्षण नहीं करते थे। जिन दिनों ग्रीस ( यूनान ) और रूम ( इटली की राजधानी ) की समर विजय का झण्डा फहराता था तथा वह उस समय उन विजयी सेनाओं के लोग गोश्तख़ोर न थे किंतु जब से उन्होंने गोश्त खाना आरम्भ किया तभी से उनकी अवनति का बीजारोपण हुआ नाना प्रकार के शारीरिक बल फुरती के अनेक दांव पेच और कर्तव्य दिखाते थे क्रमशः व्यसनी, अचेत और पराक्रमहीन होगये। इसके अतिरिक्त जो लोग गोश्त नहीं खाते वे गोश्तख़ोरों की अपेक्षा असाधारण तथा शरीर में गुरु ( वज़नी ) होते हैं और उनके पुट्ठे बहुतपुष्ट और बली होते हैं और वे कठिन काम करने में नहीं घबड़ाते। सन् १०९८ में ६ महीने तक लन्दन की विजिटेरियन सोसाइटी के सेक्रेटरी मिस्टर एफ० आई० निकलने ने प्रति दिन १००० लड़कों को अन्न और फलों का आहार कराना शुरू किया और उसी समय लन्दन की काउन्टी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कौन्सिल के १००० लड़कों को ६ महीने तक मांसाहार दिया गया ६ महीने के बाद दोनों प्रकार के लड़कों की डाक्टरी की परीक्षा की गई उससे यह बात पूर्णतया साबित होगई कि बनस्पति एक अन्नाहार करने वाले लड़के मांसाहार करने वालों की अपेक्षा अधिक हृष्ट पुष्ट, बलवान, दृढ़ शरीर और सुन्दर वर्ण वाले थे। प्रोफ़ेसर फ़ाइरिसने इस विषय में जो अनुभव किया है उसका सार यह है कि 'अंगरेज़ों' की अपेक्षा जो अतीव गोश्तख़ोर हैं उनके भाई स्काटलैण्ड वाले जो गोश्त का कम और बनस्पति का अधिक आहार करते हैं। शरीर की ऊँचाई बोझ और बलमें अधिक उत्तम हैं। स्काटलैण्ड के निवासियों से आयरलैंड के वासी जो रोटी दाल तथा आलू से निर्वाह करते हैं कई दर्जे श्रेष्टता रखते हैं। डाक्टर लुम्ब भी अपने अनुभव से इसी बात की पुष्टि करते हैं उनका विचार है कि आयरलैंड के रहने वाले जो सिर्फ़ गोश्त खाकर जीते हैं पस्तेक़द होते हैं और उन्हीं के आगे फिनस्लैंड वासी जो ठीक उसी तरह के पवन पानी में रहते और जो अधिक बनस्पति खाते हैं ऊँचे होते हैं। अतएव बल के अर्थ मांस खाने की भी आवश्यकता नहीं है वरन् उससे बलकी न्यूनता होती और आरोग्यता में अन्तर पड़ जाता है।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# शिकार खेलना

बहुधा मनुष्यों का यह कथन है कि जब मांस भक्षण करने की मनाई है तो शिकार खेलना भी अनुचित है। इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो शिकार खेलना राजा ही का काम है वह उन जानवरों का शिकार करे जिनसे प्रजा को नाना प्रकार के कठिन दुःख होते हैं जैसे शेर भेड़िया आदि, क्योंकि राजा का मुख्य धर्म प्रजा की रक्षा करने का है, अतः राजा ऐसे पशुओं के शिकार करने में दोष का भागी नहीं होता जैसे जो कोई जन मनुष्यों को दुःख देते हैं उनको दण्ड देना राजा का मुख्य धर्म है कि जिससे सब प्रजा को आनन्द हो इसी भाँति उन पशुओं के शिकार करने से बनवासियों तथा बटोहियों वा दीन पशुओं को सुख होता है, खेती की रक्षा होती है। परन्तु मांस उनका कोई नहीं खाता था वरन् पृथ्वी में गड़वा दिया जाता था हाँ जो राजा प्रजा से सर्व हितैषी पशुओं का शिकार कर मांस खाते हैं वे महा पापी होते हैं जैसे कि मनु अ० ५ श्लोक ५५ में लिखा है।

स्वमांसंपरमांसेन योवर्द्धयितुमिच्छति।
अनभ्यर्च्यपितृ नदेवांस्ततोऽन्योनास्त्यपुण्यकृत्॥

अर्थात् जो मनुष्य अन्य के मांस से अपना मांस बढ़ाने की इच्छा करता है उससे अधिक कोई पापी नहीं बहुधा लोग रामचन्द्र महाराज की गणना मांस खाने वालों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में करते हैं यह उनका कहना अत्यन्त ही मिथ्या है क्योंकि महात्मा रामचन्द्र अपने धर्म की रक्षा करने और प्रजा के पालने वेद वेदाङ्ग के तत्वों के जानने वाले, धर्मज्ञ और सत्य प्रतिज्ञा सब जीवों की रक्षा करने वाले, महा तेजस्वी, परम साधुचित्त, महान् पण्डित, परम श्रेष्ठ और आर्य पुरुष थे, जो बालकाण्ड सर्ग १ श्लोक ११, १३, १४, १५ वा १६ से विदित है। इसके उपरान्त अयोध्याकाण्ड सर्ग २० श्लोक ३० से प्रकट होता है कि जब रामचन्द्रजी महाराज बन यात्रा जाने के लिये तय्यार हुए तब वह अपनी माता कौशिल्या के पास मिलने गये, उस समय उन्होंने कहा कि हे माता ! मैं १४ वर्ष तक बन में जाकर मुनियों की भांति कन्द मूल और फलों से अपना जीवन व्यतीत करता रहूँगा। इसके उपरान्त कौशिल्याजी की प्रार्थना और रामचन्द्रजी का सीता को समझाना आदि के पाठ करने से अच्छे प्रकार प्रगट होता है कि वह मांसाहारी न थे, देखो अयोध्याकाण्ड सर्ग २५। भरत ने जब कौशिल्याजी से शपथ की है वहाँ पर लिखा है कि यदि रामचन्द्र मेरी सम्मति से बन को गये हों तो वह दोष मुझको लगे जो मद्य, मांस विष इत्यादि निषिद्ध वस्तुओं को बेचकर कुटुम्ब के पालन करने वालों को होता है। अयोध्याकाण्ड सर्ग ७६ श्लोक ३८। अयोध्याकाण्ड सर्ग ४, १०९ श्लोक ३ वा ४ जहाँ अयोध्या का वर्णन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वहाँ कसाइयों की दूकानों का नाम भी नहीं और न उनके शिर काटने का कहीं कथन है। इससे भी स्पष्ट होता है कि उस समय आर्य पुरुष माँसाहारी न थे।

मान्यवरो! पशु मनुष्य सम्पति का एक बड़ा अंश है उसी की रक्षा करना प्रत्येक का मुख्य धर्म है जिस समय इनका लालन पालन होता था भारत में दूधों की नदियाँ बहती थीं जिनके सेवन से बालक युवा और वृद्ध सभी हृष्ट पुष्ट दिखाई देते थे। धन की वृद्धि का मुख्य कारण पशु ही थे परन्तु आज हम नाम मात्र गाय को माता मानते हैं। बंगाल को छोड़कर सन् १९०० ई० में भारतवर्ष के पशुओं की कुल संख्या ९०७ लाख थी और मांस भक्षकों की तादाद २० करोड़। इसीलिये जहाँ पशुओं की वृद्धि २६२८० लाख होनी चाहिये थी वहाँ १९१२ ई० में गाय और बैलों की संख्या १५०० लाख ही रह गई। जिस भारत देश में १८९९ ई० से १९०९ ई० तक दश वर्षों में ३२०८८०९ जीवित पशु जिनका मूल्य २०५०४७२१ रुपया था जहाज द्वारा बाहर भेजे और १५७५९२७ जीवित पशु जिनका मूल्य ९४७५५६५ रुपया था खुश्की के मार्ग से ईरान और तिब्बत में भेजे जिससे उन्नति के स्थान पर २९३६२ लाख पशुओं की कमी होगई अर्थात् इस समय ३१ करोड़ भारतवासियों का केवल दो करोड़ गाय भैंसों के दूध पर गुजारा होता है औसत निकालने से १५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन पीछे एक गाय या भैंस पड़ती है, फिर बल, पौरुष, धन और धान्य की वृद्धि कैसे हो। इसलिये अथर्ववेद कांड १२ मन्त्र १० की आज्ञानुसार मांसादि अभक्ष्य भोजनों को त्याग दूध, घी गेहूँ, चने चावल, उरद आदि उत्तम पदार्थों के भोजन का अभ्यास डालिये जैसाकि—

'पयश्चरसश्चान्न चान्नाद्य चसत्यचेष्टचपूर्तचप्रजांच पशुश्च'

---

## नशों का निषेध

प्रिय सज्जन पुरुषों ! वर्त्तमान समय में नशों का ऐसा बाज़ार गर्म हो रहा है कि कोई विरले ही माई के लाल होंगे जो इनके फन्दों से बचे हों वरन् बड़े २ महंत, साधु, पण्डितों की प्रशंसा लोग इन्हीं नशों के कारण करते हैं, जिनके कारण भारत चौपट होगया।

शराब-प्यारे सज्जनो ! मनुष्य शरीर की रचना रेल के इंजन के समान है। जिस प्रकार उत्तम तेल के स्थान में बुरे तेल आदि के लगाने से इंजन के पुर्ज़े खराब होकर कार्य करने के योग्य नहीं रहते ठीक उसी प्रकार शरीर रूपी यन्त्र की सन्नाड़ी, शराब आदि निकृष्ट पदार्थों के सेवन से मंदाग्नि शून्यता, भ्रम, आदि रोगों से दूषित हो मानवी शरीर को निकम्मा बना देती है शराब शब्द फ़ारसी का है और दो शब्दों से मिलकर बनता है। शर आब जिसमें आब के अर्थ पानी के हैं और शर के अर्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़िसाद ( लड़ाई झगड़े ) के हैं अर्थात जो जल शरीर के भीतर नाना प्रकार के फ़िसाद ( विकार ) उत्पन्न करे उसे शराब कहते हैं। एक कवि ने कहा है:-

चित्तभ्रांतिर्जायते मद्य पानाद् भ्रांतिचित्तेयायचर्यानुयैति।
पापं कृत्वादुर्गतिंयान्ति मूढ़ास्तस्मान्मद्यंनैवपेयंनपेयम्॥

अर्थात् शराब पीने से प्रथम शरीर में फुरफुरी चित्त में भ्रम होता है फिर भ्रम से पाप करने में प्रवृत्ति और उससे दुर्गति होती है। पाश्चात्य विद्वानों का कथन है कि शराब 'अलकोहल नामक' विष है जिसके मेदे में उत्पन्न होते ही पाचन नहीं होता तथा अङ्ग में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं तत्पश्चात् आमाशय से भोजनों का बहुत सा भाग रगों के द्वारा कलेजे में पहुंचता है तब कलेजा उन भोजनों के रस को पचाकर पित्त उत्पन्न करता है तथा लोहू बनाता है परन्तु शराब के पीने से बारीक नसें थोड़े ही काल में निकम्मी होजाती हैं और कलेजा सिकुड़ कर छोटा और सूख सा जाता है। जलोदर आदि की बीमारी में फंस मनुष्य अपनी प्यारी जान से हाथ धो बैठते हैं। इसका प्रभाव मस्तक पर भी पहुंचता है तहाँ लोहू जमा होजाता है जिससे लकवा या सन्ना आदि भयानक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। मुख्य योजन इस कथन का यह है कि शराबी शरीर रूपी वृक्ष से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पदार्थों का नाश मार अपनी संतान की भी दुर्गति कर देता है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी आरोग्यता नष्ट होजाती है तथा रक्तविकार आदि के कठिन रोग उन्हें होजाते हैं, कोई २ पागल भी होजाते हैं इस कारण इसको न पीना चाहिये। धर्मशास्त्रों में इसके पीने वाले को पापी बतलाया है। देखिये मनु अ० १५ श्लोक ५५ में लिखा है कि ब्रह्महत्या, शराब पीना, चोरी करना, गुरु की स्त्री से विषय आदि करने वाले महा पातकी हैं इनसे मित्रता न करनी चाहिये। जैसाकि—

ब्रह्महत्यांसुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः।
महान्तिपातकान्याहुः संसर्गश्चपितैः सह ॥ ५५ ॥

इसी अ० के श्लोक ६० में लिखा है कि अन्न के मल को शराब कहते हैं और मल त्यागने योग्य है इसलिये शराब रूपी मल का सेवन न करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस भारतवर्ष के निवासी शराब की खाली बोतल को छूने से स्नान करते थे, वहां उसी पवित्र देश के वासी इतने शराबी होगये कि विदेशों से करोड़ों गैलन शराब आने पर भी इनकी पूर्ति नहीं होती। मान लें यदि एक मनुष्य ।-) रोज़ के हिसाब से शराब पीता है तो १ माह में ९।=) और १ वर्ष में ११२॥) खर्च हुआ। इस हिसाब से करोड़ों रुपया इस शराब में व्यर्थ खर्च कर धन और शरीर का नाश किया जा रहा है परन्तु शोक कि भारतवासी उपरोक्त हानियों को देखते हुए भी कुछ विचार नहीं करते। दिनोदिन इस शराब की आय भारतवर्ष में अधि-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कता के रूप में ही होती जाती है जहां १९०२ में सम्पूर्ण भारत में ८०५२१ दुकानें थीं वहां १९०६ में ८४९२५ और १९०८ में ८६७४५ दूकानें होगईं। सन् १९०३ में ७८३६५००० रुपये की शराब भारतवर्ष में पीई गई अब १२ करोड़ पर नौबत पहुंच गई है। सन् १८९८ ई० से १९०९ तक ८१ करोड़ रुपया शराब बेचने वालों ने प्राप्त किये। १९२३, २४ ई० में २८ लाख गैलन शराब बाहर से आई १९२७–२८ ई० में ४५ लाख शराब और ३०४००० गैलन स्पिरिट और १४००००० गैलन और प्रकार की शराब भारतवर्ष में आई। इस हिसाब से प्रति वर्ष करोड़ों रुपया आप व्यर्थ में अपने धर्म को खोने तथा अपने शरीर को नष्ट करने में व्यय कर रहे हैं जिससे दिनां दिन भारत रसातल को चला जा रहा है अतएव यदि आपको अपनी शारीरिक उन्नति वा धन प्राप्त करने तथा उसकी रक्षा का ध्यान है, धर्म पालन करने और नाना आपत्तियों से बचने तथा देश एवं जाति को आनन्द मङ्गल में देखने की अभिलाषा है तो इस ज़हरीले पानी से आप बचिए और औरों को बचाइये।

**अफ़ीम**–( १ ) अफ़ीम खाने से बुद्धि कम हो जाती है तथा मस्तक में खुश्की बढ़ जाती है ( २ ) मनुष्य न्यून बल तथा सुस्त हो जाता है। ( ३ ) मुखका प्रकाश कम हो जाता है। ( ४ ) मुंह पर स्याही आ जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( ५ ) मांस सूख जाता तथा खाल मुरझा जाती है। (६) वीर्य का बल निर्बल होजाता है। ( ७ ) घण्टों पिनकी में पड़े रहते, रात्रि को नींद नहीं आती, प्रातःकाल सोते हैं। ( ८ ) दोपहर को शौचालय में घण्टों बैठे रहते हैं। ( ९ ) समय पर अफ़यून खाने को न मिले तो आँखों में जलन पड़ती तथा हाथ पाँव ऐंठते हैं। ( १० ) जाड़े के दिनों में पानी से डर लगता है कि जिससे स्नान तक नहीं करते शरीर में दुर्गन्ध आने लगती है। ( ११ ) रङ्ग पीला पड़ जाता है खाँसी आदि रोग होजाते हैं इसलिये इसको न खाना चाहिये। जो मातायें अपने दुधमुये बच्चों को अफ़ीम देती हैं वह स्वयं उनके शरीर को रोगों का घर बनाती हैं जिनके कारण बालक पीछे कर दुख उठाते हैं।

**तम्बाकू**—संसार में सब नशों से अधिक तम्बाकू का प्रचार है—कोई खाता है, कोई पीता है और कोई सूंघता है। प्रत्येक शहर नगर, गाँव एवं घरों में इसका किसी न किसी रूप में व्यवहार अवश्य होता है। प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में इसका वर्णन तक नहीं। हाँ आधुनिक पुस्तकों में इसकी व्याख्या अवश्य की गई है परन्तु उत्तम वैद्यों, अमेरिका के विद्वानों एवं बड़े २ डाक्टरों का कथन हैं कि यह संखिया से भी अधिक नशेदार बूटी है अर्थात् किसी बनस्पति में इससे अधिक नशा नहीं है। डा० टेलर साहब का कथन है कि जो मनुष्य तम्बाकू के कारखानों में काम करते हैं उनके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शरीर में नाना प्रकार के रोग होजाते हैं। इसी प्रकार बहुधा डाक्टरों ने साबित किया है कि इसके धुएँ में ज़हर होता है अर्थात् इसका धुआँ भी शरीर की आरोग्यता को हानिकारक है अर्थात् जो मनुष्य तम्बाकू पीते हैं उनका जी मचलाने लगता है और कै होने लगती है, हिचकी उत्पन्न होजाती है परन्तु जब मनुष्य को इसका अभ्यास होजाता है तब ये सब बातें कम होजाती हैं।

डाक्टर स्मिथ का बचन है कि तम्बाकू के पीने से दिल की चाल पहिले तेज़ फिर धीरे २ कम होजाती है। वैद्यक से स्पष्ट प्रकट है कि तम्बाकू बहुत ही ज़हरीली (विषैली) वस्तु है, क्योंकि इसमें नेकोटिया, कारबोनिक एसिड, मेग-नेशिया इत्यादि वस्तुयें मिली रहती हैं। २४ घंटे में एक पुराना तम्बाकू पीने या खाने वाला, जितना सेवन कर सकता है उतना नेकोटिया एक साथ खा लेने से तत्काल मृत्यु हो सकती है अतः इसका सेवन दिल को निर्बल कर देता है जिससे खांसी, दमा, तिल्ली का चिर रोग तथा भयानक क्षय मन्दाग्नि, शिर का शूल, नेत्रों में कम प्रकाश का होना तथा अन्य स्नायु सम्बन्धी रोग एवं अन्य नाना प्रकार के रोगों के उत्पन्न होने से आरोग्यता में अन्तर पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ पुरुषों से स्वभाव सिद्ध दुर्बल होती हैं अतः उनको पुरुषों से अधिक स्नायु सम्बन्धी रोगों से दुःख भोगना होता है। इसके उपरांत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समय में सिगरेट का प्रचार बड़े ज़ोरों से बढ़ता चला जाता है जिसके कारण अपने पूज्यों के सन्मुख भी सिगरेट पीते नहीं लजाते वरन् बहुधा जन तो सबके सन्मुख पीने में अपना महत्व समझते हैं। घर, बाहर, बाज़ार, गली, कूचों, मन्दिर और विशेष कर रेलगाड़ी में तो सिगरेट का बड़ा आनन्द आता है गाड़ी की सीटी होते ही एक दम सैकड़ों युवक, पढ़े लिखे, वृद्ध और बालकों के मुखों से सिगरेट, बीड़ी का धुआँ गाड़ी भर की जनता में न पीने वालों को हैरान कर देता है। बड़े बड़े पढ़े लिखे, सभ्य पुरुषों को पीता देख कर हज़ारों अबोध जन और बालक इसके माया जाल में फँस गये और स्वास्थ्य सुख को तिलांजलि दे देते हैं। इसी प्रकार घरों में माता कन्या और पुत्र बधू सब एक साथ मिलकर खाती हैं और अब हज़ारों स्त्रियां पीती हैं जिसके कारण सन्तानें रोगी और निर्बल होती जाती हैं। इसलिये स्कूल, कालिजों तथा देशी पाठशालाओं के हेडमास्टरों को उचित है कि वे कभी हुक्के व सिगरेट को न पीवें जिनको देखकर विद्यार्थी गण पीने का स्वभाव बनाये। इसके अतिरिक्त इसके खाने और पीने का निषेध पुराणों में भी पाया जाता है देखिये ब्रह्माण्ड पुराण में लिखा है—

प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्व वर्णाश्रमे नरः।
तमालं भक्षितं येन सगच्छतिनरकार्णवे॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अर्थात् इस कलियुग में जो तमाकू खाता अथवा पीता है वह नरक को जाता है। पद्मपुराण में भी लिखा है—

धूम्रपानरतं विप्रं दानं कुर्वन्ति ये नरः।
दातारो नरकंयान्ति ब्राह्मणो ग्रामशूकरः॥

अर्थात् जो मनुष्य तम्बाकू पीने वाले ब्राह्मण को दान देता है वह नरक को जाता है और ब्राह्मण ग्राम में सुअर का जन्म लेता है।

**भङ्ग**—भङ्ग पीने से भी मस्तक में घुमनी आती और सिर दर्द उत्पन्न हो बुद्धि विपरीत होजाती है, चुल्लभर पीकर निर्बुद्धियों की सी बातें करने लगते हैं।

**गांजा**—इससे मुखड़े की शोभा जाती रहती है, खाँसी उत्पन्न होजाती है, **चर्स** पीने से 'दमा' होजाता है जो दम के साथही साथ जाता है। **चण्डू** से सैकड़ों घर उजाड़ होगये, मुखड़े पर हवाइयां उड़ती हैं पग पग पर घुमनी आती हैं, निर्बलता अधिक होजाती है, पानी से भय होता इसलिये सदा मैले कुचेले रहते हैं कभी कभी मार्ग में गिर भी पड़ते हैं। **मदक** से भी शरीर की रगें नीली पड़ जाती हैं इसकी चाह में घण्टों इधर उधर मारे २ फिरते हैं। इन उपरोक्त हानियों के अतिरिक्त जितना २ अधिक पीने का अभ्यास होजाता है उतना २ अधिक धन और समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


व्यर्थ जाता है और भारतवर्ष का करोड़ों रुपया इन नशे-बाज़ियों में स्वाहा होगया। १९१२ ई० की रिपोर्ट देखने से ज्ञात हुआ कि सिंध की आबादी ३० लाख है वहाँ १ लाख १५ हजार सेर भंग पीई गई। बम्बई की जन संख्या १ करोड़ है उसमें ६० लाख ६४ हजार सेर नशा पिया गया। संयुक्त प्रान्त ने १ करोड़ ६६ हजार सेर भंग और ६४ हजार सेर अफ़ीम। पंजाब जिसकी जनसंख्या बम्बई के बराबर है १ करोड़ २९ हजार सेर भंग और ६६ हजार सेर अफ़ीम। बङ्गाल में १ लाख ५१ हजार सेर भङ्ग और ६७ हजार सेर अफ़ीम खाई गई। अर्थात् १९१८-१९ ई० में १५ लाख गैलन शराब भारत में खपी और १ करोड़ २ लाख की आमदनी सरकार को हुई। १९१९-२० ई० में ११ लाख की बिक्री और १ करोड़ १० लाख की आमदनी हुई अर्थात् गत वर्ष से ८ लाख की आमदनी अधिक हुई और भङ्ग भवानी से २८ फ़ी सदी, चरस से १४ फ़ी सदी गाँजे से १६ और अफ़ीम से १९ फ़ी सदी का अधिक लाभ सरकार को हुआ। हा! कैसे शोक का स्थान है कि यूरोप अमेरिका और फ्रांस आदि देशों में इन बुरे व्यसनों के सेवन न करने के रूल पास हों पर भारतदेश जो प्राचीन समय इन व्यसनों के स्वप्न में भी दर्शन नहीं करता था वह इस समय इन दुष्ट नशों में अपनी व्यापारी कमाई को ही चूरन नहीं करता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


किन्तु अपने शरीर को भी भस्मीभूत कर दिया और करता जाता है तो फिर बतलाइये देश की दशा कैसे सुधर सक्ती है।

## ज्योतिष

प्यारे भाइयो ! ज्योतिषशास्त्र छः शास्त्रों में से एक शास्त्र है उसमें गणित मुख्य है, शेष फलित अनुमान मात्र हैं; परन्तु आजकल नाम मात्र के पंडित इस फलित के द्वारा लाखों के धन हरण करते चले जाते हैं जिसके मुहूर्त्त चिन्तामणि, लघुजातक, नीलकण्ठी, जातकाभरण आदि नवीन ग्रन्थ बने हैं। शोक तो हमको अपने देशीय भाइयों पर है जो यह भी विचार नहीं करते कि भूत, भविष्यत, वर्तमान इन तीनों कालों का जानने वाला सिवाय उस परमात्मा सर्व व्यापक के कोई नहीं हो सकता फिर भाषा के जानने वाले पत्रापांड़े कैसे जान सकते हैं कि इस लड़के को चौथे, आठवें महीने बड़ी कठिनता से व्यतीत होंगे, यह ननसाल के लिये उत्तम है, परन्तु माता के लिये नहीं, धन स्थान में इसके ऐसा ग्रह पड़ा है जो बाप के धन को भी सोख लेगा, मृत्यु स्थान में सौम्य ग्रह बैठा है इसलिये इसके जीवन में खटका है इत्यादि यह बातें महामिथ्या हैं कि जिनके सुनने से हानि के अतिरिक्त और कुछ भी लाभ नहीं होता। हां जन्मपत्री



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अवश्य बनानी चाहिये, क्योंकि सर्कार दर्बार विवाह आदि में अवस्था, तिथि आदि की आवश्यकता पड़ती है, इसमें बार, तिथि, सम्वत्, बाप, दादे का नाम ही लिखना योग्य है। इसलिये हमारे पुरुषों ने इसको बनवाया। इसके उपरांत जो ग्रह इत्यादि लिखे जाते हैं यह सब अनुमान मात्र हैं। प्यारो! ज्यों २ इन जन्मपत्रियों की दक्षिणा अधिक मिलती गई, त्यों त्यों यह नाना प्रकार के रंगों और चित्रों समेत बनने लगीं और उसमें अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी, जन्म कुण्डली, चंद्रकुंडली आदि नवग्रहों, तिथि. बार, लग्न इत्यादि के भाव लम्बे चौड़े लिखे जाने लगे। बीमारी के समय तो वह अच्छे प्रकार हाथ मारते हैं अर्थात् पत्रा और जन्मपत्री को खोल कुम्भ, मीन, मेष कह, मुंह बिगाड़, अपने चेलों से यों कहते हैं कि सूर्य और चन्द्र अरिष्ट पड़े हैं और इस वर्ष जन्म लग्न भी एक ही है। इतनी बात के सुनते ही यजमान के मुखड़े का प्रकाश फीका होजाता है और गिड़गिड़ाय गिड़गिड़ाय पंडित जी के पैरों पर गिरकर कहते हैं कि गुरूजी! अब आप हमारे ऊपर कृपा कीजिये और इससे छूटने का कोई उपाय बतलाइये। सच तो यह है कि हमारे सीधे भोले भाले भाई उन पण्डितों को परमेश्वर ही मानते हैं और पण्डितजी भी परमेश्वर का भय न कर परमेश्वरीय नियमों को तोड़ कर यजमान से कहते हैं कि दस लक्ष दुर्गाजी का पाठ और सूर्य चन्द्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इत्यादि का दान करा दो कष्ट दूर हो जावेगा और यदि बहुत बड़े साहूकार हुये तो उनको गोसठ, तुलसी सालिग्राम का विवाह, ब्रह्मभोज, महामृत्युंजय आदि का जप बता कर हज़ारों रुपये चट कर जाते हैं। हमारे प्यारे भाई बहिनें पण्डितजी के भरोसे रहते हैं यहां तक कि जप होते होते दम निकल जाता है और मुख्य उपाय अर्थात् चिकित्सा करने से बेसुध रहते हैं या उधर परा ध्यान नहीं देते और कोई पंडितजी से कहता है कि यह जप आपने कैसा किया ? तब अति क्रोधित होकर कहते हैं कि 'कर्म गति कौन जाने' हम क्या परमेश्वर से बड़े हैं जो मृत्यु से बचा सकें उसकी मृत्यु बदी थी।

बस सोचने का स्थान है, जब उनके कहने के अनुसार मरने वाले को कोई नहीं बचा सकता फिर ग्रह के नाम पर दान और उनके जप से क्या लाभ ? क्योंकि जिसका जीवन होगा वह अवश्य ही बच जावेगा, इसलिये बीमारी के समय औषधि कराना योग्य है और यथा योग्य रीति पर दान करना उत्तम है न कि धोखे की टट्टी में शिकार मारना।

इसके उपरान्त जब यह पत्रा पांडे आप वा उनके घरों में कोई बीमारी होती है तब वह क्यों वैद्य की चिकित्सा कराते हैं ? यह आप उस समय जप और ग्रहों के दान करा कर क्यों नहीं बीमारी को दूर कर लेते ? यह प्रत्यक्ष प्रगट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है कुछ कहने की बात नहीं क्योंकि हमारे भाई प्रतिदिन देखते हैं कि पंडितजी साहब शीशी लिये वैद्यों और अत्तारों के यहां मारे मारे २ फिरते हैं कैसे शोक का स्थान है कि यह ज्योतिषी हमको तो जप और ग्रहों के दान में फंसाकर सत्यानाश कर देवें और आप अपनी और अपने बच्चों की औषधि कर कर जान बचा लेवें।

इसी प्रकार जब कोई मुकद्दमा होता है तो एक पंडित मुद्दई और दूसरा मुद्दअलेह को जाकर घेरता है और दो चार बातें इधर से कह सुनकर मुकद्दमे की चर्चा छेड़ते हैं और उपदेश देते हैं यदि आप शिवजी इत्यादि किसी देवता का जप करा देवें तो आपकी जय होजायगी और हमारी आपको एक बात है जो कुछ आप देंगे वह हम लेलेंगे, क्योंकि आप हमारे यजमान हैं। इसमें बड़ी बड़ी मिहनत करनी पड़ेगी, रात्रि में जा जङ्गल में जप करना होगा, जिसकी दक्षिणा इतनी है परन्तु आपके मन में आवे सो दे देना क्योंकि आपके घर से हमको प्रति वर्ष मिलता ही रहता है लेकिन दस रुपये की सामिग्री आप आज ही घर पर भेज दें और दो पण्डितों के भोजनों का आप प्रबंध करादें अब विचार करने का स्थान है कि दोनों में एक की जीत तो अवश्य ही होगी। पंडितजी के ठहराये हुए रुपये चित्त होगये और उसके घर तथा मित्रों में ज्योतिष की प्रतिष्ठा सदा के लिए होगई। प्यारे भाइयो!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक़द्दमे का मंत्र क़ानून सरकारी सुबूत आदि है न कि ग्रहों का जप और दान। यदि आपको ग्रहों पर ही ऐसा विश्वास है तो वकील आदि की सम्मत्यानुसार सुबूत आदि न दीजिये फिर हम देखें कि ज्योतिषीजी का जप किस प्रकार डिगरी करता है, और जब आप दोनों बातें करते हो मानों डिगरी हो भी गई तो आपको यह कैसे ज्ञात हुआ कि आपकी जीत ग्रहों के दान से हुई या सुबूत आदि से ?

इसके उपरान्त ज्योतिषियों पर भी डिगरी होती है। क्यों जप से डिसमिस नहीं करा देते ? हाय अंधेर ! यही हाल प्रश्नों का है क्योंकि हमने और हमारे मित्रों ने बहुधा निश्चय किया तो प्रश्न का उत्तर कभी ठीक नहीं आया ! हां वह प्रश्न कुछ २ ठीक होते हैं कि जिनके वृतान्त से वह कुछ जानकार होते हैं, बहुधा देखा गया है कि जब बाहर के पंडित किसी नगर में आते हैं तब यहाँ के पंडित जन उनसे मिलकर अनेक वृतान्त सेठ, साहूकार, नौकरों चाकरों को बता देते हैं, वेही पण्डित नगर में उनकी ज्तोतिष की प्रशंसा अपने यजमानों से करते हैं और उनको लेजाकर उनका मान कराते हैं और भेद दिखलाते हैं और प्राप्ति में उनसे चौथाई ठहरा लेते हैं। अनेकों को पंडितजी जप के बहाने से अपने पास लगा लेते हैं और यजमानों से मुद्रा दिलाते हैं और हमारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिषी पंडित प्रकट लक्षणों को देखकर जन्मपत्री का फल वर्णन करते हैं, जैसा कि किसी को दुबला पतला देखकर कहेंगे कि तुमको कोई धातु की बीमारी है। दूसरे यह बातें जो प्रत्येक को अच्छी जान पड़ती हैं। जैसे कि तुम जिस किसी के साथ भलाई करते हो वह तुम्हारे साथ बुराई करता है। तुम्हारी भलाई वृथा जाती है। जितना रुपया पैदा करते हो तुम्हारे हाथ में नहीं ठहरता। तुम्हारा मन किसी से लगा है, वह अमुक उपाय से मिल सकता है। इस पर तुर्रा यह कि वहाँ नगर के चार पंडित भी होते ही हैं जो ज्योतिषी जी के मुंह से यह निकलते ही रजिस्ट्री करा देते हैं चाहे यजमान के जी में कुछ ही हो। यथार्थ में हमारे ज्योतिषी जी का कहना बहुत ही ठीक है क्योंकि वह समय की दशा देखकर धातु की बीमारी बतलाते हैं जो प्रत्यक्ष प्रकट है कि वर्त्तमान में न्यून अवस्था का विवाह प्रचलित है जिस पर मुदा·····वैश्यागमन आदि की अधिक चर्चा है। इस कारण भारत में बहुत ही न्यून मनुष्य निकलेंगे जिनको धातुक्षीण की बीमारी न हो।

सच पूछो तो हमारे भाइयों को ग्रहों में इन पंडितों ने ऐसा फांसा है कि बिना सायत पूंछे कहीं जाना आना भी नहीं होता चाहे कैसा ही काम क्यों न बिगड़े पर बिना मुहूर्त पूछे जाना कैसा!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पंडितजी कहते हैं कि नीचे लिखे के प्रतिकूल जो कहीं की यात्रा करेगा वह अवश्य आपत्ति में पड़ेगा। जैसाकि-

सोम शनिश्चर पूर्व काला, रवि शुक्कर पश्चिम में बासा।
मंगल बुद्ध उत्तर में रहही, रहे बृहस्पति दक्षिण माही॥

प्यारे भाइयो! हज़ारों मनुष्य शनिश्चर और सोमवार को रेलगाड़ी में पूरब को जाते, इसी भांति शुक्र और इतवार को पश्चिम को जाते हैं, जिन पर दिशाशूल का कुछ भी प्रभाव नहीं होता। इसके उपरांत ईसाई और मुसलमान तो ग्रहों को मानते ही नहीं यह ग्रह उन पर अपना प्रभाव क्यों नहीं करते? यदि कहो कि वह म्लेच्छ हैं इसलिए उन पर कुछ प्रभाव नहीं होता तो आश्चर्य की बात है कि उत्तमों को दंड मिले और दुष्ट चैन करें। क्या इसी का नाम न्याय है? देखिए जब कोई धूप में खड़ा होता है तो सबको गर्मी एकसी जान पड़ती है वही दशा सर्दी की है! क्योंकि यह ग्रह आर्य जो अपने को हिन्दू बोलते हैं उन्हें दण्ड देते हैं? अतः यह सब मिथ्या है, कौन नहीं जानता कि जब मुहम्मद गज़नवी ने मन्दिर सोमनाथ पर चढ़ाई की थी उस समय इन ग्रहों की दूकान राजा के समीप खुली हुई थी और वह पंडित लोग कहते थे कि लड़ने को कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि आपके फलां २ ग्रह बड़े अच्छे पड़े हैं और हम सब जप करते हैं तीसरे दिन शत्रु अपने आप आपके चरणों में गिरेगा वा फिरके चला जायगा। अंत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को ऐसा हुआ कि वह सब पंडित अपने ग्रहों की शूरवीरता सुनाते रहे कि वह मन्दिर में घुस आया और मूर्ति को तोड़ कर दस करोड़ का माल लेकर चला गया। इसके उपरान्त जब वह लोग अपनी पुत्रियों का विवाह करते हैं तो सब प्रकार से विधि मिला लेते हैं परन्तु फिर भी इन्हीं लोगों में विधवा अधिक देखी जाती हैं। यदि यह ज्योतिष की रीति ठीक होती तो पंडितों अर्थात् ज्योतिषियों की पुत्रियां रांड न होतीं। इस पर भी तो आपको ज्ञान नहीं होता कि यह सब मिथ्या है, इनका मुख्य प्रयोजन टका ही है। बहुधा जन यह भी कहते हैं कि तुम ज्योतिषियों के फलित को ग़लत कहते हो देखो वह कितने दिन पहले ग्रहण बता देते हैं कि फ़लां तिथि को ग्रहण होगा और वैसा ही होता है। प्यारे सुजनों! हम प्रथम ही कह चुके हैं कि ज्योतिष में गणित बहुत ठीक है परन्तु फलित का फल प्रत्यक्ष ठीक नहीं मिलता और ग्रहण बताना हिसाब का काम है देखो **गोल प्रकाश** * दो सौ वर्ष तक के ग्रहण निकालकर रख दिये हैं। हाँ यदि कोई ज्योतिषी यह कहे फ़लां ग्रहण के होने का यह फल होगा तो मैं कह सकता हूँ कि फल अवश्यमेव ग़लत पड़ेगा। इन्हीं कारणों से हमारे पुराने पुरुषा फ़लां देश को मानते न थे इसमें किसी को संदेह नहीं कि प्राचीन समय में विद्या की बड़ी चर्चा थी और

* एक पुस्तक है जिसको एक विद्वान अंग्रेज ने लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक विद्या के बड़े २ महात्मा, ऋषि, मुनि, विद्वान् विद्यमान थे, परन्तु उस समय में किसी ने ग्रहों का जप दान करके किसी के दिल को क्यों नहीं फेर दिया वा आपस में क्यों नहीं मिला दिया वा एक को क्यों नहीं मार डाला वा अपने आधीन कर लिया ? यदि ऐसा होता तो अयोध्या पुरी के सुजन अवश्य कैकेयी के मन को फिरवा देते और बनवास न होता। इसके उपरांत सीता हर जाने पर भी रामचन्द्र जी ने बहुत विचारांश किए और हनुमान आदि को सुध लेने के लिए भेजा, क्यों नहीं एकाध रुपया देकर ज्योतिषी ही से पूंछ लिया होता कि जिससे उनको ज्ञात होजाता कि रावण हर ले गया है। सुग्रीव ने अपने भाई बालि को जप कराकर क्यों नहीं प्रसन्न कर लिया ! इसी प्रकार रावण ने विभीषण को क्यों नहीं मिला लिया कि जिसने सम्पूर्ण बंश का नाश मार दिया। लक्ष्मणजी के शक्ति लग जाने पर श्रीराम महाराजजी ने संजीवनी नाम बूंटी को क्यों मंगाया ? क्यों नहीं ग्रहों का जप कराकर आराम कर लिया ? इसके उपरांत युधिष्ठिर और दुर्योधन कि जिनकी लड़ाई होने से भारत का गारत होगया उनमें क्यों नहीं ग्रहों के पंजे से सम्मति करा दी ? इसके अतिरिक्त श्रीकृष्णजी महाराज ने कंस को क्यों मारा ? क्या उस समय ज्योतिषी उपस्थित न थे जो आप से आप काम कर देते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समय में जब कोई कहीं चला जाता है तो हमारे ज्योतिषी जी यह कहते हैं कि वह पूर्व को गया है और अभी इतना अन्तर है यदि यह वार्ता सच होती तो क्यों दमयन्ती नल के मिलने को नाना प्रकार के उपाय करती झट ज्योतिषी से पूंछ कर ढूंढ़ लेती, इत्यादि अनेक प्रकार की गपशप ज्ञात होती है अतः केवल गणित भाग को ही मान अन्य मिथ्या बातों को न मानना चाहिये।

---

## रसायन मन्त्र और तन्त्र

इसके उपरान्त रसायनियों के धोके में न आओ जो तुम्हारी मालमार अपनी रसायन बना लेते हैं। यदि उनको यह आती वो पहले अपने भाई बन्धु लड़के आदि को करोड़ों रुपये बना कर साहूकार कर देते, सो तो कुछ न हुआ वरन् ऐसा गुण और फिरें मारे मारे। इसलिये यह सब मिथ्या है। यह भी एक प्रकार के ठग हैं। सच पूंछो तो अपनी रसायन बना ले जाते हैं और तुम लालच में जो कुछ होता है दे देते हो। इसी धन को परदेश में जाकर दो तीन रुपये रोज़ खर्च करते हैं, रुपये को रुपया नहीं गिनते। हमारे भाई लोग उसको रसायनी जान कर उनकी सेवा करते हैं। किसी किसी को वह हाथ की चालाकी से बनाकर दिखा देते हैं फिर उन्हीं के हाथ से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विकवाते हैं। वे विचारे सीधे साधे भोली बुद्धि के शत्रु झट स्त्री तक का माल उतार कर दे देते हैं, फिर बाबाजी के पते तक नहीं मिलते, सिर पीटते रह जाते हैं। भला अब बताओ कि किसकी रसायन बनी ?

इसके उपरान्त भूत, शंकिनी डंकिनी आदि जो भ्रमजाल और नाना भांति के रोगों में आप औषधि नहीं कराते और उन धूर्त, महा मूर्ख, कुकर्मी, भङ्गी, चमार आदि के भरोसे जो अनेक प्रकार से छल कपट, डोरा, धागा बाँध धन हरण करते हैं उनमें मिथ्या धन व्यय न करो और इन सब बातों को सत्य सत्य जानने के अर्थ सत्य ग्रन्थों को देखो, तब प्रकट होजायगा कि ये सब ठगई के जाल हैं। जो उत्पन्न होकर वर्तमान समय में न रहे सो भूत होने से भूत कहाता है, जैसा कि सृष्टि की आदि से लेकर आज तक लाखों करोड़ों मर गये और फिर कर्मानुसार जन्म लेते गये, वे सब उन नामों से न रहने के कारण हैं। उसी भांति मृतक शरीर को प्रेत और दाह करने वाले को प्रेतहार कहते हैं, परन्तु जैसा इस समय में गोलमाल होरहा है यह सब मिथ्या है। इस कारण इन मिथ्या विचारों को छोड़कर सन्तानों को भी सत्योपदेश करते रहो। इसके अतिरिक्त, मन्त्र तन्त्र इत्यादि प्रकट फैले हुये हैं कि जिसके कारण यह देश और भी अधोगति को पहुंच रहा है। मन्त्र शब्द का अर्थ गुप्त भाषण का है परन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वर्तमान काल में उससे यह प्रयोजन लेते हैं कि कोई मनुष्य मारण, मोहन, उच्चाटन, बशीकरण के अर्थ जप करे। इसी भांति मन्त्र शब्द के अर्थ युक्त क्रियाओं के करने के लिये कोष्ट जानकर उसमें कुछ संख्या वा शब्द वाक्य लिखते हैं, इसी प्रकार 'तन्त्र' शब्द के अर्थ यह लेते हैं कि औषध्यादि के मेल से कुछ आश्चर्यजनक क्रिया दिखलाना।

जिधर हम देखते हैं उधर ही पण्डित ब्रह्मचारी जती (यती) क़ाज़ी पीरज़ादे इत्यादि सभी मंत्रादिक के सहारे से शिकार मारते दृष्टि आते हैं। विद्वान् से तो यह मनुष्य दृष्टि तक नहीं मिलाते परन्तु मूर्ख पुरुषों की सभा वा इस देश की अनपढ़ी स्त्रियों में पैर फैलाते हैं। जब वहाँ से कुछ मिल जाता हैं तब उसका पीछा छोड़ते हैं और जो स्त्री पुरुष उनको कुछ नहीं देते तो यह कहके कि देखना हम तो जाते हैं परन्तु भगवती, हनुमान, भैरव, बैताल, नरसिंह वा पीर ने जब कुछ किया तो पछताओगी फिर पैरों पड़ोगी इसी प्रकार बहुत बातें बनाते हैं, कि जिसको भोले भाले मनुष्य सुनकर फिर कुछ दे दिलाकर राजी करते हैं।

मंत्र संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, ब्रजभाषा, पंजाबी, महाराष्ट्र इत्यादि भाषाओं में हैं और प्रतिदिन नवीन बनते जाते हैं इस देश में यह बात प्रसिद्ध है कि कामरू देश में 'कामाक्षादेवी' और 'इस्माइल' योगी सिद्ध है। योगी के प्रताप से मन्त्र तत्काल सिद्ध होता है और मूर्ख जन ऐसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


निश्चय रखते हैं कि इस देश का मनुष्य कामरू देश में जाय तो वहां की स्त्रियाँ उसको मंत्रों से बाँध सदैव रात्रि का पुरुष और दिनमें हल आदि में जोतने के बैल बना लिया करती हैं। लाखों मंत्रों में कामरू देश कामाक्षादेवी जहाँ बसे अस्मायल ( इस्माइल ) योगी यही पाया जाता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि कामरू देश में सहस्रों मनुष्य आते जाते हैं परन्तु तब भी हमारे भोले भाई वैसा ही निश्चय किये बैठे हैं।

इन मंत्र बनाने वालों और जप करने वालों ने एक बड़ी आड़ यह भी बना रक्खी है कि इनके देवता ३३ करोड़ हैं जब एक के नाम से काम नहीं होता तो दूसरे के आश्रय, फिर तीसरे, चौथे आदि के। मुख्य यह है कि सारी उमर जप करते २ मर जाय पर इनकी कभी हार नहींहोती है, धन्य है इन पुरुषों को!

वेदों में तैंतीस देवता व्यवहार प्रयोजन के अर्थ माने हैं और वह तैंतीस देव ये हैं—८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ इन्द्र, १ प्रजापति। इनमें से आठ वसु ये हैं, अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र। इनका नाम वसु इसलिये है कि सब पदार्थ इन्हीं से बसते हैं और यही सबके निवास करने के स्थान हैं। ११ रुद्र ये कहाते हैं जो शरीर में प्राण हैं अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, देवदत्त,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धनंजय और ११ वां जीवात्मा क्योंकि मरण होने के समय जब ये शरीर से निकलते हैं तब उसके सम्बन्धी लोग रोते हैं और वे निकलते हुए उनको रुलाते हैं इस लिये इनका नाम रुद्र है। इसी प्रकार आदित्य १२ महीने को कहते हैं क्योंकि वे सब जगत के पदार्थों का आदान अर्थात् सबकी आयु का ग्रहण करते चले जाते हैं इसीसे इनका नाम आदित्य है। ऐसे ही इन्द्र नाम बिजली का है क्योंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख है और यज्ञ को प्रजावान् इसलिये कहते हैं कि इससे वायु वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा पालन होता है तथा पशुओं की यज्ञ संज्ञा होने का कारण यह है कि उनसे भी प्रजा का पालन होता है। सब मिल कर अपने अपने गुणों से तैंतीस देव कहाते हैं।

प्यारे सुजनों यह सब व्यवहार के अर्थ हैं और उपासना के अर्थ केवल एक परमेश्वर ही है, जैसाकि शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

योऽन्यां देवतामुपासाते पशुरेवꣳसदेवानाम ॥

अर्थात् जो मनुष्य ईश्वर को छोड़कर अन्य की उपासना करता है वह पशु के समान है।

परन्तु जब लोगों को तैंतीस कोटि से भी तृप्त न हुई तब मरे हुये क़ब्र निवासी मुसलमान, पीर, औलिया, मियाँ आदि को भी मानने लगे हाय! लज्जा भी नहीं आई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसी कारण इनके पूजने वालों की भी कुगति हो गई कि जिसने भारत के ऐश्वर्य को खो दिया।

इसलिये हे गृहस्थो ! इन बातों में न फँसो और कृपा कर वेदादि सत्य शास्त्र पढ़ो वा सुनो और पूर्ण विद्वान् और सत्य वक्ताओं का सत्संग करो तो यह मिथ्या पोल स्वयमेव खुल जावे।

पाठक गणों के समझाने के अर्थ कुछ उदाहरण लिखे जाते हैं—

( कृत्रिम सोना चांदी बनाने का मंत्र )

ओं नमों हरिहराय रसायन सिद्धि हुरु २ स्वाहा।

इस मंत्र को २१ दिन तक १०८ बार जपने से सोना चांदी बनता है।

( चोकी मुट्ठी पीर की )

बिस्मल्ल अर्रहमान अर्रहीम साहचक्र की बावड़ी।
गले मोतियन का हार लंकासी कोट समुद्र सी खाई॥
जहां फिरै मुहम्मदा बीर की दुहाइ कौन बीर आगे।
चले सुलेमान वीर चले दुर्रानी बीर चले नादिरशाह॥
पीर चले मूठी चले नहीं तो हजरत सुलेमान।
की सात दुहाई शब्द सांचा चलो मन्त्रो ईश्वरो बाचा॥

इस मंत्र का ३० दिन तक १०००० मन्त्र जपे तो बीर हाजिर होकर काम करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ( मार्ग में बाघ (सिंह) के प्रबन्ध का मन्त्र )

बाघ बांधु बघायन बांधु बघ के मातों बच्चे बांधु राह बाट मैदान बांधु बसुदेव की दुहाई लोना चमारी की।

इसको सात बार सात मंगल में जपे सिंह पर फूंक दो वा सोते समय अपने ऊपर फूँक लो तो सिंह आधीन होजावेगा।

## ( बवासीर दूर करने का मंत्र )

सम्मुन वुकसुन उपयुन फहुम लापर जठना।

| (१) | (२) |
|---|---|
| ५३ । ५९ । २ । ७ | तं । तं । तं । तं |
| ६ । ३ । ५६ । ५३ | पं । पं । पं । पं |
| ५८ । ५३ । ८ । १ | दं । द । दं । दं |
| ४ । २ । २५ । ५७ | लं । लं । लं । लं |

( १ ) इस मन्त्र के लिये लिखा है कि पीतल के पन्ने में घर के पीछे लिखे तो दिन सा रात में दिखलाई देने लगे।

( २ ) इसके विषय में लिखा है कि सिरस के वृक्ष नीचे बैठ के लिखे तो भूत प्रेत देवी यक्ष आदि सब प्रसन्न हों।

इसी प्रकार के अनेक मंत्र तंत्र कपोल कल्पित और मिथ्या बातें फैल रही हैं।

पहिले लिखा जा चुका है कि आधुनिक लोग औषधि आदि के मेल से आश्चर्यजनक क्रिया दिखलाने को तन्त्र कहते हैं, अब उसी विषय में लिखा जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम स्वीकार करते हैं कि औषधि आदि ईश्वर कृत अनेक पदार्थ हैं उनको परस्पर मिलाने से बहुत आश्चर्य जनक क्रिया हो सकती हैं। हम नित्य देखते हैं कि रोग के निवारणार्थ सब लोग नाना प्रकार की औषधियों का सेवन करते हैं और उनके यथायोग्य सेवन से रोगों की निवृत्ति होती है। रेल तारादिक इन्हीं पदार्थों के सेवन से चलते हैं परन्तु इनको सदैव देखते हैं इस कारण से आश्चर्य नहीं होता, हां जो लोग प्रथम देखते हैं उनको आश्चर्य होता है।

इस वर्णन से यह सिद्ध हुआ कि पदार्थों के मिलने से उनके गुणानुसार चमत्कारिक बातें हो सकती हैं परन्तु वे भी ऐसी होती हैं कि जिनको बुद्धिमान लोग सम्भव जानते हैं। कुछ ऐसा हो नहीं कि पदार्थों के नाम लिख दिये सो होजायें जैसाकि 'तन्त्र महार्णव' नामक तन्त्र ग्रन्थ से वशीकरण प्रकरण में लिखा है।

तुलसीरसंगृहीत्वा धात्रीरससमन्वितम्।
तुलसीबीजसंयुक्तं हरतालमनः शिलम्॥
देहान्ते तिलकं कृत्वा यमदूतो वशी भवेत्।
पापीचैव महापापी वैकुण्ठं गच्छते नरः॥

अर्थ—तुलसी और आंवले का रस बराबर लेकर उसमें तुलसी के बीज, हड़ताल और मैनसिल मिलाकर मरण



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समय में उसके तिलक करने से यमदूत मृतक के वश में हो जाते हैं, इस कारण से पापी भी बैकुण्ठ को चला जाता है।

प्यारे सुजनों ! इन लेखों को ज्ञान दृष्टि से विचारो तो स्पष्ट प्रकट होगा कि मन्त्र तन्त्र आदि मिथ्या बातों ने ईश्वर की आज्ञा को भी तोड़ कर अपना दखल कर लिया। आपकी समझ में आता है कि परमेश्वर की आज्ञा को कोई भङ्ग कर सके ? ये सब इनके मिथ्या प्रपंच हैं। सच पूछो तो वर्तमान समय में नाना प्रकार के ढङ्ग ठगने के हैं। जैसाकि कोई कोई इन मंत्र तंत्रादि के तावीज़ बनाकर बाज़ारों में पैसे दो दो पैसे में बेचते हैं और भूत पलीत आदि खोते फिरते हैं। हे भारतवासियो ! तुम कदापि इन मिथ्या प्रपंचों में न फंसो, सदा वेदादि में लिखे सत्यगणों का अवलोकन करो तो आपको इन सबका भेद यथावत् प्रकाशित होजावेगा।

देखिये बीमारियों के अर्थ परमेश्वर ने वैद्यक विद्या को बनाया है यदि मारण मोहन वशीकरण उच्चाटनादि मन्त्र वेद में पाये जांय तो सब हो सकते हैं, सो इनका कहीं पता तक भी नहीं। इसके उपराँत कुछ बुद्धि से विचारना भी योग्य है कि ऐसे मन्त्र वेदोक्त हैं या नहीं ? यदि ऐसे मन्त्र वेद में हों कि जिनके पढ़ने आदि से मनुष्य मर जावें तो बतलाइये यह पाप परमेश्वर को होगा या मारने वाले को ? उत्तर यही होगा कि परमेश्वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को, तो इन तन्त्रादिकों के मानने वालों ने परमेश्वर को भी पापी बना दिया। सो वह पापी नहीं हो सकता यथार्थ में पापी वही हैं, क्योंकि कोई मन्त्र ऐसे नहीं हैं कि जिनसे मनुष्य मर जावें, हां कई कई प्रकार की औषधि ऐसी हैं कि जिनके खिलाने से मनुष्य मर जाते हैं सो यह पापी उनके नौकर आदि को लालच देकर खाने आदि में ज़हर दिलवा देते हैं कि जिससे मनुष्य मर जाते हैं फिर अपनी सिद्धि प्रकट करते हैं। यदि उनको ऐसे ही मन्त्र आते तो क्यों नहीं महमूद ग़ज़नवी, नादिरशाह, तैमूरलङ्ग आदि को मार डाला कि जिन्होंने भारत के मनुष्यों को क़तल कराया। यदि आपको इतने पर भी विश्वास न हो तो आप एक शीशी में जिस में वायु आती हो मक्खी बन्द करके अपने पास रख लीजिये और उनसे कहिये कि इसको मन्त्र से मारिये, यदि वह मर जावे तो सच, नहीं तो मिथ्या ?

प्यारे भाई बहिनों! यदि इनको मारण आता तो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को कि जिन्होंने भारत के पण्डित और वर्तमान धर्म की क़लई खोल दी क्यों नहीं मार डाला। इसके अतिरिक्त समस्त आर्यों पर जो सम्पूर्ण देश में कोलाहल मचारहे हैं, जिससे नाममात्र में पण्डितों की प्रतिष्ठा भंग हो रही है क्यों मारण मंत्र नहीं चलाते वा मोहन मन्त्र से मोहित और वशीकरण से वश में क्यों नहीं करलेते जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इन मिथ्या मंत्रों की पोल खोल मंत्रादिक के करने वालों की आमदनी का नाश मार रहे हैं सो कुछ भी न हुआ मैं नहीं जानता कि इन गपोड़ों में आप पड़कर क्यों अपने देश का सत्यानाश मारते चले जाते हैं। इसलिये अब विचार कर प्रत्येक कार्य का करना अभीष्ट है। प्यारे सुजनों ! इन्हीं कार्यों के करने से हमारे देश का नाम आर्य्यवर्त से हिन्दुस्तान रख दिया गया, आप विचार कीजिये।

---

# आर्य्य

यह शब्द ऋगतो धात से 'ऋहलोर्ण्यत्, इस सूत्र द्वारा 'ण्यत्' प्रत्यय लगाने से सिद्ध होता है और ऋग्वेद मंडल १ सू० १०३ मन्त्र ३ तथा ऋग्वेद मंडल सू० १ मन्त्र ८ में और अथर्व कां० ५ अ० २०, १२१ में मनुष्य की गणना आर्य और दास नामों से की हैं। 'नमे दासो नमे आर्यो महित्वव्रतंमीमायदहंधरिष्ये ॥' य० अ० १६ मन्त्र ३२ और य० अ० ३३ मं० ८२ में लिखा है कि जिस राजा के सब आर्य रक्षक और आज्ञा पालक हैं वहाँ सब प्रकार के आनन्द रहते हैं—"यस्यायंविश्व आर्यादास"। वशिष्ठ स्मृति में वशिष्ठजी महाराज ने लिखा है कि जो कर्त्तव्य कर्मों का सेवन करता है और अकर्त्तव्य कर्मों का परित्याग करता है वह आर्य है। गीता अध्याय २ श्लोक में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन से कहा है कि आर्य पुरुषों को मोहवश होकर अनार्यों की भाँति कार्य न करना चाहिये।

ऐसा ही विदुर जी ने विदुर नीति में कहा है और मनुजी ने अ० ४ श्लोक १७५ में अध्यापकों को उपदेश दिया है कि आर्य पुरुषों की भांति सदाचार कर उसी प्रकार अपने शिष्यों को सिखलाओ।

सत्यंधर्मार्य वृत्तेषु शौचे चवार मेत्सदा।

हितोपदेश के सन्धि प्रकरण में राजा को शिक्षा की है यह विजय पाने के अर्थ अनार्य और आर्य से सन्धि करले जैसा कि 'सत्संधार्मिकोऽनार्यो। न्यायदर्श० अ० १ सूत्र १० वात्सायन भाष्य 'ऋष्यार्य' अष्टाध्यायी अध्याय ४ पाद १ सूत्र ३०।

कवजमामक भागधेय पापापरसमानार्यकृत सुमङ्गलभेषजाच्च।'

महाभारत आदिपर्व अ० १५४ वा १४८ सभापर्व अ० ६० वा ७३ तथा उद्योगपर्व अ० ३१ श्लोक ११३ वा ११४ में लिखा है कि जो शान्त चित्त रहते हैं वैर को नहीं बढ़ाते, घमण्ड नहीं करते, उद्योग से कार्यों को करते हैं, जो गिरी दशा में भी चोरी आदि कार्य नहीं करते और अपने सुख में हर्ष और दूसरे के दुःख में आनन्दित नहीं होते वही आर्य हैं, और बनपर्व अ० २९७ वा १९७ शान्तिपर्व अ० ६३, ६४, ६५ वा १४० वा २९२ इत्यादि स्थानों पर 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया है और ऐसा ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भीष्मपर्व अ० २५ में लिखा है वाल्मीक रामायण बाल-काण्ड सर्ग १० श्लोक १६ वा ३५ । और तुलसीकृत रामायण में लिखा है—'आरज सुत पद कमल बिनु'

विष्णुपुराण तृतीय अध्याय ७ श्लोक ३१ में यमराज ने विष्णुभक्तों के लक्षण वर्णन किये हैं वहां पर लिखा है कि जो मनुष्य अशुभ गति असत्कार्यों और अनार्यों के साथ निरन्तर रहता है वह विष्णु का भक्त नहीं है ।

अशुभमति रसत्प्रवृत्तिसक्तः सततमनार्य विशालसंगमक्तः ।
अनुदिनकृतपापबन्धयत्नः पुरुषपशुर्नहि वासुदेव भक्तः ॥

अर्थात् विष्णु के भक्त वही जन हैं जो प्रति दिन शुभ कर्मों को कर आर्य पुरुषों का सत्संग करते हैं । पद्मपुराण तृतीत सर्ग खण्ड अध्याय ५ श्लोक ४८ में लक्ष्मी जी ने सावित्री जी से कहा है कि हे आर्ये ! तुम शीघ्र उठ कर चलो । मत्स्य पुराण अ० ४९ श्लोक ३ में लिखा है जो सरल मार्ग पर चलता है वह आर्य कहाता है । 'मुद्राराक्षस' नाम नाटक जिसको कवि विशाखादत्त ने ( जो महाराज पृथु का बेटा था ) बनाया है जिसकी भाषा बाबू हरिश्चन्द्र जी ने की है उसके अनेकों पृष्ठों में भी आर्य शब्द आता है । इसी कारण इस देश का नाम भी आर्यवर्त कहलाया । देखिये अमरकोष प्रथम काण्ड भूमि वर्ग अष्टमपद्य में लिखा है 'आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विंध्यहिमालयोः' अर्थात् उस पवित्र भूमि को आर्यवर्त कहते हैं जो हिमलिया और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विंध्याचल के बीच में है और जैनकृत अमरकोष द्वितीय काण्ड के भीतर 'ब्रह्मवर्गस्य' तृतीय श्लोक को देखिये महाकुल, कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये छः नाम श्रेष्ठ पुरुष के हैं !

अयोध्या कांड सर्ग ७४ श्लोक १० में भरतजी ने कौशिल्या से कहा है कि आर्ये ! हमारी प्रीति श्रीराम में कितनी है सुन्दर काण्ड सर्ग २८ श्लोक १० में सीता ने रामचन्द्र लक्ष्मण को आर्यपुत्र कहा है। सर्ग ३५ श्लोक ४४ और सर्ग ३६ श्लोक ३७ में हनूमानजी ने सीताजी से कहा है कि हे आर्ये ! किष्किंधाकांड सर्ग १९ श्लोक २८ में तारा ने अपने मरे पति को देख कर कहा है कि आर्य पुत्र। सर्ग ४३ में सीता ने लक्ष्मणजी से बार बार आर्य पुत्र कहा और श्लोक १८ में सीताजी ने फिर कहा है कि इस मृग को पकड़ कर लाइए क्योंकि यह आर्यपुत्र भरत और सासुओं को विस्मित करेगा, लङ्काकांड सर्ग ३२ श्लोक २९। इस के अतिरिक्त अयोध्याकांड में राजा दशरथ ने कैकेई से कहा है कि लोग मुझको कामी और अनार्य कहेंगे और सर्ग ६६ में कौशिल्या ने कैकेई से कहा है। सर्ग १०९ श्लोक ४ में अनार्य शब्द आया है। सुन्दरकाण्ड सर्ग ९ में हनुमान ने और सर्ग २२ में सीता ने रावण से अनार्य कहा है। इसके उपरान्त बहुधा स्थानों पर आर्य और अनार्य शब्द आये हैं, सर्ग ९९ श्लोक ३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा ३८ में भरत महाराज ने चित्रकूट पर श्रीराम को आर्य कहा है और सर्ग १२१ श्लोक १२ में भरत ने फिर राम से कहा है कि हे आर्य ! खड़ाउओं पर चरण रख दीजिये। इन सब बातों के अतिरिक्त भरतजी ने महात्मा भरद्वाज जी को अपनी माताओं को बताते हुए सर्ग ९२ श्लोक २६ में कहा है कि जो क्रोध ही सदा किये रहती, बुद्धि नहीं रखती, अहंकार युक्त अपने को सदा सुभगा ही मानती है, सदा अपना ही ऐश्वर्य चाहती, बड़ी अनारिन है पर अपने को आर्य रूप मानती है जिसका नाम कैकेई है । नरसिंह पुराण अध्याय ३४ में विश्वामित्र जी ने राजा दशरथ जी से कहा है कि हे नृपश्रेष्ठ ! रामचन्द्र अनार्य नहीं हैं ।

वेद में अर्य और आर्य दो शब्द आते हैं। आर्य शब्द ईश्वर के अर्थों में कई जगह आया है । इसीलिए निघण्टु २। २२ में आर्य शब्द ईश्वर के नामों में पड़ा है । पाणिनि मुनि की अष्टाध्यायी ३-१-१०३ सूत्र में आर्य शब्द स्वामी और वैश्य के लिये भी आया है । जैसाकि- ( आर्यःस्वामिवैश्ययोः )

अर्य शब्द से अपत्य अर्थ में अष्टाध्यायी के ४।१।९२ सूत्र ( तस्यापत्यम् ) अण् प्रत्यय लगा देने से आर्य शब्द बन जाता है अर्थात अर्यस्यापत्यमार्यः ( ईश्वर के पुत्र को आर्य कहते हैं ) भास्कराचार्य जी ने भी आर्य शब्द का ईश्वर पुत्र यही अर्थ किया है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्राचीन पुरुषा सद्गुणों के धारण करने से ही आर्य कहलाये उनकी जाति भी आर्य जाति और देश आर्यवर्त के नाम से प्रसिद्ध हुआ देखिये महाभारत उद्योग पर्व अ० ९९ में लिखा है:-

वृत्ते नहि भवत्यार्योनधनेननविद्यया ।

अर्थात् विद्या और धन से आर्य नहीं होता किन्तु सदाचारी बनने से ही आर्य कहलाता है भगवान मनु ने अ० १० श्लोक ६७ में कहा है:-

जातोनार्यामनार्यायामर्या दादार्यो भवेद्गुणैः ।
जातोयानार्या यामनार्य इति निश्चयः ॥

आर्या पुरुष से अनार्य स्त्री में उत्पन्न हुआ बालक गुणों से आर्य होगा और अनार्य पुरुष से स्त्री में उत्पन्न हुआ गुणों से रहित पुत्र अनार्य ही कहलायेगा यही मेरा निश्चय है। इसके प्रमाण के लिये देखिए कि अनार्य नारी में आर्य पुरुष से उत्पन्न हुई गुणवती शकुन्तला की मोहनी सूरत पर मोहित होकर जब राजा दुष्यन्त मन में विचारते हैं कि इस सुन्दरी को देख कर जो मेरा मन ललचायमान होगया है कहीं यह अनार्य शील तो नहीं ? अन्त में शकुन्तला के गुणों को देखता हुआ क्षत्रिय कुमार राजा दुष्यन्त यही आत्मा से निश्चय करते हैं कि निःसन्देह यह क्षत्राणी है और जबकि मेरा मन इसमें अनुरक्त हुआ है तो मेरी वीर पत्नी होने योग्य ही है शकुन्तला नाटक में लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


असंशयंक्षत्रपरिग्रहक्षमायदार्यमस्यामभिलाषिमेमनः ।

और यह बात भी सत्य है कि संदेह वाली बातों के विषय में आर्य पुरुषों के मन प्रवृत्तियां ही प्रमाण भूत होती हैं जैसे कि—

सतांहि संदेहपदेषु वस्तुषुप्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः ॥

सारांश यह है कि आर्यमन स्वभाव से उसी में प्रवृत्त होगा जो उसके लिये धर्म है यद्यपि शकुन्तला का जन्म अनार्या स्त्री में हुआ है परन्तु क्षत्रिय वीर से उत्पन्न हुई शीलादि गुणों से युक्त यह मेरी पत्नी बनाने ही योग्य है ।

---

## हिन्दू

यह शब्द न हमारे देश का है, न हमारी भाषा का, न संस्कृत की किसी पुस्तक एवं वेद, शास्त्र, पुराण और कथा आदि में ही है । किसी बही, तिथि, पत्रा, जन्म-पत्री तथा संकल्प आदि में भी हिन्दी, हिंदु और हिंदुस्तान शब्द का प्रयोग नहीं होता । मुसलमानी राज्य से पूर्व जो पुस्तकें भाषा में लिखी गईं उनमें इस शब्द का पता तक नहीं है और न किसी धर्म कार्य्य में हिंदु शब्द का उच्चारण होता है । उपरोक्त बातों से सिद्ध होता है कि हमारा नाम हिंदू नहीं है ।

पादरी लोग कहते हैं कि सिंध नदी के तटस्थ वासियों को सिंधु कहते थे फ़ारसी में 'स' का 'ह' से बदल होकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हिन्दू होगया जैसाकि सप्ताह से हफ़्ता और दशम से दहम होजाता है। मित्रो! उनकी यह बात मिथ्या है क्योंकि यूनानी लोग रूम यूनान और अफ़ग़ानिस्तान की राह से आर्यवर्त में आये और मार्ग में जैसा किसी देश का नाम सुना वैसा ही लिखा। अक्षर 'स' का 'ह' से पलटना हमने माना परन्तु फ़ारसी में, संस्कृत में किसी प्रकार नहीं हो सकता। देखो निघंटु १-१३ उणादि कोष १-११ दोनों नाम नदी के हैं, परन्तु सिंधु कभी आर्यवर्त के निवासियों के लिये नहीं कहा गया और न ठीक है। कोई कोई पादरी साहब कहते हैं कि हिन्दू चन्द्र-वंशी होते हैं और चन्द्रमा को इन्दु कहते हैं इसलिये इन्दु से हिन्दू बन गया परन्तु यह भी ठीक नहीं है। संस्कृत में किसी प्रकार व्याकरण द्वारा इन्दु से हिन्दू नहीं बनता। इन्दु चन्द्रमा को कहते हैं तो वंशी कहाँ से आया? क्या सूर्य्यवंशी से कोई नाम नहीं निकला। क्या सूर्यवंशी ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र अपने आपको हिन्दू नहीं कहते या वह हिन्दु नहीं हैं। क्या आपके अतिरिक्त संसार में इस देश का आर्यावर्त्त तथा हमारा नाम आर्य प्रतीत होता है, जैसा कि—

'ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्येत्यादि परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलौयुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे वर्त्तमान नाम सम्वत्सर प्रवर्तते तत्र अमुकायने अमुक ऋतौ मासानामासोत्तमेमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरान्वितायाम् अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुकनाम धर्मार्थमहं करिष्ये।' इसके अनन्तर रघुवंश सर्ग २ श्लोक ३३, राजा दिलीप की कथा में सिंह ने दिलीप से आर्य सखा कहा है जैसाकि—

तमार्य गृह्य निगृहीत धेनुर्मनुष्यवाचामनुवंशकेतुम।
विस्मयायन्निव विस्मितमात्मवृत्तौ सिंहो रुसंत्वनिजगादसिंहः॥

इसके उपरांत बहुधा पुस्तक रचना करने वाले पंडित-जन आर्य शब्द का प्रयोग करते हैं, और महात्मा हंस-स्वरूप जी ने जो धर्म सभा के महोपदेशक हैं अपनी त्रिकुटीविलास नामक पुस्तक के सफ़ा १४ वा १५ में इस देश वासियों को आर्य नाम से सूचित किया है। फिर हम नहीं जानते कि क्यों कर हिंदू कहलाते चले जाते हैं जसके 'गयासुल्लुग़ात, के सफ़े ५०० में अर्थ गुलाम काफ़िर चोर और लुटेरे के लिखे हैं। हा शोक, हा शोक! कि क्या समय आया जो जानबूझ कर भी हम कुएँ में गिरते चले जाते हैं और प्रसन्नता प्रकट करते हैं। प्यारे भाइयो! य शब्द प्राचीन नहीं है और न किसी प्राचीन पुस्तक में लिखा है। हां मुसलमानों ने इस देश को विजय किया तो पक्षपात के कारण इस देश का नाम हिन्दुस्तान रख दिया जो हिंदुस्थान से बना है जिसके अर्थ काफ़िर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आदि की जगह के हैं क्योंकि फ़ारसी में 'स्तान' कलमा-ज़र्फ़ अर्थात् स्थान का है, यथा गुलिस्तां, अफ़ग़ानिस्तान। इसलिये ऋग्वेद के निम्न लिखित मंत्र की आज्ञानुसार अपने ज्ञान और पराक्रम को बढ़ाते तथा शत्रुओं को हटाते हुए विश्व को आर्य बनाओ।

इन्द्र वर्धतो अप्तुरा कृण्वंतो विश्वमार्यं अपघ्नंतो अराव्यणः॥

---

# नमस्ते

प्यारे सुजनों! 'नमस्ते' यह शब्द यौगिक है, 'नमः-ते' 'नमः' का अर्थ झुकना, नवना, मान करना, सत्कार करना। 'ते' युष्मद् शब्द की चौथी विभक्ति है, जिसके अर्थ तुमको और तुम्हारे लिये हैं अब यह दोनों शब्द मिलते हैं, तो व्याकरण रीति से नमः के विसर्ग का 'स' हो जाने से 'नमस्ते' वाक्य बन जाता है जिसका अर्थ है कि आपके सम्मुख झुकता हूँ, आपका मान करता हूँ, बड़ा समझता हूँ इत्यादि। मुख्य अभिप्राय छोटों को बड़ों का शिष्टाचार करने का है और शिष्टाचार के अर्थ सत्कार के हैं जैसाकि बड़ों के आने पर उठकर खड़ा होना, शिर झुकाना वा शिर नवाना ऊँचे स्थान पर बिठाना प्रिय भाषण करना आदि शिष्टाचार कहलाता है; जैसा वर्त्तमान समय में प्रचलित है अर्थात् जब कोई मनुष्य छोटे के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्थान पर जाता है, व अन्य स्थान पर मिलता है तो वह नवता है और नाना भाँति से आदर सत्कार करता है। आजकल जो नमस्ते कहना अच्छा नहीं जानते परन्तु उसके अर्थों पर प्रतिदिन चलते हैं उसका कारण अविद्या ही है।

पौराणिक महाशय कहते हैं कि गद्य में तव को ते आदेश नहीं होता किन्तु पद्य में ही तथा—'श्रीशस्त्वावतु-मापीह !' अच्छा जब पद्य में ही ते आदेश होता है तो सिद्धांत कौमुदीकार ने—'शालीनांते ओदनंदास्यामि' यहाँ गद्य में तव को ते आदेश क्यों किया ? सिद्धांतकौमुदी स्पष्ट 'समान वाक्येविद्यात युष्मदादेशावक्तव्याः' 'अपि च एतवांनावादया अन्वादेशे वावक्तव्याः' इन दोनों वार्तिकों से कार्य किया है और सुप्तिङन्तंपदम् १-४-१४ के सूत्र से सुवन्त की और तिङन्त दोनों की पद संज्ञा है, अतएव यह कहना कि पद्य २ में सम्बन्धी कार्य नहीं तो केवल साहसमात्र है। नमस्ते तो 'पदात्' ८, ११७ से तो सर्वथा सुगमता से ही सिद्ध है। दूसरे यह कहना कि (मेरे लिये) ऐसा अर्थ कहने से बड़ों का अनादर होता है तो क्या प्राचीनकाल के सब ऋषि अपने से बड़ों का अनादर ही करते थे नहीं नहीं, वे सब आदर वा प्यार से 'त्वं' 'ते' आदि शब्दों का प्रयोग करते थे। देखिये, कठोपनिषद् में नचिकेता यम से कहते हैं—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


"देवैरत्रापि विचिकित्सतकिलिम्वंच मृत्योयन्नमूवि येयमात्य-वक्ताचाम्यत्वा दृगन्यो मलभ्यो लनभ्यो नान्योवरस्तुत्यएतस्यकिंचित् पुनः न वित्तं न तपणीयो मनुष्यो लत्यामहेवित्तमद्राक्ष्म चेत्वा। जीवीष्यामोयावदीशिष्य सित्व वरन्तुमे वरणीयः म एव"

इसमें स्पष्टरूप से 'त्वम्' 'त्वादृग' 'त्वा' इत्यादि शब्द पड़े हैं और ऐसे बाल्मीकीय में यह 'त्वं समर्योहि' स्वागतं ते महामुने, किंचते 'वरमकास्य' प्रश्नोपनिषद् में 'तं त्वा पृच्छामि' 'तेतमर्च्चयन्तं त्वं' इत्यादि बहुत स्थान पर त् तुमको प्रयोग किया है। विष्णु सहस्रनाम श्लोक १३४, १३५ में लिखा है:-

वासन वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं सर्व भूतनिवासानां वासुदेव नमास्तुते ॥१३४॥ नमोब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहितायच। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ १६९ ॥

पार्थिवपूजन में लिखा है।

नमस्ते भगवन् रुद्र देवाय रसानां पतये नमः।
सर्वोपासितरूपाय सुरासुर पतयेनमः ॥

श्रीमद्भागवत में नमः, नमो, नमस्ते पद आया है। और पाण्डवगीता में लिखा है 'गोविन्द नमो नमस्ते'।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यं नमोनमः ॥

देवी भागवत में लिखा है-

"नमस्तेशरण्येशिवेसानुकम्पे नमस्ते जगदव्यापिकेचित्स्वरूपे।
नमस्ते सद्वानन्दरूपे नमस्ते जगत् तारिणि आहि दुर्गे नमस्ते ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सारस्वत सूत्र २५८ में लिखा है—'नमस्ते भगन्भूयोदेहि-मेमोक्षशास्त्रगतम् सत्यनारायण में लिखा है। "नमस्ते वाङमनोतीतरूपाय" दुर्गापाठ के ५ अ० के श्लोक १६ से लेकर ७९ तक अनेक स्थानों पर नमस्ते शब्द आया है। शिवपुराण उत्तरखण्ड अ० १४ श्लोक २४, २८, २९ में लिखा है।

प्रलाय भर्वेद्रार्चिर्नमस्तेकाल रूपिणे॥ २४॥ जगदादिरनादिस्त्वं नमस्ते स्वात्मवेदिने॥२८॥ नमस्सयुद्ररूपाय सद्यावकटिनाय च॥२९॥

इसी भाँति अन्यान्य पुराणों में भी पाया जाता है। यजु० अ० १६ मंत्र में लिखा है:—'नमस्तेऽस्तुविद्यतेनमस्ते-स्तनयिवे'। वैद्यकग्रन्थ के कर्ता वाग्भट्टजी ने सूत्र स्थान १ में इस विद्या के पूर्व आचार्यों को नमस्ते किया है।

श्रीमद्भागवत स्कन्ध १ अ० ४९ श्लोक १३ में कुन्ती ने श्रीकृष्ण महाराज को (नमः) अर्थात् नमस्ते किया—

नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्राह्मणे परमात्मने।

ऐसाही प्रश्नोपनिषद् अध्याय ६ श्लोक ८ में पिप्प-लादि ऋषियों को सुकेशादि ऋषियों ने (नमः) ही पद उच्चारण किया है श्रीमद्भागवत स्कंध ११ अध्याय ४२ में श्रीकृष्ण महाराज ने उत्तम ब्राह्मणों को 'नमस्ते' किया है।

विप्रान् स्वलाभसन्तुष्टान् साधून् भूतसुहृत्तमान्।
निरहंसारिणः शान्तान् नमस्ते सिरसाऽसकृत्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मविपाक ग्रन्थारम्भ श्लोक १० अ० १ में लिखा है कि शिष्य आचार्य के लिये नमः अर्थात् नमस्ते करे।

पुत्रकामसमृद्धयर्थं पूजांगृहणीष्वते नमः।

बृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है कि राजा जनक ने आसन से उठ कर याज्ञवल्य को नमस्ते कर, कहा है। हे भगवान्! मेरे को बढ़ाओ।

जनकोह वैदेहः कूर्चादुपासर्पन्नु वाच नमस्ते॥

गीता अ० ११ श्लोक ३९ में अर्जुन ने श्रीकृष्ण महाराज को नमस्ते किया था।

नमोनमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपिनमोनमस्ते॥२८॥

बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग ५० श्लोक १७ में लिखा है।

सर्वथा च महाप्राज्ञः पूजोर्हणसपूजितः।
नमस्तेतु गमिष्यामि मैत्रेणक्षत्राचक्षुषा॥

अर्थात् विश्वामित्र जी वसिष्ठ जी से बोले कि हे महाराज! आप मेरे पूजनीय हैं, मेरा जैसा आदर होना चाहिये वैसा आपने किया, अब मैं आपको 'नमस्ते' अभिवादन करके जाता हूँ, मुझ पर कृपादृष्टि रखिये।

बाल्मीकि रामायण आरण्य कांड सर्ग ४ श्लोक ३ में सीता महारानी ने विराध नाम राक्षस से कहा कि हे राक्षसों में उत्तम! मैं तुम को नमस्ते करती हूँ।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


माँहारोत्सृज काकुत्स्थ नमस्ते राक्षसोत्तम ॥ रा० आ० कां सर्ग ४ श ३ । और अथर्ववेद १० । १० । १ में भी स्त्री के प्रतिनमः पद आया है जैसा 'नमस्ते' जायमानाय जायते उतते नमः । और अथर्ववेद ६ । ५ । ६ । २ में पुत्र के प्रति नमः शब्द आया है अर्थात् पिता पुत्र के लिए नमः शब्द का प्रयोग करे ! जैसाः—

नमस्त्वसिताय नमति राश्च राचए ।
स्वजाय वभ्रवे नमो नमो देव जदेभ्यः ॥

इसके उपरांत य० अ० १६ मं० २६ में बहरा, कुम्मार, खड्ग, बन्दूक और तोप आदि के बाँधने वाले, निषाद बनादि पर्वत के रहने वाले, कुत्तों को शिक्षा देने वालों को नमः करने की आज्ञा है । यजुर्वेद अ० १६ मंत्र ३२ में लिखा है कि जब परस्पर मिलते समय सत्कार करना हो तब 'नमस्ते' इस वाक्य का उच्चारण करके छोटे बड़े, बड़े छोटे, नीच उत्तमों, उत्तम नीचों और क्षत्रियादि ब्राह्मणादिको वा ब्राह्मणादि क्षत्रियादिकों का निरंतर सत्कार करें, जैसाकिः—

नमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायच नमः पूर्व जायच पराजयाच ।
नमो मध्यमायच प्रगल्भायच नमो जगन्यायच बुध्न्यायच ॥

इस प्रकार जब वेद शास्त्र एवं पुराणों में नमस्ते का उल्लेख मिलता है और हमारे पूर्वज भी इसी मर्य्यादा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का पालन करते थे फिर हमको आपस में नमस्ते करने में क्यों संदेह करना चाहिये। यद्यपि परमात्मा स्मरण रखना उत्तम है तदपि शिष्टाचार के समय राम राम कहने से शिष्टाचार की कोई व्यवस्था नहीं होती। जब एक ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मण से मिलते हैं तब परस्पर नमस्कार करते हैं फिर कैसे शोक की बात है कि जब हम परस्पर मिलें तो उनका शिष्टाचार पूर्वक सत्कार न कर ईश्वर का स्मरण करें क्या ब्राह्मण अपने लिये राम राम के उत्तम पद का स्मरण करना श्रेष्ठ नहीं समझते। नहीं नहीं यह कोरा ढकोसला बना रक्खा है—पूर्वजों के अनुसार हम सबको भी परस्पर 'नमस्ते' शब्द का व्यवहार करना चाहिये।

इसके उपरांत मौसी, सास, फूफी, भी गुरु की स्त्री के समान हैं इस लिए उनकी भी सेवा टहल गुरुजी की भाँति करना चाहिए और फूफी और बड़ी मौसी को माता के तुल्य समझना उचित है, शिष्टाचार करने का समय और अन्य स्थानों पर भी शील को न त्यागना चाहिये। देखिए मनुजी ने लिखा है कि जो मनुष्य सदा नम्रता शील सहित प्रतिदिन विद्वान् और वृद्धों को अभिवादन और उनकी सेवा करते हैं उनकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार पदार्थ बढ़ते हैं जैसा कि:—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविना।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फिर भला ऐसी सेवा से उपरोक्त फल मिलते हैं कि जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी है तो कैसे शोक और पश्चात्ताप का स्थान है कि किसी प्रकार के घमंड आदर शिष्टाचार को त्याग अप्रिय कठोर और असत्य बचन बोलकर चारों पदार्थों को खो दें।

---

# मूर्तिपूजा-विचार

सब से प्रथम यह जानना चाहिये कि मूर्ति किसको कहते हैं ? देखिये बृहदारण्यकोपनिषद् में लिखा है—

देवा ब्रह्मणोरूपे मूर्तंचेवामूर्तं चतदेतन्मूर्तंयदन्यद्वायोश्चान्तरिक्षाच्च। अथामूर्तं वायुश्चान्तरिक्षं चेत्यादि ॥

ईश्वर की सृष्टि में दो प्रकार के पदार्थ हैं एक मूर्ति दूसरे अमूर्ति। इनमें आकाश वायु से भिन्न सब मूर्ति और आकाश वायु अमूर्ति हैं। अर्थात् पंचभूतों में पहिले दो अमूर्ति और अन्त में तीन स्थूल हैं और इन तीनों भूतों के विकार भूत सभी पदार्थ स्थूल (मूर्त) हैं, इसी को आकृति कहते हैं—अर्थात् जो नेत्र द्वारा प्रत्यक्ष हो उसी को मूर्त वा मूर्ति कहते हैं। कोष के अनुसार मूर्ति शब्द के दो अर्थ हैं। "मूर्तिकाठिन्यकाययोः" अर्थात् कठिनाई और शरीर का नाम मूर्ति है और इससे मूर्तिमान् शब्द भी बनता है।

अब यह विचार करना चाहिये कि मूर्ति शब्द के साथ जो 'पूजा' शब्द लगा है उसका क्या अर्थ है प्रत्यक्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रकट है कि सत्कार करने का नाम पूजा है। किसी प्रकार के कोष में व्याकरण के प्रमाण से पूजा शब्द का अर्थ धूप, दीप, नैवेद्य वा चन्दनादि पदार्थ जड़ वस्तु पर चढ़ाने का प्रसिद्ध नहीं है। हां पूजा शब्द का अर्थ चेतन वस्तुओं के प्रसंग में आता है। अमरकोष में जहाँ पूजा शब्द आया है, उस प्रकरण को देखने से निश्चय होता है कि इस पूजा के शब्द का अर्थ चेतनों से सम्बन्ध रखता है। देखो अमरकोष के द्वितीय खण्ड के सप्तम ब्रह्मवर्ग में पूजा शब्द आया है। वहाँ उससे अतिथि और पाहुने का प्रसंग है, इसलिये ठीक सिद्ध है, जो शब्द चेतन सम्बन्धी है और सर्व चेतनों के बीच में मनुष्य ही बुद्धिमान है, इसलिये इसकी ही पूजा करना योग्य है। जैसा कि मनुजी महाराज ने कहा है।

आचार्य्यो ब्राह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्यां मूर्तिस्तु भ्रातास्वामूर्तिरात्मनः॥

आचार्य गुरु ब्रह्म की मूर्ति है, अर्थात् जिस भावना से आचार्य की पूर्ण सेवा करेगा वही अभीष्ट सिद्ध होगा। ब्रह्म नाम देव वा परमेश्वर का है, यथावत् ज्ञान गुरु की पूजा के आधीन है, जब गुरु संतुष्ट होगा तो उसको सुगमता पूर्वक वेद वा ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करा देगा। ईश्वर और शब्दार्थ सम्बन्ध रूप वेद दोनों अपूर्व हैं, परन्तु आचार्य के अंतःकरण में स्थित हैं, इस कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य को ब्रह्म की मूर्ति कहा है। जिसको ब्रह्म की पूजा करना अभीष्ट हो वह आचार्य की पूजा करे, क्योंकि धर्म-शास्त्र आज्ञा देता है कि ब्रह्म की मूर्ति आचार्य है। शास्त्र कहते हैं कि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती और पाषाणादि जड़ पदार्थ ज्ञान होने में सहायता नहीं दे सकते क्योंकि वह स्वयं ज्ञान रहित हैं। इसलिये आचार्य और गुरु की ठीक ठीक सेवा किये बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। पिता सृष्टि कर्त्ता की मूर्ति है, उसी से शरीर रूप पुत्र होता है, अर्थात् उस पुत्र रूपी शरीर का बनाने वाला है। इसलिये जहाँ सृष्टिकर्त्ता की मूर्ति पूजना हो वहाँ साक्षात् पिता की मूर्ति को पूजे, जिससे ऋण का उद्धार हो। माता पृथ्वी की मूर्ति है, क्योंकि 'इयं भूमिर्हि भूतानां शाश्वती योनिरुच्यते'। जिसने सब प्रकार के क्लेश सह के उत्पन्न तथा पालन-पोषण कर बड़ा किया उसकी साक्षात् मूर्ति पूजनी चाहिये। सहोदर भाई अपनी मूर्ति है, अर्थात् एक स्थान और एक पिता से उत्पन्न होने के कारण सब भ्राता एक ही मूर्ति हैं। इसलिए जितनी सेवा भ्राता की करे वह जानो अपनी मूर्ति की पूजा है, जैसाकि—

आचार्यश्चपिता चैव जेष्ठ भ्राता तथैव च।
नार्तोनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः॥

आचार्य, माता, पिता और जेष्ट भाई ये यदि किसी प्रकार का दुःख भी दें तथापि इनका अपमान कदापि न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करे। यह उपदेश सब वर्णों के लिये है, परन्तु ब्राह्मण के लिये विशेष है क्योंकि वह धर्म की मर्यादा को अधिक जानता है।

प्यारे भाइयो! इसी प्रकार मूर्तिपूजा प्राचीनकाल से आर्यों में चली आती है और इसी प्रकार की पूजा का आर्य ग्रन्थों में बहुत उपदेश है। जैसा इन तीनों की सेवा से तप की समाप्ति मनुस्मृति में लिखी है वैसे अन्य की पूजा से नहीं।

योगशास्त्र में कहा है कि अनात्मा शरीरादि में आत्मा बुद्धि करना अविद्या का लक्षण है। किसी शास्त्र का सिद्धान्त नहीं है कि शरीर को आत्मा माना जावे, इस लिये परमेश्वर की प्रतिमा बनाना सर्वथा असम्भव है। मनुष्यों की स्वाभाविक वृत्ति भी यही है कि उनका उपास्य देव सर्वोपरि हो। परन्तु मूर्ति बनाकर पूजने में यह बात भी असम्भव हो।

जब हम यह सोचते हैं कि प्रतिमा पूजने की प्रथा कब से चल पड़ी, तो प्रतीत होता है कि योग्य पुरुषों की प्रति कृति अर्थात् चित्र बनाने की परिपाटी बहुत दिनों से प्रचलित है। इसका कारण यह है कि इस से कई प्रयोजन सिद्ध होते हैं।

जब किसी के साथ अधिक प्रीति होती है तो देशांतर में होने के समय वा शारीरांत होने के पश्चात् उसकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आकृति सामने रहने से उसके गुणों का स्मरण करते हैं जिससे उसके चित्त को संतोष पहुँचाता है। अनेक भद्र पुरुषों की तस्वीर देख उनके सुने गुण और कर्मों का स्मरण होता है। इससे मनुष्य को गुणवान् होने में सहायता मिलती है और यह भी विचार होता है कि जब ऐसे ऐसे गुणी लोग संसार में न रहे तो क्या हम रह सकते हैं। हम को भी कभी न कभी संसार छोड़ना ही है। परंतु जब समय के हेर फेर से विद्या और शिक्षा प्रणाली आर्य जगत् में घटती गई तो सामर्थ्य ही न होने से इन प्रतिमाओं को ही ईश्वर की प्रतिमा मानने लगे।

बहुधाजन यह भी कहते हैं कि प्रतिमा में मन लग जाता है इसके लिये अर्जुन ने श्रीकृष्ण जी महाराज से कहा है कि मन बड़ा चंचल है, इसका रोकना अत्यन्त कठिन है जैसाकि—

चंचलंहि मनः कृष्ण ! प्रमादि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥

इस पर श्रीकृष्ण जी महाराज ने उत्तर दिया कि सचमुच मन ऐसा ही चंचल है उसका ठहरना बहुत कठिन है, तथापि अभ्यास और वैराग्य से ठहराया जाता है। ऐसा ही योग सूत्र में भी लिखा है। 'अभ्यासवैराग्यभ्यां तन्निरोधः'। अर्थात् चित्त का निरोध अभ्यास और वैराग्य से करना चाहिये मन को स्थिर करने के लिये प्रतिदिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अभ्यास और जिन वस्तुओं के लिये मन अधिक चलता है उन से वैराग्य करके रोकना चाहिये, क्योंकि जिसकी उपासना करना चाहते हैं उस आत्मा में चित्त को स्थित करने के लिये बार २ यत्न करने को अभ्यास कहते हैं, तथा सांसारिक वा पारमार्थिक सम्बंधी सुखों के भोग की तृष्णा को छोड़ना वैराग्य कहाता है। और ऐसा ही भगवद्गीता में लिखा है।

यतो यतो निश्चरति मनश्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतद्वात्मन्येव वशं नयेत्॥

स्थिरता रहित चंचल मन जिधर को निकले उधर से बार बार रोक कर अन्तःकरण के वशीभूत करे इत्यादि प्रकार से मन के रोकने के अनेक उपाय शास्त्रकारों ने लिखे हैं, पर यह किसी ने नहीं लिखा कि ईश्वर की प्रतिमा पाषाणादि की बनाकर उसमें चित्त को ठहरावे। तो किस प्रकार मान लिया जावे कि चित्त को स्थिर करने के लिये प्रतिमा होनी चाहिये तो श्रीमद्भागवत में लिखा है। दशम स्कन्ध उत्तरार्द्ध अ० ८४ श्लोक १३।

यस्यात्मबुद्धिः कुणपेत्रिधातुके स्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेनकर्हिचित् जनेष्वभिज्ञेषुसवगोखरः॥१३॥

अर्थात् जो धातु, पत्थर, काष्ठादि की मूर्ति को ही ईश्वर-नदी नालों को तीर्थ-स्त्री पुत्रादिकों में मोह रखते हैं वे मनुष्यों में गधे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वेद भगवान की तो यही आज्ञा है कि सब से बड़ा-सबका प्रकाश करने वाला-अविद्यान्धकार और अज्ञानादि से पृथक् जो परमात्मा है उसकी जो निराकार स्वरूप से ही उपासना करते हैं वही निःसंदेह मरणादि क्लेशों के समुद्र से पार होकर परमानन्द अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होते हैं। परमात्मा के उपरांत मुक्ति का कोई मार्ग नहीं। श्वेताश्वेतर उपनिषद् अध्याय ६ अनु० ११ में लिखा है, कि-

एकोदेवः सर्वभूतेषु गुढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासःसाक्षीचेतः केवलोनिर्गुणश्च॥

ईश्वर एक है यह सबका प्रकाश करने वाला, चेतन स्वरूप, सब जगत् के भूतप्राणियों में व्यापक, अन्तर्यामी, कर्मों का अधिपति, स्वामी सबका आधार भूत सबका साक्षी और सहायता देने वाला है, (परन्तु वह आप किसी की सहायता कभी नहीं लेता) और वह जग के गुणों से रहित (अर्थात् कभी साकार नहीं होता) है। वृहन्नारदीय पुराण अध्याय ११ श्लोक ३३ में लिखा है कि जो आपही सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म, अजन्मा, परेसे भी अत्यन्त परे प्रभू है उसको मैं किस प्रकार धारण करूँ।

योगशास्त्र में लिखा है कि ईश्वर अविद्यादि क्लेशों से रहित है, फलदायक कर्मों की बासना से भी पृथक्, सब जीवों से श्रेष्ठ और व्यापक है। तैत्तिरीय उपनिषद् में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


लिखा है कि ब्रह्म सत्स्वरूप, ज्ञानस्वरूप, अनन्तस्वरूप है जो वेद के द्वारा योग से प्राप्त होता है। देवीभागवत स्कन्ध ३ अध्याय ६ श्लोक ७० में लिखा है जितने पदार्थ संसार में दृष्टिगोचर होंगे वे सब त्रिगुणयुक्त होंगे क्योंकि निर्गुण तो संसार में न हुआ न होगा, निर्गुण तो वही परमात्मा है जो कभी भी क्षय नहीं होता। "दृश्यं चनिर्गुणं लोके न भूतं न भविष्यति"। स्कंध ३ अ० ७ श्लोक ९ में ब्रह्मा जी ने कहा है कि निर्गुण का रूप नहीं होता, जो कि दृष्टिगोचर हो सके क्योंकि जो पदार्थ देख पड़ता है उसका नाश अवश्य होता है अल्प दृष्टि में नहीं आता।

निर्गुणस्य मुने रूपं भवेद्दृष्टिगोचरम्।
दृश्यं च नश्वरं यस्माद्रूपं दृश्यते कथम्॥

बृहन्नारदीय पुराण अ० ३ श्लोक २३ में लिखा है कि जो परब्रह्म है सो तो निर्मल, तेजस्वी, मन वाणी का अगोचर अर्थात् जो कहने समझने में न आवे ऐसा है। पद्मपष्टउत्तरखण्ड में लिखा है कि उस निराकार प्रभु का ही योगीजन हृदय में ध्यान धरते हैं तथा वही अक्षर ज्योति आत्मारूप, रोगरहित, अखण्ड आनंद के समूह को निषमादन करने वाली द्वैत से वर्जित है। जिसके आश्रय संसार की वृत्ति है हम भी धारण करते हैं यह संसार का तत्व स्थावर जंगम, नीति से रहित है। विष्णुपुराण अंश २ अध्याय १४ श्लोक में लिखा है कि वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक सर्व व्यापक समान रूप शुद्ध, निर्गुण प्रकृति से परे जन्म वृद्धि मरणादि से रहित सब में गत अव्यय आत्मा है।

एको व्यापीसमः शुद्धो निर्गुणः प्रकृते परः।
जन्मवृद्धयादिरहित आत्मा सर्व गतोऽव्ययः ॥२९॥

पद्मपुराण प्रथम सृष्टि खंड के द्वितीय अध्याय में पुलस्तजी ने ब्रह्मा से कहा है कि सब परोंसे परे है इसलिये परमात्मा कहते हैं और वे रूप वर्णादिकों से रहित हैं वा महत्वादि से विवर्जित हैं। वृद्धि वा नाश से भी रहित हैं इससे उनका अंत कभी होता ही नहीं। वह सत, रज, तम तीनों गुणों से भी रहित हैं। वे केवल सदा प्रकाशित रहते हैं। और इसीके तीसरे खंड में लिखा है कि वह पद हीन, कर रहित, अकर्ण और मुख वर्जित हैं, परंतु तीनों लोकों में रहने वालों के क्षण २ के सब कर्मों को देखता रहता है वा लोगों के कहे हुये वा अंतःकरण के सब बचनों को अच्छे प्रकार सुन लेता है, गतिहीन होने पर सब कहीं चला जाता है वा उसका कुछ रूप नहीं वा पदार्थों को अच्छे प्रकार ग्रहण करता है। वह पदहीन है पर अति वेग से दौड़ता है वह सब कहीं दिखलाई देता है और बिना पैरों के सब कहीं पहुंचता है वा जिनको सब देवेन्द्र तथा मुनि लोग भी नहीं देखते परंतु वह उन सबों को प्रत्यक्ष देखता है, चाहे इसी लोक में रहें वा अन्य लोक में। गीता अ० ९ श्लोक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ में लिखा है कि मूर्ख लोग परमेश्वर को मनुष्य का शरीर धारण करने वाला और उत्पन्न हुआ जानते हैं, परंतु वह सब का महेश्वर अर्थात स्वामी है और सर्वव्यापक होने से एक स्थान पर मूर्तिमान नहीं हो सकता। बृहन्नारदीय पुराण अध्याय ३३ में लिखा है कि स्वयं प्रकाश नित्य परमात्मा है और हे विप्र ! जो अङ्ग रहित है तिसके जन्म कर्म कैसे हो सकते हैं, जो केवल ज्ञान ही से जानने योग्य, अजर, अमर, सनातन परब्रह्म, परिपूर्ण सच्चिदानंद है और जिससे परे और कोई नहीं।

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम।
कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

उक्त मंत्र में अकाय, अव्रण, अस्नाविर जो ईश्वर के विशेषण दिये हैं इससे स्पष्ट जाना जाता है कि ईश्वर निराकार है, क्योंकि काया नाम शरीर का है जिसके शरीर नहीं वह अकाय कहाता है तथ वेदों में और भी बहुत मंत्र हैं जिसमें ईश्वर को निराकार कहा है तथा उपनिषदों में भी लिखा है।

अपाणि पादो जवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकरणः।
स वेत्तिविश्वं नचतस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रं पुरषंपुराणम्॥

अर्थात वह ईश्वर हाथ पैरों से रहित है पर वेगवान् और गृहण करने वाला है वह नेत्रवान नहीं पर देखता है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कानों रहित है पर सुनता है वह सबको जानता है परंतु उसका जानने वाला कोई नहीं उसको अग्र पुरुष पुराण परमात्मा कहते हैं।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्यं तथारसं नित्यमगंधवच्चयत्।
अनाद्यनन्तं महतः परंध्रुवं निचार्यतं मृत्युमुखात्प्रमुच्यते॥

इत्यादि वाक्यों में जो अशब्द, अस्पर्श, अरूप तथा अनादि अनन्त अमूर्ति और नित्य आदि विशेषण ईश्वर के लिए दिये हैं, इससे निश्चय है तथा वेदों में अन्य भी अनेक मंत्र हैं जो ईश्वर को निराकार, प्रतिपदान करते हैं और युक्ति से भी ईश्वर निराकार है, क्योंकि जो पदार्थ साकार है वह एक देश में रह सकता है सर्व व्यापक कभी नहीं हो सकता, ईश्वर सर्व व्यापक है तो फिर वह साकार कैसे हो सकता है? हां अंतर्यामी सर्वोपरि विराजमान सनातन आदि गुण सहित परमेश्वर की उपासना करने को सगुण और 'आकाश' अर्थात् काया से रहित पापाचरण कभी नहीं करता, सुख दुःख कभी नहीं होता इत्यादि गुणों से ईश्वर को जो पृथक मानकर उपासना करते हैं वह निर्गुण उपासना कहलाती है। देखिये य० अ० १० मंत्र २५ में परमात्मा आज्ञा देते हैं कि जो मनुष्य अपने हृदय में ईश्वर की उपासना करते हैं वे सुन्दर जीवनादि के सुखों को भोगते हैं और कोई भी पुरुष ईश्वर के आश्रय के बिना पूर्ण बल और पराक्रम को प्राप्त नहीं हो सकता जैसाकि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयदस्यामुरस्यायुप्रयि धोहि युङ्ङसि बर्चोऽसिबर्चो मयिधे।
ह्मगस्जम्मयि धेहि इन्द्रस्यवां वीर्यकतोवाहुअभ्युषावहरामि

और ऐसा ही इसी अ० के २४ वें मं० में लिखा है, इसलिये प्यारे सांसारिक भाइयो ! आओ हम सब मिल कर उस परमेश्वर को वेद द्वारा जानकर नाना प्रकार से उसको स्तुति, प्रार्थना और उपासना सदा करें और कभी किसी समय में भी उस परम पिता अन्तर्यामी को क्षणमात्र के लिए भी त्याग न करें क्योंकि वही हमारे आत्मिक रोगों का नाश करने वाला डाक्टर है, वही हमारा पालन करने वाला हमें ज्ञान देने वाला और हमको दुखों से छुटा कर सुख प्रदान करने वाला है, उसके उपरांत दूसरा नहीं।

---

## ण-परीक्षा

पुराण महर्षि व्यास प्रणीत हैं या नहीं ? इनके लेख वेदानुकूल हैं वा नहीं ? उनके विषय में ईसाई मुसलमानादि क्या २ शंकायें करते हैं उनमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव और देवी महाराणी की करतूत अर्थात् महादेव का विष्णु की तपस्या कर बर मांगना, उनका कंगाल होना और्व-नाम महात्मा का महादेव को शाप देना, फिर उनका पाप मोचन करना, महादेव को युद्ध में जीतना, पार्वती की प्रार्थना पर उनका मुक्त होना, विष्णु की आज्ञा से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवजी का भस्म, हाड़, चर्म का धारण करना। तामस पुराणों की रचना, जिनके अनुसार कार्य करने वाले को नरक में जाना। कृष्ण का शिव पूजन कर मंगल और पुत्र की प्राप्ति करना। ब्रह्मा और विष्णु का महादेव को वर देना। विष्णु का नेत्र उखाड़ शिव पर चढ़ाना। रामचन्द्र जी का ब्रह्महत्या दूर करने के लिये शिव की उपसना करना। महादेव का अतिथि रूप में चमत्कार दिखाना। विष्णुजी की निन्दा दूर करने के लिए ब्रह्माजी का बकरी को उत्पन्न कर उनके शिर का लवण समुद्र में गिरना और घोड़े का शिर जोड़ना। विष्णु, ब्रह्मा, शिव का स्त्री होना। विष्णु के कान के मैल से मधुकैटभ का उत्पन्न होना। इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, वसिष्ठ, विश्वामित्र, बृहस्पति, शुक्र की अपार लीला, त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव के अनोखे कर्त्तव्यों का फ़ोटो। कलि महात्म्य और उनके दूर करने के सरल उपाय। तीर्थ व्रत के मुख्य अभिप्राय बताने का मंत्र। गङ्गामहाराणी की विचित्र उत्पत्ति गङ्गामहाराणी का सब पाप मोचन करना। राजा बेन के मरने पर उसकी भुजाओं से निषाद और पृथु का उत्पन्न करना। वृक्षों से मरीषा का जन्म रेवता के छोटे करने की अजीब तरकीब, राजा निमि का मरना फिर उससे पुत्र उत्पन्न करना, बलदेव जी मदिरा पान कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यमुना जी का खींचना, बलि के शरीर से सोना चांदी आदि का उत्पन्न होना, राजा सगर की रानी के साठ हजार पुत्रों का उत्पन्न होना, देवताओं से वृक्षों की उत्पत्ति, ब्रह्मा जी के कान से दिशाओं की उत्पत्ति, एक राजा का हिरणी के साथ वार्त्तालाप, मनु की पुत्री का पुत्र हो जाना। 'कच' का टुकड़े कर राक्षसों का खाना फिर उसे जीवत निकालना, हिरणी के पेट से शृंगीऋषि का उत्पन्न होना, राजा की कोख से पुत्र का जन्म, जन्तु नाम पुत्री की चर्बी से हवन कर उससे शेरनी के पुत्र होना, अरनी से शुक्र और बनिता से अरुण और गरुण की उत्पत्ति, अद्भुत रीति से सौ पुत्रों का पैदा होना। वृद्धावस्था के बदले युवावस्था देना। अष्टावक्र का गर्भ के भीतर से बोलना और पिता के शाप से आठ जगह से टेढ़ा होना। एक मछली का बहुत बड़ा शरीर कर प्रलय के समय नाव रोकना। राज्यणंगास्वन का स्त्री बन जाना और तपस्या से सौ पुत्रों का उत्पन्न करना, गणेश महाराज की अद्भुत उत्पत्ति और मृतक श्राद्ध इत्यादि बातों का कहां तक वर्णन करूँ इनमें सैकड़ों अद्भुत २ बातों का उल्लेख है जिनके पढ़ते २ पुराणों के लेखक की अनोखी सृष्टि रचना पर हंसी आती है, प्यारे भाइयो ! यदि आप ऊपर लिखी सारी बातों के मर्म को जानना चाहते अथवा समस्त अठारह पुराणों



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को दिग्दर्शन करना है तो हमारे बनाये पुराणतत्वप्राकाश नामक ग्रंथ को स्वयं देखिये और अपनी गृहणियां को अवश्य सुनाइये जो इन पर तन, मन और धन को न्योछावर करती हैं। इसको सुन सत्यासत्य, धर्माधर्म, का निर्णय कर अपने जीवन को सुफल करें। प्यारे भाइयो ! आप के हितार्थ ऐसी अमूल्य पुस्तक का करीब ७०० पृष्ठ होने पर मूल्य केवल २) रक्खा है। डाक व्यय ॥=)

---

# वेदों का ईश्वरकृत होना

मान्यवरो ! ईश्वरकृत पुस्तकें वही हो सकती हैं जिनमें निम्न लिखित बातें पाई जावें।

(१) यह कि वह किसी देश की भाषा न हो क्योंकि अगर अरबी होगी तो अरब वालों को, फ़ारसी होगी तो फ़ारस वालों को, अङ्गरेज़ी होगी तो इङ्गलिस्तान वालों को हिन्दी होगी तो हिन्दुस्तान वालों को सुगम होगी। बस ऐसी विद्या सिवाय संस्कृत के कोई नहीं है क्योंकि वह भाषा किसी देश की भाषा नहीं है। इसमें सम्पूर्ण देश निवासियों को एकसा परिश्रम करना पड़ता है। यदि किसी देश की भाषा होती तो उस से परमेश्वर में पक्षपात पाया जाता और वही निर्विकार है इस लिये ऐसी भाषा में वेदों को प्रकट किया है कि वह किसी देश की भाषा नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



२–किसी क़ौम की तरफ़दारी न हो। ३–सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्रकट हुई हो न कि थोड़ा या बहुत समय व्यतीत होने पर। ४–उसकी आज्ञा सब जगह एकसी ही हो, ऐसा न हो कि एक आज्ञा उसकी दूसरी आज्ञा को काट सके। ५–सृष्टि नियम जो उसी का रचा हुआ है उस के विपरीत न हो। ६–न्याय और खगोल भी उसे झूँठा न कर सके। ७–किसी ख़ास मनुष्य पर ईमान लाने की आज्ञा न हो वरन् उसमें केवल एक ईश्वर ही माननीय वा पूजनीय हो। ८–मनुष्यों की बुद्धि की उत्पत्त करने वाली हो। ९–उसमें क़िस्से कहानियां न हों। १०–जितनी विद्यायें दुनियां में प्रचलित हैं उन सब का कोष हो। इन गुणों से परिपूर्ण जो कोई पुस्तक इस संसार में हो वह ईश्वर कृत हो सकती है उन्हीं को वेद अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं॥

---

# वैदिक साहित्य

वेद—चार हैं–ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद, इनमें मोक्ष के साधन, ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान का वर्णन है।

उपवेद—चार हैं–अथर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और आयुर्वेद।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ब्राह्मण—चार हैं-एतरेय, शतपथ, शाम और गोपथ। प्राचीन वैदिक साहित्य में इन्हीं को पुराण कहा गया है।

वेदांङ्ग—छः हैं—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छन्द।

वेदों के उपाङ्ग—छः हैं-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।

उपनिषद—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, एतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक।

चौदह विद्यायें—चार वेद, चार उपवेद और छः वेदाङ्ग मिलकर चौदह विद्यायें होती हैं।

---

## संस्कार

मनुष्य के १६ संस्कार गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यंत अवश्य करना चाहिये, जैसा मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक १६ में लिखा है—

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योतो विधिः।

वे सोलह संस्कार ये हैं—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकर्ण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्ण-वेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


व्यासस्मृति अ० १ श्लोक १५ में भी इन्हीं संस्कारों को बतलाकर १६ की गणना की है कि संस्काराः षोड़श-स्मृताः। भविष्य पुराण पूर्वार्द्ध के अ० १ में सुमन्त ने इन्हीं सोलह संस्कारों के लिये उपदेश किया है क्योंकि जो विवेक आदि वैदिक संस्कारों से पवित्र होते हैं वह अवश्य ही मुक्ति पाते हैं, परन्तु किसी स्मृति में १७ और किसी में १५ संस्कार पाये जाते हैं, इस न्यूनधिकता का मुख्य कारण यही है कि किसी ने दो संस्कार एक के अन्तर्गत कर दिये हैं, किसी ने पृथक् २ माना है। अस्तु संस्कार १६ ही हैं, इसमें कुछ मत भेद नहीं पाया जाता। यद्यपि 'दशकर्मपद्धति' पुस्तक बनाने वाले पण्डितों ने वर्त-मान समय की रीत्यनुसार दश ही संस्कार माने हैं, तो भी १६ का खण्डन नहीं किया। उस गणना से भी १६ संस्कार सिद्ध होजाते हैं क्योंकि उन्होंने उपनयन, वेदारम्भ, समा-वर्तन, इन तीनों संस्कारों को वर्तमान समय की रीत्यनुसार एक ही के अन्तर्गत कर दिया है और केशान्त संस्कार को एक देशीय और संन्यास, बानप्रस्थ और अन्तेष्टिकर्म प्रचार न होने के कारण नहीं माने परन्तु इन सबके मिलने से १६ संस्कार होजाते हैं। इसलिये मैं दशकर्म पद्धति बनाने वाले पण्डितों से प्रार्थना करता हूँ कि उस पुस्तक में उक्त तीनों संस्कारों की विधि बढ़ादें जैसाकि स्मृतिकारों ने आज्ञा दी है, जिससे संसार में संस्कारों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की परिपाटी बनी रहे। इसके अतिरिक्त इस समय भी जबकि भारत की धर्म परिपाटी बहुत अधोगति पर है इनमें से आधे से अधिक संस्कार प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के यहां होते हैं, यद्यपि उनकी वेदानुकूल रीतें जाती रहीं और नाम मात्र के पौराणिक पण्डितों ने मनमानी रीति प्रचलित करली है; परन्तु शोक है कि वर्त्तमान समय के बहुधा बड़े जन कि जिन्होंने ऋषि मुनियों के ग्रन्थों पर दृष्टि भी नहीं डाली, जो वेद विद्या और उसके सिद्धान्तों से बिलकुल अनजान हैं, या जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण आयु को दूसरे देश की विद्या और उसके रहने वालों में रह कर, उनके सिद्धांतों को सीख कर उनकी ही पुस्तकों के पाठ में व्यय की है, जो उन्हीं के गिरोहों में रहते हैं, इनके मुख्य मर्म से निपट अज्ञानी रहे। गर्भाधानादि सोलह संस्कारों में नाना प्रकार की शंकायें उत्पन्न करते हैं और बहुधा नेचरिया विवाह आदि दो एक संस्कार को तो मानते हैं परन्तु यज्ञोपवीतादि करने को वे वृथा ही समझते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि वह यह नहीं जानते कि संस्कार का अर्थ क्या है और इसका फल कुछ होता है या नहीं ? देखिये 'सम् पूर्वक' कृञ् धातु से संस्कार शब्द सिद्ध होता है जिसके अर्थ अच्छे प्रकार सुधार करना है। यह दो प्रकार का होता है (१) शरीर सम्बन्धी (२) आत्मा सम्बन्धी या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तःकरण सम्बन्धी। इन दोनों में आत्म सम्बन्धी संस्कार अति उत्तम है, इसी कारण यज्ञोपवीत और वेदारम्भ मुख्य समझे जाते हैं।

प्रियवरो! जितनी वस्तुयें इस संसार में परब्रह्म परमेश्वर ने उत्पन्न की हैं मैं जानता हूँ कि उन सबको सुधार की आवश्यकता है, यहां तक कि बिना सुधार किये हम उनसे अपना कार्य भी नहीं ले सकते और न वे उत्तम जान पड़ती हैं, क्या आप नहीं देखते कि पत्थर जब तक वह अपनी स्वाभाविक दशा में होता है तो अच्छा नहीं मालूम पड़ता, परन्तु जब उसको कोई शिल्पकार दुरुस्त करता है तो वही पत्थर उत्तम जान पड़ता है और प्रत्येक मनुष्य उसको देखकर प्रसन्न होता है। इसी प्रकार हीरा आदि रत्न भी बिना सान दिये बेडौल रहते हैं और सान देने पर उत्तम जान पड़ते हैं। यही सान देने पर उत्तम जान पड़ते हैं। यही सान देना एक प्रकार का संस्कार कहाता है। इसी संस्कार द्वारा बुरी से बुरी और छोटी से छोटी भी वस्तु अच्छी और बड़ी हो सकती है। पक्षी की भाषा और रङ्ग भी सुधार से उत्तम होजाता है परन्तु शोक है कि हम पशु पक्षियों और घास आदि के सुधार के लिये नाना प्रकार के उपाय (संस्कार) करें और मनुष्य मात्र के सुधार के अर्थ संस्कार करना वृथा समझें। देखिए जो मनुष्य वेदारम्भ संस्कार कर विद्या पढ़ लेते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं वह सभ्य, जो विद्या नहीं पढ़ते वही असभ्य कहाते हैं। इसलिये मान्यवरो ! आप भी मनु महाराज के लेखानुसार वेदानुकूल संस्कार कर आनन्द उठाइये जैसा कि मनु अ० २ श्लोक २६ में कहा है।

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारैः पावनः प्रेत्य चेह च॥

द्विजातियों के गर्भाधानादि संस्कार वेद मन्त्रों से होने चाहिये क्योंकि इससे शरीर और आत्मा की शुद्धि अर्थात् संस्कारों के करने से सन्तान शुद्ध निष्पाप और बड़ी धर्मात्मा होजाती है।

(१) *गर्भाधान—प्रिय सभ्य महोदय ! इसी संस्कार पर हमारी शारीरिक और आत्मिक उन्नति निर्भर है देशोन्नति और अवनति का बीज इसी समय उत्पन्न होता है, कुल के सभ्य वा कीर्ति रूपी सूर्य से चमकने की नीव इसी समय पड़ती है, सांसारिक और पारमार्थिक सुखों का प्रारम्भ यहीं से होता है, चारों आश्रमों के विधिवत पालन करने वाले पौधे का मूलारोपण इसी समय होता है, इसी संस्कार पर सम्पूर्ण सृष्टि के बनने और बिगड़ने का दायित्व है, फिर इतने बड़े महत्व के पौधे पर ध्यान न

*(१) संस्कार की विधि एवं गर्भाधान के सम्पूर्ण विषय हमारी बनाई गर्भाधान विधि नामक पुस्तक में अवश्य देखिये मूल्य ।)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देना कैसे शोक की बात है। जैसे चतुर शिल्पी सांचे से मनमानी मूर्ति आदि गढ़ सकता है ठीक वैसे ही हम भी राम कृष्ण से पुत्र और सीता राधा दमयन्ती सी पुत्रियां उत्पन्न कर सकते, परन्तु कब ? जबकि हमारे सारे कार्य विधि पूर्वक हों। बाहरी सभ्यता। इच्छा तो करते हैं कि यदि 'श्रवण' सा पुत्र हो तो सेवा .खूब करे, परन्तु इच्छा करने पर भी उन नियमों पर एक क़दम नहीं चलना चाहते फिर अभीष्ट सिद्ध हो तो कैसे हो ? मूर्ख मनुष्य 'इमरती' खाना तो चाहता नहीं, फिर मज़ा मालूम हो तो कैसे हो इस हेतु ऐ देश हितैषी ! संसार के सभ्य महोदयो ! यदि आप अपनी इच्छा पूर्ण किया चाहते हैं तो सबसे प्रथम इसी संस्कार का आपको पत्नी सहित पूर्ण रूप से ध्यान देना चाहिये क्योंकि जब तक इस संस्कार की प्रणाली न सुधारी जायगी। तब तक अन्य १५ संस्कार भी पूर्ण रूप से फल-प्रदाता न होंगे। क्या वृक्ष की जड़ काट उसके पल्लवित होने की आशा की जा सकती है ! नहीं, ऐसा त्रिकाल में भी होना सम्भव नहीं। अतएव प्रिय सभ्य गणों एवं प्यारी महिलाओ ! यदि तुम संसार को स्वर्णमय देखा चाहती हो, यदि मनुष्यश्रेणी की गणना से मूर्खों का बहिष्कार कर देना चाहती हो, यदि भारत को 'सितारे मुल्क' बनाया चाहती हो तो मनोयोग से इस संस्कार पर ध्यान दो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( २ ) पुंसवन—यह संस्कार गर्भ स्थित के दूसरे वा तीसरे मास किया जाता है। पुंसवन 'पुमानभूयतेअनेन' अर्थात जिससे पुरुष उपजाया जाता है उसको पुंसवन कहते हैं। तीसरे मास गर्भ में बच्चे का बनना शुरू होजाता है इसलिये ईश्वर की कृपा का धन्यवाद दे गर्भस्थ बालक को वीर्यवान्, धनवान्, धैर्यवान् और शक्ति तथा शील आदि गुणों से युक्त होने के लिये माता पिता को ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये जैसा कि यजु० अध्याय १२ मंत्र ४ में उपदेश है। इसके उपरांत जैसे वृक्ष सुन्दर शाखा, पत्र, पुष्प, फल और मूलों से युक्त हो कर शोभित होते हैं, जैसे पशु पूँछादि से सुख को प्राप्त होते हैं और जिस प्रकार पक्षी अपने पंखों से ऊँचे आकाश में उड़ कर सुखी होते हैं। वैसे ही गर्भस्थ बालक अपने अङ्ग और प्रत्यंग से वृद्धि को प्राप्त होता हुआ उत्तम विद्या और शिक्षा को प्राप्त हो पुरुषार्थ के साथ नाना प्रकार के सुखों का अनुभव करे। ऋग्वेद ५।७८।९ में आदेश है कि जीव दश मास तक माता की कोख में रह कुमार बन जीवित रह और विना किसी कष्ट के जीता जागती माता की कोख से बाहर निकल आवे। इसके उपरांत माता को बड़े यत्न से गर्भ की रक्षा करनी चाहिये। बादी की चीज़ और दस्त आने वाली वस्तुओं का सेवन न करे। अत्यंत गरम चीज़ों के खाने से गर्भश्राव का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डर रहता है इस लिये गरम चीज़ें न खावे। जैसे कोमल पौधों की रक्षा में बड़ी कठिनता होती है उसी प्रकार गर्भस्थ जीवकी दशा बड़ी कोमल होती है यदि थोड़ी सी चोट लग जाये तो उसे मृत्यु के मुख में पतित हुआ ही समझिये। अतएव इस समय माता को बड़ी ही सावधानी रखनी चाहिये दिन का सोना, रात का जागना—चिन्ता-भय, शोक, ऊँचे नीचे चढ़ना उतरना, शरीर के किसी भाग का खून निकलवाना—मल मूत्र के वेग को रोकना, बासी-सड़ी—कड़ी चीज़ों का खाना, भयंकर दृश्यों के देखने, भयङ्कर शब्दों के सुनने से बचा रहना चाहिये। महर्षि सुश्रुताचार्य जी शारीरिक० । ३ । ६ में उपदेश करते हैं कि काशीफल—कटहल, निहार मुंह शरबत, अत्यंत चावल इत्यादि वातकारक पदार्थों के सेवन से और बाहर की चोट आदि के लगने से गर्भिणी के जिन जिन अङ्गों का दुःख पहुँचता है उसी से गर्भस्थ बालक भी पीड़ित होता है।

( ३ ) **सीमन्तोन्नयन**—उक्त संस्कार का समय चौथा, छठा और आठवाँ मास है। गर्भिणी के मन को शान्त रखने तथा मानसिक उच्चविचारों से पूर्ण संकल्प विकल्प रखने की इस संस्कार में आज्ञा है क्योंकि चतुर्थ मास से ही गर्भजात बालक की मासिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है, इस हेतु गर्भिणी जिन जिन विचारों को अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में आश्रय देगी उन २ विचारों का बच्चे पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा, और अन्त में बच्चे की रुचि उन्हीं विचारों की अधिक रहेगी इसलिये विधि पूर्वक संस्कार की क्रियाओं को समाप्त करके पत्नी को आदेशानुसार कार्य करना अभीष्ट है।

( ४ ) **जातकर्म**—यह संस्कार सन्तान की उत्पत्ति के समय होता है जब बालक उत्पन्न हो उसी समय उसको सुवर्ण मधु और गौ का घृत तीनों मिलाकर चटावे क्योंकि ये तीनों चीज़ें बुद्धि, आयु, आरोग्य और बल को बढ़ाने वाली हैं तत्पश्चात् नालच्छेदन का विधान करे।

( ५ ) **नामकर्ण**—पुत्र या पुत्री के जन्म समय से १० दिन छोड़ कर ११ वा १०१ वें दिन वा तीसरे वर्ष के आरम्भ में यदि पुत्र हो तो दो या चार अक्षर का घोष संज्ञक और अंतस्थ वर्ण अर्थात् पांचों वर्गों के दो दो अक्षर छोड़ कर जिसमें हों तीसरा चौथा पाँचवाँ और थ, र, ल, व ये चार वर्ण अवश्य आवें ऐसा नाम रक्खे। जैसे यशोदा सुखदा इत्यादि। इनके उपरांत इस बात का भी ध्यान रहे कि नाम बहुत लम्बा चौड़ा न हो और ऐसा भी नाम न रक्खे जिसके सुनने से भय मालूम हो यदि ब्राह्मण हो तो शर्मा, क्षत्रिय हो तो वर्मा, और वैश्य हो तो गुप्त नाम के अंत में लगावे, जैसे देव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वर्म्मा, देव गुप्त इत्यादि। ऐसे नामों के रखने का मुख्य तात्पर्य यह था कि प्रत्येक जान लेवे कि हम ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य हैं, इसलिये हमको सत्कर्मों में प्रवृत्त होना और बुरे कर्मों से घृणा करनी चाहिये, परन्तु शोक है कि वर्त्तमान समय में इस उत्तम परिपाटी पर हमारे भाई बहिन कुछ भी ध्यान नहीं देते और अण्ड बण्ड नाम रखते हैं।

( ६ ) **निष्क्रमण अर्थात् हवा खिलाना**—इसका समय जन्म से ४ मास तक है। संस्कार के पश्चात् बस्ती के बाहर जहां शुद्ध वायु धीरे धीरे चलती हो, शुद्ध पवित्र कपड़े पहना कर ले जावे और उस दिन से नित्यप्रति संध्या, प्रातःकाल भेजा करे, जिससे उनकी शारीरिक उन्नति हो, यदि बालक निर्बल या रोगी हो तो विद्वज्जन कोई और समय नियत करलें।

(७) **अन्नप्रासन अर्थात् चटाना**—किसी किसी ऋषि ने इसका समय छटे महीने लिखा है और किसी ने लिखा है कि यह संस्कार उस समय हो जब बालक को पाचनशक्ति होजावे क्योंकि इसका अभिप्राय यही है कि उस दिन से बालक को अन्न दिया जावे। संस्कार के पश्चात् बालक को भात में दही, घी और शहद मिलाकर खिलावे परन्तु घी शहद बराबर न रहे तत्पश्चात् उत्तम विधि से बना हुआ नरम थोड़ा भोजन दे ताकि बालक को रोग न हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( ८-९ ) चूड़ाकर्म अर्थात् मुंडन और कर्ण वेध (कनछेदन)—इसका समय तीन और पाँच वर्ष का है मुण्डन के दिन चतुर नाई से बालक के बाल मुंडवावे। कनछेदन के दिन चरक-सुश्रुत आदि ग्रन्थों के जानने वाले वैद्य के हाथ से अथवा नस पहचानने वाले बुड्ढे से कान छिदावे, छिदने के पश्चात् चूना हल्दी या टिनचर आदि ऐसी औषधि लगादे जिससे कान पके नहीं।

(१०) उपनयन अर्थात् जनेऊ—मनुष्य की सब प्रकार की शक्तियों की समानोन्नति करना ही पूर्णोन्नति है। अर्थात् शारीरिक-मानसिक तथा सामाजिक उन्नति करना मानवीय शरीर का मुख्य उद्देश्य है उन्हीं तीनों उन्नतियों के लिये हमारे योगी वैदिक ऋषियों ने इस ब्रह्म सूत्र ( यज्ञोपवीत ) का धारण करना बतलाया है ब्रह्म नाम वेद का है वेद की विद्यायें भी मुख्यतः तीन भागों में विभक्त हैं। १-ज्ञानकांड, २-कर्मकांड, ३-उपासनाकांड। मानसिक वा दिमाग़ी या विद्या सम्बन्धी उन्नति करना ज्ञान काँड के अन्तर्गत है शरीरिकोन्नति कर्म कांड के अन्तर्गत (भीतर) है समाज सेवा आदि परोपकारी कर्म जिसके धर्मभाव उच्च हों या सदाचर तथा सामाजिक उन्नति के काम उपासना कांड के अन्तर्गत आ जाते हैं इन्हीं तीन उन्नतियों के साधन के लिये परमात्मा ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मनुष्य के शरीर की बनावट को भी तीन भागों में विभाजित किया है। माथा ज्ञानकांड का बोधक है पिछला भाग कर्मकांड और बीच का भाग उपासना कांड का बोधक है इसी प्रकार ऋग्वेद ज्ञानकांड, यजु० कर्मकांड, साम० उपासना कांड के बोधक हैं। यज्ञोपवीत के तीन तार ज्ञान, कर्म और उपासना के लक्ष्य को बता रहे हैं। ज्ञान, कर्म और उपासना यही मुक्ति के भी साधन हैं।

जिस प्रकार आजकल लोग रायबहादुरी का मान चाँद धारण कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं उसी प्रकार मनुष्य मात्र के हृदय को अत्यन्त प्रसन्न करने वाले मान चाँद रूपी यह तीन तार थे। बी० ए० की उपाधि में प्राप्त चोगे (Gown) पिटारों में ही बन्द रहते हैं या विशेष उत्सव के समय ही धारण किये जाते हैं इन सबसे बढ़कर ऋषियों का यह अनुपम चिह्न था जिसको भारत जननी के सपूत दिन रात धारण कर तीनों प्रकारों की उन्नति करने में कटिबद्ध रहते थे। यज्ञोपवीत के समय जो मंत्र बोला जाता है अर्थात्—

यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं परस्तात्।
आयुष्यमुग्रं बलमंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः॥

इस वेद मंत्र का भावार्थ भी यह बतला रहा है कि यज्ञोपवीत परम पवित्र कर्मों का द्योतक, अनादि काल से चला आता है सार्थक आयु और उत्तम बल तथा तेज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् ज्ञान का बोधक है इसका तात्पर्य यह है कि बलसे शारीरिकोन्नति और तेज से मानसिकोन्नति तथा सार्थक आयु से सामाजिकोन्नति होती थी। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस प्रकार आज कल स्कूलों में तथा कालेजों में भर्ती होने के सय दाखिले का सार्टीफ़िकेट मिलता है। वहाँ गुरु विद्यालय में दाखिले का यह उत्तम सार्टीफ़िकेट ( प्रवेश प्रमाणपत्र ) मिलता था जिसके द्वारा मनुष्यों को उत्तम ब्रह्म विद्या (वेदवाणी) बल और तेज की प्राप्ति होती थी तथा मानसिक वाचिक और कायिक दुःखों की निवृत्ति हो मुक्ति तक की प्राप्ति होती थी।

इस संस्कार का वेदानुकूल समय ब्राह्मण के लिये ८ वर्ष क्षत्रिय को ११ और वैश्य के लिये १२ वर्ष है जैसाकि मनु० अ० २ में लिखा है।

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम्।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः॥ ३६॥

और ऐसा ही विष्णुस्मृति अ० १ श्लोक १३, १४, व्यासस्मृति अ० १ श्लोक १९, श्रीमद्भागवत, महाभारत, मार्कण्डेयपुराण भविष्यपुराण और याज्ञवल्क्यस्मृति में भी लिखा है। और य० अ० १६ मं० १७ में आज्ञा है कि यज्ञोपवीत धारण करे। इसके उपरांत यह भी लिखा है यदि किसी कारण से उपरोक्त समय पर यज्ञोपवीत न हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय के २२ और वैश्य के बालक का २४ वर्ष से पूर्व यज्ञोपवीत अवश्य होना चाहिये। तत्पश्चात् गायत्री का अधिकार नहीं रहता। जैसे मनु० अ० २ में लिखा है। पुरुषों की भांति स्त्रियों के भी उपनयन किये जाते थे। यमस्मृति में लिखा है।

पुराकल्पेतुनारीणां मौञ्जीबन्धन मिष्यते।
अध्यापनं चवेदानां सावित्रीवाचनं तथा॥

अर्थात् प्राचीन काल में स्त्रियों के जनेऊ होते थे और वह वेदों को पढ़ती तथा गायत्री का जप करती थीं।

इसी संस्कार के समय आचार्य्य बालक को गायत्री आदि वेदोक्त कर्मों के करने की शिक्षा करता है जिसको वह सदा करता रहे। इसी समय बालक ब्रह्मचारी होने का सर्व साधारण के सामने प्रण करता है। परन्तु शोक है कि वर्त्तमान समय में बहुधा क्षत्रिय और वैश्यों के यहां यह संस्कार नहीं होता। यदि उनसे पूंछा जावे तो वह कह देते हैं कि "हमसे नहीं सध सकता" और पौराणिक पितृकर्म आदि में प्रहन लेते हैं। बहुधा घरानों में जब घर का बूढ़ा मर जाता है तो उनके पुत्रों में जो सबसे बड़ा होता है बिना वेदोक्त संस्कार किये जनेऊ धारण कर लेता है, जिसकी आज्ञा कहीं नहीं पाई जाती है। परन्तु शोक का स्थान है कि सभ्यजन इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इस विषय में बहुधा ऋषियों का कथन है कि जिनका यज्ञोपवीत संस्कार क्रिया पूर्वक नहीं हुआ, मनुष्य मात्र उनसे विवाह आदिक किसी प्रकार का सम्बन्ध आपत्काल में भी न रक्खें न ऐसे मनुष्य गायत्री के अधिकारी रहते हैं, जब तक प्रायश्चित् न करावें जैसा कि मनु० अ० २ श्लोक ३९ व ४० में लिखा है—इसके उपरांत इस संस्कार के न होने से वेदारम्भ संस्कार की आवश्यकता ही नहीं रही, फिर वेदों का प्रतिदिन पढ़ाना क्योंकर हो सकता है। अर्थात् पंचकर्म करने की शास्त्र की आज्ञा है वह भी नहीं हो सकती और न द्विज कहला सकता है। इसलिये विचार कर इस धर्म मर्यादा को प्रचलित कर संस्कार का उद्धार कीजिये और वर्तमान समय में जो कंठ में कण्ठी बांधने की रीति प्रचलित होगई जिसके लिये कोई वेदोक्त आज्ञा नहीं है इस लिये इसको मिथ्या जान ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य को इसकी परिपाटी शीघ्र उठा देनी चाहिये। इसके उपरांत यह भी स्मरण रहे कि जब नवीन यज्ञोपवीत धारण करे तौ भी उपरोक्त मं० 'यज्ञोपवीतं' आदि मंत्र पढ़े।

( ११ ) वेदारम्भ—गायत्री मंत्र से लेकर सांगोपांग चारों वेदों के अध्ययन करने के लिये नियम धारण करने का नाम वेदारम्भ संस्कार है। यह संस्कार उपनयन के दूसरे दिन या एक साल के भीतर किसी दिन होता है उस दिन से ब्रह्मचारी गुरुकुल में जाकर विद्याध्ययन करता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है कि जिससे मनुष्य के आत्मिक संस्कारों की उन्नति होना संम्भव है क्योंकि बिना वेदादि विद्या पढ़े कभी धर्म के मर्म को नहीं जान सकता। पूर्व समय में इसी संस्कार पर अधिक बल दिया जाता था क्योंकि बिना इस संस्कार के कभी शरीर और विद्या की उन्नति नहीं होती। पूर्व ऋषियों ने इस विषय में बड़े बड़े ग्रन्थ लिखे हैं और हमारे प्राचीन पुरुषा उनके लेखानुसार यज्ञोपवीत संस्कार कराकर अपने पुत्र पुत्रियों को गुरुकुल में भेज यथावत् विद्योपार्जन कराते थे। गुरुजन बड़े प्रेम और भक्ति से उन पुत्र पुत्रियों को अपनी निज सन्तान के समान लालन पालन कर विद्या और ब्रह्मचर्य को पूरा कराने का यत्न करते थे। उसी समय भारत में सुपात्र धार्मिक गृहस्थ होते थे, जो नियमानुकूल वेदों की आज्ञाओं को पालन कर आगे आने वाली सन्तानों के लिये उदाहरण होते थे; परन्तु अब महान शोक का स्थान है कि माता पिता वेद विद्या से रहित होने के कारण अपनी सन्तानों का यथावत् उपकार नहीं कर सकते। जिसके कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य से यह प्रथा उठ गई और विद्याहीन आचार्यों ने एक नया मिथ्या ढकोसला निकाल कर भारत सन्तान का जड़ पेड़ से खोज मार दिया।

प्रियवरो! वर्त्तमान समय में जब यज्ञोपवीत संस्कार होता है तो उसी समय वेदारम्भ संस्कार भी कराया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जाता है और ब्रह्मचारी गायत्री का उपदेश लेकर विद्या पढ़ने के लिये काशी ( जहाँ किसी समय में बड़ा भारी गुरुकुल था ) जाने के लिये अपने हितु और सम्बन्धियों से मार्ग व्ययादि के लिये भिक्षा माँग कर धन इकट्ठा कर लेता है परन्तु शोक है उन आचार्य आदि पर कि जो खड़े होकर यह विश्वास देकर ( कि हम तुम को यहीं विद्या पढ़ा देंगे ) रोक लेते हैं और फिर उसकी कुछ भी सुध नहीं लेते और माता पितादि भी इस विषय में कुछ भी नहीं करते। ब्रह्मचारी अपने रूप को बदल कर गृहस्थों की भांति गृह कार्यों में लग जाता है और फिर थोड़े ही दिनों में गृहस्थ बना दिया जाता है बहुधा अब यह संस्कार विवाह समय में भी होने लगा है। सज्जन जन ! विचार करें कि क्या इसी का नाम हमारे ऋषि मुनियों ने ब्रह्मचर्याश्रम रक्खा था ? क्या प्राचीन आचार्य इसी भाँति वेदारम्भ संस्कार कराकर गुरुकुल के जाने से झूँठा विश्वास देकर रोक लेते थे ! नहीं २ यदि आप प्राचीन ग्रन्थों को देखेंगे तो स्पष्ट प्रकट होजावेगा कि इन आचार्यों ने प्राचीन ब्रह्मचर्य का सत्यानाश मार दिया। प्रियवरो ! यह कौन से वेद या आचार्य की सनातन रीति है ? क्या आचार्य का यही परम धर्म है ? कि अपने शिष्य को झूँठा विश्वास देकर उसकी आत्मिक उन्नति का नाश मारदें। क्या ऐसे आचार्य आत्मा के हनन करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले दोष के भागी नहीं होते ? अवश्य होते हैं इसलिये माता पिता को योग्य है कि यथावत् समय पर यज्ञोपवीत संस्कार कराकर गुरुकुल में भेजने की प्रथा को यथावत् प्रचलित करें और जब तक वह विद्या को यथावत् प्राप्त न करले तब तक कदापि गुरुकुल से अपने घर पर न लावें, जैसा कि वेदादि सतशास्त्रों में आज्ञा है । उसी समय देश का कल्याण होगा ।

(१२) **समावर्तन संस्कार**—जब ब्रह्मचारी एक दो तीन वा चारों वेदों को समाप्त करके विद्वान् होकर विद्यालय को छोड़ कर अपने घर को आता है उसी का नाम समावर्त्तन संस्कार है । मान्यवरो ! जब वेदारम्भ संस्कार ही नहीं रहा, तो इसको कौन पूछता है ?

(१३) **विवाह संस्कार**—इस विषय में पीछे के पृष्ठों में लिखा जा चुका है । देख लीजिये ।

(१४) **वानप्रस्थ संस्कार**—जब गृहस्थी में मनुष्य पूर्ण आनन्द उठा चुके और अपने पुत्र पुत्रियों का ब्रह्मचर्यव्रत समाप्त होने पर विवाहादि कर चुके और पुत्र के भी पुत्र हो जावें तब सम्पूर्ण धनादि पदार्थ पुत्र को सौंप अपनी स्त्री को साथ लेकर अथवा पुत्र के आधीन कर वन में जाकर जितेन्द्रिय होकर रहे पंचकर्म कर स्वाध्याय में रत रहे—यदि स्त्री साथ हो तो प्रसंग न करे यथायोग्य ज्ञानोपदेश करता रहे । पृथ्वी पर शयन करे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) संन्यास—प्यारे पाठक गणो और सुयोग्य महिलाओ ! चारों वेद, अठारह स्मृतियों और वर्त्तमान समय के सनातनी अठारह पुराण गीता आदि का इस विषय में एक ही सिद्धान्त है कि प्रथम पुत्र, पुत्रियां ब्रह्मचर्य आश्रम से विद्या पढ़े फिर गृहस्थाश्रम और गृहस्थ से बानप्रस्थ और बानप्रस्थ से सन्यास लेकर संसार का उपकार करें यदि किसी स्त्री पुरुष को ब्रह्मचर्याश्रम से पूर्ण ज्ञान के कारण गृहस्थाश्रम में जाने की इच्छा न हो तो वह ब्रह्मचर्य्याश्रम से ही संन्यास धारण कर जगत् के परोपकारी कामों में लग जावे परन्तु इस प्रकार से संन्यास ग्रहण करने के लिये बहुत सोच समझ कर कार्य करना आवश्यक है क्योंकि बिना गृहस्थाश्रम के भोग किये संन्यास लेना खड्ग की धार पर चलने से भी कठिन है इस हेतु बिना पूर्ण वैराग्य के कभी संन्यास धारण न करना चाहिये परंतु वर्त्तमान समय में बिना ब्रह्मचर्य और विद्या शिक्षा से रहित गृहस्थी बनते हैं उनमें से फिर सन्यास लेते हैं बहुधा बिना गृहस्थ हुए ही कपड़े रंग सन्यासी बन जाते हैं जो बजाय उपदेश और परोपकार के अनेक अधर्म, परस्पर फूट, भृष्टाचार आदि नाना प्रकार के कौतुक रच कर देश की अधोगति कर रहे हैं इसलिए मनुजी ने अ० ५ के श्लोक ३८ में उपदेश दिया है कि वेद और ईश्वर के जानने वाले पुरुषों को गृहस्थाश्रम से सन्यास धारण करना चाहिये ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य हैं वह स्त्री पुरुष जो विद्या सुशिक्षा और शुभ आचरणों से योग्य होकर सन्यास से देश का उपकार करते हैं। अब आप संक्षेप से सन्यासियों के कर्तव्य सुन लीजिये।

( १ ) अपने समय को वेदादि सत् विद्याओं के पढ़ने पढ़ाने, प्रचार और फैलाने और वेद विरुद्ध बातों के दूर करने के लिये जगत में भ्रमणकर आप सदा सत्य को ग्रहण कर असत्य का त्याग कर संसार में सत्य का ही प्रकाश करता रहे ( २ ) किसी स्थान पर घर बनाकर न रहे, जलको छान कर पिये, आचरणों को सदा पवित्र बनाये रहे, ( ३ ) किसी प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन न करे सिर से बाल मुड़ाये रहे, रंगे वस्त्र धारण करे ( ४ ) क्रोध आदि को त्याग इन्द्रियों को वश में रक्खे, आठ प्रकार के मैथुन से बचता रहे ( ५ ) परमेश्वर की सदा उपासना करता रहे ( ६ ) जीवन को परोपकार में लगाता रहे ( ७ ) सांसारिक पदार्थों की कभी इच्छा न करे।

प्यारे पाठक गणो ! कहिये क्या वर्तमान समय में अनगनित साधु संन्यासी अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं ?–मेरी समझ में तो हज़ारों में कोई २ माई के लाल संन्यास लेने की योग्यता रखते होंगे देश रक्षा, स्वदेश प्रेम और मोक्ष प्राप्त करने के अर्थ प्रथम योग्य बन, पूर्ण वैराग्य होने पर संन्यास ले उद्धार कीजिये। हम भी पूर्ण श्रद्धा-भक्ति के साथ ऐसे संन्यासियों, ज्ञानियों, तत्वदर्शियों,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माओं, नेताओं के चरणों पर सिर नवाते हैं जो वर्तमान समय में देशहित के कल्याण के अर्थ अनेकान कष्ट सहन कर आत्म बलिदान कर रहे हैं परमात्मा करे दिन बदिन ज्ञानी विज्ञ नी स्त्री पुरुष बानप्रस्थ लेकर संन्यास आश्रम में पहुंच भारत के अन्यत्र योरुप, अमेरिका, जापान चीन आदि देशों में पहुँच स्त्रियाँ स्त्रियों को और पुरुष पुरुषों को सतोपदेश देकर जगत में वैदिक धर्म का प्रचार करें ताकि मतमतांतरों के नाना प्रकार के भेद के कारण जो नाना प्रकार के संग्राम हो कर रक्तपात हो रहे हैं वह बंद होकर सब एक साथ एक प्रकार से ईश्वर की प्रार्थना करते हुए एक ही मार्ग से जीवन यात्रा कर आनन्द सुख के साथ आयु व्यतीत करें।

१६—मृतक संस्कार—इसका कोई समय नियत नहीं और न मनुष्य को यह संस्कार अपने आप करना पड़ता है वरन् इसका करना मनुष्य के सम्बन्धियों का धर्म है। इसलिये उनको योग्य है कि जब मनुष्य मर जावे तब यदि स्त्री हो तो स्त्री और पुरुषहोतोपुरुष स्नानकरसकर, चन्दनादि लेपन करके नवीन वस्त्र धारण करावे और जितना मनुष्य का शरीर हो उतने ही घृत में ( यदि अधिक सामार्थ्य हो तो अधिक परन्तु आधा मन से कम किसी तरह न हो, चाहे मनुष्य कितनाही दरिद्री क्यों न हो, यदि उस मनुष्य के सम्बन्धी दरिद्री हों तो उस मुहल्ले के श्रीमानों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


योग्य है कि इसका प्रबन्ध करदें ) एक रत्ती कस्तूरी, एक माशा केशर और १ मन या आधमन घी के साथ सेर सेर भर अगर तगर और यथा योग्य चन्दन का चूरा भी डालें और शरीर के भार से छः वा आठ गुनी लकड़ी श्मशान भूमि में लेजाकर यथावत् रीति से वेदी बना कर वेद मंत्रों की विधि से मृतक का दाहकर्म करें फिर सब मनुष्य वस्त्रों को धोकर स्नान कर नगर में जाकर मृतक के घर पहुँचें, जो लीप पोत कर पहिले से स्वच्छ हो गया हो वहाँ स्वस्ति-वाचन, शांतिप्रकरण और ईश्वरोपासना कर उन्हीं मन्त्रों द्वारा गृह में सुगन्धित द्रव्यों सहित हवन करें। जिससे गृह में मृतक की दुर्गन्धि निकल जावे और उत्तम वायु गृह में प्रवेश करे कि जिससे सब मनुष्यों के चित्त प्रसन्न हों। इसके उपरांत तीसरे दिन मृतक का कोई सम्बन्धी अस्थि उठा कर एक स्थान पर रखदे। वर्तमान समय में केवल लकड़ियों में ही सब को रख जला देते हैं। जिससे देश में अकाल और मरी रोगों की बहुतायत हो गई। प्यारे बहिन भाइयो! टुक तो विचारो जब आप शरीर को लकड़ियों के साथ जलाते हो वह मांसादि जलकर वायु को दुर्गन्ध युक्त कर देता है और उन्हीं परमाणुओं से कालांतर में बादल बनते हैं, फिर मेह बरसता है, जिससे अन्न, फल, फूल होते हैं जिसको प्रतिदिन खाते हैं। नदियों, तालाबों, कुओं का भी पानी बिगड़ जाता है उसको पीते हैं, इन्हीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारणों से भारतवासियों की दिन पर दिन हीन दशा होती जाती है। उत्तम भोजन करने पर भी नाना रोग घेरे रहते हैं इसलिये अब आप इस हानि कारक प्रथा को दूर कीजिये देखिये अयोध्याकांड सर्ग ७६ श्लोक १६, १७, १८ में लिखा है कि जब श्रीमान् राजा दशरथ जी का देहान्त हो गया तो सरयू तीर पर ले गये। वहां चन्दन, अगर, साखू, काष्ट देवदारू आदि से उत्तम चिता बनाकर उसमें सुगंधित पदार्थ डाल ऋत्विक लोगों ने राजा को अपने हाथों से उठा उसमें लिटाया।

चन्दना गुरु निर्यासान् सरलं पद्मकं तथा।
देवदारुणिचहृत्यक्षे पयन्ति तथा परे॥ १६॥
गन्धानुच्चावचाश्नांस्तत्रगत्वाथ भूमिपम्।
तत्र संवेश्यामासुचितामध्येतमृत्विजः॥१७॥

इसके पीछे भरतजी ने चिता में अग्नि लगाई और ऋत्विक लोग पितृ यज्ञ के मंत्र पढने लगे और सामवेद-पाठी लोग सामवेद गाने लगे।

तदाहुताशनंदुत्वाजेपुस्तस्य तदृत्विजः।
जगुश्चते यथाशास्त्रं तत्र सामानिसामगाः॥

इसी प्रकार राजा पांडु और माद्री और परीक्षितादि के मृतक संस्कार चन्दनादि सुगंधित सामिग्रियों और वेद मन्त्रों द्वारा हुए थे। क्योंकि यजुर्वेद अ० १२। मं० ३८ में लिखा है कि जब शरीर से प्राण निकले तब शरीर को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जला राख कर पंचभूतों में मिला देवे और य० अ० ३९ मंत्र ३ में ईश्वर स्पष्ट आज्ञा देते हैं कि जो लोग सुगंध-युक्त सामग्री से मरे शरीर को जलाते हैं वे पुण्य सेवी होते हैं। और मन्त्र १३ में लिखा है कि जो सृष्टि विद्या को जान कर अन्त्येष्टि कर्म की विधि करते हैं वे सब काल में सब के मङ्गल देने वाले होते हैं। इस प्रकार मृतक शरीर जलाकर सब को सुखकी उन्नति करनी चाहिये।

प्यारे सुजनों! इस रीति के अनंतर जो दशगात्र, एकादशाह, द्वादशाह, सपिण्डी, मासिक, वार्षिक, गया, श्रद्धादि किया जाता है सो यह सब ठगई का जाल है क्योंकि वेदों में इन बातों का वर्णन लेशमात्र भी नहीं लिखा। साथ ही उस जीव का सम्बन्धियों से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। यह जीव अपने कर्मों के अनुकूल यमालय को जाकर गर्भाशय में आता है, जहां इसका सम्बन्ध होजाता है। इसके उपरांत 'यम' की कथा जो इन मिथ्याचारों के गुरुओं ने बनाई है, झूठी है। क्योंकि वेदानुकूल निम्न-लिखित पदार्थों का नाम 'यम' है :

षढद्यमा ऋषयो देवजाइति। ऋ० मं० १० सू० १६५ मं० १५। शकेमवानिजो यमम्। ऋ० मं० १ सू० ५ मं० १॥ यमाय जुहुता हिवः। यमह तज्ञा गञ्जत्यग्नि दूतो अरंकृता ऋ० मं० १० सू० १४ मं० १३ यमः सूपमानो विष्णु सम्रियमाणों वायः पूपमानः। यजु-र्वेद अ० ३८ मं० ५८। वाजिनं यमम्। ऋ० मं० ८ सू० २२। यमं मातरिश्वान माहुः ऋ० मं० सू० १६ मं० ४ ४६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( १ ) यहां ऋषियों को यम ( २ ) यहाँ परमेश्वर ( ३ ) यहां अग्नि ( ४ ) यहां वायु विद्युत और सूर्य को ( ५ ) यहां भी वायु को ( ६ ) और यहां परमेश्वर का नाम यम है। इस कारण पुराणों की कथा मिथ्या ही जानना और यम रूपी परमेश्वर के प्रसन्न होने के अर्थ वेदादि सत्यशास्त्रों को श्रवण करो और समय के अनुकूल आचरण करो, तब ही वह न्यायकारी परमेश्वर प्रसन्न होगा। उस समय आप नाना भांति के दुःख रूपी नरकों से बच सकते हैं न कि कद्दहा के सुफल बोलने पर। यह सब मिथ्या है धोके की टट्टी में शिकार खेलते हैं, इसलिये आप सत्यशास्त्रों को विचारो और बुद्धि से भी काम लो।

इसके उपराँत बहुधा जन मुर्दों को पाप निवृत्ति और स्वर्ग प्राप्त तथा मुक्ति का साधन समझ गङ्गा आदि नदियों में डाल देते हैं कि जिसमें जल विकारी हो जाता है और जो कोई उसको पीते हैं उनको नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं जिसके पाप का बोझ भी पुत्रादि पर होता है इस लिये गरुणपुराण के ऐसे लेखों पर धता भेजनी चाहिये, गङ्गादि में डालने से मुक्ति कभी नहीं हो सकती है। ( मुक्ति के साधन तीर्थ विषय में सविस्तार वर्णन किये गये हैं )।

इसके उपरांत धनिष्ठा, शतविषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती इन पाँच नक्षत्रों में पंचक होते हैं। यदि इनमें मरण हो तो गङ्गादि नदियों पर जाकर फूँक कर उनमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


डाल देते हैं, यदि किसी कारण से गङ्गादि पर न पहुंच सके तो उनकी चिता में गाड़ी के पहिये का कोई टुकड़ा वा सम्पूर्ण पहिया भी रखकर जला देते हैं और कहते हैं यह तो कभी न कभी गंगाजल में स्नान कर आया होगा इसके रखने से पञ्चकों का दोष जाता रहता है। इसके अतिरिक्त अग्नि में जलकर मरने या साँप काटने, कुएं में गिरने वा दब कर मरने, नदी में डूब कर वा बिजली के गिरने से और स्त्रियां के सौर में मरने आदि को अकाल मृत्यु कहते हैं, जिसके दो भेद हैं। प्रथम मृतक का शरीर उपस्थित हो, दूसरे में मृतक का शरीर न मिले। प्रथम दशा में 'नारायन-बलि' करते हैं अर्थात् प्रेत योनि से छुड़ाते हैं। दूसरी दशा में 'रामबलि' करते हैं अर्थात् जब मृतक का शरीर नहीं मिलता तो फिर नये सिरे से जौ के आटे का पुतला मृतक के शरीर के बराबर बनाते हैं उसको मरा हुआ नहीं जानते वरन् बीमार समझते हैं, फिर उसी समय उस मनुष्य के मरने की खबर मिली थी, एक सङ्ग घरके स्त्री पुरुष रोते पीटते चिल्लाते हैं अर्थात् उस समय उसको मरा जानते हैं, फिर नये सिरे से मृतक की सम्पूर्ण क्रिया करते हैं। ये सब बातें पोपजी ने अपने पेट भरने ही के अर्थ लिखी हैं, क्योंकि लोभ में मनुष्य माता पिता आदि को मार डालते हैं, सो इन्हीं वेद अर्थों को पलट कर धर्म को मार सर्व प्रकार से अपना ही पेट भरा। इस पर भी कल न पड़ी तो तेरहीं नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से भी गप्पा लगाया, मासिक और वार्षिक पर भी हाथ मारा। मुख्य प्रयोजन यह है कि जिस प्रकार हो सका लूटने में किसी प्रकार कमर नहीं की। अब सत्य ग्रन्थों को श्रवण करो तो गरुड़पुराण और नाशकेत और कर्म विपाकादि पाखण्डों से छूटो, नहीं तो इन्हीं गपोड़ों ने भारत को ग़ारत कर दिया, परन्तु शोक तो इस बातका है कि सब कुछ जानने पर भी विचार नहीं करते इसके उपरान्त जब कभी मृत्यु हो तो अत्यन्त शोकातुर होकर रोना पीटना आदि कर्म न करना चाहिये क्योंकि मरना जीना शरीर का धर्म है अर्थात् जो उत्पन्न होता है वह मरता है और जो मरता है वह उत्पन्न होता है। इसीको आवागमन कहते हैं।

---

# आवागमन

**ऋग्वेद**—मं० १ अ० ५। सू० २० में लिखा है।

'अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रे भिरासया। अकारि रत्न धातमः।'

अर्थात् मनुष्य जैसे कर्म किया करते हैं वैसेही जन्म और भोग उनको मिलते हैं। संसार में सुख दुःख भोगने के लिये बारम्बार उत्पन्न होना और मरना 'आवागमन' कहाता है उसी को फ़ारसी में 'तनासुख़' और अङ्गरेज़ी में 'टिरेन्समिग्रेशन आफ़ सोल' कहते हैं।

मान्यवरो! ऋषियों के जीवन चरित्र पाठ करने से जाना जाता है कि वह इन नियमों में किस प्रकार लिप्त थे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सारे भारतवर्ष की धर्म परिपाटी की केवल यही जड़ है। यह उन मनुष्यों का सच्चा मित्र है जो सदा सच्चे ही मार्ग की ओर ले जाते हैं। यदि हम विचार दृष्टि से देखें तो हम को ज्ञात हो जावेगा कि भारतवासी जन अन्य देश वासियों से धर्म कार्य में क्यों बढ़े हुए थे क्यों वह कहते थे कि 'अहिंसा परमो धर्मः'? क्यों वह अपने समान सब को जानते थे? क्यों वह नम्रता पूर्वक सब जीवों से बर्त्ताव करते थे? किस कारण सांसारिक सुखों को 'हेच' (तृणवत्) समझते थे?

इसका यही कारण था कि उनके पास यह सच्चा हितैषी था जो प्रति समय शिक्षा देता था कि हे सांसारिक सुखों की गहरी नींद में सोने वाले मनुष्यो! सचेत रहो तुम केवल इस संसार में परीक्षा के लिये उत्पन्न किये गये हो और कुछ समय पश्चात् आपको न्यायकारी परमात्मा के पास फिर जाना होगा जो न्यायपूर्वक धर्मतुला में तुम्हारे कर्मों को तोलेगा, यदि कुछ भी हलचल हुए तो फिर पता कहां? फिर भी नाना लोकों में उत्पन्न होकर सुख और दुःख उठाते रहोगे। इसी कारण देखिए मनु० अध्याय १२ श्लोक २३ में लिखा है कि मनुष्य का आवागमन पाप और पुण्य के कारण होता है, इस कारण पुण्य की प्राप्ति का यत्न करना चाहिये। इसी अ० के २९ श्लोक में लिखा है कि कर्मों के कारण मनुष्य आवागमन में फंसा रहता है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्लोक ४० में कहा है कि सत्वगुणी देवरूप, रजोगुणी मनुष्य रूप और तमोगुणी पशुयोनि को प्राप्त होते हैं, यही आवागमन है। श्लोक ७४ में लिखा है कि दुर्जन पुरुषों को निन्दित कर्म करने से निन्दित योनियों में जन्म लेने पड़ते हैं और विष्णुस्मृति अ० २० श्लोक २९ में लिखा है कि जिसका जन्म हुआ है वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका अवश्य जन्म होगा। इस जन्म मरण के रोकने की सामर्थ्य किसी को नहीं। इसी अ० के श्लोक ४३ में लिखा है कि कर्मों के अनुसार बारम्बार शरीर धारण करना पड़ता है और श्लोक ५० में लिखा है कि जैसे पुराने वस्त्र को त्याग कर नवीन वस्त्र को धारण करते हैं वैसे ही जीव पुराने शरीर को त्याग अपने कर्मों के अनुसार नवीन शरीर को धारण करता है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद अ० अष्टक १ व० २३ मं० ६ में लिखा है कि—

असुतोते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राण मिहानो धेहि भोगम्।
ज्योक पश्येम सूर्यमुवरन्तयनुमते मृडयानी स्वस्ति॥
पुनर्नो असं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी नुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्व ददातु पुनः पूषा मथ्या ३ या स्वस्ति॥

हे सुखदायक परमेश्वर! आप कृपा करके पुनर्जन्म में हमको उत्तम नेत्रादि सब इन्द्रियां दीजिये तथा प्राण अर्थात् मन बुद्धि चित्त और अहंकार बल पराक्रम आदि युक्तशरीर पुनर्जन्म में कीजिये। इस जन्म और परजन्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में हम लोग उत्तम भोगों को प्राप्त हों तथा आप की कृपा से सूर्य लोक प्राण और आपको विज्ञान् तथा प्रेम से सदा देखते रहें। हे अनुमते! सब जन्मों में हम लोगों को सुखी रखिये जिससे हम लोगों का भला हो।

हे सर्व शक्तिमान! आप के अनुग्रह से हमारे लिये बारम्बार पृथ्वी, प्राण प्रकाश, चक्षु, अंतरिक्ष, स्थानादि अवकाशों को देते रहें। दूसरे जन्म में सोम अर्थात् औषधियों का रस हमको उत्तम शरीर देने में अनुकूल रहे तथा पुष्ट करने वाला परमेश्वर कृपा करके सब जन्मों में हमको सर्व दुःख निवारण करने वाली पथ्यरूप स्वस्ति को देवे और य० अ० ४ मन्त्र १५ में लिखा है कि हे परमेश्वर! जब जब हम जन्म लेवें तब तब आप हमको उत्तम इन्द्रियां प्रदान कीजिये और हमारे शरीर का पालन कीजिये। निरुक्त अ० १३ मं० १९ में लिखा है कि मैंने अनेक बार जन्म धारण किया, हज़ारों गर्भाशयों का सेवन किया, अनेक माताओं का दूध पिया। इसकी पुष्टि योगशास्त्र में पातंजलि मुनि ने की है। अमरीका के एमसन नामक प्रसिद्ध विद्वान् ने एक बालक की ओर इशारा करके कहा है कि इस बालक के भोले भेष पर मत फूलो, इसकी अवस्था हज़ारों वर्ष की है। इसके अतिरिक्त प्रोफ़ेसर मैक्समूलर ने कहा है 'जीव जैसा कर्म करेगा वैसा ही भविष्य में पावेगा'।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्लेटो पूर्णरूप से पुनर्जन्म को मानता था। इसके अतिरिक्त बालक जन्म लेने पर भी वस्तुओं को देख २ कर प्रसन्न होकर हाथ पैर फेंकते हैं और अम्मा २ शब्द शीघ्र कहने लगते हैं। ( जिससे प्रकट होता है कि इसका कुछ कुछ ज्ञान उनको पूर्व जन्म से है ) इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि जीवों का बराबर आवागमन होता रहता है। गीता में लिखा है कि आत्मा को शस्त्र छेद नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सक्ती, जल गला नहीं सकता, पवन सुखा नहीं सकता वह निराकार मन से परे है फिर भला बहुत दिनों तक शोक रखना, नाना भांति से रोदन करना व्यर्थ है जिससे क्लेश के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। सज्जनो मृत्यु का कोई समय नियत नहीं न जाने कब आजाय और उसके आने पर किसी प्रकार के उपाय से लाभ नहीं। हां परमेश्वर की आज्ञानुसार हम सब कार्य करने लग जांय तो अवश्य ही न्यून अवस्था में इस प्रकार मृत्यु न हो। इसके उपरांत परमेश्वर की आज्ञापालन को ही धर्म मार्ग कहते हैं, वही मरने पर साथ जाता है, वही प्रति समय सहायता करता है, इसलिए जीवन भर धर्म पर चलना अभीष्ट है।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# धर्म

धर्म के अर्थ धारण करने के हैं अर्थात् 'वोधियते दधाति वा सधर्मः' जो धारण किया जाय वा धारण करे उसको धर्म कहते हैं। महाभारत शांति पर्व में भी ऐसा ही लिखा है जिसका सम्बंध आत्मा से है जो ज्ञान और आनन्द का भण्डार है जो प्रत्येक पदार्थ में अविच्छिन्न रीति पर सदा एक रस रहता है। जैमिन ने अपने मीमांसा दर्शन के अ० १ व० १ सूत्र में लिखा है जिस कर्म में सर्व नियन्ता सर्वान्तर्यामी परमेश्वर की प्रेरणा हो वही धर्म है। इसके अतिरिक्त महात्मा कणादि ने वैशाषिक शास्त्र में लिखा है जिस से शारीरिक और पारमार्थिक सुखों की उन्नति हो उसको धर्म कहते हैं जैसा कि 'यतोभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः सधर्मः' और लिङ्गपुराण पूर्वार्द्ध अ० १० में लिखा है कि उत्तम कर्म को धर्म और निकृष्ट को अधर्म कहते हैं अर्थात् जिस में इष्ट फल की प्राप्ति हो उसका नाम धर्म और जिससे अनिष्ट फल मिले उस को अधर्म कहते हैं।

धर्म एक सीधा मार्ग है जिस पर चल कर मनुष्य मनुष्यता के आनंदों को प्राप्त करता है, इस लिये जन्म से मरण पर्य्यन्त चाहे जिस दशा में रहे कुछ करे धर्म बन्धन से पृथक् नहीं हो सकते अर्थात पूजा, पाठ वा संस्कारों के अतिरिक्त खाना पीना, आना जाना, लेना देना, पढ़ना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पढ़ाना इत्यादि सब कुछ धर्म की ज़ंज़ीर में जकड़ा हुआ है; इस हेतु मनुष्य धर्म छोड़ कर सुख नहीं उठा सकता, इस लिये धर्म ही हमारा जीवन सर्वस्व है। प्राचीन आर्य्य धर्म को केवल मुक्ति का ही साधन नहीं मानते थे, किन्तु अभ्युदय का विशाल और रमणीक मन्दिर भी इसी की बुनियाद पर खड़ा करते थे। उनका अटल विश्वास था कि धर्म के बिना मनुष्य केवल मुक्ति का ही अनधिकारी नहीं होता किन्तु वास्तविक अभ्युदय से भी वञ्चित रहता है। क्योंकि बिना धर्म के कोई पदार्थ भी स्थित नहीं रहता इस लिये धर्म वह मार्ग और वह तत्व है जो कभी नहीं बदलता। इसी पर चलने से मनुष्य को अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि होती है, इस लिये धर्म ही को सब से उत्तम माना है। सच पूंछो तो बिना इसके मनुष्य मनुष्य नहीं कहाता। धर्म कल्प वृक्ष है जो इस संसार में स्वर्ग धाम बना देता है। धर्म ही वह अपूर्व औषधि है जिसके पान करने से सम्पूर्ण पाप रूपी रोग भाग जाते हैं। संसार में विद्या सम्पत्ति और प्रभुता यह तीन बड़ी शक्तियां मानी हैं परन्तु बिना धर्म के यह भी संसार को उजाड़ श्मशान तुल्य बना देती है इस लिये वेदादि धर्म ग्रन्थों, ऋषि और मुनियों के जीवन चरित्रों पर ध्यान देने से स्पष्ट प्रकट होता है कि इस संसार में सुख प्राप्त करने और मरने के पश्चात् सुख से रहने का मुख्य कारण धर्मानुसार चलना ही है क्योंकि संसार के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धनादि सब पदार्थ यहीं रहजाते हैं अर्थात् स्त्री, पुत्र, शरीर, सम्बन्धी, मित्र, धन, पशु और पक्षी इत्यादि ये सब प्राण यात्रा के समय पृथक् हो जाते हैं और उसको ऐसे छोड़ देते हैं जैसे पक्षी फलहीन वृक्ष को; फिर उसके कमाये हुये धनका कोई और ही स्वामी हो जाता है और उसके शरीर की हड्डी, रुधिर, मांस को अग्नि भस्म कर देता है, परन्तु जीव के साथ उसका धर्म ही जाता है जैसा मनुस्मृति अ० ४ श्लोक २२९ में लिखा है और महाभारत में कहा है।

नजातु कामान्नभयान्नलोभाद्धर्म्मंत्यजीवितस्यापिहेतोः ।
धर्मोनित्यः सुखदुखेत्वनित्ये जीवोनित्यो हेतुरस्यत्वनित्यः॥
धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोवधीत् ॥

चाणक्य ऋषि ने भी स्पष्ट आज्ञा दी है, लक्ष्मी, प्राण, शीशमहल एक दिन चले जाते हैं और अन्त को संसार भी स्थिर नहीं रहता किन्तु केवल एक धर्म ही पूरा साथ देता है। इस लिये वही सब का सच्चा मित्र कहाता है, जैसा 'धर्मोमित्रंमृतस्य च'। ऐसा ही अनुशान पर्व अ० ११० में बृहस्पति जी और शुक्रनीति अ० ३ श्लोक ९ में और बाल्मीकीय रामायण आरण्यकाण्ड स० ९ में सीता महारानी ने रामचन्द्र महाराज से कहा है कि सुख का मूल धर्म ही है। महात्मा भीष्म का बचन है कि जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश करता है उसी भाँति धर्म पापों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट करता है। द्रोणाचार्य और कृष्ण महाराज कहते हैं कि धर्म से जय होती है । परशुराम और युधिष्ठिर महाराज कहते हैं कि आपत्ति में भी धर्म को न छोड़ना चाहिये। इस लिये जो अधर्म को छोड़कर सब प्रकार से धर्म का आचरण कहते हैं उनके लिये पृथ्वी आदि सृष्टि के सब पदार्थ मंगलकारी होते हैं। जैसे यजु० अध्याय ३५ मं० ९ में कहा है।

कल्पन्तान्ते दिशस्तुभ्यमापः शिवातमास्तुभ्भ भवन्तु सिंधवः।
अन्तरिक्षंशिवं तुभ्यं कल्पन्ते दिशा सर्वनः॥

अथर्ववेद में लिखा है कि सब मनुष्यों को धर्म का सहारा ले भूत, भवष्यित् और वर्त्तमान का विचार कर सब काल में सुरक्षित रह यशस्वी बनना चाहिये, इसी वेद आज्ञा पर चलने वाले स्त्री पुरुष धर्मात्माजन किसी प्राणी का अनिष्ट चिन्तन नहीं करते देखो धर्मात्मा युधिष्ठिर ने अपने भाइयों सहित जीवन पर्य्यंत दुःख उठाकर भी उनके मनमें उन मनुष्योंसे भी जो रात दिन उनको सताते रहे बदला लेने का ध्यान नहीं किया। ध्रुव की माता को विमाता ने नाना प्रकारके दुख दिये परन्तु उसने कभी सौत का अनिष्ट चिंतन नहीं विचारा। रानी कौशिल्या ने (जिनके पुत्र राजा रामचन्द्र को केकई ने बनोवास कराया ) कभी केकई के लिये विपरीत भाव उत्पन्न नहीं किये। महात्मा बुद्ध अन्यों के दुःखों को देखकर अपना सुख त्याग बन को चल गये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हज़रत ईसा अपने देशवासियों की भलाई के लिये शूली पर चढ़ गये। महात्मा सुक़रात ने अपने धर्म का प्रचार करते हुए प्रसन्नता के साथ ज़हर के प्याले को पीकर अपने प्राणों को दे दिया। महात्मा लूथर ने मतवादियों के अत्याचार को जीवन भर सहन किया। धर्मात्मा मेज़नी अपने स्वदेशियों के दुःख की आग में पतंग की भाँति जल कर भस्म होगया। उन्नीसवीं सदी में संसार के उलटे प्रवाह को देख महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अनेकान कष्टों को सहन कर अन्त को जगत के उपकार में अपने प्राणों की आहुति दी। इसके पीछे इसी यज्ञ में पं० लेखराम और श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने २ जीवनों की आहुतियाँ दीं। इसलिये ऋग्वेद में स्पष्ट आज्ञा है कि मनुष्य को धर्म के विरुद्ध कोई काम न करना चाहिये और अथर्व कां० ५ सू० ३० मन्त्र ६ में लिखा है कि जो मनुष्य निर्भय होकर धर्म करता है वह अपकीर्ति से बचकर यश प्राप्त करता है। इसके उपरांत यजुर्वेद अ० २६ मन्त्र २ में कहा है कि प्राण आदि पदार्थों और सब साधनों सहित धर्म का आचरण करना चाहिये। महात्मा प्रह्लाद ने कहा है कि कुमार अवस्था ही से भगवद् भक्ति सम्बन्धी धर्मों में लग जाना चाहिये। मनु महाराज ने कहा है धर्म से धन, सांसारिक सुख और ईश्वर की प्राप्ति होती है इसलिये प्रत्येक को योग्य है कि अन्य सब बातों को त्याग कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धर्म का ही आचरण करे; परन्तु बहुधाजन अधर्म से भी बढ़ती मानते हैं। प्यारे भाइयो और सुयोग्य महिलाओ! मनुजी का कथन है कि अधर्म करने वाले शीघ्र बढ़ कल्याण को पाते हैं फिर अन्त को मूल सहित नष्ट होजाते हैं जैसा अ० ४ में कहा है।

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नःन जयति समूलस्तु विनश्यति॥

इसलिये अथर्ववेद कां० ६। सू० ६३। मन्त्र २ में कहा है कि मनुष्यों को योग्य है कि सदा धर्म में प्रवृत्त रह कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करे जिससे विश्राम के पीछे और पुनर्जन्म में भी उत्तम शरीर और इन्द्रियां प्राप्त करके सुख भोगते रहें इसलिये श्रीमद्भागवत कां० ११ अ० १८ में लिखा है कि मनुष्यों का कोष धन धर्म ही है जैसा "धर्म इष्टं धनं तृणाम्" इसलिये महाभारत में व्यास महाराज ने कहा है कि काम के वश होकर डरकर लोभ में जाकर जीवन के हेतु से कभी धर्म नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि जीव के साथ धर्म का नित्य सम्बन्ध है।

देखिये धर्म के सहारे ही सूर्य तप रहा है, पृथ्वी अपनी कील पर घूमती है। धर्म से बेड़ा पार होता है धर्मात्मा ही संसार के सुखों को भोगते हैं, धर्म से ही मनुष्य कहाता है और इसी धर्म के बल से मनुष्य को ऋषि मुनि महात्मा देवता आदि की पदवी मिलती है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम ही से विजय होती है। धर्म से ही शरीर आरोग्य और बुद्धि प्रबल होती है। धर्मात्मा के ही सत्संकल्प पूर्ण होते हैं, धर्म से ही स्वर्ग के सुख और मोक्ष पद अर्थात् इस लोक और परलोक के महान् सुख मिल सकते हैं। धर्मात्मा भीष्म ने कहा है कि धर्म ही इसलोक और परलोक में सुख का कारण है उसी से जय प्राप्त होती है और अधर्मी पुरुषों को सदा दुःख उठाना पड़ता है। बृहस्पति जी ने कहा है जैसे सूर्य अन्धकार नाशक है उसी प्रकार धर्म पापों को नष्ट करता है। कुबेर जी ने कहा है कि जो अधर्म करता है वह नष्ट होजाता है। द्रोणाचार्य ने कहा है कि धर्म ही जय का कारण है। संजय ने कहा कि मनुष्यमात्र धर्म को न त्यागें। परशुराम जी ने कहा है कि धर्म ही उत्तम पदार्थ है इसी कारण विद्वान् अर्थ को छोड़ और हानि उठाकर धर्म को करते रहते हैं। बाल्मीकजी ने कहा है कि धर्म सम्पूर्ण वस्तुओं से बढ़कर है युधिष्ठर ने कहा है कि धर्म ही आपत्काल में सहायक होता है। मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है कि धर्म से पापों का नाश होता है और धर्मात्मा मित्रों सहित स्वर्ग को जाता है इसलिये वेदोक्त न्याय से रहित पक्षपात को छोड़ सत्य का आचरण करना ही कर्तव्य कर्म है जिससे मन सदा पवित्र रहता है और मन के पवित्र होने से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं वह सत्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव तथा सृष्टिक्रम, प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, असम्भव और अभाव इन आठ प्रमाणों तथा अच्छे सज्जनों के आचार और मन के अनुकूल जान कर उसका निश्चय कर कार्य करे जैसा यजुर्वेद अ० १७ मन्त्र ५८ में लिखा है।

वदाकूतात्समसुस्रोभृदो वा मनसो वास भृत चक्षुषो वा तम।
नुप्रेत सुकृताहु लोकं यत्रऽऋगेयो जग्मुः प्रथमाजः पुराणाः॥

ऋग्वेद में लिखा कि मनुष्यों को धर्म के विरुद्ध कोई काम न करना चाहिये इसलिये पुरुषार्थ कर उन्नति के अर्थ वेदानुकूल याज्ञवल्क्य, व्यास इत्यादि के मुताबिक महाराज ने जो ( धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध ) यह धर्म के दश लक्षण ( अर्थात् खम्भे जिन पर धर्मरूपी मकान खड़ा है ) बतलाये हैं उनका पालन करना चाहिये। यह बात आप अच्छे प्रकार से जानते हैं कि जब तक जिस मकान के खम्भे ठीक बने रहते हैं वह मकान ठीक बना रहता है और उसके रहने वाले सुख और आनन्द से रहते हैं और जब खम्भे ठीक नहीं रहते तो वह गृह गिरकर चकनाचूर होजाता है और उसमें रहने वाले मनुष्य नाना प्रकार के कष्टों को भोगते हैं अतएव यदि आपको सुख एवं शांति से जीवन व्यतीत करना है तो उपरोक्त दश लक्षणों को अच्छे प्रकार सेवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सुख एवं परमगति की प्राप्ति करनी चाहिए जैसाकि मनु अ० १० श्लोक ६३ में लिखा है।

दश लक्षणानिधर्मस्य ये विप्रः समधीयते।
अधीत्यछानुवर्तन्ते यान्ति परमांगतिम्॥

इस हेतु आपके कल्याण के लिये मैं धर्म के लक्षणों की व्याख्या करता हूँ आशा है आप उन पर चल यथार्थ सुख का अनुभव कीजियेगा।

१—धृति—किसी कार्य को प्रारम्भ करने के पीछे नाना प्रकार की आपत्तियों को सहन कर कार्य को पूर्ण करने का नाम धृति या धैर्य है, इसी को धीरज कहते हैं। जिन स्त्री पुरुषों में यह गुण होता है उनको धीर पुरुष कहते हैं। यह धर्म की प्रथम श्रेणी है जो इस पर चढ़ जाता है उसको अन्य श्रेणियों पर चढ़ने में सहायता मिलती है। जिन स्त्री पुरुषों में यह गुण होता है वे संसार की काया को पलट सकते हैं क्योंकि उनका मन समुद्र की भांति अथाह और गम्भीर होता है जिसके कारण वह बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी हिमालय की भाँति अचल रहते हैं उन्हीं की गणना संसार के वीरों में होती है जिनका नाम सब आदर सत्कार के साथ लेते हैं उन्हीं के नाम इतिहासों में अजर अमर होजाते हैं देखो जब मानसिंह ने बरसात के दिनों में काबुल पर चढ़ाई की उस समय अटक नदी धारा प्रवाह के साथ बह रही थी पार जाने का कोई वसीला न था उस समय सिपाहियों ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि महाराज इस समय पार जाना दुस्तर है यह सुन मानसिंह ने अपना घोड़ा आगे डाल दिया अंत को सारी सेना धीरता के सहारे नदी पार होगई। एकबार बाबर ने इब्राहीम लोदी पर चढ़ाई की उस समय एक नजूमी ने बादशाह से कहा कि मङ्गल सामने है आप चढ़ाई न करें वरन् अपकी हार होगी उसने कुछ न सुना और ईश्वर का नाम लेकर धीरता के साथ चढ़ाई करदी। मैदान बाबर के हाथ रहा जिसके कारण मुगलों के राज्य की नीव भारत में जम गई। इसी प्रकार महाराना प्रतापसिंह ने २७ वर्ष महान कष्ट सहन किये पर उस धीर वीर के मन में तनक भी तबदीली न हुई क्योंकि जलती आग को उलट देने पर भी उसकी ज्वाला ऊपर ही को जाती है न कि नीचे को। हजरत ईसा ने जेरुशलीम में अधर्म फैला देखकर उसके नष्ट करने का इरादा कर अनेकान दुःखों को सहन किया अन्त को शूली पर चढ़ प्राणों को समर्पण कर एक जाति को जीवित कर दिया। स्वामी दयानद सरस्वती ने संसार को उलटे प्रवाह बहते हुये एवं नाना दुःखों से पीड़ित देख धैर्य्य की बिलक्षण ज्योति के सहारे उपरोक्त प्रवाह को रोक सच्चे वैदिक मार्ग को दृष्टिगोचर करा धर्म वेदि पर वलिदान कर दिया। मिस्टर क्लायु ने इसी गुण के प्रताप से भारत में अँग्रेज़ी अमलदारी की नींव जमादी। नैपोलियन ने इसी गुण विशेष के कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


योरोप के देशों के नरेशों को कम्पायमान कर दिया। सच तो यह है कि संसार सागर के पार होने के लिये जो स्त्री पुरुष धैर्य्य रूपी नौका पर सवार होते हैं वह इस भवसागर से शीघ्र पार हो जाते हैं। क्योंकि ऐसे स्त्री पुरुष क्रोध नहीं करते और न इन्द्रियों के विषय में फँसते हैं जिस प्रकार समुद्र अपनी मर्य्यादा को कभी नहीं छोड़ता उसी भांति धीर पुरुष धीरता को कभी त्यागन नहीं करते जिसके कारण वह संसारी पुरुषों से न डर अपनी धर्म रूपी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है चाहे सूर्य्य इधर से उधर होजाय परन्तु वह धैर्य्य को नहीं छोड़ते इसलिये सब स्त्री पुरुषों को धैर्य्य धारण करने का अभ्यास करना चाहिये।

२-क्षमा—शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक दुःख की प्राप्ति में क्रोध एवं हिंसा न करना क्षमा कहाती है। क्षमा से उत्तम संसार में कोई वस्तु नहीं इसी से लक्ष्मी की शोभा और विद्या की महिमा प्रकट होती है। श्रीमद्भागवत के ९ स्कंध के १५ अध्याय में महाराजा युधिष्ठिर ने द्रौपदी देवी से कहा है कि क्षमा ही सत्य, क्षमा ही दया, क्षमा ही तीर्थ रूप है। क्षमावान स्वर्ग में जाकर सुख भोगते हैं-इसलिये तुम पृथ्वी के समान क्षमा को धारण करो-और उसी के समान उत्तन अन्न, फल, फूल आदि देकर परोपकार करो-क्षमा से शत्रु मित्र बन जाते हैं इसी हेतु भर्तृहरि ने कहा है कि जिसके हाथ में क्षमा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रूपी खड्ग है उसका शत्रु क्या कर सकते हैं। इससे सारे कार्य्य पूर्ण होते हैं- परन्तु प्रति समय क्षमा करना ठीक नहीं। विशेष कर क्षत्रियों को बहुत सोच समझ कर कार्य्य करना चाहिये। क्योंकि तेज न रहने से कायरता प्रकट होती है फिर वह क्षमा, क्षमा नहीं कहाती इसलिये शरीर में बल हो, धन हो, सम्पत्ति हो, उस समय क्षमा शोभा देती है-इस हेतु समय को देख उचित प्रकार से क्षमा से कर्य्य करे अर्थात् छोटे २ अपराध हो जांय तो क्षमा करना चाहिये और माता, पिता, गुरु, राजा इत्यादि ही बड़े जनों में क्षमा न हो तो फिर कार्य्य चलाना कठिन है। इसलिये समय को देख क्षमा शांति और सहनशीलता से काम लेना उचित है साधुजन अक्रोध से ही क्रोध को जीतते हैं। अर्थात् क्षमा बलहीन का बल और बलवान की शोभा है इसलिये क्षमा को धारण करना योग्य है क्योंकि शांति से अधिक कोई तप नहीं। जैसाकि कहा है 'शांति तुल्यंतपोनास्ति' ॥ इसलिये यदि तुम जगत में उच्च पद प्राप्त करना चाहते हो तो संसार के जीवों के साथ क्षमा के साथ व्यवहार करो क्योंकि पृथ्वी के समान क्षमा करने वाले हो पूरे महात्मा कहलाते हैं।

३-दम- मनको विपरीत कर्मों से हटाकर सदा अच्छे कर्मों में लगाना ही दम कहाता है। मन अन्तन्त वेग से गमन करता है, वह बड़ा चंचल है कभी धन के उपार्जन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में डूबता है कभी लड़ाई झगड़े पर उद्यत होता है कभी सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुओं को छोड़ कर विरक्त बनता है। कभी स्त्रियों पर आसक्त होता है, कभी उनको माता के तुल्य मानता है, कभी जंगलों में रहना स्वीकार करता है, कभी संसार के आनन्दों को छोड़ कर ऋषि मुनि बनना चाहता है, इसी के कारण बड़े बड़े महात्मा, राजा, महाराजा और विद्वानों ने अपयश प्राप्त किया है। इसी कारण वही ऋषि, मुनि और देव हैं जिन्होंने इस मनको वश में कर लिया है मनका एकाग्र करना ही सबसे बड़ी तपस्या है, क्योंकि इसके जीतने से सब इन्द्रियां निर्मल हो जाती हैं और फिर कल्याण मार्ग दृष्टि आता है। मनुस्मृति अ० २ श्लोक २ में भी ऐसा ही लिखा है और गीता में श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है कि बिना मन के संयम किये सब आचरण मिथ्या हैं यह मनुष्य का शरीर रथ, मन रथवान अर्थात् सारथी और इन्द्रियां घोड़े हैं। यदि यह रथवान बुद्धिमान है तो इन इन्द्रियरूपी घोड़ों को अपने आधीन रख सकता है अन्यथा नहीं। देखो य० अ० १६४ मन्त्र ३ में लिखा है।

सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीषुभिर्वाजिनइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

परमेश्वर उपदेश करता है कि मनकी दो प्रकृति हैं। एक तो वह जब किसी वस्तु पर आसक्त होता है तो अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इन्द्रियरूपी घोड़ों सहित उसकी तरफ़ दौड़ता हुआ चला जाता है उसके अनुसार मूर्ख कार्य करते हैं और कष्ट भोगते हैं। दूसरी वह जो इन्द्रियरूपी घोड़ों को अपने २ विषय से हटाकर अपने वश में कर सुख भोगते हैं। वह विद्वान हैं। इसलिये अ० कां० ६ सू० १० में स्पष्ट आज्ञा है कि जिस प्रकार मनुष्य पशु आदि को शिक्षा देकर सुमार्ग पर चलाता है उसी भाँति जितेन्द्रिय पुरुष मनको वश करके शुभ मार्ग में अपने को चलाये। श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन के प्रश्न करने पर बतलाया है कि अर्जुन! मन यथार्थ में बड़ा चंचल है इसके जीतने के लिये अभ्यास और वैराग्य यह दो ही उपाय हैं अर्थात् प्रति दिन प्रति क्षण मन के कर्तव्यों को देखते रहें, वैराग्य से संसारी कार्य्यों में धर्मानुकूल चलें और सुख भोगें; परन्तु विषयों में फंस कर आप नष्ट न हो ऐसा विचार कर कार्य करने वाले स्त्री पुरुष मन को अपने आधीन कर लेते हैं फिर वह संसार में विजय प्राप्त कर आनन्द भोगते हैं। विद्वानों का कथन है।

१—मन वश में करने से सदाचार यज्ञ पूर्ण होता है।

२—चंगा मन होने से प्रति समय घट में आनन्द की लहर प्रवाहित होती रहती है।

३—पवित्र मनहीं धर्म के तत्व को जान उस पर आसक्त होता है तब ही संसार की असारता से लाभ उठाकर असीम आनंद भोगता है, अतः दम रूपी धर्म को धारण करना योग्य है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



४-अस्तेय—नाम है चोरी करने का और चोरी कायिक, वाचिक, मानसिक तीन प्रकार की होती है, कायिक किसी के धन स्त्री आदि पदार्थ को लेलेना। वाचिक अर्थात् वचन का चुराना यह दो प्रकार का होता है। एक तो सत्य का छिपाना उसे कहते हैं कि हम किसी बार्त्ता को अच्छे प्रकार जानते हैं और जब हम से कोई पूछे आप इस विषय में क्या जानते हैं तो हम किसी कारण से कहदें कि हम कुछ नहीं जानते। दूसरे जान बूझ कर उलटी कहना। तीसरे मानसिक चोरी अर्थात् मनके सिद्धांत के विरुद्ध कार्य्य करना। इन प्रकार की चोरियों का सदा त्यागना उचित है क्योंकि तीनों प्रकार की चोरी के त्याग से ही आत्मसंयम होता है जो सुख का कारण है।

५ शौच—अर्थात् पवित्र रहना और पवित्रता दो प्रकार की है-वाह्य और आभ्यांतर। वाह्य अर्थात् शरीर को स्नान वस्त्र और गृहादि को सब प्रकार से शुद्ध रखना और आभ्यान्तर ईश्वराराधन तथा विद्याध्ययन कर विषय वासना और कामादि दोषों से मनको शुद्ध रखना। इस विषय में मनुजी ने लिखा है कि शरीर आदि बाहरी वस्तु मिट्टी पानी आदि से शुद्ध होती हैं और मन सत्य और विद्या तप से, आत्मा और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध और पवित्र होती है जैसाकि-



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येनशुद्ध्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मां बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥

शरीर और वस्त्रादि के शुद्ध रखने से स्वास्थ ठीक रहता है उससे मन प्रसन्न और मन प्रसन्न रहने से कार्य्य की सिद्धि होती है । स्वच्छता का प्रभाव अन्यों पर भी पड़ता है इस लिये बच्चों आदि को सदा स्वच्छ रखने की परिपाटी अपने अपने घरों में प्रचलित करनी चाहिये । प्रातः शौच स्नानादि के पश्चात् भोजन करने की टेव डालने का स्वभाव बनाना चाहिये । तदुपरांत भीतरी शुद्धि अर्थात् मन, बुद्धि आत्मा के पवित्र रखने का पूरा यत्न करता रहे क्योंकि इनकी शुद्धि बिना शरीर की शुद्धिसे विशेष लाभ नहीं होता । यदि आप शुद्धि से लाभ उठाना चाहते हैं तो मन को पवित्र बनाइये और श्रद्धावान होकर इन्द्रियां के संयम द्वारा ज्ञान से शांति लाभकर बुद्धि को भी पवित्र एवं स्थिर कीजिये जैसा श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है ।

श्रद्धावान लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानंलब्ध्वापरां शान्ति मचिरेणाधि गच्छति ॥

इसलिये मन बुद्धि से पवित्र कर्म करने का अभ्यास कर इस लोक और परलोक में सुख की प्राप्ति करनी चाहिये ।

६-इन्द्रिय निग्रह—यह शरीर इन्द्रियों के समूह से बना है और सब दस इन्द्रियां हैं जिनमें वाणी, हाथ, पांव, लिङ्ग, गुदा यह कर्म इन्द्रियां और आँख, कान, नाक,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रसना और त्वचा अर्थात् खाल यह पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं जिनमें से हम वाणी से बोलते हैं हाथ से काम करते हैं पर से चलते हैं, लिङ्ग से पेशाब, गुदा से मल त्यागते, आँख से देखते हैं, कान से सुनते, नाक से सूँघते हैं, रसना से चखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं।

अर्थात् शरीर में कर्म करने और ज्ञान प्राप्ति के अर्थ ईश्वर ने यही इन्द्रियां बनाई हैं। इनमें ज्ञान प्रधान है इस हेतु ज्ञान के अनुसार सदा कार्य करना अभीष्ट है देखो शरीर रूपी रथ है जिसमें जीवात्मा इसका स्वामी है जो मोक्ष की इच्छा करता है और दश इन्द्रियां इसके घोड़े हैं और मन इन घोंड़ों की बागडोर है और बुद्धि या विवेक इसको लेजाने वाला है इन्द्रियों का विषय ही रथ लेजाने का मार्ग है। जिसमें ज्ञानी पुरुष बुद्धि एवं विवेक से इन्द्रियों की लगाम को मन के द्वारा अपने हाथ में पकड़ कर विषय रूपी मार्ग में इस प्रकार से चलाते हैं जिसके कारण वह मुक्ति प्राप्त कर आनन्द को पाते हैं और जो मनुष्य मन के आधीन होकर इन्द्रियों के सहगामी होजाते हैं वह अधिक दुःख उठाते हैं जिस प्रकार विष विष के मिलने से अधिक प्रचंड होजाता है उसी भांति कुसंस्कार और कुसंगति से इन्द्रियाँ अधिक विषैली होजाती हैं इसलिये जिस प्रकार मुख में जीभ को दबाकर वेद मंत्रादि पवित्र बचन बोलते हैं उसी प्रकार इन्द्रियों को वश में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके अपने सब मलों को धोकर स्वस्थचित्त होकर कार्य्य करना उचित है जैसाकि अ० कां० ११ सू० १ में लिखा है। इन्द्रियों द्वारा विषयों के ज्ञान से बाहिरी और भीतरी दो प्रकार की वृत्तियां उत्पन्न होती हैं उनमें बाहिरी वृत्ति भीतरी वृत्ति के आधीन होती है। इसलिये भीतरी वृत्ति को उत्तम बनाना परम आवश्यक है क्योंकि बिना भीतरी वृत्ति के सुधार के बाहर का बनावटी व्यवहार भले प्रकार दबाने और बनाने पर भी प्रकट होजाता है इसलिये जिस प्रकार सूर्य और पृथ्वी लोक ईश्वरीय नियम से अपनी २ गति से घूम, वृष्टि और अन्नादि से उपकार करते हैं इसी प्रकार मनुष्य अपनी इन्द्रियों को नियम में रख कर अपराधों से बच कर भवसागर से पार हो। गीता में लिखा है इन्द्रियों के स्वाद भोगने से बारम्बार जन्म मरण के चक्र में आता रहता है।

विषयेन्द्रिय संयोगाद्यत्तदग्र मृतोपमम्।
परिणामे विषमिव तत सुख राजसंस्मृतम्॥

इसके उपरान्त महात्मा अष्टावक्रजी ने कहा है कि मुक्ति रूपी सुखों की इच्छा हो तो इंद्रियों के विषय को विषवत् त्याग दो और य० १७ मन्त्र १६ में लिखा है कि योगी जन जितेन्द्रिय होकर नियम पूर्वक परमात्मा को पाकर आनन्दित होते हैं। सञ्जय ने धृतराष्ट्र से कहा है कि इन्द्रियों को जीतने वाले महात्मा ईश्वर के दर्शन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करते हैं। श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन से कहा है कि इन्द्रियों के जीतने से बुद्धि बढ़ती है। शांतिपर्व अ० १५९ में भीष्मपितामह ने कहा है कि चारों आश्रमों के बीच इन्द्रिय निग्रह ही उत्तम धर्म है। इसलिये आओ! ज्ञान के द्वारा विषय वासना में विचरती हुई इंद्रियों को अपने आधीन कर सुख को प्राप्त करो।

७–धी—नाम बुद्धि का है जिन स्त्री पुरुषों की शुद्ध बुद्धि होती है वही इस संसार में सुखों को भोग कर परम-धाम अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करते हैं। शुद्ध बुद्धि की प्राप्ति को अथर्ववेद में बतलाया है कि जो स्त्री पुरुष ब्रह्मचर्य के साथ यथावत् वेदों को पढ़ उसके अनुसार काम करते हैं उन्हीं को अनुपम रत्न मिलता है और उन्हीं को बुद्धिमान और विदुषी कहते हैं, वे ही स्त्री पुरुष यथार्थ धर्म पर चल संसार की काया को पलट देते हैं। ऋषिगण परमात्मा से सायं प्रातः परमेश्वर की उपासना कर शुद्ध बुद्धि मिलने की प्रार्थना किया करते थे। सच पूछो तो गीता के अनुसार सात्विक बुद्धि पर ही कीर्ति विजय, सुख, शांति इत्यादि का दारमदार है इसलिये हम सब को शुद्धि बुद्धि के लिये वेदानुकूल यत्न करना चाहिये।

८–विद्या—जिससे पदार्थों का यथार्थ ज्ञान हो उसको विद्या और जिससे विपरीत ज्ञान अर्थात् नित्य को अनित्य अनित्य को नित्य, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समझा जाय उसे अविद्या या अज्ञान कहते हैं। सचमुच विद्या से बढ़कर कोई मित्र और अविद्या से अधिक कोई शत्रु नहीं; परन्तु विद्या का यथार्थ ज्ञान वेदों के पढ़ने से होता है। वर्तमान समय में वेदों की शिक्षा का अभाव सा हो रहा है इसलिये भारत की दिन पर दिन अधोगति होती जाती है क्योंकि हम सब अविद्या में फंसकर उलटे कार्य्य कर रहे हैं जिससे हमारा पतन होता जाता है। कहाँ वह दिन था जब हम संसार के शिक्षक और विद्या के बल से तेजस्वी कहलाते थे, एक दिन वह था कि हमारे उत्तम आचरणों से लोग हमें सभ्य गिनते थे। संसार के मुकुट मणि हम ही माने जाते थे। आज हम नीच वहशी कहलाते हैं। कहां तक कहें इस अविद्या के कारण नाना मत होने से फूट का बाज़ार गर्म होगया जिस से एकयता की ज़ंजीर टूट गई जिससे नाना प्रकार की आपत्तियां आगईं इसलिये वेद विद्या का प्रचार कीजिये जिससे संसार में आनन्द की वर्षा हो।

९-सत्य—अर्थात् मिथ्या व्यवहार कभी न करना चाहिये क्योंकि जिस प्रकार प्रकाश के साथ सूर्य का और दिनके साथ रात्रिका नित्य सम्बन्ध है उसी प्रकार मनुष्य का सत्य के साथ है इसलिये राजा और प्रजा सदा सत्य व्यवहारों को कर मिथ्या कार्य्यों की विपत्तियों से बचें। एसा अथर्व कां० ४ सूक्त १७ मन्त्र १ में लिखा है क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक मिथ्या भाषण से संसार में अनेकान उपद्रव मचे रहते हैं व्यवहार ठीक नहीं चलते। सुख के दर्शन नहीं होते। इसलिये वेद भगवान राजा को आज्ञा देते हैं कि वह मिथ्यावादियों को इस प्रकार नष्ट कर देवे जैसे मुट्ठी में बंधा हुआ जल वा वायु बिखर जाता है।

इस हेतु सत्य से बढ़ कर कोई धर्म और झूंठ से बढ़ कर कोई पाप नहीं महात्मा चाणक्य, भीष्मपितामह, कृष्ण, सनत्सुजातमुनि, नारद, भृगु, एवं मनु आदि ऋषियों ने कहा है कि मनुष्य मात्र का परम धर्म सत्य और यही महान् गुण है। इसीको अमृत रस कहते हैं। सब व्रतो का मूल, सब का केन्द्र, स्वर्ग का द्वार और परलोक में आनन्द इसीसे मिलता है। य० अ० १७ मन्त्र १४ में लिखा है कि जो मनुष्य शास्त्र के अभ्यास सत्य बचनादि से वाणी को पवित्र करते हैं वे ही शुद्ध होते हैं इसलिये पूर्ण रीति से सत्य बोलने का अभ्यास करना चाहिये। सभा में भी पक्षपात को त्याग सत्य प्रिय बचन ही कहें और प्रतिज्ञा करके उसका यथावत् पालन करे। जिससे जीवन में शक्ति बढ़े और संसार में कभी निन्दा न हो जैसा अथर्व कां० १६ सू० २ मं० १ में कहा है 'निर्दुरर्मण्यऊर्जामधुमतीवाक्'।

इस हेतु वे स्त्री पुरुष धन्यवाद के योग्य हैं जो कठिन से कठिन आपत्ति में भी असत्य नहीं बोलते। क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असत्य ही सब पापों का मूल है जैसा अ० कां० १२। सूक्त ३। मन्त्र ५२ में कहा है।

यदक्षेषुवदायत् समित्यां यद्वावदा अमृतं वित्तकाम्या।
समानंतन्तुममि संवसानौ तस्मिन्त्सर्वंशमलं सादयाथः॥

शिवपुराण ज्ञानखण्ड अ० १० में लिखा है कि शूर की संग्राम में, मित्र की आपदा में, स्त्री की असमर्थता में, श्रेष्ठ कुल की विपत्ति में, स्नेह की दूर जाने में और सत्य की संकट में परीक्षा होती है।

अर्थात् स्त्री पुरुषों को प्रतिज्ञा करके उसका पालन करना अभीष्ट है चाहे उन पर कैसी ही विपत्ति आजावे उनकी कितनी ही हानि हो परन्तु प्रतिज्ञा का पालन करना ही परम धर्म है। प्रतिज्ञा भ्रष्ट मनुष्य दो कौड़ी का हो जाता है। जीते जी मृतक के समान समझा जाता है संसार में अपकीर्ति होती है। अपना, पराया, हित, मित्र कोई विश्वास नहीं करता। देखो दशरथ ने कैकेई के साथ जो प्रतिज्ञा की थी उसके पूर्ण करनार्थ रामचन्द्र को वन भेजा। आप विरह वियोग में शरीर त्याग स्वर्ग को चले गये। जो बात तुम्हारी सामर्थ्य से बाहर हो उसकी प्रतिज्ञा कभी मत करो और यदि प्रतिज्ञा करो तो उसको तन, मन, धन से पूरा करो। अधर्म की प्रतिज्ञा कभी न करो उस का पालन करना और भी पाप है—असल में सच बोलना और प्रतिज्ञा पालन एक ही बात है। इसके अतिरिक्त जिस बात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हम अच्छे प्रकार जानते हैं और जब हम से कोई पूँछे कि आप इस विषय में क्या जानते हैं तो हम किसी कारण से कह दें कि हम कुछ नहीं जानते। दूसरे असत्य बोलना अर्थात् जान बूझ कर उल्टी बात कहे। तीसरी मानसिक चोरी अर्थात् मन के सिद्धांत के विरुद्ध कार्य्य करना जैसे कोई मनुष्य परमेश्वर का ध्यान कर रहा हो और उसका मन अन्य विषयों के विचार में लग रहा हो इसलिये इन तीनों प्रकार की चोरियों का त्याग करना उचित है। सत्य को मन से धारण करना चाहिये क्योंकि मन में होता है वही वाणी में आता है फिर जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है जैसाकि—

यन्मनसाध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते ॥

अर्थात् जो मनुष्य मन वचन और कर्म से सत्य का अनुष्ठान करते हैं वही सच्चे धर्मात्मा कहाते हैं इसलिये सब को मिलकर सत्य व्रत एवं प्रतिज्ञा पालन कर सुख प्राप्त करना चाहिये।

(१०) अक्रोध—अथर्व वेद में परमात्मा आज्ञा देते हैं कि चमकते हुए क्रोध करने से मानसिक शक्ति-स्मृति-स्फूर्ति और प्रतिमा आदि सबका नाश हो जाता है जिसके कारण क्रोधी साधारण एवं निर्बल शत्रु से भी परास्त हो जाता है इसलिये अपने को सँभाले हुए बुद्धि पूर्वक सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कार्यों को करना उचित है क्योंकि क्रोध के आवेश में मनुष्य को अपनी बुराई भलाई आदि किसी का ज्ञान नहीं रहता। उसके समस्त गुणों पर पानी पड़ जाता है शरीर में रुधिर के तेज चलने से कलेजा और मस्तक में धड़कन पैदा हो जाती है। थोड़ी सी बात के लिये क्रोधीजन सर्व-नाश कर देते हैं संसार में उनको सब बुरा कहते हैं तथा वह संसार में नाना दुखों को भोग शीघ्र मर जाते हैं इस-लिये ऋग्वेद अ० १ मं० १ सू० २५ में लिखा है कि जीव को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि जिस प्रकार उड़ाये पक्षी दूर जाकर बसते हैं वैसे ही मनुष्यों को क्रोध एवं क्रोधी मनुष्यों से दूर रहना चाहिये और अपने स्वभाव को श्रेष्ठ बना धर्म मार्ग पर चलना योग्य है।

---

## धर्म मार्ग

प्रत्येक मनुष्य सदा सीधे और सुगम मार्ग की चाह में रहता है क्योंकि ऐसे मार्ग पर चलने से मनुष्य को कष्ट नहीं होता और उसका प्रयोजन शीघ्र सिद्ध हो जाता है जिससे चलने वाले को थकावट नहीं होती। इसके अतिरिक्त टेढ़े, कुमार्ग पर जाने से बहुधा कष्ट उठाने पड़ते हैं और न बटोही अपने अभिप्राय को प्राप्त करते हैं इसलिये सब प्राणी मात्र को धर्म के सीधे अर्थात् सत्य सनातन मार्ग को जान कर मोक्ष प्राप्त करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रिय सज्जन पुरुषो ! वर्त्तमान काल में सहस्रों मार्ग अर्थात् पंथ प्रचलित हो गये हैं। कोई इधर खैंचता, कोई उधर पकड़ता है, कहीं वाम मार्ग के लटके दिखलाये जाते हैं, कहीं फ्रीमेशन की प्रशंसा बतलाई जाती, कहीं नानक-पंथ, कबीर साहिब की साखी सुनाई जाती और वाहगुरू की ही विजय कान में फूँकी जाती है। कहीं शब्द ज्ञान कराया जाता है। कहीं जूंठे भोजन को महिमा सुनाई जाती। कोई गङ्गा और एकादशी आदि व्रत और मनमानी सत्य-नारायण की कथा सुनने को ही धर्म मार्ग बतलाते हैं। बहुधा तुलसी, शालिग्राम, महादेव पार्वती इत्यादि को पाषाण मूर्तियों के पूजन करने और उनके सम्मुख नाचने गाने को ही धर्म कहते हैं तो कोई बरगद, पीपल और केले आदि वृक्षों की पूजा से ही ईश्वर की प्राप्ति मानते हैं। कोई कोई नाना भाँति के तिलक छापे और ठाकुर प्रसाद और तुलसी शालिग्राम के विवाह को ही धर्म कहते हैं, परन्तु हमारे प्राचीन ऋषियों ने और ही धर्म के मार्ग बतलाये हैं, जिन पर हमारे पुरुषाओं ने चलकर नाना प्रकार के सांसारिक सुखों के उपरांत परमपद को भी प्राप्त किया है और उसी को सनातनधर्म कहते हैं। मनु महाराज ने भी श्रुति, स्मृति, सदाचार और अपनी आत्मा के कर्मों को धर्म मार्ग ठहराया है, जैसा—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्यच प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

भविष्यपुराण पूर्वार्द्ध के प्रथम अ० में भी श्रुति, सदाचार, अपने मनकी प्रसन्नता को ही धर्म माना है ऐसा ही महाभारत शांतिपर्व अ० २५८ और अनुशासन पर्व अ० १४८ तथा लिंगपुराण अ० १० श्लोक ७ में लिखा है कि धर्म वही है जो श्रुति स्मृति के अनुकूल वर्णाश्रम धर्मों को जान कर करते हैं।

वर्णाश्रमेषु युक्तस्य स्वर्गादि सुखकारिणः ।
श्रौतस्मार्तस्य धर्मस्य ज्ञानं धर्मं तदुच्यते ॥

ऐसा ही विष्णुस्मृति अ० १ श्लोक २४ और अत्रिस्मृति श्लोक ३९४ में भी लिखा है। शिवपुराण विन्देश्वरी संहिता अ० १९ श्लोक ४४ में लिखा है कि जो वेद और स्मृति के कर्म को अनादर कर दूसरे कर्म को करता है उसको फल नहीं होता इसलिये वेदोक्त कर्म करने को ही धर्म मार्ग कहते हैं।

---

# वेद

मनुमहाराज के लेखानुसार श्रुति ( वेद ) और स्मृति ( धर्म शास्त्र ) को कहते हैं अध्याय १२ श्लोक १८ में लिखा है कि वेद सनातन विद्या है यही सृष्टि का आधार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है इसी कारण जीवों के लिये उसी को सब से उत्तम सुख की प्राप्ति का निश्चय करता हूँ।

विभर्ति सर्व भूतानि वेदशास्त्र सनातनम्।
तस्मादेतात्यारं मन्येयजंन्तोदस्य साधनम्॥

और अ० २ श्लोक ८ में लिखा है विद्वान को योग्य है कि विद्या से समस्त वेदोक्त धर्म को स्वीकार करे और श्लोक १३ में लिखा है कि धर्म के जानने के लिये श्रुति ही प्रमाण है इस हेतु नित्य कर्मों में प्रति दिन वेद पाठ करने की आज्ञा दी है इसके उपरान्त अ० १२ के २७ श्लोक में लिखा है कि चारों वर्ण तीनों लोक चारों आश्रम तीनों काल सब वेद से ही जाने जाते हैं इसलिये मनुजी महाराज ने श्लोक १०६ में कहा है कि जो मनुष्य अर्थ को जान कर उसके अनुकूल कार्य्य करता है वह चाहे जिस आश्रम में रहे जीवन मुक्ति को पाता है और श्रीमद्भागवत में लिखा है कि धर्म वही है जो वेद में लिखा है उसके अतिरिक्त अधर्म है।

'वेदप्रणहितोधर्मोस्तद्विपर्ययः'॥

फिर इसी अ० में लिखा है कि जो वेद के विरुद्ध कार्य करते हैं उनको नरक होता है और अ० ४ में ऋषभदेवजी ने अपने पुत्रों को श्रुति स्मृति धर्म को मुख्य मान कर उसकी शिक्षा की है। स्कंध ११ अ० ३ के श्लोक ४३ में स्पष्ट कहा है कि वेदोक्त कर्म करने से मोक्ष होती है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


याज्ञवल्क्यस्मृति अ० २ श्लोक ४० में मनुष्य मात्र को आज्ञा दी है कि द्विजों यज्ञ, तप और शुभ कर्म इन सबसे उपकारक वेदको जानना चाहिये।

यज्ञानांतपसांचैव शुभयांचैव कर्मणां।
वेदएवद्विजातीनां निःश्रेयसकरः परः॥

वेदों के विषय में वेदों में लिखा है कि वेद द्वारा विज्ञान प्राप्त कर बुद्धि, बल और कीर्ति बढ़ा आप सुखी हो अन्यों को सुख पहुँचावे। वेद विद्या का भण्डार, ज्ञान का कोष, धन सम्पत्ति के दाता, शिल्प के गुरु, पदार्थ विद्या के मर्मों के शिक्षक, मर्यादा पालक, आकाश, भूमि, भूगर्भ, कृषि और ज्योतिष आदि समस्त विद्याओं का ज्ञान कराने वाले हैं। वेद के अनुगामी को सांसारिक सुखों के साथ साथ परलोक में मुक्ति की भी प्राप्ति होती है। स्मृति, पुराण, ऋषि और मुनियों ने वेदों का महात्म बड़े गौरव से वर्णन किया है इसलिये सभी को वेदों की आज्ञा पालन करना अभीष्ट है। जिस राजा के राज्य में वेदों का प्रचार नहीं वहां की प्रजा धर्म रहित निर्बल और निर्धन बन तीनों तापों को भोगती हुई अन्न और यश आदि को भी प्राप्त नहीं कर सकती। लिङ्ग पुराण पूर्वार्द्ध के ७८ अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि जो मनुष्य वेद विरुद्ध व्रत आचार आदि करते हैं, श्रुति, स्मृति से विमुख हैं, उत्तम वर्ण वाले उन पाखण्डियों का स्पर्श तथा उनसे सम्भाषण न करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वेदवाह्यव्रताचारः श्रौतस्मार्त्तवहिष्कृतः ।
पाषण्डिनइतिख्याता न सम्भाष्या द्विजातिभिः ॥

विष्णुपुराण अ० २ श्लोक ६ में लिखा है कि जो वेद विरुद्ध कार्य करते हैं उनको ( सघन नाम ) नरक और श्रीमद्भागवत के स्कंध ५ अ० २६ श्लोक १५ में लिखा है कि जो वेद मार्ग को छोड़ पाखण्ड मार्ग में चलते हैं वह कालसूत्र नामक नरक में जाते हैं और मनु० अ० १२ श्लोक ८६ में कहा है कि वेदोक्त कर्म करने से मनुष्य सुपात्र होता है। श्रीरामजी ने वाल्मीक रामायण में कहा है कि जो मनुष्य वेद मर्यादा को त्यागते हैं वह पापी होते हैं। इसके उपरांत उन्होंने चित्रकूट पर भाई भरत को सदा वेदोक्त कार्य करने के लिये शिक्षा की है। शांतिपर्व अ० २०१ में वृहस्पति ने भी यही लिखा है श्रीकृष्ण महाराज ने गीता में कहा है कि वेद विरुद्ध कार्य करने वालों को तत्वज्ञान नहीं मिलता, इस हेतु उन्होंने उद्धव को उपदेश किया है कि वेद जानने वाले ही सत्पुरुष को गुरु कहना चाहिये। इसी प्रकार कौशिक, नकुल, युधिष्ठिर, सनत्सुजात और कपिल आदि मुनि तथा सम्पूर्ण स्मृतिकार पुकार पुकार कर कहते हैं और पुराणों के कर्त्ता भी यही उपदेश करते हैं कि वेद ही के अनुसार कार्य करना अभीष्ट है। देखो वृहन्नारदीयपुराण अ० ९ श्लोक १४१ में लिखा है कि जो सब प्राणियों में दयायुक्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


और वेद मार्ग पर चलते हैं और गुरु पूजा परायण हैं वही परम स्थान को जानते हैं। अध्याय १४ में लिखा है कि जो वेद मार्ग से भ्रष्ट हैं वे पाखण्डी कहाते हैं। कूर्म पुराण में स्पष्ट लिखा है-

न च वेदादृते किञ्चिच्छास्त्रं ब्रह्मा विधायकम्।
योऽन्यत्र रमते सोऽसौन सम्भाष्याद्विजातिभिः॥

वेद को छोड़ कर एक भी ग्रन्थ परमेश्वर का चिंतवन कराने वाला नहीं जो मनुष्य वेद को छोड़ कर अन्य (पाखण्डी) मन्त्रों को मानते हैं द्विजातीय उन से वार्तालाप न करें। पद्मद्वितीय भूमि खण्ड अ० ६९ में राजा ययाति ने मातलि से कहा है कि जो कोई वेदनिन्दा करता है उनको ज्ञानी पंडितों ने महापापी कहा है। बृहन्नारदीय पुराण में कहा है कि जो वेदोक्त धर्म छोड़ कार्य्य करता है वह महापापी और आत्मघाती है। विष्णुपुराण अंश ३ अ० १७ में कहा है कि वेद मार्ग का त्यागने वाला महापापी और नङ्गा है आठवें अध्याय में मैत्रेयजी का भी यही वचन है। अयोध्या कांड सर्ग ६७ श्लोक ३३ में कहा है जो लोग वेद शास्त्र की मर्यादा को उल्लंघन करते हैं उनको नास्तिक कहते हैं।

'वेद संभिन्नमर्यादानास्तिकाश्छिन्न संशया॥

सर्ग १० में रामचन्द्र जी ने भरत जी से कहा है कि तुम वेदशास्त्र के बिना पढ़े हुए अज्ञानी लोगों की सेवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो नहीं करते ऐसे लोग परलोक विषयक ज्ञान कुछ भी नहीं मानते और अपने को वह पंडित ही पंडित मानते हैं। वास्तव में उनको महामूर्ख समझ उनकी मनमानी तर्कनाओं पर कुछ ध्यान नहीं करना चाहिये, इसलिये राजा का यही धर्म है कि वेदों को सदा पढता रहे। सुन्दर कांड सर्ग २६ श्लोक २५ में सीता ने राक्षसों से कहा है कि तुम्हारे सर्व कार्य शास्त्र के विरुद्ध हैं, इसलिए तुम्हारा नाश होना संभव है। सर्ग १०९ में लिखा है कि जो लोग वेदानुकूल कार्य करते हैं वही कुलीन तथा इससे विपरीत को अकुलीन कहते हैं। देवी भागवत स्कंध १ अ० १८ श्लोक ४७ में राजा जनक ने कहा है कि प्राणीमात्र को वेदों के अनुकूल कार्य्य करना चाहिये। बृहन्नारदीयपुराण अध्याय ४ में लिखा है कि धर्म वेद से प्रकट होता है और वेद परमेश्वर से। इस लिये जिसकी श्रद्धा उसमें नहीं उससे परमेश्वर अति दूर है। अ० १५ श्लोक २० में लिखा है कि जो धर्म और अधर्म का ज्ञान-वेद से कर उसके अनुसार कार्य करते हैं वे साधुजन कहाते हैं देखो यजु० अ० २८ मन्त्र ३५ में कहा है कि जैसे आकाश में सूर्य का प्रकाश बढ़ता है, उसी भांति वेदों के अभ्यास करने से बुद्धि बढ़ती है, जो इस जगत में वेद द्वारा सब विद्याओं को जानते हैं वे सब ओर से बढ़ते हैं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देव वर्हिर्वयोधस देवमिन्द्र मवर्द्धयत् । गावच्याछन्दसेन्द्रियं चक्षुरिन्द्र वयोदद्दृ सुवनेवसुधेयस्यवेतुयज । साम० उत्तरार्चिके०६ पवमानस्य विश्वपतित्प्रते सर्गा असूक्षत असूस्येव न रशमय ।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें उदय होकर मनुष्यादि प्राणियों की आंखों को सहायता देती हैं उसी भांति परमात्मा से वेद प्रकट होकर मनुष्यों को सम्मार्ग में प्रवृत करते हैं जो अनादि हैं ।

## वेदों के अनादि होने का प्रमाण ।

मान्यवरो ! यदि मुझको कोई मनुष्य उत्पन्न होते ही एक गृह में बन्द कर देता और वहीं भोजनादि देता और सम्मुख कोई बात चीत भी न करता तो आशा है कि मुझ को बात चीत करना भी न आती; न किसी विद्या को जानता अर्थात् जो कुछ मैंने इस संसार में सीखा, पढ़ा, लिखा यह सब माता पिता और विद्वानों की सङ्गति का ही गुण है । इसी प्रकार हमारे पिता ने सीखा और पढ़ा; परन्तु जिस समय संसार उत्पन्न हुआ उस समय केवल परमेश्वर ने अपनी कृपा और अनुग्रह से अपने वेदरूपी ज्ञान का अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा इन चार महर्षियों के हृदय में प्रकाश किया, जो उस समय से आज तक ऋग्, यजु, साम और अथर्व नाम से प्रसिद्ध हैं । इससे प्रकट होता है कि वेद ही सनातनधर्म पुस्तक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अर्थात् अनादि हैं। प्रकट हो कि आर्यावर्त के विद्वानों और बुद्धिमानों ने सृष्टि की आयु को १४ मन्वन्तरों पर बांटा है, इनमें से ६ मन्वन्तर व्यतीत हो चुके और सातवां अब बीत रहा है। १ मन्वन्तर में ७१ चतुर्युगी होती हैं अर्थात् चारों युग ७१ बार बीतते हैं जिसमें सतयुग १७२८०००, त्रेता १२९६०००, द्वापर ८६४००० और ४३२००० वर्षों का कलियुग। इसीको चतुर्युगी कहते हैं यदि इसी को ७१ से गुना करदें तो एक मन्वन्तर हो जाता है इस प्रकार के १४ मन्वन्तर बीतने पर संसार की आयु पूरी होगी। वर्त्तमान सृष्टि के १४ मन्वन्तरों में से केवल ६ मन्वन्तर और २७ चतुर्युगी बीत गई अब २८ वीं चतुर्युगी बीत रही है जिसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गया चौथे कलियुग की सम्वत् १९९० तदनुसार सन् १९३४ ई० तक ५०३४ वर्षें बीत चुकी हैं और ४२६९६६ वर्ष भोगने को बाकी हैं अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति को १,९६०८५३०३४ वर्षें हो गई हैं।

---

# स्मृति

द्वितीय धर्म मार्ग स्मृति अर्थात् धर्मशास्त्र हैं, इनकी संख्या १८ है जिनको मनु, अत्री, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, सम्वर्त्त, कात्यायन,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बृहस्पति, व्यास, शंख, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, ऋषियों ने लिखा है। इनमें उन्होंने वेद के गूढ़ मन्त्रों की व्याख्या पूर्ण रूप से योग और नाना क्रियाओं से ज्ञान प्राप्त करके की थी। संसार की दशा सदा एक नहीं रहती, कभी वृद्धि को प्राप्त होती और कभी हीन दशा हो जाती है। देखिये यही सूर्य जो प्रातःकाल में प्रकाशित होकर संपूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है वही सायंकाल को हीन दशा को प्राप्त होजाता है। इसी प्रकार जब देश अविद्या को प्राप्त हुआ, नाम मात्र के विद्वान् भी अपने लाभ के लोभ में फंस गये और लोभ में धर्म का विचार नहीं रहता। इहलिये उन्होंने भी स्वार्थ सिद्धि के अर्थ अनेक श्लोक बनाकर मिला दिये। इस कारण अब स्मृतियों और वेदों में भी बहुधा भेद होगया है; परन्तु कुछ शोक नहीं। क्योंकि हमारे ऋषि मुनि अपनी अपनी स्मृतियों में लिख गये हैं कि धर्म विषय में वेद ही का प्रमाण मानना चाहिये जैसा मैंने ऊपर वर्णन किया और जो स्मृतियां वेदानुकूल हों उनको भी मानना अभीष्ट है, परन्तु वेदों के विरुद्ध स्मृतियों के मानने की मनु आदि ऋषि आज्ञा नहीं देते फिर पालन करना कैसा? देखिये मनुजी महाराज ने अ० १२ श्लोक ९५ में लिखा है जो स्मृति वेद विरुद्ध है उससे कुछ फल नहीं हो सकता, अतः समझ लेना चाहिये कि वह तमोगुणी पाखण्डियों की बनाई हुई है। यथा—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो वेदवाह्यः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः ।
सर्वाना निष्फलाः प्रेस्य तमोनिष्ठाः हित्ता स्मृताः ॥

इसके उपरांत जब स्मृतियों में भी आपस में अन्तर हो तो मनुस्मृति का लेख प्रमाण होगा, क्योंकि सामवेद के छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि जो कुछ मनुजी ने कहा है वह मनुष्य के लिये औषधि की औषधि है जैसा- 'यत्किंचिन् मनुरवदत्तद्भेषजायाः' और बृहस्पति स्मृति में लिखा है ।

वेदार्थोयनिवम्प्रत्वा प्रधान्यं हि मनोस्मृतम् ।
मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिनैव शंस्यते ॥

अर्थात् उस स्मृति की प्रशंसा नहीं होती जिसका लेख मनुस्मृति से नहीं मिलता। प्रिय सज्जन पुरुषो ! मनुजी महाराज स्पष्ट आज्ञा देते हैं कि मैंने वेदानुकूल ही लिखा है और वेदानुकूल ही मेरी आज्ञा को मानना चाहिये अर्थात् मेरा लेख वही है जो वेद से मिलता हो । जैसा मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक २ में लिखा है ।

यःकश्चित्क स्यचिद्धर्म्मो मनुनापस्कीर्तितः ।
स सर्वामिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हिसः ॥

फिर इसी अध्याय के ८ श्लोक में और भी पुष्टता की है तथा १२ अ० के ९५ श्लोक में स्पष्ट आज्ञा दी है कि जो स्मृतियां वेद के विरुद्ध हों वह माननीय नहीं। अर्थात् अठारह स्मृतियों में जिस स्थान पर वेदानुकूल न हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वह प्रमाण के योग्य नहीं। इस कारण जब किसी विषय में स्मृतियों में अन्तर हो अथवा समझ में न आता हो या पेटार्थी जन कुछ का कुछ कहें तो आप को योग्य है कि वेदों के प्रमाण से उसको प्रमाणिक अन्यथा अप्रमाणिक समझना चाहिये। इसी प्रकार जब स्मृति और पुराणों में विरोध हो तो स्मृति के अनुसार कर्म करना चाहिये। तात्पर्य इस कथन का वही है जो मैंने ऊपर वर्णन किया अर्थात् धर्म विषय में श्रुति ही स्वतः प्रमाण और स्मृति तथा पुराण परतः प्रमाण हैं। जैसा व्यासस्मृति अ० १ श्लोक ४ में लिखा है।

श्रुति स्मृतिः पुराणनां विरोधो यत्र दृश्यते।
तत्र श्रोतं प्रमाणंतु तयोर्द्वैधे स्मृतिवर्स॥

---

# सदाचार

वेद में लिखा है जो सदाचारी शीलवान हैं परमेश्वर उनकी सदा रक्षा करता है तथा श्रेष्ठ पुरुषों की स्थिति का कारण शील ही है। मान्यवरो यह दोनों उपरोक्त धर्म मार्ग अत्यन्त कठिन हैं क्योंकि जब तक कोई मनुष्य विद्या पढ़कर विद्वान् न हो वह इनको पूर्ण प्रकार से नहीं जान सकता है और विद्वान् होने के लिये बहुत समय की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता होती है; परन्तु धर्म का अंकुर बाल्यावस्था ही से बालक के हृदय में लगता है, इसलिये हमारे मुनियों ने तृतीय धर्म का मार्ग सदाचार माना है। यह शब्द 'सत्' और 'आचार' से संयुक्त है, अर्थात जो कुछ सत्य धर्म अपने प्राचीन पुरुषाओं को करते देखा वा सुना अथवा उनकी लिखित पुस्तक के द्वारा जाना गया हो, उसको करना। इस बात को सुनकर हमारे बहुधा भाई यह कह देंगे कि हम तो वर्त्तमान में वही कार्य करते हैं जो हमने बाप दादे को करते हुए देखा है, फिर आप उसको क्यों नहीं धर्म मानते और क्यों नाना प्रकार की शङ्कायें करते हैं? प्यारे मित्रो! इसका मुख्य कारण यही है कि प्राचीन काल में महाभारत के बड़े भारी संग्राम होने से लाखों विद्वान् मारे गये, फिर आलस्यादि दोष उत्पन्न होकर विद्यारहित होने लगे। इसके अनन्तर बौद्ध और जैन मतों ने भारतवर्ष में अपना सिक्का जमा वेदादि रीति को उठा दिया। इसके पीछे मुसलमानों ने राज्य किया कि जिनमें हमारे धर्म पुस्तक जलाये तथा डुबोये गये। हमारी क्वारी लड़कियां छीन मुसलमान बनाई गईं। रात दिन लूटे और मारे गये, क्योंकि बारह मर्तबा महमूद ने लूट की फिर शहाबुद्दीन ने ८ बार चढ़ाई की लाखों मनुष्यों को पकड़ लेगया और उनके खून से गारा बनवाया। चंगेज़ ने दुन्द मचाया पुनः तैमूर ने दिल्ली, तुलम्बा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटनेर आदि में हा हा कार मचाया तदनन्तर नादिरशाह ने आकर दिल्ली में ५ दिन तक क़तलआम कराया और इसके पीछे महमूदशाह ने तीन चढ़ाइयां कर लूट मार की और सन् १६५७ ई० से १७०६ ई० तक औरङ्गज़ेब ने दिल्ली के तख़्त पर बैठ कर सम्पूर्ण भारतवासियों पर जुल्म किये। इसके बीच ही में नानक, कबीर आदि ने अपने २ पन्थ नियत किये। मेरे लिखने का मुख्य तात्पर्य यह है कि महाभारत के पश्चात अँग्रेज़ी राज्य के आने तक हमारे पुरुषाओं को जान बचाने के लाले पड़ रहे थे, फिर भला ऐसे समयों में इन वेदानुकूल रीतों को कौन पूछता है। क्योंकि कहा भी है 'आपतकाले मर्यादा नास्ति' फिर उन पुरुषाओं का धर्म हमारे लिये क्योंकर माननीय हो सकता है। हां यदि उन मनुष्यों के धर्म पर चलें जो उस समय में रहते थे जबकि वेद विद्या का प्रचार था। बालक से लेकर बृद्ध तक उसी के अनुसार चलते थे, लोभ और कामादि के त्यागी थे धर्म पर जीवन को न्योछावर कर, धन पर धता भेज धर्म को मुख्य समझते थे, इसलिये आप अपने कुल की दश बीस पीढ़ियों की रीति पर न चल सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त जो वेदानुसार सनातन रीति है उस पर ही चलिये। अर्थात जिस मार्ग पर हमारे सत्पुरुष, पिता और पितामह चले हों, उसी पर चलें और जो पितामह ने अनुचित कर्म किये हों तो उसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग को कभी स्वीकार न करें जैसा मनुजी ने कहा है और ऐसा ही यजु० में लिखा है।

अनत्वा माता मन्वतामनु पितोऽनुभ्राता सगर्भ्योऽनुसखा सयूथ्यः।
सा नेवा देवमच्छेन्द्रायसोमरुद्रस्त्वा वर्त्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरोहि।

और य० अ० २१ मन्त्र ५० में लिखा है कि संतानों को योग्य है कि जो जो पितादि बड़ों का धर्मयुक्त कर्म हो, उसको सेवन करें और जो जो अधर्म युक्त हो उसको छोड़ देवें। श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है जिस आचार पर श्रेष्ठ पुरुष चलते हैं उसी पर इतर जन चलते हैं ऐसा ही यजुर्वेद अ० १२ मन्त्र १११ में आज्ञा है फिर भला आप क्यों प्राचीन पुरुषाओं की मर्यादा को तोड़ कर नवीन पुरुषाओं के अनाचार का प्रमाण देते हैं। जब कि पुरुषाओं ने जितेन्द्रियता को मेट विद्या का पठन पाठन ही उठा दिया तब आचार का क्या ठीक? देखिये मनु महाराज ने श्रेष्ठों के विषय में कहा है कि श्रेष्ठ उन ब्राह्मणों को समझना चाहिये जिन्होंने विधि पूर्वक मीमांसा सहित पढ़ा है और जो वेदोक्त वाक्य को प्रमाण से समझ सकते हैं इसी कारण विदुर महाराज ने धृतराष्ट्र महाराज से कहा है—१ मतवाला, २ नशा पीने वाला, ३ बेहोश, ४ थका हुआ, ५ क्रोधी, ६ भूखा, ७ शीघ्रता करने वाला, ८ लोभी, ९ डरपोक, १० कामी। ये दश मनुष्य धर्म को नहीं जानते। जैसाकि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दश धर्मं न जानन्ति धातराष्ट्र ! निबोधताम् ।
मत्तः प्रमत्तः उन्मत्तः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः ॥
त्वरमाणश्च लुब्धश्चभीतः कामी च ते दश ।
तस्मादेतेषु सर्वेषु न प्रसज्जेत पण्डितः ॥

इसी हेतु अब आप व्यास, पाराशर, मनु, राजादशरथ, राजा जनक, अर्जुन, भीम, श्रीकृष्ण आदि सनातन पुरुषाओं की रीतिपर चलिये, क्योंकि अब वह समय नहीं है कि किसी धर्म सम्बन्धी परिपाटी में बाधा डाली जावे वरन् सरकारी राज्य में शेर बकरी एक घाट पर बैर त्याग विहार कर रहे हैं, इसलिये आप भी इन प्रचलित रीतों को वेद से मिलाइये, यदि उनके प्रमाण वेद में मिल जावें तो स्वीकार कीजिये अन्यथा वेद विरुद्ध कार्य को कर पाप के भागी न बनिये, चाहे सहस्रजन क्यों न कहें । धर्म के निर्णय के लिये प्रत्येक नगर वा बड़े बड़े नगरों में सभा नियत कर उसकी आज्ञानुसार कार्य कीजिये, उसी को धर्म सभा वा आर्य्यसभा कहते हैं। प्राचीनकाल में ऐसा ही होता था। देखो य० अ० २ मन्त्र ४५ में ईश्वर उपदेश करते हैं कि आश्रम वाले मनुष्यों को मन, वाणी और कर्मों से सत्य का आचरण कर पाप वा अधर्म को त्याग करके विद्वानों की सभा, तथा उत्तम २ शिक्षा का प्रचार करके प्रजा की उन्नति करनी चाहिए। जिस सभा में तीनों वेद, मीमांसा, न्याय निरुक्त और धर्मशास्त्र के जानने वाला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारी गृहस्थ और वानप्रस्थ हों वह सभा दशावरा कहलाती है और जिसमें सम्यक् तीनों वेदों के ज्ञाता तीन सभासद हैं वह अवरा कही जाती है। धर्म संशय में इन्हीं के द्वारा निर्णय होना चाहिए अथवा एक भी वेदवित् आपत्ति में जिस धर्म की व्यवस्था करे वह माननीय है, न कि सहस्रों मूर्खों का कल्पित धर्म। सत्य भाषणादि व्रत से रहित, स्वाध्याय से भ्रष्ट केवल जाति के आश्रय से आजीविका करने वाला सहस्रों मूर्खों के झुण्ड को सभा वा समाज नहीं कह सकते ऐसे लोग धर्म के मर्म को नहीं जान सकते और न उनकी दी हुई व्यवस्था माननीय हो सकती है ऐसा ही याज्ञवल्क्यस्मृति अध्याय १ श्लोक ९ और अत्रिस्मृति श्लोक १४०, १४१ में लिखा है और विदुर जी ने महाभारत में कहा है कि वह सभा नहीं जहां वृद्ध न हों और वह वृद्ध नहीं जो धर्म को न कहे, वह धर्म नहीं जो सत्य न हो और वह सत्य नहीं जिस में छल हो, जैसाकि—

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा वृद्धान ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मो नयैयत्र च नास्ति सत्यं सत्यं न तद्यच्छद्माभियुक्तम्॥

परन्तु शोक है कि वर्त्तमान समय में मनुष्य जान कर इस बात पर कुछ ध्यान नहीं देते और शास्त्र के लेखानुसार विद्वान् धर्मात्माओं से धर्म की परीक्षा नहीं कराते, तथा आप और अपने आगे आने वाली सन्तानों का सत्या-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नाश कराते चले जाते हैं। प्रियवरो ! थोड़े २ धन के निर्णय करने के लिये बड़े २ वकीलों को और सोने की परीक्षा के लिये चतुर सुनार को बुलाते हो तो क्या यह धर्म परीक्षा मूर्ख अविद्वान्, लोभी कर सकते हैं ? कदापि नहीं। इसलिये इस कार्य्य को महत्कार्य जान उत्तम पुरुषों से परीक्षा कराकर स्वीकार कीजिये जिससे भारत सन्तान को सुख प्राप्त हो।

## प्रियमात्मनः

जब शास्त्रों में धर्म मर्यादा के अनुसार किसी विषय में दो भिन्न २ आज्ञायें पाई जावें तो उसमें किसी एक के अनुसार ( जो अपने मन बुद्धि और सामर्थ्य के अनुकूल हो ) कार्य करना आत्मप्रिय कहलाता है। पाठको ! इसी धर्म पर हमारे अनेकान जन्मों का सुधार निर्भर है, इसलिये लल्लो पत्तो में समय को वृथा न खोइये, वरन् अच्छे प्रकार तर्ककर धर्म को निश्चय कीजिये, मनुजी महाराज स्पष्ट आज्ञा दे रहे हैं।

आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्रविरोधिना।
यस्तर्केणानुसंधत्ते स धर्मं वेदनेतरः॥

इसलिये आप निर्भय हो शांतिपूर्वक धर्म को निर्णय कर सत्यासत्य को विचार सनातन धर्म के अनुकूल पंच कर्मों को विधि पूर्वक श्रद्धा और भक्ति से यथावत् कीजिये।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नित्य-कर्म

प्रिय सज्जन पुरुषो ! कर्म दो प्रकार के होते हैं, एक नित्य कर्म जो प्रति दिन किये जाते हैं, दूसरे नैमित्तक कर्म जो किसी नियत समय पर होते हैं । इस स्थान पर हम उन नित्यकर्मों अर्थात् पंचयज्ञों की व्याख्या करते हैं जिनकी आज्ञा सत्यकर्मों में पाई जाती है । प्राचीन पुरुषों ने इन यज्ञों को प्रति दिन कर महान् सुख उठाया था, परन्तु शोक ! वर्त्तमानकाल में बहुधाजन इन यज्ञों के नाम तक भी नहीं जानते फिर करना कैसा ? प्यारे भ्रातृगणों ! इन पंचयज्ञों के करने से आत्मिक ज्ञान की उन्नति होती है, और ये ही सब कर्म परमात्मा के ज्ञान के कारण हैं। अथर्व का० १८ सू० ४ मन्त्र १६, १४ में लिखा है कि ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ भूतयज्ञ और नृयज्ञ, इन पांचों महायज्ञों को करने वाला पुरुष परमात्मा की भक्ति करता हुआ अनेक आनंदों से ऊंचा हो जाता है क्योंकि कर्तव्य यज्ञ पूरा करने से उसकी बुद्धि ऐसी चमकती है जिस प्रकार सूर्य्य खुले निर्मल आकाश में पूर्ण रूप से चमकता है । विदुर नीति में विदुरजी ने कहा है "पंचाग्नयोमनुष्येणपरिचर्यप्रयत्नतः" अर्थात् पञ्चयज्ञों को प्रति दिन यत्न पूर्वक करना चाहिये । शंखस्मृति अ० ५ श्लोक २ और पराशर स्मृति के अ० १२ श्लोक ५ तथा अ० २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्लोक १५ में लिखा है कि जो पंचयज्ञों का त्याग करता है, वह हिंसाओं का प्रति दिन भागी होता है। सम्वर्त्तस्मृति के प्रथम अध्याय के श्लोक २५ में भी यही उपदेश है। "पञ्चमहायज्ञान्कुर्यादहरहर्द्विजो न हापयेत्"। भविष्यपुराण उत्तरार्द्ध अ० १० में लिखा है कि जो मनुष्य बिना पञ्च-यज्ञ किये भोजन करते हैं वे-मानों रुधिर पीते हैं। श्रीमद्भागवत स्कन्ध ५ अध्याय ६ श्लोक १८ में लिखा है कि ऐसे मनुष्य कौवों के समान हैं और मर कर ऐसे स्थान पर जन्म लेते हैं जहां कृमि भोजन को मिलते हैं। लिंगपुराण पूर्वार्द्ध के २६ अ० में यही आज्ञा है कि जो इन पञ्चयज्ञों के किये बिना भोजन करता है वह शूकर की योनि में जाता है, यथा-

आकृत्वा च मुनिः पञ्चमहायज्ञान् द्विजोत्तमः।
भुत्क्वाच शूकराणान्तु योनौ वै जायतेनरः॥

भविष्यपुराण अध्याय १५ में कहा है, कि ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और अतिथियज्ञ प्रति दिन करना चाहिये इनके न करने से पञ्चसूना अर्थात् पांच प्रकार की हिंसाओं का भागी होता है।

विष्णुपुराण अ० ६ में लिखा है कि गृहस्थ पुरुषों को प्रतिदिन पंचयज्ञ करना चाहिये। मनु अ० ३ श्लोक ६९ में कहा है कि गृहस्थों को प्रदिदिन के गृह कार्यों से जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप होता है उनके प्रायश्चित के लिये महर्षियों ने पांच महा-यज्ञ रचे हैं। देवीभागवतस्कंन्द १९ अ० २२ श्लोक २ और मनु अ० ३ श्लोक १७ में भी ऐसा ही कहा है। विष्णु-पुराण अंश ३ अ० १८ में मैत्रेयीजी ने कहा है जो नित्य कर्म त्यागता है वह पापी होता है। वृहन्नारदीय पुराण अ० २५ श्लोक ३७ में लिखा है कि पंचयज्ञों को न करने वाला ब्रह्महत्यारा होता है। वामन पुराण में लिखा है कि नित्य एवं नैमित्तिक कर्मों को कभी नहीं छोड़ना चाहिये। श्रीमद्भागवतस्कंन्ध १० उत्तरार्ध अ० ८४ में श्रीकृष्ण ने बल्देवजी से कहा है कि जो गृहस्थ पंचकर्मों को छोड़ता है वह नरक के दुखों को भोगता है। ऐसी ही तुलाधार ने जाजलिमुनि को उपदेश दिया है।

इसलिये प्यारे सज्जनों! प्रेम और उत्साह के साथ इस सनातन आज्ञा के अनुकूल पंचयज्ञ करने का प्रचार करो और वह पंचयज्ञ यह हैं जैसा कि मनुस्मृति अ० ३ श्लोक ८० में लिखा है-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो देवो वलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्॥

१-वेद के पढ़ने पढ़ाने संध्योपासन अर्थात् ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करने आदि को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। २-अग्नि में पुष्टिकारक सुगन्धित, रोगनाशक, मिष्ठ इन चार प्रकार के पदार्थों को मन्त्र सहित डालने को वेदयज्ञ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहते हैं। ३–माता, पिता, गुरु आचार्य को श्रद्धापूर्वक तृप्ति करने का नाम तर्पण है ४–भोजनों के समय मिष्टान्न को मन्त्र सहित अग्नि में चढ़ाना फिर सब पदार्थों में से छः ग्रास निकाल कर कंगाल, रोगी, आदि को देने का नाम बलिवैश्वदेव है। ५– पूर्ण विद्वान् परोपकारी जितेन्द्रिय, धार्मिक सत्योपदेशक, शान्तचित्, निर्भय इत्यादि गुणयुक्त संन्यासी भ्रमण करता हुआ गृहस्थ के यहां आकर निवास करे तो उसका अच्छे प्रकार सत्कार कर तृप्त करने को अतिथियज्ञ कहते हैं।

ऐसा ही श्रीमद्भागवत स्कंध ११ अध्याय १७ श्लोक ५० में लिखा है कि वेदाध्ययन से ब्रह्म को, श्रद्धा से स्वाध्याय करके पितरों को, स्वाहा कर के देवताओं को, बलिवैश्व-देव करके भूतों को, अन्न और जल से मनुष्यों को तृप्त करना परम आवश्यक है।

## ब्रह्म–यज्ञ

ब्रह्मयज्ञ–संध्योपासना द्वारा प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। सं (अच्छे प्रकार से) ध्यै ( ध्यान ) करने को संध्या कहते हैं, तथा मेल-संयोग एवं सम्बन्ध को भी संध्या कहा है। रात्रि तथा दिन के मेल को भी संध्या कहते हैं। सन्ध्यायन्ति सन्धायते वा परंब्रह्मयस्यांसा सन्ध्या–अर्थात् भली भांति ध्यान करते हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अथवा ध्यान किया जाय ईश्वर का जिसमें वह सन्ध्या है इसका तात्पार्य यह है कि रात दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये। यजुर्वेद अ० ३६ मं० १५ में कहा है कि पहाड़ी की भूमि पर तथा नदियों के सङ्गम पर बैठ कर ज्ञानी लोग संध्या कर धारणा युक्त बुद्धि को प्राप्त करते है। महाभारत अनुशासन पर्व अ० १०४ में कहा है 'ऋषियोनित्यसन्ध्यत्वाद्दीर्घमापुरवाप्नुवन्' अर्थात् ऋषि मुनियों ने प्रति दिन सन्ध्या करके दीर्घायुओं को प्राप्त किया। बृहज्जाबालोपनिषत् में कहा है 'संध्यांसकुशो-ऽहरहरुपासीत' अर्थात् प्रति दिन सन्ध्या करनी चाहिये।

**स्तुति, प्रार्थना, उपासना**—यथावत कथन को स्तुति, मांगने को प्रार्थना तथा पास बैठने को उपासना कहते हैं।

स्तुति से ईश्वर में प्रीति होती है इस के द्वारा ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को भले प्रकार जान मनुष्य उन से अपने गुण कर्म स्वभाव को श्रेष्ठ बना सक्ता है।

प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहायता की प्राप्ति होती है और उपासना से प्रभु से मेल और उसका साक्षात् कार होता है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**संध्या की आवश्यकता**—जिस प्रकार पेट को भोजन की आवश्यकता है वैसे ही जीवात्मा को उपासना रूप धर्म कर्म की। जिस प्रकार जलादि के बिना बाहर की शुद्धि नहीं होती, वैसेही वेदादि सत्य शास्त्रों के स्वाध्याय तथा उपासना आदि के बिना अन्तःकरण मन बुद्धि चित्त और अहंकार की शुद्धि नहीं होती अतएव संध्या अवश्य करनी चाहिये।

**संध्या से लाभ**—योगदर्शन में कहा है "हेयंदुःखमनागतम्" अर्थात् कृत ( किये हुए ) पापों के संस्कार तथा अनागत ( आगे आने वाले ) पापों की निवृत्ति और निर्भयता—चित्त की स्थिरता—मन की विषयाशक्ति से निवृत्ति मिथ्या अहंकार को दूर करने बुद्धि की सूक्ष्मता और तीव्रता एवं प्रभु चरणों में मनको स्थित होने आत्मोन्नति प्राप्त करने के लिये संध्यारूपी ज्ञानगंगा में दोनों समय स्नान करना परमावश्यक है। मनु अ० २ श्लोक १०४ में लिखा है कि प्रतिदिन जल के समीप बैठकर अथवा जंगलादि एकान्त देश में—दत्तचित्त हो विधि पूर्वक गुरु मन्त्र को जपे।

अपांसमीयेनियतोनैत्यिकंविधिमास्थितः।
सावित्रीमध्यधीयीत गत्वारण्यंसमाहितः॥

श्लोक १०२ में कहा है कि प्रातःकाल की संध्या से रात्रि के और सायंकाल की सन्ध्या से दिन के पाप भाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दूर होते हैं। षडविंश ब्राह्मण ४। ५। में लिखा है कि दिन रात के संयोग समय प्रातः तथा सायंकाल परमात्मा का ध्यान करता हुआ संध्या करे। महर्षि व्यासजी का उपदेश है कि परमात्मा की नित्य उत्तम रीति–श्रद्धा एवं भक्ति से संध्योपासना करनी चाहिये। तै० २। २। २ में कहा है दोनों समग्र संध्या वन्दन करता हुआ मनुष्य सब प्रकार के कल्याण को प्राप्त करता है। ऋग्वेद १। १६४। ३९ जो परब्रह्म को जानते हैं वे ही जीवन को सफल कर सक्ते हैं। यजुर्वेद अ० ४० मंत्र १९ में कहा है "ओंक्रतोस्मर" अर्थात् हे जीव! कर्म करने वाले! परमदेव परमात्मा के चरण शरण में जा–उसका परम पवित्र नोम स्मरण कर उसी से तेरा कल्याण होगा।

**संध्या कितने काल करनी चाहिये**–समस्त वेदादि सत्शास्त्रएवं मनु आदि स्मृतिकार प्रातः और सायंकल ही संध्या करने की आज्ञा देते हैं। इन्हीं दोनों समय में चित्त की शान्तिएवं निश्चित्तता होती है। दिन रात का मेल भी इन्हीं दोनों समय होता है इसलिये इन्हीं दो समय संध्यो करना उचित है॥

**संध्या का समय**–मनु आदि ऋषियों ने कहा है कि प्रातः काल की संध्या सूर्य दर्शन से एक घंटा पूर्व और सायंकाल की सध्या सूर्यास्त के पीछे तारों के दर्शन तक करनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चाहिये। संध्या अपनी इच्छा शक्ति भक्ति प्रेम औरश्रद्धा के अनुसार उतने समय ही करनो चाहिये। जिस प्रकार समय पर वोया हुआ बीज लाभप्रद होता है वैसे ही ठीक समय पर की हुई सन्योपासना उत्तम फल के देने वाली होती है।

**संध्या की बैठक**—संध्या में बैठने का आसन पद्मासन ही सबसे श्रेष्ठ है इसी पर बैठने से सुख रहता है। शरीर को हिलावे नहीं। एक ही आसन पर बैठने से चित्त एकाग्र रहता है बार बार आसन बदलने से मन स्थिर नहीं रहता चौकी या पृथ्वी पर कुश का आसन बिछा उस पर गर्मी में सफेद कपड़ा एवं जाड़ों में ऊनी आसन बिछा लेना चाहिये संध्या के समय सिर गर्दन एवं रीढ़ की हड्डी सीधी रहनी चाहिये।

**संध्या समय मुंह**—प्रातःकाल पूरब को और सायंकाल पश्चिम की ओर को मुंह कर संध्या करनी चाहिये क्योंकि सूर्य की किरणों का मानवीय शरीर एवं अन्तरात्मा पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जैसे चित्र खेंचने की प्लेट पर प्रकाश की रश्मियों का जैसा प्रभाव पड़ता है वैसे ही चित्र बनता है ठीक उसी प्रकार सूर्य रश्मियों से अन्तःकरण में प्रकाश पड़ता है; और वैसे ही संकल्प तथा संस्कार उत्पन्न होते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**संध्या में विचार**—संध्या करने के समय मन में यह विचार रखना कि मैं पवित्र स्थान पर जा रहा हूँ मेरा कोई अपवित्र विचार न हो तथा मेरी आत्मा का परमात्मा के साथ मेल होगा। मैं जिसका मन में ध्यान करूँगा वह वैसा ही होजायगा।

मन की स्थिरता प्राणायाम से होती है जिसका वर्णन हम आगे करेंगे।

प्रिय पाठक! आपका शरीर वृक्ष के समान है जिसकी मूल संध्या और शाखा वेद, धर्मरूपी पत्ते माने गये हैं इसलिये मूल अर्थात् संध्या का सेवन यत्न से करना चाहिये क्योंकि मूल के नष्ट होजाने से वेद रूपी शाखा और धर्म कर्म रूपी पत्र स्थित नहीं रह सक्ते। हारीत-स्मृति अ० ४ श्लोक ४९ तथा मनु पाराशर, संवर्त, शंख, अत्रि आदितहर्षि एवं गरुड़, लिंग, भविष्यति, विष्णु, पद्मपुराण तृतीय सर्ग खण्ड अ० १९ शिवज्ञान संहिता अ० ७४ विंध्येश्वरी संहिता अ० ११ गीता अ० १०, देवी भागवत स्कन्ध ९ अ० १६ तथा स्कन्द ११ अ० २४ में गायत्री मंत्र के जप करने और उसी से नाना प्रकार के दुःखों की निवृति तथा प्रेत योनि से मुक्त होने का यही एक मंत्र मुख्य साधन बतलाया है। ऋषि महर्षि योगी तथा श्री कृष्ण, विदुर, रामचन्द्रादि महानुभावों ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी मंत्र को जपा और सब मंत्रों से श्रेष्ठ मान मनुष्य जाति को इसी मंत्र के जपने की आज्ञा दी है। अतः वैदिकी संध्या के साथ गायत्री का जप करना ही मानवीय शरीर का मुख्य धर्म बतलाया गया है। जो मनुष्य शरीर धारण कर संध्या एवं गायत्री का जप नहीं करते वह द्विज कहलाने का अधिकारी नहीं किन्तु उसको शूद्र माना है तथा उनको ब्रह्म इत्यादि पापों का भागी बतलाया गया है। अतः प्रातः और सायं संध्योपासनादि अवश्य करना चाहिये और 'नमो नारायण–नमो भगवते वासुदेवाय' आदि कपोल कल्पित मंत्रों तथा अनेक प्रकार की गढ़ी हुई गायत्री का जप करना उचित नहीं।

**कहानी**--एक योग्य पुरुष बहुत दिनों से बीमार थे, जिसके कारण उनसे चलना फिरना न होता था, रात दिन चारपाई पर पड़े रहते थे परन्तु स्थिर स्वभाव और समय के बन्धानू थे। प्रति दिन और प्रातःकाल और सायंकाल चारपाई ही पर पड़े पड़े ईश्वर का ध्यान किया करते थे, एक दिन प्रातःकाल एक तरुण मित्र उनसे मिलने को गये तो देखा कि आप भजन में मग्न हो रहे हैं इसलिये चुपचाप बैठ गये। जब वह सज्जन पुरुष निश्चिन्त हुये तब उस मित्र ने उनसे कहा कि अजी साहब! चारपाई पर पड़े पड़े अशुद्ध दशा में भजन करना योग्य नहीं, ऐसे भजन से न करना भला है। तब सज्जन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पूछा कि हे मित्र किस दशा में ईश्वर को भूलना चाहिये। तो उसने उत्तर दिया कि जब ऐसी दशा हो जैसी आप की। इस बात के सुनते ही सज्जन पुरुष की आंखों से आंसू निकल पड़े और चिल्ला उठे कि यदि इस अशुद्ध दशा में ईश्वर मुझे भूल जाता तो मेरी क्या दशा होती ?

फिर पण्डितजी ! तुम किस प्रमाण से कहते हो कि आज सब सूतक पातक के कारण भजन नहीं कर सकते। जब ईश्वर सब दशा में तुम्हारी सुध लेता है तो तुम्हें कब योग्य है कि उसका धन्यवाद करने से बन्द रहो, इसके उपरान्त शरीर भी अनित्य पदार्थ है, इसीलिये धर्म करने में कभी किसी दशा में न रुकना चाहिये। क्या ऐसी दशा में परमेश्वर की प्रजा नहीं रहती जो उसकी आज्ञा की उन दिनों नहीं मानती ? क्या पवन पानी को ग्रहण नहीं करते ? क्या अन्न का भोग नहीं लगाते ? फिर बड़े शोक की बात है कि शरीर का नित्य-कर्म किसी दशा में बन्द न हो और आत्मिक पञ्चयज्ञ बन्द कर दिये जावें ? यह अज्ञान नहीं है तो क्या है ? इसलिए किसी दशा में शुभ कर्मों को न त्यागना चाहिये। ऐसा ही यजुर्वेद अ० ४० मन्त्र २ में लिखा है कि संसार में कर्मों को करता हुआ सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात जब तक जीवन हो तब तक कर्म करता हुआ जीने की इच्छा करे। क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँसारिक फल भोग की इच्छा से पृथक् होकर काम करते हुए मनुष्य में वैदिक कर्म नहीं लिप्त होते जैसाकि—

कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः ।
एवंत्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरः ॥

नित्य और नैमित्तिक कर्मों को जो लोग त्याग कर, नगर को छोड़ जंगल चले जाते हैं वा नगर में रहते और कहते हैं कि हम निष्काम होगये अर्थात काम के बन्धन से छूट गये, उनको यह स्मरण रखना चाहिये कि जब तक स्थूल शरीर विद्यमान् है तब तक कर्मों से छुटकारा नहीं हो सकता ।

ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में स्पष्ट लिखा है और मनुजी महाराज भी यही कहते हैं, गीता में भी इसकी साक्षी मिलती है, फिर भला कर्मों से कैसे कोई पृथक् हो सकता है ? जो मनुष्य ऐसा कहते हैं वह पुरुषार्थी नहीं, आलसी हैं और ईश्वरीय नियमों से या तो वह बिल्कुल अनजान हैं या अपने घमण्ड के कारण उस सच्चे नियम अर्थात गायत्री मंत्र पर दृष्टि नहीं डालते । वह यह हैं—

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात् ॥

अर्थ ( ओम् भूर्भुवः स्वः ) जो अकार उकार और मकार के योग से ( ओम् ) यह अक्षर सिद्ध है सो यह परमेश्वर के सब नामों से उत्तम नाम है जिसमें सब नामों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अर्थ आ जाते हैं जैसा पिता पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है वैसा ही ओंकार के साथ परमात्मा का है, इससे सब नामों का बोध होता है जैसे अकार से 'विराट्' जो विविध जगत् का प्रकाश करने वाला है 'अग्नि' जो ज्ञान स्वरूप और सर्वत्र प्राप्त हो रही है। 'विश्व' जिसमें सब जगत प्रवेश कर रहा है, जो सर्वत्र प्रविष्ट है इत्यादि नामार्थ अकार से जानना। हिरण्यगर्भः, जिसके गर्भ में प्रकाश करने वाले सूर्यादि लोक हैं और सूर्यादि लोकों के प्रकाश करने वाले हैं इससे ईश्वर को हिरण्यगर्भ कहते हैं। ज्योति के अर्थ हिरण्य, अमृत और कीर्ति है। वायु जो अनन्त बल वाला और सब जगत् का धारण करने वाला है। 'तैजस' जो प्रकाश स्वरूप और सब जगत का प्रकाशक है इत्यादि अर्थ उकार से जानना चाहिये।

'ईश्वर' जो सब जगत् का उत्पादक सर्वशक्तिमान् स्वामी और न्यायकारी है। आदित्य, जो नाशरहित है। 'प्राज्ञ' जो ज्ञानस्वरूप और सर्वज्ञ है इत्यादि अर्थ मकार से समझ लेना चाहिये।

यह संक्षेप से ओंकार का अर्थ किया। अब महाव्याहृतियों का अर्थ लिखते हैं—( भूरिति वै प्राणः ) जो सब जगत् के जीवन का हेतु और प्राण से भी प्रिय है इससे परमेश्वर का नाम 'भूः' है ( भुवरित्यपानः ) जो मुक्ति की इच्छा करने वालों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दुखों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से अलग करके सर्वदा सुख में रहता है इसलिये परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। ( स्वरिति व्यानः ) जो सब जगत में व्यापक होके सबको नियम में रखता है और सबको ठहरने का स्थान तथा सुखस्वरूप है इससे परमेश्वर का नाम स्वः है। यह व्याहृतियों का संक्षेप से अर्थ लिखा गया।

अब गायत्री मंत्र का अर्थ लिखते हैं ( सवितः ) जो सब जगत् का उत्पन्न करने वाला और ऐश्वर्य का देने वाला। ( देवस्य ) जो सबके आत्माओं का प्रकाश करने वाला सब सुखों का दाता। ( वरेण्यम् ) जो अत्यन्त ग्रहण करने योग्य है। ( भर्गः ) जो शुद्ध विज्ञान स्वरूप है, ( तद् ) उनको ( धीमहि ) हम लोग सदा प्रेम भक्ति से निश्चय करके अपने आत्मा में धारणा करें किस प्रयोजन के लिये कि ( यः ) जो पूर्वोक्त सविता देव परमेश्वर है वह ( नः ) हमारी ( धियः ) बुद्धियों को ( प्रचोदयात् ) कृपा करके बुरे कर्मों से पृथक् करके सदा उत्तम कर्मों में प्रवृत करे! इसलिये सब मनुष्यों को योग्य है कि सच्चिदानन्द स्वरूप, नित्यज्ञानी नित्ययुक्त, अजन्म, निराकार, सर्व शक्तिमान्, न्यायकारी सर्व व्यापक, कृपालु, संसार को धारण करने वाले परमेश्वर की यथा विधि सदाचारयुक्त उपासना करें, तो फिर किसी प्रकार के पाप नहीं लगते अर्थात् ऐसे पुरुष किसी प्रकार के पाप कर्म का मन से भी विचार नहीं करते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## वेदपाठ अर्थात् स्वाध्याय

प्यारे सुजनों ! संध्या करने के पश्चात् प्रति दिन वेद पाठ करने की आज्ञा है, देखो व्यासमृति अ० ३ श्लोक ९, १०, दक्षस्मृति अ० २ श्लोक २० । विष्णुस्मृति अ० २ श्लोक ३३ और मनुजी महाराज आज्ञा देते हैं कि जिस कार्य के करने से वेद पाठ करने में विघ्न हो और धन भी मिलता हो तो भी उस वेद पाठ को न छोड़े क्योंकि वेद पढ़ने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। अथर्ववेद में कहा है कि वेद के अभ्यास और प्रकाश से कामनायें पूर्ण होती हैं और अ० ४ श्लोक १९ में भी वेद पढ़ने की आज्ञा है । श्रीकृष्ण महाराज ने गीता में कहा है कि स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है। याज्ञवल्क्यस्मृति में लिखा है कि जो द्विज प्रतिदिन वेद पढ़ता है वह बड़े फल को पाता है। संवर्तस्मृति के ९ श्लोक में कहा कि गायत्री के जप के पीछे वेद पढ़ने का आरम्भ करे। प्यारे पाठकगण ! इसी प्रकार बहुधा आज्ञायें पाई जाती हैं कि संध्या करने के पीछे वेद पाठ करना अभीष्ट है। यथार्थ में इससे अनेक लाभ हैं प्रथम तो वेद उपस्थित रहते थे। दूसरे किसी प्रकार की भूल नहीं होती थी। तीसरे संतानों के लिये दृष्टान्त हो जाता था। चौथे वेद पाठ से उनके पठन पाठन की प्रथा प्रचलित रहती थी कि जिसके कारण देश में आनन्द ही आनन्द दृष्टि आता था। अब यह प्रथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उठ गई अर्थात् गायत्री मन्त्र के स्थान पर अनेक मन्त्र हो गये गायत्री भी एक नहीं वरन् २४ होगईं जिसको आपके अवलोकनार्थ हम यहां लिखते हैं—

१ गणेश गायत्री—ओं तत्पुरुषाय विद्महेवक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो गणेशः प्रचोदयात्। २ परमहंस—ओं सोहं हंसाय विद्महे परम हंसता धीमहि सोहं तत्वमसी प्रचोदयात्। ३ विष्णु—ओं नारायण विद्महे वासदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। ४ शिव—ओं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्राय प्रचोदयात्। ५ नरसिंह—ओं वज्रकाय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो नरसिंहः प्रचोदयात्। ६ सूर्य—ओं भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि सूर्यःप्रचोदयात्। ७ अग्नि—ओं वैश्वानरायविद्महे कपिलाय धीमहि तन्नो अग्नि प्रचोदयात्। ८ ब्रह्म—ओं भुः ओं भुवः ओं महः ओं जनः तपः ओं सत्यम् ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनःप्रचोदयात् ओं आपोज्योतिरसोमृत ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोंततः सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छंदः सूर्यो देवता आयुस्पर्शने विनियोगः। ९ दुर्गा—ओं कात्याय विद्महे कांतयांकुमारी धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्। १० बलभद्र—ओं तां पुरुषाय विद्महे महादेव धीमहि तन्नो परामुख प्रचोदयात्। ११ गरुड़—ओं तत्पुरुषाय विद्महे महास्वधाय धीमहि तन्नो गरुणः प्रचोदयात्। १२ दत्तात्रयी—ओं दत्तात्रयाय विद्महे दिगम्बराय धीमहि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तन्नो दन्तः प्रचोदयात् । १३ ब्रह्मा-ओं चतुर्मुखाय विद्महे कमण्डलाय धराय धीमहि प्रचोदयात् । १४ स्वरस्वती-ओं सरस्वत्याय विदमहे शशुवराय धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् । १५ क्षत्रिय-ओं तत्पुरुषाय विदमहे भूतधात्र धीमहि तन्नो क्षत्री प्रचोदयात् । १६ वैश्य-ओं तत्पुरुषाय विद्महेत्रयो देवाय धीमहि तन्नो वैश्य प्रचोदयात् । १७ शूद्र गा०-ओं तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नो शूद्रः प्रचोदयात् । १९ पशु गा०-ओं पशुपतये विद्महे महादेवाय धीमहितन्नो पशु प्रचोदयात् । २० निरंजन-ओं सूर्यात् सोमाय निरंजन निराभाषयते प्रचोदयात् । २१ वनस्पति गा०-ओं स्थावराय विद्महे महा बनस्पतये तन्नो वृक्ष प्रचोदयात् । २२ साम गा०-ओं सोमाय विदमहे निरं जन धीमहि तन्नो में प्रचोदयात् । २३ जल-ओं जलेश्वराय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो जल प्रचोदयात् । २४ पृथ्वी गा०-ओं वसुंधराय विदमहे महादेवाय धीमहि तन्नो भूमि प्रचोदयात् ।

मान्यवरो ! जिस प्रकार एक गायत्री के स्थान पर चौबीस गायत्री हो गईं वैसे ही वेद पाठ के स्थान पर सूर्य महात्म, गंगालहरी, हनुमान चालीसा विष्णु सहस्र नाम, गोपाल सहस्र नाम, पंच रत्न आदि पुस्तकों का पाठ होने लगा इसलिये आप इन मिथ्या पुस्तकों के स्थान में वेदों का स्वाध्याय करने का नियम कर लीजिये उसी से आपका कल्याण होगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देवयज्ञ-देवयज्ञ को अग्निहोत्र-होम तथा हवन भी कहते हैं। जिस कर्म से (अग्नि ज्ञान स्वरूप) परमेश्वर की आज्ञापालन करने के लिये भौतिक अग्नि में सुगन्धादि पदार्थों का दान किया जाता है वह कर्म अग्निहोत्र कहलाता है। हवन प्रातःकाल-सायंकाल पर्वों पर तथा आनन्दोत्सवों पर अवश्य करना चाहिये इससे उत्तम बुद्धि-शूरता-धीरता बल तथा आरोग्यता की प्राप्ति होती है। यजुर्वेद में कहा है कि जो मनुष्य अग्निहोत्र से जलादि पदार्थों को शुद्ध कर सेवन करते हैं उनके लिए सुख रूप अमृत की निरन्तर वर्षा होती है। ऋग्वेद मं० १। अ० १४। सू० ९३ मं० ६ में लिखा है कि जो विद्वान् वायु, वृष्टि, जल और औषधियों की शुद्धि के लिये अच्छे संस्कार किये हुए हवि को अग्नि के होम के श्रेष्ठ सोमलतादि औषधियों की प्राप्ति कर उनसे प्राणियों को सुख देते हैं वे शरीर आत्मा के बल से युक्त होते हुये पूर्ण सुख करने वाली आयु को प्राप्त होते हैं और ऐसा ही य० अ० १८ मं० २२ में लिखा है कि जो मनुष्य प्रति दिन अग्निहोत्र करते हैं वे समस्त संसार के सुख को बढ़ाते अर्थात् आप सुखी होकर औरों को भी सुख देते हैं।

भुज्यः सुपर्णायज्ञो गन्धर्वस्त्व दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम।
सन इदं ब्रह्मप्रतं पातु तस्मै स्वाहाः वाट्ताभ्याः स्वाहाः॥

और भी कहा है-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सायं सायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः सौमस्य ।
धाता वसोर्व वसोर्व सुदान एधिवयं स्वन्धानास्तन्वं पुषेम् ॥

यह हमारा गृहपति अर्थात घर और आत्मा का रक्षक यज्ञ प्रति दिन सायंकाल और प्रातःकाल अच्छे प्रकार से किया जावे। यज्ञ जिस प्रकार आरोग्यता और आनन्द को देने वाला है उसी प्रकार उत्तम से उत्तम वस्तुओं और धन का देने तथा बढ़ाने वाला प्रसिद्ध है। इसलिये ईश्वर आज्ञा करते हैं कि हे मनुष्यो! इस यज्ञको करते हुए अपने शरीर और आत्माको पुष्ट करो ऐसाही चारों वेदों में कहा है। इसी के अनुसार छांदोग्य उपनिषद् में लिखते हैं, ( त्रयोधर्मस्कन्धाः यज्ञाध्ययनदानादि इति ) धर्म के उत्तम अंग तीन हैं। यज्ञ, अध्ययन और दान, इन सब में भी सब से पूर्व यज्ञ आवश्यकीय बतलाया गया है। और सम्वर्तस्मृति अ० १ श्लोक ८ में लिखा है 'अग्निकार्यश्चकुर्वीत' और व्यासस्मृति अ० १ में आज्ञा है 'मन्त्रहुतिक्रिया' कात्यायन स्मृति खंड ३१७ में भी दोनों समय अग्निहोत्र की आज्ञा है। दक्षस्मृति अ० २ श्लोक २३, ३८ में भी यही उपदेश है 'सन्ध्या कर्मावसाने तुस्वयं होमो विधीयते। विष्णु स्मृति अ० श्लोक ३३, ३७ हारीतस्मृति अ० १ श्लोक २८ 'कृतहोमस्तु भंजीत सायं प्रातरुदीधी और अ० ४ श्लोक २० शंखस्मृति अ० श्लोक १५ 'सायंप्रातश्च जुहुयादग्निहोत्रं यथा विधि।' याज्ञवल्क्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्मृति अ० २ श्लोक २५ अग्निकार्यं ततः कुर्यात् । गीता अ० २ श्लोक १४ में उपदेश है कि सकल प्राणियों का जीवन अन्न से होता है और अन्न वर्षा से होता है और वर्षा यज्ञ से होती है । यथा–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः ॥

और ऐसा ही विष्णु पुराण अ० १ मं० ६ श्लोक ८ में लिखा है । पद्मपुराण अ० ३ में कहा है कि यज्ञ करने से देवता प्रसन्न हो कर जल बरसाते हैं जिससे मनुष्य की उन्नति होती है इस कारण यज्ञ ही सब धर्मों की जड़ है और कल्याण का हेतु है । ऐसा ही विष्णुपुराण अ० १ अ० ६ में लिखा है । नरसिंहपुराण अ० ५८ से स्पष्ट प्रकट होता है कि संध्या करने के पश्चात् अग्निहोत्र करे । अ० १३ में लिखा है कि जब राजा बेंन ने यज्ञादि कर्मों को बंद कर दिया तब ऋषिजनों ने उससे जाकर कहा, कि हेराजन् ! यज्ञादिकर्म करने की आज्ञा दीजिये जिससे धर्म का नाश न हो यह सब संसार यज्ञ करने से ही चला जाता है और धर्म के क्षीण होने से जगत् भी क्षीण हो जाता है । देवी भागवत् स्कंध ३ अ० ६ श्लोक ४२ में लिखा है कि जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यज्ञों को करते हैं उनको सुख प्राप्त होते हैं ।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या नाना यज्ञैः सदक्षिणः ।
यजिष्यन्ति विधानेन शर्वान्वः सुसमीहिताः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पद्मपुराण तृतीय खण्ड अध्याय १६ में ब्रह्मा ने नारद जी से कहा है कि जो मनुष्य ब्राह्मणों की पूजा कर विप्रों से श्रद्धा पूर्वक यज्ञादि कर्म कराते हैं उनकी आयु, यश, विद्या और धन की वृद्धि होती है पद्मपुराण द्वितीय भूमिखण्ड अ० ५१ में गोमिल ने कहा है कि जो ब्राह्मण अग्निहोत्र का कभी त्याग नहीं करता वह ब्रह्मलोक को जाता है। चाणक्यनीति में लिखा है "अग्निहोत्र फलो वेद" अर्थात् पढ़ने का फल उसी समय होता है जब मनुष्य अग्निहोत्र करता है। इसी प्रकार विदुर नीति में आज्ञा है और ऐसा ही नारद जी ने युधिष्ठिर से कहा है। शान्ति-पर्व में नकुल महाराज का वचन है कि यज्ञ करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। देवीस्थानी महर्षि का वचन है कि यज्ञ करने से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनायें सिद्धि होती हैं यम ने गौतम से कहा है कि अश्वमेध यज्ञ करने से उत्तम लोक मिलता है। राजा जयति का वचन है कि यज्ञ करने से दीर्घायु होती है। विदुरमहाराज कहते हैं कि यज्ञ करना धर्म का एक लक्षण है। भीष्म जी कहते हैं कि अग्निहोत्र करने से स्वर्ग मिलता है। इसी पर्व के अ० ५६ से प्रकट है कि श्रीकृष्ण महाराज प्रति दिन हवन किया करते थे और ऐसा ही श्रीमद्भागवत स्कंध १ उत्तरार्द्ध अ० १ श्लोक २४, २५ में लिखा है। अयोध्याकाण्ड सर्ग ३२ श्लोक २



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से प्रकट होता है कि लक्ष्मण महाराज अपने गुरुपुत्र के यहाँ गये थे तो उस समय वह वहाँ अग्निहोत्र करने के लिये अग्नि स्थापन कर रहे थे। सर्ग ९९ से स्पष्ट रूप से विदित हो रहा है कि जब भरत जी रामचन्द्र जी से मिलने चित्रकूट पर गये तो वहां रामचन्द्र अग्निहोत्र कर चुके थे। सर्ग १० श्लोक २ से प्रकट है कि जब भरत जी रामचन्द्र जी से मिले तो श्रीराम जी ने पूंछा कि तुमने अग्निहोत्रादि कर्मों को विधि से जानने वाले प्रतिमान सरल स्वभाव पुरोहित को नियत किया है? सर्ग ११५ भरत आदि प्रातः अग्निहोत्र जपादि कर श्रीराम के पास गये थे।

लङ्काकांड सर्ग ३५ में माल्यवान ने रावण से कहा कि श्रीराम जी विधि पूर्वक नित्य अग्नि में आहुति देते हैं।

अयोध्याकांड सर्ग २० श्लोक १५ वा १६ से विदित है कि जब रामचन्द्र जी महाराज बन जाने के लिये उद्यत हुए और जिस समय माता कौशिल्या से आज्ञा लेने गये थे उस समय माता जी रेशमी वस्त्र धारण किये परमानन्द के साथ नित्यव्रत में लगी हुई मंत्र पढ़कर अग्नि में आहुति दे रही थीं।

साक्षौमवसनाहृष्टा नित्यं व्रतपरायणा।
अग्निं जुहोतिस्मतदा मन्त्र वत्कृतमंगला॥ १६॥
प्रविश्यतु तदारामो मातु रन्तः परंशुभम्।
ददर्श मातरं तत्रहा यजन्तो हुताशनम्॥ १७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सर्ग ५८ से प्रकट है कि श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने सुमन्त मन्त्री के द्वारा माता कौशिल्या जी से कहला भेजा था कि जिस प्रकार तुम सदा नित्य धर्म में लगी रहती थीं, उसी भांति अब अग्निहोत्रादि करती रहना।

उत्तरकांड सर्ग २४ से विदित होता है कि सीता जी प्रातःकाल से मध्यान समय तक देव कार्य करती थीं।

पद्मपुराण तृतीयसर्ग खंड अध्याय २४ श्लोक १२ से प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि अहिल्या अपने पति के बाहर जाने पर अग्निहोत्रादि सब क्रिया अपने आप करती थी। पुराणों के पाठ करने से प्रकट होता है कि जब पुराणों की कथा को सुने तो प्रथम यज्ञ करावे और जब समाप्त हो तो यज्ञ करे। पद्मपुराण षष्ट उत्तरखण्ड अ० २२ में लिखा है कि जो नित्य हवन करता है वही वैष्णव है। बामन पुराण अ० ११ में लिखा है कि यज्ञ करना धर्म है। इसके उपरान्त गङ्गा के तट पर दक्ष प्रजापति ने पुष्कर में ब्रह्मा ने, यमुना के तट पर इन्द्र ने विस्तृत यज्ञ किया था। जिस में ब्रह्मा, शिव, विष्णु के अतिरिक्त अन्य देवता भी पधारे थे। स्वयंभुमुनि ने पूर्व समय में मन्दर पर्वत पर यज्ञ किया था, राजा दथरश ने पुत्रेष्ठी और अश्वमेध यज्ञ किये थे और इनके राज्य में प्रतिदिन हवन करने वाली प्रजा थी। राजा अम्बरीष और श्रीरामचन्द्र जी ने अश्वमेध, राजा युधिष्ठिर ने राजसूय और पंचाल देश के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राजा ने पुत्र के निमित्त यज्ञ किया कि जिससे धृष्टद्युम्न पुत्र और द्रौपदी सी सुकन्या उत्पन्न हुई थी। राजा बलि ने सिद्धाश्रम पर और राजा जनक ने मिथला देश में बड़ा भारी यज्ञ किया था। श्रीरामचन्द्र को विश्वामित्र महाराज यज्ञ की रक्षा के निमित्त लेगये थे और उन्होंने रावण को मार अयोध्या में राजसूय यज्ञ किया था। शिवपुराण ज्ञान खण्ड अ० ७ श्लोक २ में लिखा है कि जब शिव और दक्ष का विरोध हो गया था तब दक्ष ने देवताओं के समीप जाकर यज्ञ किया था। नरसिंह पुराण अ० १७ में लिखा है कि कुरुक्षेत्र में परशुराम जी ने यज्ञ किया था।

इसके उपरांत प्राकृतिक नियमों के देखने से ज्ञात होता है कि वायु शुद्धि के दो ही मुख्य उपाय हैं। आंधियों का चलना द्वितीय वायु में सुगन्धित पदार्थों का मिलना। आंधी आने का मूल कारण अग्नि है, सूर्य की गर्मी का हवा पर बहुत असर होता है इससे आंधी चलती है अर्थात् सूर्य की उष्ण किरणें वायु के परमाणुओं को स्थूल से सूक्ष्म कर देती हैं जिससे एक स्थानको हवा हलकी होकर दूसरे स्थान में जाती है और उसके स्थान पर दूसरी हवा आती है। इस परस्पर की टक्कर से हवा बहने लगती है। अग्नि का यह स्वाभाविक गुण है कि जिस पर बल करती है उसके परमाणुओं को छिन्न भिन्न कर देती है इसके प्रभाव से हवा का परिचालन हो अधिक टक्कर से आंधियां आती हैं कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिनसे बहुत दिनों का बसा हुआ दुर्गंधित वायु प्रचण्ड वेग के कारण सब बाहर निकल जाता तथा स्वच्छ वायु आजाता है इसके उपरांत वृक्षों से भी सदा सुगंधित वायु जिसको प्राणपद वायु कहते हैं निकला करता है। मानों परमेश्वर जगत् रक्षक स्वयं वायु की शुद्धि के लिये सूर्य को अग्नि और वृक्षों के साकल्य द्वारा हवन कर जीवों को उपदेश करता है कि तुम लोग भी इसी भांति करो, बस इस शिक्षा और लाभदायक कार्य के अर्थ सुगंधित रोग नाशक पुष्टि कारक पदार्थ जलाये जाते हैं।

वायु की दुर्गंध दूर करने से आरोग्यता मिलती है। यह तो सब मनुष्य जानते हैं कि पवन पानी के बिगड़ने से रोगों की बहुधा उत्पत्ति होती है और उसी के अधिक बिगड़ने से बिशूचिका आदि बड़े २ रोगों की उत्पत्ति हो जाती है जिससे सहस्रों जीवों की हानियां हो जाती हैं। डाक्टर वर्मन ने कपूर अर्क को बनाकर हज़ारों हैज़ा के रोगियों को अच्छा किया है, लाखों शीशियां उनकी प्रति दिन बिकती हैं। वही कपूर हवन में पड़ता है इसी भांति और पदार्थों के गुणों को जानों जो हवन में पड़ते हैं। यदि उन पदार्थों के अलग २ गुणों की व्याख्या की जाय तो एक पुस्तक बन जायगी, इस से प्रत्येक के गुण नहीं लिखे। अग्नि में जो वस्तु पड़ती है उसके परमाणु भिन्न २ होकर वायु मण्डल में मिल जाते हैं क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्राकृतिक नियम है कि हलकी वस्तु ऊपर को जाती है और भारी नीचे को आती है, जैसे तेल पानी से हलका होने के कारण ऊपर रहता है और घी आंच पर रखकर देखिये कि पिघल कर पतला हो जाता है और भाप उठने लगती है, थोड़ी देर पीछे देखिए तो कुछ नहीं रहता। क्या वह नष्ट होगया ? नहीं, वह सूक्ष्म होकर हवा में मिल गया। इसी लिये प्रत्येक प्राणी को हवन करना अभीष्ट है।

## पितृ यज्ञ

सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में उपदेश है कि माता पिता और वयोवृद्ध एवं विद्यावृद्ध पितरों को भली भांति सत्कार करें उनसे शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति की शिक्षा लेवे। उनकी सेवा और पुरुषार्थ से अपने जीवन को निर्विघ्न बनावे। देखो अथर्ववेद श्लोक २२ में लिखा है कि उत्पत्ति के समय जो क्लेश माता पिता सहते हैं उससे मनुष्य सौ वर्ष में भी उऋण नहीं हो सकता; परंतु माता इन सबसे बड़ी है। जैसाकि।

यंमाता पितरौ क्लेशं सहते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥

हारीतस्मृति अ० ३ श्लोक ११ में भी यही उपदेश है कि इन तीनों की सेवा करने से देवता प्रसन्न होते हैं। शंखस्मृति अध्याय २ श्लोक ४ में लिखा है कि माता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पिता और गुरु की सदा पूजा करे। जो इन तीनों का आदर सत्कार नहीं करता उसी की सब क्रियायें निष्फल होती हैं। बनपर्व अ० २१४ में धर्म व्याध ने एक उत्तम ब्राह्मण को उपदेश किया है कि मैं माता, पिता को परम देवता समझता हूँ और इन्द्र के समान मैं इनका सन्मान करता हूँ। गृहस्थ का परम धर्म यही है कि इनकी सेवा टहल करता रहे। यही शांतिपर्व अ० ११९ में गौतम ऋषि ने यम से और अ० २१ में इन्द्र ने प्रह्लाद से, कुन्ती ने कर्ण से और श्रीरामचन्द्र से कौशिल्या ने कहा है कि माता, पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है। माता पिता, धर्म अर्थ, काम, मोक्ष देने वाले शरीर को उत्पन्न करते हैं इसलिये सौ वर्ष तक सेवा करने पर भी उऋण नहीं हो सकते। जो लोग माता पिता की सेवा नहीं करते उनको परलोक में यमदूत उनका ही मांस काट २ उन्हीं को भोजन कराते हैं।

प्रियवरो! इस पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् श्रत् नाम सत्य का है 'श्रत्सत्यं दधाति या क्रिया श्रद्धा श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्' जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसका श्रद्धा और जो श्रद्धा से किया जाय उसका नाम श्राद्ध है। और 'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितॄन् तत्तर्पणम्' जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान् माता पितादि पितर तृप्त हों उसको तर्पण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहते हैं। सच तो यह है कि जो बालक और बालिकायें अपने माता पिता की सेवा और आज्ञा पालन कर पितृ-ऋण से उद्धार पाते हैं उन्हीं को सब प्रकार के आनन्द और सुख मिलते हैं। हे प्यारे बालको! माता पिता कैसे ही क्यों न हों परन्तु उनकी सेवा टहल यथा योग्य करना तुम्हारा परमधर्म है। क्योंकि तुम्हारे माता पिता ही ने तुमको सर्वगुणालंकृत किया है उन्होंने तुम्हारे अर्थ अपना तन मन धन लगा कर तुमको इस पद पर पहुंचाया है फिर तुम उन्हीं को तुच्छ दृष्टि से देखते हो। धिक्कार तुम्हारे विद्या और गुणों पर! क्योंकि यदि वह अपना आत्मवत् तुमको न जानते और न मानते तो तुम आज क्या इस पद पर होते? नहीं, सच पूंछो तो यह सब उन्हीं का प्रभाव है। इसलिये तुम उनकी सेवा टहल सदा नम्रता पूर्वक करते रहो और धर्म सम्बन्धी आज्ञाओं को मानों। देखो प्राचीन समय में श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने अपनी सौतेली माता की आज्ञा मान धन, संपत्ति राज त्यागकर १४ वर्ष जङ्गल में व्यतीत किये। सचमुच वीरता और भाग्यशीलता के यही लक्षण हैं जिनके कारण श्रीराम का नाम जगत् में सदा ही बना रहेगा। वर्त्तमान समय को देखिये कि जहां पुत्र को होश आया बाहर भीतर आने जाने लगे और प्राण प्यारी के दर्शन हुए फिर तो वह आठ पहर चौसठ घड़ी के लिये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गलेका हार होजाती है, मित्रो के साथ हलुआ पूरी उड़ाते पान चबाते स्वच्छ वस्त्र पहनते उत्तम पलंग पर शयन करते, खसकी टट्टी में बैठ शीतलता प्राप्त करते परंतु माता पिता दो दो दानों को तरसते कोई यह भी नहीं पूंछता कि तुम कौन हो कहां और किस प्रकार दिन काट रहे हो फिर भी माता, और पिता आपने वात्सल्य प्रेम से अपने प्राण तक न्यौछावर किये हुए संतान की निन्दा होगी यही सोच कभी कोई शब्द मुख से नहीं निकालते परन्तु उनको बात करना भी बुरा लगता है इसलिये प्रथम तो मुखारविंद से बोलते ही नहीं यदि कुछ कहा भी तो इस प्रकार मानों किसी सेवक को शिक्षा कर रहे हो धन्य है ? क्या आप भूल गये जब माताने अपने दूध से तुम्हारे प्राणों की रक्षा की थी प्रति समय छाती से लगाये तुम्हारी उन्नति की ही चिंता करती थी शोक ! उसी जननी के साथ ये व्यवहार ?

प्यारे बच्चो तुम्हारा ऐसा व्यवहार अत्यंत अनुचित ही नहीं वरन वेद की आज्ञा और शिष्टाचार के विरुद्ध है। तुमको सदा अपने माता पिता एवं अन्यान्य विद्यावद्दं और वयोवृद्धि गुरुजनों का शिष्टाचार पूर्वक सेवा करनी उचित है, क्योंकि शिष्टाचार मनुष्य और मधुर वचन के सद्भावों का निर्मल दर्पण है जिसके द्वारा मनुष्य के आन्तरिक भाव प्रकट होते हैं जिससे सम्पूर्ण जीव सहज ही संतुष्ट होजाते हैं। जैसाकि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मधुर बचन सो जाय मिटि, उत्तम जन अभिमान।
तनक शीत जल सों मिटै, जैसे दूध उफान ॥

इस कारण जो कोई इसका त्याग करता है मानों वह अपनी जड़ आप काटता है, जो शिष्टाचार सहित प्रिय बचन बोलते हैं वह बड़ी २ आपदाओं को सुगमता से टाल देते हैं और जिन पुरुषों में यह शक्ति होती है वही देश का नाना भांति से उपकार कर सकते हैं। यह वह पदार्थ है कि जिससे शत्रु के मन में दया आजाती है, सच पूंछो तो वशीकरण मंत्र यही है, जैसा कि कहा है-

तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मन्त्र है, तजि देउ वचन कठोर ॥

प्यारे भाइयो ! जो संसार में सुखकी इच्छा हो तो कदापि कटु बचन और व्यङ्ग शब्द न उच्चारण करो यह विदेश में भी अपमान कराता है। विदुरजी ने भी कहा है कि सुन्दर वाणी के बोलने से संसार में अनेकान सुख मिलते हैं। देखो श्री रामचन्द्र जी ने अपने मधुर और शीतल बचनों से परशुराम के क्रोध को ऐसा शांत किया कि वह मारने के पलटे आशीर्वाद देकर बनको चले गये ? इसलिये शास्त्र और बुद्धिमानों की यही शिक्षा है कि अपने बड़ों का सत्कार शिष्टाचार नम्रता पूर्वक प्रिय वाक्यों से करें क्योंकि इसीसे सर्व जीवों को आनन्द प्राप्त होता है, जैसा चाणक्य ऋषि ने कहा है-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मातदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥

माता पिता गुरु इत्यादि की तन मन धन से सेवा करो कि जिससे संसार में यश और सुख तथा परलोक में आनन्द प्राप्त हो नहीं तो इसी पाप में आपको नाना भांति के क्लेश उठाने पड़ेंगे, संसार में अपयश होगा।

प्यारे भाइयो ! वास्तव में जीवित माता पिता की सेवा शुश्रूसा करने का नाम ही श्राद्ध, तर्पण और पितृयज्ञ है। परन्तु शोक है कि वर्त्तमान् में आसौज कृष्णपक्ष में घर और गयाजी में जाकर पानी देने का नाम तर्पण और ब्राह्मणों का भली भांति उत्तमोत्तम स्वादिष्ट वस्तुओं का भोजन कराना ही श्राद्ध समझ रक्खा है और कहते हैं कि इन्हीं के द्वारा उनके माता पिता प्रेत योनि से छूट स्वर्ग चले जायेंगे। भद्र पुरुषो उनकी यह बात सर्वथा निर्मूल और मिथ्या है। जीवित माता पिता की तो प्रेम पूर्वक सेवा, आदर और सत्कार न करे और उनकी मृत्यु के पश्चात् संसार के दिखावे को तन मन धन अर्पण करने को तैयार होजावें जैसा कि किसी ने कहा है-

जियत न देहों कौरा, मरे डुलैहौं चौरा।
जियत पिता से जङ्गी जङ्गा, मरे पिता पहुँचाऊँ गङ्गा।
जियत पिता की पूंछे न बात, मरे पिता को दाल और भात।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सज्जन पुरुषो ! मृतक श्राद्ध का करना अनुचित, वेद शास्त्र और बुद्धि के विरुद्ध है यदि आप मरे हुओं का श्राद्ध तर्पण मानेंगे तो बहुत ही शंकायें इस विषय में उत्पन्न होंगी कि जिनका समाधान होना बिल्कुल असम्भव हो जायगा प्रथम तनिक ध्यान दीजिये कि श्राद्ध क्यों किया जाता है ? तो ज्ञात होता है कि अपने पुरुषाओं को आराम देने के अर्थ। क्या महाशय ! आप किसी प्रकार अपने मरे हुए पुरुषाओं को आराम पहुँचा सकते हैं। कभी नहीं क्योंकि वेदादि सत्य शास्त्र पुकार २ कर कह रहे हैं कि मनुष्य को अपने ही किये हुए कर्मों का फल मिलता है, मरने पर माता पिता पुत्र दि कुछ नहीं कर सकते। देखिये, य० अ० २ मंत्र २८ में लिखा है—

अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकम्।
तन्मेराधीदमहंय एवास्मि सोस्मि॥

जैसे प्राणीमात्र कर्म करते हैं वैसे ही फलको पाते हैं, प्राणीमात्र अपने कर्म के विरुद्ध फल को कभी नहीं प्राप्त होते इसलिए सुख भोगने के लिए धर्मयुक्त कार्यों को करे जिस से कभी दुःख न हो। और मनु० अ० ४ श्लोक २३८ में भी ऐसा ही लिखा है, जैसाकि—

नामुत्रहि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः।
न दारं न शांतिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः॥

इससे प्रत्यक्ष प्रकट है कि जो मनुष्य भोजन करता है उसकी भूख जाती है और जो औषधि पान करता है उसीका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रोग नाश होता है इसके विपरीत कभी दृष्टिगोचर नहीं हुआ, फिर भला आपके कर्म आपके पुरुषाओं को क्यों कर आराम पहुंचा सकते हैं ? तुलसीदास जी ने भी कहा है—

कर्मप्रधान विश्व कर राखा, जो जसकरे सो तस फल चाखा।

क्या कोई संसार में ईश्वरीय विषय के विरुद्ध भी हो सकता है ? कदापि नहीं। गीता में कृष्ण महाराज ने कहा है धर्मयुक्त कार्य करने से किसी की दुर्गति नहीं होती। महाभारत में लिखा है एक ही मनुष्य पाप करता है वही भोगता है। श्रीमद्भागवत स्कन्ध १० अ० २४ पूर्वार्द्ध श्लोक १४ में लिखा है कि कर्म का फल कर्त्ता को ही मिलता है अन्य को नहीं इसके उपरान्त जहां वस्तु और सुख का भोक्ता होता है वही सुख होता है अन्यथा नहीं, जहाँ जल होता है प्यास वहीं शान्ति होती है। जहां दीपक होता है वहीं उजाला होता है। फिर भला यदि अपने पुरुषाओं को सुख पहुँचाने के लिये ब्राह्मणों को भोजन भी कराए, तो क्या उनको सुख मिल सकता है ? कदापि नहीं। क्या मैं खाकर आप की तृप्ति कर सकता हूँ ? यदि ऐसा हो सकता है तो बड़ा ही अच्छा है और परदेश में रहने वालों को भोजनों का भी कष्ट दूर होना सम्भव है परन्तु ऐसा नहीं होता इसके अतिरिक्त जीवितावस्था में वे दिन रात दो तीन वार भोजन करते और चार पांच दफ़े पानी भी पीते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और जब मरने के पीछे उनको साल में एक बार भोजन करने और कनागतों में पन्द्रह दिन पानी पीने की आवश्यकता होती है, सालभर तक बिना भोजनों और पानी के व्यतीत कर देते हैं, भूख प्यास नहीं लग सकती, भला यह आपने कैसे ठीक जान लिया और एक दिन के अन्न पानी पाने से वर्ष भर तथा गया में भोजन करा देने से फिर कभी भूख प्यास नहीं लगेगी।

पाठक गणों ! कैसे अन्याय की बात है कि आप केवल अपने मां बाप दादा परदादा के अर्थ तो श्राद्ध में ब्राह्मणों को नाना प्रकार के उत्तम २ भोजन खिलाते हैं और उनके बाप दादों आदि की ओर ध्यान न दें क्या वह आपके पूज्य नहीं थे ? क्या आप उनके वंश में नहीं हैं ? क्या यह आपके बाप दादों को प्रिय हो सकता है ? जबकि उनके माता पिता उनके सम्मुख भूखे बैठे रहें जिनको वह भोजन कराकर आप भोजन करते थे। जब आवागमन ठीक है और सत्शास्त्र एवं गीता के अनुसार जीव कर्मानुसार एक शरीर को छोड़ दूसरा शरीर धारण कर लेता है तो मृत व्यक्तियों का श्राद्ध और तर्पण कैसा—

इसके अतिरिक्त वेद की शिक्षा है कि प्रत्येक लिंग-शरीर जीवात्मा स्थूल शरीर को छोड़ कर आकाश में १२ दिन तक १२ आकाशी पदार्थों के संसर्ग में आता है, तब इसे किसी लोक में कर्मानुसार जन्म मिलता है, हां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिनका लिंग शरीर छूट जाता है उन पुरुषों की यह अवस्था नहीं होती।

हे मनुष्यों! इस जीव को ( प्रथम ) पहले ( वाहम् ) दिन ( सविता ) सूर्य ( द्वितीय ) दूसरे दिन ( अग्नि, ) अग्नि, तीसरे वायु, चौथे वा ५ वें दिन चन्द्रमा, छठे बसन्तादि ऋतु, सातवें मरुत, आठवें सूत्रात्मा, नवें प्राण, दशवें उदान, ग्यारहवें बिजुली और बारहवें दिन सब दिव्य प्राण प्राप्त होते हैं।

इससे भी जाना जाता है कि सूर्य, अग्नि, वायु, चन्द्र प्राण, उदान बिजुली और आकाशवत् अन्य सब दिव्य पदार्थों का ( जो देवता कहाते हैं ) हवन करने से सुधार होता है इसी को तृप्ति और अनुकूलता भी कहते हैं, इससे अग्नि होम द्वारा पृथ्वी अन्तरिक्ष और भूलोक इन तीनों की शुद्धि वृद्धि और तृप्ति होने से आकाशवत् पितरों और वायु, ( वायुविशेष ) का भी उपकार सम्भव है। परन्तु मृतक प्राणी किसी प्रकार परमात्मा की व्यवस्थानुकूल १२ दिन में भिन्न भिन्न नियत पदार्थों को छोड़ अन्यत्र कहीं नहीं जा सकते, और इसके अनन्तर स्थूल शरीर पाय, जन्म लेकर भी एक लोक से दूसरे लोक में नहीं जा आ सकते, इस लिए प्रचलित श्राद्ध दानादि कार्यों के पदार्थों की प्राप्ति ब्राह्मणों द्वारा पितरों को सर्वथा असम्भव है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इसके लिये हम भविष्योत्तर पुराणान्तर्गत ऋषिपञ्चमी व्रतोद्यापन विधि में एक ब्राह्मण का किया श्राद्ध उसके माता पिता को जो उसी के घर में कर्मानुसार कुतिया और बैल की योनि पाकर रहते थे उनको नहीं पहुँचा। मूल कथा और उसका हिंदी अनुवाद मुरादाबादी पं० प्रजारत्न ( महर्षि कुमार भट्टाचार्य ) के हिंदी अनुवाद से जो बम्बई गणपति-कृष्ण जी के प्रेस में छपा है उसमें से लिखते हैं, देखिये विचार कीजिये।

अत्रार्थे यत्पुरा वृत्तं प्रवक्ष्यामिकथानुकम्।
पुराकृतयुगे राजाविदर्भायां बभूवह ॥ १६ ॥
श्येनजिन्नाम राजर्षिश्चातुर्वर्ण्यानुमार्ग्याकः।
तस्यदेशीऽबसद्विप्रो वेदवेदांगपारगः ॥ १७ ॥
सुमित्रा नाम राजेन्द्रसर्वभूतहितेरः।
कृषिवृत्यासदायुक्तः कुटुम्बीप्रतिपालकः ॥ १८ ॥
त्वस्यभार्या सुसाध्वी चषति शुश्रूषणेरतः।
जयश्रीनाम व्याख्याता बहुमृत्युसुहृज्जना ॥१९॥
अतिचिंताहि तासां च प्रावृट्कालेसुमध्यमा।
क्षेत्रादिपुरता साध्वी ध्यानुकूलाकृतमानसा ॥२०॥
एकादासात्माकः प्राप्तमृतुकालेव्यलोकयत्।
रजस्वलापि साराजन्! गृहकर्म चकारह ॥ २१ ॥
भाण्डर्दीन्स्पृशद्राजन्नतौ प्राप्तेऽपिभामिनी।
कालेन बहुना साध्वी पंचत्वमगमत्तदा ॥ २२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तस्या भर्तापिविप्रोऽसौकालधर्ममुपेयिवान् ।
एवं तौ दम्पतिराजन् ! स्वकर्मगौवशंतदा ॥ २३ ॥
भार्यातस्य जयश्रीःमाकृतसंपर्कदोषतः ।
शुनीयोनिमनुप्राप्तसुमित्रोऽपिनरेश्वर ॥ २४ ॥
तस्याः सम्पर्के दोषेण बलीवर्दो वभूवह ।
एवं तौ दम्पतीराजन् ! स्वकर्म वशगौतदा ॥ २५ ॥
ऋतुसम्पर्कदोषेणतिर्यग्योनिमुपागतौ ।
स्वधर्माचरणाज्जाता बुभौजातिस्मरौ तथा॥ २६ ॥
सुतस्यैव गृहे राजन् स्मरन्ता पूर्व पातकर्म ।
सुमित्रस्यचपुत्रोऽभूद्गुरुसुश्रूषणेरतः ॥ २७ ॥
सुमतिर्नामज्ञोदेवतातिथिपूजकः ।
अथक्षयाहेसंप्राप्ते पितुस्तुसुमतिस्तदा ॥ २८ ॥
भार्या चंद्रवती प्राह सुमतिः श्रद्धयान्वितः ।
अद्य सांवत्सरदिनं पितुर्मे चारुहासिन ॥ २९ ॥
भोजनीयाद्विजा भीरु ! पाकसिद्धिर्विधीयताम् ।
तयाकृता पाकसिद्धः सुमतिर्भर्तुराज्ञया ॥ ३० ॥
मुक्तंपायसभाण्डं वै सर्पेण गरलंततः दृष्टवा ।
ब्रह्मवधाद्भीता शुनी भाण्डादिसाऽस्पृशत् ॥ ३१ ॥
भार्याचतांदृष्ट्वा उल्मूकेन उघानहा ।
भाण्डादीनि च प्रक्षाल्य स्यक्ता पाकं सुमध्यमा ॥ ३२ ॥
पुनः पाकञ्च कृत्वातु श्राद्धं कृत्वा विधानतः ।
ततोभुक्तेषुविप्रेषु नोच्छिष्टंचददौवहिः ॥ ३३ ॥



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमौक्षिप्तं शुन्याउपवासस्तदाभवत् ।
ततोरात्र्यांप्रवृत्तायांसाशुनीक्षु ताभृशम् ॥ ३४ ॥
वलीवर्दमुपागत्य भर्तारमिदमब्रवीत् ।
बुभुक्षिताद्य हे भर्ते न दत्तं भोजनादिकम् ॥ ३५ ॥
ग्रासादिकं च न प्राप्तं क्षुधमां वाधतेभृशम् ।
अन्यस्मिन्दिवसे पुत्रो मम लेह्य ददात्यसा ॥ ३६ ॥
अथ मह्यं किमप्येष उच्छिष्टमपि नाददौ ।
पायसान्ने पपाताद्य गरलं सर्पस्त्रभवम् ॥ ३७ ॥
मयाविचिन्त्य मनसा मरिष्यन्ति द्विजोत्तमाः ।
संस्पष्टं पायसं कत्वा गद्धबाहं ताड़िता भृशम् ॥ ३८ ॥
दुःखितेन में गात्रंकटिर्भग्न करोमि किम् ।
तया प्राह स चानड्वान् भद्रे ते पापसंग्रहात ॥ ३९ ॥
किं करोमि ह्यशक्तोऽहं भारवाहं त्वमागतः ।
अद्याहमात्मनः क्षेत्रेवा हितःसकलंदिनम् ॥ ४० ॥
मारितश्चात्मजेनाहं मुखं वद्धवाबुभुक्षितः ।
वृथा श्राद्धं कृतंते न जाताद्य मम कष्टा ॥ ४१ ॥
कृष्णउवाच तयोः संवदतोरेवं माता पित्रोश्चभारत ।
श्रुत्वा पुत्रस्तथा वाक्यं यदुक्तंच तदोभयोः ॥ ४२ ॥
पितरौ तौ विदित्वातु दत्तवान्सुमतिस्तदा ।
तस्यां राज्यां तत्कालं ददौ तस्मै च भोजनम् ॥ ४३ ॥

भावार्थ—इसी बीच में जो प्राचीन कथा का वृत्तान्त है सो मैं कहता हूँ, पहिले सतयुग में निर्भय नागरी में चारों वर्णों को पालने वाले राजाओं में ऋषि के समान एक राजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्येनजित हुए थे, उनके देश में अंगों सहित वेदों का जानने वाला ॥ १६, १७ ॥ सम्पूर्ण प्राणियों के हितका करने वाला, खेती के कर्म से कुटुम्ब का पालन करने वाला एक सुमित्र नामक ब्राह्मण रहता था ॥ १८ ॥ बड़ी पतिव्रता पति की सेवा में तत्पर, अनेक भृत्य (नौकर) कुटुम्बियों से युक्त जयश्री नाम वाली उस ब्राह्मण की एक स्त्री थी ॥१९॥ एक समय वर्षाकाल में अत्यन्त चिन्ता से युक्त सुन्दर कमर वाली खेत के काम में लगी हुई पतिव्रता का चित्त अत्यन्त व्याकुल हुआ ॥२०॥ एक समय उस स्त्री ने अपने ऋतुकाल को आता देखा और हे राजन् ! वह रजस्वला होकर भी घर के काम को करती रही ॥२१॥ हे राजन् ! ऋतुकाल प्राप्त होने पर भी उसने बर्तन आदि सब छुए और वह स्त्री थोड़े ही समय में मृत्यु को प्राप्त हुई ॥२२॥ और उसका पति भी समयानुसार मृत्यु के वश हुआ। इस प्रकार वे दोनों स्त्री पुरुष अपने कर्मों के वश हुए ॥२३॥ उसकी वह स्त्री जयश्री ऋतुकाल संगति के दोष से कुतिया की योनी को प्राप्त हुई और हे राजन् ! वह सुमित्र ब्राह्मण भी ॥२४॥ उस स्त्री के संग के दोष से उस समय बलीवर्द ( बैल ) हुआ। हे राजन् तब वे दोनों स्त्री पुरुष इस प्रकार अपने कर्मों के वशीभूत हुये ॥२५॥ ऋतुकाल की संगति के दोष से दोनों पशु योनि को प्राप्त होकर अपने २ धर्म के प्रताप से अपने पूर्व जन्म को याद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करते हुए ॥२३॥ राजन् ! उसी प्रकार अपने किये हुये पहिले पाप को याद करते हुए पुत्र के ही घर उत्पन्न हुए। गुरु की अत्यन्त शुश्रूषा करने वाला धर्म का जानने वाला, देवता और अभ्यागतों की पूजा करने वाला सुमति नाम सुमित्रा का पुत्र था, फिर पिता के क्षयान्ह के प्राप्त होने पर वह सुमति ॥२७, २८॥ श्रद्धा से युक्त अपनी चन्द्रवती स्त्री से बोला कि मनोहर हास्य करने वाली। आज मेरे पिता की वर्षी का दिन है ॥२९॥ हे अधिक भय करने वाली ! आज ब्राह्मणों को भोजन कराना उचित है, सो तू पाक (भोजन) तैयार कर। अपने पति सुमति की आज्ञा से उस चन्द्रवती ने सब भोजन बनाये ॥३०॥ तदनन्तर खीर के पात्र में सर्प ने विष छोड़ दिया, उसको देखकर ब्राह्मणों के मर जाने के भय से खीर के पात्र को उस कुतिया ने छू दिया ॥३१॥ पात्र को छूती हुई उस कुतिया को देखकर उस ब्राह्मण की चन्द्रवती स्त्री ने उसे जलती लकड़ी से मारा और उस सुन्दर कमरवाली चन्द्रवती ने भोजन को छोड़ सब बर्तनों को धोकर ॥३२॥ फिर दूसरा पाक बनाकर विधि से श्राद्ध करके ब्राह्मणों के जीम जाने पर उसने ज़मीन में पड़ी हुई ब्राह्मणों की जूठन बाहर नहीं फेंकी, तब वह कुत्ती भूँखी ही रही फिर रात होने पर अत्यन्त क्षुधा (भूँख) लगी ॥३३, ३४॥ तब अपने पति बलीवर्द के पास आकर वह बोली कि हे नाथ !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आज मैं भूखी हूँ किसी ने मुझे भोजनादि कुछ भी नहीं दिया ॥३५॥ आज तो एक ग्रास तक भी मैंने नहीं पाया इस कारण भूख मुझे अधिक सताती है। अन्य दिन तो हमारा पुत्र मुझे भोजन देता था ॥३६॥ आज तो इसने मुझे जरा जूठन तक भी नहीं दी। आज खीर में सर्प का विष गिर गया था ॥ ३७ ॥ सो यह बड़े बड़े ब्राह्मण इसको खाकर मर जायेंगे ऐसा मैंने विचार कर जाके खीर को छू दिया, इस कारण बांध कर मुझे बहुत मारा ॥ ३८ ॥ उस मारने से मेरा शरीर बहुत दुखित हुआ और मेरी कमर टूट गई, सो मैं क्या करूं! यह सुन कर बलीवर्द बोला, कि हे सुभगे! तेरे पाप के संग्रह से ॥ ३९ ॥ मैं भी असक्त हूँ सो क्या करूं! बोझ के उठाने को प्राप्त हूँ आज के दिन मैं अपने पुत्र के खेत में सारा दिन चलाया गया ॥ ४० ॥ और इस मेरे पुत्र ने भूख प्राप्त हुये मेरे मुख को बांध कर मुझे बहुत मारा, इससे आज श्राद्धवृथा ही किया क्योंकि मुझे तो आज बड़ा कष्ट हुआ ॥ ४१ ॥ इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्ण जी बोले हे युधिष्ठिर! उन दोनों माता पिता के इस प्रकार कथन करते समय जो कुछ उन दोनों ने कहा उनके पुत्र सुमति ने सुन कर अपने माता पिता जानकर उसी रात्रि में उसी समय अपने उन माता पिता को भोजन दिया। यदि मरों ही का श्राद्ध करना सनातन समझा जावे तो अवश्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बतलाइये कि सृष्टि की आदि में जो ब्रह्मादि उत्पन्न हुए थे उन्होंने किसका श्राद्ध किया होगा ? यदि जीवही श्राद्ध में जाते हैं तो जब तक वह वहां रहे उसका शरीर मरजाना चाहिये; परन्तु यह हमको दृष्टि गोचर नहीं होता । वह प्राणी अन्य ही लोकों में उत्पन्न होते हैं तो पृथ्वी पर यह नये आत्मा कहां से आते हैं ? यदि आत्मा असंख्य माने जावें तो भी इस दशा में उनका अन्त होना सम्भव हुआ क्योंकि जिस मनुष्य के पास धन हो और आमदनी कुछ भी न हो वरन् व्यय ही होता रहे तो कभी उसके धनका अन्त अवश्य होगा । यदि जीवात्मा नया उत्पन्न होता है तो उसके शरीर के तुल्य मरना भी सम्भव होगा, फिर कर्मों के भोगने वाला कौन रहा कि जिसको वेदादि शास्त्र पुकार कर कह रहे हैं क्या यह सब झूंठे हैं ? नहीं, नहीं, नहीं, यदि जीवात्मा नया ही शरीर के साथ उत्पन्न हुआ तो उसको विशेष दुखः सुख क्यों हुआ क्योंकि वह पहिले कभी उत्पन्न नहीं हुआ था और बुरा भला कर्म भी नहीं किया था, यदि ऐसा माना जावेगा तो मनु आदि ऋषियों के वाक्य झूंठे हो जावेंगे कि सत्वगुणी लोग देवता होते हैं, रजोगुणी मनुष्य और तमोगुणी पशु आदि योनियों में होते हैं जैसा कि—

देवत्वं सात्विकायान्ति मनुष्यत्वंच राजसाः ।
तिर्यकत्वं तामसा नित्यमित्येषा त्रिविधागतिः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मृतक श्राद्ध करने से श्राद्ध, नित्य धर्म नहीं हो सक्ता परन्तु वेदादि सत शास्त्रों में श्राद्ध, तथा पितृ यज्ञ के नित्य प्रति करने की आज्ञा है।

श्राद्ध केवल पिता, दादा और परदादा का ही किया जाता है और इस असार संसार में सम्भव नहीं कि कोई मनुष्य अपने परदादा के पिता की भी सेवा कर सके। इससे भी प्रतीत होता है कि श्राद्ध जीवित का ही करना चाहिये। यजुर्वेद अ० २० मं० ३४ में कहा है कि मनुष्यो! तुमको अपने माता पिता आदि की प्रीति से सेवा सत्कार करना चाहिये ताकि तुम में कृतघ्नता आदि का दोष कभी न आवे। अथर्ववेद में स्पष्ट आज्ञा है कि गृहस्थ लोग विद्वान् गुणी माता पिता आदि बड़ों की सेवा घृत दुग्ध आदि से किया करें जिस से पितृ लोग बलवान होकर उत्तम २ कर्म करने में समर्थ होवें।

संस्कृत में पितृ के अर्थ पालन करने वाले के हैं और आप पितृ से मरे हुए बाप दादे को समझते हैं।

देखिए पितृ शब्द निघण्टु ४ मंत्र १ में पिता पद आया है। पिता का बहुवचन पितरः है, निरुक्त। ४। ११। में पितर पदके व्याख्यान में नीचे लिखा मंत्र ऋग्वेद १। १६४। ३३ का प्रमाण दिया है।

द्योर्मे पिता जनिता नाभिरत्र० इत्यादि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फिर निरुक्तकार इसके अर्थ करते हुए पिता पद का अर्थ इस प्रकार करते हैं 'पिता माता पालयितावा' अर्थात् पिता पालन वा रक्षा करने से कहा जाता है, ऐसाही स्वामी जी ऋग्वेद भाष्य में लिखते हैं। तात्पर्य यह है कि रक्षा को पालने वाले जनकादि मनुष्य वर्ग राजा, सूर्य, चन्द्र, किरण, वायु, भेद जिसका राजा यम कहाता है इत्यादि रक्षकों और पालन करने वालों का नाम पितर है। वेदों में बहुत स्थानों में पितरों को राजा लिखा है जैसे मनुष्य का राजा मनुष्य, मृगों का राजा मृगराजसिंह, औषधियों का राजा सोम नामक औषधि, ऋतुओं का राजा बसंत है इसी प्रकार वायु जो हमारे पालक हैं उनका राजा 'यम' वायु है।

। इस प्रकार यह भले प्रकार सिद्धि होजाता है कि मरों का श्राद्ध करना वेद और बुद्धि के विपरीत है। इसके प्रचलित होने का कारण यह जान पड़ता है कि पहले समय में मनुष्य विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मण और अपने पुरुषाओं को भोजनादि से तृप्त करते थे परन्तु जब ब्राह्मणों ने अपने कर्म धर्मों को त्याग दिया और अविद्यारूपी अन्धकार छा गया तो उन्होंने जाना कि अब हमारा श्राद्ध ( अर्थात् सेवा सत्कार ) न होगा इसलिये उन्होंने यह परिपाटी चलाई होगी कि जो तुम हमको खिलाओगे तो तुम्हारे बाप दादे ।को मिलेगा, क्योंकि संसार में प्रत्येक मनुष्य अपने लिये मांगना बुरा समझता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सज्जन पुरुषो ! जिस प्रकार मृतक श्राद्ध करना व्यर्थ है ठीक उसी प्रकार पिण्ड देना, एकादशा करना, महा ब्राह्मणों को माल असबाब देना, तेरहवीं, वर्षी, चौवर्षी करना इत्यादि सब व्यर्थ मिथ्या और धोखे की टट्टी है। गरुड़ पुराण में लिखा है कि जीव अंगूठे के समान प्रेत होकर घूमता है इसलिये दस दिन तक एक एक पिंड आटे का इसको खिलाते हैं दसवें दिन जब वह पिंड खाकर मोटा ताज़ा होजाता है तब ग्यारहवें दिन एक बड़ा भारी पिंड जिसको सपिंडी कहते हैं बनाते हैं फिर मंत्रों के बल से उस प्रेत को बुलाते हैं फिर एक कुश के तिनके से महा ब्राह्मण सपिंडी के तीन बराबर भाग करता है और प्रत्येक भाग को ऊपर के पितरों में मिला देता है अर्थात् एक भाग को बाप में दूसरे को दादा में और तीसरे को परदादा में, इसी भांति स्त्रियों को मानों एक प्रेत को काट काट कर तीन स्थानों में मिलाते हैं तब वह प्रेत से पितर हो जाते हैं। इसके उपरांत जानना चाहिये कि गरुड़ पुराण में गरुड़ एक प्रकार का पक्षी है इसके और परमात्मा के प्रश्नोत्तर हैं और उस परब्रह्म ने गरुड़ से सब वृत्तान्त कहा है। अब आप टुक तो विचार कीजिये कि यदि ईश्वर को वर्णन करना ही आवश्यक था तो क्या कोई मनुष्य इस योग्य न मिला कि जिससे सब वृत्तान्त कहते ? दूसरे गरुण से मनुष्य के मृतक संस्कार का हाल कहने से क्या लाभ ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यह गरुड़ को बताना ही था तो सांपों का हाल बताता कि अमुक स्थान पर सांप हैं और अमुक समय पर तुम को मिल सकते हैं तो आशा है कि वह अपना भक्षण पाकर प्रसन्न होता। यह मिथ्या और बुद्धि के विरुद्ध बातें हैं केवल प्रत्येक प्रकार से अपना ही प्रयोजन निकाला है।

प्रिय सज्जनो! पिण्ड शब्द के अर्थ शरीर के हैं और शरीर बनाना माता पिता का काम है किसी और का नहीं और वह भी रीत्यनुसार तो फिर जब माता पिता का काम पिण्ड देना है बड़े शोक की बात है कि लड़का उल्टा बाप और मां को पिण्ड दे। अपने को उनके ऋण से उऋण समझे क्या इसका नाम बुद्धि है? टुक तो विचार कीजिये कि आप अपने माता पिता के कौन ठहरे, अपने ही जी में समझ जाइए मुझे कहते लाज आती है। यदि कोई आप से ऐसी बात कहे तो आशा है आप बहुत अप्रसन्न होवें परन्तु पिण्ड देने के समय बुद्धि से कुछ काम नहीं लेते। जो आत्मा दूसरे शरीर में चला गया तो फिर आपके पिण्ड देने की क्या आवश्यकता है वह तो बिना आपके पिंड दिये ही पिंड पाता है क्योंकि जीव तुरन्त दूसरे शरीर में चला जाता है जैसा श्रीमद्भागवत स्कन्ध १० पूर्वार्द्ध अध्याय १ श्लोक ३९, ४० में लिखा है कि जिस समय शरीर का अन्त होता है उस समय जीवात्मा अपने कर्मों के अनुसार परवश हो देह को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राप्त होता और पूर्व देह को त्यागता है जैसे चलते समय मनुष्य अगले पांव को धर लेता है तब पिछले पांव को उठाता है और जोंक भी इसी भांति अगले तृण को पकड़ कर पिछले को छोड़ती है 'उसी भांति जीवात्मा' जैसाकि—

देहे पञ्चत्वमापन्ने देही कर्मानुगोऽवशः।
देहान्तरमनुप्राप्य प्राक्तनं त्यजतेवपुः॥
व्रजस्तिष्ठंपकजैकेन यथेवैकेन गच्छति।
यथा तृण जलोकेवदेही कर्मगति यमः॥

बतलाइये पिण्ड देने और एकादशा वा वर्षी वा चौवर्षी जल देने से वह अपने कर्मों से पृथक हो सक्ते हैं कदापि नहीं हां यह सब उस्तादों की उस्तादी और हथकण्डे हैं। यदि यह सत्य है तो वेद शास्त्र में आवागवन और अच्छे कर्म्मों की आज्ञा का विधानादि सब झूँठा ठहरेगा, इसके उपरांत कट्टहा आदि को दिया हुआ धन पाप कर्म्मों से कम होता है जिससे उसका पाप भी आपके सिर पड़ता है देखिये इन कर्म्मों के करने से परिश्रम उठाने के साथ धन व्यर्थ जाता और पाप का भागी भी बनना पड़ता है फिर जान बूझकर ऐसे कर्मों को करते जाना कहां की बुद्धिमानी है। लेकिन आपने मरे हुओं को बैकुण्ठ भेजने का ठेका महा ब्राह्मण के हाथ में समझ लिया और यह भी विचार न किया कि नरक और स्वर्ग किसका नाम है और उसका दाता कौन है अथवा उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्यारे सज्जन जनो ! स्वर्ग और नरक कोई विशेष स्थान नहीं है वरन् पूर्ण सुख का नाम स्वर्ग और विपरीत दशा को नरक कहते हैं, जो कर्मानुकूल प्राप्त होते हैं, देखिये विष्णुपुराण अंश अध्याय २ में लिखा है कि धर्मात्माओं के लिये स्वर्ग पृथ्वी पर ही है। चाणक्यनीति अध्याय २ श्लोक ३ में लिखा है कि जिसका पुत्र वश में रहता है स्त्री इच्छानुसार चलती है जो विभव में संतोष रखता है उसको स्वर्ग यहां ही है।

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्याछन्दानुगामिनी।
विभभैर्यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्गइहैवहि॥

और अध्याय ६ में लिखा है कि जिस कार्य के करने से मन प्रसन्न हो और कोई निन्दा न करे उसी का नाम स्वर्ग है। इसलिये स्वर्ग के सुख भोगने के लिये बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड सर्ग १०९ श्लोक ३१ में रामचन्द्र जी ने कहा है कि सत्य, धर्म और प्राणियों के ऊपर दया, प्रिय वचन बोलना, ब्राह्मण, देवता, अतिथि की पूजा करना, पण्डित लोग इन्हीं को स्वर्ग जाने का मार्ग बतलाते हैं। मत्स्यपुराण अध्याय ३९ श्लोक २२ में राजा ययाति ने कहा है कि तप, दान, शम, दम, लज्जा, सरलता और सब भूतों पर दया ये सात बातें स्वर्ग के बड़े द्वार हैं।

तपश्च दानश्च शमो दमश्च ह्रीरार्जवंसभूतानुकम्पा।
स्वर्गस्य लोकस्य वदंति सन्तो द्वाराणि सप्तैव शुभानिपुंसाम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वामन पुराण अध्याय ६१ में ब्रह्मा ने कहा है कि पराई स्त्रियों से गमन, अति पापियों का साथ, सब प्राणियों की निन्दा करनी यह प्रथम नरक है। फलों की चोरी और फल से हीन वृथा गमन और वृक्षों के समूह को काटना यह दूसरा नरक है। वर्जित पदार्थों को ग्रहण करना, दुष्टता और बिना मारने योग्य को मारना, बन्धन विवाद और झूँठ का बोलना यह तीसरा नरक है। सब प्राणियों को भय देना, धन का नाश, धर्मों का त्याग यह चौथा नरक है। प्राणियों का मारना; मित्र से कुटिलता, झूंठी शपथ खाना और मिष्ट पदार्थों को अकेला खाना यह पाँचवां नरक है। पुर का नाश, मिथ्या पत्र का बनाना और बिना अपराध के दण्ड देना और योग्य का नाश करना, सवारी का पहिया वा जुआ आदि का चुराना, यह छटा नरक है। छिपा कर राजा का भाग हरना, राजा की भार्या से भोग करना, राज्य में अहित करना यह सातवां नरक है। लोभपन, चंचलता और लम्पटपन धर्म और धन को नाश कराना, देव ब्राह्मण के द्रव्य को हरना और ब्राह्मणों की निन्दा करना, बन्धुओं के साथ उग्रविरोध करना, यह आठवां नरक कहा है। शिष्टों के आचार का विनाश और शिष्ट पुरुष से वैर भाव, बालक को मारना, शास्त्र की चोरी, धर्म का नाश यह नवां नरक है। राज्य सम्बन्धी छः अंगों का नाश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करना छः गुणों का प्रतिषेध करना, यह सत्पुरुषों ने दसवां नरक कहा है। सब काल में सत्पुरुषों से बैर करना, अनाचार निषिध क्रिया और संस्कार से हीनपना, यह ग्यारहवां नरक कहो है। कृपणता, धर्म से हीनता; आग का लगाना यह सत्पुरुषों ने निन्दित रूप तेरहवां नरक कहा है। अज्ञान और पराए गुणों में दोष का आरोपण करना मलीनपना अशुद्धवाणी और झूंठा बचन बोलना यह चौदहवां नरक है। आलस्य और विशेष क्रोध करना और सबों के मारने में उद्यत रहना और बसने योग्य स्थानों में आग लगाना, पर स्त्री में इच्छा करनी और सब जीवों में ईषा करनी निन्दित ब्रत पन्द्रहवां नरक है।

अब तो आपको प्रत्यक्ष प्रकट होगया कि नरक दुःखों को और स्वर्ग सुख को कहते हैं। इसलिए स्वर्ग और नरक का विशेष ज्ञान जीवन में प्रतीत होता है और यही शरीर उसके प्राप्त करने का साधन है। इस कारण इसी पृथ्वी पर जिस स्थान पर आप उत्पन्न हुए हैं वहाँ ही वेदोक्त कार्य को कर स्वर्ग के सुखों को भोगिए। देखिए चाणक्य नीति अ० २ श्लोक २ में इसका अच्छे प्रकार उत्तर दे दिया है इसके उपरांत अ० ७ में कहा है।

स्वर्गस्थितानामिहजीवलोके चत्वारि चिन्हानि वसन्ति देहे।

संसार में आने पर स्वर्गवासियों के शरीर में चार चिन्ह होते हैं-दान का स्वभाव, मीठा बचन, देव अर्थात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विद्वान् की पूजा और ब्राह्मणों का तृप्त करना। श्रीमद्भागवत स्कन्ध ११ अ० ४९ में अक्रूर जी महाराज ने धृतराष्ट्रजी से कहा है कि जीव अकेला ही जन्म लेता है, और अकेला ही पाप पुण्य भोगता है। जैसा कि—

एकः प्रसूयते जन्तुरेक एक प्रलीयते।
एकोनु भुक्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्॥

इससे प्रत्यक्ष प्रकट है कि जिस मनुष्य ने अपने जीवन में धर्म का सञ्चय किया उसको अवश्य ही सुख मिलेगा वरन् मरने पर अन्य सम्बन्धी किसी कार्य को कर उसको सुख नहीं पहुँचा सकते।

चाणक्य जी ने कहा है—

अत्यन्तकोपः कटुका च वाणी दरिद्रता च स्वजनेषुवैरम्।
नीचप्रसङ्गः कुलहीनसेवा चिन्हानि देहे नरकस्थितानाम्॥

अत्यन्त कोप कटु बचन, दरिद्रता, अपने जनों में वैर, नीचसङ्ग, कुलहीन की सेवा यह नरकवासियों की देही में रहते हैं। इस लिये हे मेरे भाइयों! झूँठी और मिथ्या बातों को छोड़कर जितना रुपया मरे पितरों के श्राद्ध और तर्पण में व्यय करते हो वह विद्वान् पितरों के आदर सत्कार में व्यय कर वेदोक्त आज्ञाओं को पूर्ण कर स्वर्ग के सुखों को भोगिये।

---

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बलिवैश्वदेव

यह चतुर्थ नित्यकर्म है, देखो मनुस्मृति अ० ३ श्लोक ४७ में स्पष्ट आज्ञा है कि यथावत् प्रति दिन बलिवैश्वदेव करना चाहिये।

वश्वदेस्य सिद्धस्य गृहेऽग्नौ विधिपूर्वकम् ।
आभ्यः कुर्यादेवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम् ॥

और गीता अ० ४ श्लोक ३१ में लिखा है कि जो यज्ञ करने के पीछे अमृतरूपी अन्न भोजन करते हैं वह सनातन ब्रह्मको पाते हैं और जो इन यज्ञों को नहीं करते उनको इस लोक और परलोक से सुख नहीं मिलता और अ० ३ श्लोक ३३ में भी इस कार्य की प्रशंसा की है, और ऐसा ही याज्ञवल्क्यस्मृति अ० ५ में भी लिखा है। इनके अतिरिक्त व्यासस्मृति अध्याय २ श्लोक २८। विष्णुस्मृति अध्याय २ श्लोक ३५। हारीतस्मृति अध्याय १ श्लोक ३६ में भी प्रतिदिन बलिवैश्वदेव करने की आज्ञा है। आरण्य-काण्ड सर्ग १२ श्लोक २७ से प्रकट है कि महर्षि अगस्त के आश्रम पर जब रामचन्द्र गये थे तब उन्होंने बलिवैश्वदेव विधि से अग्नि में आहुति देकर भोजन किया था देवी भागवत् स्कंध ११ अध्याय २२ में लिखा है कि जो बिप्र बिना बलिवैश्वदेव के भोजन करते हैं वह महारौरव नरक को जाते हैं।

वैश्वदेवकृतं दोषं शक्तो भिक्षु व्यपोहितुम् ।
नतुभिक्षकृतं दोषं वैश्वदेवो व्योपोहति ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अतिथि-सेवा

मान्यवरो ! गृहस्थ पुरुषों के उद्धार के अर्थ अतिथि ही देवता स्वरूप है, जैसा तैत्तरीयोपनिषद् में लिखा है- "अतिथि देवोभव" और यथार्थ में यही साक्षात् मूर्ति पूजा है क्योंकि अतिथि की यथावत् सेवा करने से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है, अर्थात् इन्हीं के सत्संग से मनुष्य दोनों लोकों में आनन्द उठाता है। प्रियवरो ! इस असार संसार के पार करने के लिये अतिथिही नावरूप है, इसी कारण प्रतिदिन अतिथि सेवा करने की आज्ञा वेदादि सत्य शास्त्रों में पाई जाती है। देखिये य० अ० ३ मं० ४२ में लिखा है कि जो परोपकार करने वाले विद्वान् अतिथि लोग हैं उनकी सेवा गृहस्थों को निरन्तर करना चाहिये; औरों की नहीं। जैसा कि-

देषाभद्रयेति प्रवसन्येषु सौमनसौ बहुः।
गृहानुपइवयामहे ते नो जानन्तु जानतः॥

अथर्ववेद कांड १५ सू० ११ में लिखा है कि जब कोई विद्वान् अतिथि घर पर आवे तो उसकी प्रीति वचन-जल अन्नादि पदार्थों से सेवा करे।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत्॥

मनुस्मृति अ० ३ श्लोक ९४ में मनु जी ने स्पष्ट आज्ञा दी है कि बलिवैश्व के पश्चात् अतिथि को भोजन



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कराये और विधि पूर्वक सन्यासी और ब्रह्मचारी को भिक्षा दे।

कृत्वैतद्लिकमैवमतिथिं पूर्वमाशयेत्।
भिक्षां च भिक्षवे दद्याद्विधिवद्ब्रह्मचारिणे ॥

और ऐसा ही व्यास स्मृति अ० ३ श्लोक ३६, ४० और विष्णुस्मृति अ० २ श्लोक ३८, ३९ हारीतस्मृति अ० ४ के श्लोक ५७ और शंखस्मृति अ० ५ के श्लोक १३ और याज्ञवल्क्यस्मृति अ० ५ श्लोक १०७ में भी लिखा है। बृहन्नारदीय पुराण अध्याय १३ में लिखा है जो भक्ति से पैर धोवे वह सुख को पाता है।

इन सब श्लोकों का तात्पर्य यह है कि जब गृह पर अतिथि पधारे तब उठकर नम्रता पूर्वक उसको आसन दे, पैर धोवे, उत्तम भोजन करावे फिर विद्या का विचार करे। यही अतिथि यज्ञ स्वर्ग की प्राप्ति का द्वार है इसी से गृहस्थ की उन्नति होती है। कात्यायनस्मृति खं० १२ में लिखा है कि अतिथि पूजन को ही मनुष्य यज्ञ कहते हैं। लिंगपुराण अ० २९ श्लोक ४८ में लिखा है कि अतिथि का अपमान न करे क्योंकि अतिथि साक्षात् शिव का स्वरूप है, इसलिये अतिथि सेवा में अपने शरीर को अर्पण करने में कुछ संदेह न करे अर्थात् अच्छे प्रकार सेवा करे। विदुरजी ने कहा है कि जो अतिथियों का यथायोग्य सत्कार करता है उसका इस संसार में यश होता है। बनपर्व अ० २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में युधिष्ठिर महाराज ने कहा है कि अतिथि सेवा करना परम धर्म है और अध्याय १८४ में महात्मा 'वक' ने इन्द्र को उपदेश किया है कि अतिथि के आदर सत्कार से गौदान के समान फल होता है। शांतिपर्व अ० १२१ में भी भीष्मपितामह ने कहा है कि जो मनुष्य अतिथियों को प्रतिदिन भोजन कराते हैं उनको अमृताशी कहते हैं और अ० २२४ में लिखा है कि अतिथि की यथावत् सेवा करने से चन्द्रलोक मिलता है। अनुशासन पर्व के अ० १ में गृहस्थ का परम श्रेष्ठ धर्म अतिथि सत्कार कहा है। आरण्य काण्ड में अगस्त मुनि का वचन है कि हे रामचन्द्र! जो तपस्वी होकर अतिथियों का सत्कार नहीं करता वह झूँठी साक्षी देने वाले के समान परलोक में जाकर अपना मांस आप भोजन करता है। प्रियवरो! जब तपस्वियों की यह दशा होगी तो फिर गृहस्थों की दुर्दशा का क्या ठीक? मनुजी ने कहा है कि जो गृहस्थ अतिथि से प्रथम आप भोजन करता है उसको दूसरे जन्म में कुत्ते और गिद्ध खाते हैं। श्रीमद्भागवत स्कंध ५ अ० २६ श्लोक १५ में लिखा है जो गृहस्थ अतिथि को बारम्बार क्रोध दृष्टि से देखते हैं उनकी आंखें मरने पर गिद्ध, कौआ, बटेर इत्यादि निकालते हैं। पाराशरस्मृति श्लोक ४६ में लिखा है कि जो अतिथि का सत्कार नहीं करते उनको हजारों बड़े घृत के होम से कुछ लाभ नहीं होता और श्लोक ४७ में लिखा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


है कि जो बलिवैश्वदेव और अतिथि सत्कार नहीं करते के नरक वा कौवे की योनि में जाते हैं।

भ्रातृगणो ! वैदिक समय में ब्रह्मचारियों, संन्यासियों और वानप्रस्थियों की अतिथियां में गणना की गई थी कि जो अपनी आयु के दो या तीन भाग सांसारिक आनन्दों में व्यतीत करके सब प्रकार संतुष्ट होजाते थे। जिससे उनका मन फिर सांसारिक वस्तुओं की ओर कभी स्वप्न में भी न झुकता था संसार के सम्पूर्ण भेदों का जानकर नियम पूर्वक संन्यासी होते थे जिनकी कहीं भी नियत कुटी नहीं होती थी, जो प्रत्येक नगरों में जाकर भय रहित वेदरूपी सद्धर्म को करते थे, इसी कारण उनकी सब प्रकार सेवा करना हमारा परमधर्म था, हम उनकी सेवा के अर्थ तन मन से उद्यत रहते थे परन्तु शोक है कि वर्तमान समय में इस उत्तम परिपाटी का कहीं पता भी नहीं चलता जिधर दृष्टि उठाकर देखते हैं एक झुंड अनपढ़ नाम मात्र के सन्यासियों का देख पड़ता है, जिनको शारीरिक दशा का कुछ वर्णन नहीं हो सकता। कोई भुस खाता है, कोई बड़े २ लकड़ी के गट्ठों की माला पहने बड़े बड़े बाल बढ़ाये हुये हैं, कोई हाथी आदि उत्तम सवारियों पर चलते हैं। कोई दिन और रात चरस का दम लगाया करते हैं। सचमुच यह भी सांसारिक मनुष्यों की भांति नाना प्रकार के सुखों के अभिलाषी होते हैं। जैसे हमारी आपकी स्त्रियां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होती हैं उनके साथ भी स्त्रियां होती हैं जिनको बाई जी कहते हैं। हम अपने निवास स्थान को गृह कहते हैं और इनका निवास स्थान कुटी कहलाता है जिनमें सब प्रकार की वस्तु (जिनकी गृहस्थी में आवश्यकता होती है) भरी हुई पाई जाती है। सचमुच ये गृहस्थी हैं, परन्तु जीविका के अर्थ ये भेष धारण कर लेते हैं और नाना प्रकार से धन उत्पन्न कर कुकर्म्मों में व्यय करते हैं किसी के साथ एक झुंड आठ २, दस दस वर्ष के बालकों का (जो इस संसार के तृणमात्र से भी निपट अज्ञानी होते हैं) होता है। ये सब संन्यासियों के भेष में रहते हैं। मान्यवरो! ये कदापि संन्यासी नहीं कहे जा सकते। देखिये, शातातम जी कहते हैं कि संन्यासी वही हैं जिनकी सब सांसारिक पदार्थों में अप्रीत हो जैसाकि—

सदा सर्व पदार्थेषु वैराग्यं यस्य जायते ॥
अधिकारी स विज्ञेय इति शातातपोऽब्रवीत्।

इनका तो केवल यही उद्देश्य है कि प्रातःकाल होते ही नगर को ओर जाते हैं, घर पर जाकर घण्टों खड़े होकर मांगते फिरते हैं जिसकी निंदा बहुत प्रकार से की गई है, देखिये—

अहार मात्रोपि ना निस्पृहा कर्त्तासंन्यासिनेति।
भिक्षाप्रकरणवाक्ययात् प्रतीयते।
नेक्षयेद्द्वाररन्ध्रेण भिक्षालिप्सुः क्वचिद्यतिः।
न कुलाद्वै क्वचिद् घोषं द्वारं ताडयेत् क्वचित ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहीत यो ब्रू याल्लवणं व्यञ्जनादिकम् ।
गौमांस तुल्यं तद्भोक्त्यं भक्त्वा चान्द्रायणं चरेत ॥

अर्थ–संन्यासियों को अहार मात्र में भी बहुत इच्छा न करनी चाहिये यहां तक कि भिक्षा की इच्छा करता हुआ द्वार में न देखे, न मांगे, न दरवाज़े को खटकावे। लाओ ऐसा शब्द कहता, लवण या व्यञ्जनादि भोजन मांगता है वह गोमांस तुल्य होता है, उसको खाकर चन्द्रायण व्रत करने से शुद्ध होता है । फिर कहिये कि वह संन्यासी कैसे ? वह तो केवल अपनी स्त्री माता पितादि से लड़ झगड़ वा सांसारिक आनन्दों से निराश होकर देश देशान्तरों में भ्रमण कर देश की रेड़ मार रहे हैं। इसलिये आप जान बूझकर कार्य कीजिये। देखिये लिखा है कि वेद विरुद्ध कार्य करने वाले, झूँठ बकने वाले, तथा बगुला और बिलाव की वृत्ति रखने वाले, दुष्टों का वाणामात्र से भी सत्कार न करना चाहिये।

पाषण्डिनो बिकर्मस्थान वैडालव्रतिकान् शठान् ।
हेतकान्वकबृत्तीश्च वाङ् मात्रेणापि नार्चयेत् ॥

इसलिये मान्यवरो ! केवल उन्हीं पुरुषों का सत्कार कीजिये जो अपने वर्णों के धर्मों को पूर्ण रूप से करने में उद्यत हैं अन्यथा कुछ लाभ नहीं वरन् जितने पाप कर्म ऐसे जन आपका पाकर करते हैं उनके पाप के भी आप भागी होते हैं इसके उपरांत यह जन आपही की लड़ैती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन्तान को स्वप्नवत सुख दिखला कर रंगे स्यार बनाकर लेजाते हैं कि जिनके दुःखों में आप प्राण गमाने तक को उद्यत होजाते हैं, इसलिये शास्त्रानुसार अतिथियों की परीक्षा करके वेदानुकूल अतिथि सेवा का प्रचार कीजिये। देखिये य० अ० २१ मंत्र १४ में लिखा है कि धर्मात्मा और विद्वान् अतिथियों की सेवा करे। सचमुच ऐसी आज्ञाओं पर चलने से इस अभागे भारत की सुदशा होसकती है।

---

# त्यौहार

संसार परिवर्तन शील है और उसमें प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य प्रत्येक दिवस अपने जीवन की आवश्यकताओं के प्राप्त करने के साधनों में फंसे हुए थकजाते हैं और इस थकावट को दूर करने तथा विराम लेने के लिये, अपने जीवन में नूतनता और नयी स्फूर्ति उत्पन्न करना चाहते हैं। इसी हेतु पूर्व पुरुषाओं ने त्यौहारों की रचना की है।

महानुभावो! संसार स्थित मानवीय समाज में चाहे वह किसी जाति अथवा सम्प्रदाय के हों सबके यहां वर्ष में कुछ ऐसे दिन नियत हैं जिन में वे अपने विशेष मनोभावों को जतलाने के लिए विशेष विशेष कार्यों को करते हैं उनहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


दिनों को त्यौहार अथवा पर्व दिवस कहते हैं यह त्यौहार या तो परोपकार की दृष्टि से बड़े २ यज्ञों द्वारा मनाये जाते हैं—जैसे—दर्शेष्ट—पौर्ण मास्येष्टि, नवसस्येष्टि और चतुर्मास्येष्टि आदि। द्वितीय किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन की सूचना देने के लिए जैसे दिवाली बसन्तादि। तृतीय—सर्वजनों के मनोरंजन तथा हृदयोल्लास जताने के लिए जैसे होली आदि। चौथे—किसी युग प्रवर्तक महात्मा, कर्मवीर, प्रणवीर, दानवीर, शूरवीर और सत्यवीर आदर्श पुरुष एवं किसी ऐतिहासिक घटना की स्मृति में मनाये जाते हैं।

प्रिय पाठको! त्यौहारों अथवा पर्व दिनों में गृहस्थियों का मुख्य धर्म यह है कि वह अपनी मनोवृत्तियों को सांसारिक धंधों से हटाकर त्यौहार को ही पूर्ण रीति से मन लगाकर मनावें क्योंकि सब कार्यों की सिद्धि शुद्ध संकल्पों से ही होती है और संकल्पों के पूर्ति के लिए हृदय को पूर्ण प्रसन्नता की आवश्यकता है अतएव सांसारिक धन्धों की प्रतिदिन की व्यर्थ चिन्तनाओं को त्याग त्यौहार के दिन प्रसन्नता में ही व्यतीत करें त्यौहार के दिन घरको विशेष रूप से झाड़ बुहार लीप पोत कर शुद्ध करें। बच्चों से लेकर बुड्ढों तक उबटन लगा स्नान कर साफ़ वस्त्रों को पहने और यज्ञादि क्रिया को परिवार सहित हर्ष पूर्वक कर उत्तमोत्तम स्वादिष्ट पदार्थों का भोजन करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**नवसंवत्सरोत्सव**—नवीन वर्ष के प्रारम्भ अर्थात् चैत सुदी पड़वा को यह त्यौहार अवश्य मानना चाहिए। पूर्व रीति से गृहादि शुद्ध कर ऋतु की सामिग्री एवं नवीन अन्न के उत्तम पदार्थों को बना नवीन वर्ष के स्वागतार्थ आनन्द से यज्ञ करे।

**सरस्वती पञ्चमी**—चैत सुदी ५ को यह त्यौहार सरस्वती अर्थात् वेद वाणी की श्रेष्ठता और प्राचीनता के लिये मानना चाहिये। इसी श्रेष्ठ दिन को महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने संसार के उपकारार्थ सब से पहिले आर्यसमाज की स्थापना सम्वत् १९३२ में बम्बई में की इससे आर्यसमाज का स्थापना दिवस भी इसको मान प्रेम पूर्वक यज्ञादि कृत्य करे और सब मिलकर संसारमें वैदिकधर्म के प्रचार के साधनों पर विचार कर तदनुसार कार्य्य करें।

**राम नवमी** यह त्यौहार चैत सुदी ९ को आर्यकुल भूषण एवं सर्व गुण सम्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी भगवान के जन्मोत्सव दिन की स्मृति में मनाया जाता है। इस अवसर पर हम को श्री रामचन्द्र जी के इतिहास एवं गुणावली से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

**व्यास पूजा वा गुरु पूर्णिमा** वर्षा के प्रारम्भ होने के कारण वानप्रस्थी एव सन्यासी गरु जन जङ्गल से नगरों में आ वर्षा के चार महीनों को वहां व्यतीत करते थे और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गृहस्थियों की जीवन रक्षा एवं आरोग्यता के लिए बड़े बड़े यज्ञों को करते थे। आषाढ़ सुदी पूर्णिमा को इन गुरुजनों की पूजा अर्थात् अतिथि सत्कार श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक शिष्य एवं गहस्थी जन करते थे।

**हरियाली तीजें**—सावन सुदी तीज को यह त्यौहार मनाया जाता है। कारण यह हैं कि वर्षा ऋतु के होने से प्रकृति का दृश्य ही बदल जाता है। चारों ओर हरियाई हरियाई ही नेत्रों को आनन्द देती है। झीमी २ बूंदों की वर्षा चारों ओर नदी नालों के चमकीले एवं सुहावने दृष्य मनको अति प्रसन्न करने वाले होते हैं। यह वर्षा ऋतु का उत्सव विशेष रूप से स्त्री जाति का त्यौहार है। इस अवसर पर स्त्रियां उत्तम वायु में झूले पर झूलती हैं, सौभाग्यवती देवियां गीतों और भजनों द्वारा अपने पतियों के प्रति प्रेम प्रदर्शित कर पतिव्रत धर्म पालन हेतु अपने मन में अगाध श्रद्धा बढ़ाती हैं। प्रभू से शुभ कामना की प्रार्थना करती हैं। झूलने एवं गाने से स्त्रियों के फेफड़े बलिष्ट होजाते हैं। एवं वायु सेवन करने से मन के प्रसन्न रखने से आरोग्यता की वृद्धि होती है। सौभाग्यवती स्त्रियां वृद्धा स्त्रियों का उत्तम पकवानों (बायनों) से सत्कार करें एवं कन्यायें समान अवस्था वालियों से प्रेम पूर्वक मिलें और उनका सत्कार करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**ऋषि तर्पण वा श्रावणी**—संसार में विद्वानों और महात्माओं की प्रतिष्ठा करना ही सुख का हेतु और भलाइयों का मूल है और यह त्यौहार इसीलिये है।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं व्यथा॥

जिस जगह अपूज्य अर्थात् मूर्खों की पूजा और ज्ञानी महात्माओं का सत्कार होता है वहाँ अकाल, मरी और व्यथा फैल जाती हैं। क्लेश तीन प्रकार के होते हैं। अध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों प्रकार के दुःख अन्तःकरण की अशुद्धि के दोषों, रोगों, प्राणियों के संसर्ग तथा मन और इन्द्रियों के विकारों से उत्पन्न होते हैं। अन्तःकरण की शुद्धि महात्माओं के सतोपदेश, रोगों की निवृति विद्वान वैद्यों के बताये हुये उपचार और मनके विकारों की शुद्धि आत्मवद ज्ञानियों के उपदेश और यज्ञों द्वारा होती है। इसलिये सर्व प्रकार के दुःख विद्वान और महात्माओं के परिश्रम से ही दूर होते हैं और ऐसा ही वेद के प्रपाठक ३५ कांड १९ अनुवाक १ मन्त्र १४ में लिखा है। 'शन्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः सर्वे मे देवा'

अर्थ—सम्पूर्ण देवता (विद्वान्) लोग प्रत्येक प्रकार के दुःख दूर करके शांति करने वाले हों। अथर्ववेद में लिखा है कि जो विद्वानों में श्रेष्ठयज्ञ करने वाले हैं और जो यज्ञ में सत्कार करने योग्य हैं जिनके लिये हव्य अर्थात् उत्तम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सामिग्री से भाग किये जाते हैं और वह सब विद्वान् (देवता) अपनी स्त्रियों के साथ आकर इस यज्ञ को पूर्ण करते हैं।

ये देवावानृत्वजोए च यज्ञियाएश्यो हव्यं क्रियते भागधेयम्।
इम यज्ञ सह पत्नाभिरेत्वावन्तोदेवा समिषा माऽदत्ताम् ॥

इन मंत्रों से स्पष्ट है कि हमारे सम्पूर्ण कार्य विद्वान् महात्मा और ऋषियों के द्वारा ही हो सकते हैं यही कारण था कि प्राचीन राजा महाराजा एवं प्रजाजन विद्वानों और ज्ञानियों का आदर सत्कार तन मन से करते थे। वर्षा की अधिकता के कारण व्यापार कम होता था व्यापारी जन अपने घरों पर निवास करते और ऋषि महात्मा विद्वान् लोग जंगल पहाड़ों से आकर नगरों या उनके समीप में निवास करते थे। इसलिए यह समय सत्संग के लिए अत्यन्त उचित और योग्य था। घर से मनुष्य उनके पास जाकर उनके सत्संग से प्रत्येक लाभ उठाते थे। आषाढ़ और सावन दो महीने के सत्संग से गृहस्थ और राज पुरुष लोग विचारते थे कि अमुक ऋषि वा महात्मा इस सत्कार वा सम्मान के योग्य हैं। वैसा ही पूर्णमासी के दिन जो श्रावण महीने का अन्तिम दिवस है, प्रत्येक ऋषि महात्मा विद्वान् के साथ यथा योग्य वित्त समान दान देते थे। जो मनुष्य यज्ञोपवीत से भ्रष्ट होते थे उनको यज्ञोपवीत दिए जाते थे, और जो कुसंग के कारण पतित होजाते थे उनको भी इस समय पर शुद्ध किया जाता था। वह सम्पूर्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 

महात्मा इन गृहस्थी और राजपुरुषों से सम्मान पाकर धर्मोपदेश किया करते थे और राजा प्रजा को हवन की ओर रुचि दिलाते और अपने हाथों से भी करते कराते थे।

इस ऋतु में अधिक यज्ञ करने की प्रेरणा इस कारण है कि इन दिनों में स्थान २ पर पानी रुक कर वायु को बिगाड़ देता है कि जिससे नाना रोगों के पैदा होने का भय रहता है, इस कारण प्राचीन समय के ऋषि मुनियों ने इन सब बुराइयों को मेटने का उपाय एक यज्ञ करना ही विचारा था और वह आप इन परोपकारी यज्ञों में वेद मन्त्रों का उच्चारण करते थे जिनमें यज्ञ की रीति और फल, ईश्वर की उपासना और प्रार्थना होती है। कैसा शुभ समय वह होता होगा क्योंकि प्रथम तो वर्षा ऋतु के कारण हरे हरे पौदों की हरियाली आंखों को आनन्द देती होगी, दूसरे 'यज्ञ' के होने से उसकी सुगन्धों को लपटें सब स्थानों और शरीर को सुगन्धित कर देती होंगी तीसरे ऋषि और महात्माओं के सत्योपदेश से अंतःकरण के मल दूर होते होंगे, तदनन्तर वह सर्वजन उन सत्पुरुषों और ऋषि मुनि महात्माओं का आदर सत्कार कर बिदा करते थे उसी समय वे महात्मा जन उनको आशीर्वाद देते थे जिसको **ऋषि तपण** कहते हैं। आर्यों में जो देवयज्ञ करने की शिक्षा है वे विशेष कर उन्हीं महीनों में पूर्ण होते थे, राखी वा कलावा हाथ में बांधने की रीति जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अब तक प्रचलित है यह यज्ञ का चिन्ह था। जो मनुष्य इन दिनों में महात्माओं के सत्संग और उपदेश से लाभ उठाते थे, उनके हाथ में यह शुभ चिन्ह बांधा जाता था। इसी त्योहार को रक्षा बंधन और सलूना भी कहते हैं।

**कृष्णाष्टमी**—भादों बदी अष्टमी को यह त्यौहार योगेश्वर भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव की खुशी में मनाया जाता है। गृहादि को शुद्ध कर यज्ञादि कर्मों के पश्चात् श्रीकृष्णजी तथा राधिका जी के पूर्ण प्रेम-दंश सेवा और गोपालक आदि गुणों की प्रशंसा में व्याख्यान भजन और गीता का स्वाध्याय करना एवं मनन करना योग्य है।

**दशहरा**—यह हमारे देश के राज पुरुषों का मुख्य त्योहार है। वर्षा के कारण सेना का इधर उधर जाना बन्द रहता था। इसलिये उनके हथियारों पर जंग आजाती थी। आज के दिन हथियारों की सफ़ाई वेषभूषा की बनावट एवं हाथी घोड़े आदि सवारियों की सजावट कर पुनः इधर उधर जाने के लिये तैयार हो जाते थे। इस प्रकार व्यापारी गण भी अपने सामान को ठीक ठाक करते थे। महाराज श्रीरामचन्द्रजी ने आज ही के दिन रावण पर विजय पाई थी तब से इस त्योहार की उपयोगिता और भी बढ़ गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे परोपकारी धर्मात्मा राम के स्थान पर ऐसे ऐसे मूर्ख लड़कों के स्वांग बनाकर दिखलाते हैं जिनको किस प्रकार का ज्ञान नहीं उनके चाल चलन ऐसे खराब होते हैं कि जिनके कथन मात्र से लाज आती है ? तिस पर दूसरे का नक़ल बनाना बहुत बुरा है जैसा मनुजी ने लिखा है—

दशसूनासमञ्चक्रं दश चक्रसमोध्वजः ।
दशध्वजसमा वेशा दशवेशसमानृपः ॥

अर्थात् किसी की नक़ल बनाने में मनुजी ने १०० गोहत्या का पाप लिखा है, भाँड़ भँड़ेले बहुरूपिये आदि तो इस पाप कर्म से सदा अपना जीवन ही व्यतीत करते हैं परन्तु स्वांग रामलीला तथा कृष्णलीला बनाने वाले अपना व्यय करके नक़ल बनाकर इस पाप में क्यों पड़ते हैं ?

दिवाली कार्तिक महात्म में लिखा है एक ब्राह्मण ने अपनी तपस्या से विष्णु भगवान को प्रसन्न कर लक्ष्मी प्राप्त करने की प्रार्थना की, तब विष्णु भगवान ने कहा कि तुम अपने राजा से कहो कि कार्तिक बदी अमावस की रात्रि को कोई नगर में दिया न जलाने पावे जब यह प्रार्थना अङ्गीकार हो जावे तो तू अपने घर में अच्छे प्रकार से दियों को जलाना उस दिन लक्ष्मी नगर में आवेगी और सब नगर में अंधेरा होने के कारण घबड़ा कर तेरे घर में घुस पड़ेगी। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया लक्ष्मी जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आईं तो चारों ओर नगर भर में अंधेरा फैला हुआ देखकर उसी ब्राह्मण के सुसज्जित और प्रकाशित घर में घुस गईं तब ब्राह्मण डण्डा लेकर पीछे पड़ा कि तू मेरे घर से निकल तू बड़ी चंचल विष्णु की स्त्री है, तू कहीं नहीं ठहरती मेरे घर में भी नहीं ठहरेगी, इसलिये मैं तेरी अपने घर में रक्षा न करूँगा। लक्ष्मी ने अत्यंत बिनती की और प्रण किया कि मैं तेरे घरसे कभी न जाऊँगी। वह ब्राह्मण लक्ष्मी के कारण धनाढ्य होगया लोगों ने उसे धनवान् देखकर लक्ष्मी की चाहना में उसीके अनुसार उस दिन सब घरों को स्वच्छ और सुथरा कर दीपमालिका की। उसी दिनसे यह रीति चली आती है।

शिव पुराण में श्रीकृष्ण महाराज ने युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन! प्राचीन समय में विष्णु महाराज ने बामन अवतार राजा बलि के फुसलाने के अर्थ लिया और इन्द्र को राज्य दिलाकर बलि को पाताल में नियत किया और केवल एक दिन इस पृथ्वी पर दैत्यों का राज्य होता है और वह अपने स्वभाव के अनुकूल कार्य करते हैं, इसीसे दिवाली के दिन जुआ खेलने की आज्ञा है।

प्यारे सुजनों! अब विचारिये कि 'दिवाली' जिसके अर्थ दो। वह भी एक दूसरे के विरुद्ध, तो बताइये किसको सच कहें और किस को झूँठ। यदि उस दिन दैत्यों का राज्य मानते हो तो दैत्यों के कार्य में शामिल होना और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


त्यौहार मान कर खुशी करना वृथा और अनुचित है वस्तुतः यह नवष्येष्टि यज्ञ है जो खरीफ़ की फसल के अंत में नवीन धान की खीलों द्वारा किया जाता है।

यह त्यौहार वर्षा के समाप्त होने पर होता है। अत्यन्त वर्षा होने के कारण सम्पूर्ण मकानों की शकल सूरत बुरी और भोंड़ी हो जाती है। हमारे बड़े २ ऋषि, महात्मा, जो पदार्थ विद्या को यथावत् जानते थे और शौच का धर्म का एक लक्षण मानते थे, उन्होंने एक दिन इसीलिए नियत किया था। उसी दिन तक प्रजा के सब मकानों की सफ़ाई ठीक २ होजावे कि जिससे उनकी सुन्दरता में अन्तर न हो जावे और वायु भी अशुद्ध न होने पाये, इस कारण इस कार्य को आवश्यक समझ कर इस दिन त्यौहार मान लिया कि जिससे सम्पूर्ण स्थानों में यह कार्य हो जावे।

अब रहा दीपमालिका का होना, यह भी प्रयोजन से पृथक् नहीं है श्रीरामचन्द्र जी विजयादशमी को रावण को मारकर कार्तिक बदी अमावस्या को अयोध्या में पधारे थे। राजा रामचन्द्र जी महाराज चौदह वर्ष पश्चात् बन से आये थे प्रजा ने अपनी प्रसन्नता को प्रकट करने के लिए 'दीपमालिका' नवीन अन्न इत्यादि का हवन और परमेश्वर का धन्यवाद देकर प्रसन्नता मनाई थी। वह यादगार अब तक चली आती है और ऐसे ही चली जायगी गुरु गोविंद-



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सिंह जी महाराज, औरंगज़ेब के कारागार से मुक्ति पाकर आज ही के दिन अमृतसर पधारे थे इसलिये सिक्ख जाति के लोग भी विशेष प्रसन्नता से इस उत्सव को मनाते हैं।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आज के दिन वैदिक धर्म प्रचार के हेतु प्राण न्यौछावर कर निर्वाण प्राप्त किया था।

**देवोत्थान् अर्थात् ड्योठान**—यह त्यौहार मिती कार्तिक सुदी ११ को होता है। पूर्वकाल में ऋषि मुनि, देवता, विद्वान महात्मा जो कि वर्षा ऋतु में शहरों में आ जाते थे इस तिथि से फिर अपना दौरा आरम्भ करते थे इस समय तक ज्वार, बाजरा आदि अन्न और गन्ना भी तय्यार हो जाता था। इस लिए इस दिन सम्पूर्ण जन हवन करके अनेक प्रकार के पदार्थ विद्वानों को अर्पण करके प्रार्थना करते थे कि हे विद्वानों! आप संसार के भिन्न २ भागों में जाकर अपने सदुपदेशों से मनुष्यों को धर्मात्मा बनाइए। बहुधा मनुष्य ऋतु की नई २ वस्तुयें भी इस कारण इस तिथि तक नहीं खाते थे क्योंकि वे अपक्व रहती हैं, इस लिए आज हवन करके विद्वानों को खिला कर गन्ना आदि खाते थे। वर्त्तमान् समय में भी स्त्रियां एक पत्ते के नीचे दिये और ऋतु पदार्थ रख कर सम्पूर्ण गृह के स्त्री पुरुष कहते हैं कि 'उठो देव बैठो देव पामरिया चटकावो देवो' आदि। इन से भी वही अभिप्राय पाया जाता है, जो ऊपर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वर्णन हुआ है । इससे ज्ञात होता है कि मनुष्य मात्र मुख्य अभिप्राय को भूल गये, मगर लीक पीटते चले जाते हैं।

**हिमेष्टि अर्थात् बसन्त**—यह त्यौहार मिती माह सुदी ५ को होता है, क्योंकि इस ऋतु में नई नई कोपलें और हरे २ पत्ते दरख़्तों से निकलते हैं, पुष्प भी खिलते हैं और बसंतऋतु होली का आरम्भ होजाता है फ़सल रबी भी फूलने लगती है जिससे प्रजा का पालन होता है इसलिये सब मनुष्य मिलकर यज्ञ करके परमात्मा से धन्यवाद पूर्वक प्रार्थना करते थे कि यह फ़स्ल अच्छे प्रकार से निर्विघ्न समाप्त हो, परन्तु अब तो केवल गेहूँ, जौ की बाल और सरसों, राई और आम के फूलों को ब्राह्मण लोग लाकर धनी लोगों को प्रसन्न करने के अर्थ देकर कुछ प्राप्त करते हैं।

आज हा के दिन वीर हक़ीक़तराय ने धर्मपक्ष के लिये अपने प्राण परित्याग किये थे।

**होली**—यह त्यौहार नवष्येष्ठि यज्ञ है और फ़सल रबी का उत्सव है, इस बसन्त ऋतु में वह अन्न फल फूल पैदा होते हैं कि जिनसे मनुष्यों का जीवन आधार है। होली पर सब अन्न आधे पक जाते हैं इसलिये इस त्यौहार का नाम होलिका रक्खा है। क्योंकि संस्कृत में 'तृणाग्नि भ्रष्टार्द्धपक्व शमीधान्यं होलकः' । अर्थात् तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके फली वाले अन्न को होलक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(होला) कहते हैं। इससे जाना जाता है कि होलिका अर्थात् आधे पक्के नाज का पूजन इसके सिवाय और कुछ नहीं हो होसकता कि उसको आग में भूना व पकाया जाय क्योंकि पूजा शब्द का यही अर्थ है कि जो पदार्थ जैसा है उसके साथ उसी प्रकार का बर्ताव किया जावे। इसलिये होली जलाना अर्थात् नाज का भूनना उसका पूजा है परन्तु बड़े शोक की बात है कि जिसको हम देवी मान त्यौहार मनावें फिर उसी को जला कर राख की ढेरी बना प्रसन्न हों।

हमारे देश में होली के विषय में यह बात प्रसिद्ध है कि प्रह्लाद परमेश्वर का बड़ा भक्त था, उसका बाप हिरण्य कशिपु नास्तिक था और प्रह्लाद को ईश्वराराधन करने को मना करता था, परन्तु वह इसको नहीं मानता था इससे उसको नाना भाँति से कष्ट देता था। यहां तक कि उसको आग में डाल दिया। यह भी प्रसिद्ध है कि हिरण्यकशिपु की बहिन कि जिसको यह आशीर्बाद था कि वह आग में न जलेगी, उसके साथ बिठाई गई, परन्तु वह तो जल गई और प्रह्लाद को परमेश्वर की कृपा से आंच भी न आई। इस पर जो हरिभक्ति थे उन्होंने अधिक प्रसन्नता की और कहा कि प्रह्लाद तू बच गया और वह (होली) जल गई। निदान यह वही होली है, इसी कारण इसका वही नाम पड़ गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे सज्जनों ! यह बात मिथ्या है क्योंकि आग में डालने से कोई बच नहीं सकता चाहे कैसा ही भक्त हो। यह कभी हो नहीं सकता कि दो मनुष्य आग में बैठें एक उनमें से मर जाय और दूसरे को कुछ आंच न आये। यदि परमेश्वर अपने भक्त को भक्ति करने के कारण जलने न दे तो वह न्यायकारी नहीं रहता अर्थात् जो नियम और सृष्टि क्रम रचा है वह जाता रहे, सो यह असम्भव है। यदि ऐसा ही मान लिया जावे तो हरिभक्त के बचने की प्रसन्नता में जो आनन्द मनाया जावे उसमें शराब, भंग पीना, माजूनादि नशे खाना, खाक उड़ाना, कींच फेंकना आदि मिथ्या प्रपञ्च क्यों रचे जांय ? ऐसे समयों पर तो परमेश्वर के गुणानुवाद गाना और हवन आदि यज्ञ करके जगदीश्वर का धन्यवाद गाना चाहिए कि जिसने ऐसी कृपा की थी। भला बताओ तो सही यह कौन सी नीति और धर्म की बात है कि परमेश्वर तो ऐसी असीम कृपा करें और हम तुम उसके पलटे में और अशुभ कार्य करें इसके उपरान्त इसी त्योहार के साथ एक त्योहार धुरहड़ी का भी है। यदि होली की व्युत्पत्ति यही मानी जाय तो धुरहड़ी का कारण क्या है ! इसका सबब यों वर्णन करते हैं कि धुरहड़ी के दिन जो राख उड़ाई जाती है यह उसी आग की राख का चिन्ह है। परन्तु हम नहीं जानते कि इससे क्या उत्तम बात प्राप्त होती है। यदि राख उड़ाते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो राक्षस उड़ाते कि जिनके अफ़सर की बेटी आग में जल गई थी। हरिभक्तों को ख़ाक उड़ाने से क्या प्रयोजन? इस के सिवाय प्रह्लाद रात्रि के समय आग में डाला गया था, चुनांचे होली भी रात को ही फूंकी जाती है, इससे प्रकट है कि होली फूँकने की रात्रि से पहिले दिन ख़ुशी करने का समय नहीं है, वरन् उस दिन रञ्ज करने का समय है, क्योंकि उस दिन प्रह्लाद के जल जाने का संदेह था, फिर इसका क्या कारण है कि रञ्ज के दिन ख़ुशी मनावें और उसके अगले दिन ख़ाक उड़ावें? योग्य तो यह था कि धुरहड़ी के दिन ख़ुशी मनाई जाती और होली के दिन रंज किया जाता। इसको भी जाने दीजिये अब ज़रा विचार कीजिए कि जिस आग को जलाकर हम और आप पूजते हैं, यह सचमुच राक्षसों की चिता है मानो आप होली की पूजा नहीं करते वरन् राक्षसों की क़ब्र अर्थात् चिता को पूजते हों। इसी प्रकार और भी सहस्रों शंकायें उत्पन्न होती हैं कि जिनका उत्तर कुछ नहीं वास्तव में होली का मुख्य वही प्रयोजन है जो हमने ऊपर वर्णन किया और धुरहड़ी की व्युत्पति यह है कि त्यौहार चैत बदी अमावस को होता था जैसाकि वर्तमान समय में दक्षिण में अब भी होता है और उसके अगले दिन चैत सुदी प्रतिपदा को महाराज विक्रमादित्य के गद्दी पर बैठने का दिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यस श्रीमहाराज के गद्दी पर विराजमान होने के पीछे होली के बाद यह दूसरा त्योहार बढ़ाया गया।

इन सबके सिवाय अबीर, गुलाल उड़ाने, रंगपोशी करने की जो रीति प्रचलित है यदि पौराणिकों से उसका कारण पूछा जावे तो वे कुछ नहीं बताते सिवाय इसके कि कृष्ण-चन्द्र महाराज ने गोपियों के साथ रंग खेला है कि जिसका किसी पुस्तक में प्रमाण नहीं। इससे यह कहना मिथ्या जान पड़ता है बुद्धि से विचार करने से जाना जाता है कि यह केसर कस्तूरी आदि सुगन्धित वस्तुयें हवन यज्ञ करते समय गुलाब आदि में पीस कर केवड़ा गुलाब की भांति गुलाब-पाश में भर कर जैसा कि विवाह आदि में छिड़के जाते हैं छिड़के जाते होंगे।

---

# व्रत और तपस्या

मान्यवरो! जब देश से वेदरूपी सूर्य छिप गया और ऋषि मुनि आदि ने धर्म की धुनि से अज्ञान में पड़े हुए मनुष्यों को चिताना त्याग दिया तब से अधर्म रूप अंध-कार ने संसार को आ घेरा। पुराण रूपी नाना सितारे अपने धुंधले प्रकाश से चमकने लगे। काम, क्रोध, लोभ, अज्ञान रूपा चोरों ने बरसाती मेंढक की भांति समय पाकर अपनी कमर बांधी और अधर्म की घोर निद्रा में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सोते हुए मनुष्यों के गृह में घुस कर उनकी धर्म रूपी माया को यहां तक लूटा कि उनके पास कुछ भी न रहा। जैसे धनादि के आने से मनुष्य निर्बुद्धि होजाता है, अंट संट बकता है, मार्ग कुमार्ग को नहीं पहिचानता, ठीक इसी प्रकार धर्म रूप माया के जाने से मनुष्य मात्र अपने पुरुषाओं के उत्तम नियमों को यहां तक भूल गये कि उनके मुख्य अभिप्राय को भी नहीं मानते। एक परम देव परमात्मा के स्थान पर तेंतीस करोड़ देवता मानने लगे जो कि भारतवासियों की मनुष्य गणना से भी अधिक हैं। इस घोर अन्धकार में नाना मत मतान्तर रूपी मार्गों को उत्तम समझ स्वर्ग रूपी फल पाने की आशा से चलने लगे। व्रत के अभिप्राय ही को भूल गये, इतने व्रत बढ़ा दिये कि साल के दिनों से भी दुचन्द होगये। देखिये आदित्य पुराण के अनुसार रविवार को, शिव पुराण के अनुसार सौमवार और तेरस, चन्द्रखण्ड के अनुसार, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर को व्रत रहना आवश्यक हैं। यही सप्ताह में सात दिन होते हैं अर्थात् सम्पूर्ण साल व्रती रहने की आज्ञा दे रहे हैं। और भी सुनिये कि विष्णु की एकादशी, बामन द्वादशी, नरसिंह की अनन्तचौदश, चन्द्रमा की पूर्णमासी, दिक्पाल की दशमी, दुर्गा की नवमी, बसुओं की अष्टमी, मुनियों की सप्तमी, स्वामिकार्तिक की छट, नागपञ्चमी, गणेशचौथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गौरी की चौथ, अश्वनी कुमार की दोज, अद्या देवी की परिवा, भैरव की अमावस और २६ एकादशियों को भी व्रत रहे इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह में दो चार त्यौहार माने हैं जिनमें स्त्री पुरुष दोनों वा केवल स्त्री और पुरुष ही व्रत रहते हैं जैसा—चैत्र के कृष्णपक्ष में शीतला की अष्टमी और वारुणी स्नान।

चैत्र के शुक्लपक्ष में परिवा से नवमी तक नवरात्रि का अष्टमी को देवी की तोज (गननौर)

बैशाख के कृष्ण पक्ष में सप्तमी और अष्टमी।

बैशाख के शुक्लपक्ष में तीज ( अछय तृतीया )।

जेष्ठ में बरसाते (बटसावित्री) शीतला की अष्टमी सप्तमी

आषाढ़ में सप्तमी और दहबैठौनी अष्टमी।

सामन में सलूनो।

भादों कृष्णापक्ष चौथ ( बगुला चौथ ) छठ ( हरछट ) कन्हैया अष्टमी।

भादों शुक्लपक्ष तीज (गौरी) चौथ (सिद्ध बिनायक) ऋषि पंचमी बड़ा इतवार।

कुआर शुक्लपक्ष परिवा से नवमी तक नवरात्रि व्रत दशहरा चौदश।

कार्तिक कृष्णपक्ष चौथ (करवाचौथ) अहोई अष्टमी, दिवाली द्वादशी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कार्तिक शुक्लपक्ष दोज ( भाई दोज ) चिरया और नवमी से एकादशी तक दशमी से पूर्णमासी तक भीष्मपंचक।

अगहन शुक्लपक्ष पंचमी, छठ और अष्टमी।

माघ कृष्णपक्ष चौथ, ( गणेश चौथ ) पंचमी एकादशी

फाल्गुन कृष्णपक्ष अष्टमी तेरस ( शिवतेरस )

फाल्गुन शुक्लपक्ष होली आदि दिन भी व्रत के हैं।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत से व्रतों की आज्ञा धर्मसिंधु और निर्णयसिंधु में पाई जाती है। इन सब दिवसों में सम्पूर्ण दिन या किसी भाग तक सम्पूर्ण स्त्री पुरुष बालक भूखे रहते हैं और तत्पश्चात् अन्न को छोड़ कर घुइयाँ, सक्करकन्दी, फाफड़ा, सिंघाड़ा आदि वस्तुएं खाते हैं, परन्तु इन सब में निर्जल रहना अर्थात् दिन रात कुछ न खाना सब से उत्तम माना गया है, क्योंकि अन्न में पाप एकादशी आदि को होता है। भूँखे रहने से कहते हैं कि आत्मा को मार कर एकाग्रचित होकर परमेश्वर का भजन करते हैं। जब से इस देश में व्रतों का प्रकाश हुआ तभी से नाम मात्र के पण्डितों ने बहुत सी कथायें भी लिख मारीं जो इन्हीं व्रतों के दिन सुनाई जाती हैं, जिनमें बहुधा उत्तम भी हैं और बहुतों में केवल गपोड़पन्थ ही भरा हुआ है और बतला दिया कि इन व्रतों के रहने से और इन इन कथाओं के सुनने से वही फल प्राप्त होता है जो सहस्र अश्व-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेध, सहस्र गोदान, सौ कन्यादान और सहस्र उपकारादिक उत्तम कर्मों के करने से प्राप्त होता है और ऐसे पुरुषों को संसार में धन धान्य सन्तानादि से सर्व प्रकार के आनन्द मिलते हैं। इन फलों को सुनकर वर्तमान समय में निर्धन धन के, बीमार आरोग्यता के, वे औलाद सन्तान के और स्त्रियां पतिव्रत धर्म पूर्ण करने के अर्थ भेड़ चाल की भांति बिना सोचे समझे व्रत रहती चला जाती हैं। बहुधा निमक और आग छोड़ देती हैं अर्थात् आग से बना हुआ भोजन न कर केवल ऋतु आदि के फलों पर निर्वाह करती हैं।

जब हम धर्म शास्त्र पर दृष्टि डालकर इन उपरोक्त व्रतों की जांच करते हैं तो कहीं बिना अजीर्ण के भूखे रहने की आज्ञा नहीं पाई जाती क्योंकि भूख के मारने से मन्दाग्नि होजाती है, मनुष्य निर्बल होजाते हैं, किसी की बात अच्छी नहीं लगती, अच्छी को बुरी समझते हैं सूरत भयावनी होजाती है। बहुत लिखने की क्या आवश्यकता है आप नित्य प्रति देख सकते हैं कि जो स्त्रियां अन्नादि छोड़ देती हैं उनकी क्या दशा हो जाती है। वह गृहस्थी के कार्यों को नहीं कर सकतीं और उनके गर्भाशय में अन्तर पड़ जाता है जिससे आने वाली संतानों में नाना प्रकार के दोष होजाते हैं और पुत्र पुत्री आदि का पूर्ण रूप से लालन पालन नहीं कर सकतीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अब रही चित्त की एकाग्रता और ईश्वर का भजन। यदि यह दोनों कार्य भूखे रहने से होते तो आज कल बहुधाजन बिना अन्न के मारे मारे फिरते हैं, फिर उनका एकाग्रचित्त क्यों नहीं होता और वह ईश्वर के भजन में लिप्त क्यों नहीं रहते ? आप जानते हैं कि एक दिन भोजन न मिलने से मनुष्य व्याकुल होजाता है उसको दुनिया और दीन दोनों दीख पड़ते हैं, बुद्धि में अन्तर आता है कुछ को कुछ सुनता और समझता है। दिल भटकता रहता है फिर ईश्वर का भजन कैसा ? यही कारण है कि बहुत जन व्रती रहकर नानो कथाएं वर्षों तक सुनते रहते हैं परन्तु सौ में दो मनुष्य भी ऐसे न निकलेंगे जो उन कथाओं को सुना सकें फिर उन कथाओं पर चलना कैसा ?

यदि भूखे रहने से ही चित्त की एकाग्रता होती तो हमारे ऋषि मुनि क्यों इतना कष्ट उठाते और जंगलों में रह यम और नियमों का सेवन कर योगाभ्यास करते। इन सब हानियों के अतिरिक्त एक बड़ी हानि इन व्रतों से यह हो रही है कि स्त्रियों ने इसको ही मुक्ति का द्वार समझ कर पति सेवा को बिलकुल त्याग दिया। पति कुछ कहता वह कुछ करती हैं जिससे गृहस्थाश्रम में प्रेम नहीं आता। दिन और रात झगड़े पड़े रहते हैं। हे प्यारी बहिनों ! क़दापि इन व्रतों के रहने से स्वर्ग नहीं पासकतीं तुम्हारा तो परमदेव पति है, वही तुम्हारा तीर्थ है उसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


को सेवा टहल से तुम आनन्द उठा सकता हो। जो फल यज्ञादि उत्तम कर्मों के करने से प्राप्त होता है वह तुमको केवल पति सेवा से ही मिल सकता है जैसा कि मनु० अ० ५ श्लोक १३५ और शंखस्मृति अ० ५ श्लोक ८ में लिखा है—

नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम्।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गेमहीयते॥
न व्रतैर्नोपवासैश्च धर्मेण विधिधेन च।
नारीस्वर्गमवाप्नोति प्राप्नोति पतिपूजनात्॥

मारकण्डेय जी महाराज ने युधिष्ठिर से कहाकि स्त्रियों को केवल पति सेवा ही से स्वर्ग मिलता है, परन्तु शोक है कि वर्तमान समय में इन उक्त वचनों पर कोई ध्यान नहीं देतीं किंतु अधर्म में पड़ कर अपने पति की आयु को हरती हैं और आप नरक को जाती हैं। जैसा कि विष्णुस्मृति अ० २५ श्लोक १५ और मनुस्मृति श्लोक १३४, १३५ में लिखा है:—

पत्यो जीवति या योषिदुपवासव्रतञ्चरेत।
आयुः सा हरते भर्तुर्नरकंचैव गच्छति॥
जीवद्भर्तरि या नारी उपोष्यव्रत चारिणी।
आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्॥

मान्यवरो! जब यह अहंकार बहुत बढ़ा और सबको अत्यन्त दुखदाई हुआ तो बहुत सज्जनों ने कोतवालों की भांति संसार के हितार्थ उद्योगरूपी घोड़ों पर चढ़ धर्म रूपी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तलवार अपने हाथ में ले जीवन के भय को छोड़ कर काम, लोभ और अभ्रायानरूपी शत्रुओं के मारने को सारे संसार में फिरना प्रारम्भ किया और भिन्न २ स्थानों पर ज्ञानरूपी दियासलाई से वेद शास्त्ररूपी मसाले फिर जलाये। उन्हीं के प्रकाश से आज हम जान गये हैं कि पूर्व समय में ये व्रत प्रचलित न थे। वरन् और हा थे और उनसे हमको नाना प्रकार के सुख मिलते थे जिनको मैं भी आपके हितार्थ वर्णन करता हूँ। देखिये व्रत के अर्थ नियम के हैं अर्थात् वेदादि सत्य विद्याओं का पालन करना व्रत कहाता है, जैसा कि य० अ० १९ मं० ३० में लिखा है—

व्रतेन दीक्षमाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम।
दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यामाप्यते॥

दक्षस्मृति अ० १ श्लोक ७ हारीतस्मृति अ० ३ श्लोक ५ में लिखा है कि जब वेद आरम्भ करे ता उनकी सिद्धि के लिये गुरुकुल में वेदोक्त व्रतों को करे। जैसाकि—

स्वीकरोति यदा वेदं चरेत्शुभव्रतानि च। दक्ष०॥
तस्माद वेद व्रतानीय चरेत्स्वाध्याय सिद्धये। हारीत०॥

और ऐसाही शंखस्मृति अ० ३ श्लोक १५ तथा विष्णुस्मृति अ० १ श्लोक २१ में लिखा है कि यज्ञोपवीत संस्कार होने के पश्चात् गायत्री मन्त्र से लेकर वेद तक जिस २ ग्रंथको पढ़े उस उस का व्रत करे अर्थात् ब्रह्मचर्य रह कर वेद विद्या पढ़ने का नामव्रत है। अनुशासन पर्व अ० १४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


में महेश्वर ने उमा से कहा कि वेद व्रतों को धारण करना अति उत्तम है सबसे उत्तम और शारीरिक वा आत्मिक बल का देने वाला व्रत ब्रह्मचर्य ही है जिसकी प्रशंसा प्रथम हो चुकी है इसी को परमोत्तम व्रत वेदादि सत्शास्त्रों में माना है जैसा कि अथर्व० २ कां० ११ प्रपा० २४ वा १६ मं० २६ में लिखा है कि—

तानिकल्पद ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठ तपोऽतिष्ठत्तप्यमानः ।
समुद्रसस्रोतवोभ्रः पिंगलः पृथिव्यां बहु रोचत ॥

जो ब्रह्मचारी समुद्र के समान गम्भीर बन बड़े उत्तम ब्रह्मचर्य पूर्वक निवास करता है वह महा तप को करता हुआ वेद पठन, वीर्य निग्रह और आचार्य के प्रिय चरणादि कर्मों को पूरा कर स्नानादि करके विद्याओं का धरता तथा सुन्दर वर्णयुक्त होकर पृथ्वी पर अनेक शुभ गुण कर्म स्वभाव से प्रकाशवान् होता है, वही धन्यवाद के योग्य है, और याज्ञवल्क्य स्मृति अ० ५१ में लिखा है—

गुरवेतु वरं दत्वा स्नायेत तदनुज्ञया ।
वेद व्रतानि वा पार पीत्वह्नु भयमेव वा ॥

गुरुको दक्षिणा देकर उसकी आज्ञा से वेद समाप्ति या व्रतको पूराकर वा दोनों को पूर्ण कर समावर्त्तन संस्कार करे । व्यासस्मृति अ० १ श्लोक ४० में लिखा है कि जो ब्रह्मचर्य व्रत को पूराकरता है वह स्वर्ग जाता है ।

शान्तिपर्व अ० १६० में भीष्मपितामह का वचन है कि चारों आश्रमों के लिये इन्द्रिय निग्रह ही उत्तम व्रत है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


महाभारत उद्योग पर्व अ० ४४ में लिखा है कि जो मनुष्य ब्रह्मचर्य व्रत को पूर्ण रूप से पालन करता है वह इस लोक में शास्त्रकार होता है और अन्त को मोक्ष पाता है। इन्हीं कारणों से मनुजी ने अ० ११ श्लोक १२१ में लिखा है कि जो द्विज अपनी इच्छा से अपने ब्रह्मचर्य को गिरा देता है उसका व्रत नष्ट हो जाता है, जैसाकि—

मारुतं तुहूतं च गुरूं पावकमेव च।
चतुरो व्रतिनोऽभ्येति ब्रह्म तेजोऽवकीर्णिनः॥

और श्रीमद्भागवत स्कन्ध ११ अध्याय १७ में लिखा है कि ब्रह्मचारी गुरुकुल में रह विषय भोग से बच कर जब तक विद्या पूर्ण हो तब तक अखण्डित व्रत धारण करे, जैसा कि—

परिवृता गुरुकुले बसेद्योगविवर्जितः।
विद्या भाष्यते यावद्विभ्रद्व्रतमखण्डितम्॥ ३०॥

मार्कण्डेयपुराण अ० ४१ में लिखा है कि ब्रह्मचर्य में स्थित रह कर चोरी, लोभ और हिंसा का त्याग करे ये ब्रह्मचारी का व्रत है जैसा कि—

अस्तेयं ब्रह्मचर्यं च त्यागोऽलोभस्तथैवच।
व्रतानि पंच भिक्षणामहिंसापरमाणिवै॥

ऐसा ही लिंगपुराण अ० ८१ श्लोक २४ में लिखा है जैसाकि—

अस्तेयं ब्रह्मचर्यं च अलोभस्त्याग एव च।
व्रतानि पंच भिक्षणामहिंसापरमाणिह॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्मीक रामायण आरण्यकांड सर्ग ४७ में जब रावण सन्यासी का रूप धारण कर सीता के पास भिक्षार्थ आया और उनका वृत्तांत पूंछा तब उन्होंने कहा कि हमारे स्वामी श्रीरामचन्द्र जी पिता की आज्ञा में दृढ़ व्रत थे, १४ वर्ष वन में रहने के लिए उद्यत हो गए। क्योंकि उन्होंने दो बातों की प्रतिज्ञा की थी प्रथम तो दान दें पर लें न और सदा सत्य बोलें। हे ब्राह्मण ! श्रीरामचन्द्र जी ने ये उत्तम व्रत धारण किए हैं।

सर्वलक्षण सम्पन्नं न्यग्रोधपरिमण्डलम्।
सत्यसन्धं महाभागमहं राममनुव्रता॥

पद्मपुराण द्वितीय खण्ड अध्याय ६६ में सुकर्मा ने पिप्पल से कहा है कि हम तो माता पिता की सेवा करना ही एक व्रत जानते हैं।

नरसिंह पुराण अ० ५८ श्लोक २१ में लिखा है कि ब्रह्मचारी वेदपाठ की सिद्धि के लिये नियमित व्रतों को धारण करे। पद्मपुराण सृष्टि खण्ड अ० १९ में कश्यपजी ने कहा है कि सब अश्वमेधादी यज्ञों में एक यम अर्थात् इन्द्रियों को सब विषयों से निवृत्ति करना ही उत्तम व्रत है, इससे अब हम वे चिन्ह बताते हैं जिनके शान्त होने से हित होता है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नम्रता, मधुरता, संतोष, शास्त्र पढ़ना, किसी की निंदा न करनी, गुरु का पूजन करना, सब प्राणियों पर दया रखना, अपमान से कोप न करना, सम्मान में बहुत हर्षित न होना, सदा सुख दुख में सम रहना ही शान्ति कहाती है। और ऐसे ही पुरुष सुख को भोगते हैं क्योंकि शास्त्र के पढ़ने का मुख्य अभिप्राय इन्द्रियों का दमन करना ही है यही सनातन धर्म है। इसलिए सब व्रतों में भी परायण दमन ही है। इससे इन्द्रियों का दमन करना आवश्यक है। पद्म-पुराण षष्ट उत्तर खण्ड अ० ७४ में महादेव जी ने पार्वती जी से कहा है कि सात्विक तपस्या से स्वर्ग मिलता है और राज स्वभाव से राजस उत्पन्न होता है। क्रूर कर्म करने वाला निठुर मनुष्य तापस भाव से जो तपस्या करता है वह राक्षसों का तप कहलाता है।

जो मनुष्य पांचों इन्द्रियों का निग्रह रूप तप करता और बुरे कर्मों में जी नहीं देता तो राग से निवृत्त मनुष्य को घर ही तपोवन है।

महाभारत उद्योगपर्व में सनत् सुजातमुनि का बचन है कि ( १ ) अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार कर्म करना, ( २ ) सत्य बोलना, ( ३ ) इन्द्रियों को वश में रखना, ( ४ ) किसी की उन्नति देख कर न जलना, ( ५ ) निन्दा न करना, ( ६ ) यज्ञ, ( ७ ) दान, ( ८ ) अर्थ समेत वेद को पढ़ना, ( ९ ) कोप को रोकना, ( १० ) आपत्ति के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


समय में भी सत्यको न त्यागना ये ही व्रत हैं। जो इन व्रतों को धारण करता है वह सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने आधीन कर सकता हैं। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य रख कर विद्या को प्राप्त कर उपरोक्त गुणों को धारण करता है वह मनुष्य ऋषि, देवता, मुनि और महात्मा कहाता है और यही मोक्ष का उपाय है।

इसके अतिरिक्त शान्तिपर्व अध्याय २२१ में युधिष्ठिर महाराज ने भीष्मपितामह से प्रश्न किया है कि साधारण लोग जो देह पीड़ा कर उपवास को तपस्या कहा करते हैं, क्या वही तपस्या है ? तब भीष्म ने उत्तर दिया कि साधारण लोग जो ऐसा समझते हैं एक महीना वा एक पक्ष उपवास करने से तपस्या होती है सो यह आत्म विद्या की विघ्न स्वरूप तपस्या है। इसलिये यह व्रत अच्छे पुरुषों की सम्मति के विपरीति हैं। हां जो गृहस्थ होकर अनुगामी होते और सन्यास व्रत को धारण करते, अतिथि की सेवा और प्राणीमात्र पर दया करते हैं वे ही सच्चे व्रती हैं। ऐसा ही शान्तिपर्व अ० ७८ में कहा है और अत्रिस्मृति में भी यही उपदेश मिलता है कि आश्रमों के धामों को यथावत् करना परम व्रत है।

अनुशासन पर्व अ० १४३ में महेश्वर ने व्रत किया है। श्रीमद्भागवत स्कन्ध ६ अ० १८ में कश्यपजी ने दिति को पुंसवन व्रत बताया है, उसमें लिखा है ( १ ) अहिंसा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


( २ ) दुर्जनों से वार्त्ता न करे, ( ३ ) झूँठ न बोले, ( ४ ) क्रोध न करे, ( ५ ) मांस न खाय, ( ६ ) सत्य और प्रिय भाषण करे, ( ७ ) दिन में न सोवे, ( ८ ) सदा पवित्र रहे और पूजन आदि नियम पालन की आज्ञा है। और अ० ११ में इसकी विधिका विस्तार किया है, जहां प्रति दिन हवन करने की भी आज्ञा दी है और यह भी लिखा है कि जो इन व्रतों को धारण नहीं करते उनके व्रत नष्ट हो जाते हैं और धारण करने वालों को सर्व प्रकार के सुख मिलते हैं।

प्रियवरो ! जैसी दुर्दशा वर्त्तमान समय में व्रतों की हो रही है, उससे अधिक तपस्या की है, कोई एक पैर से वा हाथ उठाकर रहने को तपस्या कहते हैं। कोई झूलना में पड़े रहने को उग्रतप कहते हैं और कोई अन्न छोड़ने आदि को; परन्तु यह सब मिथ्या है, देखिये श्रीकृष्ण महाराज ने गीता में कहा है कि तपस्या तीन प्रकार की है। शारीरिक, वाचिक और मानसिक और जब यह तीनों प्रकार की तपस्या इकट्ठी होजावें तब वह मनुष्य तपस्वी कहलाता है। इन तीनों की व्याख्या इस भांति की है जो मनुष्य देव, ब्राह्मण, गुरु, तत्वज्ञानी इनकी पूजा करे और बाहर भीतर से पवित्र रहे और नम्रता पूर्वक रह ब्रह्मचर्य का साधन करे और हिंसा न करे तो उसको शारीरिक तप कहते हैं जैसाकि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवद्विजगुरुप्राज्ञं पूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शरीरं तप उच्यते ॥

ऐसा वचन कहे जिससे किसी को किसी प्रकार का भय न हो सत्यप्रिय और हितकारक हो, ऐसे बचन वेद शास्त्र के अभ्यास से होते हैं यही वाचिक तप है जैसाकि-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यप्रियहितंचयत् ।
स्वाध्यायाभ्यासनं चैववांङ मयंतप उच्यते ॥
मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपोमानस मुच्यते ॥

मन प्रसन्न और निर्मल रहे, क्रूर न हो । मन में ईश्वर की भावना हो, विषय से निवृत्ति होय, लोक व्यवहार में कपट से रहित हो, उसको मानस तप कहते हैं । व्यासजी महाराज ने कहा है कि मन को एकाग्र करके इन्द्रियों को वश में रखना यही तप कहाता है क्योंकि मन बड़ा चंचल है, इसको अधीन कर लेना ही परम तप है । मनुस्मृति अ० २ श्लोक १६५ में कहा है कि यदि तप करना हो तो वेद का सदा अभ्यास करे क्योंकि यही परम तप है और श्लोक १६७ में कहा है कि जो ब्रह्मचर्य पूर्ण कर प्रतिदिन द्विज गृहस्थ हो वेदाध्ययन करता है वह नख से शिखा तक परम तप करता है । और श्लोक २२७ से २२९ तक में कहा है कि माता पिता और आचार्य इन तीनों के प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण तप पूर्ण हो जाते हैं क्योंकि इन तीनों की सुश्रूषा परमतप कहाती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मपुराण भूमि खण्ड अध्याय १५ में सुमना ने सोमदत्त को उपदेश किया है कि सदा आचार से रहे, काम क्रोध से वर्जित प्राणियों के हित का उद्यम करे उसको तप कहते हैं। तृतीय सर्ग खण्ड में श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि स्वर्ग पाने के लिये सत्य बोलना परम तप है। नरसिंह पुराण अध्याय ५४ में लिखा है कि सत्य तप से रहित होने से ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य शूद्र के समान होंगे और बनपर्व अध्याय २०० में मार्कण्डेय ने युधिष्ठिर से कहा है कि अन्न न खाना सहज है परन्तु अन्न खाकर इन छः चंचल इन्द्रियों का रोकना कठिन है इसलिए इन्द्रियों को वश में रखना उग्र तप है, और मनु० अ० ११ श्लोक २३५ में ब्राह्मण का तप धर्म शास्त्र का पढ़ना, क्षत्रिय का तप प्रजा की रक्षा करना, वैश्य का तप नित्य व्यापार और शूद्र का तप नित्य सेवा करना है। अर्थात् वर्णाश्रम धर्मों को करना यथार्थ में तप है जैसाकि—

ब्राह्मणस्य तपोज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षणम्।
वैश्यस्य तु तपो वार्ता तप शूद्रस्य सेवनम्॥

और इसी अ० के २४६ श्लोक में नित्य वेद पढ़ना और यथाशक्ति यज्ञ करना और धैर्य रखना और श्लोक २४७ में वारम्वार वेद पढने को ही परम तप कहा है और याज्ञवल्क्य जी महाराज ने अ० श्लोक १०९ में स्पष्ट कह दिया है कि सम्पूर्ण बातों को छोड़कर आत्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लिप्त रहने को तप कहते हैं। इसलिये मान्यवरो ! आप इन मिथ्या व्रत और तप को छोड़ वेदानुकूल उपरोक्त व्रतों को वेद द्वारा जान उनको पूर्ण करने के अर्थ सत्य प्रतिज्ञा कीजिये जब ही आनन्द मिलेगा अन्यथा नहीं।

---

# तीर्थ और मोक्ष

मान्यवरो ! प्रत्येक ऋषिग्रन्थों में उनके जीवन-चरित्र और उनके नियत किये हुये नियम प्रत्यक्ष प्रकट कर रहे हैं कि इस संसार में उनका मुख्य कर्तव्य क्या था ? वह धन के अभिलाषी न थे और न अन्य सांसारिक वस्तुओं में अपने चित्त को लगने देते थे, किन्तु उनका सच्चा प्रेम परमात्मा को प्राप्त करना ही था। इस अभिलाषा के सिद्ध करने के अर्थ उन्होंने कठिन से कठिन नियमों को अति सुगम समझ अपनी आयु का अधिक भाग इसी अभिप्राय के सिद्ध करने के लिये नियत किया था। वे आयु के प्रथम अमूल्य भाग में सबसे प्रथम नियम पूर्वक विद्याध्ययन करते हुये ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य को पूर्ण करते थे। विद्या से आत्मिक और ब्रह्मचर्य से शारीरिक बल प्राप्त होता था। आत्मिक बल से वे सत्य और असत्य का निर्णय और शारीरिक बल से उसके पूर्ण करने को कटिबद्ध रहते थे, तत्पश्चात् गृहस्थ होते थे। यद्यपि यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय गृहस्थी के भोग विलास और सन्तान उत्पादनार्थ था परन्तु इन आनन्दों में पड़ कर भी वह अपने पवित्र आशय को न भूलते थे, और नाना प्रकार के तप, व्रत और तीर्थ यज्ञादि नित्य करते थे। शोक कि वर्त्तमान समय में इनके मुख्य आशय को बहुधाजन नहीं जानते और नाना प्रकार के प्रपंच रचते हैं कि जिनको अन्य देशीयजन जानकर नाना दोष बतलाते हैं। मान्यवरो! प्राचीन परिपाटियां अति विचार और बुद्धिमानी से नियत की गई थीं क्या कोई जन ऐसा संसार में जान पड़ता है जो उनके मुख्य आशय को जान उनमें शंका उत्पन्न कर सके? देखिये तीर्थ शब्द 'तृप्लवनसंतरणयोः' इस धातु से औणादिक पृथक् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है। 'तरन्ति येन यस्मिन् वा तीत्तीर्थम्' अर्थात् जिससे जन तरते हैं वा जिसमें जन तरते हैं उसको तीर्थ कहते हैं।

यजुर्वेद अध्याय १६ मंत्र ६१ में लिखा है कि मनुष्यों के दो प्रकार के तीर्थ हैं एक तो ब्रह्मचर्य, गुरु की सेवा, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, सत्संग, ईश्वर की उपासना, सत्य सम्भाषण आदि जो दुःख सागर से मनुष्यों को पार करते हैं और दूसरे वे जो समुद्रादि जलाशयों के पार आने जाने में समर्थ होते हैं जैसा कि—

येतीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः।
तथाञ्छसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी महात्मा का वचन है—

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ।
सर्व भूत दयातीर्थं सर्वत्रार्जवमेवच ॥
दानंतीर्थं दमस्तीर्थं संतोषस्तीर्थमुच्यते ।
ब्रह्मचर्यं परमतीर्थं तीर्थंचप्रियवादिता ॥
ज्ञानंतीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यंतीर्थमुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि सततं निशुद्धिर्मनसःपरा ॥

**सत्य**—जो कुछ देखा सुना हो और जानता हो वही बिना कुछ अपनी ओर से मिलाये वर्णन करना तीर्थ है।

**क्षमा**—समर्थ होने पर भी क्षमा करना तीर्थ है।

**इन्द्रिय-निग्रह**—पाँच कर्म इन्द्रियों और पांच ज्ञान इन्द्रियों को अपने २ विषयों से रोकना तीर्थ है।

**दया**—अपने आत्मा के सदृश औरों के आत्मा का जानना तीर्थ है।

**दान**—पुस्तकालय, विद्यालयादि को खोलना, विद्यार्थियों और अनाथों आदि भूखों की यथा योग्य सहायता करना तीर्थ है।

**दमन**—पांच कर्मेन्द्रियों को वाह्य विषयों से रोकना और दुःख सुख को समान जानना तीर्थ है।

**संतोष**—सत्य कार्यों के द्वारा जो कुछ प्राप्त हो उसमें निर्वाह करना तीर्थ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**ब्रह्मचर्य**—सब प्रकार से वीर्य की यथावत् रक्षा करना तीर्थ है।

**ज्ञान**—सूत असूत वस्तुओं का जानना तीर्थ है।

**धृतिः**—सत्य प्रतिज्ञाओं का पालन करना तीर्थ है।

**पुण्य**—जो ब्राह्मणादि देश की उन्नति में बाधक नहीं हैं न देश को उन्नति कर सकते हैं उनको अन्न जल से तृप्त करना तीर्थ है।

मनका शुद्ध करना—मन सत्य बोलने से शुद्ध होता है यह परम तीर्थ है। और भी कहा है—

मनोविशुद्ध पुरतस्तुतीर्थं वाचायमस्त्विन्द्रियनिग्रहस्तपः।
एतानि तीर्थानि शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रति वेदयन्ति।

मन की पवित्रता, सत्य और विषयों को वश में रखना मनुष्यों के तीर्थ हैं और यही सुख के दाता हैं। मनुस्मृति अ० १२ श्लोक १२६ में लिखा है कि—

एतयेके वदत्यग्नि मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इंद्रमेकेऽपरे प्राणमपरे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम्॥

उस परमेश्वर को कोई अग्नि, कोई मनु, कोई इन्द्र, कोई प्राण और कोई तीर्थ कहते हैं। वृद्ध गौतमसंहिता में भी कहा है कि 'क्षमावांस्तीर्थमुच्यते' कि क्षमावान ही तीर्थ स्वरूप हैं। शांति पर्व अ० १३३ में देवता, ऋषि, पितर अतिथि आदि की पूजा करने को तीर्थ स्वरूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णन किया है। हमारे पूर्वज भी अच्छे प्रकार जानते थे कि संसार में रहना अति दुर्लभ है और गृहस्थी अगाध समुद्र है, इसमें कभी मनुष्य लोभ के कारण ऐसा होजाता है कि जिससे वह सत्य असत्य की ओर कुछ ध्यान नहीं देता। प्रत्येक समय धन ही की लालसा में लगा रहता है। वह धर्म अधर्म को नहीं समझता और बहुतों को कष्ट देता है। कभी मोह अपना प्रचंड बल दिखलाता है जिससे वह स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धियों के झूंठे प्रेम में ऐसा फँस जाता है कि परमेश्वर को भूलने लगता है और अन्याय से बहुधा वस्तुयें अपने कुटुम्ब के अर्थ संचय करता रहता है, कभी काम में आकर अपना राज्य करता है कि जिसके कारण धन और धर्म को भूलकर नाना प्रकार के अत्याचार करता रहता है। कभी क्रोध में ऐसा लिप्त होजाता है कि उस समय किसी का ध्यान नहीं करता, चाहे सर्व नष्ट होजावे। यही काम क्रोध, लोभ, मोह मनुष्य के महाशत्रु हैं और सदा उनको धर्म से हटाकर अधर्म की ओर ले जाते हैं, इसीलिये इनको सदा वश में करने का वे उद्योग करते रहते थे, क्योंकि बिना इनको वश किये आत्म ज्ञान नहीं होसकता। यह वेदादि शास्त्रों के उपदेश से अपने आधीन हो जाते हैं, इस कारण कभी कभी वह नियम पूर्वक उन ऋषि मुनियों के समीप जाया करते थे जो अति विद्वान् थे, सांसारिक सुखों को त्याग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


परमात्मा के भजन में लीन थे, मनुष्यों को सत्योपदेश देने को उद्यत रहते थे और उनकी शङ्काओं का समाधान कर अनेक प्रकार के सुखों का उपाय बतलाते थे।

इतिहास से ज्ञात होता है कि यह ऋषि मुनि सदा ऐसे स्थानों पर कुटी बना कर रहा करते थे जहां का जल वायु आरोग्य वृद्धक होता था, जहां बड़े बड़े बन उपवन थे और जहां उनके भोजनादि की सम्पूर्ण वस्तुयें सुगमता से मिलती थी। ऐसे स्थानों को तीर्थ कहा करते थे क्योंकि ऋषियों का सत्योपदेश उनके चित्त को सांसारिक विकारों से हटाकर परमात्मा की ओर लगा देता था जिससे वह सर्व प्रकार के आनन्द भोगते हुए मोक्ष को प्राप्त करते थे। देखिए मार्कण्डेय जी महाराज ने कहा है कि वेद के जानने वाले, व्रत करने वाले, ज्ञानी, तपस्वी, ऋषि, मुनि, ब्राह्मण जहां रहते हैं वह भी तीर्थ हैं चाहे गांव और जङ्गल क्यों न हो और श्रीमद्भागवत स्कंध ३ अ० १ श्लोक १६ में विदुर जी के चरणों और ऋषियों के निवास स्थान को तीर्थ कहा है, जैसाकि—

सनिर्गतः कोरवपुण्यलब्धो गजाह्वयात्तीर्थपदः पदाबि ।

और एक स्थान पर श्रीकृष्ण के चरणों को तीर्थ बतलाया है क्योंकि वह ज्ञानमय मूर्ति और योगिराज थे। इसके अतिरिक्त जब श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेव जी महाराज रानियों समेत कुरुक्षेत्र को गये तब वेदव्यास, नारद, देवल,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र, भरद्वाज, गौतम, भृगु, कश्यप, अत्रि, बृहस्पति, याज्ञवल्क्य आदि अनेक ऋषि वहां पधारे, बहुत आदर सत्कार करने के पश्चात् श्रीकृष्ण महाराज जी बोले कि आज हमको इन ऋषियों के दर्शनों से अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ यही सच्चा तीर्थ और तप है। बनपर्व अ० ८५ में नारद मुनि ने बहुत से तीर्थों का वर्णन करके अंत को कहा है कि तीर्थों के जाने का प्रधान फल यही है कि वहां पर बाल्मीक, देवल, गौतम आदि अनेक ऋषियों के दर्शन होते हैं। देखिये श्रीरामचन्द्र महाराज ने भी बनवास के समय उन्हीं स्थानों पर निवास किया था जहां ऋषि मुनि निवास करते थे। रामायण से प्रकट होता है कि श्रीराम ने सुगन्धित धुआं को देखकर प्रयाग तीर्थ की परीक्षा की थी जहां भरद्वाजमुनि रहते थे वहां उनकी भेंट की, जिन्होंने नाना प्रकार के उपदेश श्रीमान् को किये। वहां से चलकर चित्रकूट पर (जहां अनेक ऋषि रहते थे) तत्पश्चात् बाल्मीक के आश्रम को सिधारे, फिर वहां से अत्रि के आश्रम को गये जिनकी स्त्री अनुसूया जी ने महाराणी सीता जी को अति उत्तम पतिव्रत धर्म का उपदेश किया था तत्पश्चात् शरभङ्ग, सुतीक्ष्ण, अगस्त आदि महात्माओं से मिले और सतोपदेश सुने जिससे उनको बनमें आनन्द होता था।

मान्यवरो ! प्राचीन पुस्तकों से जाना जाता है कि विद्वान् से विद्वान् पुरुष भी इन तीर्थों में जाने से प्रथम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बहुत प्रकार के नियमों का पालन करते तत्पश्चात् बहुत थोड़े मनुष्यों के साथ जाते थे, क्योंकि उत्तम से उत्तम परीक्षित औषधियां कुछ भी लाभ नहीं देतीं। यदि उनके सेवनीय नियमों पर न चला जावे। इसी भाँति ऋषियों का उपदेश मोक्षका सुखका देने वाला होता था परन्तु यदि कोई मनुष्य सावधान चित्त होकर न सुने तो किस प्रकार स्मरण रह सकता है फिर उनके अनुसार काम करना कैसा और सुख कहाँ? इस लिये महाभारत में शौनक मुनि ने युधिष्ठिर महाराज से कहा है कि तीर्थ यात्रा का फल उन्हीं मनुष्यों को मिलता है जो अपने हाथ पांव और मनको आधीन कर लेते हैं और निरभिमानी युक्ताहार और शीलवान् होते हैं। लोमष मुनि ने महाभारत बनपर्व अ० ९२ में युधिष्ठिर जी से कहा है कि तीर्थों में बड़े ऋषि निवास करते हैं जो सब प्रकार के आनन्द देने वाले हैं परन्तु पापी अबुद्धि इनके फलों को नहीं पाते। तीर्थयात्रा को जाने के लिये जब पाण्डव उपस्थित हुए तब व्यासजी ने उनको शिक्षा की मनको शुद्ध कर शान्ति सहित तीर्थों को जाइये। मनके शुद्ध होने से बुद्धि पवित्र होती है जिससे आप शारीरिक व्रतों और नियमों को अच्छे प्रकार धारण कर सकते हैं। अगस्त मुनिने कहा है कि जिनकी सब इन्द्रियाँ वशमें होती हैं जो सब प्राणियों को समान् जानकर सत्य का आचरण करते हैं और किसी प्रकार का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमान नहीं करते, स्वल्पाहारी होते हैं उन्हीं को तीर्थों का फल मिलता है। व्यासस्मृति अ० ८ श्लोक ८५ में लिखा है कि पराई स्त्री और पराये धनका चुराने वाला मनुष्य तीर्थों को भी जावे तो भी उसका किया हुआ पाप नष्ट नहीं होता ! जैसाकि—

परदारान् परद्रव्यं हरते यो दिने दिने।
सर्वतीर्थाभिषेकेण पापं तस्य न मुच्यते॥

शङ्खस्मृति अ० ८ श्लोक १५ में कहा है कि जिनके हाथ, पैर, मन, विद्या, तप, कीर्ति अपने वश में है वही तीर्थ के फलको भोगते हैं। शोक है कि वर्त्तमान समय में हमारे अनपढ़ अज्ञानी भाइयों ने काशी, प्रयाग मथुरा, बद्रीनारायण, केदारनाथ, जगन्नाथ, नैमिषारण्य और अनेक गङ्गातटों को तीर्थ मान रक्खा है कि जिनके महात्म्य भी वर्त्तमान समय के नाम मात्र के पण्डितों ने लोभ वश होकर किसी न किसी पुराण के अंतर्गत कर दिये हैं जिनको बहुधा जन अनेक अवसर पर सुनते रहते हैं। प्रत्येक महात्म्य बतला रहा है कि इसी एक तीर्थ विशेष वा गङ्गा स्नानसे वह फल होगा जो संसार में किसी सत्क्रिया से नहीं हो सकता। देखिये पद्मपुराण में लिखा है श्रीयमुनाजी के जल बिना गति नहीं हो सकती, श्रद्धादि उत्तम कर्म फल देने वाले हैं वह यमुना के स्नान मात्र से ही प्राप्त होते हैं। सतयुग में तप, त्रेता में यज्ञ, द्वापर में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पूजा और कलियुग में यमुना स्नान सब सुखों की दात्री है। व्रत, दान, तप से हरि प्रसन्न नहीं होते किन्तु श्रीयमुनाजी के स्नान से प्रसन्न होते हैं और गङ्गा के दर्शन करने से सौ जन्म के, पीने से तीन सौ जन्म के और स्नान करने से हज़ारों जन्म के पाप कलियुग में नाश होते हैं, जैसाकि—

दृष्ट्वाजन्म शतं पा पीत्वाजन्मशतंत्रयम् ।
स्नात्वा जन्म सहस्राणि हरति गङ्गा कलौयुगे ॥

और भी लिखा है कि गंगा का नाम सौ योजन से भी ले तो पाप का नाश हो जाता है और विष्णुलोक को पाता है, जैसा कि—

गङ्गा गङ्गेति योब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोकंसगच्छति ॥

गया के महात्म्य में कहते हैं कि 'जो गया न गया सो भया न भया' और बद्री नारायण के जाने वाले कहते हैं जो जावे बद्री न आवे उद्री। जो आवे उद्री, कभी न होय दरिद्री ॥' सुदामापुरी में अठारह कुठरियों में फिरने से ८४ योनियों से छुटकारा होता है। इसी प्रकार अनेक श्लोक और कथायें लिखी हुई हैं जिससे प्रकट होता है कि महा पापी मनुष्य भी एक बार गङ्गा यमुना, बद्रीनारायण आदि के दर्शन से मुक्त हो जाते हैं।

मान्यवरो! जहाँ तक मैं जानता हूँ इनके दर्शन या स्नान से कदापि मोक्ष नहीं हो सकती और यदि हो सकती है तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अब तक जिन जिन मनुष्यों ने स्नान दर्शनादि निरन्तर किये हैं उनकी मुक्ति हो जानी चाहिये थी सो क्यों न हुई ! यदि कहो कि शरीर त्याग के पश्चात् मुक्ति होगी, तो उनमें जीवन मुक्ति के लक्षण होने चाहियें। जिससे निश्चय होजाय कि इनकी मुक्ति शरीरान्त समय हो जायगी। यदि कहो कि पापों से मुक्ति होने का अभिप्राय है तो विचारना चाहिये कि पाप क्या वस्तु है क्या शरीर के ऊपर मैल के समान है जो गङ्गा में धोये जांयगे। संचित पापों का अन्तःकरण स्थान है जिसमें दुष्ट वासना रूप पाप रहते हैं उनका पूरा २ शोधन तप करने ही से हो सकता है, जलादि से नहीं। मनु० अ० ५ श्लोक १०९ में लिखा है।

अद्भिर्गात्राणिशुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति ॥

जल से केवल शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, आत्मा विद्या और तप से शुद्ध होता है, बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। और भी लिखा है कि—

क्षांत्या शुद्धियन्ति विद्वांसो दानेनाकार्य्यकारिणः ।
प्रच्छन्नपापाजप्येन तपसा वेदवित्तमाः ॥

विद्वान् लोग शान्ति से, योग्य कर्मों के करने वाले दान अर्थात् विद्यादि देने वा अनाथ दीन वा सुपात्र विद्वानों को अन्नादि उत्तम पदार्थ देने से, छिपे हुए पाप वाले गायत्री



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आदि वेद मन्त्रों को निरन्तर विधिपूर्वक जप करने से और वेद के ज्ञाता निरन्तर विधिपूर्वक तप करने से शुद्ध होते हैं।

बृहन्नारदीयपुराण अध्याय ३१ में लिखा है कि बाह्य और आभ्यन्तर भेद से दो प्रकार का शौच है। सौ मृतिका और जल से तो बाहर की शुद्धि और भाव शुद्धि से भीतर की पवित्रता है। हे ऋषियो! अन्तःकरण की शुद्धि बिना जो यज्ञ आरम्भ किये जाते हैं वे फलित नहीं होते जैसे भस्म में होम क्रिया निष्फल है, इस लिये जिनका भाव शुद्ध नहीं है उनकी सम्पूर्ण क्रिया निष्फल हैं, इस लिये स्नेहादिकों का परित्याग करके सुखी होना अभीष्ठ है। हे ऋषियो! दुष्ट चित्त जन हज़ार बार मृतिका और करोड़ कलशों के जलों से शौच करें पर वह चाण्डाल ही कहलाता है। जो मनुष्य अन्तःकरण की शुद्धि के बिना बाहर की शुद्धि करता है वह सजाये हुये मदिरा के घड़े के समान है। इस लिये जो कोई बिना चित्त शुद्धि किये तीर्थ यात्रा करते हैं तो उस को तीर्थ वैसे ही पवित्र नहीं कर सक्ते, जैसे मदिरा के पात्र को नदियाँ पवित्र नहीं कर सकतीं।

हे पाठकगणो! यदि जल स्नान करने वा दर्शन या रेणुका के मुंह में डालने से ही मुक्ति और पापों की निवृत्ति होती तो फिर वेदों के वह उपदेश कि वेदादि विद्या पढ़ो, ब्रह्मचर्य धारण करो, धर्मानुसार धन को उपार्जन करो, सत्पुरुषों का संग करो, सत्पुरुषों को दान दो, यम नियम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का पालन करो, योग में चित्त लगाओ इत्यादि सब मिथ्या हो हो जायेंगे।

इसके उपरांत जब स्नान करने ही से मोक्ष होती है तो 'ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः' यह कहना भी मिथ्या है यदि स्नान ही मुक्ति का कारण है तो प्रयाग में भरद्वाज, हरिद्वार में मैत्रेयजी आदि ऋषि मुनि हवनादि यम नियम योगाभ्यास में नाना प्रकार के कष्ट निष्फल ही उठाया करते थे, वर्त्तमान समय में भी देखा जाता है कि दर्शन से ही मुक्ति होती है फिर स्नान करने की क्या आवश्यकता ? इससे यदि स्नान भी किये फिर नाना प्रकार के दान करने की क्या आवश्यकता ? इससे भी विदित हुआ कि स्नान होने के पीछे भी दानादि उत्तम कर्म करने की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि कोई गङ्गा पर बैठकर जपादि भी करते हैं, यदि यही मुक्ति का कारण होता है तो जपादि की क्या आवश्यकता है ?

श्रीरामचन्द्र महाराज ने रामायण में निज मुख से वर्णन किया है कि वेदोक्त कर्मों के करने से मनुष्यों को मोक्ष प्राप्त होती है, राजा दशरथ जी महाराज ने राजसूय यज्ञ किये थे, श्रीकृष्ण महाराज ने भी अर्जुन को गीता में वेदोक्त कर्मों के करने का महात्म्य वर्णन किया है। जब गङ्गा स्नान से ही मुक्ति होती है तो फिर श्रीमद्भागवत में नाना कर्मों की व्याख्या व्यासजी महाराज ने संसार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भ्रम में डालने के लिये क्यों की ? पुराणों में अनेक स्थानों पर लिखा है चाहे कि पर्वत के बराबर मिट्टी मिले और गङ्गा के सारे जलसे मृत्यु पर्यन्त स्नान करता रहे तो भी दुष्ट स्वभाव और दुष्ट विचार वाला मनुष्य शुद्ध नहीं हो सकता जैसाकि—

गङ्गा तोयेन कृत्स्नेन मृद्भारश्च नगोपमैः ।
अमृत्योः स्नातश्चैव भावदुष्टो न शुद्धयति ॥

भागवत स्कन्ध १० अ० ५४ श्लोक में लिखा है कि जलमय स्थान को तीर्थ तथा मृण्मय पाषाण मूर्ति को देवता नहीं कहते हैं जैसाकि—

नह्यम्भमयानि तीर्थानि नदेवामृच्छिलामयः ।

लिङ्गपुराण अ० २५ में लिखा है कि जिसका अन्तः करण शुद्ध न हो वह चाहे जितने जलसे स्नान करे परन्तु शुद्ध नहीं होता, अर्थात् पुरुष का स्वभाव किसी नदी वा सरोवर में स्नान करने से शुद्ध होना अति कठिन है। मनुष्यों का चित्त कमल अज्ञानरूपी रात्रि से संकुचित हो रहा है इसको ज्ञान रूपी सूर्य की किरण से विकसित करना उचित है, जैसाकि—

भावदुष्टोऽम्भसिस्नात्वा भस्मानांच शुद्धयति ।
भावशुद्ध स्वरेच्छौचमन्यथा न समाचरेत् ॥ १० ॥
सरित्सरस्तडागेषु सर्वेषुप्रलयं नरः ।
स्नात्वा भावदुष्ठश्चेन शुद्धयतिन संशयः ॥ ११ ॥
नृणांहि चित्त कमलम्प्रबुद्धमभवद्यदा ।
प्रसुप्तं तमसाज्ञानं भानोर्भासा तदाशुचिः ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जल के स्नान करने से मुक्ति नहीं होती वरन् आत्मिक ज्ञान ही मुक्ति का कारण है, जैसा यजुर्वेद अ० ३१ मन्त्र १८ में लिखा है।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्या पन्था विद्यतेऽयनाय।

उसी एक सर्वसाक्षी परमात्मा को जानकर जन्म मरण से छूट सकता है, अन्य कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है। और मनु अध्याय १२ श्लोक ८३ में लिखा है वेद का पढ़ना और उसके लेखानुसार तप करना, आत्मज्ञान, इन्द्रियों को वश में करना, किसी को दुःख न देना और गुरु की सेवा करना इन छः कर्मों से मोक्ष होती है।

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानमिंद्रियाणांच संयमः।
अहिंसा गुरु सेवाच निश्रेयसकरंपरम॥

परन्तु इनमें भी आत्मज्ञान को मुख्य माना है जैसा इसी अध्याय के ८४ श्लोक में लिखा है।

सर्वेषामपि चैतेष.मात्मज्ञानं परं मृतम्।
तद्ध्याग्रायं सर्वविद्यानां प्राप्यतेह्यमृतंततः॥

नरसिंहपुराण अध्याय ६७ में मनुजी ने भरद्वाज से कहा है कि पृथ्वी के तीर्थ जिनको मैंने ऊपर वर्णन किये हैं उनसे मानसी तीर्थ विशेष फलदायक हैं उनको सुनिये। मन का निर्मल रखना, रोगादिकों से व्याकुल न होना, सत्य, सबके ऊपर दया करना, इन्द्रियों को जीतना, गुरु माता पिता की सेवा करना, अपने धर्म का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


करना, अग्नि की उपासना अर्थात् होम करना, यह सब प्रत्येक तीर्थ हैं, इनको ही पुण्यतीर्थ कहा है।

शिवपुराण ज्ञानसंहिता अ० ३५ में लिखा है जो माता पिता को छोड़ कर तीर्थ को जाता है उसको माता पिता के मारने की हत्या होती है। पुत्र को पिता के चरणों की ही सेवा करना महातीर्थ है, स्त्री का तीर्थ उसका स्वामी है और श्लोक ३४५ में स्पष्ट कहा है कि दम से हीन पुरुषों को वेद पवित्र नहीं कर सकते, चाहे उसने षडंग सहित वेद पढ़ा हो। उसी भांति सांख्ययोग, उत्तम कुल में जन्म, तीर्थों में स्नान करना सब निरर्थक है। बृहन्नारदीयपुराण अ० ३१ में लिखा है जो निर्मल मन से धर्म करते हैं उनका फल अक्षय सुखदायक होता है।

देवी भागवत स्कंध ४ अ० ८ श्लोक २८ से ३४ तक। जिसके मनवाणी शुद्ध हैं उन्हें तीर्थ पग २ पर हैं, मलिन चित्त को गङ्गा कुछ नहीं कर सकती अर्थात् जब मन शुद्ध हो जाता है तब तीर्थ भी पवित्र करते हैं नहीं तो गङ्गा के तीर पर मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सबही गङ्गा-जल पीते हैं परन्तु एक भी शुद्ध नहीं होता। जिनका मन विषय वासना से हट गया है उन्हें तीर्थ क्या कर सकता है। इसलिये प्रथम मन की शुद्धि है जिसके शुद्ध होने से द्रव्य शुद्धि, तत्पश्चात् शौचादि आचार शुद्ध ठीक करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तीर्थ में जाय तो अवश्य तीर्थ फल यथा योग्य प्राप्त होता है अर्थात् मन की पवित्रता और शुद्धाचरण तीर्थ है।

नोवाक्याय शुद्धानां रजस्तीर्थं पदे पदे।
यथा मलिन चितानां गङ्गापि कीटकाऽधिका ॥ २८ ॥
प्रथमंवेन्मनः शुद्धि जातं पाप विवर्जितम्।
तदा तीर्थाणि सर्वाणि पावनानि भवन्तिवै ॥ २९ ॥
गङ्गातीरं हि सर्वत्र वसन्ति नगराणि च।

देवीभागवत् स्कन्ध ३ अ० ८ में ब्रह्माजी ने कहा है कि जब तक काम क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, द्वेष, राग, मद, निंदा, ईर्षा, अक्षमा और अशांति ये नहीं गये तब तक पापयुक्त समझना चाहिये, अर्थात् तीर्थ करने पर ये दोष शरीर से न गये तो श्रम बृथा ही जानना चाहिये।

पाप देह विकाराये काम क्रोधादयः परे।
लोभो मोहस्तथा तृष्णा द्वेषो रागस्तथा दमः ॥ २३ ॥
असूर्या क्षमा शान्तिः पापान्येतानि नारद।
न निर्गतानि देहात्तं तावत्पापयुतोनरः ॥ २४ ॥
कृते तीर्थ पदेतानि देहाननिर्गतानि च।
निष्फलः श्रमएवैकः कर्षकस्य तथा तथा ॥ २५ ॥

अर्थात् इन दोषों का न होना ही तीर्थ का फल देता है इससे इनका त्यागना सच्चा तीर्थ है। और वसिष्ठस्मृति अ० ३० श्लोक ८ में लिखा है कि मानसिक यज्ञ करने से मोक्ष होती है जिस में ध्यान को यज्ञ अग्नि, अहिंसा को यज्ञ का ईंधन, धैर्य को यज्ञ अभिमान, के त्याग को यज्ञ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का श्रुवा, अहिंसा को यज्ञ की सामग्री, संतोष को यज्ञस्थान और सम्पूर्ण जीव की रक्षा करने की प्रतिज्ञा को जो बहुत कठिन है यज्ञ कराने वाले की दक्षिणा समझना माना है, जैसाकि—

मानसिक यज्ञ करणान्मोक्षो भवति। मानसिकयज्ञे न्यानां यज्ञोग्निः हृत्यमिनम्। धैर्ययज्ञः अभिमानत्यागो यज्ञश्रुवः। अहिंसा-यज्ञसामिग्री। सन्तोषो यज्ञस्थानम् सम्पूर्ण जीवरक्षा कराकर प्रतिज्ञा दक्षिणा च उच्यते।

और ज्ञानसंकलिनी मंत्र श्लोक ४८ और ४९ में भगवान शङ्कर ने कहा है—

इदं तीर्थमिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसाजनः।
आत्मतीर्थंनजानन्तिकथं मोक्षोवरानने॥

हे पार्वती! तमोगुण युक्त लोग मन को, कहीं शिव को, कहीं अन्य स्थान और शक्ति को, कहीं अन्यत्र जानकर यही तीर्थ है, और यही तीर्थ है, ऐसे भ्रम में पड़कर सर्वत्र घूम रहे हैं। बरानने! आत्मतीर्थ के ज्ञान बिना और किसी प्रकार मोक्ष प्राप्त नहीं होसकती।

प्रियवरो! हां यह सम्भव हो सकता है कि जिन तीर्थ स्थानों को आप नाना प्रकार के कष्ट और धन व्यय करके जाते हैं ये वही स्थान हों जहां पर आपके ऋषि मुनि पूर्व समय में रहते हों और जहां पर हमारे आपके पुरुषाओं ने जाकर सत्य उपदेश सुन के आनन्द उठाये हों, परन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अब आप उन स्थानों को बुद्धि की दृष्टि से देखिये कि वहां की क्या अवस्थायें हैं ? क्या प्रयागराज में कोई ऋषि इस समय भरद्वाज के समान उपस्थित है जिनके आश्रम को श्री रामचन्द्रजी महाराज ने वेदोक्त चिन्ह पाकर दूर से जान लिया था और जिन्होंने उक्त महाराज को नाना प्रकार की शिक्षायें कीं ! क्या हरिद्वार पर मैत्रेय के तुल्य ऋषि हैं ? जिनसे हमारे परम नीतिज्ञ विदुरजी ने अपनी शङ्काओं का निवारण किया था। क्या सोम तीर्थ पर कोई ऋषि उपस्थित है ? जहां पर हमारे ज्ञान परिपूर्ण कण्वजी महाराज आनन्द उठाने के लिए गये थे। क्या अनुसुइया के समान कहीं स्त्रियां हैं ? क्या हमको उन स्थानों में अत्रि, वशिष्ठ, वाल्मीक, शरभंग, सुतीक्ष्ण, अगस्त के समान ऋषि मिल सकते हैं ? कदापि नहीं। सच तो यह है कि इस समय ही ने हमको बड़ा धक्का दिया। इसने हमारे बन बनाये कार्य को बिगाड़ दिया। वे ऋषि मुनि कि जिन्होंने सारे संसार को अपने ज्ञान से प्रकाशित कर रक्खा था ऐसे विनष्ट होगये कि उनका कहीं पता नहीं चलता। इस भारत को जोकि एक समय में उन्नति की ऊँची सीढ़ी पर चढ़ा हुआ था ऐसे गिराया कि कुछ भी ठीक न रहा। तीर्थों की ऐसी दुर्दशा की है कि कुछ कहा नहीं जाता जहां ऋषिगण यज्ञ करते थे वहां भंग चरस उड़ता है। जहां उनके वेदोक्त सत्योपदेश से आत्मिक उन्नति होती थी वहां सण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मुसण्ड नाना रूप धारण कर अनेक प्रकार से ठगते हैं लड़कों के नाच दिखलाये जाते हैं, पण्डों की स्त्रियां भी यात्रियों की खबर लेती रहती हैं, रण्डियों के समूह वहां जाते हैं और तबला खड़कता है अर्थात् इसी प्रकार के अनेक उपाय दर्शाये जाते हैं जिनका मैं विस्तार भय से वर्णन नहीं करता, आप प्रत्यक्ष विलोकन कर लीजिये।

मान्यवरो ! संस्कृत विद्या के न जानने से या यों कहिये कि जिन प्रयोजन के साधन के लिए लोभी गुरुओं ने वेदादि सत्शास्त्रों के शब्दों के मुख्य अर्थ को छोड़ उन शब्दों से मन माना अर्थ निकाल कर संसार को भ्रमजाल में डाल दिया जो अब तक भेड़ियाधसान की भांति एक दूसरे के पीछे बिना देखे भाल किये चले जाते हैं। जैसा कि वेदों में तीर्थ, व्रत, श्राद्ध, तर्पण इत्यादि शब्दों के मुख्य अभिप्राय को हमने वेदादि सत्शास्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध किया है, उसे उड़ाकर निज प्रयोजन निकाला इसके अतिरिक्त और भी देखिये 'शन्नो देवी० गणानांत्वा०' इत्यादि में देवी शब्द से कालिका की मूर्ति की पूजा करवाते। द्वितीय में 'गण शब्द से मिट्टी के गणेश जी बनाकर पुजवाते हैं। ऐसाही बृहत्साम ब्राह्मण के गङ्गा और यमुनादि शब्दों के मुख्य अभिप्राय को न समझकर पृथ्वी पर की बहती हुई गङ्गा और यमुनादि नदियों में नहाने से मुक्ति मानने लगे। देखिए बृहत्साम ब्राह्मण में लिखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इड़ा भगवतीगङ्गा पिंगलायमुना नदी।
तयोर्मध्ये प्रयागस्तुयस्तं वेदस वेदवित ॥

इडा नाड़ी गङ्गा के नाम से और पिंगला नाड़ी यमुना के नाम से प्रसिद्ध है, इन दोनों के बीच में जो हृदय आकाश है उसको प्रयाग कहते हैं, जो मनुष्य इनको जानता है वह वेद का जानने वाला है। और 'याज्ञवल्क्य-शिक्षा' में लिखा।

कालिन्दीसंहिता ज्ञेया पदयुक्ता सरस्वती।
क्रमेण कीर्तिता गङ्गा शम्भोर्वाणीतुनान्यथा ॥

अर्थात् कालिन्दी वेद संहिता का नाम है। वेद मन्त्रों के पदों को पृथक् २ पढ़ा जावे उसको नाम सरस्वती है और जो वे मन्त्रों को क्रम से पढ़ा जाय उसको विद्वान गङ्गा के नाम से निरूपण करते हैं, वही शंभु अर्थात् महादेवजी की वाणी है और महाभारत में लिखा है।

आत्मा नदी संयमपुण्यतीर्था सत्योदका शीलतटादयोर्मिः।
तत्रा भिषेकं कुरुपाण्डुपुत्र! नवारिणा शुध्यति चान्तरात्मा ॥

यह रूपकालंकार है, जो परमेश्वर सर्व व्यापक है वही एक नदी है उस नदी में अपने मन इन्द्रियों का लगाना वही पुण्य तीर्थ है अर्थात् तरना है, उस नदी में जो सत्य है वही जल है, नदी का किनारा शील और दया उसकी लहरें हैं। सो हे युधिष्ठिर! तुम आकर ऐसी नदी में स्नान करो क्योंकि बारि अर्थात् धरती पर की नदियों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी में स्नान करने से आत्मा शुद्धि नहीं होता। इसलिये आओ सज्जन पुरुषो! हम भी उन उपरोक्त प्रकार की गङ्गा, यमुना और सरस्वती में योगाभ्यास द्वारा स्नान करने का उद्योग करें कि जिसके प्रताप से मोक्षरूपी अमृत फल मिलता है, क्योंकि बाँई ओर पिंगला और दाहिनी ओर इडा और बीच में प्रयाग के अर्थ योग के हैं अर्थात् जिस स्थान पर जीवका सर्वव्यापक परमेश्वर के दर्शन होते हैं उसी को प्रयाग कहते हैं।

---

# योग का वर्णन

प्यारे सुजनों! चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम योग है, जिसके बिना जीवात्मा नाना क्लेशों को भोगता तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पदार्थों को देखता है। इसलिए श्रेष्ठ पुरुषों को चित्त के निरोध करने के निमित्त योग रूपी मार्ग में पूर्ण सामर्थ से पग रखना योग है। वर्त्तमान समय में जनता की दृष्टि में कुपढ़ आलसी गेरुये वस्त्रधारी भिकमंगे या जो परिवार छोड़ जंगल में चला जाय वही योगी यती और मुनि कहाता है; परन्तु यह सब मिथ्या बातें हैं। योग का सम्बन्ध चित्त से है न कि जङ्गल वा कपड़ों से है। बांधवो? यदि कोई जङ्गल जावे परन्तु उसकी इन्द्रियाँ उसके आधीन न हों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तो वह वन में जाकर क्या खाक छानेगा। क्योंकि चित्त की स्थिर वृत्तियों का नाम योग है न कि इस प्रकार की दिखावट और दूकानदारी का। इसके उपरान्त जब हम प्रतिदिन देखते हैं कि बहुधा औरतें शिर पर घड़े पर घड़ा लेजाती हैं, नट रस्से पर डोल आता है, निशानची निशाना मार देता है तो फिर संसार में योग होने का क्या कारण है? प्यारे बन्धुवर्गो! यह भी तो योग ही के लक्षण हैं अर्थात् बिना चित्त को स्थिर किये कभी ऐसा नहीं कर सकते तो फिर योग से डरने और जंगल ही में जाने की कौन आवश्यकता? प्यारे सुजनां! प्राचीनकाल में इसी भारतवर्ष में अनेक जन इस विद्या में पूरी योग्यता रखते थे। राजा जनक ने योग विद्या में ऐसी योग्यता प्राप्त की थी कि उस समय के ऋषि लोग उनकी प्रतिष्ठा करते थे। श्रीकृष्णजी महाराज भी योगविद्या में निपुणता रखते थे। इनके उपरांत अनेक स्वजनों ने इस विद्या में अच्छी योग्यता प्राप्त की और उन्होंने उसी योगबल से नाना भांति की युक्तियें और गुण निकाले थे। इस समय में रेल तारादि को देखकर आश्चर्य करते हैं परन्तु प्राचीन समय में योगविद्या के जानने वाले ज्ञाताजन हज़ारों कोस पर बैठ कर आपस में बातें करते थे। इसकी आठ सीढ़ी हैं जिसका वर्णन पतंजलि महर्षि ने योगशास्त्र में अच्छे प्रकार लिखा है यथार्थ में प्राणायाम करने से प्रतिदिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञान का नाश और प्रकाश होता है, इसलिये जब तक मुक्ति न हो तब तक प्रतिदिन इस क्रिया को सदा करता रहे।

प्राणायामादशुद्धिक्षय ज्ञानदीप्तिर विवेकख्याते।

इस विषय में मनुजी ने भी लिखा है—

दह्यते ध्मायमानानां धातूनां च यथा मलः।
तथेंद्रियाणां दह्यन्ते दोषः प्राणस्यनिग्रहात्॥

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि वस्तुओं के मल नष्ट हो जाते हैं ऐसे ही प्राणायाम करने से यम आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं और मन एकाग्र हो जाता है, उपासना के समय किसी सांसारिक कार्य में नहीं जाता और यह ही उपासना का मुख्य ध्येय है गीता में भी लिखा है—

अपांजुह्वति प्राणोऽपानं तथा परे।
प्राणापानगनीरुध्वा प्राणायाम परायणः॥

जो अपान में प्राण को और प्राण में अपान को हवन वा लय करते वा मिलाते हैं, उनके प्राण की गति रुकने से मन उसके साथ तक जाता है, इसलिए प्राणायाम करना उचित है।

मुख्य प्रयोजन इस कथन का यह है कि जब प्राणायाम के करने से प्राण अपने बश में हो जाता है, तो मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन हो जाती हैं जिससे पुरुषार्थ बढ़ कर बुद्धि तीव्र हो कठिन से कठिन और सूक्ष्म विषय को शीघ्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ग्रहण करलेती है। इसीसे वीर्यवृद्धि होकर शरीर बल पराक्रम युक्त हो जाता है और भय का उसके चित्त में अंश भी नहीं रहता। वही निर्भय होकर संसार का सब प्रकार उपकार करता है और उपासना के समय उसका मन इधर उधर को नहीं जाता, वरन् परमेश्वर के ध्यान में मग्न होकर आनन्द तथा मोक्ष सुख को पाता है। यह उन्हीं सज्जनों को सिद्ध होता है जो संयम व नियम का यथावत् सेवन करते हैं। इस वृत्ति में शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं और प्रथम इसमें कठिनता भी जान पड़ती है परन्तु जब अन्तःकरण की रजोगुणी वृति कम हो जाती है और मुक्ति की इच्छा, विवेक, वैराग्यादि वृति जब प्रधान होती है तब यह सुगम जान पड़ती है। जब यथार्थ में अन्तःकरण का रजोतम दूर हो जाता है तब वह सुख प्रकट होता है कि जिसका पारावार नहीं और उसका कोई वर्णन नहीं कर सकता। यजु० अ० १२ मं० ६० में लिखा है।

सीरायुज्जन्ति कवयोयूगाविन्वते पृथक् वीरा देयेषुमुम्न्या।

योगी पुरुष अपने ज्ञान बढ़ाने में तन मन लगाकर लगातार पुरुषार्थ से ऐसे ज्ञान को प्राप्त होते हैं जहाँ किसी प्रकार का संशय और भ्रम नहीं रहता। उनका मार्ग सीधा और स्वच्छ होता है उपरोक्त दशा में पहुँचे हुए महात्माओं कीवे ही मनुष्य प्रतिष्ठा आदर व सत्कार करते हैं जो विद्वान्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। अविद्वान और धर्म चक्षु विहीन योगियों की बात और उनके मर्म समझ ही नहीं सकते और न उनके विचार ही में वह बातें आसकती हैं। हां विद्वान् मनुष्य जानते हैं कि योगी ने जिस वस्तु को प्राप्ति की है वह अति कठिन है और संसार भर की विद्या उसकी समानता नहीं कर सकती, वह जड़ पदार्थों से सम्बन्ध नहीं रखती वरन् उसका सम्बन्ध सूक्ष्म पदार्थ से है, ब्रह्मज्ञान योगियों को सहज ही में नहीं मिलता वरन् विद्वान् योगी महात्मा और धीर पुरुष ही योग विभाग नारियों द्वारा अपने आत्मा में धारण करते हैं अर्थात् बड़े २ साधनों से अमूल्यरत्न पाते हैं जिनकी व्याख्या पतांजलि महर्षि ने की है जिसका हम संक्षेप से वर्णन करेंगे।

इसलिये सज्जन पुरुषों को आलस्य त्याग प्रति दिन आठों अङ्गों का सेवन युक्ति पूर्वक करना चाहिए, क्योंकि यह सब यज्ञों से श्रेष्ठ है। श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने गीता में बारह प्रकार के यज्ञों में प्राणायाम अर्थात् प्राण-निरोध करना सब से श्रेष्ठ कहा है।

( अष्टांग योगके आठों अङ्गों का वर्णन )

यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार।
ध्यान धारणा समाधि योष्टावे वाङ्गानि॥

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अंग हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


यम—अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमः।

अर्थात् (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह यह पांच प्रकार के यम हैं।

१—अहिंसा, किसी से बैर भाव न करना, अर्थात् सुख सम्भोगयुक्त प्राणियों में मैत्री और दुखियों पर दया, पुण्यात्माओं में प्रीति और पापियों में उपेक्षा करना चाहिये।

२—सत्य, जैसा अपनी आत्मा में हो वैसा कहे और माने, जो मनुष्य ऐसा करते हैं उनकी वाणी से जो निकलता है वैसा ही होता है।

३—अस्तेय, किसी प्रकार की चोरी न करना, जो उसको यथावत् सेवन करता है उसको सब पदार्थ मिल जाते हैं।

४—ब्रह्मचर्य, २५, ३०, ४०, ४८ वर्ष वा इससे आगे आगे वीय को स्खलित न होने देना, अर्थात जो वीर्य की पूर्ण रक्षा करता है वह पूर्ण ज्ञानी और महात्मा होने योग्य होता है।

५—अपरिग्रह, जब मनुष्य यथावत इन्द्रियों को अपने वश में कर लेता है तब उसके मन में यह विचार आता है कि मैं कौन हूँ, कहां से आया हूँ, क्या करता हूँ और मेरी किस बात में भलाई है इन्हीं बातों के विचार का नाम अपरिग्रह है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**नियम**—शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानिनियमः

(१) शौच, (२) सन्तोष, (३) तप, (४) स्वाध्याय, (५) ईश्वर प्रणिधान, ये पांच प्रकार के नियम हैं।

१–शौच, यह दो प्रकार का है—एक शारीरिक दूसरा आत्मिक, शारीरिक शुद्धि जल और खान पान आदि से होती है आत्मिक वेदादि विद्या पढ़ने और धर्म पर चलने और सत्संग से होती है।

२–सन्तोष, उसको कहते हैं जो सदा धर्मानुकूल कार्यों को करता हुआ नाना प्रकार से क्लेश होने पर भी धैर्य्य को नहीं छोड़ता, आलस्य का नाम संतोष नहीं है।

३–तप, जैसे सोना चाँदी आदि अग्नि में तपाने से स्वच्छ होजाते हैं वैसे ही आत्मा और उनके धर्माचरणरूप शुभ गुणों को तपाकर निर्मल करने का नाम तप है। इसके मुख्य तीन भेद हैं। मनसा, बाचा, कर्मणा इन तीनों को धर्माचरण में लगाना ही तप कहाता है, परन्तु अग्नि जलाकर बीच में बैठने का नाम तप नहीं है।

५–ईश्वर प्रणिधान, सामर्थ्य सर्व प्राण आत्मा और मन के प्रेम भाव से आत्मादि सत्य द्रव्यों को ईश्वर के लिये समर्पण करने को कहते हैं।

**आसन**–आसन उसको कहते हैं कि जिसमें शरीर और आत्मा सुख पूर्वक स्थिर हों इसलिये जैसी रुचि हो वैसा आसन करे, जब आसन दृढ़ होजाता है तब उपासना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में परिश्रम जान नहीं पड़ता और सरदी गर्मी आदि नहीं व्यापती, यह उपासना का तीसरा अङ्ग अर्थात् सीढ़ी है।

प्रकट हो कि आसनों के भेद अनन्त हैं और वे आसन सम्पूर्ण योग के विषय ज्ञाता मनुष्य को उपकारी होते हैं। कुछ आसनों का संक्षेप से वर्णन यहां किया जाता है। योगशास्त्र में ८४ आसन लिखे हैं उनमें से स्वस्तिक, गोमुखी, पद्म, पुक्क, उत्तान, धनुष, मत्स, मयूर, सर्प, सिंह, भद्र, सिद्ध, दण्डासन पन्द्रह के नाम ये हैं, उनमें से बहुधा आसनों से शरीर का रोग निवृत्त होता है, और कई एक ब्रह्मानन्द समाधि में उपयोगी हैं इन उपरोक्त लिखे आसनों में सिंह, भद्र, पद्म सिद्ध ये चार ही मुख्य ठहराये गये हैं और इनमें से भी पद्म और सिद्ध विशेष हैं और सिद्ध आसन को वृत्तासन, मुक्तासन और गुप्त आसन भी कहते हैं। इस विषय में गीता में लिखा है-

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितंनातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्॥

अर्थात् आसन पवित्र भूमि में अचल लगाकर अभ्यास करे। आसन न बहुत ऊँचा हो, न बहुत नीचा, छत और मुरेड़ी पर आसन न लगाना चाहिये। जो मनुष्य आसन सिद्ध नहीं करता उसको द्वन्द्वजदुःख देते हैं और आसन सिद्ध होने से यह उसको दुःख नहीं देते इसलिये आसन का अभ्यास अवश्य करना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ( पद्मासन )

### चौपाई

पहिले बामा पैर उठावे। दाहिनी जंघा ऊपर लावे ॥
विधि इमि दक्षिण पैर उठाना। बामि जंघा परि धर आना ॥
बामा कर पीछे पुनि लावे। वाम अंगूठा नहिं तन् तावे ॥
योंही दक्षिण कर को लावे। दहना दृढ़ अंगुष्ठ करावे ॥
ग्रीवलटिक चिबुक हिये करिये। नाशा आगे दृष्ट सुधरिये ॥

## ( सिद्धासन )

दोहा—गुदामध्य धरि बामपद, दक्षिण लिंग दबाय।
दृष्टि धरे भृकुटी विषे, चिदानन्द चितलाय ॥

इन आसनों के अभ्यास से सम्पूर्ण नाड़ियों के मल नष्ट हो जाते हैं, यह ८४ आसनों में श्रेष्ठ हैं।

**प्राणायाम**—स्थिर होने से जो प्राण की गति का अवरोध होता है उसे प्राणायाम कहते हैं, यही चौथा अङ्ग अर्थात् सीढ़ी है। आसन सिद्ध होने पर जो बाहर से वायु भीतर को जाता है। उसको श्वांस कहते हैं और जो भीतर से बाहर जाता है उसे प्रश्वांस कहते हैं और इन दोनों की गति के अवरोध को प्राणायाम कहते हैं। वह चार प्रकार का है।

( १ ) बाह्य, ( २ ) आभ्यान्तर, ( ३ ) स्तम्भवृत्ति, ( ४ ) बाह्याभ्यान्तराक्षेपी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( १ ) बाह्य, वह है कि जब भीतर से वायु बाहर को निकले उसको बाहर ही रोकदे। ( २ ) आभ्यान्तर, उसे कहते हैं कि जब बाहर का वायु भीतर जावे तब जितना हो सके भीतर रोके। ( ३ ) स्तम्भवृत्ति, उसको कहते हैं कि प्राण को बाहर को निकाले बाहर से भीतर को ले वरन् जितनी देर हो सुख पूर्वक जहां का तहां ज्यों का त्यों रोक दे। ( ४ ) बाह्याअभ्यान्तराक्षेपी, जब श्वांस भीतर से बाहर को जावे तब बाहर ही थोड़ा थोड़ा रोकता रहे और जब बाहर से भीतर को जावे तब उसको भीतर ही थोड़ा थोड़ा रोके।

## ( प्राणायाम करने की विधि )

प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य।

जिस प्रकार कै होती है जिसको लौटी वा वमन कहते हैं, जिसके होने से पेटके भीतर का अन्न और जल बाहर निकल जाता है उसी प्रकार प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक देवे और जब बाहर निकालना चाहे तो मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच रक्खे। जब तक प्राण बाहर निकले और जब घबराहट हो तब धीरे २ भीतर ले जाय और जितना हो सके रोके इसी प्रकार जितनी सामर्थ्य हो धीरे २ बढ़ावे।

उदरस्थ प्राण वायु को नासिका के नथनों से प्रयत्न पूर्वक निकालने को 'प्रच्छर्दन' खींचने को 'विधारण' कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रत्याहार' उसको कहते हैं कि जब मनुष्य अपने मन को जीत अपनी सब इन्द्रियां अपने आधीन कर लेता है क्योंकि मन इन्द्रियों का चलाने वाला है जैसा कि यजु० अ० ३४ मंत्र १ में लिखा है—

यज्जाग्रतो दूरमुपैतिदैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति ।

दूरंगमंज्योतिषांज्योतिरेकं तन्मेमनः शिवसकल्पमस्तु ॥

जो भागता हुआ दूर दूर जाता है और सुषुप्ति में भी उसके दूर जाने का सवभाव है जो प्रकाशित पदार्थों का भी प्रकाश करने वाला है वह मेरा मन, हे परमात्मन् ! बड़ा शीघ्रगामी, आपकी कृपा से मुझे कल्याणकारी हो ।

सचमुच मन ही इन्द्रियों का चलाने वाला हैं, इन्द्रियां कभी काम नहीं करतीं जब तक कि मन इन्हें प्रेरणा नहीं करता । निश्चय जानों कि जितने विकार और दुष्ट भाव इन्द्रियों के द्वारा प्रकट होते हैं सब मन के ही उत्पन्न किए हुए होते हैं । महात्माओं ने मनुष्य के शरीर की बनावट को एक रथ के समान माना है, बुद्धिमान रथवान रासों के घुमाने से जिधर को चाहे घोड़ों को फेर सकता है उसी प्रकार मन जिधर चाहता है उधर इन्द्रियों को घुमाता है । इसलिये कर्म ठीक करने के अर्थ मनको निर्दोष किया जावे । यह मन बड़ी बड़ी दूर जाता है जो देश और काल की रुकावट में नहीं आता, इससे अधिक प्रबल चाल वाला कोई नहीं, सो यह मन जीवात्मा के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आधान है परन्तु जीवात्मा उसको अपने आधीन न रख स्वयं उसके आधीन होकर नाना प्रकार के दुःखों को झेलता है। इस लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि इस मनको हमारे आधीन सदा बनायें रहें। मन की चंचलता प्राणायाम साधन से जाती रहती है, इसलिये ऐ शान्ति ढूंढने वालो ! इस विद्या को जान मन को आधीन कर आनन्द भोगो।

**धारणा**—उसको कहते हैं कि मनको चञ्चलता से छुड़ाकर जिस स्थान पर जिस विषय में चित्त को लगावे वहीं चित्त ठहर जावे अर्थात् जिस विषय में चित्त लगाना हो उसको छोड़ कर कहीं न जावे।

प्रकट हो कि उस समय मन में 'ओं' का जप करता जाय क्योंकि 'ओं' परमेश्वर के सब नामों में उत्तम है क्योंकि इसमें परमेश्वर के सब नामों के अर्थ आ जाते हैं जैसा हमने गायत्री के अर्थों में लिखा है, और ऐसा ही गीता अ० ८ श्लोक १३ में लिखा है।

ओंमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजेन्देहं सयाति परमांगतिम्

अर्थात् ध्यान समय 'ओं' के अर्थों को विचारने और उसके अनुकूल आचरण होने से परमगति मिलती है क्योंकि—

ओंकारः सर्व वेदानां सारस्तत्वप्रकाशकः।
तेन चित्तसमाधानं मुमुक्षूणां प्रकाम्यते ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**ध्यान**—धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करे आश्रय देने के योग्य जो अंतर्यामी व्यापक परमेश्वर है उसी के प्रकाश आनन्द में अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करे जैसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। उसमें ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना उसी परमेश्वर के ज्ञान में मग्न होने को ध्यान कहते हैं। शिवपुराण ज्ञानसंहिता अ० २६ श्लोक १० में लिखा है कि ध्यान से परे कुछ नहीं, ध्यान ही ज्ञान का साधन है, ध्यान से ही योगी ब्रह्म को अपने निकट देखता है।

**समाधि**—जैसे अग्नि के बीच लोहा भी अग्नि हो जाता है उसी प्रकार परमेश्वर के साथ में प्रकाशमय होके अपने शरीर को भूले हुये के समान जान आत्मा को परमेश्वर के प्रकाश स्वरूप आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण करने को 'समाधि' कहते हैं। ध्यान और समाधि में इतना अन्तर है कि ध्यान में तो करने वाला और मन, जिसका ध्यान करता है ये तीनों विद्यमान रहते हैं परन्तु समाधि में केवल परमेश्वर ही के अनन्त स्वरूप ज्ञानमें मग्न हो जाता है वहां तीनों भेदभाव नहीं रहता जैसे मनुष्य जल में डुबकी मार के थोड़े समय भीतर ही रुका रहता है वैसे ही जीवात्मा परमेश्वर के बीच में मग्न होकर फिर बाहर को आ जाता है और जिस देश में धारणा की जाय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसी में ध्यान और उसी में समाधि अर्थात् ध्यान करने के योग्य परमेश्वर में मग्न हो जानेको 'संयम' कहते हैं जो एक ही काल में तीनों का मेल होता है। अर्थात् धारणा से संयुक्त ध्यान और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है। उनमें बहुत कुछ सूक्ष्म काल का भेद रहता है परन्तु जब समाधि होती है तब आनन्द के बीच में तीनों का फल एकही हो जाता है। उस काल के आनंद की महिमा अकथनीय है ऐसा ही अन्य शास्त्रकारों ने लिखा है।

समाधिनिधूं तमलस्यचेतसो, निवेशितस्यात्मनि यत्सुखंभवेत्।
न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा, स्वयंतदन्त करणेनगृह्यते॥

अर्थात् समाधि रूप नदी में गोता लगाने से जिसका मैल धोया गया ऐसा चित्त जब आत्मा में लगाया जाता है तब जो सुख होता है उसका वर्णन वाणी से नहीं हो सकता किन्तु उसका स्वयमेव अंतःकरण से गृहण होता है और भगवद्गीता में श्रीकृष्णचन्द्र जी ने कहा।

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्वत॥

अर्थात् समाधि अवस्था का जो अत्यन्त सुख है उसका इन्द्रिय से ग्रहण नहीं होता किन्तु उसी उपासक को इन्द्रिय द्वारा पहुँचने वाले विषयों की चञ्चलता से रहित अर्थात् वाह्यविषयों से उठने वाले वृत्तिरूपी जल तरङ्गों से रहित अधिकारिणी सूक्ष्म बुद्धि से ही ग्राह्य है, उस समाधि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अवस्था में न कुछ वाह्य विषय जानता और विषयादि के साथ अपने स्वरूप को डिगाता है जितने देखे हुए और सुने हुए विषयों में से जो आनन्द के देने वाले हैं किसी की चाहना न करना वैराग्य कहाता है।

प्यारे सुजनों! जो मनुष्य धर्माचरण परमेश्वर और उसकी आज्ञा में अत्यंत प्रेम करके आचरण अर्थात् शुद्ध हृदयरूपी वन में स्थिरता के साथ निवास करते हैं वे परमेश्वर के समीप निवास करते हैं, और वे जो लोग अधर्म के छोड़ने और धर्म के करने में दृढ़ तथा वेदादि सत्य विद्याओं में विद्वान् हैं, जो भिक्षार्थ आदि कर्म करने संन्यासी वा किसी अन्य आश्रम में हैं, इस प्रकार के गुण वाले मनुष्य प्राण द्वारा परमेश्वर के सत्य राज्य में प्रवेश करके सब दोषों से छूट कर परमानन्द मोक्ष को प्राप्त होते हैं। जहाँ कि पूर्णपुरुष सबमें भरपूर सबसे सूक्ष्म अविनाशी जिस में हानि लाभ कभी नहीं होती, ऐसे परमेश्वर को प्राप्त होके सदा आनन्द में रहता है, जिस समय इन उपरोक्त साधनों से परमेश्वर की उपासना करके उसमें प्रवेश किया चाहे उस समय इस रीति से करे। कण्ठ के नीचे दोनों स्थानों के बीच में और हृदय के ऊपर जो हृदय देश है कि जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं उसके बीच में जो गर्त्त है उसमें जो सर्वशक्तिमान परमात्मा बाहर भीतर एक रस होकर रम रहा है वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है, दूसरा उस के मिलने का और कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं क्योंकि इस हृदय आकाश में सूर्य आदि प्रकाशक तथा पृथ्वीलोक अग्नि, वायु, सूर्य, चंद्र, बिजुली और सब नक्षत्र लोक भी ठहरते हैं। जिसमें देखने और न देखने वाले पदार्थ हैं वे सब उसकी सत्ता के बीच में स्थिर हो रहे हैं और इस ब्रह्मपुर में जो परिपूर्णपरमेश्वर है उसको न तो कभी वृद्धावस्था होती है और न कभी नाश होता है उसका नाम सत्य ब्रह्म-पुर है कि जिसमें सब काम परिपूर्ण हो जाते हैं। वह सब पापों से रहित, शुद्ध स्वभाव, जरा अवस्था रहित, शोक रहित, जो खाने पीने की कभी इच्छा नहीं करता जिसके सब काम तथा सम्पूर्ण संकल्प भी सत्य हैं उसी प्रकाश में प्रलय होने के समय सब प्रजा समा जाती है और उसी के रचने से उत्पत्ति के समय फिर प्रकाशित होती है।

इस उपरोक्त उपासना से उपासक लोग जिस काम, जिस देश और जिस क्षेत्र भाग अर्थात् सावकाश की इच्छा करते हैं उन सब को वे सब यथार्थ में प्राप्त होते हैं।

इस लिए उपासको ! मोक्ष की इच्छा रखने वालो ! शुद्धाचरण पूर्वक योग द्वारा परमात्मा के जानने की इच्छा करो, तभी, मुक्ति मिल सकती है अन्यथा कदापि नहीं।

परमात्मन् ! आप त्रिकालदर्शी, सर्व सामर्थ्यवान् हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप से हमारी दुर्दशा छिपी नहीं है । अपने सामर्थ्य के कोष से कुछ सामर्थ्य हम भारतवासियों को प्रदान कीजिए, हमको आप उद्योगी बनाइये अब हम सब आपकी शरण हैं, इस विपत्ति के समय में शुद्ध बुद्धिका हमको दान दीजिये, इस अपार दुःख के बीच साहस प्रदान कर हमारी रक्षा कीजिये । हे तेजस्वरूप परमात्मन परमात्मन ! हमको शांति अर्पण कीजिये । हमारे पिता, बन्धु, सहोदर और स्वामी सब कुछ आप ही हैं । बल, वीर्य तेज का प्रसाद देकर हमारे सब सङ्कट निवारण कीजिये । जिससे हम सद्गृहस्थी बन अपने जीवन को आदर्शमय बनावें ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

❀ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ❀

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नेकर

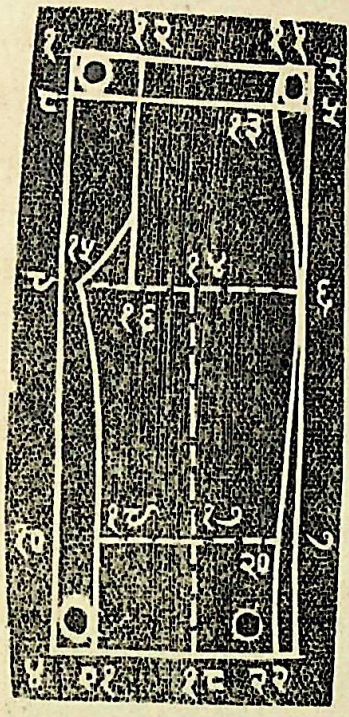

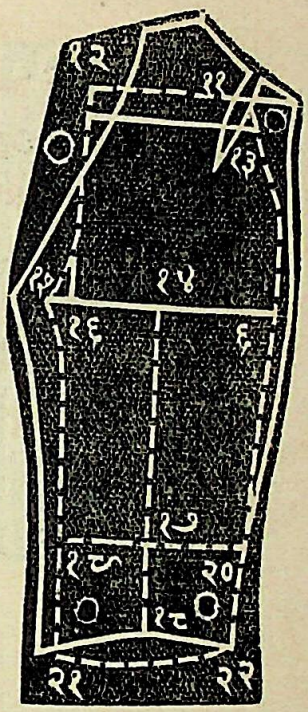

२ से ५ दो इञ्च

२ से ६ कमर से कूल्हे की दूरी

६ से ७ कूल्हे से घुटने की नीचाई से कुछ कम

२ से ११=दो इंच

२ से १२ कमर की चौथाई से अधिक

५ से १३=३ इञ्च

६ से १४ कूल्हे की चौथाई

६ से १५ कूल्हे के तिहाई

१४ से १६=१५ से १६

१७ से १९=१७ से २०

=घुटने के ¼

१८ से २२=१८ से २१

=मोहरी के चौथाई

गृहस्थाश्रम पृष्ठ सं० ४४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अंगरखा

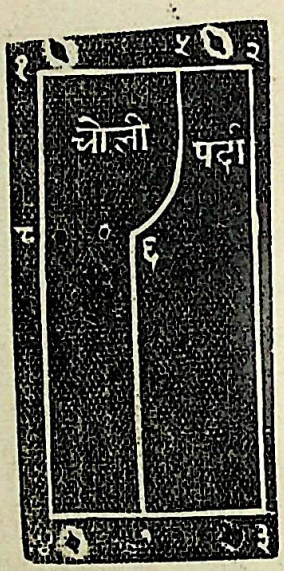


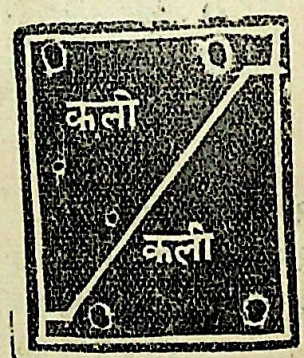


गृहस्थाश्रम पृ० संख्या ४५३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रद्धाञ्जली

श्रद्धा की महिमा वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि सद्ग्रंथों में भले प्रकार की गई है। महर्षि पातिंजलि ने योग दर्शन में उपदेश दिया है कि साधारण मनुष्यों को अनुमान, शास्त्र एवं आचार्यों के उपदेश द्वारा श्रद्धा उत्पन्न करनी चाहिये जो उत्साह एवं रुचि को बढ़ा दृढ़ विश्वास पैदा करे तथा मातृवत् कुमार्ग से बचाये, ध्यान को स्थिर कर समाधि द्वारा विवेक प्रदान करे।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने निघण्टु की भूमिका में श्रद्धा शब्द का अर्थ इस प्रकार किया है। 'शृत' नाम सत्य का है और जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाये वह श्रद्धा है। इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के नवमसमुल्लास में वेदादि सत्य शास्त्रों और उनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करने को श्रद्धा बताया है तथा तृतीय एवं पञ्चम समुल्लास में श्रद्धापूर्वक कार्यकरने का उपदेश दिया है।

श्रद्धा एहलौकिक एवं पारलौकिक समस्त कार्यों की सिद्धि प्राप्त करने का मुख्य साधन है। यही नाना प्रकार के पापों को परित्याग करा कुमार्ग से बचाती है। यही उत्साह को जाग्रत कर उन्नति के शिखर पर पहुँचाती है। यही रुचि उत्पन्न कर कार्य्यों में सलग्न करती है। इसका अभाव एवं न्यूनता मनुष्य जीवन में ही नहीं किन्तु मानव जाति में प्रतिद्वंदता पैदा कर उसको अवनति के मार्ग पर अग्रसर कर सदा के लिये संसार से मिटा देता है।

इसीलिये परम पिता परमात्मा से सदा प्रार्थना करनी चाहिये कि हमारा व्यवहार सदा श्रद्धायुक्त हो क्योंकि श्रद्धा से किया हुआ व्यवहार परस्पर की सोहृदयता को बढ़ाता है। श्रद्धा से किये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हुये कार्य सदा सफल होते हैं, इसी हेतु इसका महत्व अधिक बताया गया है। श्रद्धा से दिया हुआ दान एवं धन अधिक फल प्रद होता है। श्रद्धा से कराया हुआ भोजन एक अपूर्व रस युक्त प्रतीत होता है।

श्रद्धा के कारण ही विदुर के साग, सुदामा के तंदुल, शिवरी के बेर और निषाद का स्वागत आज पर्यन्त विश्व विख्यात है।

स्वामी दयानन्दजी सरस्वती के व्याख्यानों एवं सदोपदेशों द्वारा उत्पन्न हुई श्रद्धा ने ही परम पुनीत एवं आनन्ददायक ग्रहस्थाश्रम को आदर्शमय बनाने तथा तत्सम्बन्धी उपयोगी विषयों एवं धर्म का पूर्ण रीति से वेदादि सत्य शास्त्रों द्वारा भारत जननी के पुत्र पुत्रियों को बोध एवं ज्ञान प्राप्त कराने के लिये इस पुस्तक को लिख आपकी भेंट करने को विवश किया और जिसका कि आपने आशातीतमान किया है।

यही धार्मिक श्रद्धा आज ८० वर्ष की आयु में भी नवीन, लाभदायक, एवं परमोपयोगी बातों का पुस्तक में समावेश करने, विशेष संशोधन कर पुस्तक को मनोहर बना **"बीसवें संस्करण"** को आपके सन्मुख प्रस्तुत करने का साहस एवं सुअवसर प्राप्त करा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप अपनी दया एवं गुण ग्राहकता के कारण पूर्ववत मेरी इस श्रद्धांजली को स्वीकार कर पुस्तक को अपनाते रहेंगे।

आपका साहित्य सेवक—

**चिम्मनलाल वैश्य,**

कासगंज निवासी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म् ❀

# आर्य्य पुस्तकालय

## तिलहर, ज़िला शाहजहांपुर

की

पुस्तकों एवं महेश औषधालय की औषधियों का

## सूचीपत्र ।

READ YOURSELF AND ASK YOUR FRIENDS.

A

# CATALOGUE.

OF

## BOOKS & MEDICINES

ARYA BOOK-DEPOT, MAHESH-AUSHDHALAYA

TILHAR (Dist. Shahjahanpur.)

*INDIA.*

---

To be had of Chimman Lal Bhadra Gupta,
Tilhar, (Dist. Shahjahanpur.) INDIA.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नियम ।

## आर्य्य पुस्तकालय एवं महेश औषधालय

१—पुस्तकें व औषधियां पेशगी मूल्य आने पर या वी० पी० पारसल द्वारा भेजी जाती हैं। गांवों में बिना पेशगी रुपया आये माल नहीं भेजा जाता।

२—पैकिङ्ग व डाक महसूल आदि का खर्च हर हालत में खरीदार के ज़ुम्मे रहेगा।

३—१) से कम का माल वी० पी० से नहीं भेजा जाता क्योंकि छोटी पुस्तक या थोड़ी औषधि मंगाने से ।।) डाक खर्च के ही लगते हैं। इस लिये थोड़े माल के लिये टिकट भेजिये अथवा अधिक माल मंगाइये।

४—माल मंगाने वालों को अपना पता, पूरा नाम, ग्राम, डाकघर वा रेलवे स्टेशन का नाम वा ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

५—बिकी हुई पुस्तक वा औषधि वापिस न की जावेगी।

६—थोक माल १०) पेशगी आने पर भेजा जाता है।

७—थोक खरीदारों को २५ फ़ीसदी कमीशन भी दिया जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम स्वयं
क्या कहें ?
जब कि

# हमारी पुस्तकों

की
भाषा की
**सरलता**
विषयों की
गम्भीरता,
मूल्य

की
प्रशंसा भारतवर्ष, ब्रह्मा
श्याम, मारीशस
आदि
देशों के सभी प्रसिद्ध
विद्वान मुक्त कंठ से
कर रहे हैं।
आप भी
एक बार मंगा कर
देखिये

की
छपाई की
**सुंदरता**
पदों का
लालित्य
सस्तापन

के कारण
संसार में प्रसिद्ध हो रही हैं
तथा अपनी गुण ग्राहकता के कारण
कई कई बार छप चुकी हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# यह बात भी सच है

## कि लम्बे चौड़े मिथ्या विज्ञानों ने

## आप के दिल को

हिला दि
ही है, पर
ही एक साध
ाकर्षण करलें
ाम जँचें तो इन
ा करें तबही तो
ा और उत्तम साहि
सुधार, जाति गौरव ए
कृपा करके पुस्तकों की
ी त्रुटि न कीजिये।

या है, मन से इश्तहारों की प्रतिष्ठा जाती
न्तु सचाई के प्रकाशित करने का भी तो
न है। यदि यह पुस्तकें आपके मन को
पौर पुत्र, पुत्रियों, नर नारियों के लिये
ा देश में प्रचार कीजिये। जब आप
देश से झूठे इश्तहारों का खातमा
य की वृद्धि होगी, यदि आप का
त्र साहित्य वृद्धि की इच्छा
यथार्थ समालोचना करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्त्री शिक्षा का विश्वकोष

देश एवं विदेश के विद्वानों द्वारा प्रशंसित
सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपयोगी सचित्र तथा सजिल्द ग्रन्थ

## नारायणी शिक्षा

अर्थात्

## गृहस्थाश्रम

पृष्ठ संख्या १०००, बीसवाँ संस्करण मूल्य २॥)

स्त्री शिक्षा पर इससे अच्छी पुस्तक आपने न देखी होगी और न पढ़ी होगी। उच्चकोटि के विद्वानों ने इस की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है और प्रत्येक गृहस्थी को १ प्रति अपने पास रखने का परामर्श दिया है क्योंकि इसमें स्त्री शिक्षा तथा गृहस्थाश्रम सम्बन्धी प्रायः सभी विषयों का समावेश किया गया है। अधिक न लिखकर इसके विषय में आये हुए प्रशंसा पत्रों में से कुछ चुने हुए विद्वानों की 'सम्मतियां' देते हैं।

स्वर्गीय राज ऋषिश्री ब्रह्मचारी नित्यानन्दजी सरस्वती

मैंने आपकी बनाई हुई पुस्तकों को अच्छे प्रकार से देखा ये सब किताबें पबलिक को शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति कराने वाली हैं। विशेष खूबी यह है कि प्रत्येक विषय के साबित करने के लिये वेद, स्मृति और पुराण इत्यादि के प्रमाण अच्छे प्रकार से दिये हैं, जिनके कारण इन पुस्तकों के पढ़ने वाले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पूर्ण लाभ उठाते हैं। दौरे में मुझसे आपकी पुस्तकों की अनेकों पुरुषों ने प्रशंसा की, वास्तव में वह प्रशंसा ठीक है, क्योंकि आपने इनके लिखने में बड़ा परिश्रम किया है। इस लिये मेरा चित्त आपसे बहुत प्रसन्न है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने जीवन भर इस उपयोगी कार्य्य का सदा करते रहें जिससे देश में वैदिक ख्यालात की उन्नति होकर सब प्रकार आनन्द हो।

## आचार्य पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी

"नारायणी शिक्षा-सम्पादक श्री चिम्मलाल वैश्य छपाई बम्बई के टाइप को" इस इतनी सस्ती और उपयोगी पुस्तक का दूसरा नाम गृहस्थाश्रम शिक्षा है। पुस्तक कई भागों में विभक्त है। गृहस्थाश्रम से सम्बन्ध रखने वाली शिशुपालन, शरीर रक्षा, ब्रह्मचर्य, विवाह, पति पत्नी धर्म, नित्यकर्मादि कितनी ही बातों का इसमें वर्णन और विचार है। श्रुति, स्मृति, उपनिषद, पुराणादि से जगह २ पर विषयोपयोगी प्रमाण उद्धृत किये गये हैं। पुस्तकों में सैकड़ों बातें ऐसी हैं जिनका जानना गृहस्थ के लिये बहुतज़रूरी है।

## महाराजा महेन्द्रपाल सिंहजू देवबहादुर छुरी, बिसालपुर

बेशक आपने इस पुस्तक से सम्पूर्ण गृहस्थियों का बड़ा उपकार किया है।

## श्री० एन० निरञ्जन स्वामी, फ़ाइफ़ मेजर, बूयशावर—

इसके पढ़ने से मेरी आत्मा को जितना आनन्द मिला वह किसी प्रकार नहीं लिख सकता, वास्तव में आपने गागर में सागर का भरने का यत्न किया है। योग्य गृहस्थ आपकी इस पुस्तक का पढ़े बिना धन्यवाद दिये नहीं रह सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## श्री पं० विदेशीलाल जी शर्मा, दर्बन।

जिस तरह धातु में सुवर्ण, वृक्षों में आम, रसों में मिश्री, दुग्ध में घृत, मीठे में शहद, जीवों में मनुष्य, पुष्टियों में ब्रह्मचर्य, प्रकाश में सूर्य श्रेष्ठ हैं वैसे ही आप की पुस्तक "नारायणी शिक्षा" सम्पूर्ण स्त्रियोंके लिये उपयोगी है। मैं आशा करता हूँ कि विचार-शील पुरुष अवश्य इस अमूल्य पुस्तक से लाभ उठा कुटुम्बियों सहित्य आनन्द भोगने की चेष्टा करेंगे।

## बा० नन्दलालसिंहजी, बी. ए. बी. एस. सी., एल एल बी.

तिलहर के .....जी ने यह पुस्तक लिखकर स्त्री जाति का बड़ा उपकार किया है। हम मुंशी जी को इस सफलता के लिये बधाई देते हैं। इस में प्रायः उन सब बातों का समावेश है जो बालिका, युवती और वृद्धा तीनों के लिये विशेष उपयोगी हैं। यदि इस शिक्षा को स्त्री-उपयोगी बातों का विश्वकोष कहें तो उचित है। प्रत्येक को अवश्य रखना चाहिये।

## श्रीयुत गोविन्दजी मिश्र ६५।३ बड़ा बाजार, कलकत्ता

आपकी पुस्तक को पढ़ कर मेरी आत्मा को जितना आनन्द मिला है वह किसी प्रकार से लिखकर नहीं बता सकता। वास्तव में आप ने सागर को गागर में भरने का साहस किया है। गृहस्थाश्रम के आवश्यकीय प्रायः समस्त विषयों का संग्रह किसी पुस्तक में सिवाय नारायणी शिक्षा के नहीं देखा। इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अपना प्रयोजन पूर्ण रूप से गठन कर सकता है। ऐसी ऐसी पुस्तकों की रचना प्रायः उच्च कक्षा की धार्मिक आत्माओं के द्वारा ही हुआ करती है।

## बाबू गोरूतामिल जी हैडमास्टर, आर्यस्कूल, होशियारपुर

मेरी स्त्री ने आरम्भ से लेकर अखीर तक भली भाँति पढ़ा और मैंने भी कहीं २ देखा, सचमुच स्त्री और पुरुषों के लिये बड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लाभदायक है, मैंने और मेरी धर्म पत्नी ने स्त्री-शिक्षा की अनेक पुस्तकों को पढ़ा है परन्तु ऐसी उत्तम और लाभदायक किसी पुस्तक को नहीं पाया। आपने यथार्थ में आर्य्य जाति पर महान् उपकार किया है जो ऐसी उत्तम और धार्मिक आकर्षक और चित्त पर प्रभाव डालने वाली पुस्तक निर्माण की। तिस पर लुफ़ यह है कि मूल्य भी बड़ा ही स्वल्प रखा है यह और भी सुगन्ध है। कृपा कर अपनी लेखनी को ऐसे ही कार्यों में लगा यश के पात्र बनते रहिये।

## श्रीमान् पं० विष्णु लाल जी, एम० ए० रिटायर्ड सबजज

The 'Narayani Sikshs' is a library in itself being a work of Cyclopedia information. No subject the retical or practical which is useful to a house holder has been left untouched. The style is simple, yet impressive. I am not aware of a better book for females in hindi, and am of opinion that no hindu family should be without a copy.

## श्रीमान् रामनारायण साहब तिवारी—

I have read the 'Narayani Siksha' or Grihast Asharam compited by you. I do not know of any other book in hindi which gives in such a short compass everything that a Grihasha or house holder should know. I find your book a valuable addition to the Hindi literature for Hindu women.

## श्री सम्पादक, अमर—बरेली

ग्रन्थ में विशेषता यह है कि प्रत्येक बात की पुष्टि में वेद और शास्त्रों के प्रमाण दिये गये हैं। स्वास्थ, विद्या विवाह, रोगचिकित्सा शिशु पालना और पाक विद्या आदि स्त्री सम्बन्धी समस्त आवश्यक विषयों की विस्तृत व्याख्या की गई है। स्थान स्थान पर प्राचीन और अर्वाचीन इतिहाससे उदाहरण भी संकलित किये गये हैं। गृहस्थी भाइयों को यह पुस्तक अवश्य संग्रह करनी चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पुत्री उपदेश

अर्थात्

## नारायणी शिक्षा के द्वितीय भाग का

## द्वितीय एडीशन

विवाहिता नववधुओं को दहेज देने योग्य

जिसमें गृहप्रबन्ध मीमांसा, धन की आय, व्यय एवं बचत के उपयोगी साधन, सब श्रेष्ठ धन की मीमांसा तथा अमर होने के साधन आदि का वर्णन है, एक बार अवश्य पढ़ियेः—

पृष्ठ संख्या ४४८—मूल्य १) डा० खर्च ।।)

पुस्तक की उत्तमता जानने के लिये समालोचनाएँ पढ़िये

रायबहादुर पं० शुकदेव बिहारी जी मिश्र ।

मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक के लिये इस वर्ष जो ग्रंथ आये हैं उनमें उपदेशात्मक ग्रंथ "पुत्रीउपदेश" ही है इसमें बहुतही बढ़िया रचना है यह ग्रंथ उपादेय और विषय नाम के योग्य हैं सत्पुरुषों के उदाहरण अच्छे दिये गये हैं प्रकरण एक से एक बढ़कर दिये हैं। ग्रंथ भद्रपुरुषों के यहां रहने योग्य है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## श्री० बाबू कन्नोमल जी जज, धौलपुर।

पुत्री उपदेश नामक पुस्तक कन्याओं के लिये परमोपयोगी है बालिकाओं के जानने और मनोधारण योग्य जितनी बातें हैं उन सभी का समावेश इस पुस्तक में है। कथा और कहानियाँ बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद। पुस्तक सरल सुबोध और शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई है सभी कन्या पाठशालाओं में इसका प्रवेश होना चाहिये। लड़कियों को पारितोषिक देने के लिये तो यह एक ही पुस्तक है।

## श्री रायसाहब मदन मोहन सेठ एम. ए., एल. एल. बी.,

आपकी पुत्री उपदेश नामक पुस्तक को मैंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा। हिन्दी साहित्य में यह एक नवीन मार्ग की पथ-प्रदर्शक है। आज कल की साधारणतया मिलने वाली पुस्तकों के समान शुष्क तथा निरर्थक नहीं है किन्तु यह एक सजीव तथा उत्तम शिक्षाओं का संग्रह है।

## श्री० बाबू श्यामसुन्दरलालजी वकील मैनपुरी।

यह ग्रन्थ मुंशी की अन्य पुस्तकों से मुझे बड़ा उत्तम प्रतीत हुआ क्योंकि इसमें मानव समाज में स्त्रियों का स्थान जीवन की सार्थकता, पतिव्रता धर्म, कुटुम्ब व्यवहार, सच्चा बड़प्पन, देशोन्नति राजधर्म, प्रजाधर्म, साधारणधर्म, आदि बातों का उपदेश ऐसे मीठे तथा सरल शब्दों में वर्णन किया गया है कि हृदय को उनमें सहसा पढ़ते २ अनुराग उत्पन्न हो जाता है। शिक्षाप्रद कहानियों का भी उल्लेख है सर्वतो दृष्टि से यह ग्रन्थ ऐसा उपयोगी है कि प्रत्येक सद्गृहस्थ को यह पुस्तक अपने यहाँ रखनी चाहिये। छपाई, काग़ज़ उत्तम मूल्य भी बहुत कम है।

## भारत प्रसिद्ध उपदेशक पं० हरिशंकरव्यास, मुरार।

गृहस्थाश्रम के दूसरे भाग को मैंने आद्योपान्त पढ़ा सुन्दर लेख शक्ति, उच्च भाव, मनोहर वाक्य रचना बतला रही है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेखक का जीवन पवित्र है यदि प्रत्येक गृह में इस पुस्तक का नियमपूर्वक स्वाध्याय हो तो निःसन्देह पुत्र पुत्रियों का जीवन आदर्श बन सकता है इस लिये मैं जोर के साथ प्रत्येक गृहस्थी से प्रार्थना करता हूँ कि इस उपयोगी पुस्तक को मँगा कर अपने गृहों की शोभा को बढ़ावें।

उपमंत्री आ० प्र० नि० सभा संयुक्त प्रान्त।

वास्तव में यह पुस्तक स्त्रियों और कन्याओं के लिये अत्यन्त शिक्षापूर्ण है उनके लिये जिन २ बातों का जानना जरूरी है वे सब बातें इस पुस्तक में अच्छे प्रकार वर्णन की गई हैं लेखक महाशय का उद्योग सराहनीय है।

---

## वीर्य रक्षा।

युवकों को उपदेश, ब्रह्मचर्य की महिमा। नई शक्ति एवं नवीन स्फूर्ति का उत्पन्न करने वाली अनूठी पुस्तक

इसलिये

जिन देशों में ब्रह्मचारी बन, रक्षा की जाती है वही देश उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच गया, वीर्य रक्षा के ही कारण प्राचीन भारतवासियों ने राज्य शासन कर सुख उठाया।

यदि आप सन्तानों की रक्षा और उनकी आरोग्यता चाहते हैं तो एक बार इस पुस्तक का पाठ अवश्य कराइये। मूल्य ।)

---

## गर्भाधान विधि।

अट्ठारहवाँ संस्करण

इसमें अपने वैद्यक शास्त्रों एवं प्राचीन कोक ग्रन्थों से स्त्री पुरुष के लक्षण, परीक्षा, धातु और उसके गुण, स्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंग की रीति, सीमाबद्ध सन्तानोपत्ति की विधि, गर्भ में सन्तान परीक्षा, गर्भवती का कर्तव्य, प्रसूति रक्षा, शिशुपालन और सन्तानों के दीर्घ-जीवी होने के अनेक उपाय भले प्रकार लिखे हैं। नव विवाहितों को देखने योग्य है। नारायणी शिक्षा के समान जनता ने इसको भी बहुत अपनाया है। मूल्य =) भी स्वल्प है।

## पुराणतत्त्वप्रकाश।

तीन भाग मूल्य २)

वास्तव में यह पुस्तक समस्त पुराण एवं उप-पुराणों की रहस्यमयी गुप्तलीलाओं का कच्चा चिट्ठा है और शिक्षाप्रद भी इतना है कि अनेक बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। पुरुष नहीं किन्तु स्त्रियों का भी इसका पाठ करना योग्य है क्योंकि स्त्रियां ही पुराणों के लेखों पर मोहित हो तन, मन, धन न्यौछावर कर पुरुषों को वैदिक-सिद्धान्तों से गिरा देती हैं। अतएव पारिवारिक महिला संग में इसको अवश्य सुनना चाहिये जिससे उनका हृदय पुराणों की थोथी बातों के स्थान में पूर्ण ज्ञान से परिपूर्ण हो जावे।

## शिक्षा, प्रेम, भाव पूर्ण भजन।

कन्या गीत माला ।-) स्त्री ज्ञान गजरा प्रथम भाग -)

स्त्री ज्ञान गजरा द्वितीय भाग =)

सस्ती एवं उपयोगी मूल्य लागत मात्र पाकट साइज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता—चिम्मनजाल, भद्रगुप्त, तिलहर (शाहजहाँपुर) १३

## बालकों के लिये अत्युपयोगी

# रत्न भण्डार

अर्थात्

## ज्ञान रामायण।

गद्य एवं पद्य में बच्चों को शिक्षा देने के लिये एवं पाठशालाओं में धर्म शिक्षा के स्थान में पढ़ाने योग्य एक ही पुस्तक है। यू० पी० टैक्स्टबुक कमेटी ने भी इस को लाइब्रेरी में रखने एवं बच्चों के इनाम के लिये पसन्द किया है। मूल्य केवल ।=)

## सन्तानों को

आदर्शमय-कर्मवीर एवं देश-भक्त बनाने के लिये निम्न लिखित मनोरंजक, भावपूरति, शिक्षाप्रद सस्ते जीवनों का पाठ कराइये—

| | | |
|---|---|---|
| युधिष्ठिर ।) | अर्जुन =) | विदुर =) |
| भीमसेन =) | धृतराष्ट्र =) | द्रोणाचार्य =) |
| दुर्योधन =) | भरत -)॥ | महारानी मन्दोदरी ।) |

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ह. जल्द ही वह लाभकी
।

ोबार १९९८ की तुलनामें
में ५५ प्रतिशत से भी
५ करोड़ ४० लाख रुपये
की जबर्दस्त वृद्धि हुई
११ लाखसे बढ़कर
करोड़ ९६ लाख रुपये हो
जरदार वृद्धिके बावजूद

## फाइनेंसके लिए
## पक नियुक्त

(वा.)। गुजरात उच्च
धीश के एम मेहताने एक
लभाई फाइनेंस लिमिटेडके
समापककी नियुक्ति की है।
नयसे सम्बद्ध अधिकारिक
। उच्च न्यायालयने यह
की उस याचिकापर दिया जो
हमदाबादकी इस गैर बैंकिंग
लभाई फाइनेंस लिमिटेडको
लिए दायर की थी। रिजर्व
के अनुसार परिसमापकको
या है कि कंपनीकी सभी
र सम्पत्तियोंका प्रभार अपने
में कंपनीके खाते, कागजात
भी शामिल हैं। विज्ञप्तिके

मैजिक बाजारमें पेश करते हुए कहा कि थोड़े ही समयमें कंपनीने रफ्रीजिरेटरोंके बाजारमें अपनी अच्छी स्थिति बना ली है। उन्होंने बताया कि १९९९ में कंपनीने दस लाख घरेलू उपकरणोंकी बिक्री कर देशकी सबसे बड़ी

इसमें २० मिनट पहले बर्फ जमती है। दावा किया कि नये उत्पादके बाजारमें बाद चालू वर्षमें कंपनीके कारोबार प्रतिशत तक वृद्धि होगी और बाजार हि बढ़ेगा।

# गन्नाके साथ मूंग, उड़दकी सह प

बरेली, ९ अप्रैल (वा.)। गन्ना शोधमें लगे वैज्ञानिकोंका मानना है कि आजकल बोये जा रहे गन्नेके साथ मूंग और उड़दकी सहफसली खेती बेहर फायदेमंद हो सकती है।

उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषदके वैज्ञानिकों के अनुसार अगर उन्नत ढंगसे सहफसली खेतीकी जाये तो अकेले गन्नेकी अपेक्षा इससे प्रति हेक्टेयर अधिक उपज एवं अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मात्र ६०-७० दिनोंमें पककर तैयार हो जानेवाली मूंग और उड़द जैसी फसलोंसे गन्नेकी बढ़वारपर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि मूंगकी उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है।

शाहजहांपुर स्थित गन्ना शोध परिषदके वैज्ञानिकोंके अनुसार अच्छी उपजके लिए गन्नेमें १५० किलोग्राम नाइट्रोजन डालनी पड़ती है किन्तु परीक्षणसे यह सिद्ध हुआ है कि बसंतकालीन गन्नेके साथ मूंग और उड़दकी सहफसली खेती करनेसे मात्र १२० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन देनेपर भी गन्नेकी करीब उतनी ही पैदावार मिलती है। ३० किलोग्राम नाइट्रोजनकी प्रति हेक्टेयर बचत हो जाती है। इसके अतिरिक्त गन्नेके साथ-साथ मूंग बोनेपर छह प्रतिशत तथा उड़द बोनेपर गन्ना उपजमें चार प्रतिशत वृद्धि हो जाती है। इसलिए गन्ना बोनेकी अपेक्षा प्रगतिशील कृषक अब सहफसली खेती करना पसंद करते है।

आधिकारिक सूत्रोंने आज यहां बताया कि गन्नेकी बढ़वारके लिए अधिसंख्य कृषक अब अधिकाधिक मात्रामें नाइट्रोजनका प्रयोग करने लगे हैं जिससे गन्नेकी लम्बाई और मोटाई तो बढ़ जाती है मगर उसके रसोगुणपर खराब असर पड़ता है। रसायनिक उर्वरकोंके अधिक अ[illegible] निरंतर असंतुलित प्रयोगसे गन्नेमें श[illegible]शतका स्तर घट रहा है। गन्नेके साथ

जल्दबाजीके चक्करमें प्रायः कि[illegible] खादकी झंझट समझते हैं जबकि इन[illegible] लाभ होता है। उन्होंने कहा कि अ[illegible] साथ उड़द और मूंगकी सहफसली [illegible] खादके पुर्नप्रचलनको भी गति मिल गा[illegible] जन स्वास्थ्य और पर्यावरण की दृष्टि[illegible] उपयोगी एवं सार्थक कदम साबित हो[illegible]

वैज्ञानिकोंके अनुसार गन्नेकी दो [illegible] के मध्य तीन फुटतककी दूरी रखी जाती [illegible] सिंचाई निराय, गुड़ायी, पौधे[illegible] प्रकाश संस्लेषण क्रिया भ[illegible] मगर गन्नेकी लाइनोंके [illegible] प्रायः खरपतवार ऊग अ[illegible] हिस्सेकी सौर ऊर्जा, मुदा, [illegible] तत्वोंको चट कर जाती है जिससे [illegible] घट जाती है। कृषि वैज्ञानिकोंका कह[illegible] इस नुकसानसे बचनेके लिए यदि [illegible] उड़दकी पकी फलियां तोड़नेके [illegible] पौधोंको गन्नेकी पंक्तियोंके मध्य उ[illegible] स्तरपर दबा दिया जाये तो भूमिक[illegible] सरचनामें सुधारके साथ-साथ उसमें [illegible] पदार्थका स्तर भी बढ़ जाता है तो स[illegible] पोषक तत्वोंके रूपमें गन्नेकी फस[illegible] लाभकारी सिद्ध होता है। सामान्यतः [illegible] उड़दकी प्रति हेक्टेयर १०-१५ [illegible] नाइट्रोजनकी जरूरत होती है लेकि[illegible] साथ सहफसलोंके रूपमें बोने[illegible] आवश्यकता नहीं रहती। इसप्रक[illegible] फसलोंकी खेतीसे नाइट्रोजनकी ब[illegible] हो जाती हैं।

वैज्ञानिकोंके अनुसार अच्छी [illegible] लेनेके लिए [illegible]त मूंग एक या पी.[illegible] तथा उड़दकी [illegible] मूज ३० अथवा [illegible] जैसी उन्नत प्रजातियोंको ही [illegible] खेतीके लिए चुना जाना चाहिये। [illegible]

[illegible]न्नती पनबिजली परियोजना
[illegible] ७५० मेगावाटकी कोयला